जवाहर से सवक सीख लेता तो अच्छा था। सवेरे की चाय से लेकर रात के सोने तक मुझे ज़रूरत की सब चीजे अपनी-अपनी जगह पर मिल जाती है। ज़रा-ज़रा-सी बात पर पूरी तवज्जो दी जाती है और मुझे कोई चीज मागनी नही पडती, जैसाकि आनन्दभवन मे अक्सर करना पडता था और जिसके लिए काफी चीखना-चिल्लाना पडता था। महमूद कभी-कभी मदद कर देते है, लेकिन खास बोझ तो जवाहर पर ही पडता है। मै अपनी काहिली और जवाहर का इतना वक्त के लेने के लिए, जिसका दूसरी तरह और अच्छा इस्तेमाल हो सकता था, अपनी मलामत करता हू। लेकिन वह मेरी सब जरूरतो को पहले सोच लेता है और मेरे लिए कुछ करने को रह ही नही जाता। काश बहुत-से ऐसे पिता होते, जिन्हे अपने बेटो पर ऐसा ही फख्र होता!

'पायोनियर' मे जितनी खबरे निकलती है, उतने से मै तुम्हारी हलचलो को जान लेता हू। इस अखबार मे बहुत थोडी खबरे होती है। लेकिन जो कुछ इसमे छप जाता है उससे हम बाकी का कयास कर सकते है। तुम सब लोगो ने बहुत शानदार काम किया है और मै उम्मीद करता हू कि इसी लगन और जोश से काम जारी रखोगे। जवाहर और मै दोनो ही तुम सबपर, जिसमे छोटे बच्चे भी शामिल है, फख्र करते है।

८०. मोतीलाल नेहरू की ओर से

[१९३० की पिछली छमाही मे मेरे पिताजी अपनी कडी बीमारी की वजह से जेल से रिहा कर दिये गए। इस बीमारी से वह फिर अच्छे नही हुए और दो-तीन महीने बाद ही चल बसे। एक तजवीज थी कि वह समुद्र-यात्रा पर जाय, लेकिन उनकी हालत इतनी तेजी से गिरी कि यह यात्रा न हो पाई। अपनी बीमारी के बावजूद उनकी दिलचस्पी राष्ट्रीय आन्दोलन मे बराबर बनी रही। मै इस बीच जेल में था।]

आनदभवन,
इलाहाबाद
११ नवबर १९३०

मेरे प्यारे जवाहर,

तुम्हे बिल्कुल ताजा खबर देने के लिए यह खत लिख रहा हू। बेटी

और शम्मी आज तीसरे पहर मलाका जेल मे अचानक गिरफ्तार कर ली गई, जहा वे कमला, नैन[१], इदू और तुम्हारी मा के साथ दो-तीन दिन पहले गिरफ्तार हुए सुन्दरलाल, मजरअली और दूसरे लोगो के मुकदमे को देखने गई थी। नैन फौरन मुझे खबर देने के लिए लौट आई। मै उस वक्त बिस्तर पर था और बैठा खास रहा था। मेरे जाने मे कुछ नही रखा था, लेकिन मैं जाना भी चाहता तो जिस्म से बेकार था। मैंने नैन को मुकदमे की कार्रवाई देखने के लिए वापस भेज दिया। लेकिन उसके पहुचने से पहले मुकदमा खत्म हो चुका था। बेटी, शम्मी और सभी और पहले से गिरफ्तार लोगो को दफा १८८ (सरकारी अधिकारी द्वारा कानून की रू मे जारी हुक्म की उदूली) के मातहत ५० रु० जुरमान की या जुरमाना न देने की हालत मे एक महीने की सादा कैद की सजा सुना दी गई। अब वे सभी मलाका-जेल मे एक-दूसरे के साथ का मजा ले रहे है। कपडे, खाना वगैरा उनके लिए भेजा जा रहा है। जहातक मुझे पता चला है, बेटी और शम्मी ने सिर्फ यह किया था कि जब सब सड़क पर बैठकर गाना गा रहे थे तो गाने के बोल पहले वे बोलती थी।

कमला और नैन अभी बरी है—कबतक के लिए, यह कहना नामुमकिन है। अच्छा होता वे जल्दी करते, जिसमे मैं जान सकता कि घर वगैरा के लिए मुझे क्या इतजाम करना होगा। कल सवेरे फिर सुदरलाल के मुकदमे की दफा १२४-ए के मातहत सुनवाई होगी। बहुत मुमकिन है, कल और भी ज्यादा गिरफ्तारिया हो। इस तरह इलाहाबाद मे आर्मिस्टिस दिन मनाया गया।

वल्लभभाई और महादेव यहा दो दिन रहे, ज्यादातर बिस्तर पर। उनके यहा आने के बाद ही उन्हे मलेरिया ने दबोच लिया। आज ही वे बबई लौट गये है।

मेरी हालत दिन-ब-दिन गिरती जा रही है। अब थूक मे कभी-कभी ही खून आने की बात नही रह गई। पिछले तीन दिनो मे मुह से बराबर खून के थक्के थूक रहा हू। इलाहाबाद मे जो भी इलाज हो सकता था किया गया, लेकिन कोई कारगर नही हुआ। आखिरकार कल सवेरे मैंने बेटी और

---
१ विजयालक्ष्मी पंडित

मदन अटल को साथ लेकर कलकत्ता जाने का फैसला किया है और मेजर ओबेराय को फोन किया है कि वह तुम्हे मुझसे १९ ता के बदले, जिस दिन मुलाकात होनी है, १५ को ही मिल लेने दे। मैंने इस बारे मे जाब्ते का खत भी भेज दिया है। उन्होने इसके लिए राज़ी होने की मेहरबानी कर दी है और हम लोग, यानी जितने भी उस वक्त जेल जाने से रह गये है, तुमसे १५ को १० बजे मिलेगे। मै १६ या १७ को कलकत्ता चला जाऊगा। डा जीवराज मेहता को कलकत्ता मे किसी मेडिकल असोसिएशन की बैठक मे शरीक होना है और वह मुझसे वही मिलेगे। मेरी समझ मे बेटी की जगह और किसीको ले जाना जरूरी नही है। मदन ने अभी तक जवाब नही दिया है, लेकिन वह राजी हो जाय तो और किसीको साथ ले जाने की ज़रूरत न होगी। इस बीच कमला गिरफ्तार होगई तो मै इदू को साथ ले जाना चाहूगा, क्योकि कमला और बेटी दोनो के न रहने पर वह अकेली रह जायगी। मेहरबानी करके मुझे लिखना कि यह इतजाम तुम्हे ठीक लगता है, क्योकि समुदरी सफर के लिए इदू की तैयारी करनी होगी।

मैंने २ ता को सिगापुर के सफर के बारे मे जरूरी जानकारी के लिए थामस कुक को कलकत्ता लिखा था। कल तक कोई जवाब नही आया और फौरन जवाब देने के लिए उन्हे मैंने तार दिया। आज जवाब आया कि उन्हे मेरा कोई खत नही मिला। खत उपाध्याय ने रेलगाडी मे छोड़ा था। क़ानून और इतजाम की हिफाजत करनेवालो ने शायद समझा होगा कि मै देश छोडकर भाग रहा हू या कोई सगीन जुर्म करने जा रहा हू और खत को उसकी मजिल पर नही पहुचने दिया। कल फिर कोशिश करूगा और खुफियावालो के लिए भी उसमे एक नोट जोड दूगा।

१२ नवबर १९३०

पिछली रात इस खबर से खत लिखने मे बडी बाधा पडी कि कुछ लोग चुपचाप बेटी और शम्मी के जुर्माने अदा करने की जालसाजी कर रहे है। बाद मे बताया गया कि बेटी का जुर्माना अदा कर दिया गया है और वह रिहा होनेवाली है। यह बहुत परेशान करनेवाली खबर थी और मैंने एक बयान फौरन प्रेस मे भेजा। वह आज सुबह निकला है और मै उसकी एक

कतरन भेज रहा हू । लेकिन इस बीच शरारत तो हो चुकी थी, और वह महामूर्ख जिसका नाम गोपी कुजरू है, बेटी और शम्मी को लेकर, आधी रात के करीब, जब मै सोने जा चुका था, कार पर आया। मुझे यह बात आज सवेरे ही मालूम हुई। गोपी ने लडकियो को बताया कि वह उस आदमी का वकील है, जिसने कि जुर्माना अदा किया है और वह उसका नाम नही खोल सकता। उन लोगो ने मेरा बयान आज सवेरे पढा होगा और अपने बारे मे, शायद मेरे बारे मे भी, अपनी राय बदल दी होगी। जब इस तरह की और गिरफ्तारियां होगी, उस वक्त मै उम्मीद करता हू कि यह बयान फायदेमद होगा और लोग फिर ऐसी दरियादिली दिखाने से पहले दो बार सोच लेगे।

अब बेटी वापस आगई है, तो पहले का तय इतजाम चलेगा और वह मेरे साथ कलकत्ता और सिगापुर जायगी। इदू अब अपनी पढ़ाई मे लग रही है और मै उसमे कोई अडचन नही डालना चाहूगा, जबतक वह खुद मेरे साथ चलने को ख्वाहिशमद न हो।

हिन्दू पचाग के मुताबिक कल तुम्हारी सालगिरह है और ग्रेगरी के पचाग से परसो। मुझे यह सुझाव दिया गया कि मै तुमसे कल या परसो मिलू। मैंने इस राय को यो पसद नही किया कि कलकत्ता जाने के करीब ही मै तुमसे मिलना चाहता हू। मैंने १६ को मिलना पसद किया होता, लेकिन वह सारे हिदुस्तान के लिए 'जवाहर-दिन' है और लडकिया काम में लगी रहेगी। मैंने १७ को पजाब-मेल से जाना तय किया है।

तुमने कलकत्ता से जो किताबे चाही थी, उनके लिए आर्डर बहुत पहले से गया हुआ है, लेकिन वे अभी नही आई। बीच मे चिट्ठी शायद कही रोक ली गई। मेरे जाने से पहले किताबे न आई तो मै उन्हे भिजवा दूगा। बाकी मिलने पर। रजीत को प्यार।

सप्रेम तुम्हारा,

पिता

अखबारी बयान

कुमारी कृष्णा नेहरू—अनजाने आदमी ने जुरमाना दिया।

पडित मोतीलाल नेहरू का बयान

पडित मोतीलाल नेहरू अपने बयान मे कहते है

"मैने अभी सुना है कि किसी अनजाने आदमी ने ५० रुपये का जुर्माना भर दिया, जोकि मेरी लडकी कृष्णा पर आज तीसरे पहर अचानक गिरफ्तारी के बाद मुकदमे मे हुआ था। अगर मुझे मिली खबर ठीक है तो इस अनजाने आदमी ने मेरी, मेरी लडकी और मुल्क की इतनी जबरदस्त कुसेवा की है, जितनी कि सोची भी नही जा सकती। उसका नाम बहुत वक्त तक छिपा नही रह सकता। अगर मेरे मुल्क के लोगो को मेरा और जो कुछ खिदमत मै कर सका हू, उसका कुछ भी लिहाज है तो मै उम्मीद करता हू कि वह इस आदमी को मेरा और मुल्क का सबसे बडा दुश्मन समझेगे और उसके साथ वैसा ही सलूक करेग।"

८१ मोतीलाल नेहरू की ओर से सुभाषचन्द्र बोस के नाम

इलाहाबाद,
१४ नवम्बर १९३०

प्रिय सुभाप,

डाक और तार दोनो ही का बिल्कुल भरोसा न होने की वजह से एक खास आदमी के हाथ यह खत तुम्हे यह खबर करने के लिए लिख रहा हू कि मैने सोमवार १७ तारीख को पजाब मेल से कलकत्ता आने का पक्के तौर पर इरादा कर लिया है। मेरे साथ मेरी छोटी लडकी कृष्णा होगी, जो मेरी देखभाल करेगी, और एक डाक्टर दोस्त रहेगे, जो, अगर सर नीलरतन सरकार ने सिगापुर तक का समुद्री-सफर करने की सलाह दी, जिसका सुझाव मुझे दिया गया है तो, उनकी हिदायत पूरी करते रहेगे।

मुझे मुह से काफी खून आ रहा है और पब्लिक स्वागत का बोझ उठाना मुमकिन नही हो सकता। मेहरबानी करके ध्यान रखना कि ऐसा कोई स्वागत न हो और सिर्फ इने-गिने—छ से ज्यादा नही—निजी दोस्त ही स्टेशन पर मुझसे मिले।

इसी वजह से मैं कार्यकर्त्ताओं से लंबी चर्चा या मशविरा न कर सकूगा, लेकिन जरूरी होने पर उनमें से एक-दो खास लोगों से बातचीत करने में मुझे खुशी होगी।

मुझे शायद कलकत्ता एक हफ्ते ठहरना पडे, जिसमें मैं सर नीलरतन सरकार के या जिन किन्ही दूसरे डाक्टरों को वह बुलाना चाहे उनकी तरफ से तय किये इलाज की मियाद पूरी कर सकू। कुदरतन मैं इस पूरे वक्त किसी शान्त जगह पर रहना चाहूगा। क्या मेहरबानी करके मेरी टोली के ठहरने का तुम मुनासिब इतजाम कर दोगे ? मैंने खुद कोई इतजाम नही किया है।

श्री सुभापचद्र बोस, तुम्हारा,
१ वुडवर्न पार्क, कलकत्ता। मोतीलाल नेहरू

८२. मोतीलाल नेहरू की ओर से

इलाहाबाद
२० जनवरी १९३१

मेरे प्यारे जवाहर,

कमला का यह खत, जो साथ मे भेज रहा हू, कल शाम आया था और आज सवेरे इसे तुम्हारे पास चला जाना चाहिए था। लेकिन हमारा खत तैयार नही था। उसके अपने खत से पता चलता है, और दूसरे जरियो से भी मुझे मालूम हुआ है कि उसकी बहुत अच्छी तरह देखभाल हो रही है। राज काफी तकलीफ उठा रहा है। लखनऊ मे हमारी पहली मुलाकात २५ को होगी। पता नही क्यो, इतनी देर मे हो रही है। मुझे डर है कि उससे मिलने की खुशी से मुझे अपनेको महरूम रखना पडेगा, क्योकि मैं उम्मीद नही करता कि २४ तक मैं सफर करने लायक हो सकूगा। तुम्हारी मा, बेटी और इदु जायगी।

कल तक कमोबेश मैं ठीक चल रहा था, जबकि कपकपी हुई और सारी रात एक झपकी भी नही आई। टेपरेचर भी नार्मल से कुछ ऊपर ही रहा और खून भी बे-हिसाब गिरा। इसका नतीजा यह हुआ कि आज बहुत थकान लग रही है। लेकिन मैं उम्मीद करता हू कि रात बेहतर बीतेगी। यह एक तसल्ली की बात है कि मेरा वजन ठीक चल रहा है। आज ११९ पौड है।

कविराज बाबू दो दिन के लिए बनारस चले गये है। कल शाम को वह लौटेगे जबकि आगे के इलाज का सिलसिला पक्का होगा। मै ठीक नही कह सकता कि किसका इलाज होगा। बहुत-कुछ कविराज बाबू की जाच पर मुनहसिर होगा।

उन्होने सलाह दी है कि दिन का ज्यादा हिस्सा नदी पर बिताऊ, लेकिन रात मे घर पर सोया करू। मालवीयजी बनारस से मेरे लिए एक बजरा भेजने की कोशिश मे है।

इदू बहुत खुश है। उसने लकडी के पुराने घर को, जिसमे हिरन रक्खा जाता था, समर हाउस के ढग पर बना लिया है और बेटी और वह दोपहर मे थोडा वक्त साथ-साथ वही बिताती है।

तुम्हारे बाग से विलायती मटर के बढिया फूल मिले है। मै उन्हे जतन से रख रहा हू। अभी तक मुरझाने के कोई आसार उनमे नही दिखाई देते।

तुम दोनो को प्यार।

तुम्हारा,
पिता

८३ रॉबर्ट ओ मेनेल की ओर से

वोडन लॉ, केनले, सरे
९ फरवरी १९३१

प्रिय मित्र,

इस सारे सप्ताह आपका इतना ध्यान आता रहा है कि अब पत्र लिखे बिना रहा नही जाता। आप मुझे जानते नही, लेकिन अदालत के सामने आपने जो बयान दिया था, वह मैने पढा है। उससे अनायास ही मै आपकी तरफ खिच गया हू और मेरे मन मे आपके लिए गहरे आदर और स्नेह की भावना उत्पन्न होगई है।

आपकी गहरी क्षति के प्रति मै अपनी हार्दिक सहानुभूति व्यक्त करना चाहता हू। मुझे इस बात की बडी आशा थी कि आपके पिता यहा के लोगो के मन मे सच्चा परिवर्तन और भारत को सचमुच स्वतत्र देखने के लिए जीवित रहेगे। इसमे कोई सदेह नही कि यहा की जनता के मत मे बडा परिवर्तन हुआ है, लेकिन लोग अब भी ताकत को अपने हाथो से जाने देने के लिए तैयार नही है।

८४ रोजर बाल्डविन की ओर से

[जिस समय यह पत्र लिखा गया, रोजर बाल्डविन अमरीकी नागरिक स्वतन्त्रता संघ के संचालक थे और तबसे चले आ रहे है। मै उनसे सबसे पहले फरवरी, १९२७ में ब्रूसेल्स की साम्राज्यवाद-विरोधी काग्रेस में मिला था।]

१३ फरवरी १९३१

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

उस दिन आपको पत्र भेजने के बाद मैने आपके पिताजी की मृत्यु का दुखद समाचार पढा, जो हमारे यहा अखबारो मे व्यापक रूप से प्रकाशित हुआ था। आपसे और आपके परिवार से मेरी हार्दिक सहानुभूति है। मै आपके पिताजी के व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो ही प्रकार के महान गुणो का असीम प्रशसक हू। उनसे मिलकर मुझे बडी प्रेरणा मिली थी और उसके बाद से मुझे यह पढकर बडी खुशी होती रही है कि अपने ध्येय के प्रति उनमे कितनी दृढता और अटूट निष्ठा थी। आप बहुत-सी बातो मे भाग्यशाली है और ऐसे पिता का पुत्र होना भी आपके लिए कम सौभाग्य की बात नही है।

आपका,

रोजर बाल्डविन

८५. रोजर बाल्डविन की ओर से

१००, फिफ्थ एवेन्यू,
न्यूयार्क सिटी
२९ अप्रैल १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

आपको पत्र लिखने मे मुझे बहुत दिनो तक झिझक होती रही, क्योकि यहा के अखबारो मे प्रकाशित विस्तृत और निष्पक्ष विवरणो के बावजूद भारत की स्थिति मेरी ठीक-ठीक समझ मे नही आई है। मै आपके और अपने मित्रो से बातचीत करता रहा हू ओर अमरीकी सम्पादको की टिप्पणिया भी पढता रहा हू। इन बातो से मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि आपका स्वतन्त्रता का सारा-का-सारा आन्दोलन तेजी के साथ एक भयानक पतन

र्थन मिलता है। सभी अखबार, यहातक कि स्वतन्त्रता का समर्थन करनेवाले उदार पत्र भी, अब सामूहिक रूप से मिस्टर गाधी के पक्ष मे होगये है। न तो उन्होने उस सधि की कोई आलोचना की है, जो अविश्वसनीय है, न भारतवर्ष के भाग्य की डोर को अकेले एक व्यक्ति के हाथो मे सौप देने की खतरनाक योजना को ही उन्होने बुरा बताया है। लेकिन अगर ठीक से प्रयत्न किया जाय तो हम इससे विपरीत मत के लिए भी कुछ समर्थन प्राप्त कर सकते है। हम रैंजमी को मिस्टर गाधी से मिलने के लिए लदन भेजना चाहते है और मजदूर-दल के अपने दोस्तो के पास दर्जनो चिट्ठिया और तार भेजकर यह दबाव डालना चाहते है कि वे भारतवर्ष की पूरी मागे स्वीकार कर ले। अगर गाधी दृढ रहे और घर लौटकर आपने उनपर दबाव डाला तो शायद हम लोग यहा से भी उनपर कुछ जोरदार प्रभाव डाल सके। हमे तार से सूचित कीजिये कि हम आपसे इस सहायता की आशा करे या न करे और हमारा यह सब करना आपकी और वामपक्ष के दूसरे लोगो की इच्छा के अनुकूल होगा या नही।

हिंदुस्तान की राष्ट्रीय महासभा का समर्थन करने के कारण मै अभी-अभी साम्राज्यवाद-विरोधी लीग से निकाल बाहर किया गया हू। खैर, उसका तो कोई महत्व नही है, लेकिन यह बहुत जरूरी है कि काग्रेस समझौता न करके अपनी साम्राज्य-विरोधी नीति बनाये रखे, जिससे कि पूर्व के सारे साम्राज्यवादी देशो मे इसी प्रकार की क्रान्ति को प्रोत्साहन मिले।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,

रोजर बाल्डविन

८६ ई. स्टॉग्डन की ओर से

दी विकारेज, हरो,

३१ मई १९३१

प्रिय नेहरू,

क्या आप वही प्रिय नेहरू है, जो सन् १९०६ मे हैरो मे हेडमास्टर के घर रहते थे ? अगर वही है तो मै आपके पिता की मृत्यु पर आपको सहानुभूति का पत्र लिखना चाहूगा। पिता की मृत्यु एक भयानक हानि होती है।

मेरे पिता भी हैरो मे मास्टर थे और बहुत ही होशियार थे। उनकी मृत्यु ८० साल की उम्र मे हुई थी, और मै कभी भी उस शोक को भुला नही पाया हू। मुझे तो सिर्फ एक बात का संतोष है कि मै उन्हे इतनी अच्छी तरह से समझता और प्यार करता था कि मुझे लगता है कि एक प्रकार से वह अब भी मेरे साथ है।

अगर आप कभी इग्लैड आये तो मुझसे मिलने और पुराने दोस्तो से बातचीत करने के लिए यहा आना न भूले। हैरो मे मै हमेशा कितना खुश रहता था। मैने अब स्कूल छोड दिया है और मै केवल एक पादरी की हैसियत से शहर के लोगो को नेक बनाये रखने की चेष्टा कर रहा हूं।

शुभकामनाओ के साथ,

आपका,

ई. स्टॉग्डन

८७. महात्मा गांधी की ओर से

बोरसद

२८ जून १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र और पोस्टकार्ड मिले। खुशी है कि रायबरेली मे धारा १४४ का नोटिस वापस ले लिया गया। बेशक इसका कारण मुख्य सचिव के नाम तुम्हारा स्पष्ट पत्र था। जबतक तुम कार्य-समिति के लिए वम्बई पहुचोगे तबतक समिति को निश्चित मार्ग-दर्शन के लिए तैयार रहना चाहिए।

मुझे बिल्कुल यकीन होगया है कि हमारा मामला सम्पूर्ण बनाने के लिए जरूरी है कि तुम गवर्नर को मिलने के लिए कहो। यह मुलाकात मागते हुए तुम उनसे कहो कि तुम इस कोशिश मे कोई कसर बाकी नही रखना चाहते कि प्रान्त के सर्वोच्च अधिकारी के सामने स्पष्ट स्थिति रख दी जाय। शायद गवर्नर से तुम कुछ भी लेकर नही आओगे, लेकिन उनसे मिलने और समझौते का पालन कराने का प्रयत्न करके तुम अवश्य ही हमारी स्थिति को पहले से मजबूत बनाओगे। उनसे मिलने का प्रस्ताव करके और वे प्रस्ताव मजूर कर ले तो उनसे मिलकर हम कुछ खोयेंगे नही।

उन्नाव जिले की घटनाओ के बारे मे मैने 'यग इडिया' मे जो लिखा है

वह तुमने देखा होगा। तुमने और दूसरे लोगो ने जो सामग्री भेजी है उसके आधार पर मै फिर लिखनेवाला हू ।

यह दुर्भाग्य की बात हुई कि कार्य-समिति को स्थगित करना पडा। वहा के मौजूदा हालात मे वल्लभभाई का इलाहाबाद जाने के लिए घोर विरोध था। मेरा भी यही खयाल है कि कानपुर और उत्तर प्रदेश की अन्य उत्तेजना को देखते हुए फिलहाल इलाहाबाद को छोड देना ही बेहतर था।

पडित जवाहरलाल नेहरू, बापू
आनदभवन,
इलाहाबाद

[इस पत्र में जिस 'समझौते' का जिक्र है, वह उत्तर प्रदेश किसान स्थिति से संबध रखता है। मेरा खयाल है, गांधीजी ने खास तौर पर उस समझौते का जिक्र किया है जो उनके गोलमेज-सम्मेलन में भाग लेने के लिए इग्लैंड जाने से पहले लार्ड विलिगडन के साथ हुआ था।]

८८. महात्मा गाधी की ओर से

बोरसद
१ जुलाई १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा २७ जून का पत्र बारडोली होकर भेजा हुआ मिला। शायद तुम्हे मालूम नही था कि बम्बई से मै बोरसद लौट आया था, क्योकि वल्लभ-भाई के और मेरेलिए हमारा काम बाट लेना जरूरी होगया है । सतत मौजूद और जागरूक रहकर खतरा टाला जा रहा है। मगर बोरसद मे किसी भी दिन विस्फोट हो सकता है। मुझे दक्षिण अफ्रीका मे समझोतो का पालन कराने का कठिन अनुभव हो चुका है। वहा तो यह भी हुआ कि अपनी तरफ से सौ फीसदी अमल कराने मे बेचारा सिर फोड दिया गया और फिर सरकार से काम-चलाऊ अमल कराने मे मुझे अपनेको गिरफ्तार करा लेना पडा। लेकिन मेरा खयाल था कि समझौतो का पालन कराने के बारे मे सबकुछ भूल गया हू। किन्तु अब मै पुरानी स्मृतिया फिर से ताजा कर रहा हू और बहुत-से वे ही अनुभव फिर हो रहे है। परन्तु मुझे बडा सन्तोष यह

मेरा पैर किसी रहस्यपूर्ण दर्द से करीब-करीब बेकार-सा होगया है, जिसका कोई इलाज नही दिखाई पडता ।

बेबे भी बहुत ठीक नही है, पर यह मौसम के कारण थोडे दिनो के लिए ही है। सीलन और बेहद परिश्रम का उसपर असर पडा है। इंदू को मै लिख रही हू ।

सप्रेम,

सरोजिनी

फिर से—

मेरे पास सी एल यू के लिए थोडा-सा रुपया और है ।

[सी. एल. यू .से सकेत सिविल लिबर्टीज यूनियन—नागरिक स्वाधीनता संघ—की ओर है, जो मेरे सुझाव पर शुरू की गई थी और जिसकी सरोजिनी नायडू अध्यक्षा थी ।]

९० रोजर बाल्डविन की ओर से

२४ सितम्बर १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

आपने मेरे पास जेनेवा मे तार भेजने की जो कृपा की थी उसके लिए, पता नही, मैने आपको धन्यवाद भेजा या नही । आपके सुझाव पर मैने पेरिस जाकर ट्रेन पकडी और वहा से मै बोलोन पहुचा, क्योकि मै अब भी अग्रेजो की 'ब्लेक लिस्ट' पर हू और गाधी से मिलने के लिए इग्लैड नही जा सकता था। सौभाग्य से प्लेटफार्म पर मिसेज नायडू ने मुझे पहचान लिया और वह मुझे अपने डिब्बे मे ले गई, नही तो मै ऐसी गाडी मे कैसे ठहर सकता था, जो कि खास तौर से जहाजी यात्रियो के लिए सुरक्षित की गई थी ।

मैने सब लोगो से कहा कि अमरीका मे आदोलन लगातार चलता रहना चाहिए, खास तौर से अब जबकि ब्रिटेन पर वाल-स्ट्रीट के बैकरो का प्रभुत्व होगया है और मैकडोनल्ड 'टोरी' बन गये है । मैने यह बात तय करा ली है कि अगर कान्फ्रेस असफल रही तो मिसेज नायडू भेजी जायगी और मुझे उम्मीद है कि वह जरूर असफल रहेंगी बशर्ते कि गाधी ने मेरे अनुमान से अधिक समझौते की भावना न दिखलाई। मै स्पष्ट कह देना चाहता हू कि मुझे वहा का वातावरण बिल्कुल पसन्द नही आया। न तो लोगो के विचार स्पष्ट है, न उनमे एकता है और न उनमे सकल्प की पर्याप्त दृढता है।

सब-के-सब गांधी में इतने केन्द्रित हैं कि यह बात सवेरे से त्यागी नहीं मानी जा सकती। मैं गांधी के सारे निर्देशों के बारे में जानता हूं और उनकी सहन-शक्ति तथा सूझ-बूझ की प्रशंसा भी करता हूं।

श्रीमान !

मुझे समझौते की कोई चिन्ता नहीं है, लेकिन मैं तो अमरीका में वही प्रचार करूंगा जो मुझे स्पष्ट रूप से समझ में आ रहा है और इस विश्वास पर करूंगा कि वहां के लोगों को स्वतन्त्रता केवल सार रूप में स्वीकार्य होगी। इसका मतलब यह है कि सेना, अर्थव्यवस्था और विदेशी सम्बन्ध को वे अपने अधिकार में रखना चाहेंगे। गांधी ने मुझे यह बात स्पष्ट रूप से बता दी थी कि वह इसीको आधार मानकर काम करेंगे और उन्होंने इसी आधार पर आगे बढ़ने के लिए अपनी सहमति भी दी थी। चार्ली एंड्रूज ने भी सहमति दी थी और मुझे बड़ा आश्चर्य है कि ब्रिटेन की स्थिति में अन्तर होने से अमरीका के महाजनों पर जो असर पड़ेगा उसे और साथ-ही-साथ भारत की राजनैतिक क्रान्ति में जो आर्थिक समस्याएं निहित हैं,

आपको और आपके परिवार को हार्दिक अभिनन्दन ।

रोजर बाल्डविन

९१ मेरी खानसाहब की ओर से

[मेरी खानसाहब खान अब्दुल गफ्फार खा के भाई और पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त की जनता के मशहूर नेता डाक्टर खानसाहब की धर्मपत्नी थी । श्रीमती खानसाहब एक अग्रेज महिला थीं ।]

३, मिच्नी रोड, पेशावर
१ अक्तूबर १९३१

प्रिय जवाहरलाल,

मै सचमुच अपना फर्ज समझती हू कि आपको लिखू । खान तो खत लिखने से बेहद घबराते है । उनका बहुत-से नेक लोगो से सिर्फ खत न लिखने की वजह से ताल्लुक छूट गया । वह कभी बैठकर खत शुरू कर ही नही सकते । सच तो यह है कि वह कभी घर पर ही नही रहते । वह वडे तडके घर से निकल जाते है और बहुत रात गये लौटते है, थककर चूर और किसी भी काम के लिए बेकार, यहातक कि गपशप भी नही कर सकते । जहातक आपको खत लिखने का ताल्लुक है, वह हर वक्त कहते है कि लिखेगे, मगर बस कहकर रह जाते है । उनके नाम आपके लिखे बहुत-से खत उनके बैग मे पडे है । एक १९२१ का खत है, जो आपने चलती रेलगाडी मे बैठकर लिखा है । जब आपका फोटो मिला तो उन्होने एकदम मुझसे कहना शुरू किया कि वह जवाब मे आपको क्या-क्या लिखेंगे । इसपर मैंने कहा—आओ और इसी वक्त शुरू कर दो । ओर वह कहने लगे—नही, अभी नही, मुझे बहुत जरूरी काम करने है, और मैं मन को जमा नही सकता । मै जल्दी ही लौटूगा और आज ही याद करके चिट्ठी लिखूगा । लेकिन वह अपने इरादे पर अमल न कर सके । जॉन ने भी एक साल पहले लिखा था कि क्या ये सचमुच मेरे वालिद है ? ये तो मुझे कभी खत ही नही लिखते । मै बहुत जोर डालूगी कि वह आज सुबह आये हुए आपके खतो का जवाब दे । उन्हे मैंने खोलकर उनके पास भेज दिया है । मै उम्मीद करती हू कि किसी दिन हम लोग आपके यहा आयेगे या फिर आप हमारे यहा आयेगे ।

आपकी बीवी को मेरा प्यार ।

आपकी,
मेरी खानसाहब

९२. महादेव देसाई की ओर से

[यह पत्र तब लिखा गया था जब गांधीजी गोलमेज-परिषद् में लंदन गये थे।]

८८ नाइट्स ब्रिज,
लंदन, एस. डब्ल्यू. १,
२३ अक्तूबर १९३१

प्रिय जवाहरभाई,

हवाई डाक का दिन तो आ पहुचा, मगर मै सदा की भाति ही परेशानी की हालत मे हू। मताधिकार-समिति मे जब बापू ने जोरदार भाषण दिया तो छोटा-सा तूफान आगया। उन्होने कहा, "बार-बार सम्राट् के अधीन और ऐसी ही दूसरी बाते सुन-सुनकर मै तग आगया हूं। काग्रेस ने इस तरह सोचना बहुत पहले ही छोड दिया है और इस मनोवृत्ति को जितनी जल्दी तिलाजलि दे दी जाय उतना ही अच्छा है।" लार्ड सैकी ने बापू को इस स्पष्टवादिता और निर्भयता के लिए बधाई दी और मेरे खयाल से सच्चे दिल से दी। लेकिन मेरा अनुमान है कि २७ तारीख के बाद तक कोई आशा नही रखा जा सकती। मुसलमानो के साथ बातचीत बन्द है और जबतक वे नही चाहेगे, बापू चलकर उनसे बात नही करेगे। दत्त (डा. एस के. दत्त) ने हमे एक किस्सा सुनाया, जिससे तुम्हारा भी जरूर मनोरजन होगा। वह उस दिन एक अंग्रेज मित्र, कैम्बेल रोड्स के यहा जिन्ना के साथ खाना खा रहे थे। जिन्ना ने शैम्पेन की तीसरी बोतल चढा ली थी, तब अल्पसख्यको के प्रश्न पर चर्चा हो रही थी। श्री रोड्स ने कहा, "आप लोग कोई परस्पर स्वीकृत हल देकर सरकार को झुकने के लिए विवश क्यों नही कर देते ?" जिन्ना ने शैम्पेन के सौम्य (!) प्रभाव मे उत्तर दिया, "आप यही तो भूलकर रहे है। जबतक हमे यह पता न चले कि हमे क्या मिलनेवाला है तब-तक कोई भी आपसी समझौता असभव है।" यह तो वही चीज हुई जो बापू कहते रहे है और जिससे मुसलमान इन्कार करते रहे है (हा, यह उदाहरण ऐसा है, जिससे शराबबन्दी के विरोधियो को प्रबल युक्ति मिल जायगी।)

लॉर्ड इरविन बापू से मिले थे (या बापू उनसे मिले थे)। उनका आग्रह

था कि जबतक वह अनुमति न दे, बापू को जाने का विचार नही करना चाहिए'। उनका कहना है कि स्थिति निराशाजनक नही है और कम-से-कम चुनावो के खत्म होते ही निराशाजनक नही रहेगी। हर हालत मे वह तो पूरी कोशिश करके दूसरो के गले यह बात उतारेगे ही कि काग्रेस की अधिकाश मागे स्वीकार करने लायक है। अगर अनुदार दल चुनाव जीत गया (और यह बिल्कुल सभव है) तो इरविन मत्रिमडल के सदस्य हो सकते है। परन्तु बापू इन सयोगो को आधार न बनाकर हर जगह और हर मौके पर अपने मन की बात कह डालते है। चैथम भवन की सभा बहुत सफल रही। यह अनुदार दल का अड्डा है, हालाकि सभापति लोथियन थे। और यद्यपि यूसुफ अली और कर्नल गिडनी ने बहुत-सी ऊलजलूल बाते कही, परन्तु बापू पूरी रगत मे थे और उन्होने बहुतो के मन जीत लिये। इतिहासकार जी पी गूच को तुम जानते हो। उन्होने कहा कि चैथम भवन मे उन्होने इतनी बडी सभा नही देखी थी और उसका बहुत लोगो पर जबर्दस्त असर हुआ। मैने यह सब सामग्री सदानद के मार्फत तार से भिजवा दी। तुमने देखी होगी। चैथम भवन का उल्लेख मै नही कर सका, क्योकि उनकी कार्रवाई बन्द कमरे मे हुई मानी जाती है।

वे पादरियो और लाटपादरियो को काफी समय दे रहे है। पता नही, तुम इसपर क्या खयाल करोगे। मगर मुझे विश्वास है कि इससे उन्हे सच्ची और अच्छी शिक्षा मिलेगी और वे भी उसे भूलेगे नही। ससद को (या मत्रि-मडल को, मै भूल रहा हू किसको ?) एक प्रार्थना-पत्र देने का विचार गभी-रतापूर्वक किया जा रहा है, जिसमे भारत के साथ दोनो पक्षो के लिए सम्मानपूर्ण समझौता करने की माग की जाय। और लोगो के साथ उसपर दोनो लाट-पादरियो के भी हस्ताक्षर होगे।

बापू ने तुम्हारा तार होर के पास भेज दिया था। उन्होने अभी तक उत्तर नही दिया है। मेकडोनाल्ड के नाम के पत्र और उनके जवाब की नकले तुम्हारे पास भेजना मै भूल गया था। उसमे बहुत-कुछ तो नही था, परन्तु नकले कराकर इस पत्र के साथ भेजने की कोशिश करूगा। बापू ने शुएब को भोपाल के लिए लिखा गया एक पत्र उस दिन दिया था। उसमे यह बताया था कि सघीय अर्थ-व्यवस्था के बारे मे रियासतो को क्या सामान्य सिद्धान्त

मान लेने चाहिए। इसपर दो दिन तक चर्चा हुई, परन्तु कुछ भी परिणाम न निकला । एक 'खानगी' नाट्यशाला में मैने एक खेल देखा। तुम्हे आघात तो नही लगेगा ? खैर, मुझे तो पता नही था कि खानगी नाट्यशाला क्या बला होती है। यह एक अप्रमाणित खेल था। मुझे ज़रा भी परवा तो नही करनी चाहिए थी, परन्तु सारे दृश्य (लगभग १०) निर्विवाद रूप से शयनकक्ष के दृश्य थे और इतने भद्दे थे कि देखकर जी उकता रहा था। फिर भी मै मानता हू कि कला विलक्षण थी। लेकिन जो वस्तु मुझे पसन्द आई वह थी 'बैरेट्स ऑव विमपौल स्ट्रीट'। यह 'क्रानिकल' वालो का खेल था जिसके बारे मे मैने उन्हे लिखा था। इसकी कल्पना और कला दोनो सुन्दर थी। खेल, सामान और हर चीज सूक्ष्म रूप मे भी विशुद्ध थी। हा, मै विशुद्ध शब्द का प्रयोग जान-बूझकर कर रहा हू। मै सोच सकता हू कि एक 'खानगी नाट्यशाला' विशुद्ध हो सकती है। इसलिए मै 'बैरेट्स मे एक बार फिर गया। साथ की कतरन से तुम्हे बड़ा आनन्द आयेगा। एक गरीब देश के प्रतिनिधि के सचिव यह सब धधे कर रहे है!

आज रात को हम ईटन जा रहे है और वहा से ऑक्सफोर्ड जायगे। इस यात्रा की बाट मै बहुत दिन से देख रहा था।

स्नेहाधीन,

महादेव

हा, सप्रू-मडली की भी थोडी-सी बात सुन लो। वह बापू से भरूचा की तरह यह जानना चाहते है कि सेना के सम्पूर्ण नियत्रण से उनका क्या अभिप्राय है! "महात्माजी, गृह-युद्ध छिड़ जाय तो आप तो कह देगे, 'अरे कोई परवा की बात नही, यदि थोड़ा-सा खून बह जाय।' परन्तु मै तो गृह-युद्ध को बरदाश्त नही कर सकता। मै तो जरूर फौज को बुलाऊगा और वह भी ब्रिटिश फौज को ?"

क्या तुम इस पत्र की नकल अन्सारी को भेज दोगे? मेरे पास उनका बढिया खत आया है। कृपा करके उन्हे बता दो कि उनका पत्र मुझे मिल गया था और यह पत्र मै उन्हे भी बताना चाहता हू।

महादेव

९३. महात्मा गांधी की ओर से

[मैं इलाहाबाद से बम्बई गांधीजी से उनके गोलमेज-सम्मेलन से लौटने पर मिलने के लिए जा रहा था कि गिरफ्तार कर लिया गया। शेरवानी भी मेरे साथ थे। उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया गया। उसी समय के आस-पास कुछ प्रान्तों में अनेक आर्डिनेंस जारी हुए। खान अब्दुल गफ्फार खां और दूसरो को सीमा प्रान्त में गिरफ्तार कर लिया गया। इस सबका मकसद यह था कि गांधीजी के लौटने के पहले ही हमारे आन्दोलन को कुचल दिया जाय।]

२८ दिसम्बर १९३१

प्रिय जवाहर,

इन्दू ने तुम्हारा पत्र मुझे दिया। कुछ भी हो, तुम्हारी गिरफ्तारी से मुझे आश्चर्य नही हुआ। मैं अभी तक कमला के पास नही जा सका हू। आज रात को जा सकता हू, कल तो जरूर ही। तुम्हे यह जानकर प्रसन्नता होगी कि इन्दू के नाम तुम्हारी दूसरी पत्र-माला मैंने पढ ली है। मुझे कुछ सुझाव देने थे, परन्तु यह तो शायद तभी होगा जब हम अपने-अपने स्वरूप मे होगे।

इस बीच तुम्हे और शेरवानी को प्यार।

बापू

९४. महात्मा गांधी की ओर से

२९ जनवरी १९३२

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र पाकर हर्ष हुआ। हम बेचारे बाहरवालो से ईर्ष्या करने का तुम्हारे लिए कोई कारण नही। परन्तु हमे तुमसे इस बात की ईर्ष्या अवश्य है कि तुम्हे तो सारा गौरव प्राप्त हो रहा है और हम बाहरवालो के भाग्य मे बेगार लिखी है। परन्तु हम बदला लेने का षडयन्त्र रच रहे है। आशा है, तुम्हे कुछ अखबार दिये जाते होगे। मैं जो कुछ कर रहा हू, उसमे तुम सदा मेरे मन मे बसे रहते हो।

उस दिन कमला से मिला था। उसे बहुत अधिक विश्राम की आवश्यकता है। मैं उससे एक बार फिर मिलने की कोशिश करूगा और आग्रह करूगा

कि जबतक वह पूरी तरह अच्छी न होजाय अपना कमरा न छोडे । आशा है कि डाक्टर महमूद के बारे मे की गई कार्रवाई से तुम सहमत होगे । मुझे विश्वास है कि आनन्दभवन पर लगाया गया कर चुकाने का वचन पूरा किया जायगा ।

तुम दोनो को प्यार ।

बापू

ईश्वर ने और सरकार ने चाहा तो कल आश्रम जाऊगा और दो-तीन दिन में लौट आऊगा ।

९५. देहरादून जिला-जेल के सुपरिटेडेट के नाम

[यह पत्र-व्यवहार जेल की एक घटना को लेकर हुआ था। जेल में हमारी यह नीति रही थी कि अगर जेल के कायदों को अपमानजनक या दूसरी तरह से अनुचित न समझा जाय तो उनका पालन किया जाय। फिर भी समय-समय पर कुछ घटनाएं घटती रही । एक मर्तबा जबकि मैं नैनी सेंट्रल जेल में था, हम लोगो में से कुछने विरोध-स्वरूप पूरे तीन दिन (बहत्तर घंटों) का उपवास किया । आमतौर पर जेल में मुलाकात करने की हमें इजाजत थी । किसी समय ये मुलाकाते तीन महीने से एक मर्तबा होती, बाद में हर महीने, और जिस वक्त यह पत्र-व्यवहार हुआ मुझे हर पखवारे मुलाकात की इजाजत थी । चूंकि मै देहरादून जेल में था, मेरी मां और पत्नी को मिलने के लिए इलाहाबाद से दूर का सफर करके आना पड़ा । उनके देहरादून आने पर उनसे कहा गया कि वे मुझसे मुलाकात नहीं कर सकतीं । इस घटना के फलस्वरूप मैंने कई महीने तक मुलाकात करना छोड़ दिया । उस वक्त मै कमोबेश तनहाई मे था और मेरा कोई साथी नहीं था ।]

सुपरिटेडेट
जिला जेल, देहरादून,

जिला जेल, देहरादून,
२२ जून १९३२

प्रिय महोदय,

आपने आज खबर दी है कि आपके पास ऊपर के अधिकारियो की यह इत्तिला आई है कि मैं एक महीने तक अपनी पत्नी और मा से मुलाकात नही कर सकता । मैं समझता हू कि जेल के कायदे-कानून के मुताबिक मुलाकाते

उन नियमो के खिलाफ कोई कसूर करने पर सजा के तौर पर वद की जाती है। वडी मेहरबानी होगी, अगर आप स्थानीय सरकार या इस्पेक्टर जनरल या जिस किसीने आपको इत्तिला भेजी है, उससे यह मालूम कर ले कि मैंने कौन-सा कसूर किया है, जिसके लिए मुझे यह सजा दी गई है। स्थानीय सरकार ने बिना मुझे खबर किये ऐसी सूचनाए निकालकर काफी अभद्रता का काम किया है। जेल के कानून-कायदो को, अगर वे भद्र और मुनासिब है तो, मानने की हमारी आदत रही है। फिर भी, अगर सरकार इस ढग से वर्ताव करती है जिसमे शिष्टता और भद्रता की कमी है तो हमारे लिए अपने मौजूदा रुख को जारी रखना मुश्किल होगा।

यह साफ नही है कि एक महीने के लिए सारी वुलाकाते वन्द कर दी गई है या यह पावदी मेरी पत्नी और मा की मुलाकातो पर ही है। जो हो, यह मेरे लिए बेसूद है। अगर दूसरो से मिलने की छूट हो भी तो भी वैसी किसी मुलाकात का मै फायदा नही उठाऊगा।

जैसाकि आप जानते है, मेरी मा और पत्नी मुझसे मिलने के लिए देहरादून से खास तौर पर आई है और अगली मुलाकात के दिन का यहा इतजार कर रही है। आपकी मिली इस नई इत्तिला से उनका प्रोग्राम बिलकुल बिगड जायगा और उनका यहा रहना किसी काम का नही होगा। लेकिन मेरा अदाज है कि जो सरकारे नीति के ऊचे मामलो मे दखल रखती है, वे शिष्टता और भद्रता के मामूली नियमो की कोई परवा नही करती।

भवदीय,

जवाहरलाल नेहरू

प्रेषक : लेफ्टीनेट कर्नल जी हालरॉयड, आई एम एस
ऑफीशियेटिग इस्पेक्टर जनरल ऑफ प्रिजन्स, यू पी

प्राप्तकर्ता : सुपरिंटेंडेंट
जिला जेल, देहरादून,

लखनऊ,
८ जुलाई १९३२

विषय 'ए' वर्ग के वदी प० ज्वोहरलाल नेहरू का प्रार्थना-पत्र
उनका प्रत्यकन स० ८१८/४६ दिनाक २३-६-३२

प्रार्थी को सूचना दी जा सकती है कि २७ मई १९३२ को उनकी

मा, पत्नी और पुत्री ने श्री आर. एस पडित से इलाहाबाद जिला जेल मे भेट की।

उनकी पत्नी ने एक पत्र श्री आर एस. पडित को दिया। जेलर बिना सुपरिटेडेट की आज्ञा से ऐसा नही करने दे सकता था। इसपर उनकी मा ने जेलर के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और अभद्रता दिखाई।

इन कारणो से सरकार ने आज्ञा निकाली है कि श्रीमती ज्वाहरलाल नेहरू और श्रीमती मोतीलाल नेहरू को प्रार्थी से एक मास तक भेट करने की इजाजत नही होगी।

(हस्ताक्षर)...

लेफ्टीनेंट कर्नल, आई. एम एस.

ऑफ़ीशियेटिंग इंस्पेक्टर जनरल ऑव प्रिजन्स, यू. पी.

९६. सुपरिटेंडेंट, जिला जेल, देहरादून के नाम

सुपरिटेडेट, **देहरादून जेल**

जिला जेल, देहरादून ११ जुलाई १९३२

प्रिय महोदय,

आपने आज मेरे २२ जून के खत का जवाब, जो कि आफीशियेटिंग इंस्पेक्टर-जनरल ऑव प्रिजन्स के नाम भेजा गया था, मुझे दिखाने की मेहरबानी की। उसमे मुझे खबर दी गई है कि इलाहाबाद जिला जेल मे श्री आर. एस. पडित से २७ मई को मुलाकात के दौरान मे मेरी पत्नी ने श्री पडित को एक खत दिया और चूकि जेलर ने इसकी इजाजत नही दी, मेरी मां ने "जेलर के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और अभद्रता दिखाई।"

चूकि जो कुछ हुआ उसका यह गलत बयान है और मुद्दो को तोड़-मरोडकर बताया गया है, और इसके अलावा, चूकि सरकार की ओर से उठाये गए कदम से बडे-बडे मुद्दे पैदा होते है, मै इस बारे मे आपको फिर लिख रहा हू और आप इस खत को सरकार के पास भेज देगे तो बड़ी मेहरबानी होगी।

२७ मई को मुलाकात के दौरान मे श्री पडित को उनकी तीन लडकियों

के बारे मे, जोकि तीन, पाच और आठ साल की है और जो कि पूना के एक स्कूल मे पढ रही है, खबर दी गई थी। यह खबर स्कूल से मिली एक रिपोर्ट या खत मे थी। मेरी लडकी के पास, जो उसी स्कूल मे पढती है और जो उस वक्त छुट्टी मनाने इलाहाबाद आई हुई थी, यह खत या रिपोर्ट थी और उसने इसे श्री पडित को पढकर सुनाया, और बाद मे उसे श्री पडित को खुद देखने के लिए दे दिया। जेलर ने इसपर ऐतराज किया और आमतौर पर अभद्रता दिखाई, खासतौर पर श्री पडित के प्रति। श्री पडित की जो बेइज्जती की गई, उसके अलावा यह मेरी मा और पत्नी की भी बेइज्जती थी। मेरी मा तो उनसे शायद ही कुछ बोली हो।

तीन दिन बाद, ३० मई को, बरेली जिला जेल मे अपनी मा, पत्नी और बेटी से मेरी हमेशा की तरह पखवारेवाली मुलाकात हुई। उस वक्त मुझे इस घटना की खबर मिली। यह जानकर मुझे ताज्जुब हुआ कि मेरी मा के प्रति ऐसी अभद्रता से व्यवहार हुआ और मै आशा करता था कि जेल के अधिकारी जो कुछ बीती उसपर अफसोस जाहिर करेगे। ऐसा करने के बजाय, अब मै देखता हू कि सरकार ने मेरी मा और स्त्री को ही दड देना तय किया है। मेरा अन्दाज है कि उनका यह फैसला जेलर के किसी बयान की बिना पर है, जो उसने उन्हे दिया है। जहातक मै जानता हू, मेरी मा या पत्नी से इस बारे मे कुछ भी पूछताछ नही की गई कि वास्तव मे क्या बात हुई। बिना कोई और जाच किये या सच बात जानने की कोशिश किये सरकार ने मेरी मा और पत्नी को बेइज्जत करने मे कोई सकोच नही किया, और वह भी इस ढग से किया गया कि सभी सबधित व्यक्तियो को अधिक-से-अधिक असुविधा हो।

हो सकता है कि जेल के कायदो के मुताबिक किसीको उसके बच्चो की स्कूल की रिपोर्ट दिखाना भी अपराध हो। चाहे यह कोई बडा अपराध न भी हो तो भी उसे किसी नये आर्डिनेस द्वारा ऐसा बनाया जा सकता है। इसलिए अगर सरकार इसे भी दडित करने योग्य अपराध मानती है तो मुझे कोई गिला नही। न मुझे इस बात का कोई मलाल होगा कि मेरी मुलाकाते एक महीने के या एक साल के लिए बद कर दी जाय। मै जेल मे अपनी सेहत सुधारने या मौज करने के लिए नही आया हू।

लेकिन कुछ बाते है, जिनके बारे मे मै चुप नही रह सकता। मै अपनी मा के प्रति अपमान या अभद्रता को बर्दाश्त नही कर सकता। मैने गहरे खेद के साथ यह देखा है कि सरकार ने मेरी मा के प्रति वह भद्रता नही दिखाई है, जिसकी कि मै उससे हर हालत मे उम्मीद करता था। इस्पेक्टर जनरल के लिए यह कहना कि मेरी मा ने "जेलर के प्रति अपमानजनक भाषा का प्रयोग किया और अभद्रता दिखाई" यह जाहिर करता है कि उनमे अजीब तरह से समझ की कमी है, वह हिन्दुस्तानी समाज को नही जानते और न वह भली भाषा का प्रयोग जानते है।

सरकार ने जो कार्रवाई की है और उसे जिस ढंग से किया है, उससे जाहिर है कि मुझसे जो जेल मे भेट करना चाहते है, उनका सरकार के अधिकारियो द्वारा या स्वय सरकार द्वारा हमेशा अपमान हो सकता है। किसी हालत मे भी मै इस बात की ज़रा भी जोखिम नही उठाना चाहता कि मेरी मा या पत्नी की आगे फिर बेइज्जती हो। ऐसी हालत मे मेरे लिए एक ही रास्ता रह गया है, और वह यह कि जबतक मै यह न महसूस करूं कि इस तरह की मुलाकाते इज्जत के साथ होगी और मुलाकातियो के प्रति किसी अभद्रता का डर नही होगा, तबतक मै कोई मुलाकात ही न करूं। इसलिए मै अपने घरवालो को खबर कर रहा हू कि आगे वे मुझसे मुलाकात के लिए आने की तकलीफ न करे, एक महीने की सजा खत्म हो जाने पर भी न आवे।

यदि आफीशियटिग इस्पेक्टर-जनरल आगे मेरे नाम के हिज्जे ठीक लिखने की तकलीफ गवारा करे तो मुझे खुशी होगी।

भवदीय,
जवाहरलाल नेहरू

९७. महात्मा गांधी की ओर से

यरवदा सेंट्रल जेल
पूना,
३१ दिसम्बर १९३२

प्रिय जवाहरलाल,

सरूप उस दिन अस्पृश्यता-सम्वन्धी अपनी योजना पर चर्चा करने मेरे

पास आई थी। उसने कहा कि तुम्हारी सलाह सीलोन मे आराम लेने की है। मैं इसे अनावश्यक समझता हू। वह थोडा काम करने लायक जरूर है और कुछ अस्पृग्यता का काम करने को बिल्कुल रजामद है। मेरे खयाल से जबतक वह काम करना चाहती है करने देना चाहिए।

उसने मुझे बताया कि तुमने कुछ दात और निकलवा दिये है। उधर वह अपने बाल सफेद करने पर तुली है। मुझे तो आखो देखनेवालो ने बताया है कि वैसे तुम्हारा स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहता है। मालूम होता है कि तुम अब भी मिलने आनेवालो से मुलाकाते नही कर रहे हो। मै चाहता हू कि यदि सम्भव हो तो तुम मुलाकाते करो। इससे उन्हे सतोष मिलेगा।

छगनलाल जोशी के आ मिलने से हमारी चार की सुखद टोली बन गई है। मुझे पता नही कि तुम हरिजन-कार्य मे दिलचस्पी ले रहे हो या नही। शास्त्रियो के साथ अच्छा समय बीत रहा है। शास्त्रो का अक्षर-ज्ञान मेरा पहले से अच्छा होगया है, परन्तु सच्चे धर्म का ज्ञान वे मुझे थोडा ही दे सकते है।

हम सबकी तरफ से प्यार।

बापू

९८ महात्मा गाधी की ओर से

यरवदा सेंट्रल जेल
पूना,
१५ फरवरी १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे सुन्दर पत्र के उत्तर मे अच्छा पत्र लिखने की आशा से मैं तुम्हे लिखना टालता गया। पर अब अधिक देर नही कर सकता। रोज काम बढ़ रहा है। इसलिए मुझे अभी जैसा भी लिखा जा सके लिखना होगा। पता नही तुम्हे 'हरिजन' जैसा निर्दोप पत्र भी दिया जाता है या नही। मै तो इस आशा से भेज रहा हू कि तुम्हे मिलता होगा। यदि मिलता हो तो मुझे अपनी राय लिखो। सनातनियो के विरुद्ध लडाई दिन-दिन दिलचस्प होती जा रही है, साथ ही अधिकाधिक कठिन भी। एक अच्छी बात यह है कि वे दीर्घकालीन मानसिक आलस्य से जाग उठे हैं। मुझपर जिन गालियो की बौछार ये कर रहे है वे अजीब ताजगी लानेवाली है। दुनियाभर की

वुराइया और भ्रष्टाचार मुझमे मौजूद है। मगर तूफान ठडा हो जायगा, क्योकि मै अहिसा की—अप्रतिशोध की रामवाण दवा का प्रयोग कर रहा हू। मै गालियो की जितनी उपेक्षा करता हूं उतनी ही वे भयकर होती जा रही है। परन्तु यह तो दीपक के आस-पास पतग का मृत्यु-नृत्य है । वेचारे राजगोपालाचार्य और देवदास की भी अच्छी खवर ली जा रही है। लक्ष्मी की सगाई को वीच मे घसीटकर उस वारे मे गन्दे आरोप गढे जा रहे है। अस्पृश्यता का समर्थन इस तरह होता है ! घरू मुलाकात के तोर पर इन्दू और अस्पृश्यता के वारे मे सरूप और कृष्णा मुझसे उस दिन मिली थी। इन्दू का स्वास्थ्य वहुत अच्छा था और वह विल्कुल प्रसन्न दिखाई देती थी। सरूप अस्पृश्यता-निवारण के लिए काठियावाड और गुजरात मे थोडे दिन का दौरा कर रही है और कृष्णा इलाहावाद जानेवाली थी। देवदास दिल्ली मे है और राजाजी की, जो कि अस्पृश्यता-निवारण के लिए कानून वनवाने मे असेवली के मेवरो से सम्पर्क कर रहे है, मदद कर रहा है। हमारा समय पूरी तरह अस्पृश्यता के काम मे लग रहा है। सरदार वल्लभभाई वाहर जानेवाले पत्रो की वढती हुई सख्या के लिए सारे लिफाफे वनाकर देते है। वे समाचार-पत्रो को परिश्रम से पढते है और अस्पृश्यता के विषय मे और न जाने कहा-कहा की छोटी-छोटी वातो की जानकारी खोद-खोदकर निकाल लाते है। विनोद के भी वह अटूट भडार है। मुआयने का दिन उनके लिए वैसा ही होता है जैसा और कोई दिन। वह कभी कोई मांग नही करते । मेरा कोई भी दिन ऐसा नही जाता जब मै कोई-न-कोई मांग न रखू। पता नही, हम दोनो में से कौन अधिक सुखी है। मुंह फुलाये विना मै अपनी हार को सहन कर लू तो मै भी उनकी तरह सुखी क्यो नही हो सकता !

तुम्हारे एकान्त और तुम्हारे अध्ययन से हम सवको ईर्ष्या होती है। यह सच है कि हमारे भार हमारे अपने ही या यो कहो कि मेरे ही ओढे हुए है। मैने वल्लभभाई की सस्कृत के अच्छे पडित वनने की सारी आशा चूर-चूर कर दी है। वह हरिजन-कार्य की उत्तेजना के वीच मे अपने अध्ययन पर ध्यान नही जमा सकते। वगाल के फुटवाल के खिलाडी जैसे अपने खेल का मजा लूटते है वैसे ही वल्लभभाई चटपटी आलोचना का आनन्द लेते है। महादेव तो, जैसा शौकत ने वर्णन किया था, टोपी के हमाल वने हुए है। कोई

भी काम उनके लिए अधिक या उनसे परे नही है। छगनलाल जोशी अभी पैर जमाने मे लगे हुए हैं। लेकिन मजे में है। वसन्त आ रहा है, उनपर भी बहार आये बिना नही रह सकती। वैसे हमे छाट-छाटकर रखा गया है। हम खेल के नियमो का पालन करते है और वर्णाश्रम-धर्म के नियमो का कठोर पालन करनेवाला एक खासा भद्र परिवार बने हुए हैं। इससे डाक्टर अबेडकर और मेरी मिली-भगत बनकर सनातनियो के लिए नई सनसनी का सामान मुहैय्या हो जायगा। मेरी परेशानी बढ जायगी, परन्तु विश्वास रखो कि वह मेरी मोल ली हुई नही होगी। अब मेरे पास इतना ही कहने का स्थान और समय रह गया है कि हम सबको आशा है कि तुम्हारी चतुर्मुखी प्रगति बराबर जारी होगी।

हम सबकी ओर से प्यार।

बापू

[सनातनियों से आशय कट्टर हिन्दुओ से है जो गांधीजी के छुआछूत-निवारण-आन्दोलन का विरोध कर रहे थे।

उसी समय गांधीजी के पुत्र देवदास का संबंध श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की पुत्री लक्ष्मी के साथ होना तय हुआ था। यह संबंध दो भिन्न जातियो में हो रहा था, इसलिए कुछ कट्टर हिन्दू उसकी निन्दा कर रहे थे।]

९९. महात्मा गाधी की ओर से

यरवदा सेंट्रल जेल
पूना,
२ मई १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

जब मै आनेवाले उपवास से जूझ रहा था, तब मानो तुम सशरीर मेरे सामने थे। लेकिन कोई लाभ नही। काश मुझे अनुभव हो सकता कि तुमने उपवास की नितान्त आवश्यकता को समझ लिया है! हरिजन-आन्दोलन मेरे बौद्धिक प्रयत्न के लिए बहुत बडी चीज है। सारे ससार मे इतनी बुरी चीज कोई नही है। फिर भी मै धर्म को और इसलिए हिन्दुत्व को छोड नही सकता। यदि हिन्दूधर्म से मै निराश हो जाऊ तो मेरा जीवन मेरे लिए भार बन जायगा। मैं हिन्दुत्व के द्वारा ईसाई, इस्लाम और कई दूसरे धर्मो से

प्रेम करता हू । इसे छीन लिया जाय तो मेरे पास रह ही क्या जाता है ? लेकिन मैं इसे छुआछूत और ऊच-नीच की मान्यता के रहते हुए सहन भी नही कर सकता । सौभाग्य से हिन्दूधर्म मे बुराई का रामबाण इलाज भी है। मैंने उसी इलाज का प्रयोग किया है । सम्भव हो तो मै तुम्हे यह महसूस करवाना चाहता हू कि यदि मैं उपवास के बाद बच रहू तो अच्छा ही है और यदि जीवित रहने की कोशिश के बावजूद यह शरीर नष्ट हो जाता है तो भी क्या बुराई है ? आखिर यह है ही क्या—एक झटके से टूट जानेवाली चिमनी से भी अधिक नाशवान है । उस काच के गोले को फिर भी दस हजार वर्ष तक ज्यो-का-त्यो रखा जा सकता है, परन्तु इस शरीर को एक मिनिट के लिए भी जैसे-का-तैसा नही रख सकते । और मृत्यु से अवश्य ही प्रयत्न-मात्र का अन्त नही हो जाता । ठीक ढग से सामना किया जाय तो मौत इसी उदात्त प्रयत्न का आरम्भ भी हो सकता है । परन्तु यह सत्य तुम्हे स्वय-स्फूर्ति से दिखाई न देता हो तो मै दलीलो से तुम्हे कायल नही करना चाहता । मै जानता हू कि तुम्हारी स्वीकृति मेरे साथ न भी हुई तो भी अग्नि-परीक्षा के इस सारे दौरान मे तुम्हारा बहुमूल्य स्नेह मेरे साथ रहेगा ।

तुम्हारा पत्र मिल गया था, जिसका उत्तर मैंने सोचा था फुरसत से दूगा, परन्तु ईश्वर की इच्छा और ही कुछ थी । कृष्णा से मेरी बाते हुई थी । मेरा खयाल है कि सरूप के काठियावाड के काम के बारे मे मैंने तुम्हे लिखा था। कमला ने तो मुझे अपना पता तक नही भेजा । बहुत दिनो से उसका कोई पत्र नही आया है । जब तुम उससे मिलो, उसे और इन्दू को मेरा प्यार पहुचा देना । कमला को उपवास की चिन्ता नही करनी चाहिए । हो सके तो मुझे तार देना ।

हम सबकी ओर से प्यार । बापू

१००. महात्मा गाधी की ओर से

२२ जुलाई १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

मैंने तुम्हे लिखने की कई बार इच्छा की, परन्तु मजबूर था। नई प्राप्त होनेवाली रत्ती-रत्तीभर शक्ति सामने रखे हुए आवश्यक कार्य को निपटाने मे लगाता रहा ।

माताजी और कमला के साथ बहुत अच्छा समय बीता। सरूप और रनजीत से अधिक नही मिल सका।

माताजी को कृष्णा की चिन्ता है। उसके भविष्य के बारे मे उन्होंने मुझसे लम्बी बातचीत की। इस मामले मे तुम्हारे पास मेरे लिए कोई सुझाव हो तो बताओ। अलबत्ता मेरी गति-विधिया अनिश्चित है। परन्तु इसकी परवा नही।

देवदास और लक्ष्मी को मैंने पूना मे छोडा था। अब वे यहा आनेवाले है। बहुत करके देवदास अभी दिल्ली मे बस जायगा। महादेव, बा और प्रभावती मेरे साथ है। खयाल है कि वे सब शीघ्र ही बिखर जा गे।

उपवास से पहले की शक्ति फिर से प्राप्त करने मे मन्द गति रही है। परन्तु मेरी दशा धीरे-धीरे सुधर रही है। सप्रेम,

बापू

१०१ महात्मा गाधी की ओर से

[यह पत्र मेरी छोटी बहन कृष्णा के राजा हठीसिग के साथ विवाह के अवसर पर मेरे पास भेजा गया था।]

१८ अक्तूबर १९३३

प्रिय जवाहरलाल,

साथ मे दो मालाए है। ये वर-वधू के लिए आज मेरे खासतौर पर काते हुए सूत से बनाई गई है। इनके साथ मेरे शुभ आशीर्वाद जुडे हुए है। मेरी तरफ से उनके गले मे डाल देना। आशा है, ये तुम्हारे पास समय पर पहुचे जायगी।

मुझे इस बात का जरूर दु ख है कि श्रीमती हठीसिग ने इस सस्कार के विरुद्ध राय दी है, परन्तु मेरा खयाल है कि इन मामलो मे मै पिछडा हुआ हू। दीपक के बारे मे मैंने तुम्हारा कहना समझ लिया। मै सरला-देवी को जितना कोमल ढग से लिख सकता हू, लिखूगा।

तुम सबको प्यार।

बापू

जब सब काम निपट जाय तब मैं चाहता हू कि तुम मुझे तार से बताओ कि माताजी ने यह सब श्रम सहन कर लिया है।

१०२. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा

प्रिय जवाहरलाल, १० अगस्त १९३४

खानसाहब को बम्बई की बैठको मे आने के लिए साधारण सूचना मिल गई है। उनकी इच्छा आने की नही है और मै उन्हे दबाना नही चाहता। बम्बई मे उन्हे सभाओ और समारोहो मे शरीक होने को कहा जायगा और बोलने का अनुरोध किया जायगा। मै नही चाहता कि अभी वह ऐसा करे। मै यह चाहता हू कि वह यह साल मेरे साथ बिताये। दूसरे, बीमारी के हमलो को रोकने की भी उनमे बहुत शक्ति नही है। इसलिए उन्हे सम्मिलित होने से माफ कर दोगे ?

सस्नेह,

बापू

[खानसाहब से यहां मतलब खान अब्दुल गफ्फार खां से है।]

१०३. महात्मा गांधी के नाम

[अपनी पत्नी की कड़ी बीमारी के कारण मै अचानक जेल से रिहा कर दिया गया था। यह रिहाई थोड़े समय की थी और दरअसल दस दिन के भीतर ही मै फिर जेल मे पहुंचा दिया गया। अपनी रिहाई के ठीक बाद मैने यह खत गांधीजी को लिखा था।]

आनंदभवन, इलाहाबाद

१३ अगस्त १९३४

प्रिय बापू,

·· छ महीने बिल्कुल अकेले रहने और कुछ भी न करने के बाद पिछले २७ घटो की चिता, उत्तेजना और भाग-दौड मे मै खो-सा गया हू। मै बहुत थकान महसूस कर रहा हू। आधी रात-गये मै यह पत्र आपको लिख रहा हू। सारे दिन लोगो की भीड़ आती रही है। मौका मिला तो आपको फिर लिखूगा, लेकिन कई महीने तक ऐसा कर भी सकूगा, इसमे मुझे शक है। इसलिए मै थोडे मे बताना चाहूगा कि पिछले कोई पाच महीनो मे काग्रेस के जो बड़े फैसले हुए है, उनके प्रति मेरी क्या प्रतिक्रिया रही है। मेरी जान-

कारी के जरिये स्वभावत बहुत सीमित रहे है, लेकिन मै समझता हू कि वे इतने काफी है कि मै घटनाओ की आम धारा का बहुत-कुछ सही अदाज कर सकता हू ।

जब मैंने सुना कि आपने सत्याग्रह-आदोलन वन्द कर दिया है, तो मुझे दु ख हुआ । पहले छोटा-सा ऐलान मुझे मिला । उसके बहुत बाद मैंने आपका बयान पढा और उससे मुझे इतना जबरदस्त धक्का लगा, जितना शायद पहले कभी नही लगा होगा । सत्याग्रह-आदोलन को बद कर देने से मै अपने मन को तैयार कर सकता था, लेकिन ऐसा करने के जो कारण आपने बताये और आगे के काम के लिए जो सुझाव आपने दिये, उसने मुझे हैरत मे डाल दिया । मैंने अचानक और जोरो से महसूस किया, मानो मेरे भीतर की कोई चीज टूट गई, ऐसा कोई बधन टूट गया, जिसकी मेरे लिए वडी कीमत थी । मैंने अपनेको इस लबी-चौडी दुनिया मे भयानक रूप से अकेला महसूस किया । मैंने लगभग बचपन से ही अपनेको हमेशा कुछ अकेला ही अनुभव किया है । लेकिन कुछ लगाव मुझे ताकत देते रहे है, कुछ मजबूत सहारे मुझे थामे रहे है । वह अकेलापन कभी गया तो नही, लेकिन कम होगया था । पर अब मैंने अपनेको बिल्कुल अकेला समझा, ऐसा जैसे किसी रेगिस्तानी टापू पर पटक दिया गया हू ।

लोगो मे हालात के मुताविक अपनेको ढालने की जबरदस्त ताकत होती है और मैंने भी कुछ हद तक नये हालात के मुताबिक अपनेको बना लिया । इस बारे मे मेरी भावनाओ की तेजी जो बहुत-कुछ जिस्मानी दर्द बन गई थी, ठडी पड गई । उसकी धार मोथरी होगई । लेकिन धक्के-पर-धक्के लगने और एक के बाद एक घटनाओ के होने से वह तेज होगई और मेरे मन और भावनाओ को उसने चैन और आराम न लेने दिया । फिर मुझे आध्यात्मिक अकेलापन महसूस हुआ, मानो मै न सिर्फ अपने सामने से गुजरती भीड से बल्कि जिन्हे मै अपना प्यारा और नजदीकी साथी मानता था, उनसे भी बिल्कुल अजनबी हू, और उनके साथ मेरा कोई मेल नही है । इस बार का मेरा जेल मे रहना मेरे ततुओ के लिए जितना ज्यादा तकलीफ देनेवाला रहा, उतना पहले किसी बार का जेल जाना नही हुआ था । मै करीब-करीब यह चाहने लगा कि सभी अखवार मुझसे दूर रक्खे जाय, जिससे कि मै इन

बार-बार लगनेवाले धक्को से बच सकू ।

शरीर से मै ठीक ही रहा । जेल मे मै हमेशा ऐसा ही रहता हू । मेरे शरीर ने मेरा अच्छा साथ दिया है और वह बहुत दुर्व्यवहार और बोझ सह सकता है और यह सोचने की ढिठाई करके कि शायद मै उस भूमि के लिए, जिससे कि मेरा भाग्य बधा हुआ है, अब भी कुछ खास काम कर सकू, मै अपने जिस्म की हमेशा अच्छी तरह देखभाल करता रहा हू ।

लेकिन मैने अक्सर यह सोचा है कि गोल सूराख मे मै चौकोर खूटी के जैसा तो कही नही हू, या घमड के बुदबुदे के मानिद तो मै नही हू, जो मेरा तिरस्कार करते समुद्र मे जहा-तहा उठ रहे थे। लेकिन घमड और गर्व की जीत हुई और उस बौद्धिक यत्र ने, जो मेरे भीतर चलता रहता है, हार मानने से इन्कार कर दिया । अगर वे आदर्श, जिन्होने मुझे काम करने को उकसाया और तूफानी मौसम मे भी उमग मे रक्खा, ठीक थे—और उनके ठीक होने का यकीन मुझमे हमेशा बढता रहा है—तो उनकी जरूर जीत होगी, चाहे हमारी पीढी उस जीत को देखने के लिए जिदा न रहे ।

लेकिन इस साल के इन लबे और थकानेवाले महीनो मे उन आदर्शो का क्या हुआ, जबकि मै एक मौन और दूर के दर्शक की तरह अपनी लाचारी पर बेचैन था ? रुकावटो का आना और थोडे समय की हार सभी बडे सघर्षो मे काफी आम बाते है । उनसे दु ख तो होता है, लेकिन आदमी जल्दी ही सभल जाता है । अगर उन आदर्शो की रोशनी को मद्धिम पडने से बचाया जाय और उसूलो का लगर मजबूत रहे तो सभाल जल्दी हो जाती है । लेकिन जो मैने देखा वह रुकावट और हार नही थी, बल्कि आध्यात्मिक हार थी, जो कि सबसे अधिक भयकर है । ऐसा न समझिये कि मेरा इशारा कौसिल मे प्रवेश के सवाल की ओर है । उसे मै बहुत महत्व नही देता । किन्ही हालात मे इन व्यवस्थापिका सभाओ मे खुद जाने की कल्पना कर सकता हू । लेकिन मै चाहे व्यवस्थापिका सभा मे प्रवेश करके काम करू चाहे बाहर से, मै सिर्फ एक क्रातिकारी के तौर पर काम कर सकता हू, जिसका मतलब ऐसे इन्सान से है, जो कि बुनियादी और क्रातिकारी परिवर्तन चाहता है, वह चाहे राजनैतिक हो या सामाजिक, क्योकि मुझे विश्वास होगया है कि किन्ही और तरह की तब्दीलियो से हिन्दुस्तान और दुनिया को न शाति मिल सकती

है, न सतोष ।

ऐसा मैने सोचा। जाहिर है कि जो नेता बाहर काम कर रहे थे वे कुछ और ही ढग से सोचते थे। उन्होने ऐसे जमाने की भाषा बोलना शुरू किया, जो बीत चुका था और जो असहयोग और सत्याग्रह के हमपर चढे नशे से पहले का था। कभी-कभी वे उन्ही शब्दो और मुहावरो का इस्तेमाल करते थे, लेकिन वे बेजान और बेमानी होते थे। काग्रेस के मुखिया अचानक वे ही लोग बन बैठे, जिन्होने हमारे आगे रोढे अटकाये थे, हमे रोका था, सघर्ष से दूर रक्खा था, बल्कि हमारी बडी जरूरत के वक्त विरोधी दल के साथ सहयोग किया था। अब हमारे स्वतत्रता के मदिर के वे बडे पुजारी बन बैठे, और बहुत-से बहादुर सिपाही, जिन्होने युद्ध की गर्मी और धूल मे बोझ को कधा लगाया था, मदिर के अहाते मे घुस भी नही पाते। वे और उन-जैसे लोग अछूत और पास न आने लायक होगये थे और अगर वे अपनी आवाज बुलद करते और उन नये पुजारियो की टीका-टिप्पणी करते तो चीखकर उन्हे बैठा दिया जाता और कहा जाता कि वे लक्ष्य के प्रति विद्रोही है, क्योकि वे मदिर के पवित्र अहाते की एकरसता को भग करते है।

और इस तरह भारतीय स्वतत्रता का झडा बडे आडबर और घटाटोप के साथ उन्हे सौप दिया गया, जिन्होने दरअसल दुश्मन के कहने पर, उसे तब नीचे झुकाया था, जबकि हमारी राष्ट्रीय लडाई बडे जोरो पर थी, उन लोगो को, जिन्होने घर की छतो पर चढकर यह ऐलान किया था कि वे राजनीति से नाता तोड बैठे है—क्योकि राजनीति उस समय खतरे से खाली नही थी—लेकिन जो कूदकर आगे की पक्ति मे आ गये थे, क्योकि अब राजनीति मे खतरा नही था।

और उनके सामने आदर्श क्या थे, जबकि वे काग्रेस और राष्ट्र की ओर से बोल रहे थे? आदर्श के नाम पर उनके यहा एक बडी ही बेहिसाब हालत थी, जिसमे असली मुद्दो से कतराना होता, काग्रेस के राजनैतिक मकसदो तक को, जहातक उनकी हिम्मत पडती, नरम करना होता, हरेक निहित स्वार्थ के प्रति कोमल चिता प्रकट करना होता, स्वतत्रता के माने हुए बहुत-से दुश्मनो के आगे झुकना होता, लेकिन काग्रेसी फौज के जान कुरबान करनेवाले

अगुआ सिपाहियो के सामने दिलेरी और मर्दानगी दिखाना होता। क्या काग्रेस तेजी से गिरकर कलकत्ता कार्पोरेशन के पिछले कई सालो के शर्मनाक नजारे का एक बडा रूप नही बनती जा रही है ? बगाल-काग्रेस का शक्तिशाली भाग क्या आज 'श्री नलिनी रजन सरकार सवर्धन समाज' नही कहा जा सकता ? और यह वही सज्जन है, जो सरकारी कर्मचारियो, गृह-सदस्यो और इसी तरह के लोगो को दावते देकर प्रसन्न हुआ करते थे, जबकि हममे से बहुत-से जेलो मे थे और सविनय अवज्ञा-आदोलन धूमधाम से चलता हुआ समझा जाता था। क्या दूसरे भाग को कुछ वैसे ही ऊचे मकसद के सवर्धन के लिए एक वैसा ही समाज नही माना जा सकता ? लेकिन दोष बगाल तक सीमित नही है। करीब-करीब सभी जगह ऐसी ही दृष्टि है। काग्रेस ऊपर से नीचे तक दलबदी मे पड गई है और मौका-परस्ती का बोल-बाला है।

इस परिस्थिति की सीधी जिम्मेदारी वर्किंग कमिटी पर नही है। फिर भी वर्किंग कमिटी को यह जिम्मेदारी उठानी चाहिए। नेताओ और उनकी नीति के आधार पर ही अनुयायी अपना कार्यक्रम बनाते है। अनुयायियो पर दोप डालना न मुनासिब है, न ठीक है। हरेक भाषा मे कोई-न-कोई कहावत है, जिसमे काम करनेवाले अपने औजारो को दोष देते है। वर्किंग कमिटी ने जान-बूझकर हमारे आदर्शो और ध्येयो की परिभाषा को गोलमोल रखने को बढावा दिया है और इसका नतीजा यही नही होगा कि गडबड़ फैले, बल्कि यह भी कि प्रतिक्रिया के अवसरो पर गिरावट होगी, और ढोल पीटनेवाले और प्रतिक्रियावादी आगे आवेगे।

मेरा इशारा खास तौर पर राजनैतिक लक्ष्यो की ओर है, जो कि काग्रेस का खास क्षेत्र है। मै समझता हू कि बहुत पहले ही काग्रेस को सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर साफ-साफ गौर करना चाहिए था, लेकिन मै यह भी मानता हू कि इन मुद्दो की शिक्षा के लिए समय की जरूरत है और हो सकता है कि कुल मिलाकर काग्रेस फिलहाल उतनी आगे न जा सके, जितनी मै चाहूगा कि वह जाय। लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि वर्किंग कमिटी किसी विपय को जानती हो, चाहे न जानती हो, वह हमेशा उन लोगो पर इलजाम लगाने और निकाल बाहर करने के लिए तैयार रहती है, जिन्होने इन [illegible] का खास अध्ययन किया है और जो अपने कुछ विचार रखते है। उन

को समझने की कोई कोशिश नही की जाती, जिनके बारे मे यह कुख्यात है कि ये आज की दुनिया के कुछ सबसे योग्य और सबसे ज्यादा त्यागी लोगो के विचार है। ये विचार सही हो या गलत, लेकिन इसके पहले कि वर्किग कमिटी उनकी निदा करे, उसे कम-से-कम उन्हे समझ तो लेना चाहिए। एक सधे-सधाये तर्क का उत्तर भावुकताभरी अपीलो से नही दिया जा सकता, न इस तरह के हल्के इजहार से कि हिन्दुस्तान मे हालात कुछ दूसरी किस्म के है और जो आर्थिक नियम दूसरी जगह लागू होते है, वे हमने यहा चालू नही किये है। वर्किग कमिटी की इस बारे की तजवीज मे समाजवाद की मोटी बातो की इतनी अचरजभरी गैर-जानकारी दिखाई दी कि उसे पढकर दु ख हुआ और यह जानकर भी कि उसे हिदुस्तान से बाहर भी लोग पढेगे। ऐसा जान पडता है कि कमिटी की सबसे बडी इच्छा यह रही है कि निहित स्वार्थो को, जैसे भी हो, आश्वासन दिलाये, ऐसा करने मे भले ही उसका बयान बकवास ही क्यो न जान पडे।

समाजवाद विषय के व्यवहार का एक अजीब ढग यह है कि इस शब्द को, जिसका कि अग्रेजी भाषा मे एक निश्चित अर्थ है, एक बिल्कुल ही दूसरा अर्थ दिया जाय। यदि लोग शब्दो को अपने-अपने अलग अर्थ देने लगे तो विचारो के आदान-प्रदान मे मदद नही मिलती। कोई अपनेको इजन-चालक कहे और फिर यह जोड दे कि उसका इजन लकडी का है और उसे बैल खीचते है तो वह इजन-चालक शब्द का दुरुपयोग करता है।

यह खत उम्मीद से ज्यादा लबा होगया है और अब रात भी काफी होगई है। शायद मैने जो कुछ लिखा है, एक उलझे हुए ढग से और बेतरतीबी से लिखा है, क्योकि मेरा दिमाग थका हुआ है। फिर भी उससे मेरे मन की एक तस्वीर मिलेगी। पिछले कुछ महीने मेरे लिए बडी तकलीफ के रहे है और मै समझता हू कि बहुत-से और लोगो के लिए भी वे वैसे ही रहे होगे। कभी-कभी मैने महसूस किया है कि आज की दुनिया मे, और शायद पुराने जमाने की दुनिया मे भी, यह अक्सर पसद किया गया है कि कुछ लोगो के दिलो को तोडना, औरो की जेबो को छूने की बनिस्बत अच्छा है। दिलो, दिमागो, जिस्मो, इन्सानी इन्साफ और इज्जत के मुकाबले मे दरअसल जेबो की ज्यादा कीमत और कद्र रही है।

एक और विषय है, जिसका मै जिक्र करना चाहूगा । वह है स्वराज-भवन-ट्रस्ट । मालूम हुआ है कि वर्किंग कमिटी ने हाल मे स्वराज भवन की देख-भाल के सवाल पर विचार किया था और इस नतीजे पर पहुची थी कि यह उसकी जिम्मेदारी नही है । उसने पहले, करीब तीन साल हुए, इसके लिए एक ग्राट देना मजूर किया था, पर वह अभी तक मिली नही है, हालाकि उस-की बिना पर खर्चे तो होगये । अब फिर से नई ग्राट मजूर हुई है । यह शायद कुछ महीनो के लिए काफी होगी । भविष्य के लिए, वर्किंग कमिटी जाहिरा तौर पर चिंतित रही है कि मकान और साथ की जमीन पर होनेवाले खर्च का बोझ उसे न उठाना पडे । यह बोझ १०० रुपये महीने का है, जिसमे टैक्स वगैरा शामिल है । मै समझता हू कि ट्रस्टियो को भी इस बोझ से कुछ डर हो रहा था और उन्होने सुझाव दिया कि मकान के कुछ हिस्से को मामूली तौर पर किराये पर उठा दिया जाय, जिसमे कि उसकी देख-रेख और सार-सभाल का खर्च निकाला जा सके । एक दूसरा सुझाव यह था कि इस काम के लिए जमीन का कुछ हिस्सा बेच दिया जाय । इन सुझावो की बात सुनकर मुझे हैरत हुई, क्योकि इनमे से कुछ मुझे ट्रस्ट की शर्तो के खिलाफ लगे और उसकी भावना के तो सभी खिलाफ थे । ट्रस्ट के एक मेबर की हैसियत से मेरा इस विषय मे एक ही मत है, बल्कि मै कहना चाहूगा कि ट्रस्ट-जायदाद के इस दुरुपयोग के खिलाफ मुझे सख्त ऐतराज है । मेरे पिता की इच्छाओ के इस तरह निरादर की कल्पना ही मुझे बर्दाश्त नही है । ट्रस्ट न केवल उनकी इच्छाओ की नुमाइदगी करता है, बल्कि एक तरह से उनके यादगार की भी, और उनकी इच्छाए और उनकी यादगार मुझे सौ रुपये महीने से ज्यादा प्यारी है । इसलिए मै वर्किंग कमिटी और ट्रस्टियो को यह यकीन दिलाना चाहूगा कि इस जायदाद की देख-रेख के लिए जितने धन की जरूरत है उसकी चिंता उनके करने की जरूरत नही । वर्किंग कमिटी ने जो रकम कुछ महीनो

कि वह किसी सत्कार्य के उपयोग मे नही आती।

मेरे पास आकडे नही है, लेकिन मेरा यकीन है कि इस समय तक भी स्वराज-भवन, किसी मायने मे, वर्किंग कमिटी पर पैसे के खयाल से बोझ नही रहा है। जो ग्राट उसके लिए दी गई है, वह ए आई सी सी के आफिस के लिए काम मे आनेवाली जगह के वाजिब किराये से किसी कदर भी ज्यादा न होगी। यह किराया छोटे और सस्ते मकान मे दफ्तर के चले जाने से कम हो सकता था। साथ ही यह भी है कि पहले मद्रास मे एक मकान के सिर्फ ऊपरी तल्ले के लिए ए आई सी सी ने १५०) रुपये महीना किराया दिया है।

शायद इस खत के कुछ अशो से आपको तकलीफ पहुचे, लेकिन आप यह भी न पसद करते कि मै अपने दिल की बात आपसे छिपाऊ।

सप्रेम आपका,
जवाहर

[स्वराज्य भवन ट्रस्ट का निर्माण मैंने अपने पिताजी की इच्छानुसार किया था, जिनका कुछ वर्ष पहले देहान्त होगया था। ट्रस्ट हमारे इलाहाबाद के कौटुम्बिक घर के लिए था।]

१०४ महात्मा गाधी की ओर से

१७ अगस्त १९३४

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा भावपूर्ण और मर्मस्पर्शी पत्र मिला। उसका उत्तर मेरी सामर्थ्य से कही अधिक लम्बा होना चाहिए।

मुझे सरकार से अधिक शराफत की आशा थी। किन्तु तुम्हारे मौजूद रहने ने कमला के लिए और साथ ही मामा के लिए जो काम किया वह किसी दवा या डाक्टर से नही हो सकता था। मुझे आशा है कि तुम जितने थोडे-से दिनो की अपेक्षा कर रहे हो, उनसे अधिक ठहरने दिये जाओगे।

तुम्हारे गहरे दु ख को मै समझता हू। अपनी भावनाओ को पूरी तरह और आजादी के साथ प्रकट करके तुमने बिल्कुल ठीक किया है, परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामान्य दृष्टिकोण से लिखित बात को अधिक गहराई से अध्ययन करने पर तुम्हे पता चल जायगा कि तुमने जो इतना सारा

दुःख और निराशा का अनुभव किया है उसके लिए काफी कारण नही है। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि तुमने मुझमे अपना साथी खोया नही है। मैं वही हू जैसा तुम मुझे १९१७ मे और उसके बाद से जानते हो। मुझमे वही लगन है जोकि सामान्य लक्ष्य के लिए तुमने मुझमे पाई थी। मुझे देश के लिए पूरे अर्थ मे सम्पूर्ण स्वाधीनता चाहिए और प्रत्येक प्रस्ताव, जिससे तुम्हे पीड़ा हुई है, उसी लक्ष्य को ध्यान मे रखकर तैयार किया गया है। इन प्रस्तावों के लिए और उनकी सारी कल्पना के लिए पूरी जिम्मेदारी मेरी है।

लेकिन मेरा विचार है कि मुझे समय की आवश्यकता को पहचान लेने की अटकल आती है। ये प्रस्ताव उसीका परिणाम है। अलबत्ता तरीके या साधन पर हमारे जोर देने मे अन्तर है। मेरेलिए साधन उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितना लक्ष्य, बल्कि एक तरह से साधन अधिक महत्वपूर्ण है, क्योकि उनपर तो हम कुछ नियन्त्रण रख सकते है। अगर साधनो पर हमारा काबू न रहे तो लक्ष्य पर वह कहा से रह जायगा!

'विचारहीन बातो' के बारे मे प्रस्ताव को निर्विकार होकर जरूर पढ़ो। समाजवाद के विषय मे उसमे एक भी शब्द नही है। समाजवादियों का अधिक-से-अधिक लिहाज रखा गया है, क्योकि उनमे से कुछके साथ मेरा घनिष्ठ परिचय है। क्या मुझे उनका त्याग मालूम नही है?

मगर मैंने देखा है कि वे सब-के-सब जल्दी मे है। क्यो न हो? बात इतनी ही है कि यदि मै उनकी तरह तेज नही चल सकता तो मुझे उनसे कहना पडता है कि ठहरो और मुझे अपने साथ ले चलो। अक्षरश मेरा यही रवैया है। मैंने शब्दकोश मे समाजवाद का अर्थ देखा है। परिभाषा पढने से पहले जहां मै था उससे आगे नही पहुच सका। तुम बताओ, पूरा अर्थ जानने के लिए मुझे क्या पढना चाहिए? मैंने मसानी की दी हुई पुस्तको मे से एक पुस्तक पढी है और अब मै अपना सारा फालतू समय नरेन्द्रदेव की सिफारिश की हुई पुस्तक पढने मे लगा रहा हू।

तुम कार्य-समिति के सदस्यो के साथ कठोरता कर रहे हो। वे जैसे भी है, हमारे साथी है। आखिर तो हमारी एक स्वतन्त्र सस्था है। यदि वे विश्वास-पात्र नही है तो उन्हे हटा देना चाहिए। परन्तु जो कष्ट कुछ दूसरे लोग सह चुके है, उन्हे वे न सह सके तो इसके लिए उन्हे दोष देना अनुचित है।

विस्फोट के वाद हम रचना चाहते है। कदाचित् हमारा मिलना न हो, इसलिए अव मुझे ठीक-ठीक वता दो कि तुम मुझसे क्या कराना चाहते हो। और तुम्हारे ख्याल से तुम्हारे विचारो का सवसे अच्छा प्रतिनिधि कौन होगा।

दुख की वात यह है कि मै तो उपस्थित नही था। वल्लभभाई थे। तुम्हारे रवैये से क्रोध प्रकट होता है। तुम्हे ट्रस्टियो पर विश्वास रखना चाहिए कि वे अपना फर्ज अदा करेगे। मै नही समझता कि कोई वेजा वात हुई। मै इतना व्यस्त था कि उसपर एकाग्रता से ध्यान नही दे सका। अव मै कागजात और हर चीज का अध्ययन करूगा।

बेशक तुम्हारी भावनाओ का आदर दूसरे ट्रस्टी पूरी तरह करेगे। यह आश्वासन देने के वाद मै तुमसे कहूगा कि इस मामले को इस प्रकार व्यक्तिगत न समझो जैसा तुमने समझा है। यह तुम्हारे उदार स्वभाव के अधिक योग्य होगा कि पिताजी की स्मृति के लिए जितना लिहाज तुमको है उतना ही अपने साथी ट्रस्टियो को होने का श्रेय दे सको। पिताजी की स्मृति का सरक्षक राष्ट्र को बना दो और तुम राष्ट्र के एक अग वन जाओ।

आशा है, इन्दू अच्छी तरह होगी और उसे अपना नया जीवन पसन्द होगा। कृष्णा का क्या हाल है ?

सस्नेह,

बापू

१०५ महात्मा गान्धी की ओर से

वर्धा

२२ नवम्बर १९३४

प्रिय जवाहरलाल,

कुछ दिन हुए मैने तुम्हे पत्र भेजा था, जिसमे केवल तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार पूछे थे। माताजी कल यहा आई थी। कहती थी कि तुम्हे कमला के लिफाफे मे भेजे हुए पत्रो के सिवा और पत्र नही मिलते। मै जानना चाहता हू कि तुम्हारे पत्र-व्यवहार के लिए क्या नियम है ? लिखो, तुम्हारे क्या हाल-चाल है और तुम अपना समय किस तरह बिता रहे हो।

सस्नेह,

बापू

१०६. रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

[मेरी पत्नी का स्वास्थ्य तेजी से बिगड़ने के कारण उन्हे इलाज के लिए यूरोप भेजने का निश्चय किया गया। मै उस समय अल्मोड़ा जेल में था और वही रहा, यद्यपि उनको विदाई देने के लिए एक दिन को भुवाली सैनेटोरियम जाने की अनुमति मुझे मिल गई थी। मेरी बेटी इंदिरा, जो उन दिनो शांति-निकेतन में थी, अपनी मां के साथ यूरोप गई थी।]

'उत्तरायण'
शांतिनिकेतन, बंगाल
२० अप्रैल १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

हमने भरे हुए हृदय से इदिरा को विदा किया। इस स्थान के लिए कितनी उपयोगिता थी उसकी! मैंने बडे ही ध्यान से उसे देखा है और तुमने जिस ढग से उसका लालन-पालन किया है, उसकी मैं सराहना करता हू। उसके समस्त शिक्षक एक स्वर मे उसकी प्रशसा करते है और मै जानता हूं कि छात्रो मे वह बहुत ही लोकप्रिय है। मुझे आशा है, परिस्थिति सुधरेगी और वह शीघ्र ही यहा लौटकर अपनी पढा-लिखाई मे लग सकेगी।

तुम्हारी पत्नी की बीमारी की कल्पना करके मुझे कितनी वेदना होती है, मैं तुम्हे बता नही सकता। लेकिन मुझे विश्वास है कि समुद्र का प्रवास और यूरोप की चिकित्सा से उन्हे बहुत लाभ पहुचेगा और वह शीघ्र अपने पूर्व स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेगी।

शुभाशीर्वाद सहित,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१०७. महात्मा गान्धी की ओर से

[यह पत्र और बाद के कुछ पत्र मेरे पास जर्मनी में भेजे गए थे। मेरी पत्नी का स्वास्थ्य विगड़ जाने के कारण मुझे अल्मोड़ा जिला जेल से अचानक रिहा कर दिया गया था। वह उस समय जर्मनी में ब्लैक फोरेस्ट के सैनेटो-रियम में थीं। रिहाई के तुरन्त बाद मैं उनके पास चला गया था।]

वर्धा
३ अक्तूबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र घडी की-सी नियमितता से आते है और एक देन जैसे लगते है। मै देखता हू कि कमला बडी बहादुरी से प्रयत्न कर रही है। इसका फल मिलेगा। प्राकृतिक चिकित्सा के लिए मेरा पक्षपात तुम्हे मालूम है। स्वय जर्मनी मे अनेक प्राकृतिक चिकित्सालय है। सम्भव है, कमला का मामला उस मजिल से गुजर गया हो। परन्तु कौन जाने कब क्या होता है। मुझे ऐसे मामले मालूम है जो चीर-फाड के काबिल बताये जाते थे, लेकिन प्राकृतिक चिकित्सा से अच्छे होगये। जैसा भी है, मै अपना अनुभव तुम्हे लिख रहा हू। अगले वर्ष के लिए ताज पहनने के बारे मे तुम्हारा पत्र हर्षदायक था। तुम्हारी स्वीकृति पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मुझे विश्वास है कि इससे बहुत-सी कठिनाईया हल हो जायगी और देश के लिए यही सबसे ज्यादा सही चीज हो सकती थी।

लाहौर मे तुम्हारी अध्यक्षता लखनऊ की अध्यक्षता से बिल्कुल भिन्न वस्तु थी। मेरी राय मे लाहौर मे हर बात मे रास्ता साफ था। लखनऊ मे किसी भी बात मे ऐसा नही होगा। परन्तु मेरे खयाल से उस परिस्थिति का सामना जितनी अच्छी तरह तुम कर सकोगे और कोई नही कर सकेगा। भगवान तुम्हे यह भार उठाने की पूरी शक्ति दे।

मै तुम्हारे अध्यायो को अधिक-से-अधिक तेजी के साथ पढ रहा हू। वे मेरे लिए बडे दिलचस्प है। इससे अधिक अभी नही कहूगा।

इस पत्र के साथ तुम सबके लिए हम सबका प्रेम।

बापू

१०८ सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

रेस्ट लागेरंड, हफ्गास्टाइन्
४ अक्तूबर १९३५

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे २ और ३ तारीख के पत्र मिले।

फ्रीबर्ग सर्जन की रिपोर्ट पढकर मुझे बडी खुशी हुई। मै यही आशा करता

हू कि उनका चिकित्सा-विज्ञान रोगी की इतनी मदद कर सकेगा कि वह अपनी फेफड़ो की शिकायत पर काबू प्राप्त कर सके। मै नही जानता कि तुमने श्रीमती नेहरू को किसी दूसरी जगह हटाने की सभावना के बारे मे उनकी राय पूछी है अथवा नही। अगर मै तुम्हारी परेशानी मे कुछ भी काम आ सकू तो मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे बुला भेजने मे सकोच न करोगे।

तुमने मेरी पुस्तक मे जो गलती बताई है, उसके लिए मै आभार प्रकट करता हू। जैसाकि तुम कहते हो, उसमे तथ्य की और भी गलतियां हो सकती है, किन्तु मेरी उम्मीद यही है कि ये गलतिया ज्यादा गभीर नही है। बद-किस्मती से मुझे ज्यादातर अपनी याददाश्त से काम चलाना पडा और खासकर तारीखो के बारे मे मुझे ज्यादा दिक्कत रही। उस समय का न तो कोई साहित्य मुझे मिल पाया और न कोई ऐसा व्यक्ति मेरी पहुच के भीतर था जिसकी मदद मै ले सकता। पडित मोतीलालजी की मृत्यु की ठीक तारीख याद करने के लिए मैने अपने दिमाग पर काफी समय तक जोर डाला, किन्तु मै नाकामयाब ही रहा। पुस्तक मे तुम छापे की अशुद्धिया (मुद्रक के भूलकी) देखोगे जो कि प्रूफ ठीक तरह से न देखे जाने के कारण हुई है। सिर्फ एक ही बार मै प्रूफ पढ पाया और वह भी बडी जल्दी मे, कारण मुझे जल्दी ही भारत के लिए रवाना होना था। इसके अलावा, पुस्तक काम के भारी दबाव के बीच लिखी गई और उस समय मेरी तबीयत भी कुछ ज्यादा अच्छी न थी। तुम्हारे द्वारा बताई हुई गलतियो को मै सावधानी के साथ नोट कर लूगा, ताकि अगले सस्करण मे उनको दुरुस्त किया जा सके।

१०९ रवींद्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन
९ अक्तूबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

हम लोग बडी व्यग्रतापूर्वक समाचार-पत्रो मे तुम्हारी पत्नी की बीमारी के समाचार देखते रहे है और हालत मे कुछ सुधार होने के सकेतो के अनुकूल लक्षणो की प्रतीक्षा करते रहे है। मेरी हार्दिक आशा है कि उन्होने अपने जीवन के सपूर्ण उतार-चढावो मे जिस अपूर्व मानसिक शक्ति का परिचय दिया है वह उनकी सहायक होगी। उन्हे मेरी मगलकामनाए सूचित कर दे।

हर बार जाडो मे विश्वभारती मुझे झकझोरकर अपने साधनो की अल्पता की याद दिला देती है, क्योकि इसी मौसम मे मुझे धन-सग्रह के लिए बाहर जाने का प्रयत्न करना पडता है। लोगो का मनोरजन करने के बहाने या ऐसे लोगो की उदारता को जगाने की चेष्टा द्वारा, जो किसी प्रकार भी उदार नही है, यह भीख मागना—मेरे लिए अत्यन्त ही अप्रिय परीक्षा की भाति है। मै कोई शिकायत किये बिना ही अपमान और व्यर्थता के इस काटो के ताज को स्वीकार करके एक प्रकार की शहादत के भाव से प्रसन्न होने का प्रयत्न करता हू। सान्त्वना के लिए क्या मुझे यह नही सोचना चाहिए कि अपने जीवन और निजी स्वाधीनता से भी प्यारे लक्ष्य के लिए तुम स्वय क्या-क्या नही सहन कर रहे हो? पर एक सवाल प्राय मुझे परेशान करता रहता है कि मेरे लिए उपयोगी क्या यह है कि कृपण सरक्षको की मेज से दया के टुकडो को परिश्रमपूर्वक बीनने मे अपनी शक्ति चुका दू, या यह कि निराशाए जमा करने के अपमान से अलग रहकर अपने मन की ताजगी बनाये रक्खू। पर शायद यह अप्रिय कार्य से बचने का मेरा बहाना-भर है। मैने महात्माजी से सहयोग की माग की थी, जो उन्होने कृपापूर्वक स्वीकार कर ली है। निस्सदेह उनके प्रताप के सहारे कही अधिक सफलता की सभावना है, जिसकी अपने बल-बूते तो मै कभी आशा ही नही कर सकता। तुमसे यह कहना न भूल जाऊ कि सर तेजबहादुर ने भी मुझे सहयोग का वचन दिया है।

प्रिय इदिरा को मेरा स्नेह-स्मरण कहना। आशा करता हू कि कभी-न-

कभी उसे फिर से हमारे आश्रम मे आने और उन कुछेक महीनों की स्मृति को नया करने का अवसर मिलेगा, जो उसने यहा बिताये थे और हमे सुखी किया था।

स्नेहसहित,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

११०. ई. स्टॉग्डन की ओर से

दी विकारेज,
हैरो
५ नवम्बर १९३५

प्रिय नेहरू,

क्या यह सम्भव है कि आप शनिवार को एक बजे यहा आकर हम लोगो के साथ दोपहर को भोजन करे? आपसे फिर से मिलकर हमे बडी खुशी होगी और मै आपको आपका उस समय का फोटो दिखाऊगा जब आप हैरो मे एक विद्यार्थी थे। तब आप बडे सुन्दर लगते थे। मेरा निवास बिलयार्ड के ऊपरवाली पहाडी की चोटी पर है और मेरी पत्नी को आपसे मिलकर बड़ी खुशी होगी।

आपका,
ई. स्टॉग्डन

अब मै यहा का पादरी हू, स्कूल का मास्टर नही।

१११. हेरल्ड. जे. लास्की की ओर से

निजी और गोपनीय

दी लदन स्कूल ऑव इकोनोमिक्स
एड पोलिटिकल साइंस,
लंदन, डब्लू. सी.,
६ नवम्बर १९३५

प्रिय नेहरू,

मुझे पता चला है कि आपपर इस बात का जोर डाला गया है कि आप हैलीफैक्स से मिलकर भारत की स्थिति पर विचार-विनिमय करे। मुझे उम्मीद है कि आप ऐसा तबतक नही करेगे जबतक कि वह

आपसे इसके लिए खास तौर से लिखकर प्रार्थना न करे, वरना इससे बडी आसानी से जबर्दस्त गलतफहमी फैल सकती है, जो कि अत्यन्त हानिकारक होगी ।

हार्दिक भावनाओ सहित,

आपका,
हेरल्ड जे. लास्की

११२ सी. एफ एन्ड्रूज की ओर से

पेमब्रोक कॉलेज,
केम्ब्रिज
६ नवबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

मैने आपकी दोनो किताबो के कुछ शीर्षक चुनकर यहा-वहा से पढना आरम्भ किया, लेकिन अब ऐसा लगता है कि आपने जो कुछ भी लिखा है उसके प्रति न्याय करने के लिए मुझे आपकी पुस्तके ठीक तरह से पूरी-पूरी पढ लेनी चाहिए और उसके बाद कुछ अच्छे अश चुनकर 'ऐलेन एण्ड अनविन' के सामने सुझाव की तरह रखने चाहिए । मै सचमुच समझता हू कि ऐसा ही होना चाहिए । एडिनबरा जाते और आते समय मुझे इसके लिए आसानी से समय मिल जायगा । कहने का मतलब यह कि मुझे रेल मे कुल मिलाकर करीब-करीब दो पूरे दिन मिल जायगे ।

दोपहर बाद से ही मै इन दो जिल्दो को देख रहा हू और समझता हू कि इनमे से कुछ खास हिस्सो को पसन्द करके चुन लेना बहुत ही मुश्किल काम होगा और इनके लिए कोई उपयुक्त नाम ढूढना तो और भी अधिक कठिन होगा । 'ऐलेन एण्ड अनविन' को आपने आत्मकथा की जो सामग्री दी है उसमें पता नही आजकल के भारतीय इतिहास के बारे मे आपके विचार कहातक आ पाये है । देर-सवेर 'ऐलेन एण्ड अनविन' वाले जरूर मुझसे सलाह लेगे और तब मुझे आपकी उस पाडुलिपि को पढने का अवसर मिलेगा । मै जानता हू कि आप भी यही चाहेंगे कि मै उसे पढू । चुनने का यह काम अन्त मे आपको ही दिया जायगा और यह सबसे ज्यादा ज़रूरी है कि आप स्वय अनुभव करे कि जो कुछ भी अतिम रूप से चुना जाय उसमे आप

अपनेको ठीक-ठीक अभिव्यक्त कर पाये हो। वह आपका अपना चुनाव होगा, मै तो सिर्फ सुझाव दे सकता हू ।

भारतवर्ष के लिए यह पुस्तक बहुत ही मूल्यवान होगी । जैसाकि मुझे खयाल है, मैंने आपसे पूना मे मिलने पर कहा था कि प्रमुख व्यक्तियो मे से अकेले आप ही इस बात को सहज भाव से जानते दिखाई देते है कि पश्चिम-वाले किस बात को समझ सकते है और किस बात का वे आसानी से अनुसरण कर सकते है । बापू के लेखो को बार-बार सक्षिप्त करने और समझाने की जरूरत पड़ी और शुरू-शुरू मे रोम्यां रोला जैसा प्रथम कोटि का प्रतिभाशाली व्यक्ति ही उनके विचारो को ठीक तरह से स्पष्ट कर सका । इसके बाद मेरे लिए आगे बढना आसान था । लेकिन बापू को समझना हमेशा मुश्किल है । गुरुदेव भी जब पद्य से हटकर गद्य लिखने लगते है तब उन्हे समझना कठिन हो जाता है । इस समय डा सीतारामैया कांग्रेस की रजत-जयन्ती के लिए 'कांग्रेस का इतिहास'[1] लिख रहे है, लेकिन अंग्रेजी पाठको के लिए उसे समझना बिल्कुल असम्भव है । डा. सीतारामैया यह मानकर चले है कि पढनेवालो को भारतीय शब्दो के मूल अर्थ का पूरा-पूरा ज्ञान है और उन्होने बहुत ही विस्तार के साथ लिखा है । इसके विपरीत जैसे ही मैंने 'जेल की खिडकी से' पढा, मुझे यह स्पष्ट होगया कि इसे यूरोप मे लोग बहुत आसानी से समझ जायगे । मैंने एक नजर मे ही देख लिया है कि इन दो पुस्तको मे बहुत काफी सामग्री है, बशर्ते कि उसे सिलसिलेवार ढग से चुनकर रखा जाय ।

मुझे भय है कि बेडनवाइलर लौटने पर आपको कडी मेहनत करनी पडेगी । लेकिन ऐसा फौरन ही न कीजियेगा, क्योकि इन दिनो इग्लैंड मे आपकी काफी शक्ति लग चुकी होगी और इस तरह के चयन-कार्य के लिए यह जरूरी है कि आप अच्छी-से-अच्छी मानसिक स्थिति मे हो ।

मै लिखता ही चला गया हू, लेकिन इससे आपको यह मालूम हो जायगा कि इस मामले मे मुझे कितनी गहरी दिलचस्पी है और मै इसे कितना जरूरी समझता हू । एडिनबरा लौटते ही मै आपको बेडनवाइलर के पते पर

---

[1] यह पुस्तक हिन्दी में 'सस्ता साहित्य मंडल' द्वारा प्रकाशित हुई है ।

पत्र भेजूगा। केम्ब्रिज मे आपके साथ न हो सकने के कारण वडी निराशा हुई है। कुछ नवयुवक अर्थशास्त्री है, जिनसे मै आपको खास तौर से मिलाना चाहता था, लेकिन जव आप यहा फिर आयेगे तवतक यह और भी स्पष्ट हो जायगा कि इन नवयुवको मे कौन सवसे अधिक मिलने योग्य है।

आपका,

चार्ली

[इसमें जिन पुस्तकों का जिक्र है, वे संभवतः मेरे निवंधो और फुटकर रचनाओं के दो सग्रह थे और उन्हीमें से कुछ अश छाटने की बात थी।]

११३ सी. एफ एन्ड्रूज की ओर से

पेमब्रोक कॉलेज

केम्ब्रिज

७ नवबर १९३५

प्रिय जवाहरलाल,

आपकी 'विश्व-इतिहास की झलक'[1] को पढते-पढते मेरे मन मे एक बहुत वडा विचार आया और उसे मै आपके सामने रख देना चाहता हू।

(अ) जिन दो सस्कृतियो ने पशु-बल को स्वभावत बहुत ही नीचा स्थान दिया है और उसे असास्कृतिक तथा भद्दा माना है, उन दोनो को ही—अर्थात् भारत और चीन को—कष्ट भोगना पडा है। उनके साथ छल किया गया है और उनका दमन किया गया है, क्योकि उन दोनो मे कोई बुनियादी कमज़ोरी मौजूद रही है।

(ब) जिन दो सस्कृतियो ने पशु-बल को खुल्लमखुल्ला मान्यता दी है उन्हे भी अर्थात यूरोप और इस्लाम को भी—दूसरे रूप मे कष्ट भोगना पडा है और जब कभी शातिप्रिय सस्कृतियो मे कोई कमज़ोरी आई है तभी वे उनपर विजय पाने मे सफल हुई है।

तो क्या कोई ऐसी शान्तिप्रिय सस्कृति हो सकती है, जो अपेक्षाकृत अधिक पाशविक लोगो द्वारा दबाई जाकर भी कष्ट का अनुभव न करे? मुझे इसमे शका है।

---

[1] हिन्दी में 'सस्ता साहित्य मंडल' द्वारा प्रकाशित।

शायद आपने इस विषय पर कही कुछ विचार प्रकट किया हो। कितना अच्छा होता, यदि इस बार मै आपसे विचार-विनिमय करने के लिए केम्ब्रिज रुका होता। सवाल स्वय मे शायद बहुत ही सामान्य है। 'हरिजन मे मैंने बापू का उत्तर पढा है, लेकिन मै व्यक्ति की दृष्टि से नही, बल्कि वैज्ञानिक ढग से एक पूरी सस्कृति की बात सोच रहा हू, इससे कम किसी बात की नही। क्या मुसोलिनी का यह कहना ठीक है कि शातिवादी सिद्धान्त से नैतिक निर्बलता का जन्म होता है ?

आपका,

चार्ली

फौरन ही उत्तर देने की चिता न कीजियेगा, लेकिन जब कभी बाद मे लिखे तब यह जरूर बतायें कि इस बारे मे आप क्या सोचते है ?

११४. लार्ड लोथियन की ओर से

[लार्ड लोथियन ब्रिटेन के राजनैतिक क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्ति थे। वह इस बात के लिए उत्सुक थे कि ब्रिटिश पार्लमेंट द्वारा स्वीकृत सन् १९३५ के संविधान को हम मंजूर करलें और कार्यान्वित करें। इस संविधान ने भारत को प्रान्तीय स्वायत्तता प्रदान की थी।]

८८ सेंट जेम्स स्ट्रीट
लन्दन, एस. डब्लू-१
८ नवबर १९३५

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

मेरे मित्र एडवर्ड टामसन से पता चला कि अब आप इंग्लैंड मे है। क्या यह सम्भव होगा कि मैं आपसे मिलने आऊ या भारत लौटने से पहले आप मेरे साथ खाना खायें ? पिछले कई साल से मैं आपके लेख पढता रहा हू और मेरी बडी इच्छा है कि भारत की स्थिति के बारे मे आपसे बातचीत करू। दुर्भाग्य से इन दिनो मै आम चुनावो के काम मे आकण्ठ डूबा हुआ हू। आज रात मै स्कॉटलैण्ड जा रहा हूं। रविवार की सुबह लन्दन से गुजरूगा, पर मैं अगले सप्ताह मे तीसरे पहर तथा बुधवार को सुबह होऊंगा। क्या इन दिनो मे मै किसी दिन आपसे मिलना हो सकेगा या आप एक रात के लिए

इग्लैड के इस अति सुन्दर ऐलिजबेथन भवन, ब्लिकलिग हॉल, नारफॉक आना पसन्द करेगे ? वहापर मै खाली रहूगा, सिर्फ देहाती जिलो मे हर शाम एक चुनाव-भाषण के लिए ही जाऊगा। उस सुन्दर वातावरण मे आप शाति से आराम कर सकेगे। तेजबहादुर सप्रू यहापर हमेशा मेरे पास आकर ठहरते है। नार्विच से यह जगह पन्द्रह मील दूर है। मै आपको लेने के लिए एक कार नार्विच भेज ूगा। दुर्भाग्य से कल मेरा दफ्तर बन्द रहेगा, लेकिन व्हाइट हॉल २२५१ पर भेजा सन्देश रविवार को सुबह मुझे मिल जायगा या आपको मेरा सेक्रेटरी १७ वाटरलू प्लेस पर सोमवार को सुबह दस बजे के बाद बराबर मिलेगा।

आपका,

पण्डित जवाहरलाल नेहरू
माउट रायल
मार्बल आर्च, डब्ल्यू-२

लोथियन

११५. एफ लेस्नी की ओर से

[प्रोफेसर लेस्नी चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग् में पौर्वात्य संस्था के अध्यक्ष थे। वह एक बहुत बडे भाषा-पंडित और भारतीय विद्याओ के ज्ञाता थे।]

इन्डो-चेकोस्लोवाक सोसाइटी ऑव
दी ओरियन्टल इस्टीट्यूट,
प्राग् ३, व्लास्का १९,
चेकोस्लोवाकिया, प्राग्
१९ नवम्बर १९३५

प्रिय महोदय,

आपने अपनी पुस्तक 'विश्व-इतिहास की झलक' की जो प्रति मेरे पास कृपापूर्वक भेजी है, उसके लिए मै आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू। इससे पहले ही मुझे श्री नम्बियार की प्रति को पढने का अवसर मिला था, जिसके लिए मै उनका कृतज्ञ हू। इस प्रकार अब इस पुस्तक का अध्ययन मैंने पूरा कर लिया है। विश्व-इतिहास की मुख्य धाराओ की

आपकी व्यापक ग्रहणशीलता और उनके प्रति आपके स्वय के दृष्टिकोण से मै विशेष रूप से प्रभावित हुआ हू। इसके अतिरिक्त आपके पत्रो मे एक बहुत ही गहरा व्यक्तिगत पुट है। मुझे आपको दो और पुस्तको के लिए भी धन्यवाद देना है, विशेष रूप से 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' के लिए। यह पुस्तक सचमुच ही निराली है।

आपने इडियन नेशनल काग्रेस के सेक्रेटरी श्री कृपालानी से मेरे पास कुछ और भी पुस्तके भेजने का अनुरोध किया है और इस बारे मे मुझे उन महानुभाव से एक बडा ही सौजन्यभरा पत्र मिला है।

मुझे पक्का विश्वास है कि आपकी बहुमूल्य सहायता से हमारी सोसाइटी अपना उद्देश्य प्राप्त करने मे—अर्थात् आपके महान देश के साथ सबध बनाने मे—सफल होगी।

वास्तव मे मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई है कि श्रीमती नेहरू का स्वास्थ्य अब काफी सुधर गया है और वह अब हर तरह के खतरे से बाहर है। कृपया उन्हे मेरा हार्दिक अभिवादन दीजिये।

आपकी लड़की इन्दिरा को मैं अलग डाक से अपने प्राग् के सबध मे एक पुस्तक भेज रहा हू। शायद ये चित्र आपको निकट भविष्य मे यहा पधारने की प्रेरणा दे सकें। हम आपको और आपके परिवार को अपने सुन्दर देश मे देखकर बहुत ही प्रसन्न होगे।

पुन धन्यवाद और सादर अभिवादन। सदैव आपका सप्रेम,

श्री जवाहरलाल नेहरू एफ. लेस्नी

११६. एडवर्ड टामसन की ओर से

[एडवर्ड टामसन ने एक प्रोफेसर की हैसियत से भारत में, मुख्यतः बंगाल में, लम्बे समय तक काम किया था। उन्होंने प्रथम महायुद्ध में सेवा की। उन्होंने भारतीय इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखी है और कुछ कविताएं और उपन्यास भी लिखे है। वह बंगला के अच्छे विद्वान थे। वह ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में प्राध्यापक बन गये थे।]

लन्दन
२६ नवम्बर १९३५

प्रिय नेहरू (हमे शिष्टाचार की जरूरत नही),

एक महीने मे मै हिदुस्तान जा रहा हूं, पर अप्रैल के आखिर तक लौट आऊगा ।

आपकी पत्नी बीमार है और आप अपनी किताब के लिए इधर-उधर घूम-फिर नही सकते । इसलिए आप समझे कि मै किसी प्रकाशक की मदद करू तो खुशी से अपनी पाडुलिपि आगामी अप्रैल मे मुझे भेज दीजिये । मै मदद कर सकता हू और करूगा । यह अलग बात है कि हममे मतैक्य नही है, पर आपने यह अधिकार पा लिया है कि आपकी बात पूरी-पूरी और सच्चाई के साथ सुनी जाय । जब समालोचना का समय आयेगा मै तब भी सहायक हो सकूगा ।

मुझे आप थके हुए लगे । मै खुद भी थका हुआ हूं, फिर मेरा स्वास्थ्य भी गिरा हुआ है, इसलिए मै आपसे सहानुभूति रख सकता हू । मै ब्रिटेन और हिंदुस्तान के बीच दोस्ती चाहता हू। इससे भी ज्यादा मै यहा और हिंदुस्तान मे एक उचित सामाजिक व्यवस्था का हामी हू । मै आशा करता हू कि आप अपनी आत्मकथा और दूसरी पुस्तक मे सामाजिक और आर्थिक प्रश्नो पर जरूर लिखेगे । आप चाहे तो मेरा उपयोग भी कर सकते है। जो कुछ भी मै कर सकता हू, आपके लिए तैयार हू । आशा है कि श्रीमती नेहरू जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ करेगी ।

मै एस सी बी के लिए जो कुछ कर सकता था, बार-बार करता रहा हू, लेकिन उच्च क्षेत्रो मे लोग मुझे अधिक नही जानते ।

आपका,
एडवर्ड टामसन

[एस. सी. बी. से मतलब सुभाषचन्द्र बोस से है। जिस पाण्डुलिपि का जिक्र है, वह शायद मेरी आत्मकथा की पाण्डुलिपि थी ।]

११७ रिचर्ड बी. ग्रेग की ओर से

[रिचर्ड बी. ग्रेग एक अमरीकी है । उन्होने अमरीका में औद्योगिक

व्यवसायों मे भाग लिया था और बाद मे वह गांधीजी की ओर बहुत अधिक आकर्षित हुए। वह भारत आये और कुछ समय गांधीजी के साथ रहे। उन्होंने खादी का अर्थशास्त्र आदि विषयों पर पुस्तकें लिखी है।]

ईलियट स्ट्रीट, साउथ नैटिक,
मसाचुसेट्स, यू. एस. ए.
३ दिसम्बर १९३५

प्रिय नेहरू,

१४ नवम्बर के पत्र और २० नवम्बर के पोस्टकार्ड के लिए धन्यवाद । मुझे खुशी है कि दोनो पुस्तके आपको ठीक से मिल गई ।

मै आपकी इस बात से सहमत हूं कि अगर अहिसात्मक प्रतिरोध के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक क्रान्ति या सुधार का कोई कार्यक्रम न होगा तो अकेला अहिसात्मक प्रतिरोध उन परिवर्तनो को ला सकने के लिए काफी नही होगा, जिनकी एक स्वस्थ समाज की रचना के लिए आवश्यकता होती है। गाधीजी के कार्यक्रम मे जो एक बात मुझे पसन्द है वह यह है कि उसके साथ-साथ उसका आर्थिक अग भी है, जिसकी सहायता से हर आदमी प्रतिदिन थोडा-थोडा काम कर सकता है। माना कि खद्दर और ग्राम-उद्योगो के कार्यक्रम अधूरे है, किन्तु उनमें अच्छी बात यह है कि वे अहिसा के सिद्धान्त से मेल खाते है और उनसे किसानो की आर्थिक स्थिति पर निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है। अहिसक प्रतिरोध के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनो के इस मसले पर मै काफी सोच-विचार करता रहा हूं और मेरा यह विश्वास है कि कार्यक्रम के इस दूसरे रचनात्मक आर्थिक अग को और भी पूरी तरह से विकसित करना चाहिए।

अपने सामने एक स्पष्टत सामाजिक लक्ष्य रखने के बारे मे और उस लक्ष्य की प्राप्ति के साधनो के सम्बन्ध मे आपके और गाधीजी के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ है उसे मैने बडी दिलचस्पी से पढा है। एक प्रतीक के रूप मे और लोगो की शक्तियो को केन्द्रित करने तथा उन्हे प्रेरणा देने के साधन के रूप मे भावी समाज की कोई रूपरेखा बना लेना मै उपयोगी समझता हू। लेकिन दो बातो की मुझे चिन्ता है। एक तो यह कि मानवीय मामले इतने जटिल होते है कि आगे के लिए ठीक-ठीक भविष्यवाणी कर सकना असम्भव

हो जाता है। यह निश्चित है कि भावी समाज के लिए हम चाहे कितनी भी पूर्ण योजना क्यो न बनावे वह कभी उस रूप मे पूरी नही हो सकती,जिस रूप मे हम उसे बनाते है। यह बात आज के सभी देशो के लिए सही है और उनमे रूस भी शामिल है। मै समझता हू कि यही बात हमेशा सही रहेगी। अगर हम मूल रूपरेखा पर बहुत कडाई के साथ चिपके रहने की कोशिश करेगे तो हम प्रभावहीन बन जायगे। हमे लचीला होना चाहिए और परिस्थितिया जैसे-जैसे बढती और बदलती जाय उसीके अनुसार हमे उनका सामना करना चाहिए।

मेरी दूसरी शका यह है कि यदि हमने भावी आदर्श राज्य के ब्यौरो को निश्चित करने मे बहुत अधिक समय और मेहनत लगाई तो उसका हम पर वही प्रभाव पडेगा, जो ईसाइयो पर प्रभु के साम्राज्य की स्थापना के सिद्धान्त का पडा है। आज की वास्तविकता और आदर्श मे जो अन्तर है वह आदर्श की प्राप्ति को इतने दूर भविष्य तक के लिए टाल देता है कि लोग उसे एक कोरे आदर्श के रूप मे देखने लगते है और कोई ऐसी वस्तु नही मानते जिसे प्राप्त करने के लिए उन्हे बहुत बडे त्याग करने की आवश्यकता है। निष्क्रियता और ढोग के लिए यह एक बहाना बन जाता है। इसीलिए गाधी का साधन पर जोर देना मुझे बुद्धिमत्तापूर्ण लगता है। यदि साधन को इतना विकसित किया जाय कि उसमे अहिसक प्रतिरोध के पूरक के रूप मे प्रतिदिन की आर्थिक और सामाजिक चेष्टाए भी शामिल हो जाय और यदि कार्यक्रम का प्रत्येक अग दूसरे अगो को क्रियान्वित करने की तैयारी तथा अनुशासन का काम दे तो क्या यह सम्भव नही कि हम ऐसे प्रतीक बना ले जो मानव की शक्ति को जागृत करने, केन्द्रित करने, कायम रखने और एक-दूसरे तक पहुचाने मे सफल हो सके और जो भावी आदर्श समाजवादी राष्ट्र की रूपरेखा की ही भाति प्रभावशील होते हुए भी उसके उन दो खतरो से खाली हो, जिनकी मैंने ऊपर चर्चा की है?

आपके पत्र से मै यह समझा कि जनसमुदाय के बारे मे नेबूर का जो निराशावादी दृष्टिकोण है उससे आप सहमत है। अगर बात ऐसी है तो मै ठीक-ठीक समझ नही पा रहा हू कि आप और वह समाजवादी कैसे हो सकते है। समाजवाद मे जनसाधारण से निश्चय ही एक ऊचे और दृढ नैतिक व्यवहार

की अपेक्षा रखी जाती है। यह बात और है कि आप उसे अल्पसख्यको के हिसात्मक कार्यो से स्थापित करना और कायम रखना चाहे। अगर समाजवाद इस तरह स्थापित किया और कायम रखा जाय तो उन अल्पसख्यको को आर्थिक उत्पादन के साधनो पर नियत्रण रखना होगा। उस दशा मे मै उन्हे शासकवर्ग मानूगा। उनके हिसात्मक कार्यो से विरोध भडकेगा और उस हालत मे फिर वही स्थिति आ जायगी जो सामान्यत शासकवर्ग की हुआ करती है। इस स्थिति को हटाने के लिए (कम-से-कम कम्यूनिस्ट सिद्धान्त के अनुसार) और फिर से स्वतत्रता प्राप्त करने के लिए जनता को हिसात्मक विप्लव करना होगा।

मुझे यह जानकर बडी खुशी हुई है कि आपकी पत्नी की हालत सुधर रही है। आशा है, यह सुधार लगातार चलता रहेगा। अलग डाक से मै आपके पास अपने एक पैमफ्लेट की प्रति भेज रहा हू, जिसे पता नही आपने देखा है या नही। इसका शीर्पक प्रकाशक ने लगाया था। मुझे दु ख है कि उस शीर्षक से गाधीजी के कार्यक्रम और समाजवाद मे पारस्परिक विरोध का भान होता है। मैने दोनो की आलोचना नही, तुलना करनी चाही है।

शुभ कामनाओ सहित,

आपका,

रिचर्ड बी. ग्रेग

फिर से—

मेरे मन मे एक और शका है। वह यह कि जनता को भावी समाज की विस्तृत रूपरेखा का ज्ञान कराने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना या जोर देना उचित ह या नही—वह रूपरेखा चाहे समाजवादी हो या किसी और ढग की। किसी विशेष प्रकार का राजनैतिक या आर्थिक सगठन स्वय मे साध्य नही होता, बल्कि साध्य का एक साधन-मात्र होता ह। यह साध्य होता है जनता के लिए एक सम्पूर्ण और सतोपजनक जीवन की व्यवस्था। अगर किसी विशेप ढग के राजनैतिक और आर्थिक सगठन पर अधिक बल दिया जाता रहे और उस ढग के विस्तार के बारे मे वर्षो तक प्रचार और शिक्षा देने का काम चलता रहे तो क्या वह स्वय मे साध्य नही मान लिया जायगा? वह एक ऐसा सिद्धान्त होगा जो अपने मे इतनी शक्ति और इतने अधिकार

समेट लेगा और जो लोगो की दृष्टि मे इतना महत्व प्राप्त कर लेगा कि लोग मानव-जीवन को अधिक समृद्धिशाली जीवन का साधन न मानकर उस साध्य का साधन मानने को तैयार हो जायगे। उस भावी समाज की रूपरेखा भी अमरीका के सविधान की तरह लिखित रूप ग्रहण कर लेगी और कठोर बन जायगी, जिसमे भावी परिस्थितियो के अनुसार परिवर्तन करने की क्षमता नही होगी। मै समझता हू कि इस दृष्टि से ब्रिटेन का अनलिखा सविधान अमरीका के लिखित सविधान से अधिक उपयोगी है। एक विशेष लिखित रूप ग्रहण करके पत्थर की तरह अपरिवर्तनीय बनने की बजाय वह लचीला और परिवर्तनशील है। यह तो सच है कि परिवर्तन अक्सर किसी-न-किसी बहाने से किया जाता है, फिर भी परिवर्तन किया जरूर जाता है। मै समझता हू कि समाजवादी आदर्श के सम्बन्ध मे यदि लोग एक बार सामान्य रूप से एकमत हो जाय तो अधिक बुद्धिमानी इस बात मे होगी कि जनता को मुख्य रूप से उन तरीको को समझाने की चेष्टा की जाय, जिनसे वे शक्ति प्राप्त कर सके। जब वे एक बार शक्ति प्राप्त कर लेगे तब जो भी राजनैतिक या आर्थिक सविधान सबसे अधिक वाछनीय प्रतीत होगे उन्हे ही वे ग्रहण कर लेगे। यह सब मेरे मस्तिष्क मे अभी प्रस्ताव रूप मे ही है। यदि आपके पास समय हो और आप इनपर टीका करना पसन्द करे तो मैं आपकी इस सहायता के लिए कृतज्ञ रहूगा।

आर. बी. ग्रेग

११८. लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिकलिंग हॉल,
एल्सहम, नारफॉक
६ दिसबर १९३५

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

मुझे पूर्ण आशा है कि आपके भारत लौटने से पहले हम लोगो के लिए बातचीत करना सभव होगा। दुर्भाग्य से मुझे जल्दी-से-जल्दी जनवरी मे अमरीका जाना है। इसलिए मै सोचता हू कि क्या साल के शुरू मे आपके इग्लैड मे रहने का कोई अवसर हो सकता है ? अगर ऐसा हो तो मै सुझाव

दूगा कि आप कुमारी अगाथा हैरीसन के साथ कुछ समय के लिए यहा आइये। इग्लैड भर मे इस जगह पर बहुत सुन्दर मकान और बाग है और हम लन्दन के व्यस्त जीवन से दूर भी रहेगे। कल मै लॉर्ड हैलीफैक्स से मिला था। उन्होने मुझसे कहा था कि अगर आप आ रहे हो तो उन्हे भी यार्कशायर से ब्लिकलिग आकर रात बिताने में प्रसन्नता होगी।

मुझे पूर्ण आशा है कि हम लोग मिल सकेगे। मुझे इसमे कोई शक नही कि भारत मे घटी हाल की घटनाओ और आम राजनैतिक सवालो पर हमारे विचारो मे बहुत-कुछ मतभेद होगा, लेकिन अच्छा या बुरा, भारत और इग्लैड के भाग्य अब भी काफी जुडे हुए है और मेरा खयाल है कि इग्लैड के हम कुछ लोगो के लिए, जो भारत के मामलो मे दिलचस्पी रखते है, यह बहुत महत्वपूर्ण है कि भारत के कुछ युवक नेताओ से, जो उस देश के भावी मानस और नीति का निर्धारण करे, हम व्यक्तिगत रूप से परिचित हो और मै समझता हू कि आपके लिए भी हम कुछ लोगो को जानना कम महत्वपूर्ण नही होगा। मुझे इसमे कोई शक नही कि आज मानव-मानव के बीच एक बडी महत्वपूर्ण दैवी शक्ति कार्य कर रही है। पुरानी अन्तर्राष्ट्रीय परम्परा और पुरानी आर्थिक प्रणाली टूटती जा रही है। जैसाकि हमेशा होता आया है, क्रान्तिकारी युगो मे बहुत कम लोग नई विश्व-व्यवस्था को एक अश से अधिक देख पाते है अथवा वहातक पहुचने का ठीक मार्ग ही जानते है। इससे समझौते पर पहुचना बडा मुश्किल हो जाता है, प्रगति बडी मद पड़ जाती है और दुखदायी सघर्ष बने रहते है। मैत्रीपूर्ण और व्यक्तिगत सम्पर्कों से भले ही तात्कालिक समझौता न हो सके, किन्तु इनसे आगे चलकर मतैक्य हो जाने की सम्भावना पैदा हो जाती है।

इसलिए मै बहुत आशा करता हू कि उस समय आपका इग्लैड आना सम्भव हो सकेगा। मेरी इच्छा है कि जहातक सभव हो मै अपने प्रस्थान को ४ जनवरी से आगे न टालू, क्योकि फिर १० दिन तक कोई अच्छा जहाज नही है। मै तो यह चाहता हू कि आप पहली जनवरी को यहा पहुच जाय और लार्ड हैलीफैक्स को गुरुवार दूसरी तारीख की रात्रि को ठहरने के लिए बुला लिया जाय। तभी हम लोग शुक्रवार के तीसरे पहर लन्दन लौट सके और मै अगले दिन अपना जहाज पकड़ सकूगा। मुझे इसमे और भी खुशी

होगी, यदि आप और कुमारी हैरीसन तथा अन्य लोग सप्ताह के अन्त तक ठहर सके। मुझे उम्मीद है कि आप अपनी पुत्री को भी साथ ला सकेगे। लेकिन मै सोचता हू कि वह बाहर होगी। कृपया अपने निर्णयो से मुझे जल्दी-से-जल्दी सूचित कीजिये, ताकि मै अपनी योजना बना सकू।

आपका,
लोथियन

श्री जवाहरलाल नेहरू,
पाशियो एहरहार्ड
बेडनवाइलर, जर्मनी

फिर से—

कृपया उत्तर १७ वाटरलू प्लेस, लन्दन, एस. डब्ल्यू १ पर दीजिये।

११९. लार्ड लोथियन के नाम

पाशियो ऐहरहार्ड,
बेडनवाइलर
९ दिसबर १९३५

प्रिय लार्ड लोथियन,

आपका ६ तारीख का खत मुझे आज ही मिला है। समझ मे नही आता कि हवाई-डाक के खत भी क्यो इतनी देर मे पहुचते है। जो हो, मै जवाब भेज रहा हू।

आपसे मिलने की मुझे बहुत उत्सुकता है, और आपके जो कई लेख मुझे देखने को मिले है, उनमे मेरी बड़ी दिलचस्पी रही है। अक्सर किसी सवाल पर आपके नज़रिये या जिस नतीजे पर आप पहुचे है, उससे मै एक-राय नही हो सका हू, लेकिन उन्होने मुझे हमेशा विचार करने के लिए उकसाया है और कभी-कभी मै कुछ अशो मे सहमत भी रहा हू। ऐसे लोगो से, जो विचार के नये रास्ते खोलते है और आदमी को दुनिया के छोटे-से कोने से, जिसमे औसत आदमी का दिमाग बधा रहता है, कुछ ज्यादा देखने मे मदद करते है, मिलकर हमेशा खुशी होती है। जैसाकि आप कहते है, थोडे ही लोग इस छोटे-से कोने से बाहर देख पाते है, और आज की तकलीफ देनेवाली कशमकश ने तो इस तग नजरिये को और भी बुरा बना दिया है। यह कभी भी बदकिस्मती की बात होती, लेकिन क्राति के इस ज़माने मे तो

यह और भी बदकिस्मती की बात बन गई है। मेरी समझ मे भले इरादे के लोगो के आपसी और दोस्ती के ताल्लुको से ही ये कशमकश दूर नही हो सकती। जाहिर है, ये कशमकश गहरी है और मुझे लगता है, अच्छे-से-अच्छे लोग भी, जबकि प्राकृतिक शक्तिया एक-दूसरे के खिलाफ काम कर रही हो, बड़ा ही महत्वहीन पार्ट अदा कर बैठते है। जहातक बन पडे, हम इन सघर्षो की बुनियादी वजहो को समझने की कोशिश कर सकते है, और फिर उनको दूर करने की। लेकिन उन्हे अपने पूर्वाग्रहो और दलीय हितो से अलग हटकर देखना बहुत कठिन है। हम चाहे जितनी मीठी मुसकाने भरे, वे भीतर पैठे हुए पूर्वाग्रहो और उनसे पैदा हुए दुनिया के जुदे-जुदे नजरियो को मिटा नही सकते। फिर भी दोस्ती के सपर्क बढाने की कोशिश होनी चाहिए, क्योकि इनके बिना, ससार जितना नीरस है, उससे भी ज्यादा नीरस हो जायगा। निश्चय ही उनसे कुछ हद तक एक ऐसे वातावरण को बनाने मे मदद मिलती है, जिससे आगे समझौता मुमकिन हो। ये सम्पर्क लोगो और दलो के बीच की कडवाहट कम करते है। ये आदमी के क्षितिज को बडा बनाते है, और मिलने लायक आदमियो से मुलाकात करना ज़िदगी की खास खुशियो मे से एक है।

वास्तव में इस सबकी कीमत है और इसलिए मै ऐसे ताल्लुकात बढाने के हक मे हू। निजी तौर से, जहातक मेरा ताल्लुक है, मेरे विश्वास मजबूत होते हुए भी मै एक विद्यार्थी की नजर से जिदगी और उसके मसलो को देखने से महरूम नही हू। दकियानूसी उसूलो से मुझे झुझलाहट होती है, भले ही ये धार्मिक हो, या राजनैतिक या आर्थिक, और मेरा मन हमेशा ऐसे रास्तो की खोज करता रहता है, जिनपर मै चल सकू। मै उन रास्तो को बद करने की कोशिश नही करता। इससे मै निजी ताल्लुकात का और भी स्वागत करता हू। किताबो से मदद मिलती है, और वहुत सालो से मुझे उनसे बरावर ढाढस मिला, लेकिन पुस्तको, विचारो और कामो के पीछे जो लोग है, उनसे निजी सबंध आना बड़ी अहमियत रखता है। किताबो मे वह वात नही है।

मै आपसे मिलना पसन्द करता। आपके दोस्ताना और सुखद खत ने मेरी मिलने की इच्छा को और भी वढ़ा दिया है। मै इंग्लिस्तान के सुन्दर

घरो और देहातो को पसद करता हू और आपने जो ब्लिकलिग का वढा-चढा बयान किया है, वह मुझे सचमुच खीचता है, लेकिन दरअसल मै वहा के आदमी को देखना चाहता हू, वहा के घर को नही। मै लार्ड हैलिफैक्स से भी मिलना पसन्द करता, हालाकि मै आपसे इस वात को मजूर करता हू कि उन लोगो से, जिनका सरकारी तौर पर पिछले वुरे सपनोवाले वरसो मे भारत सरकार से ताल्लुक रहा है, मिलने मे मुझे झिझक होती है। यह वक्त हमारे लिए वडा भयानक रहा है और मेरे लिए यह समझना मुश्किल है कि कोई सवेदनशील आदमी इसे वर्दाश्त कैसे कर सका, उसे मजूरी देने की बात तो दूर रही। हिदुस्तान मे जो-कुछ सवसे अच्छा है उसे दवाने और कुचलने की वात की ओर मेरा उतना इशारा नही है, बल्कि जिस ढग से ऐसा हुआ है, उसकी तरफ है। इसमे एक ऐसा भद्दापन और भौडापन था और है कि मै उसको सोच भी नही सकता था। और अचरज की वात तो यह है कि इग्लिस्तान मे शायद ही कोई ऐसा हो, जो यह महसूस करता हो या जिसे इसका अदाज हो कि हिंदुस्तान के दिल और दिमाग पर कैसी गुजर रही है।

मै समझता हू कि आखिरकार यह सब बीत जायगा। लेकिन इस असर डालनेवाली पृष्ठभूमि मे निजी ताल्लुक के रूप मे सोचना कुछ मुश्किल है। ऐसे आदमी से, जो तुम्हारा गला घोटना चाहता हो, हाथ मिलाना आसान नही होता है। बावजूद इसके, मुझे यकीन है कि वह वक्त आयगा जब हम लोग हाथ मिलावेगे, और उस वक्त को जल्दी-से-जल्दी वुलाने की जिम्मेदारी हमपर है।

आपकी तजवीज से मै वडे लालच में पड गया हू कि जनवरी के शुरू मे मै इग्लिस्तान का सफर करू, खास तौर पर आपसे मिलने के लिए। यह आपकी बडी भलमनसाहत है कि मुझसे मिलने की खातिर आपने अपने जाने को कुछ दिन टालने की बात लिखी है। लेकिन मेरी सारी इच्छा के बावजूद मुझे लगता है कि ऐसा करने के लिए मुझे अपने बहुत-से इन्तजाम, जोकि मै पहले से ही कर चुका हू, बदलने होगे। सबसे बडा कारण तो मेरी पत्नी है। मैने उस वक्त के आसपास उसके साथ रहने का खास तौर से वादा कर रक्खा था, क्योकि हमारी बेटी भी उस समय हमारे साथ होगी। यूरोप

के कुछ हिस्सो से कई दोस्त भी आनेवाले है । इसके अलावा अगर मै इग्लिस्तान जनवरी के शुरू मे जाऊ तो उसी महीने, बाद मे फिर जाना नही हो सकता, जैसाकि मैने इरादा किया था, और इससे वहा बहुत-से दोस्तों को मायूसी होगी । हिदुस्तान मै फरवरी के शुरू मे चला जाऊगा ।

इसलिए आपके अमरीका जाने से पहले आपसे मिलने का इरादा मुझे अफसोस के साथ छोडना पड रहा है । मेरे लिए यह बडी ही मायूसी की बात है । हो सकता है कि मै यूरोप फिर गरमी के आखिर तक आऊ । अगर आया तो आपको जरूर खोज निकालूगा ।

मिस अगाथा हेरिसन ने लिखा है कि मै मि. अलेक्स फ्रेजर से आपके घर पर मिल सकता था । उनसे न मिल सकना एक और अफसोस की वजह होगी । मै पश्चिमी अफ्रीका के उनके बेजोड़ कालेज के बढिया काम को बडी ही दिलचस्पी से, हालाकि अस्पष्टता और फासले से, देखता रहा हू ।

आपका,

लार्ड लोथियन, जवाहरलाल नेहरू

१७ वाटरलू प्लेस, लदन, एस. डब्ल्यू–१

१२०. रफी अहमद किदवई की ओर से

लखनऊ

९ दिसम्बर १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

आपका १५ नवम्बर का खत २८ को मसौली पहुचा और मेरे २ दिसम्बर को वहा पहुचने पर वह मुझे मिला । 'हवाई डाक से' के लेबुल पर 'रद्द किया गया' का निशान लगा था ।

मुझे यह जानकर अफसोस हुआ कि कमलाजी की तदुरुस्ती को फिर झटका लग गया । हम लोग बेचैनी से उनके जल्दी तदुरुस्त होने की राह देख रहे है । हमे उम्मीद है कि वह जल्दी ही काफी ठीक हो जायगी, जिससे आप जल्दी हिन्दुस्तान लौट सके ।

आज मै इतहा दर्जे की घबराहट की हालत मे हूं और मुझे इस परेशानी में डालने के लिए मै आपपर इलजाम लगाता हू । सन १९२५-२७ के अपने

बुरे तजुर्बे के बाद मैंने यह फैसला कर लिया था कि मैं सूबा कांग्रेस कमेटी की एक्जीक्यूटिव से अपनेको अलहदा रखूगा, लेकिन सन १९३१ में मेरे लगातार इन्कार करने के बावजूद आपने मुझे उसमे घसीट लिया। मैंने आपको मुखालफत के मुमकिन जरियो की तरफ से आगाह कर दिया था, और जिसका मुझे डर था वही हो रहा है। आज मैं अपनेको बेहद हैरानी की हालत मे पाता हू। अगर मै इस्तीफा देकर अलग हटने की कोशिश करू तो मुझपर दूसरी मुसीबत पैदा करने का इलजाम लगाया जायगा। लेकिन अगर मैं काम करता रहता हू तो मुझे जलील करने के लिए हर मौके को इस्तेमाल किया जाता है, चाहे इससे हमारे सगठन का डिसिप्लिन ही क्यो न टूटता हो।

मै आपको तफसीले देकर परेशान नही करना चाहता। अगर किसी दिन आप यह सुने कि मैंने कोई बेवकूफी का कदम उठा लिया है तो आप उसके लिए मेरी उस नाउम्मीदी की हालत को कसूरवार ठहरायेंगे, जिधर मुझे ढकेला जा रहा है।

आपका,
रफी

१२१ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

कैंप, वर्धा
१९ दिसम्बर १९३५

प्रिय जवाहरलालजी,

कुछ दिन पहले, जबकि मैं दक्षिण भारत की यात्रा पर था, आपका पत्र मिल गया था। १३ तारीख को मै यहा पहुचा और बापू तथा महादेव-भाई के नाम भेजे आपके कुछ पत्र पढे। आसार ऐसे नजर आ रहे है कि अगली कांग्रेस के अध्यक्ष आप ही चुने जायगे। मुझे मालूम है कि आपके और वल्लभ-भाई, जमनालालजी तथा मुझ-जैसे आदमियो के दृष्टिकोण मे कुछ अतर है। अन्तर बुनियादी ढग का है। मैं यह समझता हू कि यह अतर वर्षों से रहा है और फिर भी हम लोग साथ-साथ काम कर सके है। अब जबकि बापू एक प्रकार से अलग होगये हैं और पूछने पर ही अपनी सलाह देते है, यह सभव है कि ये अतर कुछ और भी उभर आवे। परन्तु मेरा विश्वास है कि जबतक

हमारे कार्यक्रम और काम के तरीको मे क्रातिकारी परिवर्तन नही होता, तबतक यह सभव बना रहेगा कि हम सब मिलकर साथ-साथ काम करते रहे। निस्सदेह वर्तमान स्थिति से आप असतुष्ट है। हममे से भी तो कोई उनसे संतुष्ट नही है। परन्तु ये कठिनाइया मौजूदा परिस्थितियो से ही पैदा हुई है और हमे दिखाई देता है कि गति को बढाना अथवा आमूल परिवर्तन करना सभव नही है। सघर्षो मे हमे ऐसी परिस्थितियो का सामना करना ही पडता है और हमें चाहे कितना ही रोष और झुझलाहट हो, हमे कडवी घूट पीनी पड़ती ह और अनुकूल समय के आने तक काम करते ही रहना पडता है। ऐसे सकटो मे से एक मे से हम गुजर रहे है। हतोत्साहित होने का कोई कारण मुझे दिखाई नही देता। स्वाधीनता की भावना कुचली नही है और न हारने तथा लाचारी से झुक जाने की भावना जैसी कोई चीज है। मै नही विश्वास करता कि हममे से कोई भी असहयोग से पूर्व की मनोदशा मे पहुच गया है। मै नहीं मानता कि हम १९२३-२८ के जमाने मे पहुच गये है। हम १९२८-२९ की मन स्थिति मे है और मुझे सदेह नही कि बहुत जल्दी अच्छे दिन आनेवाले है। अपनी शक्ति और समझ के अनुसार हम बहुत अच्छी तरह आगे बढ रहे है, और इससे अधिक और कोई कुछ कर नही सकता। जो हो, आपको अपनी इच्छानुसार काम करने की स्वतत्रता है, अपनी पसद की कार्यसमिति भी नियुक्त करने की। आप विश्वास रक्खे कि हममे से कोई भी आपके काम मे अड़चने नही डालेगा और यदि कही हम मदद नही कर पाये तो बाधा तो कदापि नही बनेगे।

मेरे लिए यह सभव नही है कि मै आपको एक पत्र मे वह कार्यक्रम पूरी तरह से समझाकर बता दू, जिसे कार्यान्वित करने का हम यत्न कर रहे है। वह निरुद्देश्य नही है और न वह समम काटने के लिए है, परन्तु यदि आपको वह नही जचता है और मदि कोई उससे अधिक अच्छा कार्यक्रम पेश किया जा सकता है तो कोई भी आखे मूदकर इस पुराने कार्यक्रम से चिपके रहने-वाला नही है। वस्तुस्थिति जैसी है, उससे अधिक हमने उसे जटिल नही बनाया है और आप निश्चय ही ऐसी स्लेट पर लिख सकते है, जिसे हमने खराब नही किया है।

कुछ लोगों ने अपना यह गलत और अनुचित खयाल बना रखा है कि

कार्यसमिति नये सविधान के अतर्गत पद-ग्रहण के अतिरिक्त और कुछ सोच ही नही रही है। सच तो यह है कि हमने इस मामले को कोई महत्व ही नही दिया है। इसके विपरीत दूसरे लोग है, जो हमारे पीछे पडकर कोई निर्णय कराने के लिए प्रयत्नशील है। पहला प्रयास गत अप्रैल मे जवलपुर मे किया गया था और हमे लगा कि इस प्रश्न पर कोई निर्णय करने के लिए अभी बहुत जल्दी है। हम उसी निर्णय पर दृढ रहे। मद्रास मे उसीका समर्थन किया गया। लखनऊ मे इस सवाल को लेना ही होगा। किसी भी तरह वह कठिनाइयो से खाली नही है।

जैसाकि मुझे लगता है, इस प्रश्न पर पद-ग्रहण करने या न करने की दृष्टि से सोचना ठीक नही है। जहातक मेरा अनुमान है, कोई भी व्यक्ति पदो के लिए पद स्वीकार करना नही चाहता। जिस तरह सरकार चाहती है उस तरह तो कोई भी सविधान पर अमल करना नही चाहता। हमारे सामने प्रश्न बिल्कुल भिन्न है। इस सविधान का हम क्या करे? क्या हम इसकी एकदम उपेक्षा करके अपनी राह पर चलते रहे? क्या ऐसा करना सभव है? क्या इस सविधान को हम अपने हाथ मे ले ले और इसका अपनी इच्छानुसार उस हद तक उपभोग करे, जितना कि किया जा सकता है? क्या हमे उसमे प्रविष्ट होकर लडना चाहिए या बाहर से? और किस तरह? वास्तव मे सवाल एक ऐसे निश्चयात्मक कार्यक्रम को तैयार करने का है जो कि इस सविधान को लागू करने से उत्पन्न हुई परिस्थिति का वर्तमान वातावरण के प्रकाश मे मुकावला कर सके। सवाल परिवर्तनवादी या अपरिवर्तनवादी, सहयोगी या विरोधी के पूर्व-कल्पित विचारो के आधार पर कोई जवाव देने का नही है। कुछ कीचड भी उछाला गया है। यह तो अनिवार्य है। हमे तो देश की भलाई की दृष्टि से और हमारे निर्णय का असर हमारे महान् उद्देश्यो पर क्या होगा, इस दृष्टि से विचार करना चाहिए।

देशी राज्यो के बारे मे तो हमे ऐसा लगता है कि मद्रास मे जो कुछ कहा गया था उससे अधिक हम कुछ नही कर सकते। बहुत विचार करने के बाद यह निर्णय जान-बूझकर किया गया था और अगर हमारे और दूसरो के बीच खाई है तो उसे स्वीकार करना ही होगा। विदेशी प्रचार के प्रश्न पर भी बहुत-कुछ ऐसी ही स्थिति है। साधनो की कठिनाई के अतिरिक्त हम नही

जानते कि आया वहा कुछ सक्रिय रूप से किया जा सकता है। आप जैसे मित्रो द्वारा स्थापित सपर्को के जरिये हम विदेशी मामलो की जानकारी रखे और उन मित्रो की मदद से स्थिति की प्रामाणिक जानकारी यहा लोगो को दे, जैसाकि हम कर रहे है। इससे अधिक कुछ करना सभव नही। यहा की परिस्थिति की वास्तविकताओ को हम भली-भाति जानते है और यह आशा नही कर सकते कि उनकी विदेशी राष्ट्रो पर कोई छाप पडेगी। यदि हम शक्तिशाली और सगठित होते तो अपनी समस्याओ से परेशान उन देशो को बाध्य कर सकते थे कि वे हमारी उपेक्षा न करे।

घरेलू ढग का एक और सवाल सविधान को दुहराने का है। उसपर आपकी लिखी टिप्पणी मै पढ गया हू। आपके कुछ सुझाव मुझे अच्छे लगे। इन सबपर विचार करने के लिए हमने एक उपसमिति बना दी है। काग्रेस से पूर्व हम अपनी रिपोर्ट दे देगे। यदि आप और कोई सुझाव देना चाहे तो कृपया हमे दे दे।

एक नाजुक सवाल पैदा होगया है। आप देखेगे कि सविधान के अन्तर्गत किसी भी चुनी हुई समिति अथवा किसी पद के लिए वही व्यक्ति चुना जा सकेगा जो छ महीने तक काग्रेस का सदस्य रहा हो, आदतन् खादी पहनता हो और कुछ निर्दिष्ट शरीर-श्रम करता हो। सविधान के वर्तमान रूप मे इसका कोई अपवाद नही रखा गया और उन व्यक्तियो को भी छूट नही दी गई, जो भूतकाल मे उसके अध्यक्ष रह चुके है, या जेल मे रहे है या अन्य किसी प्रकार इन शर्तो को पूरी नही कर सके है। सविधान की इन शर्तो के अनुसार आप और सुभाषबाबू भी प्रतिनिधि या पदाधिकारी नही चुने जा सकते। स्वय डाक्टर अन्सारी भी सदस्यता-फार्म पर भूल से निश्चित अवधि के अन्दर दस्तखत नही कर सके और यह प्रश्न निर्णय के लिए मेरे सामने आया है और मैने अभी तक उसपर कोई निर्णय नही दिया है। इस विषय मे कार्य-समिति के सदस्यो के पास उनकी मजूरी के लिए मै एक नया नियम प्रसारित कर रहा हू। उसे इस चिट्ठी के साथ आपके पास भी भेज रहा हूं।

यह बड़े दु.ख की बात है कि काग्रेस मे इकट्ठे होने से पहले हम लोग मिल नही सकते और विचार-विनिमय नही कर सकते। यह भी दुर्भाग्य

की बात है कि मौजूदा हालात की स्वय जानकारी प्राप्त करने के लिए आपके पास इतना कम समय होगा। फरवरी के तीसरे हफ्ते से पहले आपके लौटने की कोई संभावना नही और काग्रेस मार्च मे होगी। अभी मैने उसकी तारीख तय नही की है, मार्च के पहले हफ्ते से आगे बढाने मे कठिनाइया है। आशा है, यह आपको अनुकूल होगी। प्रतिनिधियो के चुनाव के लिए अतिम दिन हमने जनवरी की ७ तारीख रक्खी है और अध्यक्ष के चुनाव की तारीख २५ जनवरी है। यह सभी प्रान्तो मे एक साथ होगा।

अध्यक्ष के चुनाव के परिणामो की घोषणा करने के लिए जनवरी के अन्त मे कार्य-समिति की एक बैठक करनी होगी। मै तो चाहूगा कि इसमे कार्यक्रम के मसविदे पर भी विचार कर ले, जिसे कार्यकारिणी आगामी काग्रेस के लिए तैयार करेगी। लेकिन, लगता है, आपकी अनुपस्थिति मे ऐसा करना सभव नही होगा। इसलिए जब आप बतावेगे उस समय इस काम के लिए एक बैठक फिर बुला लूगा। जितनी भी जल्दी यह हो, अच्छा है। इस बीच, यदि सभव हो तो, आप अपने सुझाव मेरे पास भेज दे, ताकि उनपर विचार करने के लिए हमे कुछ समय मिल जाय।

बापू को अभी तक हाई ब्लडप्रैशर है। तीन दिन पहले डा गिल्डर और जीवराज मेहता ने उनकी जाच की थी। उन्होने दो महीने तक पूरे आराम की सलाह दी है। मै आशा करता हू कि कमलाजी के स्वास्थ्य मे धीरे-धीरे प्रगति हो रही होगी और आपकी अनुपस्थिति का उनपर बहुत अधिक श्रम नही पडेगा।

सप्रेम आपका,
राजेन्द्रप्रसाद

१२२. लॉर्ड लोथियन की ओर से

सैमूरहाऊस,
१७-वाटरलू प्लेस
निजी **लन्दन, एस. डब्ल्यू-१**
३१ दिसबर १९३५

प्रिय श्री नेहरू,

आपके पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मुझे दु ख है कि फिलहाल

मुलाकात सभव दिखाई नही देती। लेकिन मै आशा करता हू कि आगे चलकर अवसर आयगा। इस बीच हिंदुस्तान और ब्रिटेन के बारे में अपने दिमाग मे उठ रहे कुछ विचार लिखने का साहस कर रहा हू, बशर्ते कि आप उन्हे पढ़ना पसन्द करें।

हम इस समय मानव-इतिहास के एक महान् रचनात्मक युग मे हैं। एक ओर हम बराबरी के स्वशासित राज्यो मे कानून के शासन की स्थापना द्वारा धीरे-धीरे उन आदर्शो के आधार पर, जिनका प्रतिनिधित्व लीग ऑव नेशन्स करती है, युद्ध का अन्त करने के लिए आगे बढ रहे है, युद्ध का ही नही बल्कि उससे भी ज्यादा बुरी चीजो—घृणा, भय, आशका, अज्ञान, गरीबी और बेरोजगारी—का भी खात्मा करने पर तुले हुए है, जो प्रभुता-सपन्न राज्यो की वर्तमान स्वेच्छाचारिता से उत्पन्न या पोषित हुई हैं; दूसरी तरफ उन आदर्शो की प्राप्ति की ओर बढ रहे है, जिनका प्रतिनिधित्व समाजवाद शब्द करता है—समाजवाद यानी एक ऐसी प्रणाली, जिसके द्वारा जमीन और उसके फलो की प्राप्ति का लाभ समाज के सब सदस्यो के लिए, समाज के लिए की गई उनकी सेवा के अनुपात मे होगा, न कि आकस्मिक सपत्ति-स्वामित्व के अनुसार। दोनो ही स्थितियो मे लक्ष्य की प्राप्ति, मुमकिन है, एक ओर लीग ऑव नेशन्स के घोषणा-पत्र से बहुत भिन्न उपायो से होगी या दूसरी ओर उत्पादन और वितरण के विश्वव्यापी राष्ट्रीयकरण तथा राज्य द्वारा उनके प्रबन्ध के जरिये होगी। इन लक्ष्यो की प्राप्ति मे दशाब्दिया, शायद शताब्दिया, लग जायं, क्योकि सफलता तभी होगी जब विचार और चरित्र मे घुसी गहरी प्रवृत्तियो मे भारी परिवर्तन आ जायगा तथा जिम्मेदारियो को उठाने की नई क्षमता पैदा हो जायगी। तब जाकर नये कानून और नया तत्र अस्तित्व मे लाया जा सकता है। पर अन्त मे ये आदर्श प्राप्त जरूर होगे, क्योंकि यह विचार-दृष्टि बहुत काफी लोगो के मस्तिष्क मे आ चुकी है, हालांकि बहुत कम, शायद ही किसीने अभी तक साधनो को समझा हो।

वर्तमान मे भारत और ब्रिटेन को अलग-अलग पार्ट अदा करने है। ब्रिटेन पुराने साम्राज्यवाद को छोड़ रहा है तथा व्यापक राष्ट्रीय आत्मनिर्णय मे निहित अराजकता की नये युद्धो मे परिणति या साम्राज्यवाद

नये रूप मे प्रकटीकरण की रोकथाम के लिए सक्रिय रूप से प्रयत्नशील है। वैयक्तिक स्वतन्त्रता और प्रोत्साहन की उदार परम्परा के साथ समाजवाद का ताल-मेल बैठाने की व्यावहारिक समस्या के समाधान की ओर भी यह शीघ्र कदम उठायेगा। हिदुस्तान पर अपने स्वय के शासन का भार सम्हालने और बिना अपनी एकता को भग किये फौरन जरूरी सामाजिक और आर्थिक सुधारो के लिए कानून बनाने की भारी जिम्मेदारी है, और वह भी यूरोप के हालात को नजर मे रखते हुए, जहा धार्मिक और राष्ट्रवादी लडाइयो से भारी अराजकता छा गई, जो मौजूदा सभ्यता की गिरावट का खास कारण रही है।

आप मुझसे पूछेगे कि जो सविधान पास हुआ है, उसके अन्तर्गत अपने उद्देश्यो की पूर्ति करना हिंदुस्तान के लिए कैसे सम्भव है ? बेशक, यह त्रुटि-पूर्ण है—विशेषकर आपके दृष्टिकोण से—फिर भी मै आपसे इस बात पर विचार करने का निवेदन करूगा कि सविधान तथा इसमे समाहित विकासो के अतिरिक्त उनकी पूर्ति क्या भारत के लिए किसी और प्रकार से सभव है ?

दुर्भाग्य से राजनीति मे हममे से कोई भी बिल्कुल नये सिरे से कुछ कर नही सकता। हमे हमेशा इतिहास से निकले तथ्यो को लेकर ही आगे बढना पडता है। किसी भी समय आदर्शवाद और वास्तविकता मे सामजस्य स्थापित करना किस हद तक सभव है, इसीका निश्चय करना राजनीतिज्ञ का काम है। हिन्दुस्तान की जनता की दिल दहलानेवाली गरीबी और उस गरीबी के परिणामो तथा उसे शीघ्र दूर करने की कठिनाई के बावजूद ऐसा लगता है कि हिन्दुस्तान के सामने एकमात्र सबसे बडा खतरा यदि कोई है तो वह है उसकी शासनिक अथवा वैधानिक एकता के टूट जाने का। इससे भी बडा एकमात्र खतरा होगा ब्रिटेन या किसी दूसरी विदेशी ताकत को मजूर कर लेना। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की शक्ति तथा ग्रेट ब्रिटेन द्वारा कट्टरपथियो की परवा न करते हुए पिछले अगस्त मे पारित सविधान विधेयक के अन्तर्गत सत्ता की अतिम कुजी सौपने के निर्णय के कारण, मेरा विश्वास है, कि यह दूसरा जोखम खत्म होगया है, बशर्ते कि स्वशासित समाज के तौर पर अपनी आतरिक एकता बनाये रखने मे वह असफल न हो जाय।

सविधान की ऐसी व्याख्या करने के अपने तर्क मैंने 'भारतीय 'ट्वेंटिएथ सेंचुरी' मे लिखे अपने लेख मे प्रस्तुत किये है, (उसकी एक प्रति साथ मे भेजने का साहस कर रहा हू) यहा उनको दोहराऊगा नही। लेकिन पहला खतरा बना रह जाता है। यदि बाकी दुनिया का अनुभव झूठा नही हो जाता तो हिंदुस्तान मे राजनैतिक वर्गो के हाथ मे शासन की बागडोर जाने और शिक्षा तथा प्रेस का प्रभाव बढने के साथ-साथ धर्म, जाति और भाषा को अधिकाधिक राजनैतिक महत्व और शक्ति प्राप्त होगी और उसका परिणाम अधिकाधिक हानिकर होता जायगा। आज हिंदुस्तान मे जनता पर धर्म का सबसे अधिक शक्तिशाली प्रभाव है, जैसीकि यूरोप मे भी पुनर्जागरण और सुधार के कारण मध्ययुगीन कैथोलिक चर्च और होली रोमन एम्पायर के कमजोर होने पर स्थिति थी और वह तबतक बनी रही जबतक कि विज्ञान, शिक्षा और फ्रास की जनक्राति-सबधी विचारो ने नई राजनैतिक तथा आर्थिक निष्ठाओ का निर्माण कर धर्म की सर्वोच्च राजनैतिक शक्ति को गिरा नही दिया।

सौ वर्ष तक अधिकाशत केथौलिकवाद और प्रोटेस्टेटवाद के आपसी सघर्षो के आधार पर होनेवाले युद्धो मे यूरोप खून से लथपथ रहा है (जर्मनी की आबादी ३,००,००,००० से घटकर ५०,००,००० रह गई थी)। फिर राजतन्त्रो की, जिनका स्थान सम्राट और पोप ने ले लिया था, लडाइयो मे और इसके बाद जाति और भाषा के नाम पर राष्ट्रवाद की लडाइयों में वह उसी प्रकार खून से सराबोर रहा। इन सबने मिलकर अब इसकी पुरानी एकता को बिल्कुल नष्ट कर दिया है और इन सबने टैरिफ, शस्त्रीकरण और युद्ध की अराजकता को जन्म दिया है, जो यूरोप के नैतिक ह्रास और पतन का मूल कारण है। इन शक्तियो की सक्रियता का अन्तिम चरण आयरलैंड मे दिखाई दिया है, जहा औपनिवेशिक होमरूल देने को ब्रिटेन के बाध्य होने पर भी जातिवाद का सबल पाकर धर्म ने स्काट प्रोटेस्टेट अलस्टर को सेल्टिक रोमन केथोलिक आयरलैण्ड से राजनैतिक सम्बन्ध-विच्छेद करने को विवश कर दिया।

आप कह सकते है कि मै आर्थिक पहलू—मार्क्सवादी सिद्धान्त—की उपेक्षा कर रहा हू। मै ऐसा नही मानता। मार्क्स ने इतिहास की भौतिकवादी

अथवा आर्थिक व्याख्या के पक्ष पर जरूरत से ज्यादा बल दिया है। वर्तमान धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक चिन्तन पर अर्थशास्त्र का बडा प्रभाव है और कुछ हद तक उसे नियन्त्रित भी करता है, लेकिन अनिवार्यत उसका स्थान दूसरा है। पूजीवाद परिग्रह की प्रेरणा देता है, लेकिन साथ-ही-साथ वह जीवन-स्तर को भी बहुत ऊचा उठाता है। वह अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता की बुराइयो को बढाता है, लेकिन वह उसे जन्म नही देता है। जो हो, मेरे खयाल से इसमे कोई शक नही कि व्यावहारिक राजनीति मे राजनैतिक पहलू का पहला स्थान है। हा, रूस की स्थिति इसका बिल्कुल अपवाद है, जहा बाहरी युद्ध मे पराजय तथा असाधारण रूप से सचालित क्रातिकारी आन्दोलन द्वारा खोखली जारशाही का पतन हुआ, जिसके फलस्वरूप जीवन के प्राय सभी पहलुओ पर दलीय अधिनायकवाद की स्थापना हुई और वह भी ऐसे तरीको से, जिनका पता मानवता को तबतक नही था और ऐसे देश मे, जहा वस्तुत कोई मध्यम वर्ग नही था। ऐसी स्थिति को छोडकर लोग पहले धर्म, जाति अथवा भाषा पर आधारित राजनैतिक लक्ष्यो की ओर झुकते है, तब कही उनका ध्यान जागरूक आर्थिक उद्देश्यो की ओर जा पाता है। रूसी क्राति के बाद मे यूरोप का यही इतिहास रहा और मै समझता हू इस बात को अब वामपक्षी भी स्वीकार करते है कि गणतन्त्री और वैधानिक मार्ग का स्थान जब क्रातिकारी पद्धति लेती है, तब आर्थिक लक्ष्यो का इन अन्य लक्ष्यो के स्थान पर आना शुरू हो जाता है, पर विजय फासिज्म की होती है, कम्युनिज्म की नही।

यदि हिंदुस्तान ने वैधानिक मार्ग को अस्वीकार कर लिया, तो मुझे लगता है, हिंदुस्तान के लिए यह प्राय जरूरी हो जायगा कि वह यूरोप का अनुकरण करे और वहा धार्मिक लडाइया शुरू हो जाय, क्योकि राजनैतिक उद्देश्यो के लिए उकसाये जाने पर, मेरे खयाल मे, वहा की आम जनता अब भी मजहबी भावनाओ के प्रति झुकेगी। इन लडाइयो के बाद भारत अखण्ड नही रह पायगा, बल्कि यूरोप की तरह कई अधिनायकवादी राज्यो मे बट जायगा। जाति और भाषा की खाइया बनी रहेगी और वे एक-दूसरे के खिलाफ सैनिक और आर्थिक दोनो प्रकार से मोर्चा बनाये रहेगे। उनका आन्तरिक विकास बिल्कुल बेजान हो जायगा, अथवा उनपर फिर किसी विदेशी

साम्राज्यवादी ताकत का प्रभुत्व स्थापित हो जायगा, जैसाकि चीन मे हो रहा है। कभी-कभी यह कहा जाता है—एक बार महात्माजी ने मुझसे कहा था—कि सकट का मार्ग आगे बढाने का सबसे अच्छा रास्ता हो सकता है। कभी-कभी यह सच भी हो सकता है। लेकिन, मेरा विश्वास है कि ऐसा बहुत ही कम होता है। यदि होता भी है, तो ऐसी अवस्था मे जबकि कोई दूसरी आशा नही रह जाती। यह बिल्कुल ठीक है कि यदि भारतीय सरकार खत्म हो जाय और अनिवार्यत प्रतिद्वन्द्वी सेनाए सामने आने लगे और वहा वही होने लगे, जो चीन मे हो रहा है—हालाकि, धर्म, जाति और भाषा मे अधिक अन्तर के कारण भारत की स्थिति और भी बुरी रहेगी—तो कुछ सामाजिक और आर्थिक बुराइया खत्म होजाय। लेकिन लडाइयो का यह समय उन बुनियादी परम्पराओ, सभ्य तरीको और आदतो को नष्ट कर देता है—जैसाकि महायुद्ध ने किया—जिनके बिना किसी सभ्य जीवन का, चाहे वह समाजवादी हो, चाहे व्यक्तिवादी, निर्माण नही हो सकता और जो उसी स्थिति मे पनप सकता है, जब सामाजिक अथवा राजनैतिक प्रगति का सघर्ष वैधानिक ढाचे के माध्यम से चले, लडाइयो के माध्यम से नही।

मेरे विचार से जनतत्री दुनिया ने जिस महानतम राजनैतिक व्यक्ति को ऊपर उठाया वह है अब्राहम लिकन। आम जनता के प्रति उसके मन मे बड़ी हमदर्दी थी। पर उसने देखा कि अमरीका मे सबसे बडी समस्या दासता की नही, बल्कि सघ की रक्षा की है। अगर सघ खत्म हुआ तो न केवल गुलामी बनी रहेगी, बल्कि यूरोप की तरह अमरीका स्वय राष्ट्रीय राज्यो मे बट जायगा जो यूरोप के भिन्न-भिन्न जातीय और भाषाई तत्व ग्रहण करेगे और टैरिफ और शस्त्रीकरण द्वारा अलग होकर उनमे निराशा व गरीबी छा जायगी और बार-बार लडाइया होगी, जिनसे मुनरो-सिद्धान्त तथा १७८७ से जनतत्र मे चलनेवाला वह महान् परीक्षण समाप्त हो जायगा। इसीलिए उसने गुलामी की समस्या पर सघर्ष करने से इन्कार कर दिया और संघर्ष का सारा बल सघ की रक्षा पर केन्द्रित कर दिया, यह देखकर कि यदि सघ सुरक्षित रहा तो न केवल इन घातक बुराइयो से ही बचा जा सकेगा, बल्कि खुद गुलामी भी अनिवार्यत समाप्त हो जायगी।

मैं अनुभव करता हू कि हिदुस्तान के लिए सबसे बडा प्रश्न और आज

दुनिया के सामने प्रस्तुत सबसे बडे प्रश्नो मे एक प्रश्न यही है कि हिदुस्तान अपनी मुक्ति के लिए बुनियादी तौर पर जनतत्री और वैधानिक सघ के रूप मे काम करेगा अथवा वह सकट का रास्ता अपनायेगा। यदि उसने पहले रास्ते पर चलने का फैसला किया तो उसकी सस्थाओ मे निहित भावना ही धीरे-धीरे भारतीय रियासतो को वैधानिक राजतन्त्रो मे बदल देगी, हिदुस्तानी देश-भक्ति और जन-भावना के बल पर साम्प्रदायिकता, जातिवाद और भाषाई तत्वो को दबा देगी और उसे अपने शासन का पूरा भार सम्हालने के योग्य बना देगी और इस प्रकार उपयुक्त वैयक्तिक स्वतन्त्रता के साथ समाजवाद के मेल को सभव बना देगी। लेकिन यदि भारत ने अपनी वैधानिक एकता को खो दिया तो वह सबकुछ खो देगा। वह गड्ढे मे गिर जायगा, राष्ट्र के रूप मे अपना अस्तित्व तथा अपने भाग्य का नियत्रण स्वय करने की अपनी क्षमता खो देगा। शासन के बिना न तो स्वशासन ही रह सकता है और न समाजवाद ही।

लेकिन आप फिर पूछेगे कि साम्प्रदायिकता पर आधारित ऐसे सविधान द्वारा, जिसमे बचाव के बहुत सारे साधन ब्रिटेन के हाथ मे रहेगे और जहा प्रत्येक निहित स्वार्थ और सम्पत्ति-अधिकार को अधिक सुरक्षित कर दिया गया है, हिदुस्तान के लिए वास्तविक आन्तरिक एकता स्थापित करना, अपने शासन का भार सम्हालना और अपनी शान्ति और सच्ची उन्नति के लिए आवश्यक सामाजिक और आर्थिक सुधार करना कैसे सभव हो सकता है? इसपर मेरे दो जवाब है। पहला, जबतक काग्रेस इस स्थिति मे नही हो जाती कि सम्पूर्ण प्रशासनिक शक्ति प्राप्त कर मनचाहे ढग पर सविधान तैयार करवा सके और उसकी स्थिनि ऐसी नही हो जाती कि वह उसका उपयोग कर अपने प्रति सभी विरोधो को दबा सके और बलात् समानता लागू कर सके, तबतक मै नही समझता कि बुनियादी तौर पर कोई भिन्न सविधान सभव है। काग्रेस की मुख्य शक्ति का स्रोत क्या है, इसका निर्णय मेरी अपेक्षा आप ज्यादा अच्छी तरह कर सकते है। काग्रेस को वह शक्ति इस बात से प्राप्त होती है कि विदेशी शासन से आजादी पाने के लिए वह एक केन्द्रीय सगठन है और राष्ट्रवाद के विदेश-विरोधी रूप का इस्तेमाल कर रही है, अथवा यदि ब्रिटिश राज्य एकाएक खत्म हो जाय, तो क्या

काग्रेस को मुसलमानो, नरेशो, सम्पत्तिधारी वर्ग और जन-साधारण का इतना समर्थन प्राप्त हो सकेगा कि वह वैधानिक ढग से सारे हिंदुस्तान का शासन चला सके ? मेरा स्वय का निश्चित रूप से यह विचार है कि सबकी सहमति से काग्रेस किसी भी समय सम्पूर्ण हिंदुस्तान के लिए उदार सविधान कायम नही कर सकती। यदि बना सकती तो कम-से-कम बुनियादी तौर पर (अगर विस्तार से नही) उसे नरेशो और सम्पत्तिधारी वर्ग को वही रियायते देनी पडती, जिनका समावेश मौजूदा सविधान मे किया गया है और यदि वह शक्ति द्वारा शासन का अधिकार सम्हालने की कोशिश करती तो उसे गृह-युद्ध का सामना करना पडता और बाध्य होकर पुलिस-सैनिक अधिनायकवाद को कायम करने की कोशिश करनी पडती और वे तमाम हिंसात्मक दमन के तरीके अपनाने पडते (जिसे आप स्वय भुगत चुके है), जो सब प्रकार की निरकुशता मे शामिल है, अथवा उसे भारत की एकता बनाये रखने का प्रयास ही छोड देना पडता। इसलिए मै नही समझता कि जहातक व्यावहारिक राजनीति का सवाल है, मौजूदा सविधान का अपनी मुख्य रूप-रेखाओ मे कोई दूसरा विकल्प भी होता।

मेरा दूसरा जवाब यह है कि इस सविधान मे बेहद विकास का अवसर मौजूद है और उनसब त्रुटियो के बावजूद, जो उसमे दिखाई पडेगी यही वह सबसे अच्छा प्राप्य मार्ग है, जिसपर चलकर भारत शासन और सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के लिए अपना अनुभव और ताकत बढा सकता है। सारे हिंदुस्तान का शासन और प्रतिरक्षा का भार सम्हालने के लिए आवश्यक सशक्त और विवेकशील राजनैतिक दलो और वैधानिक वृत्तियो का हिंदुस्तान मे जितनी जल्दी विकास होगा, 'स्टेट्यूट ऑव वेस्ट-मिस्टर' के अनुसार, उतनी ही जल्दी भारत स्वाधीनता प्राप्त करेगा, ऐसा सोचने के पीछे जो तर्क है, उन्हे मै यहा नही दोहराऊगा। 'ट्वटियथ सेचुरी' वाले मेरे लेख मे इनकी विशद चर्चा की जा चुकी है। मै यहा इतना ही और कहूगा कि ब्रिटेन ने जो बचाव अपने हाथ मे रखे है, भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश मे शासन को विश्रृखलित होने से बचाने मे जहा बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगे, वहा वे विश्वविद्यालयो और लोकप्रिय समाचारपत्रो से भरे देश मे बहुत-से निर्वाचित विधान-मडलो के प्रति उत्तर-

दायी मन्त्रिमडलो को सत्ता-हस्तान्तरण की माग करनेवाले राजनैतिक मत और सगठन का सम्भवत प्रतिरोध भी नही कर सकेंगे, बशर्ते कि उन मन्त्रिमडलो और विधान-मडलो में शासन के प्राथमिक कार्यो का सचालन करने की उचित योग्यता हो। वे (बचाव) इसमे थोडी देर कर सकते है, पर इसे रोक नही सकते। उत्तरदायी सरकार का पूरा इतिहास इसे हर जगह साबित करता है।

इसके अतिरिक्त सविधान म उन राजनैतिक दलो के विकास का पूरा अवसर विद्यमान है, जिनका सबध राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक सुधार से है और यही वे क्रियात्मक तत्व है, जो वैधानिक यन्त्र को जिन्दगी और ताकत देते है। यह सविधान ऐसी पार्टियो को एक उपयुक्त लोकप्रिय आधार देता है, जिसपर वे अपना कार्य आरम्भ कर सकती है, क्योकि इसके अन्तर्गत ४० फीसदी से भी ज्यादा वयस्क पुरुषो को मतदान का अधिकार मिलेगा।

फिर, खुद सविधान मे वैधानिक साधनो द्वारा बेहद विकास की सभावनाए भरी है। उत्तरदायी शासन-प्रणाली के अन्तर्गत सबसे अधिक बुनियादी परिवर्तन, कम-से-कम जहातक शक्ति और उत्तरदायित्व को नये हाथो मे सौपने का सबध है, सविधान की धाराओ मे नही, बल्कि परम्पराओ और व्यवहार मे हेर-फेर द्वारा ही होता है। उदाहरण के लिए इस देश मे ससद् के प्रभुत्व और समुद्रपार देशो मे डोमिनियन स्टेटस की स्थापना उस व्यवहार द्वारा हुई है, जिसमे 'परामर्श' ने धीरे-धीरे आदेश का रूप ले लिया है। यही नही, जिस प्रणाली के अन्तर्गत सविधान मे परिवर्तन यहा ससद् द्वारा ही किया जा सकता है, राष्ट्रीय आत्मगौरव के लिए आपत्तिजनक होते हुए भी उससे कुछ व्यावहारिक लाभ है। सभी सविधानो के साथ जो एक कठिनाई रही है वह है उस उपाय की व्यवस्था करने की, जिसके अनुसार उनमे मामूली दलगत राजनीति के कारण नही, बल्कि वास्तविक राष्ट्रीय माग होने पर ही, हेर-फेर किया जा सके। जो सविधान दलगत कार्रवाई द्वारा आसानी से बदला जा सकता है, उसका अन्त विश्रृंखलता अथवा अधिनायकवाद में हो सकता है, और जो सविधान बहुत ज्यादा कड़े होते है, उनसे वास्तविक सामाजिक और आर्थिक प्रगति मे रुकावट

पडती है। जिस प्रणाली ने डोमिनियन स्टेटस को विकास का अवसर दिया है, उसने इस मसले को व्यवहारत अच्छी तरह हल किया है, क्योंकि इसके माने यह है कि हेर-फेर तो आसानी से हो सकते है, पर सिर्फ उसी हालत मे जबकि उनपर लगभग राष्ट्रीय सहमति जैसी चीज प्राप्त हो, केवल दलीय जीत के कारण नही।

इसीलिए मै इस तथ्य को बहुत अधिक महत्व देता हू कि जैसाकि अमरीका मे १७८७ मे हुआ, भारत एक ऐसे लिखित सविधान की बुनियाद पर स्वशासित जीवन के मार्ग पर अग्रसर किया जा रहा है, जो उसकी विकासशील जरूरतो की पूर्ति के लिए आसानी से (लेकिन बहुत आसानी से नही) मोडा जा सकता है। सविधानो का मजाक बनाना अब फैशन बन गया है। यह इस कारण कि एक विश्व-सविधान के अभाव मे—जो आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है—अन्तर्राज्य अराजकता ने बेरोजगारी, लडाई और अधिनायकवाद को जन्म दिया है, जिस वजह से एक देश के बाद दूसरे देश मे वैधानिक शासन का गठन असम्भव होगया है। यह विल्कुल जरूरी है कि भारत अपनी एकता को खोकर अराजकता और लडाई के इस भवर मे न फसने पाये।

अत मै समझता हू, आज भारत मे अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यकता इस बात की नही है कि सविधान का रूप क्या हो, वल्कि इसकी है कि वह अपने मे एक उपयुक्त, रचनात्मक, सृजनात्मक दलीय जीवन का विकास करे—कम-से-कम दो दल ऐसे हो, जिन्हे भारत के सभी हिस्सो और वर्गो का पर्याप्त समर्थन प्राप्त हो, ताकि वे भारतीय शासन का भार सम्हालने मे समर्थ हो सके। प्रत्येक दल के अन्दर आदर्शवाद और प्रतिक्रिया, भ्रष्टाचार और सचाई, जन-भावना और अन्य छोटी-मोटी बातो के बीच के सघर्ष और दलो के बीच की लडाई (वैधानिक होने के कारण इनकी भयानकता कम नही होती) और उनपर मतदाताओ के निर्णय द्वारा ही किसी राष्ट्र का राजनैतिक विकास और सामाजिक तथा आर्थिक सुधार की तैयारी होती है। शासन-भार सम्हालने तथा अपने आश्वासनो और आदर्शो का पालन करने से प्राप्त अनुशासन रखनेवाले दलो द्वारा सामूहिक चिन्तन के इस सम्मिश्रण से ही साम्प्रदायिकता और पृथक् निर्वाचन-क्षेत्रो का अन्त, राज्यो

की प्रतिनिधि-सस्थाओ का उन्नयन, सच्चे मानो मे भारतीय सेना का विकास, ब्रिटेन और भारत के आर्थिक सवधो का समीकरण, जनता का जीवन-स्तर उठाने, निहित स्वार्थो को चुनौती तथा केवल वोट लेने के प्रलोभन का प्रतिरोध करने की शक्ति का प्रादुर्भाव होगा। अन्तिम भविप्य के सवध मे किसीके विचार चाहे जो कुछ भी हो, आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण चीज यह है कि भारत के युवक, पुरुष और स्त्रिया, यह रचनात्मक व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करे जो, ३०,०००,००० लोगो के निर्वाचन-क्षेत्र को सम्हालने और लगभग वारह विधान-मडलो के लिए २,००० सदस्यो का चुनाव करने से प्राप्त होगा। ये सदस्य भारतीय शासन के अधिकाश भाग के लिए और सामाजिक तथा सामान्य सुधार, दोनो की योजना की रूपरेखा तैयार करने के लिए और भारतीय शासन की अन्य जिम्मेदारिया सम्हालने के लिए उत्तरदायी होगे। यह जिम्मेदारी वे व्यवहार मे तथ्य, आलोचना तथा परिणाम के अनुशासन मे वधकर निभायेगे, सिद्धान्त के आधार पर नही। यही अन्य सभी वातो की आवश्यक वुनियाद है।

अन्त मे, एक शव्द और कहना चाहूगा। वहुत मुमकिन है, आप यह उत्तर देगे कि इन सारी वातो मे इतिहास के मार्क्सवादी अथवा आर्थिक निदान की उपेक्षा कर दी गई है। आप शायद यह भी कहेगे कि वैधानिक साधनो द्वारा समाजवाद की स्थापना सम्भव नही है और वह सर्वहारा-वर्ग के जागरण की वुनियाद पर क्रान्तिकारी अधिनायकवाद द्वारा ही लाया जा सकता है। खत अभी ही काफी लम्बा होगया है और अव इसके अन्त मे मै इस समाजवादी-व्यक्तिवादी विवाद मे नही पडूगा। मै केवल इतना ही कहूगा कि मेरे विचार मे इस देश के वहु-सख्यक समाजवादी विचारक इस निप्कर्ष पर पहुचे है कि जनतन्त्री राज्यतन्त्र द्वारा समाजवादी सिद्धान्त को आगे वढाना सम्भव है और उनके लक्ष्य की पूर्ति का यह सर्वोत्तम साधन है। यह दो दृप्टियो से अच्छा है। एक तो यह कि इससे उदार युग के लाभ वने रहते है और दूसरे, यह उस फासिज्म को रोकता है, जो आज कम्युनिज्म के आगे-आगे चल रहा है और इस विचार के समर्थन मे मै अपने तर्क न प्रस्तुत कर एक छोटी-सी पुस्तिका 'माडर्न ट्रेण्ड्स इन सोशलिज्म' का हवाला दूगा। यह पुस्तिका कई युवक समाजवादियो ने मिलकर लिखी है और यह

मुझे बड़ी दिलचस्प लगी है। इसका सम्पादन मेरे एक मित्र जी. ई. जी. कैटलिन ने किया है।

अन्त मे, इतना लम्बा पत्र लिखने के लिए मै माफी चाहूगा। लेकिन विगत कई वर्षो तक काम करते रहने के बाद भविष्य के सबध में मेरे जो बुनियादी विचार बने है, उन्हे कल के हिंदुस्तान के एक नेता के सामने रखना मै उचित ही समझता हूं। काग्रेस को अब सकटापन्न और ैधानिक रास्तो मे से एक का चुनाव करना है और मै यह अनुभव करता हूं कि यूरोपीय अनुभव को देखते हुए पहले मार्ग के विरुद्ध और दूसरे मार्ग के पक्ष मे मुझे जो कुछ तर्क-संगत लगता है कम-से-कम उसे आपके सामने रख देना चाहिए।

अन्त मे, एक बार मै फिर दोहराऊंगा कि मुझे इस बात का सख्त अफसोस है कि आपके भारत लौटने से पूर्व मै आपसे मिल न सकूगा। मुझे आशा है कि बाद मे हम शायद मिल सके। मुझे इस बात की बड़ी उम्मीद है कि आपकी पत्नी निरन्तर स्वास्थ्य लाभ कर रही है।

श्री जवाहरलाल नेहरू, भवदीय,
पाशियो एहरहार्ड, बेडनवाइलर **लोथियन**

[नम्बियार श्री ए. सी. नम्बियार है, जो उस समय एक पत्रकार थे और बाद मे जर्मनी मे हमारे राजदूत रहे।]

१२३. मदलेन रोलां की ओर से

विला लिओनेत,
विलनेव (वो)
१२ जनवरी १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

काफी समय हुआ, गाधीजी के बारे मे मुझे कोई सीधा समाचार नही मिला, लेकिन 'हरिजन' के दिसबर अक मे और आज के लोजान के एक पत्र मे मैने पढ़ा कि वह अब अति परिश्रम करने तथा स्नायुओं की उत्तेजना के कारण बहुत ही अस्वस्थ है। मै कृतज्ञ होऊगी यदि आप मुझे वे ताजे विवरण दे सके, जो कि आपको हिंदुस्तान से मिले है।

इसके अलावा मै आपका ध्यान उस भर्त्सना-योग्य आदोलन की ओर आकर्षित करना चाहती हू जो कि गाधीजी पर सोमेद्रनाथ टैगोर की पुस्तक को लेकर यूरोप के कुछ समाजवादी और साम्यवादी क्षेत्रो मे चल रहा है। पिछले सप्ताह जनेवा के एक समाजवादी पत्र 'द्रुआ दे पेप्ल'ने इस पुस्तक पर एक पूरा लेख ही प्रकाशित किया है और गाधीजी के विरुद्ध लगाये गए इन आरोपो का कि वे पूजीपतियो के हाथ बिक गये है और जनता के प्रति विश्वासघाती है, आदि-आदि, समर्थन किया है। इस प्रकार के आक्रमण को हजारो ईमानदार पश्चिमी देशवासी, जो कि अपने समाचार-पत्रो की घोषणाओ पर आख मूदकर विश्वास करते है, पढते है और मान लेते है।

गाधीजी के सारे विचारो को स्वीकार न करने, उन्हे अपर्याप्त अथवा खतरनाक मानकर उनका विरोध करने का हर किसी सच्चे व्यक्ति को अधिकार है, लेकिन गलत तथ्य, तोड-मोडकर दिये गए उद्धरण और मनमानी दुराग्रहपूर्ण बाते कहना मन मे विद्रोह पैदा करते है, और चूकि यह बात एक भारतीय द्वारा आई है, इसलिए उसका दोष भारत पर आता है।

हिदुस्तान के सच्चे दोस्तो के नाम मे, ऐतिहासिक सत्य के नाम मे—मै यह नही कहूगी कि गाधीजी के प्रति मित्रता के नाम मे, क्योकि वह पहले व्यक्ति होगे, जो कि घोषणा करेगे कि मित्रता के लिए सत्य की बलि कभी नही देनी चाहिए—मै आपसे अनुरोध करती हू कि आप कृपया उन मुख्य आरोपो का खडन, भले ही चद पक्तियो मे, अवश्य करे, जिनका उल्लेख पुस्तक मे किया गया है और जो गाधीजी के चरित्र की दुष्टतापूर्ण नासमझी पर आधारित है।

प्रिय श्री नेहरू, आप मुझे क्षमा करे, मै जानती हू कि अपने देश के लिए आपके सामने बहुत-से कठिन काम करने को है, लेकिन क्या उनमे से एक काम यह नही है कि दुराग्रहियो से उस व्यक्ति की नेकनामी को बिगडने से बचाया जाय, जिसने कि हिदुस्तान मे अपनी आतरिक शक्ति के प्रति चेतना उत्पन्न की है और अपने विश्वास की बुनियाद पर अपना समूचा जीवन देश की सेवा मे समर्पित कर दिया है, और जिसने एक देवदूत के हृदय से दलित वर्ग के पक्ष का समर्थन किया है?

स्वाभाविक रूप से मैं आपकी सेवा मे प्रस्तुत हूं कि यदि आप मुझे कोई लेख भेजे तो मै उसका फ्रेंच मे अनुवाद कर दूगी और अपने भाई की मदद से फ्रेच पत्र-पत्रिकाओ अथवा समाचार-पत्रो मे प्रकाशित करवाने का प्रयत्न करूगी।

मुझे आशा है कि श्रीमती नेहरू के स्वास्थ्य मे बराबर सुधार हो रहा है और शायद हम लोग इसी वसत मे स्विट्जरलैड मे मिलेगे। कृपया उनतक हमारी मगलकामनाए पहुचा दे और अपनी बेटी को हमारा स्मरण करा दे।

सप्रेम आपकी,

मदलेन रोलां

१२४. लॉर्ड लोथियन के नाम

बेडनवाइलर

१७ जनवरी १९३६

प्रिय लॉर्ड लोथियन,

मैंने आपका लम्बा पत्र कई बार और 'ट्वटिएथ सेंचुरी' मे आपका लेख भी पढ लिया। मै आपको फिर धन्यवाद देता हू कि आपने उन विषयो पर, जिनमे हम सबकी इतनी गहरी दिलचस्पी है और जो हमपर इतना ज्यादा असर डालते है पूरी तरह मुझे लिखने का कष्ट किया। मुझे आपको जवाब देने मे कुछ मुश्किल हो रही है, क्योकि आपने इतना विस्तृत क्षेत्र समेट लिया है कि उसका पूरा उत्तर दिया जाय तो उसमे दुनिया की अधिकाश बडी समस्याए आ जानी चाहिए। यह मेरे बस का काम नही है। मगर मै कुछ पहलुओ पर विचार करने की कोशिश करूगा। लेकिन बहुत दलीलबाजी से काम नही लूगा और इससे शायद आपको कुछ अदाज हो जायगा कि मेरा मन किस तरह काम कर रहा है।

मै आपसे पूरी तरह सहमत हूं कि हम मानव-इतिहास के एक अत्यन्त सृजनात्मक और बदलते युग के बीच मे है। ऐसा मालूम होता है कि हम एक युग को खत्म करके दूसरे मे प्रवेश करनेवाले है। मै इस बात मे भी सहमत हू कि जो आदर्श बहुत ही बुद्धिशाली और भावनाशील मनुष्यो को प्रेरित कर रहे है वे ये है द्वेष, भय और सघर्ष से भरे हुए प्रभुता-सपन्न राज्यो की वर्तमान अराजकता को समाप्त करना, और समाजवादी आदर्श,

जिसका लक्ष्य "ऐसी प्रणाली है जिसके द्वारा जमीन और उसके फलो की प्राप्ति का लाभ समाज के सब सदस्यो के लिए, समाज के लिए की गई उनकी सेवा के अनुपात मे होगा, न कि आकस्मिक सपत्ति-स्वामित्व के अनुसार ।" आप कहते है कि राष्ट्रसघ पहले आदर्श का प्रतिनिधि है। मेरे खयाल से यह जहातक एक व्यापक भावना को व्यक्त करता है सही है। किन्तु वास्तविक व्यवहार मे वह उस ढग से काम नही करता और उसमे कुछ ऐसी बडी शक्तियो की नीति प्रकट होती है, जिनका अपनी विशेष स्थिति या निरंकुश प्रभुता को छोडने का कोई इरादा नही है और जो सघ का उपयोग ससार को अपने ही लिए सुरक्षित बनाने की खातिर करने का प्रयत्न करते है।

एक और सवाल उठता है। यदि सघ की पीठ पर जो लोग है वे ईमानदारी से प्रभुता-सपन्न राज्यो की अराजकता को खत्म करना चाहे या लोकमत के कारण उस दिशा मे धकेल दिये जाय तो भी क्या वे समाज-व्यवस्था को बुनियादी तौर पर बदले बिना या दूसरे शब्दो मे समाजवाद को स्वीकार किये बिना अपने उद्देश्य मे सफल हो सकते है ? बेशक उन्हे अपना साम्राज्यवाद तो छोडना होगा। सघ आज मौजूदा पूजीवादी प्रणाली से आगे नही देखता। सच तो यह है कि वह साम्राज्यवाद की समाप्ति की भी कल्पना नही करता। असल मे उसका आधार वर्तमान स्थिति पर है और उसका मुख्य कार्य उस स्थिति को बनाये रखना है। इसलिए व्यवहार मे वह वास्तव मे उसी आदर्श की पूर्ति मे एक रुकावट है, जिसका अनेक लोग इसको प्रतिनिधि समझते है। यदि यह सच है, जैसा मै समझता हू कि है, कि साम्राज्यवाद और प्रभुता-सपन्न राज्यो की अराजकता पूजीवाद के मौजूदा दौर की अनिवार्य घटनाए है तो इससे यह नतीजा निकलता है कि आप दूसरे से भी मुक्त हुए बिना पहले से मुक्त नही हो सकते। इस तरह व्यवहार मे सघ का उसके माने हुए आदर्शो के साथ कोई वास्ता नही है और वह उन आदर्शो की पूर्ति के मार्ग मे कठिनाइया भी उपस्थित करता है, लेकिन उसके आदर्श भी ऐसे है कि वे अन्धी गली मे ले जाते है। यह अचरज की बात नही है कि वह बहुत बार व्यर्थ की परस्पर-विरोधी बातो मे फस जाता है। वर्तमान स्थिति कायम रखने के आधार पर तो वह आगे बढ ही नही सकता,

क्योकि साम्राज्यवादी और सामाजिक दोनो पहलुओ मे उपद्रव की जड यह वर्तमान स्थिति ही है। यह ठीक और मनासिब है कि लीग ऐबिसीनिया मे इटली के आक्रमण की निदा करे और उसे दबा देने की कोशिश करे। परन्तु वही प्रणाली, जिसकी वह रक्षा करता है और जिसे स्थायी बनाना चाहता है हमे उस हमले की ओर अनिवार्य रूप से ले जाती है। मुसोलिनी के इस व्यग्य का किसी साम्राज्यवादी के पास कोई उचित उत्तर नही है कि वह वही कर रहा है जो दूसरी साम्राज्यवादी शक्तियां पहले कर चुकी है और अब कर रही है, अगर्चे उसके जैसे खास तौर पर जगली ढग से नही कर रही है। यह कुछ तर्क-हीन-सा मालूम होता है कि पूर्वी अफ्रीका मे इटली की बमबारी की तो निन्दा की जाय और भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा मे अग्रेजो की बमबारी के बारे मे शानदार खामोशी रखी जाय।

आप खुद इस राय के है कि उद्देश्य की सिद्धि सघ की नियमावली के तरीको से नही होगी। इसलिए सघ से बहुत आशा नही रखी जा सकती, सिवा इसके कि वह विश्व-व्यवस्था और शान्ति के पक्ष मे एक अनिश्चित और व्यापक भावना को व्यक्त करता है। कभी-कभी वह उस भावना को गतिमान करने और सघर्ष को स्थगित करने मे सहायता देता है।

आपने जिन दो आदर्शो का जिक्र किया है वे एक-दूसरे से मिलते-जुलते है और मेरा यह खयाल नही है कि उन्हे अलग किया जा सकता है। सच तो यह है कि समाजवाद के दूसरे आदर्शो मे पहला शामिल है और यह कहा जा सकता है कि असली विश्व-व्यवस्था और शान्ति तभी आयगी जब विश्व-व्यापी पैमाने पर समाजवाद स्थापित हो जायगा। जैसा आप कहते है, यह पूरी तरह सच है कि वास्तविक समाजवाद मे राय बनाने की गहरी आदतो की और चरित्र की गहरी काया-पलट होती है और इसमे समय लगना अनिवार्य है। माफिक हालात मे और सबधित लोगो की बड़ी सख्या के सद्भाव से ये तब्दीलिया एक पीढी के भीतर की जा सकती है। परन्तु जैसे हालात है उनमे उस सद्भाव के बजाय हमारे सामने भयकर विरोध और दुर्भाव है और इसलिए सभव है कि वह काल बहुत लम्बा होजाय। हमारे सामने विचार करने के लिए खास सवाल यह है कि वह वातावरण और परिस्थिति कैसे पैदा की जाय जिसमे ये गहरे परिवर्तन संभव हो सकते है। सही दिशा में

असली कदम यही होगा । वर्तमान परिस्थिति मे वायुमडल हमारे खिलाफ है और सघर्ष पैदा करनेवाले हमारे आपसी द्वेष, स्वार्थ और परिग्रह को कम करने के बजाय, दरअसल इनसब बुरी बातो को यह वायुमडल प्रोत्साहन देता है । यह सच है कि इस गभीर प्रतिकूलता के होते हुए भी कुछ प्रगति की जाती है और कम-से-कम हममे से कुछ अपनी पुरानी आदतो और रायो को चुनौती देने लगते हैं । परन्तु यह प्रक्रिया बहुत धीमी है और विपरीत वृत्तियो के बढने से वह लगभग मटियामेट हो जाती है ।

पूजीवाद ने परिग्रह को और इन गहरी प्रेरणाओ को, जिनसे हम छुटकारा पाना चाहते है, उत्तेजन दिया। शुरू-शुरू मे उसने बहुत भलाई भी की और उत्पादन बढ़ाकर रहन-सहन की सतह बहुत ऊची कर दी । और तरीको से भी उसने उपयोगी काम किया और उससे पहले की स्थिति मे अवश्य सुधार हुआ । परन्तु मालूम होता है अब उसकी उपयोगिता नही रही और आज वह समाजवादी दिशा मे सब तरह की प्रगति को न सिर्फ रोकता है, बल्कि हममे अनेक बुरी आदतो और वृत्तियो को बढावा देता है । मेरी समझ मे नही आता कि जिस समाज का आधार परिग्रह हो और जिसमे प्रमुख प्रेरणा लाभ के हेतु की हो उसमे हम समाजवादी ढग पर कैसे आगे बढ सकते है ? इस प्रकार इस परिग्रही समाज की बुनियाद को बदलना और लाभ के हेतु को जहातक हो सके मिटाना जरूरी हो जाता है, ताकि नई और ज्यादा अच्छी आदतो और सोचने के तरीको का विकास किया जा सके । इसमे पूजीवादी प्रणाली का सम्पूर्ण परिवर्तन हो जाता है ।

जैसा आप कहते है, यह सच है कि पूजीवादी व्यवस्था ने अन्तर्राष्ट्रीय अराजकता पैदा नही की, वह तो महज उसकी वारिस है । भूतकाल मे उसने राज्य के भीतर सचमुच गृहयुद्ध को मिटाया या कम किया है। परन्तु उसने वर्ग-सघर्प को तेज किया है और वह इस हद तक बढ गया है कि भविष्य मे गृहयुद्ध का खतरा पैदा होगया है । अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे उसने अधिक बडे पैमाने पर अराजकता को स्थायी बना दिया है और छोटी-छोटी स्थानीय लडाइयो के बजाय उसने विशाल और भयकर राष्ट्रीय सघर्ष पैदा कर दिये है । इस तरह हालाकि वह इस अराजकता को पैदा नही करता, फिर भी वह अनिवार्य रूप से उसको बढाता है और जबतक वह अपना खात्मा नही

कर लेता तबतक उस अराजकता को खत्म नही कर सकता। उसने आधुनिक साम्राज्यवादो को पैदा किया है, जो न सिर्फ धरती के बडे भागो और लाखों लोगो को कुचलते और उनका शोषण करते है, बल्कि एक-दूसरे के साथ लगातार सघर्ष मे भी आते रहते है।

हो सकता है कि मार्क्स इतिहास के भौतिक अथवा आर्थिक अर्थ को समझाने मे अतिशयोक्ति करता है। शायद उसने ऐसा इसी कारण किया कि उस पक्ष की बहुत-कुछ उपेक्षा की गई थी या कम-से-कम उस वक्त तक वह पक्ष बहुत कम बताया गया था। परन्तु मार्क्स ने घटनाओ के निर्माण पर दूसरे तत्वो के असर से कभी इन्कार नही किया। सबसे ज्यादा जोर एक अर्थात् आर्थिक तत्व पर दिया। यह जोर ज़रा जरूरत से ज्यादा दिया गया तो इससे बहुत फर्क नही पडता। मेरे खयाल से यह तथ्य तो बाकी रहता ही है कि इतिहास का उनका अर्थ ही ऐसा अर्थ है जिससे कुछ हद तक इतिहास समझ मे आता है और उसे अर्थ प्राप्त होता है। उससे हमे वर्तमान को समझने मे सहायता मिलती है और यह बिल्कुल मार्के की बात है कि उसकी कितनी भविष्यवाणिया सच निकली है।

समाजवाद कैसे आयगा ? आप कहते है कि वह उत्पादन और वितरण के साधनो के विश्वव्यापी राष्ट्रीयकरण से नही आयगा। क्या उससे लाभ और परिग्रह का हेतु समाप्त नही हो जायगा ? और उसके बजाय सामुदायिक और सहकारी हेतु स्थापित नही हो जायगा ? और क्या उससे वर्तमान से भिन्न आधार पर एक नई सभ्यता का निर्माण नही हो जायगा ? मुमकिन है बहुत-कुछ निजी पहलू की ताकत बाकी रहेगी। कुछ मामलो मे, जैसे सास्कृतिक आदि मे, रहनी भी चाहिए। परन्तु तमाम महत्वपूर्ण बातो मे भौतिक अर्थ मे उत्पादन और वितरण के साधनो का राष्ट्रीयकरण अनिवार्य दिखाई देता है। इसमे समझौते हो सकते है, परन्तु साथ-साथ दो विपरीत और सघर्षमयी प्रक्रियाए नही चल सकती। चुनाव तो करना ही होगा और जिसका लक्ष्य समाजवाद है उसके लिए एक ही चुनाव हो सकता है।

मेरे खयाल से सिद्धान्त रूप मे लोकतत्री उपायो से समाजवाद कायम करना मुमकिन है, बशर्ते कि पूरी लोकतत्री प्रक्रिया उपलब्ध हो। फिर भी व्यवहार मे बहुत बडी कठिनाइया होने की संभावना है, क्योकि समाजवाद के

विरोधी जव अपनी सत्ता को खतरे मे देखेगे तव वे लोकतत्री उपाय को अस्वीकार कर देगे। लोकतत्र की अस्वीकृति समाजवादी पक्ष की तरफ से न आती है, न आनी चाहिए, परन्तु दूसरी ओर से होनी चाहिए। वह तो जरूर फासिस्टवाद है। उससे कैसे बचा जाय ? लोकतत्री प्रणाली को अनेक विजयें प्राप्त हुई है, परन्तु मै नही जानता कि उसे अभी तक राज्य या समाजवाद की बुनियादी रचना के बारे मे सघर्ष मिटाने मे कामयावी मिली है। जव यह सवाल उठता है तव जो मडली या वर्ग राज्यसत्ता का नियत्रण करता है वह स्वेच्छा से उसे छोड नही देता, इसीलिए कि वहुमत उसकी माग करता है। हमने युद्ध के बाद के यूरोप मे और स्वय लोकतत्र के ह्रास मे इसके काफी उदाहरण देखे है। जाहिर है कि कोई समाजवादी कायापलट वहुत वडे वहुमत के सद्भाव या कम-से-कम निष्क्रिय स्वीकृति के विना नही किया जा सकता।

ब्रिटेन और भारत की बात पर आये तो मुझे आपके पत्र मे वहुत-सी बाते ऐसी मालूम होती है जिनके लिए मेरे खयाल से वहुत कम औचित्य है। चूकि मै आपके पूर्व पक्ष की बहुत-सी वातो से सहमत नही हू, इसलिए मै आपके कुछ नतीजो से भी असहमत हू। आप कहते है कि "ब्रिटेन पुराने साम्राज्यवाद को छोड रहा है" और ऐसा रास्ता ढूढने की कोशिश मे लगा हुआ जिससे "व्यापक राष्ट्रीय आतम-निर्णय मे निहित अराजकता को नये युद्धो मे परिणति या साम्राज्यवाद के नये रूप मे प्रकटीकरण" से ोका जा सके। मेरी समझ मे यह बात बिल्कुल नही आती कि ब्रिटेन यह काम कर रहा है। मुझे पुराने साम्राज्यवाद को छोडने की बात कही दिखाई नही देती, बल्कि उससे चिपटे रहने और उसे मजबूत करने के बार-बार और जोरदार प्रयत्न दिखाई देते है, हालाकि कुछ बातो मे जनता के सामने नया तमाशा रखा जाता है। अवश्य ही ब्रिटेन नई लडाइया नही चाहता। वह एक सतुष्ट सत्ता है और उसका पेट जरूरत से ज्यादा भरा हुआ है। उसके पास जो कुछ है उसे वह खतरे मे क्यो डाले ? वह जैसी स्थिति है उसे कायम रखना चाहता है और उसमे उसका खूब फायदा है। उसे नये साम्राज्यवाद नापसद है, क्योकि उनका उसके पुराने साम्राज्यवाद से सघर्ष होता है। उसे खुद साम्राज्यवाद से कोई अरुचि नही है।

आपने भारत मे सवैधानिक रास्ते का भी जिक्र किया है। यह सवैधानिक रास्ता दरअसल क्या है ? जहा कोई लोकतत्री सविधान हो वहा मै सवैधानिक प्रवृत्तियो को समझ सकता हू, लेकिन जहा कोई ऐसी चीज नही है वहां सवैधानिक उपायो का कोई अर्थ नही है। तब सवैधानिक शब्द का अर्थ महज कानूनी होता है और कानूनी का मतलब सिर्फ इतना होता है कि एक ऐसी स्वेच्छाचारी कार्यकारिणी व्यवस्था की इच्छाओ के अनुसार काम किया जाय जो कानून बना सकती है और लोकमत की परवा किये बगैर हुक्मनामे और फरमान जारी कर सकती है। जर्मनी या इटली मे आज क्या सवैधानिक प्रणाली है ? भारत मे १९वी सदी मे अथवा २०वी सदी के प्रारम्भ मे या अब भी यह प्रणाली कहा है ? तब भी (या अब भी) ऐसे सवैधानिक उपकरणों के द्वारा, जिनपर भारत के लोगो का काफी असर पड़ सकता हो, भारत मे परिवर्तन लाने की कोई सभावना नही थी। लोग या तो भीख माग सकते थे या विद्रोह कर सकते थे। सिर्फ इसी बात से कि भारत के अधिकाश लोगो के लिए अपनी मर्जी को कारगर बनाना असभव है, जाहिर होता है कि उनके लिए कोई सवैधानिक मार्ग खुला हुआ नही है। वे या तो किसी ऐसी चीज को, जिसे सख्त नापसद करते है, मान सकते है या कथित सवैधानिक उपायो के सिवा कोई और उपाय अपना सकते है। विशेष परिस्थिति मे ऐसे उपाय बुद्धिमत्तापूर्ण अथवा बुद्धिमत्तारहित हो सकते है, परन्तु उनके सवैधानिक या असवैधानिक होने का सवाल नही उठता।

मै मानता हू कि हममे से ज्यादातर लोग अपने विशेष राष्ट्रीय पक्षपात से मुक्त नही हो सकते और हमे अक्सर अपनी ही आखो का शहतीर दिखाई नही देता। मै अच्छी तरह समझता हू कि मै भी इसका शिकार जरूर हूं, खास तौर से जब मै ब्रिटेन और भारत के सबध का विचार करता हू। आप उसके लिए गुजाइश रखिये। फिर भी मै इतना अवश्य कहूगा कि मुझे सबसे ज्यादा अचरज इस बात पर होता है कि अग्रेज लोग किस तरह अपने भौतिक स्वार्थो को अपने नैतिक जोश के साथ मिला देते है, कैसे वे यह अटल धारणा रखकर चलते है कि वे सदा ससार का भला करते रहे है और वे निहायत ऊचे मकसद से काम करते है और उपद्रव, सघर्ष और कठिनाई दूसरो के दुराग्रह और दुष्टता से होती है। आप जानते है कि इस धारणा को सब लोग

स्वीकार नही करते और यूरोप, अमरीका और एशिया मे उसका मजाक उडाया जाता है । भारत मे खास तौर पर, हमे क्षमा किया जाय, यदि हम ब्रिटिश राज के पिछले और मौजूदा अनुभव के वाद उसे विल्कुल अस्वीकार करते है । भारत मे जो कुछ हुआ है और हो रहा है उसे देखते हुए वहा लोकतत्र और सविधान की बाते करना मुझे इन शव्दो के अर्थ का विल्कुल तोड-मरोड करना मालूम होता है । इतिहास मे शासक-सत्ताओ और शासक-वर्गो ने खुशी से राज्य त्याग नही किया है और यदि इतिहास की शिक्षा काफी नही थी तो हम भारतवालो को तो इस ठोस हकीकत का काफी तजुर्वा भी हो चुका है ।

मेरे खयाल से यह सही है कि ब्रिटिश शासक-वर्ग परिस्थिति के अनुकूल वन जाने की एक हद तक वृत्ति रखता है, परन्तु जब उसकी सत्ता के आधार को ही चुनौती दी जाती है तव ऊपरी मेलमिलाप की गुजाइश नही होती । किसीके लिए यह कल्पना करना कि ब्रिटिश सरकार या ससद भारतीय स्वतत्रता के कृपालु सरक्षक है और उसके विकास का नियत्रण परोपकार भाव से कर रहे है, मुझे एक निहायत गैरमामूली खामखयाली मालूम होती है। मै मानता हू कि बहुत-से अग्रेज ऐसे है जिनका भारत और उसके लोगो के प्रति सद्भाव है और वे चाहते है कि भारत स्वतत्र होजाय । परन्तु नीति-निर्माण मे उनका महत्व नही है और वे भी या उनमे से अधिकाश इस तरह सोचते है कि भारत की आजादी का ब्रिटिश इच्छाओ और हितो के साथ जोड-तोड बैठ जाय । हमसे कहा जाता है कि जैसे-जैसे हम योग्यता का परिचय देगे, अधिक स्वतत्रता और ज्यादा जिम्मेदारी हमारे पास आ जायगी और उसकी कसौटी यह है कि हमारा अग्रेजो की योजनाओ के साथ कहातक मेल खाता है । इग्लैड के हमारे उपदेशको और हितैषियो को कभी-कभी यह कहने की जी मे आती है कि जरा ईसप की कहानियो को फिर से जान लीजिये और खास तौर पर भेडिये और मेमने का किस्सा दुबारा पढ लीजिये ।

यह बिल्कुल सच है कि अधिकाश और वातो की तरह राजनीति मे हम कोरी स्लेट पर लिखना शुरू नही कर सकते । यह भी सच है कि जीवन अक्सर इतना पेचीदा होता है कि उसमे मानव-तर्क नही चलता । हमे जैसी स्थिति होती है उसे स्वीकार करना पडता है, चाहे वह हमे पसन्द हो या न हो और

उसके साथ अपने आदर्शवाद का मेल बिठाना पडता है, परन्तु हमे चलना चाहिए सही दिशा मे। आपके कथनानुसार इसका अर्थ यह है कि सबसे पहले भारत की एकता की रक्षा की जाय और फिर सम्प्रदायवाद को मिटाया जाय; स्थापित स्वार्थो का नियत्रण और फिर धीरे-धीरे निवारण किया जाय और लोगो के रहन-सहन की सतह ऊची की जाय। सच्ची भारतीय सेना का विकास किया जाय और लोकतत्री राज्य मे आवश्यक रचनात्मक व्यावहारिक कार्य की भारत के नौजवानो को तालीम दी जाय। इन-सब बातो से परे समाजवादी आदर्श है और सामान्य पृष्ठभूमि ऐसी होनी चाहिए कि इस आदर्श पर सचमुच अमल करने के लिए जिन गहरी वृत्तियो और आदतो की जरूरत है, उनका विकास किया जा सके।

मेरा खयाल है कि हममे से अधिकाश इस बयान से तो सहमत होगे, हालाकि हम उसे दूसरी भाषा मे रख सकते है और कुछ उसमे जोड सकते है या कुछ मुद्दो पर अधिक जोर दे सकते है। मै आपसे इस बात मे भी सहमत हू कि राजनैतिक दौर सबसे पहले आता है। सच तो यह है कि उस दौर के बिना और कोई दौर होता ही नही। उसके साथ सामाजिक परिवर्तन हो सकते है या उसके बाद जल्दी ही हो सकते है। मै खुद तो राजनैतिक लोकतत्र को स्वीकार करने के लिए सिर्फ इस आशा से पूरी तरह तैयार हू कि उससे सामाजिक लोकतत्र आ जायगा। राजनैतिक लोकतत्र लक्ष्य पर पहुचने का रास्ता मात्र है, अतिम उद्देश्य नही है। उसके लिए सच्ची माग आर्थिक परिवर्तनो की इच्छा से होती है। यह इच्छा कभी-कभी अज्ञात होती है। यदि ये परिवर्तन जल्दी ही नही होते तो राजनैतिक रचना स्थिर नही हो सकती है। मेरा यह विचार होता है कि भारत की आज जैसी परिस्थिति है, उसमे आर्थिक परिवर्तन की बडी जरूरत है और अत्यावश्यक राजनैतिक परि-वर्तन के साथ-साथ अथवा बाद मे अनिवार्य रूप से ठोस आर्थिक परिवर्तन होगे। जो हो, राजनैतिक परिवर्तन ऐसा होना चाहिए, जिससे इन सामाजिक परिवर्तनो के लिए सुभीता होजाय। यदि वह इनके लिए रुकावट बन जाता है तो वह कोई मुनासिब अथवा करने लायक तब्दीली नही होगी।

मै ऐसे किसी जिम्मेदार हिन्दुस्तानी को नही जानता जो हिन्दुस्तान की एकता के सिवा और किसी निगाह से सोचता हो। हमारे राजनैतिक

विश्वास का यह जरूरी अग है और हम जो कुछ करते है उसका यही लक्ष्य है। मै सहमत हू कि वह एकता सघीय एकता हो सकती है, परन्तु अवश्य ही उसका अर्थ नये कानून के सघ जैसी कोई चीज नही है । वह एकता किसी सामान्य जुए के मातहत गुलामी की एकता भी नही है। यह मुमकिन है कि अव्यवस्था-काल के कारण फूट पैदा होजाय और भारत मे अलग-अलग राज्य बन जाय, परन्तु यह खतरा मुझे बहुत अवास्तविक दिखाई देता है । देशभर मे एकता की वृत्ति अत्यधिक प्रबल है ।

आपके मतानुसार फूट फैलानेवाले तत्व धर्म, नस्ल और भाषा है। नस्ल का महत्व मेरी समझ में नही आता। भारत मे नस्ल धर्म के साथ गुथ गई और उसने कुछ-कुछ जाति का रूप धारण कर लिया। हिन्दू और मुसलमान अलग-अलग नस्ले नही है, असल मे वे नस्लो का एक ही मेल है। इस तरह हालाकि विविध रूप मे नस्ले है तो भी एक-दूसरे मे मिली हुई है और सब मिलकर नस्ल और सस्कृति की दृष्टि से एक निश्चित इकाई बन जाती है। भारत की कथित सैकडो भाषाए हमारे आलोचको के लिए एक प्रिय विषय है। परन्तु आम तौर पर उन लोगो का किसी एक भी भाषा से परिचय नही होता। हकीकत यह है कि भारत भाषा की दृष्टि से अनोखे ढग से और अच्छी तरह से गथा हुआ है और लोक-शिक्षा के अभाव के कारण ही बहुत-सी बोलिया पैदा हो गई है । भारत की दस बडी जबाने है, जो थोडे-से छोटे-छोटे प्रदेशो को छोडकर सारे देश मे फैली हुई है। इनके दो वर्ग है—आर्य और द्रविड और दोनो के बीच मे सस्कृत की सामान्य पृष्ठभूमि है। मेरा खयाल है कि आप जानते है कि आर्य भाषाओ मे हिन्दुस्तानी और उसकी विविध बोलिया बारह करोड लोगो की भाषा है और वह फैल रही है। दूसरी आर्य भाषाओ बगाला, गुजराती और मराठी का उसके साथ बहुत गहरा सबध है। मुझे विश्वास है कि भारत एकता के रास्ते मे हमे और कठिनाइयो का सामना भले ही करना पडे, परन्तु भाषा का सवाल हमारे लिए बडी कठिनाई नही होगी ।

आप भारत मे धर्म की स्थिति की तुलना जागृति और सुधार के समय की यूरोप की स्थिति से करते है। यह सच है कि भारत के लोगो का जीवन के सबध मे एक निश्चित धार्मिक दृष्टिकोण है, जिसकी तुलना मध्यकालीन

यूरोप के दृष्टिकोण से की जा सकती है। फिर भी आपकी तुलना सतह से नीचे नही जाती। भारत के लम्बे इतिहास के सारे क्रम मे कभी ऐसे धार्मिक झगडे नही हुए, जिनके कारण यूरोप मे खून की नदिया बह गई। भारतीय धर्म, सस्कृति और तत्वज्ञान की सारी पृष्ठभूमि सहिष्णुता और दूसरे धर्म के प्रोत्साहन तक की पृष्ठभूमि थी। जब इस्लाम आया तो कुछ संघर्ष पैदा हुआ, परन्तु वह भी धार्मिक से राजनैतिक कही अधिक था, हालाकि जोर हमेशा धार्मिक पहलू पर दिया जाता है। वह सघर्ष विजेताओ और विजितों मे था। हाल की घटनाओ के बावजूद मै आसानी से कल्पना नही कर सकता कि किसी बडे पैमाने पर भारत मे धार्मिक सघर्ष होगा। आजकल का सम्प्रदायवाद असल मे राजनैतिक, आर्थिक और मध्यम वर्ग का है। मेरा खयाल है (परन्तु मै निजी जानकारी के बिना ऐसा कह रहा हू) कि अल्स्टर मे आज धार्मिक कटुता जितनी गहरी पैठी हुई है उतनी भारत मे कही नही है। यह एक ऐसी हकीकत है, जिसे हमे कभी नही भूलना चाहिए कि भारत में साम्प्रदायिकता बाद मे पैदा हुई घटना है, जो हमारे देखते-देखते बढ़ी है। इससे उसका महत्व कम नही हो जाता और हम उसकी उपेक्षा भी नही कर सकते, क्योकि इस समय वह हमारे रास्ते मे एक जबरदस्त रुकावट है और हमारी भावी प्रगति मे बाधा डाल सकती है। फिर भी मेरे खयाल से उसको बढा-चढाकर कहा जाता है और उसपर जरूरत से ज्यादा जोर दिया जाता है। बुनियादी तौर पर उसका असर आम लोगो पर नही होता, हालाकि कभी-कभी उनके विकार भडक उठते है। सामाजिक प्रश्नो के सामने आने पर वह अवश्य ही पीछे चला जायगा। उग्र साम्प्रदायिक लोगो की साम्प्रदायिक मागो की जाच कीजिये तो आपको पता चलेगा कि उनमे से किसी एक का भी जरा-सा भी सबध जनसाधारण से नही है। सब गुटो के साम्प्रदायिक नेताओ को सामाजिक और आर्थिक प्रश्नो का भयकर भय है और यह मजेदार बात है कि सामाजिक प्रगति के विरोध मे वे सब एक हो जाते है।

हिन्दुस्तान मे ब्रिटिश राज ने देश की राजनैतिक एकता पैदा करने में अनिवार्य रूप से सहायता दी है। सामान्य पराधीनता के होने से ही उनसे पीछा छुडाने की सामान्य इच्छा होना अनिवार्य था। यह याद रखना चाहिए—

हालाकि इस तथ्य को काफी अच्छी तरह अनुभव नही किया जाता—कि सारे इतिहास मे भारत मे सास्कृतिक और भौगोलिक एकता की बिल्कुल असाधारण समझ रही है और परिवहन और सचार के आधुनिक हालात मे राजनैतिक एकता की इच्छा जरूर बढेगी। किन्तु सारे ब्रिटिश-काल मे शासन-सत्ता की तरफ से, कुछ जान-बूझकर और कुछ अनजाने, इस एकता को मिटाने का प्रयत्न रहा है। अवश्य ही यह आशा तो रखी ही जाती थी, क्योकि तमाम साम्राज्यो ओर शासक-मडलियो की सदा यही नीति रही है। उन्नीसवी शताब्दी के दौरान मे भारत मे ऊचे अफसरो ने खुलकर जिस तरह अपनी राय जाहिर की है उसे पढकर दिलचस्पी होती है। उस समय समस्या बहुत तेज नही हुई थी, लेकिन राष्ट्रीय आदोलन के बढने के साथ-साथ और पिछले तीस वर्ष मे वह तीव्र होगई। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया यह हुई कि इस फूट को पैदा करने और सभव हो तो चिरस्थायी बनाने के लिए नये-नये तरीके निकाले जाय। जाहिर है कि कोई यह नही कह सकता कि हिदुस्तान मे फूट की जन्मजात वृत्ति नही थी और राजनैतिक सत्ता निकट आते हुए देखकर यह वृत्ति बढने की सभावना थी। इस वृत्ति को हल्का करने की नीति भी अपनाई जा सकती थी और तेज करने की भी। सरकार ने दूसरी नीति अपनाई और देश मे फूट फैलानेवाली हरेक प्रवृत्ति को हर तरह से प्रोत्साहन दिया गया। लोगो के ऐतिहासिक विकास को रोकना न उनके लिए सभव था, न और किसीके लिए। परन्तु वे रास्ते मे रुकावटे खडी कर सकते है, और उन्होने की है। इनमे से सबसे ताजा और महत्वपूर्ण वे बाधाए है जो नये कानून मे रखी गई है। आप इस कानून की तारीफ इसलिए करते है कि वह भारत की एकता का प्रतीक है। हकीकत इससे बिल्कुल उल्टी है। वह अधिक फूट का (यदि इसका मुकाबला न किया गया तो) पहला कदम है। वह भारत को धार्मिक और बहुत-से और दायरो मे बाट देता है, उसके बडे-बडे हिस्सो को सामन्ती अड्डे बनाकर रखता है, जिन्हे कोई छू नही सकता, मगर जो दूसरे हिस्सो पर असर डाल सकते है और यह कानून सामाजिक और आर्थिक मुद्दो पर अच्छे राजनैतिक दलो का विकास रोक देता है। आप तो इसे "आज के भारत मे सबसे महत्वपूर्ण जरूरत" मानते है।

सामाजिक मुद्दो पर ब्रिटिश सरकार की नीति भी उतनी ही मार्के की है।

किसी भी किस्म के समाजवाद या स्थापित स्वार्थो के नियत्रण अथवा निवारण को तो फूटी आख से भी नही देखा जाता, उलटे जान-बूझकर बहुत-से स्थापित स्वार्थो की रक्षा की गई है। नये-नये स्थापित स्वार्थ पैदा किये गए है और भारत मे राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक प्रतिक्रियावादियो का हमेशा पक्ष लिया गया है। और यह नया कानून इस नीति का ही परिणाम है और पहले कभी स्थापित स्वार्थो, दकियानूसी और प्रतिक्रियावादियो की इतनी शक्ति नही हुई थी, जितनी नये सघीय भारत मे होगी। यह कानून के वल से उस सामाजिक प्रगति का दरवाजा बन्द कर देता है जो आपके खयाल से हमारा लक्ष्य होना चाहिए। वह इन विदेशी और भारतीय स्थापित स्वार्थो की रक्षा करता है और उनकी जडे मजबूत करता है। छोटे-छोटे सामाजिक सुधार के उपाय भी उपलब्ध नही है, क्योकि राज्य के आर्थिक साधनो का बहुत बड़ा हिस्सा स्थापित स्वार्थो की रक्षा के लिए रहन और सुरक्षित रख दिया गया है।

आजकल हर देश को प्रतिक्रिया और बुराई की शक्तियो के खिलाफ डटकर लडना पडता है। भारत इस नियम का अपवाद नही है। स्थिति का दुखद पहलू यह है कि ब्रिटिश जनता अनजाने अपनी ससद और अपने कर्मचारियो के जरिये आज भारत मे बुराई की ताकतो के पक्ष मे पूरी तरह खड़ी है। जो चीज वह अपने देश मे क्षणभर भी बर्दाश्त नही करेगी, उसे भारत मे प्रोत्साहन दिया जाता है। आपने अब्राहम लिकन के वडे नाम का जिक्र किया है और मुझे याद दिलाया है कि वह सघ को कितना महत्व देते थे। शायद आपका यह खयाल है कि काग्रेस के आन्दोलन को दबाने की कोशिश मे बिटिश सरकार का यही पवित्र हेतु है कि फूट फैलानेवाली शक्तियो के मुकाबले मे भारत की एकता को कायम रखा जाय। मै बिल्कुल नही समझ सकता कि उस आदोलन से भारत की एकता को कैसे खतरा है। सच पूछा जाय तो मेरा यह विचार है कि उस आदोलन या उसके जैसे ही किसी आदोलन से देश मे अनन्य एकता पैदा हो सकती है और ब्रिटिश सरकार की प्रवृतिया हमे उल्टी दिशा मे धकेलती है। परन्तु इसके अलावा क्या आप यह नही समझते कि लिकन की तुलना किसी पराधीन देश मे स्वतत्रता-आन्दोलन को कुचलने के किसी साम्राज्यवादी सत्ता के प्रयत्न के साथ करना बहुत खीचतान

करना नही है ?

आप लोगो मे से वुरी और खुदगर्जी की आदते और वृत्तिया मिटाना चाहते है। क्या आपका यह विचार है कि भारत में अग्रेज लोग इस दिशा मे सहायक हो रहे है ? प्रतिगामी तत्वो का समर्थन करने के अलावा ब्रिटिश-शासन की पृष्ठभूमि विचार करने योग्य है। अवश्य ही उसका आवार व्यापक हिसा के उग्र स्वरूप पर है और उसका एकमात्र वल भय है। वह उन सावारण स्वतत्रताओ का दमन करता है जो किसी प्रजा के विकास के लिए आवश्यक मानी जाती है, वह साहसी, वहादुर और तेज तवीयत लोगो को कुचलता है और डरपोक,अवसरवादी और समय-साधक,दव्वू और गुडे तत्वो को प्रोत्साहन देता है। वह अपने चारो ओर जासूसो, गुप्तचरो और भडकाकर अपराध करानेवाले लोगो की एक विशाल सेना रखता है । क्या ऐसे ही वायुमडल मे वाछनीय गुण विकास करते है ? या लोकतत्री सस्थाए फूलती-फलती है ?

आप मुझसे पूछते है कि क्या कभी काग्रेस सारे भारत के लिए रजामन्दी से कोई उदार सविधान स्थापित कर सकती है, अगर वह वुनियादी वातो में सम्प्रदायवाद, सामन्तवाद और पूजीवाद को इसी प्रकार की रियायते न दे ? इसमे यह वात मान ली गई है कि मौजूदा कानून रजामन्दी से कोई उदार सविधान स्थापित कर रहा है। यदि यह सविधान उदार है तो मेरे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि अनुदार सविधान कैसा हो सकता है। रही बात रजामन्दी की, सो मुझे शका है कि जितना विरोध और जितनी नाराजी नये कानून से हिन्दुस्तान मे हुई है उतनी ब्रिटिश सरकार के और किसी काम से हुई हो। प्रसगवश, जरूरी रजामन्दी हासिल करने के जो उपाय किये गए, उनमे देशभर म अत्यन्त भयकर दमन भी हुआ और अव भी इस कानून को अमल मे लाने की भूमिका के तौर पर सब प्रकार की स्वतन्त्रता को दवा देने के लिए अखिल भारतीय और प्रातीय कानून पास किये गए है। ऐसी परिस्थिति मे रजामन्दी की वात करना निहायत गैरमामूली बात मालूम होती है। इसके वारे मे इग्लैड मे आश्चर्यजनक गलतफहमी है। यदि समस्या का सामना करना है तो प्रमुख तथ्यो की उपेक्षा नही की जा सकती ।

यह सही है कि सरकार राजाओ और विभिन्न अल्पसख्यक गुटो के

साथ कुछ इतजाम कर लेने मे कामयाब हुई है, लेकिन ये गुट भी बहुत असतुष्ट है। उनके प्रतिनिधित्व पर असर डालनेवाली छोटी-मोटी व्यवस्थाओ की बात दूसरी है। मुख्य अल्पसख्यक जाति मुसलमानो को लीजिये। कोई नही कह सकता कि गोलमेज-परिषद् के अमीर, सामन्ती और दूसरे कठपुतली मुस्लिम सदस्य मुस्लिम जनता के नुमायन्दे थे। आपको यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि अब भी काग्रेस को काफी मुस्लिम समर्थन प्राप्त है।

क्या काग्रेस इससे बेहतर कर सकती थी? मुझे कोई सदेह नही कि जिस राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रतीक और मुख्य अलमबरदार काग्रेस है वह निश्चित रूप से बेहतर व्यवस्था कर सकती थी। काग्रेस बेशक मध्यम वर्ग की सस्था है (काश वह अधिक समाजवादी होती) और इसलिए सम्पत्ति का प्रश्न इस स्थिति मे किसी तीव्र रूप मे खडा न होता। साम्प्रदायिक सवाल का सामना करना पडता है और मेरा खयाल है कि कम-से-कम फिलहाल बहुत-कुछ रजामन्दी के साथ हल कर लिया जाता। शायद शुरू मे सम्प्रदायवाद की कुछ मात्रा रह जाती, परन्तु वह नये कानून मे जितनी मात्रा मे है उससे कही कम होती। इससे अधिक महत्वपूर्ण बात यह होती कि जमीन की समस्या निपटा ली जाती और ऐसे हालात पैदा कर लिये जाते, जिनसे निकट भविष्य मे साम्प्रदायिकता खत्म हो जाती और सामाजिक ढग पर प्रगति होती। वास्तविक कठिनाइया दो है—ब्रिटिश सरकार और सिटी ऑव लदन के स्थापित स्वार्थ और राजा लोग। पहली कठिनाई मामले का मर्म है, और सब बाते वास्तव मे गौण है। हालात को देखते हुए राजा लोग काफी हद तक नई परिस्थिति के अनुकूल बन जाते और काग्रेस जैसी आज बनी हुई है, उन्हे काफी छूट देती। लोकमत का दबाव, जिसमे उनकी अपनी प्रजा का दबाव शामिल है, उनके लिए इतना ज्यादा होता कि वे प्रतिकार नही कर सकते थे। शायद शुरू मे देशी राज्यो के साथ कोई अस्थायी प्रवध कर लिया जाता, जिससे इस लोकमत का हालात के बनाने मे हाथ मान लिया जाता। अगर यह मान लिया जाय कि राजाओ की खालिस निरकुशता का समर्थन करने के लिए ब्रिटिश सरकार मौजूद नही है तो कोई शक नही कि रियासते धीरे-धीरे रास्ते पर आ जायगी। गृहयुद्ध का कोई प्रश्न पैदा होना जरूरी नही है।

मै जो कुछ चाहता हू उससे ये सब बाते बहुत दूर होती, परन्तु सही दिशा में यह कम-से-कम एक निश्चित राजनैतिक और लोकतत्री कदम होता। जाहिर है कि कोई सविधान या राजनैतिक इमारत बनाने में सब सबधित लोगो को रजामन्द कर लेना असभव होता है। अधिक-से-अधिक लोगो की सहमति प्राप्त करने की कोशिश की जाती है और दूसरे लोग जो सहमत नही होते वे या तो लोकतत्री प्रणाली के अनुसार रास्ते पर आ जाते है या उन्हे दबाकर ठीक किया जाता है। ब्रिटिश सरकार ने, निरकुश और एकाधिकारवादी परम्परा के अनुसार और अपने ही हितो को कायम रखने पर तुली होने के कारण, राजाओ और कुछ अन्य प्रतिगामी तत्वो की रजामन्दी हासिल करने की कोशिश की और लोगो के विशाल बहुमत को दबाया। काग्रेस निश्चित रूप से दूसरी ही तरह काम करती।

बेशक ये सारी बाते बिना तथ्य की और हवाई है, क्योकि इनमें मुख्य तत्व ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश आर्थिक हितो की उपेक्षा की गई है।

एक और विचार है, जो ध्यान देने योग्य है। महात्मा गांधी के नेतृत्व मे कांग्रेस ने अहिसा पर और विरोधी को दबाने के बजाय उसका हृदय-परिवर्तन करने पर बडा जोर दिया है। इस सिद्धान्त के आध्यात्मिक पहलू और अतिम रूप मे इसके कारगर होने-न-होने की बात को छोड भी दे तो इसमे कोई शक नही हो सकता कि उसने गृहयुद्ध के खिलाफ और हिंदुस्तान के विभिन्न समूहो के हृदय जीत लेने के पक्ष मे एक जबरदस्त भावना पैदा कर दी है। भारत की एकता कायम रखने और विरोध को हल्का कर देने मे यह चीज हमारे लिए बड़ी कीमती है।

लोग असहयोग और सविनय-अवज्ञा-आंदोलनो की इस दृष्टि से चर्चा करते है कि यह वैधानिक कार्रवाई है या नही। मैंने इस पहलू का जिक्र पहले किया है। आपको बताऊ कि मुझपर इनका हमेशा क्या असर हुआ है। अवश्य ही इन आदोलनो ने ब्रिटिश सरकार पर जबरदस्त दबाव डाला और सरकारी तन्त्र को हिला दिया। परन्तु उनका मेरे खयाल से असली महत्व इस बात मे था कि हमारे अपने लोगो पर और विशेषत. ग्रामीण जनसाधारण पर क्या असर पडा। दरिद्रता और लम्बे अर्से तक निरकुश शासन में रहने के कारण डर और दबाव का जो अनिवार्य वातावरण पैदा हुआ उससे वे

बिल्कुल साहसहीन और पतित होगये । उनमे नागरिकता के लिए आवश्यक कोई भी गुण नही रहा । उनको छोटे-से-छोटे कर्मचारी, कर वसूल करनेवाला, पुलिस का सिपाही, जमीदार का गुमाश्ता थप्पड लगाता था और रोब गाठता था । उनमे हिम्मत की एकदम कमी थी और अत्याचार का प्रतिकार करने या मिलकर कार्रवाई करने की कोई क्षमता नही रह गई थी । वे दब्बू होगये थे और एक-दूसरे की चुगली खाते थे और जब जीना दूभर हो जाता था तो मरकर बचने की कोशिश करते थे । यह सब बडी दु खद स्थिति थी । फिर भी उन्हे इसके लिए दोप नही दिया जा सकता था । वे सर्वशक्तिमान परिस्थिति के शिकार थे । असहयोग उन्हे इस दलदल से बाहर निकाल लाया और उससे उन्हे स्वाभिमान और स्वावलम्बन प्राप्त हुआ । उनमे मिलकर काम करने की आदत पैदा हुई । वे साहस दिखाने लगे और आसानी से अन्यायपूर्ण अत्याचार के आगे दबना उन्होने बन्द कर दिया । उनका दृष्टिकोण व्यापक हुआ और वे सारे हिदुस्तान की दृष्टि से कुछ-कुछ सोचने लगे । वे बाजारो और मिलने की जगहो पर (गवारू ढग से ही सही) राजनैतिक और आर्थिक प्रश्नो की चर्चा करने लगे । इसी प्रकार मध्यमवर्ग पर भी प्रभाव पडा, परन्तु आम लोगो मे जो परिवर्तन हुआ वह बहुत ही अर्थपूर्ण था । यह एक उल्लेखनीय कायापलट थी और इसका श्रेय गाधीजी के नेतृत्व मे काग्रेस को मिलना चाहिए । सविधान और सरकार की रचना से यह कही अधिक महत्वपूर्ण वस्तु थी । यही बुनियाद थी, जिसपर कोई स्थिर रचना या सविधान का निर्माण किया जा सकता था ।

अवश्य ही इन सब चीजो से भारतीय जीवन मे कायापलट हुई । आम तौर पर दूसरे मुल्को मे ऐसी तब्दीलियो मे बड़े पैमाने पर द्वेष और हिंसा हुई है । परन्तु भारत मे महात्मा गाधी की कृपा से ये चीजे मुकाबले मे बहुत थोडी हुई है । हममे युद्ध के अनेक गुण उसकी भयकर बुराइयो के बगैर पैदा होगये और भारत की वास्तविक अनन्य एकता पहले से कही ज्यादा निकट आगई । धार्मिक और साम्प्रदायिक मतभेद भी कम होगये । आप जानते है कि ग्रामीण भारत अर्थात् ८५ फीसदी हिन्दुस्तान से सबधित सबसे महत्वपूर्ण सवाल जमीन का सवाल है । किसी और देश मे ऐसा कोई उल्कापात होता और साथ ही भयकर आर्थिक मन्दी होती तो वहां किसान विद्रोही हो जाते । यह

असाधारण बात है कि हिन्दुस्तान उनसे वच गया। इसका कारण सरकारी दमन नही था, बल्कि गाधीजी की शिक्षा और काग्रेस का सदेश था।

इस प्रकार काग्रेस ने देश की तमाम सजीव शक्तियो को मुक्त किया और बुरी और फूट पैदा करनेवाली वृत्तियो को दवाया। यह काम उसने शान्ति-पूर्ण, अनुशासनवद्ध और यथासभव सभ्य ढग से किया, हालाकि ऐसे सामूहिक प्रदर्शन मे जोखम तो अनिवार्य रूप से थी। सरकार पर क्या प्रतिक्रिया हुई ? और आप इसे अच्छी तरह से जानते है, उन सजीव और प्राणवान शक्तियो को कुचलने की कोशिश की गई ओर बुराई ओर फूट फैलानेवाली वृत्तियो को प्रोत्साहन दिया गया और यह सव अत्यन्त असभ्य तरीके पर किया गया। पिछले छ वर्षो मे ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान मे खालिस फासिस्ट ढग से काम किया है। फर्क इतना-सा ही रहा कि फासिस्ट देशो की तरह उसने इस तथ्य पर खुला गर्व नही किया। यह पत्र भयकर रूप से लम्बा होगया है और अव मै नये सविधान कानून का ब्यौरेवार विचार नही करना चाहता। इसकी जरूरत भी नही है,क्योकि उस कानून का विश्लेषण और आलोचना हिन्दुस्तान मे वहुत लोगो ने की है। उनके तरह-तरह के मत है, लेकिन एक बात मे सव सहमत है कि यह कानून उन्हे बिल्कुल पसद नही है। अभी हाल ही मे हिन्दुस्तानी नरम दल के नेताओ मे से एक बहुत ही मशहूर नेता ने खानगी मे नये सविधान को "हमारी तमाम राष्ट्रीय आकाक्षाओ के अत्यन्त जहरीले विरोध का सार" बताया है। क्या यह मार्के की बात नही है कि हमारे नरम राजनीतिज्ञ भी इस तरह सोचे और फिर भी भारतीय आकाक्षाओ के प्रति आपकी इतनी उदार सहानुभूति होते हुए आप उस कानून को पसद करे और कहे कि "उससे हिन्दुस्तान मे सत्ता का किला हिन्दुस्तानियो के हाथ मे चला जाता है।" क्या हमारे विचार करने के तरीको मे इतनी गहरी खाई है ? ऐसा क्यो है ? यह राजनीति या अर्थशास्त्र की अपेक्षा मनोविज्ञान की समस्या अधिक बन जाती है।

आखिर तो मनोवैज्ञानिक पहलू बहुत महत्वपूर्ण है। क्या इग्लैण्ड मे इस बात को अनुभव किया जाता है कि भारत के लिए पिछले कुछ बरस कैसे रहे है ? किस प्रकार मानव-गौरव और शिष्टता को कुचलने के प्रयत्न ने और शरीर से भी अधिक आत्मा पर जो आघात हुए है उन्होने हिदुस्तानी जनता पर

एक स्थायी असर छोडा है। मैंने पहले कभी इतनी अच्छी तरह अनुभव नही किया कि कैसे सत्ता के अत्याचारी प्रयोग से, जो उसका प्रयोग करते है और जो उस प्रयोग से कष्ट उठाते है, उन दोनो का पतन होता है। हम, जो कुछ शिष्ट और सम्मानपूर्ण है उस सबको भूले बिना, इसको कैसे भूल सकते है ? हम उसे कैसे भूल सकते है जब वह रोजमर्रा होता है ? क्या स्वतत्रता और सत्ता का किला हस्तान्तरित करने की यही भूमिका है ?

अत्याचार की प्रतिक्रिया लोगो पर अलग-अलग होती है। कुछ हिम्मत छोडकर बैठ जाते है, कुछ और मजबूत होते है। और-और जगह की तरह भारत मे भी दोनो तरहके लोग है। हममे-से बहुत-से अपने साथियों को, जो कैद-खाने मे या दूसरी तरह के कष्ट भोगते है, नही छोड सकते, चाहे नतीजा हमारे अपने लिए कुछ भी हो। हममे से बहुत-से लोग गाधीजी का अपमान सहन नही कर सकते, चाहे हम उनसे सहमत हो या न हो, क्योकि गाधी हिदुस्तान के सम्मान का प्रतिनिधि है। कोई समझदार आदमी सघर्ष, कष्ट और विनाश का मार्ग पसन्द नही करता। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन ने इस मार्ग से बचने की भरसक कोशिश की। अलबत्ता वह अपने अस्तित्व के आधार को तो छोड नही सकता था। परन्तु ब्रिटिश सरकार जरूर उसी रास्ते पर चली है और उसने शान्तिपूर्ण हल को ज्यादा-से-ज्यादा कठिन बना दिया है। अगर वह कल्पना करती है कि वह इसी दिशा मे चलती रहकर कामयाब हो जायगी तो मालूम होता है कि उसने इतिहास के सबक को और भारत के लोगो की मौजूदा आदत को बहुत गलत समझा है। यदि विनाश से बचना है तो ब्रिटिश सरकार को अपने कदम पीछे हटाने पडेगे।

इतने लम्बे खत के लिए माफ कीजिये।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

दि मार्किस ऑव लोथियन,
सेमूर हाउस,
१७ वाटरलू प्लेस.
लदन, एस डब्ल्यू-१

१२५ बरट्रैन्ड रसेल की ओर से

टेलीग्राफ हाउस
हार्टिंग, पीटर्सफील्ड
३० जनवरी १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे वडा दुख है कि जव आप इग्लैंड आयेगे तव मै आपसे नही मिल पाऊगा। मेरी पत्नी बीमार है और डाक्टर ने उन्हे किसी गरम जगह ले जाने का आदेश दिया है। लेकिन उन्हे यात्रा के योग्य स्वस्थ वनाने मे वडी कठिनाई का सामना करना पडा है। इसकी वजह से मै अवतक यही बंधा रहा और अव मै विदेश जा रहा हू। जैसाकि आप जानते है, मुझे आपके कार्य से और विशेष रूप से हिंदुस्तान के राष्ट्रीय आन्दोलन को समाजवाद से सम्वद्ध करने के प्रयत्न से पूरी सहानुभूति है। मुझे आशा है कि आपकी यात्रा उपयोगी सिद्ध होगी, यद्यपि सरकारी दृष्टिकोण से यह समय वहुत अनुकूल नही है।

मगलकामनाओ सहित,

आपका,
बरट्रैन्ड रसेल

१२६ एम ए अन्सारी की ओर से

दारुस्सलाम, दरियागज,
दिल्ली
११ फरवरी १९३६

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे बहुत उम्दा और दिलचस्प खत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया। तुम ठीक कहते हो कि खत एक बहुत ज्यादा निजी और दिली दोस्ती की चीज है। तस्वीरी पोस्टकार्ड से उसका कोई मुकाबला नही किया जा सकता। मेरा सुझाव सिर्फ यही था कि जब तुम्हारे लिए अपनी खतो-किताबत को निपटाना नामुमकिन होगया तो तुम्हारा बोझ हल्का हो। लेकिन फिर तुम तुम कहा रह जाओगे, अगर तुम अपने फर्जो को बहादुरी के साथ पूरा न करो, आया वे फर्ज अवाम के हो या निजी। मैने खुद सादा डाक से

विलायत में अपने दोस्तो से खतो-किताबत बंद कर दी है। दो-तीन हफ्तें की घिसी-पिटी खबरे लिखकर जाने देना मुझे वक्त की बरबादी लगती है, जबकि तुम सिर्फ एक हफ्ते पुरानी खबरे दे सकते हो। जवाब मे भी ऐसा ही होगा। मुझे उम्मीद है, लोजान पहुचकर कमला की तदुरुस्ती बेहतर हो रही है। पता नही, कमला लोजान मे किस सैनैटोरियम मे ठहरी होगी ? मुझे लोजान बहुत पसन्द है। क्या ही खूबसूरत शहर है और कैसा बीचो-बीच बसा हुआ है। वहा से आप चुटकी बजाते लेसिन या मन्टना पहुच सकते है। मै कमला की सेहत की बेहतरी की खबर सुनने के लिए बहुत बेताब हूं। तुम अबतक लोजान लौट आये होगे, जिससे वह बेहद खुश हो गई होगी।

लेकिन मुझे हैरानी हो रही है कि अब जब तुम काग्रेस के सदर चुन लिये गये हो, तुम क्या करोगे ? कमला अभी इतनी कमजोर है कि उसे हिदुस्तान वापस लाने का सवाल ही नही उठता। तुम वहा आधे मार्च से ज्यादा ठहर नही सकते। ऐसी सूरत मे जब तुम कमला को वहा छोडकर हिदुस्तान लौटोगे तो उसकी सेहत पर बहुत खराब असर पडेगा। मै नही समझता कि तदुरुस्ती की मौजूदा हालत मे तुम कैसे उसे ज्यादा देर तक छोडकर रह सकते हो ? तुमसे साफ-साफ कह दू कि जो लोग इस साल तुम्हे काग्रेस का सदर चुनने के लिए जिम्मेवार है वे तुम्हारी घरेलू दिक्कतो के नुक्ते निगाह से और अवाम के नजरिये से तुम्हारे तई बहुत ही नासमझ और बेरहम है। मै नही समझता कि मौजूदा हालत मे तुम्हारी असर रखनेवाली शख्सियत भी तुम्हारी सालभर की सदारत के दौरान मे कोई खास बात करके दिखा सकेगी। अगर साल के आखिर में कुछ हासिल न हुआ तो महज यह बात कि हमारे सबसे अच्छे आदमियो मे से एक कुछ करने मे नाकामयाब रहा, एक बहुत बडी मायूसी पैदा कर देगी। मै महसूस करता हूं कि मौजूदा कैफियत मे असेम्बलियो का प्रोग्राम (जो हालाकि आजादी या आजादी का जुज भी पास लाने मे कोई खास कारआमद साबित न होगा) कम-से-कम जद्दोजहद से थके हुए लोगो को कुछ आराम का मौका दे देता और आगे आनेवाले वक्त मे आगे बढ़ने के लिए बहुत-कुछ शुरुआत का काम कर सकता है। हालाकि बिगडी हुई सेहत ने मुझे भाग-दौड की सियासत से छुट्टी लेने पर मजबूर कर दिया है, फिर भी तुम्हारे लौटने पर मै तुमसे साफ-साफ

और तफसील से चर्चा करना चाहूगा।

मुझे यह कहते हुए बडी खुशी है कि महात्माजी अब बेहतर है। लेकिन मुझे यह बताया गया कि इस बार उनकी तदुरुस्ती बहुत खराब होगई थी। मुझे यह बताते भी खुशी होती है कि मेरी तदुरुस्ती बेहतर है, लेकिन मै बाल-बाल ही बचा हू, मुझे और ज्यादा होशियार रहना होगा। जोहरा अपने इम्तहान के नतीजे का इतजार कर रही है। मुझे उम्मीद है, इस बार वह कामयाब हो जायगी। मै ठीक से नही कह सकता कि इसके बाद वह क्या करेगी। कभी-कभी वह कहती है कि हिदुस्तान मे ही किसी कालिज मे भर्ती होकर बी ए की तैयारी करेगी, लेकिन कभी-कभी कैम्ब्रिज जाना चाहती है। मै मामला पूरी तौर पर उसीके ऊपर छोड दूगा। वह तुम्हे, कमला और इन्दू को अपना प्यार और बदगी भेजती है।

तुम सबको प्यार।

तुम्हारा,
एम. ए अन्सारी

फिर से—

मैंने सादा डाक से तुम्हे अपनी किताब 'रीजनरेशन इन मैन' भेजी है। मुझे उम्मीद है, तुम्हे पसन्द आयेगी।

१२७. मदलेन रोला की ओर से

विलनेव (वो)
१७ फरवरी १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मेरे भाई की वर्षगाठ पर आपकी भेजी गई शुभकामनाओ के लिए मेरे भाई आपको हार्दिक धन्यवाद देते है और वह इस बात पर खेद भी प्रकट करते है कि आपके प्रस्थान से पहले आपसे मिलना हमारे लिए सभव नही है। लेकिन हम अच्छी तरह से जानने है कि इससे पहले जो कुछ दिन रह गये है उन्हे आप हमारे परिवार को नही दे सकते है।

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि श्रीमती नेहरू पहले से अच्छी है।

मै आशा करती हू, अगले महीने उनसे मिलने के लिए डाक्टर मुझे अनुमति दे देगे। इसके अतिरिक्त मै क्लिनिक को फोन करके पहले मालूम कर लूगी कि उन्हे मिलने मे कब सुभीता रहेगा।

मै 'सैटिनेल' का वह अक भेज रही हू, जिसमे गाधी पर आपका लेख प्रकाशित हुआ है। 'वाद्रेदी' के पास आपका लेख पहले से ही था, इसलिए उसमे वह नही छप सका, लेकिन मैने उसे 'यूरोप' को भेज दिया है। पत्र की व्यवस्था मे परिवर्तन हो जाने के कारण मुझे अबतक उसके बारे मे कोई सूचना नही मिली, लेकिन श्री राजाराव से, जो वहा से आ रहे है, मैने अनुरोध किया है कि वह इस मामले को अपने हाथ मे ले।

मैने कुमारी इदिरा से कहा था कि वह काग्रेस के अध्यक्ष-पद के लिए आपके नये चुनाव पर आपको हमारी बधाई दे। हिदुस्तान की दृष्टि से हमे इस बात पर बड़ी प्रसन्नता है। आपके लिए हमारी शुभ कामनाए।

सप्रेम,

मदलेन रोलां

वहा के हमारे सब मित्रो को हमारी ओर से अभिवादन देने की कृपा कीजिये।

१२८. एलेन विल्किन्सन की ओर से

हाउस ऑव कामन्स,

लंदन

१७ फरवरी १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

(मै समझता हू कि इस बार मैने सही-सही लिखा है!)

कृपाकर टाइप किया हुआ पत्र भेजने के लिए क्षमा कीजियेगा। लेकिन आपका पत्र आने के बाद से मुझे दम मारने की भी फुर्सत नही मिली। इसी बीच मुझे हवाई जहाज से बर्लिन की एक तूफानी यात्रा भी करनी पडी।

अलग डाक से मै 'टाइम एण्ड टाइड' की एक प्रति भेज रहा हू, जिसमे, मै समझता हू, आप अपनी यात्रा के बारे मे प्रोफेसर लास्की के विचार पढना पसन्द करेगे, जिसमे कि हम सबकी प्रतिध्वनि है।

लेडी रोन्डा ने मुझसे पूछा है कि शाति की रक्षा की सम्भव युक्तियो के बारे मे जेरल्ड हर्ड 'टाइम एण्ड टाइड' मे जो लेखमाला लिख रहे है उसमें उनके बाद क्या आप भी कुछ लिख सकेंगे ? ब्रिटिश उपनिवेशो और विरोधी देशो के साथ कुछ-न-कुछ समझौता करने के बारे मे आपने लायड जार्ज को जो कहते सुना है, वही विचार पार्लमेंट के काफी सदस्यो का है। आपने अपने भाषण मे कहा था—"औपनिवेशिक देशो का क्या होगा ? जो कुछ होनेवाला है, क्या उसके बारे में उन्हे कुछ कहने का अधिकार नही होगा ? क्या उन्हे यह बताने का अधिकार नही है कि वे अपना स्वामी बदलना चाहते है या कोई स्वामी चाहते भी है या नही ?" आपकी इस बात का लोगो पर जो असर पडा वह मैंने लेडी रोन्डा को बता दिया है। वह जानना चाहती है कि इस देश मे उपनिवेशो के साथ सहयोग करने के बारे मे जो सद्भावनापूर्ण चेष्टाए की जा रही है उनके सबध मे क्या आप उपनिवेशो की ओर से अपने विचार प्रकट करना चाहेगे चाहे आप कितने ही जोरदार शब्दो मे अपने विचार प्रकट करना क्यो न पसद करे ? मै समझता हू कि अगर आपके पास समय हो तो ऐसा करना उचित होगा। बेशक इसके लिए पारिश्रमिक दिया जायगा, यद्यपि मुझे भय है कि वह ज्यादा नही होगा। लेडी रोन्डा का खयाल है कि लगभग एक हजार शब्द काफी होगे। अगर आप समझते है कि आप भारत जाने से पहले ऐसा नही कर सकेंगे और रास्ते मे जहाज पर से कुछ लिखकर भेजना पसन्द करेगे तो आप कृपा-कर लेडी रोन्डा को ऐसा लिख भेजिये। उनके दफ्तर का पता है—३२ ब्लूम्सबरी स्ट्रीट, डब्ल्यू सी-१।

मुझे यह जानकर बडी प्रसन्नता है कि आपने कमला को पहले से कुछ अच्छा पाया और इस बात की सम्भावना है कि वह खतरे को पार कर गई है।

आप हमारे साथ रहे, यह हमारे लिए एक बडे सौभाग्य की बात है। आपकी इस यात्रा से मूर्ति-पूजको के बीच बडी सद्भावना फैली है।

आप दोनो को आदरसहित,

आपका,

श्री जवाहरलाल नेहरू

एलेन

१२९. रोम्यां रोलां की ओर से

विला ओल्गा,
विलनेंव (वो)
मगलवार, २५ फरवरी १९३६

प्रिय मित्र,

अपने बुरे स्वास्थ्य के कारण मैं आपके जाने से पहले आपके प्रति सम्मान प्रदर्शित करने के लिए नही आ सका। जबतक आप और मैं एक ही जगह पर थे, उसी बीच ही मै चाहता था कि कम-से-कम आपको, आपकी पत्नी तथा आपके प्यारे देश को स्नेहभरी शुभकामनाए भेज दू।

भावना के स्तर पर मैं अनुभव करता हू कि यह विछोह आपके लिए कैसा होगा! मेरी कामना है कि आगे आनेवाले वसत तक श्रीमती जवाहर-लाल नेहरू के स्वास्थ्य मे सुधार होजाय और आप शात मन से अपने उस कार्य पर लौटे, जो वहा आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

मुझे आशा है कि आपके मार्ग-दर्शन मे हिंदुस्तान हमारे पश्चिम की तरह इस बात को जान जायगा कि उसकी राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति मे जो रोडे अटका रहे हैं, उन सबके विरुद्ध किस प्रकार 'जनवादी मोर्चा' प्रस्तुत करे।

मुझसे कहा गया है कि मैं आपसे और गाधीजी से भी अनुरोध करूं कि आप दोनो उस विश्व-शाति-सम्मेलन मे शामिल हो, जिसे हम गर्मियो के अत मे, सभवत. सितबर मे, जिनेवा मे करने जा रहे है। वह एक विशाल और शक्तिशाली काग्रेस होगी—एक प्रकार से विश्व-व्यापी शाति की शक्तियो को सक्रिय करने के लिए। फ्रास, इंग्लैड, अमरीका, चैकोस्लोवेकिया, स्पेन, बेलजियम, हालैड तथा दूसरे बहुत-से देशो के अनेक राष्ट्रीय एव अतर्राष्ट्रीय सस्थाओ और सम्माननीय व्यक्तियो ने उसमे आना स्वीकार कर लिया है (इग्लैड के लार्ड राबर्ट सैसिल, मेजर एटली, नारमन एजिल, फिलिप नायल बेकर, एलेग्जेडर, प्रो लास्की। फ्रास के एरिओ, पियेर को, जुओ, काद्रे, राकामो, प्रो. लाजवे, इत्यादि। चैकोस्लोवेकिया के बेनेश्, होज्रा। स्पेन के अयान्या, आलवारेय देल वागो आदि। बेलजियम के लुई दे ब्रुकेर, आरी लाफोतेन इत्यादि)। इसका मतलब यह हुआ कि राष्ट्रीय

तथा अतर्राष्ट्रीय पैमाने पर एक ऐसा सगठन बनेगा, जो विश्वव्यापी ज्वाला के सकटपूर्ण खतरे का प्रतिरोध करेगा। हमारे भारतीय मित्रो को जब आप हमारा अभिवादन दे तो कृपया इस सबध मे भी उनसे चर्चा करले। उनका और आपका भी उत्तर या तो मुझे भेज दिया जाय या 'युद्ध और फासिज्म-विरोधी सघर्ष की विश्व-समिति' के कार्यालय को, जिसका कि उन्होने मुझे अवैतनिक अध्यक्ष बनाया है। (२३७ लाफाइयेत पेरिस-१०)।

मुझे आशा है, हम लोगो का आपसे और हमारे भारतीय मित्रो से नियमित पत्र-व्यवहार करते रहना सभव होगा। इसका मतलब यह हुआ कि हिदुस्तान मे जो भी सामाजिक और राजनैतिक कार्य हो, उनके बारे मे पश्चिमी राय बराबर ध्यान मे रहे, क्योकि इधर बहुत-से ऐसे लोग है, जो कि उस विषय मे मौन रहते है या झूठी खबरे फैलाते है।

मै सम्पूर्ण हृदय से आपसे हाथ मिलाता हू। मेरे प्यारे मित्र, स्वस्थ रहना, प्रसन्न रहना और अपने उस ध्येय को प्राप्त करना, जो कि सच्चे भारत का ध्येय है।

सादर,

आपका,

रोम्या रोला

गाधी और उनके मित्रो को—मीरा, प्यारेलाल और महादेव देसाई, जो कि विलनेव मे हमारे अतिथि रहे थे—मेरा अभिवादन निवेदन कर दीजिये।

'वाद्रेदी' मे आपका जो लेख मैदम आद्रे विवलि की भूमिका के साथ प्रकाशित हुआ है, उसे मैने बडी रुचि से पढा है। आपका दूसरा लेख, जो आपने मेरी बहन को भेजा है, 'यूरोप' के मार्च अक मे छपेगा।

१३० सुभाषचद्र बोस की ओर से

कुरहाउस् हख्लान्ड
बाडगाश्टाइन (आस्ट्रिया)
४ मार्च १९३६

प्रिय जवाहर,

लम्बी और थका देनेवाली यात्रा के बाद मै कल सुबह यहा पहुचा।

यह स्थान सुन्दर और शात है। मै चाहता हू कि काम के भवर-जाल मे कूद पड़ने के पहले तुम यूरोप मे थोडा आराम कर लो।

तुमसे विदा होने के वाद मै सोच रहा हू कि क्या सचमुच मुझे उस तरह का बयान जारी करना चाहिए जैसा कि मैंने तुमसे जिक्र किया था। मेरा खयाल है कि मुझे वयान देना चाहिए, कारण मेरे पुन जेल जाने की सभावना है और कुछ लोग जरूर ऐसे होगे जो मेरे सुझाव पाना चाहेगे। मै यथासभव सक्षिप्त बयान दूगा और उसमे साफ तौर से जता दूगा कि मैंने निश्चित रूप से तुम्हे पूरा समर्थन देने का फैसला किया है।

आज के प्रमुख नेताओ मे से तुम्ही एक ऐसे व्यक्ति हो, जिससे हम कांग्रेस को प्रगतिशील दिशा मे ले जाने की आशा कर सकते है। इसके अलावा, तुम्हारी स्थिति असाधारण है, और मेरे खयाल से महात्माजी भी और किसीकी अपेक्षा तुम्हारा ज्यादा लिहाज करेगे। मेरी हार्दिक अभिलाषा है कि तुम फैसले करने मे अपनी सार्वजनिक स्थिति की मजवूती का पूरा फायदा उठाओगे। कृपया अपनी स्थिति को वास्तविकता से अधिक कमजोर मत समझो। गाधीजी हरगिज ऐसा रुख नही अपनायेगे, जो तुम्हे दूर ले जानेवाला हो सकता है।

जैसा कि मैंने अपनी पिछली वातचीत मे सुझाया था तुमको तत्काल दो काम करने होगे (१) हर तरह से पदग्रहण को रोको, (२) कांग्रेस कार्य-समिति को विस्तृत और व्यापक करो। यदि यह कर लोगे तो तुम काग्रेस को पतन से बचा लोगे और उसे लीक से वाहर ला सकोगे। वडी समस्याओ का हल थोडी प्रतीक्षा कर सकता है, किन्तु काग्रेस को पतन की राह पर जाने से तो तुरन्त ही वचाना होगा।

मुझे यह जानकर वडी खुशी हुई कि तुम काग्रेस का विदेश-विभाग स्थापित करना चाहते हो। यह वात मेरे विचारो से पूरी तरह मेल खाती है।

मै इस पत्र को लम्बा नही करना चाहता, क्योंकि तुम्हे भी रवाना होने की जल्दी होगी और रवाना होने के पहले वहुत-से काम निपटाने होगे। मै तुम्हारी सकुशल स्वदेश-यात्रा की कामना करता हू, और जो कठिन कार्य तुम्हारा इन्तजार कर रहा है, उसमे तुम्हारी प्रचुर सफलता चाहता हूं।

अगर मुझे लखनऊ आने दिया गया तो मेरी सेवाए तुम्हारे अधीन होगी ।

तुम्हारा,
सुभाष

१३१. एच एन ब्रेल्सफोर्ड की ओर से

३७ बेल्साइज पार्क गार्डन्स,
लंदन एन. डब्ल्यू. ३
८ मार्च १९३६

कृपाकर इसका उत्तर न दें ।

प्रिय नेहरू,

आपको जो धक्का लगा है, उसकी, मैं समझता हू, आपको महीनो से शका रही होगी, फिर भी आप सदा यही आशा करते रहे होगे कि प्रकृति कोई जादू कर देगी । लेकिन दु ख का यह पहाड आखिर आपपर अटूट ही पडा । मुझे भय है कि इतने दिनो की लम्बी चिन्ता के वाद आपमे इतनी शक्ति नही रह गई होगी कि आप इस दु ख का सामना कर सके । आपके मित्र चाहे कितनी भी सहानुभूति दिखाये, उससे आपका दु ख कम नही हो सकता । हा, मुझ जैसे लोग, जो उनसे मिल चुके है—मैं तो उनसे क्षणभर के लिए ही मिल पाया था—वे आपकी विपदा का अनुभव अवश्य कर सकते है, क्योकि वे जानते है कि आपकी पत्नी कितनी अच्छी और असामान्य महिला थी । लेकिन अगर मेरे शब्दो से आपको कुछ ढाढस मिले तो मैं कहना चाहूगा कि हमे आपके दु ख में आपके साथ बडी गहरी और हार्दिक सहानुभूति है ।

दु ख की इस घडी में आप अपना कम मूल्याकन न करें । हिंदुस्तान को आपकी बहुत आवश्यकता है, खास तौर से और व्यक्तिगत रूप में आपकी । मैं समझता हू कि कमोवेश मैं आपके यहा के दूसरे नेताओ को भी जानता हू । किसीमे भी आप जैसा साहस और मानसिक वल नही है । सबसे बड़ी बात यह है कि वर्गहीन समाज की जो कल्पना आपके मस्तिष्क मे है वह किसीके मस्तिष्क मे नही है । आप यह विश्वास मानिये कि इतिहास ने आपको ही नेतृत्व करने के लिए चुना है, और इस विश्वास से अपने में शक्ति भरिये ।

आपने 'विश्व इतिहास की झलक' की एक प्रति भेजने की जो कृपा की है उसके लिए क्या मै आपको धन्यवाद दे दू ? इसे मै वडी दिलचस्पी के साथ पढूगा। आपने मुझे याद किया, इससे मै बड़ा अभिभूत हुआ हू।

स्नेहसहित,

आपका,

एच. एन. ब्रेल्सफोर्ड

१३२. महात्मा गांधी की ओर से

दिल्ली

९ मार्च १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तो तुम कमला को सदा के लिए यूरोप मे छोडकर लौट आये ! फिर भी उसकी आतमा कभी भारत से वाहर नही थी और हममे से अनेको की भाति सदा तुम्हारा रत्न-भडार वनकर रहेगी। मै उस अतिम वार्तालाप को कभी नही भूलूगा, जिसने हमारी चार आखो को गीला किया था।

यहा भारी जिम्मेदारी तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। वह तुमपर डाली गई है, क्योकि तुम उसे उठाने की क्षमता रखते हो। तुम्हारे पास आने का मेरा साहस नही होता। मेरे शरीर मे मूल लचक वापस आगई होती तो साहस करता। मुझमे कोई भीतरी खरावी नही है। शरीर का वजन तो वढा ही है। परन्तु तीन ही महीने पहले जो जीवन-शक्ति इसमे थी वह जाती रही। आश्चर्य की वात यह है कि मुझे कभी बीमारी महसूस नही हुई। फिर भी शरीर कमजोर होगया था और यत्र ऊचा रक्तचाप वताता था। मुझे सावधान रहना पड़ेगा।

मै आराम लेने के लिए कुछ दिन दिल्ली में हू। अगर तुम्हारी मूल योजना कार्यान्वित हो जाती तो मै अपनी मुलाकात के लिए वर्धा मे रह जाता। तुम्हारे लिए वहा अधिक शाति होती। लेकिन तुम्हारे लिए एक-सी ही वात हो तो हम दिल्ली मे मिल सकते है। वहां मै कम-से-कम इस महीने की २३ तारीख तक रहूगा। लेकिन अगर तुम्हे वर्धा ज्यादा पसन्द हो तो मैं वहा इससे पहले लौट सकता हूं। अगर तुम दिल्ली आओ तो किग्स्वे में नये वनाये गए हरिजन-निवास मे मेरे साथ ठहर सकते हो। यह काफी अच्छी

जगह है। जब बता सको मुझे बता देना कि हमारे मिलने की कौन-सी तारीख रहे। राजेन्द्रबाबू और जमनालालजी तुम्हारे साथ है या होगे। वल्लभभाई भी होते, परन्तु हम सबने सोचा कि वह दूर रहे तो बेहतर होगा। दूसरे दोनो वहा राजनैतिक चर्चा के लिए नही, पर मातमपुरसी के लिए गये है। राजनैतिक चर्चा तब होगी जब हम सब मिलेगे और तुम घरू कामकाज निपटा लोगे।

आशा है, इन्दू ने कमला के निधन का और तुम्हारे तुरत के वियोग का दु ख भली प्रकार सहन कर लिया होगा। उसका पता क्या है ?

तुम सब प्रकार सकुशल होगे।

सप्रेम,
बापू

१३३ सुभाषचद्र बोस की ओर से

कुरहाउस् हख्लान्ड,
बाडगाश्टाइन (आस्ट्रिया)
१३ मार्च १९३६

प्रिय जवाहर,

मुझे अभी-अभी विएना-स्थित ब्रिटिश कौसिल का जरूरी पत्र मिला है, जो इस प्रकार है

"मुझे विदेश-मत्री ने आपको यह चेतावनी देने के लिए हिदायत दी है · भारत सरकार को समाचारपत्रो से यह पता चला है कि आप इसी महीने भारत लौटना चाह रहे है और भारत सरकार यह स्पष्ट करना चाहती है कि अगर आपने ऐसा किया तो आप स्वतत्र रहने की आशा नही कर सकते।

(ह.) जे डब्ल्यू टेलर
ब्रिटिश कॉन्सल"

मै अपनी यात्रा का प्रबध करने जा ही रहा था कि यह पत्र मिला। सच बात यह है, मैंने अपने प्रवास का प्रबध करने मे इसलिए देरी की कि मै यह अदाज कर रहा था कि समुद्री यात्रा से ज्यादा फायदा होगा या हवाई

यात्रा से । हवाई यात्रा की दशा मे मै अपने इलाज का क्रम यहा पूरा कर सकता था, जिसमे कुल पच्चीस दिन लगेगे।

यहा कोई ऐसा व्यक्ति नही है और न यूरोप मे ही कोई दिखाई देता है, जिससे ऐसे मामले मे सलाह ली जा सके। फिलहाल मेरा झुकाव तो यही है—तुम अपनी खुद की प्रतिक्रिया से भी उसकी भली-भाति कल्पना कर सकते हो—कि इस चेतावनी की उपेक्षा करूं और स्वदेश के लिए रवाना हो जाऊं। केवल एक ही बात का विचार करना है कि कौन-सा मार्ग सार्वजनिक हित की दृष्टि से ठीक होगा। व्यक्तिगत लाभ-हानि का मेरे लिए कोई महत्व नही है और व्यक्तिश मै वही रास्ता अपनाने को तैयार हू, जिससे सार्वजनिक हित होता हो। मै सार्वजनिक मामलो से इतने अधिक समय से अलग हू कि मेरे लिए यह पता लगाना मुश्किल है कि कौन-सा कदम सार्वजनिक हित के खयाल से सबसे अच्छा रहेगा। शायद तुम इस बारे मे मुझे सलाह दे सको। मै यह जानता हू कि तुम्हारे लिए भी ऐसी हालत मे किसी दूसरे को सलाह देना मुश्किल होगा। किन्तु तुम आसानी से व्यक्तिगत मुद्दे को भुला दे सकते हो—मै जानता हू कि जब सार्वजनिक सवाल सामने हो तो तुम ऐसा कर सकते हो—और एक सार्वजनिक कार्यकर्ता को एकमात्र सार्वजनिक हित के खयाल से सलाह दे सकते हो। अपने देश के सार्वजनिक जीवन मे जो प्रमुख स्थान तुम्हे प्राप्त है, उसकी दृष्टि से भी तुम ऐसी अजीब और अरुचिकर परिस्थितियो मे सलाह देने की जिम्मेदारी से बच नही सकते।

मै इस मामले मे तुम्हे केवल इसीलिए कष्ट देना चाहता हू कि मै और ऐसे किसी व्यक्ति की कल्पना नही कर सकता, जिसपर मै अधिक भरोसा कर सकू। समय इतना थोड़ा है कि मै कई लोगो की सलाह ले भी नही सकता। अपने रिश्तेदारो से सलाह लेना भी बेकार होगा, क्योकि हो सकता है कि वे इस मामले पर विशुद्ध सार्वजनिक दृष्टि से विचार न कर सके। अत मेरे लिए यही रास्ता खुला है कि मै तुम्हारी सलाह पर भरोसा करू। तुमको यह पत्र २० ता. तक मिल जायगा। अगर तुम कृपाकर के, पत्र मिलने के फौरन बाद तार से जवाब दो तो वह मुझे समय पर मिल जायगा। मै के एल. एम वायुयान पकड सकता हू, जो रोम से २ अप्रैल को रवाना होता है। इस तरह अगर मै २१ या २२ को भी भारत के लिए रवाना होने का

आखिरी फैसला करू तो मुझे उस हवाई जहाज मे जगह मिल सकती है, जो रोम से २ अप्रैल को रवाना होता है। यह भी मुमकिन हो सकता है कि मुझे २९ मार्च को रवाना होनेवाले हवाई जहाज मे जगह मिल जाय।

जब मैने इस तरह स्वदेश लौटने का इरादा किया था कि मै लखनऊ काग्रेस मे शरीक हो सकू तो अवश्य ही यह सभावना थी कि हिंदुस्तान मे उतरते ही मुझे पकडकर जेल मे बद कर दिया जायगा। लेकिन साथ ही यह सभावना भी थी कि मुझे कम-से-कम कुछ समय आजाद रहने दिया जायगा। यह सभावना अब बिल्कुल खत्म हो जाती है और अब स्वदेश लौटने का मतलब होता है जेल मे दाखिल होना। बेशक जेल मे जाने की भी जन-हित की दृष्टि से अपनी उपयोगिता है, और इस प्रकार के सरकारी आदेश की अवहेलना करने और जान-बूझकर जेल का आवाहन करने के हक मे बहुत-कुछ कहा जा सकता है।

कृपया यथासभव शीघ्र मुझे उत्तर भेजे। इस पते पर तार भेज सकते है

बोस, कुरहाउस्, हख्लान्ड, बाडगाश्टाइन, आस्ट्रिया।

आशा है, तुम्हारी यात्रा आरामदेह रही होगी और तुम्हारा स्वास्थ्य सतोषजनक होगा।

तुम्हारा,

सुभाष

कल ही मैने एक अखबारी सदेश मे यह सकेत दिया है कि यहा अपना इलाज पूरा करने के बाद वायुयान द्वारा मेरे जाने की सभावना है।

सु च. बोस

१३४ एलेन विल्किन्सन की ओर से

हाउस ऑव कामन्स

लन्दन

२२ मार्च १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

क्षमा कीजिये, यह पत्र टाइप कराके भेज रहा हू। इसका अर्थ यह नही है कि मै जल्दी मे हू या ऐसा मैने औपचारिकता के कारण किया है, बल्कि बात केवल इतनी है कि आदत पड जाने के कारण यह मशीन ही मेरे लिखने

का स्वाभाविक ढग बन गई है (गाधीजी की प्रतिच्छाया !)। लेन ने मेरे पास आपकी किताब के पेजप्रूफ भेजे है। इसे पढकर मै सचमुच रोमाचित हो उठा हू। यह बात मै विनम्रतावश नही कह रहा हू। कुछ जरूरी काम के लिए मै कामन्स-सभा से जल्दी ही घर लौट आया था। किताब मेरी प्रतीक्षा कर रही थी और मैने वैठकर उसे उसी रात पढ डाला। फिर मैने खुद चाय बनाई और सवेरे साढे पाच बजे के आसपास उसे आपकी याद मे पीया।

यह एक महत्वपूर्ण पुस्तक है और हिदुस्तान की वर्तमान स्थिति को समझने के लिए अनिवार्य है। आपके प्रकाशको को चिन्ता है कि यह कही जब्त तो नही कर ली जायगी। जैसाकि आप जानते है, यह बात केवल वडे अधिकारी बता सकते है। मै समझता हू कि बहुत-कुछ प्रकाशन के समय की स्थिति पर निर्भर होगा। शायद लोग यह सोचे कि आपने गाधीजी की जो आलोचना की है, उससे काग्रेस मे फूट पडने मे सहायता मिलेगी। हमारे देशवासियो के सरकारी दिमाग के बारे मे कुछ निश्चय के साथ नही कहा जा सकता। जब आपके देश की बात उठती है तब यहा के समझदार-से-समझदार लोगो को भी कुछ हो-सा जाता है।

फिर भी अधिकारियो ने इसका हिदुस्तान के लिए निषेध किया तो उनके ऐसा करने से इग्लैड और अमरीका मे पुस्तक के लिए वडा शानदार प्रचार हो जायगा। कामन्स-सभा मे हम खूब हो-हल्ला मचायेगे और उस ओर जनता का ध्यान आकर्षित करेगे। सच तो यह है कि इग्लैड मे ऐसी पुस्तक की अधिक आवश्यकता है। अच्छे-से-अच्छे वामपक्षियो को भी भारत के सवध मे घोर अज्ञान है। मै समझता हू कि पुस्तक के अन्तिम परिच्छेदो से और आपने काग्रेस तथा गाधीजी का जो विश्लेषण किया है उससे तथा आपने जो समाजवादी निष्कर्ष निकाला है उससे भी इंग्लैड के समाजवादियो मे इसके प्रति वडी रुचि जागृत हो जायगी। ताल्लुकेदारो के बारे मे गाधीजी के विचार सव लोग जान गये है। यह सव 'मेनचैस्टर गार्जियन' और 'दि टाइम्स' की वदौलत हुआ है। काफी लोगो की यह आम भावना है कि आप गाधीजी के आध्यात्मिक पुत्र और उत्तराधिकारी है।

हो सकता है कि ये सारी वाते आपको रुचिकर न लगे, क्योकि आपने

यह पुस्तक विशेष रूप से हिंदुस्तान के लिए लिखी है। अगर अधिकारियो ने पुस्तक को सचमुच जब्त किया तो यह एक बहुत ही लज्जाजनक बात होगी, क्योकि जिन बातो को लेकर आप क्रोध से आगबगूला हो सकते थे उनके सबध मे आपने बडी शान से अवैयक्तिक ढग से विचार किया है। मै इस बात की चेष्टा करूगा कि प्रकाशन से पहले एक-दो प्रभावशाली व्यक्ति इस पुस्तक को पढ ले। इससे निश्चय ही सहायता मिलेगी।

जब मुझे आपकी पत्नी का दु खद समाचार मिला तो मैंने आपको पत्र नही लिखा। मैंने सोचा कि जो कुछ भी शब्दो मे कहा जा सकता है वह सब मेरा तार कह देगा। कमला की सारी स्मृतिया मेरे मन मे सजीव थी और जब मैंने उनके बारे मे आपकी पुस्तक मे पढा तब मुझे स्मरण हो आया कि जब हम हिंदुस्तान मे थे तब उन्होने अपने दु ख और कष्ट के समय भी हमारे साथ कितनी कृपा दिखलाई थी। मै समझता हू कि यह आशा करना व्यर्थ होगा कि जिन लोगो ने आपको उनसे उनके अतिम वर्ष मे अलग रखा, उन्हे अपने ऊपर पर्याप्त ग्लानि होगी।

कामन्स-सभा मे आजकल हमारी सारी बहसे युद्ध-सबधी तैयारियो के बारे मे ही होती है, यहातक कि फौरन युद्ध छेडने के लिए बडे-बडे उद्योगो को भी पुन सगठित करने की बात सोची जाती है। आपके जाने के बाद से स्थिति और भी बिगड गई है। राइनलैंड पर हिटलर के आक्रमण से स्वभावत फासिस्ट-विरोधी लोग भडक उठे है। वे सोचते है कि इस समय फ्रास की सहायता करके वे हिटलर को नष्ट करने मे सहायता दे सकते है। सन् १९१४ ई की 'प्रजातत्र की खातिर सरकार की रक्षा कीजिये' वाली पुकार को आज फिर से सुनना बडा भयानक मालूम देता है। इसका मतलब यह है कि मजदूर-आन्दोलन एक बार फिर से राजशाही की ओर झुक जायगा। मैंने लैन्सबरी के जोरदार युद्ध-विरोधी आन्दोलन मे साथ देने का निश्चय कर लिया है।

यह समाजवाद तो नही है, लेकिन इससे हम कम-से-कम मजदूरो को भावी साम्राज्यवादी झगडो मे एक-दूसरे का गला न काटने की चेतावनी तो दे ही सकते है।

लखनऊ मे आपको जिस बडे ही कठिन समय का सामना करना है

उसके लिए मै अपनी शुभकामनाए भेज रहा हू, चाहे उनका कुछ भी रूप हो। मै समझता हू कि इस साल काग्रेस का अध्यक्ष होना शायद ससार का सबसे मुश्किल काम है। आप जो कुछ भी करेगे उसीकी बडी आलोचना होगी। लेकिन आपकी पुस्तक से लोगो को यह विश्वास हो जायगा कि आप जो कुछ भी करने का निश्चय करेगे उसका रास्ता सीधा और ईमानदारी का होगा और वह जनता के असीम प्रेम पर आधारित होगा। लेकिन हममे से जो लोग राजनीति को एक गभीर विषय मानते है, उन्हे एक नीरस क्षेत्र मे काम करना है।

मुझे शायद यह कहने की आवश्यकता नही कि अगर आपके साथ कोई भी ऐसी बात हो जिसमे मै या जिन लोगो को मै प्रभावित कर सकता हू वे किसी प्रकार की सहायता दे सकते है तो आपको लिखने-भर की जरूरत होगी। हम लखनऊ और उसके बाद के समाचारो की बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा करेगे। आपके यहा आने से भारतीय मामलो मे मजदूर-दल की रुचि काफी बढ गई है। इडिया आफिस यह जानना चाहता है कि प्रश्नोत्तर के समय, जब कि सबकुछ शान्त था, हम एकाएक फिर क्यो भडक उठे ?

लेन

१३५. रवीन्द्रनाथ टैगोर के नाम

१ अप्रैल, १९३६

प्रिय गुरुदेव,

आपने कमला के बारे मे जो कुछ कहा, उसका अग्रेजी अनुवाद आज मैने 'विश्व-भारती न्यूज' मे पढा। आपके बहुत ही उदार शब्दो से मुझपर गहरा असर हुआ और सभव हो तो मै आपको बताना चाहता हू कि आपके आशीर्वाद से और इस विचार से कि आप हम गुमराहो को ठीक रास्ते पर रखने के लिए मौजूद है, मुझे कितना बल मिला है। आपसे दिल्ली स्टेशन पर मिलकर मुझे खुशी हुई थी, परन्तु रेलगाडी मिलने के लिए अनुकूल जगह नही होती और मुझे सतोष नही हुआ। आशा है, जल्दी ही कोई और अच्छा मौका मिलेगा। मुझे बडी खुशी है कि आपको विश्व-भारती के लिए दिल्ली मे अच्छी रकम मिल गई।

मुझे उम्मीद है कि इस मौजूदा प्रवास के बाद आप विश्राम करेगे।

मुझे मालूम नही कि आपका ठीक-ठीक कार्यक्रम क्या है, इसलिए मै यह पत्र शातिनिकेतन भेज रहा हू ।

प्रेम और आदरसहित, आपका,

जवाहरलाल नेहरू

विश्वभारती न्यूज, अप्रैल १९३६

कमला नेहरू की स्मृति मे

[८ मार्च को यहा श्रीमती कमला नेहरू की स्मृति मे शोक-दिवस मनाया गया था । उस समय गुरुदेव ने आश्रमवासियो को बगला में एक प्रवचन दिया था । उसीका यह सक्षिप्त अनुवाद है—सम्पादक]

आज हम एक ऐसे व्यक्ति को श्रद्धाजलि अर्पित करने के लिए यहा इकट्ठे हुए है, जिनके साथ सयोग से उस एक सेवा के द्वारा हमारा घनिष्ठ सबध होगया था, जो कि उन्होने हमारे आश्रम से चाही थी और जिसकी हमने उत्सुकता से पूर्ति की थी । ऐसे समय जब उनके पति कारागार मे थे और उनका अपना स्वास्थ्य एक घातक रोग के कारण खतरे मे पड गया था, हमने उनकी पुत्री इन्दिरा को अपनी देखभाल मे लेकर थोडे समय के लिए उनकी चिन्ता दूर की थी । उनके साथ की उस मुलाकात मे मुझपर उनके चारो ओर के शान्ति और वीरोचित साहस के वातावरण का गहरा असर हुआ था । अक्सर रस्म के तौर पर जो शोक-सभाए की जाती है उन्हे कृत्रिम पूर्णता प्रदान करने के लिए अतिशयोक्ति से काम लिया जाता है । कमला के मामले मे इसकी जरूरत नही है, क्योकि वह सचमुच महान थी और उनकी महानता ने अपना परिचय लोगो के हृदयो मे अपने-आप दे दिया है और उनकी महानता तुरन्त स्वीकार कर ली गई है । उन्होने अपने उदात्त जीवन के सारे उतार-चढावो मे जो मौन गौरव रखा था, उसकी ध्वनि आज इतनी बुलन्द होगई है कि उसकी सचाई हम सबपर छा गई है ।

उनके पति जवाहरलाल को युवक भारत के सिहासन पर आसीन होने का असदिग्ध अधिकार है । उनका चरित्र शानदार है । वह अपने धैर्यशाली सकल्प और निर्भय साहस मे तो अटल है ही, परन्तु अपने साथियो से जिस बात मे वह बहुत ऊचे है वह है उनकी अविचल नैतिक प्रामाणिकता

और बौद्धिक ईमानदारी। उन्होने राजनैतिक उपद्रवो के बीच मे शुद्धता का झडा असाधारण ढग से ऊचा रखा है, यद्यपि ऐसे उपद्रवो मे सब प्रकार के धोखे और आत्म-वचनाओ का बाजार गर्म होता है। जब सचाई खतरनाक थी तो उससे वह कभी नही सकुचाये और न सुविधा होने पर झूठ के साथ मेल किया। उनकी तेजस्वी बुद्धि नीतियो के असम्मानित पथ से सदा स्पष्ट तिरस्कार के साथ विमुख रही है, यद्यपि वहा सफलता उतनी ही आसान है, जितनी कमीनी है। सत्य का यह ऊचा आदर्श जवाहरलाल के स्वातत्र्य-युद्ध मे उनका सबसे बडा योगदान है।

और इनसब कामो मे उनकी पत्नी उनकी उपयुक्त सहयोगिनी थी। उनमे भी अपने पति की तरह वीरोचित शान्ति थी, जो विपरीत भाग्य के निर्दय प्रहार चुपचाप सहन कर सकती थी और उनके आदर्श को धोखा देकर आसानी से बच निकलने के प्रलोभन के आगे कभी आत्म-समर्पण नही करती थी। तपस्या के इस दुर्लभ गुण के कारण उन्हे अपने पति के बराबर स्थायी स्थान मिल गया है। यह वही स्थान है, जो उनके जीवन-काल मे उनका था। अतीत काल की प्रसिद्ध वीरागना इतिहास के प्रकाशमान क्षितिज मे अपने पूर्ण गौरव मे दिखाई दे सकती है। समय ने कमला को अभी इतना दूर नही किया है। वह अभी तक निकट वर्तमान की सीमाओ के भीतर है, जहा महत्वपूर्ण चीजे महत्वहीन वस्तुओ के साथ गुथ जाती है। इस त्रुटि के बावजूद वह हमारे सामने ऐसे गौरव के साथ आती है, जिसमे वीरोचित गुण है। यह गुण उनके पति मे भी है।

आज का दिन हमारा होली के त्योहार का, वसन्त के उत्सव का, दिन है। गिरे और सूखे हुए पत्तो के बीच मे प्रकृति मृत्यु पर विजय पानेवाले एक नये जीवन के प्रवेश की तैयारी कर रही है। उसके लिए नई कोपले आनद की भेट लेकर आ रही है। ऐसे अवसर पर राष्ट्र मे नवजीवन की जागृति के साथ वसन्त ऋतु के आगमन का सबध होना उचित ही होगा। और जवाहरलाल वह ऋतुराज है, जो यौवन और विजयपूर्ण आनद की ऋतु के, युद्ध की अजेय भावना और स्वातत्र्य पक्ष के प्रति अटल निष्ठा के प्रतिनिधि है। कमला नेहरू ने भारत के नवीन राष्ट्रीय जीवन की शान मे स्वय अपनी मृदुता का भी ऐसा योगदान किया है, जो त्याग-बल मे शानदार

है और उनकी महान स्त्रियोचित आत्मा से अन्ततोगत्वा हमारी सफलताओ मे चार चाद लग सकते है ।

हम आज अनुभव करते है कि वर्तमान की तेजी से आनेवाली घटनाओ पर वह अपनी ऐसी छाप छोड गई है, जो सर्वकाल के लिए है । तब हम कैसे वियोग की अशुभ भावना रख सकते है, जब उनकी अमर आत्मा सदा हमारे साथ है ।

१३६ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

'उत्तरायण'
शांतिनिकेतन, बगाल
५ अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आश्रम के छात्रो से मैने कमला के बारे मे जो कुछ शब्द कहे थे, उनसे तुम्हे आशा और बल मिला । विश्वास करो कि मै बहुत सच्चे दिल से तुम्हारे इस शोक को अनुभव करता हू ।

गाडी मे तुम्हारे साथ जो कुछ मिनटो का समय मुझे मिला था, उससे मै भी सतुष्ट नही हुआ । यात्रा की थकान से मेरा शरीर और मन दोनो चूर थे और मेरे लिए बोलना भी दूभर हो रहा था । तुम यहा आकर कुछ दिन मेरे साथ रहो और मै विश्वास दिलाता हू कि शातिनिकेतन इलाहाबाद से अधिक गरम नही होगा ।

सस्नेह तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१३७. रफी अहमद किदवई की ओर से

यू पी सूबा काग्रेस कमेटी,
अमीनाबाद पार्क, लखनऊ
२० अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

पिछले कुछ दिन मैने बडी दिमागी तकलीफ मे काटे । जाहिरा तौर पर आप ही सिर्फ हमारी एक उम्मीद थे, लेकिन क्या आप ख्वाबी साबित

होने जा रहे है ? आप गाधीवाद के असर का और उसकी मिली-जुली मुखालफत का कहातक मुकाबला कर सकेगे, इसमे कुछ लोगो के अपने-अपने शक है।

आपको वर्किंग कमिटी को फिर से बनाने का मौका दिया गया था। आपने टण्डन, नरीमन, पट्टाभि, सार्दूलसिह को छोड दिया है। आपने गोविददास और शरद् बोस के मुकाबले मे भूलाभाई और राजगोपालाचारी को शामिल किया है। इन लोगो से आपको ताकत मिलती। इन्होने छल करके आपको बीच के तबके के लोगो से अलहदा कर दिया है। हम ए आई सी. सी और डेलीगेट दोनो मे कमजोर पड गये है। जो वर्किंग कमिटी आपने बनाई है, वह पिछली के मुकाबले ज्यादा दकियानूसी साबित होगी।

हो सकता है कि मेरा नजरिया बहुत तग हो। उसूली बहसो के मुकाबले अकसरियत पर मेरा ज्यादा भरोसा रहता हैं। हालात का मुझपर जो असर हुआ, उसे बताने के लिए मै बेचैन था। आगे इसकी मै कभी चर्चा नही करूगा।

रफी

१३८. महात्मा गांधी की ओर से

२१ अप्रैल १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

टिप्पणिया अच्छी लिखी गई है। तुम्हारे उत्तर काफी पूरे है और सीधे तो है ही।

आगामी बैठक के बारे मे चितित क्यो होते हो ? अगर चर्चा हुई तो वह एक दूसरे को अपने विचारो के ठीक होने का विश्वास कराने को ही तो होगी। जब तुम समझो कि किसी प्रस्ताव पर पूरी तरह बहस हो चुकी तब चर्चा बन्द कर देना। आखिर तो तुम्हे एकता के साथ काम चाहिए और मुझे ऐसा होने की बडी आशा है।

मै २३ तारीख की शाम को नागपुर पहुच रहा हू।

मै चाहता हू कि रनजीत अपनी देखभाल खुद कर लेगे। मुझे खुशी है कि वह खाली चले गये। आशा है, सरूप तुम्हारे साथ रहेगी।

सरदार अभी तक बीमार है और अभी तो सिर्फ छाछ पर है। ८ मई के बाद मै उन्हे नदी पर्वत पर ले जा रहा हू। काश तुम भी आ सकते !

सस्नेह,

बापू

१३९ महात्मा गाधी की ओर से अगाथा हैरिसन के नाम

[कुमारी अगाथा हेरिसन क्वेकर सम्प्रदाय की थी और गाधीजी तथा भारत से उन्हें बड़ा प्रेम था।]

वर्धा

३० अप्रैल १९३६

प्रिय अगाथा,

तुम्हारा १७ तारीख का पत्र मिला। जवाहरलाल से यही आशा रखी जा सकती थी। उनका अभिभाषण उनके ईमान का इकबाल है। उनके 'मत्रिमडल' की रचना से तुम देखती हो कि उन्होंने अधिकाश वे लोग चुने है, जो परम्परागत विचार अर्थात् १९२० से आरभ हुए विचारो का प्रतिनिधित्व करते है। अलवत्ता वहुमत मेरे विचारो का है। सभव हो तो मैं नये सविधान को आज नष्ट कर दू। उसमे है ही क्या जिसे मैं पसन्द करू ? मगर जवाहरलाल का रास्ता मेरा रास्ता नही। भूमि आदि के बारे मे मै उनका आदर्श स्वीकार करता हू। मगर अपने तरीको को पेश करने मे उग्र होते हुए भी जवाहरलाल क्रिया मे गभीर है। जहातक मै उन्हे जानता हू, वह सघर्ष को जल्दी नही ले आयेगे। उनपर आ ही पडे तो वह उससे वचने की कोशिश भी नही करेगे। परन्तु शायद इस मामले मे सारी काग्रेस एक विचार की नही है। कुछ-न-कुछ मतभेद जरूर है। मेरे उपाय मे सघर्ष को टालने की योजना रहती है। उनके उपाय मे यह योजना नही है। मेरा अपना खयाल यह है कि जवाहरलाल अपने साथियो के बहुमत के निर्णय मान लेगे। उनके जैसे स्वभाववाले आदमी के लिए यह अत्यन्त कठिन है। अभी से उन्हे ऐसा लग रहा है। वह जो कुछ करेगे, शराफत के साथ करेगे। यद्यपि जीवन के दृष्टिकोण के बारे मे हमारे बीच की खाई बेशक चौडी हुई है, फिर भी दिलो मे हम जितने नजदीक एक दूसरे के शायद आज है, उतने

पहले कभी नही थे। यह पत्र सार्वजनिक उपयोग के लिए नही है। लेकिन तुम्हे आजादी है कि तुम इसे अपने मित्रो को दिखा सकती हो।

मै नही समझता कि अपने प्रश्न के उत्तर मे तुम इससे ज्यादा कुछ चाहती होगी।

सस्नेह,

कुमारी अगाथा हैरिसन **बापू**

१४०. महात्मा गाधी की ओर से

नदी पर्वत
१२ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

अगाथा के नाम मेरा उत्तर मैने तुम्हारे पास इस कारण भेजा कि मै जान लू कि मैने तुम्हारा रवैया ठीक-ठीक बयान किया है या नही।

मगर मुझे खुशी है कि तुम मुझीसे निपट रहे हो। मै किसी ऐसी प्रणाली का समर्थन करने का, जिसमे सतत और विनाशकारी वर्ग-युद्ध निहित है या ऐसी प्रणालियो को पसन्द करने का, जिसका वास्तविक आधार हिसा पर है या कुछ लोगो की छोटे-मोटे कसूरो के लिए आलोचना और निन्दा करने का और जो दूसरे लोग कही अधिक महत्वपूर्ण दुर्बलताओ के अपराधी है, उनकी तारीफ करने का दोषी नही हू।

सभव है, अनजाने मे मुझसे तुम्हारे बताये हुए अपराध होते हो। ऐसा है तो तुमको मुझे ठोस उदाहरण देने चाहिए। मै पहले ही स्वीकार कर चुका हू कि तुम्हारा काम करने का तरीका जैसा मुझे दिखाई देता है उससे मेरा ढग भिन्न है। मगर वर्तमान प्रणाली-सम्बन्धी दृष्टिकोण मे कुछ भी अन्तर नही है।

डा. अन्सारी की मृत्यु एक सख्त चोट है। मेरे लिए उनको दोस्ती राजनैतिक मित्रता से कही अधिक थी।

आशा है, तुम थोडी-सी ठडी हवा खाने के लिए खाली जा रहे हो या मेरे पास आ रहे हो।

सरूप से कह देना कि उसके दो खत मिले है। सर तेजबहादुर को मै लिखूगा।

सस्नेह,

बापू

१४१ महात्मा गाधी की ओर से

नंदी पर्वत
२१ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

'हिन्दू' की दो कतरने भेज रहा हू। मैने यह नही माना है कि सम्वाददाता ने तुम्हारे विचार ठीक-ठीक व्यक्त किये है। लेकिन दोनो विषयो पर तुम सही विवरण भेज सको तो मै देखना चाहूगा। स्त्रियो को न रखने का काम पूरी तरह तुम्हारा अपना ही था। सचमुच किसी और ने सोचा तक नही था कि मत्रिमडल मे किसी स्त्री को न रखना सभव भी है। खादी के बारे मे मैने तुम्हारा कथन यही समझा है कि देश की वर्तमान अर्थ-व्यवस्था मे वह अपरिहार्य है और जब राष्ट्र अपने स्वरूप मे आयेगा तब मिल के कपडे का स्थान हाथ के बने कपडे को देना पड सकता है।

सस्नेह,
बापू

१४२. महात्मा गाधी की ओर से

बगलौर
२९ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा २५ तारीख का पत्र मिला। भगवान तुम्हे आवश्यक शक्ति दे। खाली मे एक सप्ताह रहना भी नियामत होगा।

मेरा इरादा खादी पर तुम्हारे बयान का सार्वजनिक उपयोग करने का है। मुझसे बहुत लोग पूछताछ कर रहे है। हमारे जो लोग खादी मे विश्वास रखते है, उनमे तोड-मरोडकर भेजे गये सार से घबराहट फैल गई है। तुम्हारे बयान से स्थिति मे कुछ सुधार होगा।

कार्य-समिति मे किसी स्त्री के न लेने के बारे मे तुम्हारे स्पष्टीकरण से मेरा समाधान नही होता। यदि समिति मे किसी स्त्री को रखने की तुमने ज़रा भी इच्छा प्रकट की होती तो बडो मे से किसीको छोड देने के बारे मे कुछ भी कठिनाई न होती। दबाव कहे तो केवल भूलाभाई के लिए था। और जब उनका नाम पहली बार लिया गया तब तुम्हे कोई आपत्ति नही

थी। और किसी सदस्य के लिए कोई दबाव नही था। और फिर किसी समाजवादी का नाम छोडकर किसी स्त्री को ले लेने का चुनाव तो तुम्हारे हाथ मे अबाधित ही था। परन्तु जहातक मुझे याद है, तुम्हे स्वय सरोजिनीदेवी के स्थान पर किसीको चुनने मे कठिनाई थी और सरोजिनी देवी को तुम रखना नही चाहते थे। तुमने तो यहातक कहा था कि कार्य-समिति मे सदा किसी-न-किसी स्त्री को और मुसलमानो को एक निश्चित सख्या मे रखने की परम्परा मे तुम्हारा विश्वास नही है। इसलिए जहातक किसी स्त्री को न लाने का सम्बन्ध है, मेरे खयाल से, यह तुम्हारा अबाधित निर्णय था। इस परम्परा को तोडने की इच्छा या हिम्मत और कोई सदस्य न करता। मै तुम्हे यह भी बता दू कि कुछ काग्रेसी हल्को मे सारा दोष मुझपर थोपा जा रहा है, क्योकि यह कहा जाता है कि मैने श्रीमती नायडू को नही रखने दिया और यह आग्रह किया कि कोई स्त्री न रखी जाय। यह बात, जैसा मैने तुमसे कहा, ऐसी है जिसका मै साहस भी नही कर सकता। किसी भी स्त्री की बात तो क्या, मै श्रीमती नायडू को भी अलग नही कर सकता।

दूसरे सदस्यो के विषय मे भी मेरा यह खयाल रहा है कि तुमने उन्हे इसलिए चुना कि कार्य की दृष्टि से ऐसा करना ठीक था। 'वेहया' या 'हयादार' का कोई सवाल नही था, जब सभी अपने-अपने अन्त करण के अनुसार सेवा की उच्च भावनाओ से प्रेरित होकर काम कर रहे थे। मै बता दू कि तुम्हारे बयान से, जिसका समर्थन तुम्हारे पत्र से भी होता है, राजेन्द्र-बाबू, राजाजी और वल्लभभाई को भी बडा दु ख हुआ। उनका खयाल है और मै उनसे सहमत हू कि उन्होने तुम्हारे साथी के रूप मे सम्मान और पूर्ण निष्ठापूर्वक तुम्हारे साथ चलने की कोशिश की। तुम्हारे बयान से ऐसा प्रकट होता है कि तुम पीडित पक्ष हो। मै चाहता हू कि तुम इस दृष्टिकोण को समझलो और किसी भी तरह सम्भव हो तो इस खबर का सुधार करलो।

तीसरी बात के बारे मे मै उत्सुक हू कि सफाई हो जाय। मै अनुमान नही लगा सकता कि तुम क्या कहते हो, परन्तु उसे हमारे मिलने तक रहने दिया जाय। तुम जिस दवाव को सहन कर रहे हो, मै उसे वढ़ाना नही चाहता।

डा अन्सारी-स्मारक के विषय मे मैने आसफअली को अपनी स्पष्ट राय दे दी है कि पिताजी की तरह डाक्टर के स्मारक को भी राजनैतिक दृष्टि से अच्छे दिनो की प्रतीक्षा करनी चाहिए। तुम्हारा और कुछ खयाल है ?

कमला-स्मारक धीरे-धीरे प्रगति कर रहा है। राजकुमारी का पत्र साथ मे है। इसमे इन्दू का उल्लेख है।

सस्नेह,

१० तारीख तक बगलौर शहर मे। बापू

१४३ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन
३१ मई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

मैने तुम्हारी महान पुस्तक अभी-अभी समाप्त की है। मै तुम्हारी सफलता से अत्यन्त प्रभावित हू और उसपर गर्व अनुभव करता हू। उसके समस्त विवरणो के पीछे मानवता की एक गहरी धारा प्रवाहित है, जो तथ्यो की गुत्थियो को पार करके हमे उस व्यक्ति तक पहुचा देती है, जो अपने कार्यो की अपेक्षा अधिक महान और अपने आसपास के वातावरण की अपेक्षा अधिक सच्चा है।

सप्रेम तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

[इस पत्र मे जिस पुस्तक का जिक्र है, वह मेरी आत्मकथा है।]

१४४ चार्ल्स ट्रैवेलियन की ओर से

वैलिगटन, कैम्बो
मोरपैथ
१२ जून १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

मैने आपकी पुस्तक पढी है। इसमे जिस व्यक्ति पर प्रकाश पडता है, उससे मै मिलना चाहूगा। मैने और आपने दोनो ने ही हैरो मे पढाई शुरू की

थी, जहा हमे दलितो का समर्थन करने की शिक्षा नही दी गई थी। लेकिन आपकी जनता की निर्धनता और उसपर होनेवाले दमन ने आपको इसकी शिक्षा दी और युद्ध तथा गदी बस्तियो ने मुझे। हम दोनो के विचार बहुत-कुछ एक जैसे है। मै चाहता हू कि आप जब कभी इग्लैण्ड आये, मुझे सूचित करे। मै समझता हू कि मै भारतवर्ष नही आ सकूगा, क्योकि मै जर्मनी, इटली और हिदुस्तान जैसे काले (तानाशाही तथा साम्राज्यवादी) स्थानो पर जाना पसन्द नही करूगा, जबकि ससार मे लाल तथा लालिमापूर्ण (साम्यवादी तथा समाजवादी) देश मौजूद है। लेकिन अगर मै आया तो आपसे जरूर मिलूगा, चाहे आप जेल मे हो या मुक्त हो।

आपका,

चार्ल्स ट्रेवेलियन

१४५. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव

१९ जून १९३६

[**यदि लिखावट इतनी धुंधली हो कि पढ़ी न जा सके तो इस पत्र को फेंक देना।**]

प्रिय जवाहरलाल,

मै तुम्हारी जानकारी के लिए साथ का पत्र भेजनेवाला था कि कल तुम्हारा पत्र मिला।

मुझे खुशी है कि रनजीत पहले से अच्छे है। उन्हे खुद अपनी देखभाल करनी चाहिए।

मै नही चाहता कि तुम अपनी कार्यसमिति मे किसी स्त्री को न रखने के बारे मे कोई खास बयान जारी करो। मेरे खयाल से स्त्री को न रखने की बात का वही महत्त्व नही है, जो दूसरो को रखने या न रखने का है। हममे से किसीको भी कार्यसमिति मे से स्त्री-मात्र को अलग रखने की न हिम्मत थी और न इच्छा। यदि तुम्हारे रवैये का यह ठीक-ठीक अर्थ है तो अवसर उपस्थित होने पर इसका स्पष्टीकरण हो जाना चाहिए।

दूसरो के बारे मे, मुझे अफसोस है कि तुम अभी तक जो कुछ हुआ, उसपर खिन्न हो। ध्येय के हित मे भूलाभाईवाली गोली तुमने निगल ली और

पहली ही चर्चा मे तुम्हारे जिक्र करने से पहले मैने निश्चित रूप से कह दिया था कि कार्यसमिति मे समाजवादी होने ही चाहिए। मैने नामो का भी जिक्र किया था। लेकिन मै जिस बात पर जोर देना चाहता हू वह यह नही है कि किसने किसका नाम लिया, बल्कि मेरा जोर इस बात पर है कि सब समान ध्येय की सेवा से प्रेरित होकर ही काम कर रहे है।

जहातक मुझे याद है, तुम्हारा भेजा हुआ बयान वह नही है, जो मैने देखा था। तुम्हारी भेजी हुई चीज तो शायद मै पहली ही बार देख रहा हू। डा हार्डीकर से पूछ लो कि उन्होने कोई और बयान जारी किया था क्या? तुमने जो मेरे पास भेजा है वह भी उससे भिन्न है, जो डाक्टर मुझे बताया करते थे। उनके विचार मेरी राय मे दोषपूर्ण तो है, लेकिन उनके प्रकट करने पर मुझे कोई एतराज नही है। मेरी शिकायत यह है कि उन्होने मुझसे एक बात कही और प्रकाशित दूसरी बात कराई। तुम यह पत्र डा हार्डीकर को बता सकते हो।

आशा है, तुम अच्छे होगे। तुम्हारे पजाब के तूफानी दौरे का हाल मै चितित होकर पढता रहा।

सस्नेह,
बापू

१४६ मोहम्मद इकबाल की ओर से

लाहौर
२१ जून १९३६

प्रिय पडित जवाहरलाल,

कल मुझे आपका खत मिला। बहुत-बहुत शुक्रिया। जिस वक्त मैने मजमूनो का जवाब दिया, मेरा यह खयाल था कि आपको अहमदियो के सियासी रुख के मुताल्लिक कोई वाकफियत नही है। दरअसल मेरे जवाब का खास मकसद यह था कि मै यह बताऊ, और खास तौर पर आपको, कि मुसलमानो की वफादारी कैसे पैदा हुई थी और कैसे अहमदियो के उसूलो मे उसे एक इलहामी बुनियाद मिली। मेरा जवाब शाया हो जाने के बाद यह जानकर मुझे बडी हैरानी हुई कि तालीमयाफ्ता मुसलमानो को भी उन तारीखी वजहो का कोई इल्म नही है, जिन्होने अहमदी तालीम को शक्ल अदा

की। फिर पजाब और दूसरी जगहो के आपकी तारीफ करनेवाले मुसलमान आपके लेखो से परेशान हुए, क्योकि उन्हे खयाल हुआ कि आपको अहमदिया तहरीक के साथ हमदर्दी ह। इसकी खास वजह यह थी कि अहमदिया लोग आपके लेखो से बेहद खुश थे। आपके बारे मे इस गलतफहमी के लिए अहमदी अखबार खास तौर पर जिम्मेवार है। बहरहाल मुझे यह जानकर खुशी हुई कि मेरा खयाल गलत था। मुझे मजहबी इल्म मे बहुत कम दिलचस्पी हैं, लेकिन अहमदियो का जवाब देने के लिए मुझे थोडा-बहुत टटोलना पडा। मै आपको इतमीनान दिलाता हूं कि मेरा मजमून इस्लाम और हिदुस्तान की बेहतरी के खयाल से ही लिखा गया था। मेरे दिमाग मे कोई शक-शुबाह नही कि अहमदिया इस्लाम और हिन्दुस्तान दोनो के गद्दार है।

लाहौर मे आपसे मिलने का मौका खो दिया, इसका मुझे बेहद अफसोस है। उन दिनो मै बहुत बीमार था और अपने कमरे से बाहर नही जा सकता था। पिछले दो बरस से लगातार बीमारी की वजह से करीब-करीब गोशा-नशीनी की जिन्दगी बिता रहा हूं। जब आप अगली मरतबा पजाब आयें तो मुझे जरूर इत्तिला कर दें। 'यूनियन फार सिविल लिबरटी' के बारे मे जो आपकी तजवीज है, उसके मुताल्लिक क्या आपको मेरा खत मिला ? आपने चूंकि अपने खत मे उसका जिक्र नही किया, इसलिए मुझे डर है कि वह अबतक पहुचा ही नही।

आपका,
मोहम्मद इकबाल

[अहमदिया एक मुस्लिम सम्प्रदाय है जिसे कादियानी भी कहते है।]

१४७ राजेन्द्रप्रसाद तथा दूसरे लोगों की ओर से

वर्धा
२९ जून १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

लखनऊ-कांग्रेस के बाद जब आपने मतभेदों तथा दृष्टिकोण के भेदों के बावजूद हमे कार्य-समिति का सदस्य चुना तो हमे आशा थी कि कार्य का एक सामान्य रास्ता निकालना तथा मतभेदो को अलग हटाकर सयुक्त रूप से काम करना और समझौते के बिंदु पर एकाग्र होना संभव हो जायगा।

हम अपने-आपको इसके अनुसार वनाने का भरसक प्रयत्न करते रहे। परन्तु दुर्भाग्य से हम पाते है कि ऐसे समझौते पर आ सकना सभव नही हुआ है, जो दो विरोधी तत्त्वो को इस योग्य वना सकता, जिससे वे शातिपूर्वक काम कर सकते या एक स्वर से वोल सकते। हम अनुभव करते है कि विशेषतया इस स्थिति मे अध्यक्ष तथा कार्य-समिति के समाजवादी सदस्यो द्वारा समाजवाद का प्रचार करना तथा उसपर जोर देना, जवकि काग्रेस ने इसे अगीकार नही किया है, देश के हित और राष्ट्रीय सघर्षो की सफलता के लिए हानिकर है। इन्ही चीजो को हम सव देश का सवसे पहला और महत्वपूर्ण काम मानते है। लगता है, आप महसूस करते है और आपने जाहिर भी किया है कि कार्य-समिति जिस प्रकार की वनी है वह आपकी पसन्द की नही है, लेकिन वह आपपर लाद दी गई है और आपने उसे अपने निर्णय के विरुद्ध स्वीकार कर लिया। लखनऊ की घटनाओ के वारे मे हमारी राय आपकी राय से विपरीत है। हमे विल्कुल पता नही कि हममे से किसीने (आपपर) जरा-सा भी दवाव डाला हो। जो हो, आपकी घोषणाओ ने जो स्थिति पैदा कर दी है, वह अत्यन्त असतोषजनक है और हम सोचते है कि हमे आपको पूरी तरह छूट दे देनी चाहिए, जिससे कार्य-समिति के ऐसे साथियो के रहने से रुकावट न हो, जिन्हे आप भार-रूप मानते है। दूसरी तरफ हम यह महसूस करते है कि काग्रेस को आज भी उन्ही आदर्शो, कार्य करने के उसी ढग और उसी नीति पर चलना चाहिए, जिसपर वह सन् १९२० से चलती आई है, और जिसको हम अपने देश के लिए, खास तौर पर मौजूदा परिस्थितियो मे, सवसे ज्यादा ठीक समझते है और जिन्होने अभी तक वडी-वडी सफलताए दिखाई है। हमारी राय है कि आपके और समाजवादी साथियो के भाषणो से और दूसरे आम समाजवादियो के कार्यो से, जिनका हौसला इन भाषणो से वढ गया है, सारे देश मे काग्रेस-सगठन कमजोर हो गया है। वदले मे उससे कोई फायदा तो हुआ नही है। इस समय देश के सामने जो राजनैतिक काम है, खास तौर पर चुनावो का कार्यक्रम, उसपर आपके इस प्रचार का अत्यन्त हानिकारक प्रभाव पडा है और हम महसूस करते है कि इस प्रकार जो स्थिति उत्पन्न होगई है, उसमे हम चुनावो को व्यवस्थित करने तथा लडने की जिम्मेदारी अपने ऊपर नही उठा सकते।

इसलिए अत्यन्त अनिच्छापूर्वक हमने कार्य-समिति से त्यागपत्र देने का निर्णय किया है। हम सोचते है कि बहुत विचार-विमर्श के बाद हमने जो कदम उठाने का निश्चय किया है, उससे आपके प्रति और हमारे प्रति भी न्याय होगा और देश का भी भला होगा।

आपके

राजेन्द्रप्रसाद　　जयरामदास दौलतराम　　वल्लभभाई पटेल

सी. राजगोपालाचारी　　जमनालाल बजाज　　जे. बी. कृपालानी

एस. डी. देव

१४८ सुभाषचद्र बोस की ओर से

मारफत—सुपरिंटेंडेंट पुलिस,
दार्जिलिंग
३० जून १९३६

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा २२ ता. का पत्र पाकर खुशी हुई। वह मुझे २७ ता. को मिला। समाचारपत्रो से मुझे मालूम हुआ कि तुम बहुत ज्यादा परिश्रम कर रहे हो और मुझे तुम्हारे स्वास्थ्य के बारे मे चिन्ता हो रही थी। मुझे खुशी है कि तुम, थोडे समय के लिए ही सही, मसूरी विश्राम करने के लिए जा सके। मैं यह समझ सकता हू कि अति परिश्रम को टालना तुम्हारे लिए कितना कठिन है, फिर भी मै आशा करता हू कि तुम बहुत ज्यादा परिश्रम नही करोगे। अगर तुम्हारी तबीयत बिगडी तो उससे किसीको मदद नही मिलेगी।

तुमने अपने बहनोई रनजीत के बारे मे जो कुछ कहा है, वह बहुत ही दुख की चीज है। किन्तु यह जानकर थोडी राहत मिली कि डाक्टर किसी गभीर परिणाम की आशका नही करते। हम आशा करे कि स्थान-परिवर्तन और विश्राम से उनकी तबीयत सुधर जायगी।

मैं करीब-करीब ठीक हू। कुछ पेट की शिकायत है और थोडा फ्लू सा असर हो गया था ([illegible] की खराबी भी हो सकती है)—किंतु वे सब [illegible] दूर हो जायगी।

अगर तुम्हारे पुस्तकालय मे नीचे लिखी पुस्तको मे से कोई हो और

तुम उनको सुविधापूर्वक सुलभ कर सको तो कृपा करके एक या दो एक-साथ भिजवा देना।

१ हिस्टोरिकल ज्योग्राफी ऑव यूरोप—गोर्डन ईस्ट-लिखित
२ क्लैश ऑव कलचर्स एण्ड कॉन्टेक्ट ऑव रेसेस' —पिट रिवर्स-लिखित
३ शार्ट हिस्टरी ऑव ऑवर टाइम्स—जे ए स्पेडर-लिखित
४ वर्ल्ड पॉलिटिक्स १९१८-३५—आर पी दत्त-लिखित
५ साइस एड दी फ्यूचर—जे बी एस हालडेन-लिखित
६ अफ्रीका व्यू—हक्सले-लिखित
७ चगेजखा—राल्फ फोक्स-लिखित
८ दि ड्यूटी ऑव एम्पायर—बारनेस-लिखित

उपरोक्त पुस्तको के स्थान मे तुम हाल मे प्रकाशित कोई दूसरी दिलचस्प पुस्तके चुन सकते हो। चिट्ठी-पत्री या पुस्तके सुपरिंटेडेट पुलिस दार्जिलिग की मारफत भेजी जानी चाहिए।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे। सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

प जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद।
सेसर करके पास की गई
(ह) सुपरिंटेडेट पुलिस, दार्जिलिग

१४९ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

वर्धा
१ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलालजी,

कल जबसे हम विदा हुए, महात्माजी के साथ बडी देर तक हमारी बातचीत होती रही और हमने आपस मे भी लबा मशविरा किया। हम समझते है कि हमने जो रास्ता अपनाया है, उससे आपको चोट महसूस हुई है और खास तौर पर हमारे पत्र ने आपको बहुत पीडा पहुचाई है। आपको परेशान करने तथा आपको कष्ट पहुचाने का हमारा मशा कभी भी नही

था और यदि आप जरा भी कही जता देते या इशारा कर देते कि आपको उससे दु ख पहुचा है तो हम बगैर किसी हिचकिचाहट के उस पत्र मे सशोधन कर देते या उसे पूरी तरह से बदल देते। लेकिन सारी परिस्थिति पर पुनर्विचार करने पर हमने उस पत्र को और त्यागपत्रो को वापस लेने का निश्चय किया है, परन्तु चूकि हम अपने त्याग-पत्रो को वापस ले रहे है, इसलिए अब हम अपने भावो को इस निजी पत्र मे कुछ अधिक विस्तार के साथ आपके सामने स्पष्ट करने की इजाजत चाहते है, जैसा उस पत्र मे नही किया जा सकता था, जो कि प्रकाशित होनेवाला था। ऐसा करने में भी हमारी इच्छा आपको चोट पहुचाने की नही है।

अखबारो मे आपके भाषणो के जो विवरण छपे है, उन्हे देखकर हमे ऐसा लगता है कि आप काग्रेस के आम कार्यक्रम पर इतना नही बोल रहे है, जितना उस विषय पर, जिसे काग्रेस ने स्वीकार नही किया है और ऐसा करने मे आप कार्य-समिति के हमारे साथियो के, और काग्रेस के भी, अल्पमत के प्रवक्ता की हैसियत से ज्यादा काम कर रहे है, बनिस्बत बहुमत के प्रवक्ता के रूप मे, जैसाकि हम काग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से आपसे करने की अपेक्षा रखते थे। जैसा कि आपने बताया, यह हो सकता है कि आपके भाषणो के उन अशो को ही अधिक प्रकाशित किया गया हो, जो समाजवाद का प्रतिपादन करते है और शेष को अखबारो मे महत्व न दिया गया हो। शायद समाचार की दृष्टि से उसका मूल्य ज्यादा न माना गया हो। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि आपके शब्द स्वय अपने कानो से सुननेवाले जितने लोग होते है, उनसे कही ज्यादा वे लोग होते है, जो अखबारो मे छपी रिपोर्टो को ही पढते है। आपके भाषणो का इस विशाल जन-समूह पर जो असर होता है, उसे आप दरगुजर नही कर सकते।

हमारे खिलाफ एक नियमित और लगातार आदोलन हो रहा है कि हम वे लोग है, जिनका जमाना लद गया है, जो ऐसे विचारो का प्रतिनिधित्व करते है, जो घिस गये है और जिनका अब कोई मूल्य नही रहा है, जो देश की प्रगति मे सिर्फ बाधक है और जिन्हे उन पदो पर से हटाकर अलग फेक दिया जाना चाहिए, जिनपर वे अपात्र होते हुए भी बैठे है। गाधीजी के साथ रहकर हमने जिन आदर्शो, काम करने के जिन तरीको और पद्ध-

तियो को सीखा है, वे ही हमे किसी भी सगठन मे सत्ता और पदो
लालसा करने से रोकते है। हमने अनुभव किया है कि हमारे साथ व
भारी अन्याय हुआ है और हो रहा है तथा अपने एक साथी और अध्
के नाते हमे आपसे वह सरक्षण नही मिल रहा है, जिसके हम हकदार
जब हमे निकालने की सप्रयास तैयारिया हो रही है और इसकी घोषण
आपकी उपस्थिति मे की जाती है, और जैसाकि ट्रेड यूनियन काग्रेस मे क
गया था, ऐसे गुटो के साथ आपकी सहानुभूति है, तो हमे लगता है कि जो कु
कहा जाता है, वह केवल उन्हीकी भावनाओ का प्रतिनिधित्व नही कर
जो ऐसी भापा बोलते है, बल्कि कुछ हद तक आपकी राय का भी। इ
हमे दु ख होता है, क्योकि पदो से चिपटे रहने की हमारी तनिक भी इच
नही है। इस तरह पग-पग पर हम इस नतीजे पर पहुच रहे है कि वत
साथियो के हमे उस हद तक आपका विश्वास प्राप्त नही है, जिस हद त
होना चाहिए और आपकी हमारे या हमारे विचारो के लिए कोई इज्ज
नही है। हमे स्वभावत ऐसा लगता है कि आप हमे केवल एक बोझ मा
है और हमारे इस तरह पदो पर रहने से कोई भी उपयोगी उद्देश्य सि
नही होता है।

बम्बई मे महिला-सभा मे आपका भापण हममे से बहुतो को चु
सा गया और हमने सोचा कि आपकी भावना यह है कि हम जबर्दस
आपपर थोपे गये थे और अनिच्छापूर्वक आपको कार्य-समिति स्वीकार क
लेनी पडी थी। यदि लखनऊ मे हमे मालूम हो जाता कि आपकी भाव
यह है तो घटनाए निश्चय ही कोई दूसरा रूप ग्रहण करती।

हमारा यह भी ख़याल है कि देश मे आप जिस तरह से स्थिति सभ
रहे है, उससे रचनात्मक कार्यक्रम को हानि पहुच रही ह, जिसे हम काग्
के कार्यक्रम का अत्यत अनिवार्य और महत्वपूर्ण अग मानते है।

इन व्यक्तिगत प्रश्नो को छोड दे तो भी हमने अनुभव किया है
पिछले सोलह-सत्रह वर्षो से जिन आदर्शो और नीति का हम अनुसर
करते रहे है और जो हमारे विचार से देश के लिए एकमात्र सही आद
है, उन्हीको यत्नपूर्वक हानि पहुचाई जा रही है और इस खेल मे जो ल
लगे है आपकी दृष्टि और सहानभति भी उनके साथ है। हमे महसूस ह

ह कि आपके साथ हमारे रहने से लोगो पर यह गलत असर पडता है कि अनजान मे और इच्छा न होते हुए भी इस प्रक्रिया मे एक तरीके से हम मददगार हो रहे है। यह प्रवृत्ति है, जो देश मे काग्रेस के सगठन और उसकी प्रतिष्ठा को धीरे-धीरे नुकसान पहुचा रही है, क्योकि देश तो सपूर्णतया आज भी उन्ही आदर्शो और नीति को मानता है। इसका नतीजा काग्रेस को कमजोर करने मे और कार्यकर्ताओ मे फूट फैलने मे होता है। इससे स्वभावत आगामी चुनावो मे काग्रेस की सफलता की सभावनाए भी कम होती है। इस मुद्दे पर आपके विचार दूसरे है। आखिर चुनावो के परिणामो के बारे मे हम केवल अन्दाज ही तो कर सकते है और हमारे अन्दाज अलग-अलग हो सकते है। हमने मान लिया है कि इस दलील मे बल है कि हमने जो कडा कदम उठाने का विचार किया है वह हमे तबतक नही उठाना चाहिए, जबतक कि हमे निश्चय नही हो जाय कि हमारे त्याग-पत्र से कुल मिलाकर चुनावो मे सफलता की सभावनाए बनती नही है तो कम-से-कम बिगडेगी तो नही। हममे से कुछको ऐसा लगता है कि हमारे इस कार्य से, सभव है, ऐसे परिणाम उत्पन्न हो कि काग्रेस की चुनाव-विषयक-स्थिति और भी बिगड जाय। हम ऐसी सभावना पैदा नही होने देना चाहते। इसके साथ ही अपने प्रान्तो का हमे जो व्यक्तिगत अनुभव है, उसके आधार पर, हमे भय है कि वहा काग्रेस की स्थिति और अनुशासन कम-जोर हो रहा है और इसे आपके ध्यान मे ला देना हम अपना कर्तव्य समझते है, जिससे आप उचित उपाय कर सके।

जैसाकि आपसे हमने बार-बार कहा है कि हमारे दिलो पर यह असर किसी एक भाषण या कार्य से नही पडा है, बल्कि कुल मिलाकर सारे क्रिया-कलापो से पडा है और हमने अपना कर्तव्य समझा कि यह सब स्पष्ट रूप से आपके सामने रख दे, जिससे आपको पूरा-पूरा पता रहे कि हमारे दिलो मे क्या चल रहा है और यदि आप आवश्यक समझे कि इस सबध मे कुछ करने की जरूरत है तो वह आप कर भी सके। आपकी भावनाओ को चोट पहुचाने के लिए हमे अफसोस है और मुझे आशा है कि इस पत्र से मामला अधिक बिगडेगा नही, कुछ सुधरेगा ही, क्योकि यही हम चाहते है। यह पत्र मै आपको हम सबकी सलाह से और सबकी तरफ से लिख रहा हू। जहातक

हमारा सबध है, इस घटना के लिए, जिसमे हमने देश का हित समझा है, केवल हम ही जिम्मेदार है और आप त्यागपत्रवाले पत्र को ऐसे ही समझे, जैसे वह हमारे द्वारा कभी दिया ही नही गया था। अत उसे कृपा करके लौटा दे।

कहने की आवश्यकता नही कि यह पत्र केवल आपके लिए निजी है और इसे दफ्तर के कागजात मे शामिल नही किया जाना चाहिए।

सप्रेम आपका,
राजेन्द्रप्रसाद

१५० महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद
५ जुलाई १९३६

प्रिय बापू,

मै यहा कल रात पहुचा। जबसे मैने वर्धा छोडा तबसे मेरे जिस्म मे कमजोरी और दिमाग मे परेशानी मालूम होती है। कुछ इसकी वजह बेशक जिस्मानी है। ठड लग जाने से मेरे गले की खराबी बढ गई है। कुछ और वजह भी है जो सीधे मन और आत्मा से ताल्लुक रखती है। यूरोप से लौटने के बाद मैने देखा है कि कार्यसमिति की बैठको मे मै बहुत थक जाता हू। उनका मुझपर निष्प्राण करनेवाला असर होता है और हर नये अनुभव के बाद मुझे लगभग ऐसा महसूस होता है कि मै बूढा होगया हू। मुझे ताज्जुब नही होगा, यदि समिति के मेरे साथियो को भी ऐसा ही महसूस होता हो। यह अच्छा तजुर्बा नही है और इससे कारगर काम के रास्ते मे रुकावट होती है।

जब मै यूरोप से लौटा तब मुझे कहा गया कि देश गिर गया है और इसलिए हमे धीरे चलना पडता है। लेकिन चार महीने के मेरे थोडे-से तजुर्बे ने इस खयाल की पुष्टि नही की है। सच तो यह है कि मै जहा कही गया हू वहा मैने उभरती हुई प्राणशक्ति पाई है और जनता की मदद की भावना पर मुझे अचरज हुआ। इसका क्या कारण है, यह तो मै निश्चित रूप से नही कह सकता। मै सिर्फ कई तरह के अदाजे ही लगा सकता हू। जनता के उत्साह ने कुदरती तौर पर मेरा दिल बढा

दिया है और मुझमे नई शक्ति भर दी है। परन्तु मालूम होता है कि यह शक्ति कार्यसमिति की हर बैठक मे बाहर निकल पडती है और मै बहुत कुछ ऐसा महसूस करता हुआ लौटता हू जैसे किसी बैटरी की बिजली खत्म होगई हो। इस मौके पर यह प्रतिक्रिया सबसे अधिक हुई है, क्योकि मेरी जिस्मानी हालत गिरी हुई है।

लेकिन मै आपको अपनी जिस्मानी या दिमागी हालत के बारे मे लिखना नही चाहता था। इससे अधिक महत्त्वपूर्ण मामले ऐसे है, जिनकी मुझे चिन्ता है और अभी तक मुझे कोई साफ रास्ता नजर नही आया। मै जल्दबाजी मे या मामले पर पूरा विचार किये बगैर काम नही करना चाहता। परन्तु मेरे अपने मन मे निश्चय होने से पहले मै आपको बता देना चाहता हू कि मै किधर देख रहा हू।

आपने मामले को ठीकठाक करने के लिए और सकट को टालने मे मदद देने के लिए जो कष्ट उठाया उस सबके लिए मै आपका अहसानमन्द हू। मुझे तब भी पक्का विश्वास था और अब भी पक्का विश्वास है कि जिस तरह की अलहदगी की बात सुझाई गई, उसका हमारे सारे काम पर, जिनमे चुनाव शामिल है, गभीर असर होता। बहरहाल इस समय हम कहा है और भविष्य मे हमारे लिए क्या बदा है ? मैने अपने नाम राजेन्द्रबाबू का पत्र (दूसरा) और मुझपर लगाये गए जबरदस्त आरोपो को फिर से पढा। यह अभियोगपत्र जबरदस्त तो है, परन्तु निश्चित नही है। केवल स्त्रियो की सभा मे मेरे भाषण की बात निश्चित है। लेकिन वास्तव मे उसका किसी व्यापक प्रश्न से सबध नही है। खास चीज यह है कि मेरी प्रवृत्तिया काग्रेस के मकसद को नुकसान पहुचानेवाली है, उनसे काग्रेस का नुकसान हो रहा है और चुनावो में सफलता की सभावना घट रही है। यदि मेरा यही हाल रहा तो हालत और बिगड सकती है और मेरे साथी इस जबर्दस्त मामले मे कोई जोखम नही उठाना चाहते।

अब जाहिर है कि यदि इस आरोप मे कोई सचाई है तो उसका मुकाबला होना चाहिए। मामला इतना गभीर है कि उसपर लीपापोती नही की जा सकती। इसमे कुछ काले और सफेद रग नही है और

न कोई भले और वुरे का सतुलन करनेवाली वाते हैं । यह तो सव काला-ही-काला है और इससे निर्णय करना सचमुच आसान होगया है । कारण, तथ्य को कितनी ही कोमलता के साथ वयान किया जाय, वह यह है कि मै एक असह्य कटक हू और मुझमे जो गुण है—यानी थोडी-सी योग्यता, शक्ति, लगन, कुछ व्यक्तित्व जिसका कुछ असर होता है—वे ही खतरनाक वन जाते हैं, क्योकि वे गलत आदमी के साथ लगे हुए हैं । इस सवसे जो नतीजा निकलता है, वह साफ है ।

लखनऊ से पहले और किसी हद तक लखनऊ मे भी खुद मुझपर यह असर पडा कि इस साल हम सवके लिए साथ-साथ चलने मे कठिनाई नही होनी चाहिए । अव यह साफ है कि मेरा खयाल गलत था, हालाकि दोनो तरफ कोशिश मे कोई कसर नही रही । मुमकिन है, दोष मेरा ही हो, मुझे इसका पता नही है, लेकिन आदमी को अपनी आख का शहतीर शायद ही दिखाई देता है। असलियत यही है कि आज वह आत्मिक वफादारी नही है, जो हमारे दल को वाधकर रखती है । यह एक मशीन जैसा दल है और दोनो ओर एक निस्तेज रोप और दमन की-सी भावना है और जैसा मनोविज्ञान का प्रत्येक विद्यार्थी जानता है, इससे सब तरह के गैर-मुनासिव निजी और सामाजिक पेच पैदा होते हैं ।

इस वार जव मै बम्बई पहुचा तो वहुत लोग मेरे मुह की तरफ देखते रहे, क्योकि उनके लिए यह मानना कठिन होगया था कि मै वच कैसे गया । वहा सवको मालूम था (जैसा 'टाइम्स ऑव इडिया' मे पहले समाचार आया था) कि मेरा शान्ति से खात्मा होनेवाला है—अलबत्ता सियासी खात्मा ही । दाह-क्रिया के सिवा और सवकुछ तय हो चुका था, इसीलिए उन्हे अचरज था । मुझे यह अजीव-सी वात मालूम हुई कि जव वाजार मे वहुत लोगो को ये सब विश्वासपूर्ण अफवाहे मालूम थी तव मुझे इनका कुछ भी पता नही था । लेकिन हालाकि मुझे उनकी जानकारी नही थी तो भी अफवाहो का होना बिल्कुल वाजिव था, इसीसे मेरी मौजूदा अलहदगी का अदाज लगाया जा सकता है ।

मै अपने मौजूदा विचारो के वारे मे अपनी पुस्तक मे और वाद मे भी विस्तार से लिख चुका हू । मेरे वारे मे राय वनाने के लिए मसाले

की कमी नही है। ये विचार आकस्मिक नही है। ये मेरा अग है और हालाकि भविष्य मे मै उन्हे बदल सकता हू, फिर भी जबतक वे मेरे विचार है, तबतक मुझे उनको प्रकट करना ही चाहिए चूकि मै एक बडी एकता को महत्व देता था, इसलिए मै उन्हे नरम-से-नरम ढग से जाहिर करने की कोशिश करता था। इसका एक वडा कारण यह भी था कि निश्चित निर्णयो की अपेक्षा मै विचार को निमत्रण देता था। मुझे इस दृष्टिकोण मे और काग्रेस कुछ भी कर रही हो उसमे कोई सघर्ष दिखाई नही दिया। जहातक चुनावो का सबध था, मै निश्चित रूप से अनुभव करता था कि मेरा निश्चित दृष्टिकोण हमारे लिए लाभ की चीज था, क्योकि उससे आम लोगो मे उत्साह पैदा होता है। परन्तु मेरे दृष्टि-कोण के नरम और अस्पष्ट होते हुए भी मेरे साथी उसे खतरनाक और हानिकारक समझते है। मुझसे तो यहातक कहा गया कि हिंदुस्तान की गरीबी और बेकारी पर मेरा हमेशा जोर देना बुद्धिमानी की बात नही थी। कम-से-कम जिस ढग से मै जोर देता था, वह बेजा था।

आपको याद होगा कि दिल्ली और लखनऊ दोनो जगह मैने स्पष्ट कर दिया था कि सामाजिक मामलो पर मुझे अपने विचार प्रकट करने की आजादी होनी चाहिए। मैने यह समझा था कि आप और समिति के सदस्य इससे सहमत है। अब प्रश्न स्वय उन विचारो की अपेक्षा उन्हे प्रकट करने की स्वतत्रता का अधिक हो जाता है और इससे भी बडा प्रश्न जीवन के मूल्यो का है। यदि हम किसी चीज का बडा मूल्य समझते है तो हम उसका बलिदान नही कर सकते।

यह सघर्ष है, जिससे इन्कार नही किया जा सकता। कौन सही है और कौन गलत, इसकी बहस करना व्यर्थ है। परन्तु पिछले सप्ताह की घटनाओ के बाद मुझे यह सदेह होने लगा है कि क्या हम सचमुच सही रास्ते पर चल रहे है। मेरा यह विचार होता है कि हमारे लिए ठीक बात यह होगी कि मामला महासमिति की अगली बैठक मे सक्षेप मे रख दिया जाय और उसका आदेश ले लिया जाय। यह किस प्रकार अच्छी तरह किया जाय, इस बारे मे मेरा दिमाग अभी साफ नही है, परन्तु वह होना चाहिए सादे-से-सादे ढग पर और बिना बहुत बहस-मुबाहसे के। जहा-

तक मेरा सबध है, मेरी तरफ से बहुत कम तर्क होगा।

शायद इसका परिणाम यह होगा कि मै हट जाऊगा और अधिक एक-जैसे विचारो के लोगो की समिति बन जायगी।

आपने मुझसे कहा था कि किसी-न-किसी प्रकार का बयान जारी करने का आपका इरादा है। मै इसका स्वागत करूगा, क्योकि मै मानता हू कि प्रत्येक दृष्टिकोण देश के सामने स्पष्ट रख दिया जाय।

मै अभी इस मामले का जिक्र किसीसे नही कर रहा हू। अलबत्ता भेद लेनेवाली और अशिष्ट आखें इसे आपके पास पहुचने से पहले रास्ते में ही देख लेगी। उन्हे बर्दाश्त करना पडेगा।

बम्बई मे मृदुला से बात हुई थी। वह अहमदाबाद से कुछ घटो के लिए खास तौर से मेरे अनुरोध पर आई थी। उसने मुझे बताया कि जहातक तथ्यो का सबध था, उसे जो कुछ आपने उससे कहा था और जो कुछ मैने लिखा या कहा था उसमे कोई फर्क नही दीखा था (और न बताया था)। सच तो यह है कि उसने आपके नाम अपने पत्र मे यह स्पष्ट कर दिया था, लेकिन शायद एक-दो वाक्य आपके देखने से रह गये। उसका इरादा है कि अपने पिछले पत्र की नकल आपके पास भेज दे, ताकि आप खुद इस बात को देख ले।

वर्धा मे मुझसे कहा गया कि गुजरात की स्त्रिया यह कह रही है कि आप या वल्लभभाई दोनो स्त्रियो को कार्यसमिति से अलग रखने के लिए जिम्मेदार है। मैने मृदुला से पूछा था। उसने मुझसे कहा कि जहा-तक उसे मालूम है, किसीने ऐसा कहा या सोचा नही।

मैने इस बारे मे सरोजिनी से भी बात की थी।

मै डा जीवराज मेहता और खुरशेद से मिला। जीवराज खर्च वगैरा के बारे मे विधान से पूरी तरह सहमत नही है, परन्तु उन्होने अपने पहले के आकडे को कुछ कम कर दिया। अब वह कहते है कि अस्पताल की इमारत और सामान वगैरा के लिए दो लाख काफी होने चाहिए।

और दो लाख वह सुरक्षित कोष के लिए चाहते है। उनकी यह भी राय है कि इमारत स्वराज-भवन की जमीन पर नही बनानी चाहिए, जैसी कि शुरू मे योजना थी, बल्कि आनन्द-भवन के पूरब मे खेतो पर बनानी

चाहिए। मैं इसके बारे में म्युनिसिपैलिटी से पूछताछ करूगा।

मेरा इरादा महासमिति के अधिवेशन के आसपास बम्बई मे कमला-स्मारक ट्रस्टियो की बैठक बुलाने का है। स्वराज-भवन के ट्रस्टियो की बैठक भी।

बम्बई मे नरगिस ने आग्रह करके मुझे एक गले के जर्मन विशेषज्ञ के पास भेज दिया। इस आदमी ने मुझसे कहा है कि अपने गले को आराम देने के लिए मै एक हफ्ते के लिए बिल्कुल चुप रहू। यह तो मुश्किल काम है।

सस्नेह आपका,
जवाहरलाल

१५१ महात्मा गांधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
८ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। वर्धा की घटनाओ को तुम्हें लिख सकने के लिए मै समय ढूढ रहा था। तुम्हारे पत्र ने इसे कठिन बना दिया। परन्तु मै इतना ही कहना चाहूगा कि हट जाने के पत्र का वह अर्थ नही है जो तुमने इसे लेते समय लगाया। वह मेरे देख लेने के बाद तुम्हे भेजा गया था। त्याग-पत्र के स्थान पर इस तरह का पत्र भेजने का सुझाव मेरा था। मै चाहता हू कि तुम इस पत्र के विषय मे अधिक न्यायपूर्ण विचार करोगे। हर हालत मे मेरा यह दृढ मत है कि वर्ष के शेष समय मे सारी खीचतान बन्द रहे और कोई त्यागपत्र न दिये जाय। सकट का सामना करने मे महासमिति का सब काम ठप्प हो जायगा और वह सामना कर भी नही सकेगी। वह दो भावनाओ के बीच छिन्न-भिन्न हो जायगी। लोकतन्त्र के नाम पर उसपर एक ऐसा सकट अचानक लाद देना अत्यन्त अन्यायपूर्ण होगा, जो पहले कभी उसके सामने नही आया। तुम उस पत्र के गूढ़ार्थ को बढा-चढाकर समझ रहे हो। मै बहस नही करूगा, परन्तु यह आग्रह अवश्य करूगा कि स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करो और अपनी शान के मामने उदासी की घड़ी मे हथियार

न डाल दो। कार्य-समिति की बैठको मे अपने विनोद को खुलकर क्यो न खेलने दो? जिन लोगो के साथ तुमने वर्षो तक बेखटके काम किया है, उनका साथ निभाना तुम्हारे लिए इतना कठिन क्यो होना चाहिए? यदि वे असहिष्णुता के अपराधी है तो तुम्हारा हिस्सा अधिक है। तुम्हारी आपसी असहिष्णुता के कारण देश की हानि नही होनी चाहिए।

आशा है, तुमने जर्मन डाक्टर की बहुत सयानी सलाह मान ली है।

सस्नेह,

बापू

१५२. जे बी कृपालानी की ओर से

स्वराज्य भवन,
इलाहाबाद
११ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहर,

बम्बई से तुम बीमार होकर लौटे। इसलिए मैंने तुम्हे तकलीफ देना पसद नही किया। अब चूकि तुम्हारा स्वास्थ्य बहुत-कुछ ठीक होगया है, इसलिए कुछ सतरे लिखने का साहस कर रहा हू।

पिछली बार वर्धावाले कदम का उतना व्यक्तिगत महत्व नही था, जितना तुमने दिया। कम-से-कम मेरे लिए तो वह केवल राजनैतिक महत्व ही रखता है। मैंने कभी कल्पना भी नही की थी कि अपने साथियो से मिल जाने मे मेरी तुम्हारे प्रति व्यक्तिगत सम्मान मे कमी थी। मैंने हमेशा तुम्हारी दोस्ती का मूल्य समझा है। इसका आधार निश्चय ही राजनैतिक था, परन्तु हमारे बरसो के घनिष्ठ सपर्क ने उसे मित्रता मे बदल दिया है। इसकी सीमा कहातक है, यह शायद तुम्हे पता न हो, क्योकि उसे कभी शब्दो मे जाहिर नही किया गया है। शायद तुम्हे यह जानकर आश्चर्य होगा, लेकिन यह एक तथ्य है कि मैंने अपना विवाह डेढ साल के लिए महज इसलिए स्थगित कर दिया, क्योकि तुम मुक्त नही थे। जबकि मै चाहता था कि कोई भी इस मौके पर उपस्थित न हो, तब भी मैं तुम्हारी उपस्थिति चाहता था। यह सब मैंने सुचेता को बता दिया था, और मेरी उम्र के कारण, इतजार करने की अपनी स्वाभाविक अनिच्छा के बावजूद, उसने मेरी बात

को समझा और मेरी भावनाओ का आदर किया। खुरशेदबहन, जो हम दोनो की समान मित्र है, तुम्हारे प्रति मेरे लगाव को जानती है।

बापू ने मुझसे कहा कि मेरे बारे मे तुम्हे बहुत दु ख हुआ। तुम्हारी शिकायत थी कि मैने तुम्हे सारी बाते पहले क्यो नही बताई, जबकि हम कई बार मिलते रहे थे। मै सोचता हू कि तुम्हारी शिकायत मे जो बल है, उसे स्वीकार करना होगा। इसके लिए मेरी हद दर्जे की शर्म जिम्मेदार है। लखनऊ से लौटने के बाद से मै बराबर सोचता रहा हू कि तुमसे बातचीत करू। किसी तरह हमारी भाग-दौड और काम के बोझ तथा हलचलो के कारण मै इस बातचीत को आगे के लिए टालता रहा और कोई अवसर ही नही निकाल सका।

जहातक मुझे पता है, वर्धावाली बात एकाएक और बिना पहले सोच-विचार के हुई थी। हस्ताक्षर करनेवाले हर व्यक्ति की प्रतिक्रिया एक-जैसी थी। उसका व्यक्तिगत महत्व भी है, इस बात का किसीको खयाल तक नही हुआ। तुम्हे शायद पता नही है कि पहले पत्र के मसविदे का बहुत अधिक हिस्सा और दूसरा तो पूरा-का-पूरा राजेन्द्रबाबू का ही लिखा हुआ था। तुम्हे यह जानकर शायद आश्चर्य होगा कि हम सब सचमुच यही समझते थे कि तुम हमे बोझ मानते हो और परिवर्तन से तुम्हे दु ख नही होगा। हमने यह भी सोचा कि कार्य-समिति को फिर से बनाना बिल्कुल सभव है, आवश्यक नही कि सोशलिस्टो को लेकर, बल्कि ऐसे लोगो को लेकर जो निश्चित रूप से सोशलिस्ट पार्टी से सबध नही रखते, लेकिन कम-ज्यादा उनके विचार तुमसे मिलते-जुलते है। सबके बारे मे मै नही कह सकता, लेकिन मुझे निश्चय है कि हममे से अधिकाश ने नही सोचा था कि इससे तुमको तकलीफ होगी। परन्तु बाद की घटनाओ ने सिद्ध कर दिया कि हमारा अनुमान गलत था। यह सब मै इसलिए लिख रहा हू कि तुम उस कदम को सही-सही रूप मे समझ जाओ, नही तो, मशा न होते हुए भी, मित्रो के प्रति तुमसे कही अन्याय न होजाय।

इतनी तो हुई निजी तफसील। मेरे राजनैतिक विचारो ने, जैसेकि वे अभी हाल मे प्रकट हुए है, तुम्हे हैरत मे डाल दिया होगा। तुम मैदान से काफी समय तक दूर रहे। इसलिए पष्ठ-भमि की तुम्हे स्पष्ट कल्पना नही है।

समाजवादी मित्रो के साथ के विवाद बबई-काग्रेस से पहले के हैं। वे तो पूना-सम्मेलन के भी पहले के है। तुम्हे शायद पता है कि उस पूना-सम्मेलन मे सविनय-अवज्ञा को वापस लेने के उनके प्रस्तावो के विरोध मे बोलने-वाला मुख्यत एकमात्र मै ही था। तुम यह भी जानते होगे कि कुछ मित्रो को, खास तौर पर भूलाभाई और दूसरो को, मेरा यह विरोध पसन्द नही आया। मैने दफ्तर का काम सभाला। उससे कही पहले से मेरा तो इस बात से विरोध ही रहा है। इस विरोध की कहानी और साथ-ही-साथ अपना दृष्टि-बिन्दु भी मै सक्षेप मे तुम्हारे सामने रखने की कोशिश करता हू।

बापू की प्रतिष्ठा को कम करना और उनकी नीतियो का अतिक्रमण करना मै एक बहुत बडी भूल समझता हू। अगर वह जीवित रहे तो सघर्ष के समय उनकी फिर जरूरत होगी। मै खूब जानता हू कि वह सघर्ष के लिए वस्तुत तरस रहे है। वह तो केवल समय की प्रतीक्षा कर रहे है। ऐसी स्थिति मे उनके प्रभाव को घटाने या उनकी योजनाओ का मजाक उडाने का यत्न करना राजनैतिक मूर्खता है। काग्रेस समाजवादी लोगो ने व्यक्तिगत रूप से और मिलकर यह किया है और करते है।

मै मानता हू कि मै खुद एक प्रकार का समाजवादी हू। रूस मे जो कुछ हुआ है, दूसरो के समान, मै भी स्वभावत उसका प्रशसक हू। मैंने इस विषय का बहुत-सा महत्वपूर्ण साहित्य भी पढा है। परन्तु केवल विचार-प्रधान होने से अधिक मै कार्य-प्रधान हू। इसलिए काम शुरू करने के पहले मै तस्वीर को उसके पूरे रूप मे देखने की राह नही देख सकता। मै तो समझता हू कि किसी सुधारक ने न ऐसा किया है और न कर सकता है। अगर कोई ऐसा करे तो, मेरा खयाल है, वह देखेगा कि उससे कुछ नही बन पाया है। हमे उन चित्रकारो की तरह होना पडता है, जो अपनी कला के प्रति सच्चे और वफादार होने के लिए अपने चित्र मे हर चीज को या हर तफसील को दिखाने का यत्न नही करते। इसलिए एक कार्यकर्ता के नाते मै दूर की चीजो से अधीर हो जाता हू। मै तो फिलहाल की जरूरत को अधिक महत्व देता हू, अपना सारा ध्यान और प्रवृत्तिया उसीपर केन्द्रित कर देना चाहता हू। बेशक, आदर्श को छोडकर नही, बल्कि एक व्यावहारिक सुधारक जिस दृष्टि से उसे देखता है उससे। मै मानता हू कि राष्ट्रीयता, खास तौर पर यहा हिंदु-

स्तान में, गये जमाने की चीज नही है। मेरा विश्वास है कि जबतक हम राजनैतिक आजादी हासिल नही कर लेते, वह गई-बीती नही हो सकती। इसलिए मैं मानता हू कि उसकी प्राप्ति के लिए सब वर्गों और सभी हितो की सेवा का उपयोग किया जा सकता है और उसके आधार पर एक सयुक्त मोर्चा बनाया जा सकता है। मैं समझता हू कि स्वतन्त्रता ऐसा लक्ष्य है, जिसमे पर्याप्त प्रेरणा है और जिसे प्राप्त करना कठिन है। मै तो यह भी मानता हू कि यह आदर्श अभी हिंदुस्तानी समाज के सभी वर्गों की गहराई तक नही पहुचा है। इसलिए जन-साधारण के सामने अधिक दूर की चीज रखते हुए मुझे डर लगता है कि हम कही उनकी एकाग्रता और काम करने की उनकी क्षमता को नष्ट न कर दे। मै जानता हू कि तर्क द्वारा इस विचार को गिराया जा सकता है, क्योकि इसमे पूर्ण नही, आशिक सत्य है। परन्तु हमे यह भी नही भूलना चाहिए कि जब हम सत्य पर प्रत्यक्ष अमल करने लगते है तब थोडी देर के लिए वह आशिक सत्य ही सपूर्ण सत्य बन जाता है।

मैं यह भी मानता हू कि हम बीते जमाने के आदमी नही है। हमारे पास अपने कुछ खास मूल्य हैं, जिनका महत्व, मैं नही मानता हू कि खत्म हो गया है। मुझे अपने लोगो की इस प्रतिभा पर विश्वास है कि वे कोई नई चीज स्वय प्रवर्तित कर सकते है, जैसाकि बापू ने मनोवैज्ञानिक क्षण पर किया। मै नही बता सकता कि वह वस्तु क्या होगी। लेकिन इस समय तो मेरा उन तमाम लोगो पर विश्वास नही है, जिनके विचार, आदर्श और कार्य-पद्धतिया सब-की-सब बाहर से आई है, चाहे उनके दावे कुछ भी हो। दुर्भाग्यवश मेरा विचार है कि मेरे तमाम नौजवान समाजवादी दोस्तो के साथ यही सचाई है।

मैं मानता हू कि पुराने दल की अपेक्षा आज इन नौजवानो के साथ तुम्हारी पटरी अधिक अच्छी बैठती है, भले ही पहले उनने कितना ही अच्छा काम किया हो। उन नौजवानो के साथ तुम अधिक आत्मीयता अनुभव करते हो। आदर्श और विचारो की दृष्टि से भी बापू की अपेक्षा वे तुम्हारे अधिक नजदीक है। वे समाजवादी जिस जिस प्रकार अन्य दलो के साथ गठजोड़ कर लेते है, उसके कारण भी मै उनपर अविश्वास करता हू। [illegible] समय-साधक होते है। उन्होने पूना मे [illegible]

की सेवाओ का उपयोग किया। उन्हे पजाव और वगाल के सप्रदायवादियो से साठ-गाठ करने मे भी परहेज नही होगा, वशर्ते कोई तात्कालिक मतलव सिद्ध होता हो। हिंदुस्तान की राजनीति में मेरे विचार मे यह एक खतरनाक वात है। मेरा मत है कि वापू ने इससे हमको वहुत वचाया है। मै जानता हू कि खुद वापू के अनुयायी भी ऐसा कर लेते है। इनमे उनमे सिर्फ कम-ज्यादा का फर्क है। मेरा अनुमान शायद गलत हो, परन्तु मेरा खयाल है कि समाजवादी मित्र इस कला मे कही आगे वढे हुए है, जो कि एक शिथिल-चरित्र, कमजोर और गिरे हुए देश के लिए वहुत खतरनाक है।

इसलिए मै स्वभावत उस दल के साथ रहना चाहता हू जो विचारो मे वापू के अधिक निकट है। पिछले साल इस दल के साथ मेरी अदरूनी लडाई को मेरे समाजवादी मित्र भी अच्छी तरह जानते है। परन्तु मै देखता हू कि *अकेले आज वे ही—अधूरे तौर पर सही*—रचनात्मक कार्यक्रम, वापू के विचारो और हिन्दुस्तान की राजनीति में वापू के वने रहने के सबसे बड़े हिमायती है। यह जानकर तुम्हे शायद आश्चर्य होगा कि लखनऊ मे जव मैने सुना कि श्री भूलाभाई को कार्यसमिति मे लेने का विचार हो रहा है तब जयरामदास से मैने वातचीत की और हम दोनो मिलकर वापू के पास दौडे-दौडे गये और वल्लभभाई के सामने हमने उन्हे इस विषय मे अपने विचार जरा सख्त भाषा मे सुनाये। जमनालालजी भी थे। वापू ने हमें वताया कि पार्लमेंटरी वोर्ड को तोड दिया गया है, इसलिए इस प्रवृत्ति के भी किसी प्रतिनिधि को कार्य-समिति मे रखना जरूरी है। जो हो, वापू पर, सरदार पर अथवा जमनालालजी पर हम कोई असर नही डाल सके। फिर जिस समय समाजवादी मित्रो को शामिल किया गया तब भी हमने इस तरह की कोई आपत्ति नही उठाई।

ऊपर मैने सक्षेप मे वताया कि पिछले दो-तीन वर्षो से मेरा दिमाग किस प्रकार काम करता रहा है। मै आशा नही कर रहा हू कि ऊपर मैने जो कुछ लिखा है, उसका तुमपर कोई असर होगा। परन्तु मेरे लिए इतना जान लेना भी काफी होगा कि तुम्हारे प्रति मेरे प्रेम और आदर पर तुम अविश्वास नही करते। मै तो सचाई से कह सकता हू कि राजनैतिक क्षेत्र मे वापू को छोडकर एक भी आदमी ऐसा नही है, जिसे मै तुमसे अधिक

प्रेम और आदर करता हू ।

पत्र लम्बा हो जाने के लिए मै क्षमा नही मागता, क्योकि मेरे विचार से तो यह अधूरा ही है । यदि इसे पढने पर तुम महसूस करो कि हमको अधिक तफसील के साथ बाते कर लेनी चाहिए तो मै इसका स्वागत ही करूगा । मुझे सतोष होगा, यदि इसका इतना परिणाम भी हुआ कि मुझे भविष्य मे चाहे कोई राजनैतिक कदम उठाना पडे, मेरे व्यक्तिगत प्रेम के लिए तुम्हे शका नही होगी ।

तुम्हारा,
जीवत

१५३. महात्मा गाधी की ओर से

दुबारा मैंने नहीं देखा

सेगांव
१५ जुलाई १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

१ आशा है तुमको 'टाइम्स ऑव इडिया' के पत्र के बारे मे मेरा तार मिला होगा । मैंने कल प्राप्त करके उसे पूरा पढा । इसके विषय में मुझे कभी किसीने नही लिखा । पत्र को पढकर मेरी राय पक्की हुई है कि तुम्हे इसपर मान-हानि की कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए ।

२ यदि तुम मुझे गलत न समझो तो मैं चाहूगा कि तुम मुझे नागरिक स्वातन्त्र्य-सघ से मुक्त रक्खो । फिलहाल मैं किसी राजनैतिक सस्था मे शामिल होना पसन्द नही करता और किसी पक्के सत्याग्रही के उसमे शरीक होने का कोई अर्थ भी नही । परन्तु इस सघ मे मेरे सम्मिलित होने-न-होने के परिपक्व विचार के बाद मेरी यह राय पक्की हुई है कि सरोजिनी को या यो कहो कि किसी भी सत्याग्रही को अध्यक्ष बनाने मे भूल होगी । मेरा अब यह मत है कि अध्यक्ष कोई प्रसिद्ध वैधानिक कानूनी वकील होना चाहिए । यदि यह बात तुम्हे न जचती हो तो तुम्हे एक टिप्पणी लिखकर भी, जो कानून-भग करनेवाला न हो, रखना चाहिए । मैं यह भी चाहूगा कि सदस्यो की सख्या सीमित रखो । तुम्हे सख्या के बजाय गुणो की आवश्यकता है ।

३ तुम्हारा पत्र मर्मस्पर्शी है । तुम ऐसा अनुभव करते हो कि तुम [illegible] हो । लेकिन हकीकत यह है कि तुम्हारे साथियो

मे तुम्हारे जैसी हिम्मत और साफगोई नही है । परिणाम विनाशकारी हुआ है । मैंने सदा उन्हे समझाया है कि वे तुमसे साफ-साफ और निडर होकर बात कर ले । परन्तु साहस न होने के कारण जब कभी वे बोले, भद्दी तरह से बोले और तुम्हे उत्तेजना हुई । मै तुम्हे बताता हू कि वे तुमसे डरते रहे, क्योकि तुम्हे उनसे चिडचिडाहट और अधीरता हो जाती है । वे तुम्हारी झिडकियो से और तुम्हारे हाकिमाना ढग पर कुढते रहे और सबसे अधिक इस बात से कि उनके खयाल से तुम अपने-आपको अचूक और श्रेष्ठ ज्ञान-वाला समझते हो । वे महसूस करते है कि तुम उनके साथ शिष्टता से पेश नही आये और समाजवादियो के उपहास और गलत अर्थ लगाने से तुमने उनकी कभी रक्षा नही की ।

तुम्हे शिकायत है कि उन्होने तुम्हारी प्रवृत्तियो को हानिकारक बताया । इसका यह अर्थ नही था कि तुम हानिकारक हो । उनके पत्र मे तुम्हारे गुणो या तुम्हारी सेवाओ के बखान करने का कोई मौका नही था । वे पूरी तरह जानते है कि तुममे जीवट है और आम जनता और देश के युवको पर तुम्हारा काबू है । वे जानते है कि तुम्हे छोडा नही जा सकता और इस लिए वे झुक जाना चाहते थे ।

मुझे यह सारा मामला दुखद लगता है, साथ ही हास्यजनक भी । इस-लिए मै चाहता हू कि तुम सारी बात विनोद-वृत्ति से देखो । मुझे इस बात की चिंता नही कि तुम ए आई सी सी को अपने विश्वास मे लो, परन्तु मै नही चाहता कि उसपर तुम्हारे घरेलू झगडे ठीक करने का या तुममे और उनमे चुनाव करने का असह्य भार डाला जाय । तुम कुछ भी करो, उनके सामने बनी-बनाई बाते ही रखनी चाहिए ।

तुम इस बात पर रोष क्यो करते हो कि तमाम समितियो मे उनका बहुतम प्रकट हो । क्या यह अत्यन्त स्वाभाविक चीज नही है ?- तुम उनके सर्वसम्मत चुनाव से पदारूढ हो, लेकिन अभी तक सत्ता तुम्हारे पास नही है । तुम्हे पदारूढ करना तुम्हे शीघ्र सत्तारूढ करने का प्रयत्न था । और किसी तरह ऐसा न होता । जो हो, मेरे दिमाग मे यही बात थी, जब मैंने काटो के ताज के लिए तुम्हारा नाम सुझाया था । सिर पर घाव हो जाय तो भी इसे पहने रहो । समिति की बैठको मे फिर से

अपनी विनोद-प्रियता दिखाओ। तुम्हारा यही अत्यन्त सामान्य स्वरूप होना चाहिए, न कि एक चिन्तामग्न क्षुब्ध व्यक्ति का, जो जरा-ज़रा-सी बात पर उबल पडने को तैयार हो।

काश तुम मुझे तार से खबर दो कि मेरा पत्र पढ लेने के बाद तुम्हे उतनी ही प्रफुल्लता अनुभव हुई जितनी लाहौर मे नववर्ष के दिन हुई थी, जब तुम तिरगे झडे के चारो ओर नाचते बताये गए थे! अपने गले को भी तो तुम्हे मौका देना ही चाहिए।

मै अपना बयान फिर से देख रहा हू। मैने निश्चय किया है कि जबतक तुम इसे देख न लो, मै इसे प्रकाशित न करू।

मैने यह भी निर्णय किया है कि हमारे पत्र-व्यवहार को महादेव के सिवा और कोई न देखे।

सस्नेह,
बापू

१५४. अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

[अर्न्स्ट तोल्ले जर्मनी के प्रसिद्ध लेखक थे। उन दिनों उनकी पुस्तकें, अनुवाद के रूप में बहुत प्रचलित थीं। हिटलर के कारण उन्हे जर्मनी छोड़ना पड़ा। उसके पहले भी उन्होंने कुछ समय राजनैतिक कैदी के रूप में जेल में बिताया था। वह बहुत भावुक थे और स्पेन के गृहयुद्ध जैसी घटनाओ के कारण उन्हें काफी सहन करना पड़ा। उन्होंने आत्महत्या कर ली। क्रिस्तियान उनकी पत्नी थी।]

लन्दन
२१ जुलाई १९३६

प्रिय नेहरू,

पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मुझे इस बात का बडा गर्व है कि पिछले कुछ सप्ताहो के समाचारो मे हमारे नाम इतनी बार साथ-साथ लिये गए। मैने आपकी पुस्तक पढी है। जब मैने आपकी पुस्तक पढी, जो मेरी निगाह मे अबतक आई आत्मकथाओ मे सर्वोत्तम है और जो न केवल एक महान व्यक्तित्व का दर्शन कराती है, अपितु उस सराहनीय संघर्ष का भी, जो आपके देश की जनता ने अपनेको बाहरी और भीतरी बंधनो से मुक्त करने के लिए किया है, तो मैने प्राय हमारे बीच के बंधनो को अनुभव किया। मै

अक्सर सोचा करता हू कि जो लोग जेल मे रह आते है, वे अदृश्य रूप से एक ऐसे बधुत्व का अग बन जाते है, जिसका आधार पीडा और हृदय की वह महान कल्पना-शक्ति होती है, जो जेल मे विकसित होती है।

श्रीमती तोल्ले और मै आपकी पुत्री इन्दिरा से समाचार पाने की बडी तीव्रता से प्रतीक्षा कर रहे है। हमे उससे मिलकर बडी प्रसन्नता होगी।

कुछ सप्ताह हुए श्रीमती तोल्ले ने मेरे एक नये नाटक 'नो मोर पीस' (बस, अब शाति नही) मे काम किया था और उन्हे बडी सफलता मिली थी। सभव है कि जाडो मे वह लदन मे भी अभिनय करे। सितम्बर के अन्त मे मै अमरीका जा रहा हू, जहा मै भिन्न-भिन्न विषयो पर भाषण करूगा जैसे कि—

'हिटलर, उसके वचन और वास्तविकता।'

'क्या आपके समय की जिम्मेदारी आपपर है?'

'आधुनिक रगमच।'

यूरोप की स्थिति के बारे मे आपको कुछ लिखने की मुझे कोई आवश्यकता नही है। उसे आप भी उतना ही जानते है, जितना मै। राष्ट्र-सघ की भीतरी कमजोरी ज्यादा-से-ज्यादा प्रकट होगई है, और फासिस्ट तानाशाह इसका फायदा उठा रहे है। अतत यूरोप मे फासिस्ट और प्रजातत्रीय गुटो मे युद्ध होना अनिवार्य है। समस्या केवल यह है कि जनतत्रीय देश एक स्पष्ट कार्यक्रम को सामने रखकर और दृढ सकल्प के साथ एक-दूसरे के साथ सगठित होते है या नही। यदि वे ऐसा नही करेगे तो जिस चीज से वे बचना चाहते है उसको ले आयेगे, यानी निकट भविष्य मे ही युद्ध। दुर्भाग्यवश इतिहास से कोई भी सबक सीखना नही चाहता। जर्मनी का प्रजातत्र भी कमजोर था और हिटलर को एक के बाद दूसरी रियायत देकर गृहयुद्ध से बचना चाहता था। इस प्रकार जर्मन अधिकारियो ने स्वय अपने पतन का रास्ता तैयार कर लिया।

मैने आपके लेख को बडी रुचि के साथ पढा है। आपने फिलस्तीन की यहूदी-समस्या के बारे मे जो कुछ भी कहा है उससे मै पूरी तरह सहमत हू। दो खतरे है—एक तो यहूदी राष्ट्रवादी, जो अपनी राष्ट्रीयता की धुन मे आजकल की उस विचारधारा को भूल जाते है, जो राष्ट्रवाद से ऊची है

पहुच जायगा और वाद में अखबारो को भेजा जायगा। मेरी कठिनाई दूर भविष्य के वारे मे नही है। मै तो सदा वर्तमान पर ही पूरा ध्यान लगा सकता हू और उसीकी मुझे कभी-कभी चिन्ता होती है। अगर वर्तमान को सभाल लिया जाय तो भविष्य अपने-आप सभल जायगा। लेकिन मुझे आगे की वात नही सोचनी चाहिए।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य सचमुच अच्छा रह रहा होगा। सस्नेह,

बापू

मेरे और जेकिस के वीच का पत्र-व्यवहार तुम देख लेना। मुझे भी कानूनी कार्रवाई से घृणा है। परन्तु यह मामला मुझे ऐसा लगता है, जिसमे कार्रवाई जरूरी है।

१५६. क्रिस्तियान तोल्ले की ओर से

लन्दन
२७ अगस्त १९३६

प्रिय श्री नेहरू,

आपकी पुत्री इन्दिरा कल हमारे यहा दोपहर का खाना खाने आई थी। दुर्भाग्यवश मिस्टर तोल्ले नही आ सके। उन्हे अमेरीका का वीसा लेने की कोशिश मे अमरीकी कौसल के पास जाना था, जिसमे उन्हे कुछ अडचने पड रही है। इन्दिरा से न मिल सकने के कारण उन्हे बडी निराशा हुई।

मै आपको यह वताना चाहती हू कि इन्दिरा से मिलकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। यही नही कि वह इतनी खूवसूरत ह, बल्कि इतनी पवित्र है कि सभी लोग उसके साथ प्रसन्नता का अनुभव करने लगते है और लोगो के मन मे कोई विरोधी भावना उत्पन्न नही हो पाती। मुझे तो वह एक छोटे-से फूल जैसी लगी जिसे हवा बडी आसानी से उडा ले जा सकती है, लेकिन मै समझती हू कि उसे उस हवा का डर नही है।

मैने अभी-अभी आपके जीवन-चरित को बडी रुचि और गहरी सहानुभूति के साथ पढना शुरू किया है।

शुभ कामनाओ और आदरसहित, सप्रेम आपकी,

क्रिस्तियान तोल्ले

हार्दिक शुभकामनाए,

सदा आपका, **अर्न्स्ट तोल्ले**

१५७. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव

२८ अगस्त १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

कल की मेरी बातचीत ने मुझे विचार मे डाल दिया है। क्या कारण है कि पूरी इच्छा होते हुए भी मै उस चीज को नही समझ सकता, जो तुम्हारे लिए इतनी स्पष्ट है ? जहातक मै जानता हू मुझे बौद्धिक ह्रास का मर्ज नही लगा है। तो फिर तुम्हे कम-से-कम मुझे यह समझाने पर कि तुम चाहते क्या हो, पूरा दिल क्यो न लगा देना चाहिए ? सभव है, मै तुमसे सहमत न होऊ। मगर मेरी स्थिति तो ऐसा कहने की होनी चाहिए। कल की बात-चीत से इसपर प्रकाश नही पडता कि तुम्हारे जी मे क्या है। और शायद जो बात मेरे लिए सही है वही और भी कुछ लोगो के लिए हो। मै इसी समय इस चीज की चर्चा राजाजी से कर रहा हू। तुम भी समय निकाल सको तो मै चाहूगा कि अपने कार्यक्रम की चर्चा उनसे कर लो। मेरे पास समय नही है, इसलिए विस्तार से नही लिखूगा। तुम जानते हो मेरा क्या मतलब है।

सस्नेह,

बापू

१५८. एडवर्ड टामसन की ओर से

होटल सेसिल, दिल्ली

२६ अक्तूबर १९३६

प्रिय नेहरू,

क्योकि सरकार (जिसका राजद्रोह का स्तर इस देश मे बड़ा नीचा है) मेरे पत्र-व्यवहार मे दिलचस्पी लेती मालूम पडती है, मेरा खयाल है कि इस पत्र के आपके पास पहुचने मे काफी देर लग जायगी। इसलिए मै जल्दी लिख रहा हू।

इलाहाबाद मे मै दो-तीन दिन महा राजद्रोही समझे जानेवाले माननीय सर तेजबहादुर सप्रू के साथ बिताऊगा। मेरा खयाल है कि मै ३० अथवा ३१ अक्तूबर को इलाहाबाद पहुच जाऊगा।

क्या आप सप्रू को यह लिख देगे कि आप इलाहाबाद मे कब होगे ?

मै आज पक्के तौर पर नही कह सकता कि इलाहाबाद किस दिन पहुचूगा, क्योकि यह इस बात पर निर्भर करता है कि सप्रू को २९-३० तारीख सुविधाजनक होगी या नही। मुझे परसो तक इसका पता चल जायगा, लेकिन मेरी चिट्ठियो को एक दिन का रास्ता तय करने मे चार-पाच दिन लगते है।

मुझे विश्वास है कि जो सज्जन इस पत्र को आपके पास पहुचने से पहले ही पढेगे वह भले और मेहरबान होगे। इसलिए मुझे उम्मीद है कि वह इस चिट्ठी की नकल करके शीघ्र ही आपको भेज देगे।

आपका,
एडवर्ड टामसन

फिर से—

लन्दन के एक अखबार ने मुझसे कहा है कि मै जो भी चाहू लिखकर भेज दू। मै किसी विषय की तलाश मे था। अब मै सोचता हू कि भारत सरकार के राजद्रोह के स्तर के बारे मे एक लेख उन्हे भेज दू। अगर मै भारत की अपनी २६ साल की जानकारी के आधार पर कुछ लिखू तो वह पढने मे बड़ा बेतुका लगेगा।

१५९ एडवर्ड टामसन की ओर से

३० अक्तूबर १९३६

प्रिय नेहरू,

मै सम्भवत कल १८-३८ की गाडी से कलकत्ता जाऊगा।

मुझे मालूम होता है कि यहा इस जल्दी मे मै लिख नही सकता। कुछ लिखू तो भी वह बेमन से लिखा जायगा। लेकिन इस पत्र के साथ कुछ भेज रहा हू, जिसे भूमिका के तौर पर देने का मेरा विचार है। यह बहुत बुरा लिखा गया है, और अगर वक्त होता तो मै इससे कही अच्छा लिख सकता था। लेकिन यह जरूरी है कि इसमे जो कुछ कहा गया है, वह आप देख ले। हो सकता ह कि खुफिया इसे रोक दे।

दूसरी चीज यह कि इस पत्र के साथ मै कुछ सवाल भेज रहा हू। ये भी अच्छे ढग से नही लिखे गये, लेकिन इन्हे आपके इग्लैण्ड के दोस्त पूछना चाहेगे। अगर आपके सामने कोई भी निष्कर्ष ऐसा रक्खा जाय, जो आपको

गलत मालूम दे तो आप बेशक अपने उत्तरो मे उसका खण्डन कर दे। जसे कि कह दे कि 'स्पर्श' एक भ्रमपूर्ण अनुवाद है, या अगर कोई ऐसा सवाल हो जो मैंने नही पूछा, लेकिन जिसे आप स्पष्ट करना चाहते हो तो वह सवाल पूछ लीजिये और उसका जवाव दे दीजिये।

यह सव वहुत ही भोडा-सा लगता है। लेकिन मै एक (अनभ्यस्त और वहुत वुरा) पत्रकार हू।

मझे यह कह देना चाहिए कि कुछ समय पहले मैंने 'न्यूज क्रॉनिकल' मे लिखा था कि मेरी राय मे (१) काग्रेस आखिरकार सविधान को अमल मे लावेगी, (२) गाधी अब पहले दर्जे के सियासी नेता नही रह जायगे (अगर यह राय गलत है तो इसमे ज्यादातर उन्ही का दोष है, क्योकि उन्होने मुझे एक 'दोस्त' कहकर भी मेरे साथ न्याय नही किया), (३) काग्रेस जब सविधान पर अमल करेगी तो उसके जिस मौजूदा रूप को हम जानते है, वह जरूर ही वदल जायगा, और इसलिए वह काग्रेस के रूप मे खत्म हो जायगी।

अगर मेरी वाते विल्कुल गलत निकले तो कोई मुजायका नही। लेकिन मैंने अपनी ओर से कोई कसर नही उठा रक्खी है। कुछ चीजे तो सही निकलेगी।

हिन्दुस्तान मे जहाज से उतरने के वाद मैंने कुछ लिखा था—प्रकाशन के लिए नही—उसे साथ भेज रहा हू। उससे आपको मेरी निजी स्थिति का मोटा अन्दाज हो जायगा। मुझे डर है कि मै पूरी तरह से एक 'लिवरल' हू।

इस चिट्ठी को पढने के वाद मेहरवानी करके फाड दे। यह पुरानी पड गई है। यह मुझे भ्रातियो से भरी हुई दिखाई देती है।

आपका,

एडवर्ड टामसन

फिर से—

अगर आप अपने उत्तरो पर नम्बर डाल देगे तो मुझे पता लग जायगा कि उनका आशय किससे है। कृपया विश्वास रक्खे कि मै जरूरी तौर पर हिन्दुस्तान की आजादी का एक दोस्त हू और अगर एक वार मेरा मन आश्वस्त

हो जाय तो फिर मेरी दृढता पर भरोसा किया जा सकता है। अगर मै असहमत होऊ तो मै ऐसा नही कर सकता, न वैसा करने का ढोग ही करूगा।

१६० एडवर्ड टामसन की ओर से

१६ सदर स्ट्रीट, कलकत्ता
१ नवम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

ये पुस्तके पाकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई।

लेकिन आपने उनपर मेरा नाम नही लिखा।

मैंने आपसे पूछा था कि क्या आप मेरी कोई रचना लेना पसन्द करेंगे। आपने कहा—नही। बडे दु ख की बात है, शायद इसलिए कि मेरा मैसोपोटामियन-युद्ध पर लिखा उपन्यास और कुछ भले ही न हो, पठनीय तो है ही।

मै गाधी के बारे मे और कुछ न कहूगा, सिवा इसके कि अगर वह कोई नया सदेश नही खोज पाते तो सविनय अवज्ञा के पार पडते-पडते नाकामयाब हो जाने पर वह अब से आगे एक खतरा उठायेंगे। वह खतरा यह है कि वह एक शक्तिशाली गणपति मात्र रह जायगे, जो अपने गणो को जगाने की ताकत तो रखता है, लेकिन उसके पास ऐसा कोई प्रयोजन नही है, जिसकी ओर वह उन्हे ले जा सके। मुझे नही लगता कि वह राजाओ के लोकापवाद को महसूस करते है। मै कहू, राजा लोग आपकी बडी बुराइयो मे से एक है। वह (गाधी) एक रुढिवादी है।

अगर मै आपसे मिल लिया होता तो 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखे मेरे दो लेख कुछ और ही तरह से लिखे गये होते। तब भी मेरा खयाल है कि सिर्फ काग्रेसजनो से मिलने-जुलने से काग्रेस की ताकत को बहुत ज्यादा समझ लेना सभव है। कम-से-कम मुझे यह लगा कि जवान शेरो के विरुद्ध, जो कल मुझे घेरे रहे, इस आरोप का यह एक मुनासिब बचाव हो सकता है कि मै सिर्फ 'लिबरलो' से मिला हू।

सौ बातो की एक बात आज यह दिखाई देती है—(१) जो शक्तिया शासन करती है, वे शासित शक्तियो से कही अधिक बढकर होती है। (२) निष्ठुरता का स्तर बेहद ऊचा होगया है। जब मैंने कहा कि आपके

दावपेच मुझे वुरे मालूम होते है, तब मै आपके विरुद्ध (और हर जगह सब प्रकार की स्वतत्रता के विरुद्ध) ताकतो के वहुत ही निष्ठुर होने की बात सोच रहा था, और अब उनकी मजबूत मोर्चेबदी की वात सोच रहा हू। मुझे घटनाओ की चीड-फाड करने अथवा जो हुआ उसकी जिम्मेदारी दूसरो के सिर थोपने मे तनिक भी दिलचस्पी नही है, लेकिन जैसाकि प्राय रोज दैनिक पत्र से पता लगता है, अपने-आपको मूर्ख वनाये रखने मे मुझे कोई तुक नहीं दिखाई देती। ये लोग नही चाहते कि कोई उन्हे दवोच सके।

आपका,

एडवर्ड टामसन

१६१. एडवर्ड टामसन की ओर से

स्कारटॉप, बोर्स हिल,

ऑक्सफोर्ड

२४ नवम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

वहुत-वहुत धन्यवाद। आपने समय निकालकर वड़ी मेहरवानी की।

अव मे वूढा हो चला हू और हिंदुस्तान की तथा पश्चिम की सभी वातो से वहुत निराश और हताश होकर अपने थोड़े-वहुत वचे समय को अपने ही देश के मामलो मे लगाना चाहता हू। मुझे जो सत्य और शिष्ट लगा उसे वढावा देने के प्रयत्न मे २६ वर्ष वरवाद करने के वाद अव मै यह जान गया हू कि कोई भी अग्रेज हिन्दुस्तान के वारे मे परेशान होता है तो वह मूर्ख है। यही फैसला हिन्दुस्तानियो का भी है और निस्सदेह वे ठीक है। मै यह देखता हू, यद्यपि कुछ आश्चर्य के साथ, कि आपके देशवासी जिन विदेशियो को पसद करते है और जिन्हे वे अपना साथी मानते है, वे सौभाग्यशाली लोग है, जो हर भारतीय चीज को सुनहरे रूप मे देखते है। मानना चाहिए कि हर देश के लोग अपने कर्तव्य को अच्छी तरह से जानते है और यदि आपके देशवासी इन मूर्तिपूजको की नितान्त निष्क्रियता को नही देख सकते तो मुझे इस नतीजे पर आना होगा कि उनकी क्रियाशीलता किसी ऐसे रूप मे है, जिसे मेरी

आखे नही देख पाती। मेरा खयाल है कि भावुक लोगो तथा आलोचना करनेवाले उत्साही आदमियो की महान सेना ने हिन्दुस्तान को मूर्खता के लवादे मे लिपटा (अगर आप इसे देख सके तो) एक दुस्वप्न बना दिया है। और २६ साल तक मैने ऐसे अग्रेज, यूरोपियन तथा अमरीकी पुरुषो (और स्त्रियो—नेहरू, ढेरो मूर्ख स्त्रियो) का असीम जलूस देखा है, जिनके दिमाग इतने दो कौडी के है कि हिन्दुस्तान से बाहर कोई भी उनकी राय पर पाच मिनट भी बरबाद न करेगा। फिर भी हिन्दुस्तान के साथ अपनेको नत्थी करके वे एक बनावटी महत्व के रोमाच और उसके लगातार शोर-शराबे मे रहते है। हिंदुस्तान ही एक ऐसा विषय है, जो मूर्खो को हिंदुस्तान मे अखबारो के पहले पृष्ठ की खबरो मे जगह पाने का आधार दे देता है। इतना ही नही, बल्कि दुनिया मे भी उन्हे कुछ हद तक शोहरत दिला देता है। ऐसे लोग हिन्दुस्तान के प्रेम की खातिर नही, बल्कि अपने मिथ्याभिमान के कारण आपकी ओर खिचकर आते है।

मुझे आपके लिए अफसोस है। अगर मै कह सकू तो कहूगा कि बरसो से इतनी थोडी जान-पहचान मे जितना मैने आपको पसद किया है, उतना और किसीको नही। मै अब भी सोचता हू कि अगर हम एक-दूसरे को अधिक समझ सकते और एक-दूसरे से भिन्न अपने अनुभवो को फुरसत से इकट्ठा कर सकते तो बौद्धिक रूप में हम एक-दूसरे की काफी मदद कर सकते थे। परन्तु हमे अलग रास्तो पर चलना है। 'रास्ता रास्ता है और उसका भी अत होता है।' मै अपनी जीवन-यात्रा के इस आखिरी हिस्से मे अग्रेजी कवि और उपन्यासकार के अपने अधिकारपूर्ण धधे मे जुट जाऊगा और आप अपनी जनता की मूर्खता पर अपना दिल तोडने मे सलग्न हो जायगे। मैने देखा कि भारत माता के नये मदिर की पूजा करने के लिए और हरिजनो को ट्रावनकोर द्वारा नगण्य चीजो के विशाल रूप से भेट देने के अवसर पर असामयिक जय-जयकार मे शामिल होने के लिए आपको बाध्य किया गया, तब भी आपने अपना विवेक कायम रक्खा और इसके लिए मैने आपकी सराहना की। आपने अपना आत्म-सम्मान शानदार तरीके से बचा लिया है, लेकिन

आप इस तरह कबतक बचाते रहेगे ? कोई भी शक्ति आपके चारो ओर सरकस के उत्तरोत्तर बढते घेरे को रोक नही सकती, जैसे कि महात्माजी घिरे हुए है। आपके भाग्य मे यही बदा है। पर है यह भयकर दुर्भाग्य, क्योकि जो कुछ होता है, उसपर कभी-कभी आपका कोई अधिकार नही रहता।

पडितजी, हर चीज का कारण होता है, यहातक कि अग्रेजो की तर्कहीनता का भी कारण है। साल के उन तीन दिनो मे से आज वह दिन है, जबकि श्री अरविद घोष दर्शन देते है। पाडिचेरी को, जहा बैठा मै यह पत्र लिख रहा हू, खाज हो रहा है। सौ से अधिक गधे साष्टाग प्रणाम और अर्चना करने के लिए उस व्यक्ति के सामने लाये (और सामने से ले जाये) जा रहे है, जो कहता है कि मै सर्वशक्तिमान आत्मा का अवतार हू। माता (पार्वती—और किसी-किसी भाव मे, 'इन्द्र'—मेक रिचार्ड) उनके साथ होती है। जिस देश मे इस प्रकार की ऊल-जलूल बाते होती है वहा आप क्या करेगे ? और जो बुद्धिमान समझे जाते है वे भी ऐसे मामलो मे हिस्सा लेते है ! फिर भी कभी अरविन्द बडे कुशाग्र बुद्धिवाले व्यक्ति थे और वह अदर से कभी—जैसाकि मै अच्छी तरह जानता हू, क्योकि वह मेरे साथियो मे से एक थे—एक सुन्दर, सादे और चारित्रिक ईमानदारीवाले भारतीय थे।

लेकिन शायद मुझे ऐसा नही लिखना चाहिए। हममे से हरकिसी की कोई-न-कोई अपनी विशेष असगति होती ही है। जैसेकि आपने अपनी 'विश्व-इतिहास की झलक' पुस्तक मे नेपोलियन की पूजा (जवाहरलाल नेहरु के लिए यह महान् आश्चर्य की बात है !) करके पाठक को आश्चर्य मे डाल दिया है, इसी प्रकार इस पाडिचेरी-आश्रम में हर काम इस आश्चर्यजनक विश्व के आन्तरिक सत्य तथा शक्ति से होता है। उस दशा मे मुझे आपसे क्षमा मागनी होगी।

हम अन्य विषयो पर आये। आप नेहरू लोग बहुत बातो में भाग्यशाली रहे है, सबसे ज्यादा भाग्यशाली अपनी मोहक और शानदार स्त्रियो मे। आपके इन्दिरा को लिखे पत्र बहुत सुन्दर है। यदि वह मुझे और मेरी पत्नी को मित्र समझेगी तो हमे गर्व का अनुभव होगा और वह

हमे मित्र ही पायेगी।

मै ५ दिसम्बर को बम्बई से पी एण्ड ओ 'मालोजा' से यात्रा करूगा और इसके बाद (जो ताने-बाने मैने बुने है, जिनमे मेरी दो ऐतिहासिक रचनाए भी है और जिनका पहला खाका तैयार भी हो चुका है) भारतीय मामलो से मेरा सक्रिय सम्बन्ध समाप्त होता है। मै उनके सम्बन्ध मे कुछ नही जानता, वे अरविन्द घोष के नये (और जो कभी स्पष्ट नही हुआ) विश्व-धर्म की भाति अगम्य है तथा वे निस्सदेह अपने रास्ते बढते जायगे। आपको मेरी व्यक्तिगत शुभकामनाए। आपकी यह बात ठीक है कि सभी चीजो को ऊपर से नीचे तक एक साथ नया रूप देने की आवश्यकता है। लेकिन आपके (और मेरे) देशवासियो का हर वर्ग केवल एक भाग का ही नया रूप चाहता है तथा असदिग्ध रूप से अपने विशिष्ट भाग के लिए ही लडने के लिए तैयार है।

कृपया अपनी बहन को मेरी याद दिलाइयेगा, जिनके प्रेमपूर्ण आतिथ्य को मै चिरकाल तक याद रखूगा। मेरी इच्छा है कि वह मेरी पत्नी से परिचित होती। जब आप अगली बार ऑक्सफोर्ड आयेगे तो मै आशा करता हू कि वह उनसे परिचित हो जायगी।

आपका,
एडवर्ड टामसन

१६२. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
६ दिसम्बर १९३६

प्रिय नेहरू,

आपने अच्छा किया जो पत्र लिखा। 'न्यूज क्रॉनिकल' वाला लेख हम लोगो की मुलाकात से पहले लिखा गया था। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण होते हुए भी मै समझता हू कि उसकी मुख्य बाते ठीक है। जब मै हिन्दुस्तान आया था तब मै समझता था कि यूरोप मे और मेरे देश मे भी लोकतात्रिक उद्देश्य समाप्त होता जा रहा है और हिन्दुस्तान छोडते हुए, यह समझकर मै त्रस्त हू कि हिन्दुस्तान मे भी उसका खात्मा होता जा रहा है।

जब मैने 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखा तो मेरे दिमाग मे सिर्फ आपकी

'आत्मकथा' थी। शास्त्री के प्रति आपकी सख्ती, जैसाकि आप भी शायद महसूस करते है, अधिकतर पाठको को एक बढिया किताब मे भारी कमी लगी। मै आपके प्रति हुए अन्याय के निवारण के लिए 'न्यूज क्रॉनिकल' को लिखूगा।

शास्त्री मेरे दोस्त है। इसके अलावा मै समझता हू कि राजाओ के सवाल पर, जिसे मै कसौटी मानता हू, उन्होने वडी हिम्मत दिखाई। पिछले दो साल की मेरी ऐतिहासिक खोजो ने मुझे पूरी तरह राजाओ का विरोधी वना दिया है। आप कहते है कि हिन्दुस्तान और इग्लैण्ड में आगाखा के अछूते बच जाने पर आपको आश्चर्य हुआ है। ऐसा ही मुझे भी हुआ है, लेकिन मुझे इस बात पर भी उतना ही आश्चर्य है कि राजा भी कैसे बच रहे है।

अब मै समझा कि 'न्यूज क्रॉनिकल' को लेख लिखते समय मेरा यह सोचना कि सप्रू और अम्बेडकर को किसी राष्ट्रीय मोर्चे मे खीचा जा सकता है, गलत था। सप्रू तो समाजवाद के डर (?) से गुस्से मे आ जाते है और अम्बेडकर के वर्ग के लोगो मे अभी तक देश-भक्ति विकसित नही हो सकी। उनको तो पहले एक पीढी तक सामाजिक और आर्थिक न्याय का कुछ अशो मे आनन्द लेना चाहिए।

लेकिन कृपा करके आप अपना यह विश्वास खत्म कर दीजिये कि मै हिन्दुस्तान के विरुद्ध कटुता लेकर लौटा हू, अथवा मैने अपना वक्त 'मदर इडिया' की तरह विवादग्रस्त मुद्दे खोजने मे लगाया है। मेरे वारे मे आपकी इस तरह की धारणा, मै अनुमान करता हू कि 'मॉडर्न रिव्यू' आदि पत्रो के द्वारा सुनी-सुनाई वातो पर ही वहुत-कुछ आधारित है। और आपके वारे मे मेरी जानकारी भी हाल तक मुख्यत सुनी-सुनाई वातो पर ही वहुत-कुछ आधारित थी। कुछ महत्वपूर्ण पहलुओ मे मैने आपको निश्चित रूप से गलत समझा। सभवत आपके लिए यह वहुत महत्व की वात नही कि आपने मुझे गलत समझा या नही, और यदि आप उन लोगो मे से हो, जो 'मॉडर्न रिव्यू'-ग्रुप के देश-भक्तो की वात गम्भीरतापूर्वक लेते है तो भी मै समझता हू कि इसका वहुत असर नही पडता। जो हो, मेरे पास पिछले वीस साल से प्रकाशित कृतिया है, गल-

तियो से भरपूर, लेकिन किसी भी तरह उस प्रकार के ओछेपन से मुक्त, जैसाकि आप मानते है । मै यह अच्छी तरह जानता हू कि अगर कोई थोडी आलोचना भी कर दे तो वह दुश्मन मान लिया जाता है । लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन के असली दुश्मन वे नही है, जो कभी-कभी आलोचना कर देते है, अपितु वे लोग है, जो उसपर निर्भर करते है, अर्थात् शैलेन घोष, सैयद हुसैन और रजमी जैसे लोग (वे उतने ही देशभक्त है, जितने लकडबग्घे होते है) और उनके अज्ञानी पश्चिमी प्रशसक । भले ही आप यह विश्वास न करे, लेकिन एक वक्त आयेगा जब आप यह मान लेगे कि हिन्दुस्तान को पूरी आजादी हासिल करने मे मेरी मदद देने का मौका आयेगा तो मै जरूर दूगा ।

मेरे पत्र ने स्वभावत आपको प्रभावित किया । मै मानता हू कि मेरी दिमागी और आत्मिक तथा शारीरिक थकान बहुत बढ गई है, लेकिन पत्र मे एक खास बात थी—पाडिचेरी। मै मानता हू कि अरविन्द का गोरखधधा बहुत महत्वपूर्ण बात नही है । ऐसा हो तो भी, भले ही कोई व्यक्ति बहुत-से माया-जालो को छोड चुका हो, अन्य बधन छोडने पर उसे चोट लगती है । मुझे सदा ऐसा लगा है कि वह व्यक्ति वास्तव मे बहुत अच्छे दिमाग और चरित्र का है तथा असली देशभक्त है । मै यह जानने को तैयार न था वह ऐसा मायावी है । मुझे यह जानकर दु ख हुआ कि उसका एक मुख्य सहयोगी (जिससे आश्रमवासियो ने मुझे मिलने नही दिया) अब वैसा व्यक्ति नही रहा, जैसा कि मै उसे पहचानता था, पहले अपने साथी के रूप मे, बाद मे उस आदमी के तौर पर, जिसने मेरा कालेज ही उजाड दिया (अमृतसर-काल के तुरन्त बाद ही) और जिस आदमी मे निस्स्वार्थ देशभक्ति और सादगी की एक जोत जलती थी । तीसरे, हिन्दुस्तान और इग्लैण्ड मे बडे भक्त के रूप मे एक मुसलमान विख्यात है । उस व्यक्ति की धार्मिक आस्था का मुझपर स्पष्ट रूप मे बडा प्रभाव पडा, जबकि हाल ही मे वह मुझे सुबह के सत्सग मे अपने साथ ले गया था । उस भक्त मे साम्प्रदायिकता इतनी थी कि जहा-कही वह उच्च पदासीन हुआ, हिन्दुओ के प्रति उदार न रहा। यह व्यक्ति अरविद की 'शिव' के समान और उस फ्रासीसी महिला की 'पार्वती' की

तरह पूजा करता था। मुझे लगा, जैसाकि मुझे तब लगता, अगर मै सुनता कि कैन्टरबरी के आर्चबिशप एक गुप्त थियोसोफिस्ट है। आप किसका विश्वास कर सकते है, यदि एक सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता भी इस प्रकार के पाखड को पूजने लगे ?

अगर हम फिर कभी मिले (मुझे आशा है, जरूर मिलेगे। यदि आप दुबारा ऑक्सफोर्ड आये तो क्या हमारे साथ ठहरेगे ? इसका उत्तर देने का कष्ट न उठाये, लेकिन ध्यान मे रखियेगा) तो मै आपसे यह पूछना चाहूगा कि इतनी बाते होते हुए भी आप अपनी 'आत्मकथा' मे महान दयालु बने रहे, किन्तु अपनी 'विश्व-इतिहास की झलक' मे निरतर मेरे देशवासियो के प्रति अनुदार क्यो होगये ? यह आपके महान् और उदार तरीको के अनुरूप न था। हम सब तथ्य की भूले करते है और आपकी पुस्तक तो शक्ति और वुद्धि का चमत्कार है, लेकिन यह केवल या मुख्य रूप से एक तथ्य की भूल नही है। मै तो यह समझता हू कि उसका कुछ विशेष और अस्थायी सन्दर्भ है, जैसे कि मानसिक और शारीरिक अस्वस्थता की अवस्था मे मेरी भारत के प्रति हुई हाल की प्रतिक्रियाए। मै नही कहूगा कि आप अपना समय, जिसकी बहुत ज्यादा जरूरत है, इसपर खतो-किताबत मे नष्ट करे, और फिर किसी भी मामले में चिट्ठी-पत्री हमेशा गलतफहमी पैदा करती है। लेकिन आपको उस आदमी की भाति, जो पूरी तरह से नाकामयाव साबित होगा, या उन थोडे-से लोगो मे से उस व्यक्ति की तरह, जो मानवता मे आस्था रखने के मानव-जाति के अधिकार को फिर से स्थापित करेगा, अपनी ख्याति और प्रभाव की खातिर, इस मामले मे ध्यान देना चाहिए। अपनी ही खातिर आपको इसके लिए कुछ प्रायश्चित्त करना चाहिए—मेरे लोगो की खातिर नही, क्योकि आपको जो उत्तेजना मिली, उससे उनके प्रति कोई भी अन्याय क्षम्य हो सकता है।

मेरे कहने का मतलव यह है कि मै जानता हू कि यह पत्र आपतक पहुचने से पहले जरूर ही ध्यानपूर्वक पढा जायगा। इस कारण यह बताने की कोशिश करते हुए कि आखिर असली महत्व की चीज क्या है, मुझे वहुत ही सरल और संक्षेप मे लिखना चाहिए।

मै अपने साथ किसी प्रकार की कोई भारत-विरोधी भावना नही लाया हू, लेकिन मै जानता हू कि हम हिन्दुस्तान मे हो या इग्लैण्ड में, बहुत ही निम्न कोटि के जन्तु है, और यह मेरे लिए घोर निराशा की बात है।

मै जानता हू, आपके और दूसरे राष्ट्रवादियो के दिमाग मे यह बात भरी रहती है कि किसी भी अग्रेज को, अगर वह हिन्दुस्तान का दोस्त समझा जाना चाहता है, तो कभी आलोचना नही करनी चाहिए। हमारा अपना मजदूर-दल भी (जिसका विश्वासघात, पलायन और लोकतत्र-विरोधी कठोरता का इतना निन्दनीय रिकार्ड रहा है) इसी तरह की इच्छा करता है, लेकिन मै इस कमी को पूरा नही कर सकता। अगर आप-को ऐसा लगता है कि जिस कदम को मैं गलत मानता हू उसे मुझे कभी नही कहना चाहिए तो आप मुझे अपना दुश्मन मान लीजिये।

सोलह वर्ष पहले असहयोग-आन्दोलन को मै गलत नही समझता था। नैतिक आधारो पर मै उसे पूरी तरह उचित मानता था और यह सोचता था कि अगर इसे आगे बढाया गया तो इसके सफल होने मे सदेह नही, लेकिन जब मुसलमानो और दूसरे बडे दलो ने इसका समर्थन नही किया तो इसे छोडकर दूसरी युक्तिया काम में लाई जानी चाहिए थी। इसको बेमन जारी रखने से मुसलमानो को और निहित स्वार्थो को ही बल मिला है।

गोलमेज-परिषद् के अवसर से पहले जबतक कि गाधीजी ने असगत और हठी रुख नही अपनाया, मैने उन्हे कभी गलत नही माना। शायद उन्हे आना ही नही चाहिए था, लेकिन वह आ ही गये तो उनका दूसरे हिन्दुस्तानियो को, जिनमे से बहुतो ने अपने विचारो के लिए भारी कीमत चुकाई थी, अपने परामर्श के योग्य मानने और सामान्य प्रयत्न तथा आशा मे सलग्न मित्र स्वीकार करने से इन्कार कर देना अनौचित्य-पूर्ण था।

जो चीज (कृपया मेरी बात सुने, मै पूरी तरह या सब पहलुओ से गलत नही हू) काग्रेस को सबसे ज्यादा नुक्सान पहुचा रही है, वह है उसके द्वारा पैदा की गई यह धारणा कि वह बिलकुल प्रगति नही कर

रही है। मैं काग्रेस के आदोलन को २६ वर्ष से जानता हू और मुझे तो ऐसा लगता है कि वह अपनी रीति-नीति मे कठिनाई से और अनिच्छा-पूर्वक परिवर्तन करती है। और मुझे तो वह आज भी वैसी ही दिखाई देती है, जैसी कि विभाजन-विरोधी दिनो मे थी। और अगर गाधी वही है, जिस रूप मे वह हाल ही मे मुझे दिखाई दिये है, तो उनमे सिवा उन भावनाओ को उभारने के और कुछ कर सकने की शक्ति नही रह गई है, जिनका उपयोग या सचालन करने का उन्हे अदाज ही नही है।

जहातक आपके समाजवाद का सवाल है, मुझे इसमे कोई सदेह नही कि यदि उसे ऊपरी तौर से देखा जाय तो यह गलत चाल है। पर इस विषय मे मुझे विश्वास है कि आपकी सहज प्रवृत्ति आगे चलकर सही सिद्ध होगी। सारा आर्थिक और सामाजिक (और विशेष रूप से हिंदुस्तान में धार्मिक) ढाचा ही विकट है। मेरे लिए यह चाहना सभव नही हो सकता कि आप यहा अपना तरीका वदले, यद्यपि मै जानता हू कि उससे आपके विरोधी तत्वो को अस्थायी बल ही मिला है।

जिन तरीको को मै गलत मानता हू, वे वे ही है जो आपपर थोपे जा रहे है। मै समझता हूं, दुनिया के हालात को देखते हुए काग्रेस को सहयोग करना चाहिए और यह वचन देना चाहिए कि वह सहयोग करेगी। साथ ही काग्रेस को यह भी चाहिए कि वह सविधान की उन वातो का स्पष्ट रूप से खडन कर दे, जिनके पीछे कोई नैतिक आधार नही है और जिन्हे केवल बल पर आश्रित होने के कारण सहन किया जाता ह। जव परमात्मा अवसर देगा (जैसाकि मौजूदा घटना-चक्र देखते लगता है कि वह अवश्य देगा), तव उससे आपके हाथ बहुत मजवूत होगे। आज के दो योग्यतम राजनीतिज्ञ रूजवेल्ट और डि वेलरा है, जिन्होने नैतिक वल का ही आश्रय लिया है और केवल वही वात कही है, जोकि उन्होने कर भी दिखाई है।

आपका काम तो कई गुना मुश्किल है, क्योकि राजे-महाराजे और मुसलमान आपके विरुद्ध है, आपके विरोधी आपके वीच ही मौजूद है, पंडापन और अधविश्वास की सारी प्रतिक्रियावादी ताकतें भी है। लेकिन काग्रेस जनता को पहले भ्रम मे डालकर और फिर उतना ही समयाकुल

बनाकर अपने रास्ते को और भी कठिन बना रही है। लोग ऐसी भाषा का प्रयोग क्यो करे, जिसका वे जानते है कि एक ही चीज से वोध हो, जबकि उनके कार्य तुरन्त ही उस भाषा के विपरीत हो ? आप खुद ही अपनेको झूठा साबित कर रहे है। इसकी प्रतिक्रिया बडी भयकर और हानिप्रद होगी।

मुझे खेद है कि आप मुझे भारत का कट्टर विरोधी समझते है। मै जानता हू कि ऐसा करना आपके लिए प्राय अनिवार्य है। मेरी कटुता हिन्दुस्तान के प्रति नही है, वह तो उस मार्ग के प्रति है, जिसपर दुनिया चली है। मुझे आपके यहा के मुसलमानो और राजे-महाराजो की कठोरता की पूरी जानकारी है। इन राजा-महाराजाओ का हमारी कजरवेटिव पार्टी के साथ गठबन्धन है और ये हर सभव अस्त्र का उपयोग करके जो कुछ हथिया सकते है, हथिया लेगे। काग्रेस, जिसका ऐसे निर्दयी शत्रुओ से मुकाबला है, (१) या तो स्वय सत्तारूढ होने से इन्कार करके इनको राजकाज मे प्रमुख स्थान ले लेने देगी, (२) या उन्हे ऐसा बहाना देगी, जिसका वे बाह्य तत्वो के साथ अपने गठ-बधन को मजबूत करने मे तत्काल इस्तेमाल करेगे। वे पद-ग्रहण तो करेगे, लेकिन उन्हे नष्ट ही करने के लिए।

नही, आप अपनी स्थिति को इतना स्पष्ट कर दीजिये कि किसी भी सदेह की गुजाइश न रहे और दुनिया आपकी बात सुने और समझे। यह कोई ३० वर्ष पुराने असहयोग-आन्दोलन की पुनरावृत्ति नही है। तब तो आप जहा भी सत्तारूढ हो सकते हो, और शासन तथा विधान-सभा मे जो भला आप कर सके, करे। आप अपने हर अधिकार की माग कीजिये और किसी भी स्वत्व को हाथ से न जाने दीजिये। आपको तो सबसे पहले ही मौके पर यह कह देना चाहिए कि आप और भी आगे बढनेवाले है।

इसी तरह से आप मुसलमानो को ज्यादा-से-ज्यादा अनुभव करा सकेगे कि उनका भविष्य हिन्दुस्तान के साथ है, इग्लैण्ड के टोरियो के साथ नही। आप राष्ट्रीय आन्दोलन को मुख्यत एक हिन्दू-आन्दोलन नही बनावेगे, लेकिन (जैसा मुझे खेद है) आज वह है, बल्कि एक

भारतीय आन्दोलन का रूप देगे।

मुझे विश्वास है कि ध्येय पीछे रह गया है। इस अवस्था मे अन्यथा कहने मे ईमानदारी नही होगी।

इस पत्र का उत्तर न दीजिये। फिलहाल केवल अपनी इस धारणा को दबाये रखिय कि मै हिन्दुस्तान के प्रति कटुता रखता हू।

भवदीय,

ए. टामसन

१६३. रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शांतिनिकेतन, बंगाल

२१ दिसम्बर १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

इदिरा ने अपने पत्र मे जिस स्नेह से मेरा उल्लेख किया है उसने सचमुच मेरे मर्म का स्पर्श किया है। वह बडी मनमोहक बालिका ह, जो अपने शिक्षको और सहपाठियो के मन मे बडी सुखद स्मृति छोड गई है। उसमे तुम्हारे चरित्र की दृढता भी है और तुम्हारे विचार भी। और मुझे इस बात से आश्चर्य नही हुआ कि आत्मसतुष्ट अग्रेज-समाज से वह अपनेको पृथक् पाती है। उसे आगे जब पत्र लिखो तो कृपया मेरा आशीर्वाद भी भेजना।

हम लोग अपने वार्षिक समारोह मे घिरे है, और मुझे भय है कि भीडभाड़ और हलचल का मेरी शारीरिक शक्ति पर बडा भारी श्रम पडता है। लेकिन मै अपने भाग्य की तुलना तुम्हारे भाग्य से करने मे बुद्धिमत्तापूर्वक अपनेको बचाता हू।

स्नेहपूर्ण आशीर्वादसहित,

तुम्हारा,

रवीन्द्रनाथ टैगोर

पडित जवाहरलाल नेहरू,
काग्रेस-शिविर,
फैजपुर।

१६४. महात्मा गाधी की ओर से

२८ दिसम्वर १९३६

प्रिय जवाहरलाल,

जैसी मुझे आशा ह, तुम आज खत्म कर लो तो शायद मुझे कल दोपहर के वाद चला जाने दोगे।

यदि आयदा काग्रेस-अधिवेशन गावो मे करने के वारे मे मेरा मुझाव तुम्हे पसन्द आ गया हो तो मै चाहूगा कि तुम काग्रेस से फरवरी और मार्च के बीच मे अधिवेशन करने के पुराने नियम को फिर से चालू कर देने के लिए कहो। सभव हो तो हजारो को जाडे के मौसम के कष्टो से बचाना चाहिए। ससदीय लोगो को इस व्यवस्था के अनुकूल वन जाना चाहिए। अगर विधान-मडलो मे काग्रेस को वहुमत प्राप्त हो जाय तो कोई कारण नही कि वडे दिन, ईस्टर आदि की तरह उन्हे छुट्टी क्यो नही रखनी चाहिए। मैने सरूप से कहा है कि कमला-स्मारक के लिए कही-न-कही जल्दी ही जमीन जुटा लेनी चाहिए और फिर उसके लिए घर-घर चदा इकट्ठा करने का काम शुरू कर देना चाहिए।

सस्नेह,

बापू

१६५. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड,

३ जनवरी १९३७

प्रिय नेहरू,

इस ढग से यह इटरव्यू प्रकाशित हुआ है। इसके बेहूदा शीर्षको, मोटे टाइपो आदि के लिए मै जिम्मेवार नही हू। मेरी प्रारभिक टिप्पणी ही गायब होगई, जिसका मुझे दु ख है। उस टिप्पणी से पता लग जाता कि मै आपका कितना ध्यान रखता हू और आपके प्रति मेरे कितने ऊचे विचार है। लेकिन सचाई यह है कि हमारी सभ्यता आज छिछोरेपन पर आधारित है तथा हर चीज सनसनीखेज बनाई जाती है। सिनेमा तथा सब तरफ व्याप्त नारी-आदोलन ने हम सबको खत्म कर डाला है। यह युग पूरी हद तक भ्रष्ट होगया है।

मुझे यह भी भय है कि हमारे सिरो पर अपनी स्वय की विपदाओ की काली घटाए तो मडरा ही रही है, हिदुस्तान भी हमारे हितो से बहुत दूर पड़ गया ।

एक लेख जो आपको पसद आता और जिससे आप मुख्यत सहमत होते, कई हफ्ते से रुका पड़ा है, क्योकि पहले तो श्रीमती सिम्सन ही खबरो म चढी रही और शायद फिर (मेरा अनुमान है) किसी फिल्मी सितारे का किसी दूसरे फिल्मी सितारे से 'रोमास' चला । मुझे खेद है । मेरे लिए यह एक सबक होगा । दुबारा कभी भी किसी लोकप्रिय पत्र के लिए लिखने मे मै अपना समय बरबाद नही करूगा । आप इनका विश्वास नही कर सकते ।

अभी हाल मे एक लडकी (पेट्रीसिया ऐग्न्यू) हमारे साथ ठहरी हुई थी, जो आपकी लड़की की बडी उत्साही दोस्त है । वह उसके बारे मे लगातार बाते करती रही । वे दोनो स्कूल मे साथ-साथ थी ।

१९३७ के वर्ष के लिए शुभकामनाए ।

आपका,
एडवर्ड टामसन

न्यूज क्रॉनिकल

२ जनवरी १९३७

सुधारों के श्रीगणेश के साथ हिंदुस्तान मे खतरा

नेहरू की 'न्यूज क्रॉनिकल' को मुलाकात

नये साल ने हिदुस्तान को दुनिया के मच के बीचोबीच फिर ला खडा किया है । अगले महीने नये सविधान के अनुसार काम करनेवाले विधान-मडलो के लिए प्रथम चुनाव होनेवाले है और १ अप्रैल से प्रातीय स्वायत्त शासन अमल मे आ जायगा ।

राष्ट्रवादियो अथवा होमरूलरो की गैर-सरकारी 'ससद' हिदुस्तान की राष्ट्रीय काग्रेस ने सविधान को अस्वीकार करने तथा उसके मार्ग मे अड़चन डालने की कोशिश करने का फैसला किया है ।

रो और केम्ब्रिज मे शिक्षित तथा कुछ ही दिन पहले तीसरी बार

काग्रेस के अध्यक्ष चुने गए जवाहरलाल नेहरू इस विरोधी दल के नेता है।

हिदुस्तानी मामलो के सुप्रसिद्ध विशेपज्ञ एडवर्ड टामसन द्वारा 'न्यूज क्रॉनिकल' के लिए एक विशेप मुलाकात मे नेहरू ने घोपणा की कि "सविधान नाकामयाव होकर रहेगा" तथा "ब्रिटिश फौज को जाना ही होगा।"

"हमे छोड़ देना होगा"

लेखक

एडवर्ड टामसन

नेहरू के चरित्र के मेरे अध्ययन से मुझे लगा कि उनकी रुचि ृख्य रूप से हिदुस्तान को साम्राज्य से 'स्वतन्त्र' कराने मे नही है।

अगर उन्हे यह विश्वास हो जाय कि साम्राज्य वास्तव मे बरावरी के राष्ट्रो का एक परिवार है, जिसके अलग-अलग सदस्य को अपने विचारो को रखने का पूरा अवसर हो तो वह इस वात पर राजी हो जायगे कि हिदुस्तान इन राष्ट्रो मे से एक रहे।

लेकिन उनका खयाल है कि निहित स्वार्थो ने हमारा गला दवाया हुआ है और हमारे अपने दकियानूसीपन और बुद्धिहीनता से हिदुस्तान की गुलामी मे रही-सही कसर भी पूरी हुई है, इसलिए हिदुस्तान के लिए उस समय तक कोई आजादी नही हो सकती जवतक कि वह हमसे सभी सम्बन्ध-विच्छेद न कर ले।

मै यहा प्रश्नोत्तर रूप मे नेहरू से हुई अपनी बातचीत दे रहा हू।

प्रश्न : कहा जाता है कि आपने कहा है कि हिदुस्तान नये सविधान को 'छुयेगा' ही नही, इससे आपका क्या तात्पर्य है?

उत्तर नये सविधान को न छूने का कोई सवाल ही नही है, क्योकि हमारा चुनाव लडना जाहिर करता है कि हम उसके छूने मे आते जा रहे है। जो कुछ मतलब है वह यह है कि हम इस सविधान को सहयोग की भावना से नही ले रहे है। वह हमारी मर्जी के खिलाफ हमपर लाद दिया गया है। हम इसे बिल्कुल नही चाहते है और हम उसका अमल मुश्किल-से-मुश्किल कर देना चाहते है। उसका सघीय भाग तो भयकर है।

प्रश्न : फिर भी हिंदुस्तान की भीषण गरीबी के होते हुए, क्या यह बेहतर न होगा कि संविधान को हिंदुस्तानियों को कष्ट से छुटकारा पाने के किसी अवसर के साधन के रूप मे इस्तैमाल किया जाय ?

बड़ी समस्याएं

उत्तर : सविधान नाकामयाब होना ही है, क्योकि वह हिंदुस्तान की किसी बडी समस्या को हल नही कर सकता। भूमि, गरीबी और बेकारी की समस्याओ का हल होना जरूरी है।

हमारा खयाल है कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अन्तर्गत कोई उचित हल नही निकल सकता।

हमने सविधान-सभा के जरिये हल की ओर इशारा भी किया है।

प्रश्न : कांग्रेस की मेरी आलोचना यह है कि उसे यह याद रखने का साहस नहीं कि ऐसे लोग भी है जो रजवाड़ो की प्रजा है और उनके अधिकारो की बात भी होनी चाहिए। आप क्या सोचते हैं ?

उत्तर : काग्रेस रजवाडो की रियाया को नजरदाज नही करती, हालाकि उसकी हलचले ज्यादातर ब्रिटिश हिंदुस्तान मे ही केन्द्रित रही है। वह जैसी दूसरो के लिए वैसे ही रियासतो की रियाया के लिए भी एक-सी राजनैतिक, सामाजिक और नागरिक तथा दूसरी तरह की आजादियो के हक मे है।

देसी रियासतो के लिए वह बहुत नही कर पाई है, क्योकि दूसरी जगह उसके हाथ घिरे हुए थे और उसके ज्यादातर नेता अपना बोझ और ज्यादा बढाना नही चाहते थे।

कोई तानाशाही नहीं

लेकिन उसूलन यह माना जा चुका है और उसकी घोषणा भी कर दी गई है।

प्रश्न : क्या वास्तविक 'डोमिनियन स्टेटस' स्वाधीनता के समान ही अच्छा न होगा ?

उत्तर मै हिंदुस्तान के लिए साम्राज्य मे रहते हुए किसी सच्ची आजादी की बात नही सोच सकता हू, यहातक कि ब्रिटेन की दूसरी डोमीनियन के बराबर भी नही। दोनो मे कोई समानता नही है। मै एक

ऐसे आज़ाद हिन्दुस्तान की बात सोच सकता हू, जो ब्रिटेन के साथ किसी दोस्ताना समझौते पर पहुच सके ।

प्रश्न : क्या आप यह पसंद करेंगे कि हिंदुस्तान ऐसी तानाशाही के नीचे चला जाय, जैसाकि आज हम फॉसिस्ट देशो में देखते है ?

उत्तर . मै इस विचार के पूरी तरह खिलाफ हू, खासकर किसी एक आदमी की तानाशाही के । तो भी, मै यह तो सोच सकता हू कि गभीर सकट के वक्त मे, आमतौर से एक सैनिक सकट मे, चन्द अदमियो की तानाशाही का साधन जरूरी हो सकता है ।

लेकिन यह मामूली हालत मे नही रहनी चाहिए ।

प्रश्न : क्या हिंदुस्तान की एकता अधिकतर बनावटी और हाल की चीज नही है ? क्या यह बेहतर न होगा कि हिंदुस्तान को जाति और भाषा के आधार पर अलग-अलग राष्ट्रो में बांट दिया जाय ?

उत्तर . मेरे विचार से अगर हिदुस्तान के इस रूप मे टुकडे हुए तो वह बदकिस्मती की बात होगी । हिदुस्तान की एकता न सिर्फ वाजिब है, बल्कि बहुत जरूरी भी है । मुझे शक है कि हिंदुस्तान मे ऐसा कोई अक्लसन्द आदमी होगा, जो इस बारे मे जुदे ढग से सोचता हो ।

तो भी यह एकता किसीको दबानेवाली नही होनी चाहिए, बल्कि उससे सास्कृतिक तथा अन्य भिन्नताओ को पूरी आजादी होनी चाहिए ।

प्रश्न : हिदुस्तान की गरीबी हर नये आनेवाले को बेचैन कर देती है। आप इससे कैसे निपटेंगे ?

उत्तर मुझे ऐसा लगता है कि हिदुस्तान की बडी-बडी समस्याओ को हल करने का एक ही रास्ता है कि हिदुस्तान की अर्थ-व्यवस्था को एक सुनियोजित ढग से बनाया जाय, जिसमे यहा की भूमि, छोटे-बडे उद्योग, सामाजिक सेवाए वगैरा आ जाय ।

'कोई निहित स्वार्थ नही'

यह प्रणाली तभी चल सकती है जब बडे-बडे निहित स्वार्थों की शक्ल मे जो अडचने है वे दूर कर दी जाय । इसलिए यह जरूरी हो जाता है कि ऐसी ज्यादातर अडचने दूर हो ।

प्रश्न : अंग्रेज ही आपकी अकेली कठिनाई नहीं है । क्या आप नहीं

सोचते कि हिंदुस्तान और उसकी आजादी के बीच उसके साम्प्रदायिक झगड़े और राजे-महाराजे अड़े हुए है ?

उत्तर : मै नही समझता कि जब आर्थिक सवालो पर सोचा जा रहा हो तो फिरकेवारान मसला थोडी-सी भी कठिनाई पेश करेगा । जहातक हिदुस्तानी राजा-महाराजो की बात है, यह सोचना बेहूदगी होगी कि ब्रिटिश हुकूमत के नुमाइदो के साथ सौ बरस पहले हुई किसी सधि की वजह से वे अपने सामन्ती और मनमाने तरीको को अपनाये जायगे । आखिर मे तो देसी रियासतो के लोगो को ही यह तय करना होगा कि राजाओ की स्थिति क्या रहे ।

प्रश्न : जहांतक फौज का सवाल है, कुछ सूबे एक भी आदमी नहीं भेजते और दूसरे सैकड़ों भेजते है । ज्यादातर फौजी दो सूबों से ही आते है । क्या आप समझते है कि आपके यहां कभी भी एक लोकतंत्रीय सरकार हो सकेगी, जबकि हिंदुस्तान के एक क्षेत्र के हाथ में हथियार होगे और दूसरों के लिए वह जोखम उठायेगे ?

उत्तर . फौज का सवाल कोई मुश्किल कठिनाई पैदा नही करता । फौज और एक तरह की मिलीशिया पूरे हिदुस्तान मे भरती करनी होगी, और यह सोचने की भी कोई वजह नही कि मौजूदा हिदुस्तानी फौज नये निजाम के तई वफादार नही रहेगी ।

हा, ब्रिटिश फौज को चला जाना पड़ेगा ।

१६६ वी. गल्लेन्ट्स की ओर से

लदंन

८ फरवरी १९३७

प्रिय नेहरू,

अलबर्ट हॉलवाली रैली के लिए आपने जो सदेश भेजा है, उसके लिए बहुत-बहुत हार्दिक धन्यवाद । मैने यह घोषित नही किया है कि यह सदेश कहा से आया है, लेकिन जैसे ही 'भारत की जनता' शब्द पढ़े गए वैसे ही तालिया गडगडा उठी । तार के अन्त मे आपका नाम पढने से पहले एक बार फिर ऐसा ही हुआ और जब मैने आपका नाम पढ़ा तब तो तालियो का ठिकाना ही नही रहा । हर्ष के इस प्रदर्शन ने इस बात को

विना किसी सदेह के प्रमाणित कर दिया कि दर्शको मे से प्रत्येक व्यक्ति आपकी अपील को स्वीकार कर रहा था।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूरी-की-पूरी सभा आश्चर्य-जनक रूप से सफल रही और हमे विश्वास है कि इसकी वहुत ही महत्व-पूर्ण राजनैतिक प्रतिक्रिया होगी।

हार्दिक धन्यवाद और समस्त मगलकामनाओ सहित,

आपका,

पडित जवाहरलाल नेहरू — वी. गल्लेन्ट्स

स्वराज्य भवन,

इलाहावाद, यू पी

१६७ सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

३ एल्म कोर्ट
टेम्पिल ई. सी. ४
३ मार्च १९३७

प्रिय नेहरू,

इतना लम्बा और रोचक पत्र लिखने के लिए समय निकालकर आपने वडी कृपा की। इसे हम 'ट्रिब्यून' मे छापेगे, क्योकि यह जानकारी से भरा हुआ है और इसमे विजय की वह भावना है, जिसकी हमारे देश के लोगो को इस समय बडी जरूरत है।

हमारी एकता का आन्दोलन आगे बढने लगा है, यद्यपि मजदूर सघर्षो और दल के अधिकारी-वर्ग की ओर से इसका वडा कडा विरोध हो रहा है। इससे वहुत अधिक मात्रा मे राजनतिक रुचि और भावना जागृत करने मे सफलता मिल चुकी है और अवतक इससे भलाई-ही-भलाई हुई है।

हिंदुस्तान के लोगो मे जो शानदार उत्साह है, उससे मुझे ईर्ष्या होती है। मै चाहता हू कि ऐसा ही आन्दोलन हमारे यहा भी चले, लेकिन शायद हम लोगो मे छल-कपट वहुत है और हमे अपने प्रजातत्र मे अत्य-धिक अधिकार प्राप्त है। आपने जो महान विजय पाई है, उसके लिए म आपको और काग्रेस को अपनी हार्दिक बधाई भेजना चाहता हू। हम आपके कन्वेन्शन के निर्णय की बडी रुचि के साथ प्रतीक्षा करेगे और यह

भी जानना चाहेगे कि इडियन ऐक्ट को काम मे लाने के बारे मे आप क्या रुख अपनाते है।

मुझे निश्चय है कि आप हर प्रकार के साम्राज्यवाद के प्रति और उनके अनेक फासिस्ट तरीको के प्रति भी, जो आज हिन्दुस्तान मे अमल मे लाये जा रहे है, कडे-से-कडे विरोध की भावना बनाये रखेगे। मुझे भय है कि यहा हम आपकी बहुत ही कम सहायता कर सकते है, क्योकि अभी तक हमारा दल साम्राज्यवादी स्थिति के झझटो को नही समझ सका है। फिर भी हम यहा के लोगो मे जानकारी फैलाने की भरपूर चेष्टा कर रहे है और यह भी समझाने की चेष्टा कर रहे है कि शाही मामलो मे ऐसे आन्दोलन के प्रति क्या-क्या जिम्मेदारिया होती है।

मै समझता हू, यह एक महत्व की बात होगी कि हम 'ट्रिब्यून' मे अधिक-से-अधिक भारतीय समाचार छापे, इसलिए यदि समय-समय पर आप हमे कोई पत्र या छोटे लेख भेज सके तो वह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा, हालाकि मै जानता हू कि आप कितने व्यस्त है।

शुभकामना-सहित,

आपका,

स्टैफ़र्ड क्रिप्स

१६८. लार्ड लोथियन की ओर से

सेमूर हाउस,
१७, वाटरलू प्लेस, एस. डब्ल्यू १
४ मार्च १९३७

निजी

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

मै भारतीय चुनावो के क्रम को इतनी बारीकी से देखता रहा हूं जितनी कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे इस समय मुख्य रूप से व्यस्त इस देश मे रहकर सम्भव है। मुझे खुशी है कि काग्रेस को छ सूबो मे बहुमत प्राप्त है अथवा उसके और सब पार्टियो से अधिक सदस्य चुने गये है। वह प्रथम बार सबसे अधिक सक्रिय और अनुशासित राष्ट्रीय शक्ति को हिन्दुस्तान मे एक दायित्वपूर्ण और हकूमत के पद पर आसीन करेगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिन सूबो मे काग्रेस को वहुमत प्राप्त है, वहा वह पद-ग्रहण करना और जिम्मेदारी लेना स्वीकार करेगी । मै जानता हू, इस वारे मे आपकी राय भिन्न होगी और आपकी वह राय न सिर्फ सविधान मे सुरक्षित ब्रिटिश हकूमत के अधिकारो पर आधारित है, वल्कि इस तथ्य पर भी कि केन्द्रीय असेम्वली मे सम्पतिशालियो का ही वहुमत होनेवाला है । मै अपनी वात पर दो कारणो से ज़ोर देता हू । प्रथम ो इतिहास मे एक वार भी ऐसी मिसाल नही मिलती, जवकि उत्तरदायी सरकार का सिद्धान्त उस असेम्वली मे लागू किया गया हो, जहा-पर कि बहुमत सरकार की पूरी जिम्मेदारी उठाने मे समर्थ न हो, भले ही सविधान मे कितनी ही सुरक्षा वरती गई ो । पार्लमेट का इरादा था कि सूवाई अधिकारो के क्षेत्र के अन्तर्गत सूवो मे पूरी जिम्मेदार सरकारे वनाई जाय । जवतक कोई मत्रिमडल ऐसी नीति न अपनाये, जिससे जनमत की भारी अवहेलना होती हो, कोई भी गवर्नर जनता के प्रतिनिधियो की इच्छा का विरोध तबतक नही कर सकता जवतक कि वे प्रतिनिधि अपनी नीति के परिणामो की पूरी जिम्मेदारी खुद उठाने को तैयार हो । इसलिए मेरा विश्वास है कि हकूमत के काफी मामलो मे काग्रेस पूरी जिम्मेदारी उठाने की स्थिति मे है और वह उस अनुभव को प्राप्त करने लायक भी है, जो सरकार की जिम्मेदारी उठाने पर ही मिल सकेगा । और फिर जब वह शासन करने की अपनी योग्यता सिद्ध कर चुकेगी तब वह सविधान एव सघीय मामलो पर बातचीत करने के लिए अधिक मजबूत स्थिति मे होगी, यही तो ब्रिटेन और उसके बीच झगडे की जड है ।

दूसरा कारण यह है कि मेरा विश्वास है, हिदुस्तान का सबसे महत्वपूर्ण और एकमात्र हित अपनी असीम एकता कायम रखने मे है और जो सघीय सविधान मे समाविष्ट है । जब आप अकथनीय दुर्भाग्यो और निस्सीम निराशा मे लिप्त, अपनी समस्याओ को हल करने मे नितान्त असमर्थ यूरोप को देखते है जिसकी यह स्थिति उसके २६ सर्व-प्रभुत्व-सत्ता-सम्पन्न राज्यो मे वट जाने के कारण हुई है तब पता चलता है कि पूरे देश मे सरकार की स्थापना के ढाचे को शुरू करनेवाले हिदुस्तान को कितना अच्छा सुअवसर मिला ह । एक समय था जब ब्रिटेन भारत मे चीन

की तरह मचू अथवा रूस मे जार की तरह से देश की एकता को निरकुश साधनो द्वारा कायम रख सकता था। वे दिन गये। कोई शक नही कि आप उस सविधान के अन्तर्गत मताधिकार एक भिन्न तरीके से चाहेगे, लेकिन क्या यह अधिक महत्वपूर्ण नही कि सघीय ढाचे मे रहकर सघर्ष किया जाय, बजाय इसके कि उस ढाचे को ही नष्ट कर दिया जाय और हिदुस्तान की एकता को खतरे मे डालकर यूरोप के रास्ते पर चलने की जोखिम उठाई जाय ? मेरा खयाल है कि उस रास्ते को अपनाने से आप अपने लक्ष्य पर अधिक जल्दी पहुचेगे और किसी अन्य मार्ग के अपनाने की अपेक्षा हिदुस्तानी जनता को अधिक लाभ पहुचा सकेगे।

आखिरी बात यह कि मै समझता हू कि गवर्नरो से यह वादा लेना कि वे सुरक्षित अधिकारो का उपयोग न करेगे, ठीक रास्ता नही है। वे यह वचन नही देगे और वचन मागने का मतलब होगा अवास्तविकताओ पर लडाई लडना। खास चीज तो यह है कि जिम्मेदारी ले ली जाय और तब उस जिम्मेदारी के अपनाने पर आग्रह किया जाय कि जिम्मेदारी मे हस्तक्षेप न हो, क्योकि आप अपनी नीति की जिम्मेदारी लेने को राजी है।

मुझे यकीन है कि एक साल पहले हुई दोस्ताना बातचीत को ध्यान मे रखकर इस पत्र को लिखने के लिए आप क्षमा करेगे। यह पत्र आपके तथा हिदुस्तान दोनो के प्रति शुभेच्छा से प्रेरित होकर तथा इस विश्वास से लिखा गया है कि सविधान ने अधिकतर मताधिकार के कारण हिदुस्तानियो के हाथ मे शक्ति की एक ऐसी कुजी दे दी है, जिससे वे यद्यपि बिना सघर्ष और कठिनाई के तो नही पर सवैधानिक तरीको से अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है बजाय उन तरीको के, जिनसे पिछले सालो मे दुनिया पर आफते आई, ऐसी आफते जो पूजीवादी शोषण से भी गई-बीती है और जिन्हे केवल लोकतत्र ही अकेला दूर करने के लिए प्रयत्न-शील है।

आपका,

लोथियन

१६९. वल्लभभाई पटेल की ओर से

अहमदाबाद
९ मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

अखबारो के समाचारो से मै देखता हू कि ८ ता को पूना में महाराष्ट्र प्रान्तीय काग्रेस कमिटी की बैठक हुई और उसने पद-ग्रहण के विरुद्ध निश्चय किया। परन्तु उसी दिन महाराष्ट्र की धारासभा के सदस्यो (नये चुने हुए सदस्यों) की एक बैठक हुई और उन्होने पद-ग्रहण के पक्ष मे एक प्रस्ताव पास किया। इतना ही नही किया, बल्कि और आगे बढे और उन्होने एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा मुख्यमत्री पद के लिए श्री नरीमान की नामजदगी की सिफारिश की है। यह बडी बुरी बात है। इस सबध मे हाल ही मे तुम्हारे द्वारा भेजी गई हिदायतो की ये प्रत्यक्ष विरोधी है। मुझे भय है कि बम्बई से मत्रियो के पदो के लिए जो जोरो का प्रचार शुरू हुआ है, यह प्रस्ताव उसीका परिणाम है। मालूम होता है कि धारासभा के लिए चुने गए अपने सदस्यो को महाराष्ट्र प्रान्तीय काग्रेस अपने काबू मे रख पाने मे असमर्थ है। यदि केन्द्र द्वारा मजबूत नियत्रण नही रखा गया तो हालत बिगड जायगी। इन रिपोर्टों की एक कतरन तुम्हारी सूचना के लिए भेज रहा हू।

बम्बई होता हुआ १४ की शाम को मै दिल्ली पहुच रहा हू। आशा है, तुम प्रसन्न होगे।

सप्रेम तुम्हारा,
वल्लभभाई

१७० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

'उत्तरायण'
शातिनिकेतन, बगाल
२८ मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे अभी-अभी तुम्हारा तार मिला, जिससे आशा होती है कि आगामी १४ अप्रैल को होनेवाले हमारे समारोह की अध्यक्षता के लिए

तुम आ सकोगे । पर राजनैतिक स्थिति की जिस अनिश्चितता का तुमने जिक्र किया है वह, जहातक हमारे इस छोटे-से समारोह का सवाल है, बहुत ही भयावनी है और मै तुम्हे यह बताने के लिए फिर से लिख रहा हू कि मै स्वय इस प्रसग को किस प्रकाश मे देखता हू ।

विशाल पुस्तकालय और ५०,००० रु की निधि चीनी जनता की भारत को भेट है और इसे सही पृष्ठभूमि मे न देख सकना दुर्भाग्य की बात होगी । इस कार्य का प्रेरक चीनी-हिन्दी सास्कृतिक समाज है, जिसके सगठनकर्ताओ मे मार्शल च्याग काई शेक, राष्ट्रपति डा. त्साई ी ताओ और चीनी राष्ट्रीय अनुसधान सस्थान के सचालक आदि, चीनी-जीवन के सभी नेता शामिल है । हमारे ऊपर इस बात की जिम्मेदारी है कि भेट को मित्रता और सहयोग की समुचित भावना के साथ ग्रहण करे और समाज का औपचारिक उद्घाटन इस प्रकार होना चाहिए, जिससे हमारे चीनी मित्रो को तत्काल विश्वास हो सके कि भारत इस सुन्दर कार्य का उचित प्रत्युत्तर ही देगा । उद्घाटन-समारोह के लिए मुझे तुमसे अधिक उपयुक्त कोई दूसरा नही सूझता और तुम्हे आना ही होगा । जरूरत हो तो हवाई जहाज से आना, हमारे यहा हवाई जहाज के उतरने का अच्छा प्रबध है। अपने साथ इदिरा को लाना न भूलना ।

आशीर्वाद-सहित,

सप्रेम तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१७१. अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

दी मिरामर
सांता मोनिका, केलिफोर्निया,
३० मार्च १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

पिछला पत्र लिखे महीनो बीत गये है । मुझे पूर्ण आशा है कि जब यह पत्र आपके पास पहुचेगा तब आप खूब स्थिर होगे ।

मै आपके जीवन और कार्य का गहरी दिलचस्पी और बडे ध्यान के साथ अध्ययन करता रहा हू । अमरीका के कुछ समाचार-पत्रो और

पत्रिकाओ मे हिंदुस्तान की स्थिति की खबरे बिना किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष के और काफी विस्तार के साथ छपती है ।

मैं यहा अमरीका मे अक्तूबर के आरम्भ मे भाषण देने के लिए आया था । इन भाषणो का उद्देश्य हिटलर और नाजी-प्रणाली का विरोध करना था, लेकिन हिटलर की केवल घरेलू नीति, हत्याओ और अल्प-सख्यको, उदारदलीय सदस्यो तथा समाजवादियो के दमन के विरुद्ध ही नही, बल्कि उसकी विदेश-नीति के खिलाफ भी, जिससे सारे ससार की शान्ति को खतरा पैदा होगया है । स्वभावत मैंने लोगो को यह भी बतलाया कि स्पेन के फ्राको-विद्रोह को तैयार करने मे और उसे समर्थन देने मे हिटलर का हाथ था । मैंने सारे अमरीका का भ्रमण किया और सार्वजनिक सभाओ, विश्वविद्यालयो, महिला क्लबो मे, लेखको और पत्रकारो के सामने और रेडियो आदि पर भी भिन्न-भिन्न सामाजिक स्तर के लोगो के सामने भाषण किये ।

यह भाषण-यात्रा तीन महीनो तक चली । अक्सर ऐसा होता था कि मैं दिन मे दो-दो बार भाषण करता था । एक दिन तो चार बार भाषण किया । मैं जानता हू कि आपको मेरे काम मे रुचि है, इसलिए मैं अपने भाषणो के बारे मे कुछ अखबारो की कतरने इस पत्र के साथ भेजने की धृष्टता कर रहा हू ।

इस यात्रा की एक बहुत ही रोचक बात यह है कि यहा की साधारण जनता और हॉलीवुड के फिल्मी कलाकारो ने भी, जिनसे उम्मीद नही की जाती थी, बडी सहानुभूति दिखलाई है ।

हॉलीवुड मे एक बहुत ही प्रभावशाली नाजी-विरोधी सघ है, जिसके सदस्यो मे बहुत-से सुप्रसिद्ध फिल्म-निर्माता, फिल्म-लेखक और फिल्म-कलाकार भी है ।

यात्रा समाप्त करके मैं हॉलीवुड लौट आया और इस समय मैं मीट्रो गोल्डविन मेयर के लिए 'लोला मोन्टेज' फिल्म की कहानी लिख रहा हू । (लोला मोन्टज उस विचित्र आयरिश लडकी का नाम है, जो कि एक अफसर की बेटी थी, जिसने अपनी युवावस्था भारत मे बिताई थी और जो बाद मे लन्दन मे एक 'स्पेनिश नर्तकी' के रूप मे सामने आई

और फिर बवेरिया के शाह लुडविग प्रथम की मित्र बन गई। इस शाह की राजनीति पर सबसे अधिक उसीका निर्णायक प्रभाव रहा और ऐसा वह उस समय तक करती रही जबतक कि १८४८ मे म्यूनिक का हास्यास्पद विद्रोह न उठ खडा हुआ, जिसके फलस्वरूप लोला मोन्टेज को देश-निकाला मिला और राजा को गद्दी छोडनी पडी। इतिहास भी अक्सर कितना विचित्र होता है! यूरोपीय प्रतिक्रिया के समय यही लोला मोन्टेज आजादी की सदेश-वाहिका बनी।)

यहा का अपना काम खत्म हो जाने पर मै न्यूयार्क चला जाऊगा, जहा मेरे दो नाटक खेले जायगे। दोनो ही पुस्तक के रूप मे छपेगे। छपते ही मुझे उनकी प्रति आपके पास भेजने मे बडी प्रसन्नता होगी।

पिछली बार जब मै यहा १९२९ मे आया था, तबके बाद से यहा अमरीका मे बडे-बडे परिवर्तन होगये है। यहा के महान आर्थिक सकट ने यहा की जनता पर, विशेष रूप से युवको पर, बडा गहरा असर डाला है। तुच्छ आशावादिता और डालर की पूजा के बदले यहा आजकल एक बहुत ही गहरी आध्यात्मिक बेचैनी दिखाई दे रही है। लोगो मे वास्तविक सामाजिक समस्याओ की ओर झुकाव और सामाजिक क्षेत्र के साथ-ही-साथ कला के क्षेत्र मे भी सत्य की आकाक्षा दिखाई दे रही है।

इसके अलावा मे समझता हू कि अकेला अमरीका ही वह देश है, जिसने फासिज्म से इतनी जल्दी सबक सीखा है।

जनसख्या का एक बहुत बडा भाग अब स्वतत्रता के प्रति जागरूक हो गया है और रूजवेल्ट के चुनाव मे दाव यह था कि कौन आजादी के पक्ष मे है और कौन विरोध मे।

मुझे अगले महीने रूजवेल्ट से मिलने की आशा है। अमरीकी इतिहास के वह एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है।

इग्लैड मै कब लौटूगा, यह मै अभी नही जानता। अभी तो मै अमरीका मे ही रहूगा।

यूरोप के मामलो की शायद आपको भी उतनी ही जानकारी है, जितनी मुझे। निश्चय ही आजकल हम लोग एक यूरोपीय युद्ध के मध्य मे

है । अभी तो अलग-अलग देशो के सैनिक दस्ते और टुकडिया लड रही है । सेना के मैदान मे आने मे अब थोडे समय का ही सवाल रह गया है। इग्लैण्ड और इटली के बीच झगडा लगातार बढता चला जा रहा है और मेरी राय मे मुसोलिनी के हिटलर के साथ मिल जाने के पीछे ब्रिटिश-विरोधी भावना काम कर रही है । कभी-कभी ऐसा लगता है कि लडाई आशिक रूप मे हिटलर और सोवियत रूस के बीच नही, बल्कि इग्लैड और इटली के बीच आरम्भ होगी ।

स्पेन के मामलो मे लोकतत्रो ने आर्थिक कारणो से एक भयकर भूल कर दी है, जिसे कि बाद की पीढी शायद ही समझ पायगी । फ्रेको और उसके फासिस्ट मित्रो की विजय का यूरोप की स्थिति पर क्या प्रभाव पडेगा, इस बात को फौरन ही समझ लेने के बदले उन्होने अपने को तटस्थ घोपित कर दिया और इस प्रकार यूरोपीय लोकतत्रो की स्थिति को और भी सकटजनक बना दिया । हमे उम्मीद करनी चाहिए कि इस मामले मे लोकतत्रो के हस्तक्षेप मे बहुत देर नही होगी, जैसी कि बहुत-से मामलो मे पहले हो चुकी है ।

क्या हिदुस्तान मे भी फासिस्ट आन्दोलन है ? क्या वहा भी नाजी लोग प्रचार द्वारा प्रभाव डालने की चेष्टा कर रहे है ।

आपकी पुत्री के क्या समाचार है ? क्या वह अब भी लन्दन मे ही है ? कृपया मेरा आदर और मेरी शुभकामनाए स्वीकार कीजिये ।

आपका,
अर्न्स्ट तोल्ले

१७२ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
५ अप्रैल १९३७

दुबारा नहीं देखा

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हे बीमार क्यो होना चाहिए ? बीमार हो जाने पर तुम आराम क्यो नही लेते ? मैने सोचा था कि इन्दू के आने के बाद तुम चुपके-से

कही चले जाओगे। जब वह आ जाय तो उसे मेरा प्यार पहुचा देना। इस पत्र के साथ उसे भी दो शब्द लिख रहा हू।

अब तुम्हारे रूठने की बात। किसी भी तरह सही, मै जो भी कहता या शायद करता भी हू वही तुम्हे खटकता है। चुप रहना असभव था। मेरा खयाल था कि सदर्भ मे शिष्टता और अशिष्टता शब्द बिल्कुल ठीक आ गये। बयान के बारे मे काग्रेस की तरफ से शिकायत का पहला स्वर तुम्हारा निकला है। अगर सभीको शिकायत थी तो मै क्या कर सकता था? मुझे खुशी है कि तुमने लिख दिया। जबतक मेरी समझ साफ न हो जाय या तुम्हारे डर दूर न हो जाय तबतक तुम्हे मुझे बर्दाश्त करना होगा। मुझे अपने बयान से कोई हानि होने का अदेशा नही है। क्या तुम्हारे दिमाग मे कोई ऐसी चीज है जिसे मै नही समझता?

कमलादेवी ने वर्धा से मद्रास तक हमारे साथ सफर किया। वह दिल्ली से आ रही थी। वह मेरे डब्बे मे दो बार आई और लम्बी बाते कर गई। अन्त मे वह जानना चाहती थी कि सरोजिनीदेवी को क्यो नही शामिल किया गया, लक्ष्मीपति को राजाजी अलग क्यो रख रहे है, अनुसूयाबाई को क्यो बाहर रखा गया? तब मैने उन्हे बताया कि अलग रखने के मामले मे मैने क्या भाग लिया और उस दिन मौनवार को मैने तुम्हारे लिए जो नोट लिखा था उसका जितना भाग मुझे याद था, लगभग सारा उन्हे कह सुनाया। अवश्य ही मैने उन्हे बताया कि शुरू मे सरोजिनी को न लेने और बाद मे ले लेने मे मेरा कोई हाथ नही था। मैने उनसे यह भी कहा कि जहातक मुझे मालूम है, लक्ष्मीपति को न लेने से राजाजी का कोई वास्ता नही था। मैने सोचा, तुम्हे यह सब मालूम होना चाहिए।

आशा है, इस पत्र के पहुचने तक तुम फिर पूरी तरह तदुरुस्त हो जाओगे। माताजी के बारे मे तुमने कुछ नही लिखा।

सस्नेह,

बापू

१७३. लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिकलिंग हॉल,
ए ल्स्हम

गोपनीय ९ अप्रैल १९३७

प्रिय श्री जवाहरलाल नेहरू,

२५ मार्च के पत्र के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। 'टाइम्स' मे प्रकाशित मेरा पत्र आपने देखा होगा। "मन्त्रियो की उनकी वैधानिक गतिविधियो से सम्बन्धित सलाह को गवर्नर हस्तक्षेप के अपने विशेपाधिकार द्वारा रद्द नही करेगा", ऐसा आश्वासन मिलने पर ही हम सरकार बनायेगे, कांग्रेस कमेटी का यह प्रस्ताव "बहुत ठीक" है, आपके इस विचार से मै पूर्णत सहमत नही हू। ऐसा मानने के लिए जो कारण है उन्हे मै यहा नही दोहराऊगा। सिर्फ इतना कहूगा कि गवर्नर अपने विशेपाधिकारो का प्रयोग करे या नही, यह कुछ आदेशात्मक नही है, बल्कि यह उसकी इच्छा पर निर्भर होगा और स्थिति इसीसे स्पष्ट हो जाती है। दूसरे शब्दो मे, जैसा कि जेटलैण्ड ने कल लार्ड-सभा मे स्वीकार किया है, गवर्नर द्वारा अपने विशेषाधिकार के प्रयोग का प्रश्न उसके अपने निर्णय पर निर्भर करता है। वह इस बात पर विचार करेगा कि विशेषाधिकार का प्रयोग कानून और व्यवस्था तथा अल्पसख्यको आदि के लिए अपने मन्त्रिमडल की सलाह मानने की बनिस्बत अधिक हानिकर तो नही होगा। उत्तरदायी शासन-प्रणाली का यह एक बुनियादी तत्व है। और ठीक इसी कारण से, जहा-कही भी यह पद्धति लागू की गई है और लोकप्रिय मन्त्रिमडलो ने शासन-भार सम्हाला है, धीरे-धीरे सारे अधिकार विधानमडलो और निर्वाचको को सौप दिये गए है। ऐसा क्यो होता है, इसके भी कारण है। जबतक मन्त्रिमडल अपनी नीति का अतिरेक कर निर्वाचको को अपना विरोधी नही बना लेता तबतक व्यवहारत विशेषाधिकार का प्रयोग करना गवर्नर के लिए असम्भव नही तो कठिन जरूर रहता है, क्योकि ऐसा करने पर वैधानिक सकट उत्पन्न होता है, जिसके फलस्वरूप फिर से आम चुनाव कराना

लाजिमी हो जाता है। इस स्थिति मे एक विदेशी ताकत द्वारा अधिकार के प्रयोग के कारण ही निर्वाचको के हाथ उसकी नीति की हार हो जाती है। इसलिए मै कहना चाहूगा कि आपके दृष्टिकोण से भी पूर्व आश्वासन मागने की नीति ठीक नही है। न तो आप और न गवर्नर ही वचनबद्ध होना चाहते है। इस प्रकार के आश्वासनो से और भी गलतफहमिया पैदा होती है। आप यह परम्परागत रास्ता क्यो नही अपनाते—शासन-भार सम्हालिये, अपने कानून बनाइये और फिर गवर्नर को हस्तक्षेप की चुनौती दीजिये ? अगर वह हस्तक्षेप नही करता तो आप पूरा भार सम्हाल लेगे और कुछ ही सप्ताह या महीने मे ससदीय प्रणाली प्रान्तो में पूरी तरह चालू हो जायगी और हर नये महीने के आरम्भ के साथ हस्त-क्षेप अधिकाधिक कठिन होता जायगा। हा, मन्त्रिमडल ही कोई गलती कर बैठे तो बात और है। यदि उसने हस्तक्षेप किया ही तो अपने दृष्टि-कोण को बुलन्द करने के लिए आपके पास आज की अपेक्षा अधिक अच्छा हथियार रहेगा।

अपने पत्र के अन्तिम पैरे मे आपने कहा है कि हिदुस्तान की आगिक एकता को बनाये रखने तथा उसे शक्तिशाली बनाने के महत्व से आप पूर्णत सहमत है, लेकिन आपकी राय मे नये सविधान के सघ-विषयक खण्ड से इस एकता को सबल नही मिलेगा। मेरी समझ मे यह नही आता। जहातक बुनियादी बातो का सम्बन्ध है, नया भारतीय सवि-धान ठीक उसी सिद्धान्त पर आधारित है, जिसपर अमरीका, कनाडा अथवा आस्ट्रेलिया का सविधान बना है, अर्थात् सघीय विधान-मडल के द्वारा हिदुस्तान की आगिक एकता, जिसमे लोकप्रिय निर्वाचक-मडल समेत प्रत्येक व्यक्ति का प्रतिनिधित्व होगा और रियासते तथा प्रात सवि-धान के अन्तर्गत अपने कानूनी अधिकारो का प्रयोग करेगे। सम्पूर्ण हिदु-स्तान के लिए बननेवाला कोई भी सविधान अनिवार्यत इन्ही सिद्धातो पर आधारित होगा। यह बिल्कुल सच है कि ऐसे अन्य तत्व भी है, जो अस्थायी तौर पर आवश्यक हो भी सकते है और नही भी, लेकिन जो आपके खयाल से ही नही, वस्तुत किसी भी व्यक्ति की राय मे अन्त-तोगत्वा आपत्तिजनक है। एक तत्व तो यह है कि सघीय विधान-मडल मे

लोकतन्त्र और निरकुश सत्ता दोनो एक साथ बैठेगे और यह कि मत-प्रयोग के मामले मे रियासतो को अनुचित महत्व दिया गया है । आपकी दृष्टि से दूसरा तत्व वह है, जिसमे सम्पत्ति-अधिकारो को सरक्षण दिया गया है । व्यक्तिगत तौर पर मेरा भी यह ख़याल है कि सघीय विधान-मडल को प्रत्यक्ष और व्यापक मताधिकार द्वारा न चुनना भारी गलती है, क्योकि जबतक सघीय सभा मे प्रातो के प्रतिनिधि रहेगे तबतक प्रान्तो मे निहित हानिकर प्रवृत्तियो को केन्द्र मे अत्यधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त होता रहेगा । अन्त मे साम्प्रदायिक फैसले की बात आती है । लेकिन, जैसाकि मेरा विश्वास है, सविधान के इन तत्वो का निराकरण खुद सघीय सविधान को नष्ट किये बिना भी हो सकता है । इस बात मे मुझे सन्देह है कि मुसलमानो और अधिकतर अन्य अल्पसख्यको को नई सविधान-सभा मे आने के लिए तैयार करना आपके लिए सम्भव है । लेकिन, उत्तरदायी शासन-प्रणाली जनता के प्रतिनिधियो के हाथ मे जो अधिकार देती है उसका मै इतना कायल हू कि मेरा विश्वास है कि सविधान को नष्ट करने का प्रयास करने की अपेक्षा इसके ढाचे के अन्तर्गत ही लड-झगडकर इन त्रुटियो का निराकरण अधिक विवेकपूर्ण ढग से और अधिक तेजी से किया जा सकता है । मै भी सोचता हू कि उसको नष्ट करने का प्रयास अनिवार्य रूप से हिदुस्तान की आगिक एकता को नष्ट कर देगा । मेरा विश्वास है कि यदि उत्तरदायी शासन-प्रणाली का सचालन शक्तिशाली अनुशासित दल द्वारा हो तो इससे न केवल सविधान मे परिवर्तन ही किये जा सकते है, जो स्वय भारतीय विधान-मडलो के अधिकार मे है, बल्कि एक बार यह मालूम हो जाने पर कि हिदुस्तानी जनमत एक निश्चित रूप ले चुका है, ब्रिटिश ससद को भी उन तत्वो को सविधान से निकालने के लिए बाध्य किया जा सकता है, जिन्हे सविधान को लागू करने के निमित्त गोलमेज-सम्मेलनो के समय उसमे सम्मिलित करना आवश्यक था । आप इस विचार से सहमत नही होगे, क्योकि मै नही समझता कि उत्तरदायी शासन-प्रणाली अनुशासित बहुसख्यक दल के हाथ मे 'स्वाधीनता' प्राप्ति की वह शक्ति देती है, जिसमे आपका उतना विश्वास है जितना मेरा । लेकिन मुझे यकीन है कि यदि

सरल कर दिया (कभी-कभी तो इससे वक्तव्य ही असत्य हो गया है। मिसाल के तौर पर तीन लाइनें बचाने के लिए मुझसे यह कहलाया गया कि राष्ट्रीय कांग्रेस का आरम्भ ब्रिटिश अधिकारियों ने किया था !)

फिर भी, एक बात है, जिसपर मेरे खयाल से, मेरे प्रति सामान्य न्याय के लिए आपको अपनी राय स्थिर कर लेनी चाहिए । जब हमारी मुलाकात हुई थी तब मैं बहुत ही दुःखी, थका और हैरान था और हताश भी । इसलिए मैं कुछ इस तरह बातें कर गया कि जिससे आपका यह सोचना स्वाभाविक ही है कि मैं रेजमी, रामानन्द चटर्जी और उसी तरह के दूसरे लोगों को जरूरत से ज्यादा महत्व देता हूं, हालांकि ये बातें मैंने एकांत में कहीं और उनका जिक्र सार्वजनिक तौर पर या लिखित रूप में कभी नहीं किया । जब मन की हालत सामान्य होती है तो मेरे दिल में उनके प्रति कोई श्रद्धा नहीं होती और न साल में पांच मिनट के लिए भी उनपर कोई विचार करता हूं । मैं यह स्वीकार करता हूं कि पहले कई बार मुझको उनसे इस कारण खिन्नता हुई है कि आपके आन्दोलन में ऐसे स्वार्थी और अपना विज्ञापन करनेवाले लोग भरे हैं, जिनका, अगर इससे सम्बन्ध न हो तो थोड़ा भी महत्व नहीं हो सकता—ऐसे ही लोगों के लिए शैली ने 'दि इलस्ट्रियस ऑबस्क्योर' का विशेषण दिया है—और कुछ परले दर्जे के बेवकूफ लोगों से भी मुझे खिन्नता हुई है । विवेकशील और सद्भावी लोग इन्हें खड़ा करके सामने लाते हैं और फिर उन्हीं लोगों की राय में उन उद्देश्यों को हानि पहुंचती है, जिनका वे गलत प्रतिनिधित्व करते हैं । अनेक देशों के बहुत-से लोग यदि हिंदुस्तान के सवाल पर गम्भीरता से विचार नहीं करते तो इसके लिए ज्यादातर ऐसे ही लोग जिम्मेदार हैं । जो हो, मैं इसपर सहमत हूं कि इनसे खिन्न होने का सम्मान भी इन्हें नहीं दिया जाना चाहिए।

अब हम उन बातों पर विचार कर सकते हैं, जिनपर हम दोनों के विचार बिल्कुल मिलते हैं । मेरी पिछली हिंदुस्तान-यात्रा से मुख्य परिवर्तन यह हुआ है कि अब मैं राजाओं का पक्का विरोधी होगया हूं । मैं इतिहास-संबंधी एक काम कर रहा हूं, जिसमें यह बात स्पष्ट हो जायगी । इन्हीं जाड़ों में मैं एक किताब प्रकाशित कर रहा हूं, उसमें भी यह प्रकट

होगा। मेरी राय मे ये राजे-महाराजे रक्त-शोषक कीडे है। उनमे से अधिकतर तो निरे बेहूदे हैं। उनके बारे मे जो चापलूसीपूर्ण बाते कही जाती है, वे तो और भी भयकर है। लेकिन उनसे पिण्ड छुडाना आसान न होगा।

जेटलैण्ड के दिखावटीपन के बारे मे भी मै बिल्कुल सहमत हू। मेरी अपनी राय यही है कि वह बिल्कुल अपवादरूप से दलीय व्यक्ति है। जन-सामान्य क्या सोचता है अथवा उसपर क्या बीतती है, इसकी उसे कोई जानकारी नही। उससे न तो हिंदुस्तान का और न हमारे देश का कोई लाभ होनेवाला है। वह विशुद्ध टोरी है।

हा, शायद मै भौतिक शक्ति के सम्बन्ध मे बहुत अधिक सोचता हू। आपको मालूम है, मै ५१ वर्ष का हू। मेरा सम्बन्ध सुखद (जो किसी समय सुखद था!) आश्वस्त उदार आन्दोलन से है, जो महायुद्ध से पूर्व श्रमजीवी वर्गो के लिए कुछ (कम-से-कम उनके लिए जो कुछ भी किया जा सकता सब) करा सकने मे समर्थ हुआ और जिसका विश्वास था कि किसी भी देश मे किसी भी अन्याय को हम शातिपूर्ण तरीके से मिटा सकते है। हममे से अधिकतर लोगो का एक पैर कब्र मे है। जो बाकी है वे निराश हो चुके है और समय से पहले ही उनका दिल टूट चुका है। १९१३ मे हमने सपने मे भी नही सोचा था कि हम ऐसे जमाने से गुजरेंगे, जिसमे जर्मन गुप्तचरो को टावर मे गोली मारी जायगी और एक आदमी को एडवर्ड तृतीय के कानून के अन्तर्गत 'बडे देशद्रोह' के अपराध मे फासी पर चढाया जायगा। स्वय मैने एक ऐसे आदमी को देखा है, जिसे डरपोकपन के कारण दूसरे दिन गोली मारी जानेवाली थी, और अब एक देश के बाद दूसरे देश मे मर्दो और औरतो के प्राण ऐसे राजनैतिक विचारो के कारण लिये जा रहे है, जिनपर थोडी-सी भी उदारता का रग चढा है। कुछ दिन पहले एक रात बेतार के तार की खबर इतनी नीरस और दुखात थी कि वह मजाक बन गई। पहले तो हमने सुना कि मोरक्को मे कोई तीस आदमियो को गोली मार दी गई, फिर स्पेन मे एक जत्थे को, इसके बाद अबीसीनिया मे एक जत्थे को, इसके बाद चीन मे और सबसे अन्त मे रूस मे एक स्टेशन-मास्टर को इसलिए

गोली मार दी गई कि उसने अपने आदेशो की खिचडी वना दी थी, जिससे एक दुर्घटना होगई । अत हम यह नही कह सकते कि निरकुशता और सैनिक कानून से उत्पन्न वुराइया हर हालत मे असम्भव है । आखिर आयरलैण्ड समुद्र के उस पार ही तो है, और कुछ ही समय पहले फ्री स्टेट शासन ने कुछ सप्ताह मे ही ८० से अधिक लोगो की जाने ले ली ।

दूसरे, स्पेन के वारे मे हम लोग वहुत ज्यादा सोचते है । मेरे घनिष्ठ मित्र और साथी ज्योफ्रे गैरेट और कुछ दूसरे दोस्त काफी समय तक वहा रहे है । जिस प्रकार काग्रेस मेरी अपेक्षा आपके अधिक निकट है, उसी प्रकार स्पेन आपकी वनिस्वत मेरे ज्यादा नजदीक है । और, जव मै हिंदुस्तान मे था तो यह सुना था कि वहुत-से लोग—हिंदुस्तानी और ब्रिटिश—यदि हालात पैदा हुए और क्रोध को इतना भडका सके कि ब्रिटेन मे समर्थन मिल जाय—राजद्रोह को हिसात्मक तरीके से दवा देने के लिए बिल्कुल निर्दयता से तयार है । मेरा यह विचार था और आज भी है कि शासन-भार सम्हाल लेना काग्रेस के लिए इस दृष्टि से अच्छा रहेगा कि वह अत्यावश्यक कानून बना सके और जव उसका समय आवेगा तव वह शासनारूढ हो जायगा । यही नही, यदि काग्रेस ने शासन नही सम्हाला, तो भी नाममात्र के और वेकार मन्त्रिमडल जारी रहेगे, और सम्प्रदायवादी तथा स्वार्थी लोग अपने गुटो तथा मजहबो की वहा जडे जमायेगे, जैसाकि उन्होने पिछले बीस साल मे किया है ।

फिर भी इन सवका कोई खास महत्व नही है । सिर्फ एक बात है । कृपया आप यह न सोचे कि आपका यह पत्र लिखना निरर्थक रहा । मैने इसे बहुत ध्यानपूर्वक पढा है और यह अधिकाशत बहुत सही लगनेवाला है । यदि आप मुस्लिम फिरकापरस्ती से पल्ला छुडा सके तो यह एक बडी शानदार बात होगी । आपका पत्र पढने के वाद मुझे यह विश्वास हो रहा है कि आप जीत रहे है, फिरकापरस्ती के विरुद्ध भी । मै जानता हू, यदि आपकी धमकी ने बहुत भयकर रूप धारण किया तो ये लोग शारीरिक वल पर उतर आयेगे । आप मुस्लिम राजाओ और मौलवियो के खिलाफ है । जो हो, मै आपकी सफलता की कामना करता हू । मालूम नही, आपके मन मे यह विचार कैसे आया कि मै हिंदुस्तान मे काग्रेस

को सबसे अधिक महत्वपूर्ण आन्दोलन नही मानता। यदि मै आपकी मदद कर सकता हू तो जरूर करूगा। यह कहना कठिन है कि कैसे, लेकिन अवसर आयेगे और तब आप मुझपर भरोसा रख सकते है।

आपका,

एडवर्ड टामसन

अब 'ग्लिम्पसेज ऑव वर्ल्ड हिस्ट्री' (विश्व-इतिहास की झलक) के बारे मे आप जिस स्थिति मे है, उसमे होते हुए मेरा खयाल है कि आप दूसरो पर यह असर छोडना नही चाहेगे कि आप अग्रेजो का छिद्रान्वेषण कर रहे है। यदि आपकी जगह मै होता तो उनसे सम्बन्धित सारे अशो को बहुत नजदीक से देखता। विचित्र बात तो यह है कि इस पुस्तक के उन स्थलो का, जहा आपने हिंदुस्तान के गहरे दु ख-दर्द की चर्चा की है, मुझपर यह असर हुआ कि आप वहा सज्जन तथा आश्चर्यजनक रूप से उदार है। जहा कोई भारतीय प्रश्न नही है और जहा अधिकतर इतिहासज्ञो की राय मे मामला इग्लैण्ड के अनुकूल है, वहा आप उदार नही रहे है।

मेरे विचार मे इस पुस्तक का सबसे घटिया भाग वह है, जिसमे नेपोलियन का वर्णन दिया गया है। मै स्वीकार करता हू कि आपकी नेपोलियन-पूजा मेरी समझ मे नही आती। ये पन्ने मुझे कलई पुते-से लगे। डक डे एघेन अथवा न्यूरेम्बर्ग के उस पुस्तक-विक्रेता की निर्मम हत्या का कोई उल्लेख नही है। और, मै यह निश्चित रूप से कह सकता हू कि अग्रेजो की उनकी कमीनेपन की आलोचना मे सतुलन का अभाव है, क्योकि १८१४ मे अभूतपूर्व सद्व्यवहार प्राप्त करने के बाद नेपोलियन के विद्रोह तथा यूरोप मे फिर खून की नदी बहाने के कारण स्वय उसके ही बोरबन अथवा प्रशावासियो ने उसे अपराधी की तरह गोली मार दी होती। मै जानता हू कि उसके दमन के बाद बहुत समय तक हर जगह प्रतिक्रिया का बोलबाला रहा और उसके विजेता भी बहुत बुरे लोग थे। इसके विपरीत उनकी दृष्टि मे वह नगण्य था और वे सब-के-सब राजाओ के दैवी अधिकारो पर बल देते थे, इसलिए उन्हे योही छोड़ दिया। मुझे यह कुछ आश्चर्यजनक लगता है कि आपने नेपोलियन-

पूजा और सेट हेलीना के शहीद होने के वारे मे इतनी गम्भीरता दिखाई है। मेरी अलमारी मे सेट हेलीना के वास्तविक वलिदान के वारे मे एक पुरानी किताव पडी है। क्या आपके मन मे हडसन लो के लिए कोई दुख नही हो सकता, जो कुचक्री और झगडालू लोगो के वीच पडा था, जहा नेपोलियन पुन सत्ता-प्राप्ति के लिए जी-तोड कोशिश करता रहा ? उन पृष्ठो को देखने से वास्तव मे ऐसा लगता है कि आप सफल हिसा के प्रशसक है। आप उन्हे योही नही रहने दे सकते। उनके कारण आपकी किताव की वडी अप्रतिष्ठा होती है। आप स्वय अपने मन से पूछकर देखिये कि वाटरलू के वाद अथवा १८१४ मे मित्र-राष्ट्र क्या करते अथवा उन्हे क्या करना चाहिए था और तव क्या होता ?

फिर मेरा विचार है, महायुद्ध के प्रश्न पर आप हमारे राष्ट्र के प्रति अनुदार है। आपके शब्दो और वाक्यो को देखकर लगता है कि हमने जो कुछ किया, उसका तात्पर्य समुद्री नाकेवन्दी करना और रुपया देना ही था। यहा आप वही गलती करते दीखते है जो कभी-कभी मैंने स्वय की है, अर्थात् तटस्थ वाद-विवाद-सभा की भावना से ऐसी वातो के वारे मे लिखना, जो उनसे सम्वन्धित लोगो के लिए गहरी वास्तविकता रखती है, दुखदायी है और जिनकी जड मे तीव्र भावावेश है। कृपया ऐसी मनोवैज्ञानिक गलती न करे, क्योकि ऐसी गलतियो के लिए लोगो को वुरी तरह भुगतना पडता है। आपके विचार मे जलियावाला वाग मे जनरल डायर की मन स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए मैंने ऐसी ही भूल की है। मेरा ख़याल है कि आप भी ऐसा ही करते है, जब आप ऐसे महायुद्ध के वारे मे लिखते है, जिसमे हमारे राष्ट्र ने अपने दस लाख से ऊपर आदर्श नौजवान खो दिये और जिसमे हममे से प्रत्येक का या तो भाई या बेटा या दिली दोस्त काम आ गये।

अब मित्र-राष्ट्रो के सवाल को लीजिये। मेरा ख़याल है कि बेल्जियम पर हमले के नतीजो को आप गलत ढग से प्रस्तुत करते है। सिर्फ इस बात से कि आक्रमणकारी सेना चौवीस घटे पहले ही तैयार हो चुकी थी, वह साबित नही होता, जो आप कहते है। मै इतना जरूर जानता हू कि फ्रास के साथ मिल जाना हमारे लिए जरूरी था, नही तो बाद मे हमारा

दमन कर दिया जाता । लेकिन उस जमाने से गुजरनेवाले एक अग्रेज की हैसियत से मै यह भी जानता हू कि बेल्जियम पर अचानक हमला और वहा के राजा की अपील के कारण ही समूचा राष्ट्र एकबद्ध होकर सरकार के समर्थन पर आ गया । हमला अचानक इसलिए रहा कि कुछ समय से राष्ट्रो की प्रवृति अपने वचन-पालन की ओर दिखाई दे रही थी और हमारे लोगो को आक्रमण के कुछ दिन पहले तक इस बात की जरा भी आशका न थी कि हम भी उसकी लपेट मे आ जायगे । आप कहते है कि काग्रेस की चर्चा करते समय मै गलती करता हू, क्या दूसरे राष्ट्रो की चर्चा करते हुए वही गलती—सरकारो या कार्यपालिकाओ या नेताओ के गुटो के पीछे जो जनता है उसे भूल जाने की गलती—आप नही करते ?

जो हो, आपके जैसा व्यक्ति, जो भयकर कष्टो के बाद भी इतना उत्कृष्ट ग्रथ 'मेरी कहानी' लिख सका, वह किसी परदेशी को, चाहे वह अग्रेज हो या अमरीकी, ऐसी किसी चीज को देखने का मौका नही दे सकता, जिसपर आपके हस्ताक्षर हो, फिर भी जो इस पुस्तक की भावना के प्रतिकूल हो ।

मेरे विचार से अन्य कई अलग-अलग सदर्भो मे भी उदारता का ऐसा ही अभाव है । लेकिन मै उनके विस्तृत अध्ययन से आपको कष्ट नही देना चाहूगा (वस्तुत मैंने उसका कोई सविस्तर अध्ययन किया भी नही है) । आपकी यह पुस्तक एक चमत्कारपूर्ण चीज है, मै इतना ही कहूगा (बल्कि पहले ही कहना चाहिए था) । यहा कुछ छोटे-मोटे स्थलो का उल्लेख कर रहा हू, जो कल शाम पुस्तक पर फिर सरसरी निगाह डालते समय मुझे दिखाई दे गये ।

पृष्ठ ६५९[१]—१८३० मे मैटकाफ सुप्रीम कौसिल का सदस्य था, १८३४ तक । वह गवर्नर (जनरल) नही था या १८३५ तक (आगरा का) गवर्नर नही था ।

पृष्ठ ६७३—नीचे से चार लाइने, 'प्रोग्रेस' वस्तुत 'प्रोफेस' की जगह गलती से आ गया है ।

---

[१] ये पृष्ठ-सख्याएं पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण के अनुसार है । —सं०

पृष्ठ ६७४—राममोहन राय वस्तुत सती-प्रथा के उन्मूलन को जवर्दस्ती का और अविवेकपूर्ण मानते थे, लेकिन वाद मे उन्होने इसका समर्थन किया। मेरी जानकारी मे ऐसा कोई शासक नही है, जिसने पहले इसका निपेध किया हो, सिवा आसानी से नियन्त्रित क्षेत्रो के—जैसे सेरामपुर मे डेनो ने (मेरा खयाल है), गोवा मे पुर्तगालियो ने, तजोर मे मराठो ने—अतिम निपेध के रूप मे यह असफल रहा, १९ वी शताव्दी मे भी तजोर मे विधवाए जलाई जाती रही। लेकिन, आपको यह भूलना नही चाहिए कि स्थानीय कारणो ने भी निपेध को आसान वनाया। मलावार व्यवहारत मातृ-प्रधान है, इसलिए उस तट पर सती होना सम्भव न था और यही भावना दक्षिण भारत मे फैल गई थी। मुगल सम्राटो की तरह मेटकाफ ने दिल्ली मे सती-प्रथा पर रोक लगाई थी। निश्चित रूप से, ऐसे भी मौके आये, जवकि अकवर और शाहजहा के राजकाल मे निपेध का उल्लघन किया गया। मुझे एक ऐसा स्थल भी मिला है, जवकि मद्रास के व्रिटिश गवर्नर ने १६६५ मे एक महिला को नगर मे सती होने से रोक दिया था।

हाथ मे मेरे पास कोई सन्दर्भ मौजूद नही है, मेरे नोट कही पडे हुए है, फिर भी यह कहना विल्कुल गलत है कि मराठो ने सती-प्रथा पर रोक लगाई थी। पूना-स्थित व्रिटिश एजेण्ट मेलेट का मकान सगम के निकट था, वाद मे एल्फिस्टन उसमे रहने लगे थे। सती देखते-देखते मेलेट का तो मन ही उकता गया था। सच तो यह है कि मराठे भारत की सर्वाधिक मानवीय परम्परा का एक प्रकार से प्रतिनिधित्व करते है और यह कि सतियो की मख्या उनके प्रदेश मे अपेक्षाकृत कम थी। शिवाजी के साथ उनके गुलाम (स्त्री और पुरुप दोनो) और जानवरो के जल मरने की रोमाचकारी विनाश-लीला के वाद भी ऐसी काफी घटनाए मिलती है। मराठो के लिए मेरे मन मे वडी प्रशसा और स्नेह है, जिनकी मानवता उस समय निश्चित रूप से हमारे अपने लोगो से ऊची थी, लेकिन तजौर को छोडकर उन्होने कही भी सती का निषेध नही किया था और तजौर मे भी वे असफल रहे। सती-निषेध एक ही वीर पुरुष का काम था और वह थे लार्ड विलियम वेटिक। इसलिए ऐसा

क्यो नही कहते और क्यो नही उनका प्रसग आने पर एक वीर पुरुष का अभिनन्दन करने का आनन्द प्राप्त करते ? उदाहरणार्थ, उज्जैन मे दुनियाभर की सती-सबधी कहानिया प्रचलित है, और अहिल्याबाई की पुत्र-वधू महेश्वर मे जल मरी थी।

पृष्ठ ६८४—हा, अब आप यह मानते है कि महर्षि रवीन्द्रनाथ के पिता थे।

पृष्ठ ६९९—पेकिग की लूट के सम्बन्ध मे अनेक ताजा कहानिया सुनने को मिली है और चीन के साथ किये गए बर्ताव के सम्बन्ध मे आपने जो कुछ कहा है, उससे मै अधिकाशत सहमत हू, लेकिन साफ-साफ कह दू कि आपकी इस मान्यता से मै सहमत नही कि हमेशा मिशनरियो की ही दुष्टता रही थी। जिन मिशनरियो की हत्या की गई, उनमे से अधिकतर लोग 'चायना इनलैण्ड मिशन' से सम्बन्धित थे। यह एक ऐसी सस्था है, जिसका कोई खास प्रभुत्व नही है और जिसके सदस्य बिल्कुल गरीब और अकिचन है और जिनका अपना कोई प्रभाव नही है और अपने वेतनो के लिए भी जिन्हे दैव पर भरोसा करना पडता है। यही नही, यह भी सच है कि जब जर्मनी ने मिशनरियो की हत्या को क्याउचो पर कब्जा करने का बहाना बनाया, परन्तु उस समय भी ब्रिटिश मिशनरी सस्था इस बात के लिए सतर्क रही कि उनकी अपनी सरकार मिशनरियो की हत्या का लाभ उठाने का यत्न न करने पाये। ऐसा उन्होने अतीत का ध्यान करते हुए ही किया था, फिर भी उद्देश्य पूर्णत सही न होने पर भी उन्हे श्रेय दिया जाना चाहिए। मेरे खयाल मे आपने मिशनरियो पर सही ढग से प्रकाश नही डाला है और चीन-सम्बन्धी अध्याय समाप्त हो जाने पर वे इस रूप मे सामने आते है, मानो सारा मामला उन्हीको लेकर था, हालांकि बात ऐसी नही है। पेकिग की लूट का नेतृत्व मिशनरियो ने किया, इसका आपके पास क्या प्रमाण है, मै जानना चाहूगा ? (पृष्ठ ७२२)। मुझे इसमे सन्देह है।

पृष्ठ ७८०—फारस। यदि ब्रिटेन वास्तव मे चाहता तो युद्ध की समाप्ति के बाद फारस को आसानी से अपने राज्य मे मिला सकता था अथवा उसे अपनी सुरक्षा मे ले सकता था। मेरी समझ मे नही आता कि कमाल

के हाथ यूनान की उस पराजय का इससे क्या सबब है, जिसे आपने आसानी के लिए ब्रिटेन की 'योजनाओं' की हार कहा, लेकिन शायद आपको पता होगा कि इसकी पूरी जिम्मेदारी व्यक्तिगत रूप से लायड जार्ज पर ही है। तथ्य तो ये थे कि हमारी सरकार को भी पता था कि साम्राज्यवादी कार्रवाई तबतक काफी बड़े हिस्से पर अपना अधिकार जमा चुकी थी और इसलिए फारस के मामले को, जैसा वह था, चलने दिया। अपने पुराने मित्र मोहम्मेरा के शेख को भी अपनी आजादी खोने दी तथा उसे तेहरान जाने देना पडा और उसका इलाका फारस मे मिला दिया गया। मेरे खयाल मे आप यह नही समझते कि युद्ध की समाप्ति के समय हर क्षेत्र मे कैसी गडबड मच रही थी। बोल्शेविको का महत्व हम सचमुच नही समझ रहे थे। जिस समय उन्होने अपनी महत्ता स्थापित की, उस समय मै टाइग्रिस नदी के पूरब मे था और मुझे याद है, हमारे जनरलो को (नवम्बर १९१७ मे) कितना विस्मय और अचरज हो रहा था। क्या आप नही समझते कि जो चीज बाद मे हुई, उसे आपने पहले ही स्थान दे दिया है?

पृ ८८२—हा, अग्रेजो ने वाशिंगटन को जलाया और यह बडी गलती थी, परन्तु यह सब पहले अमरीकनो द्वारा कनाडियन भवनो और सग्रहालयो के जलाये जाने के प्रतिशोधस्वरूप जान-बूझकर किया गया था।

पृ ९६८—मैंने इसका जिक्र किया है। मै इसपर विश्वास नही करता कि "इग्लैण्ड बहुत पहले ही निर्णय पर पहुच चुका था और बेल्जियम का प्रश्न एक सुविधाजनक बहाने के रूप मे सामने आ गया।" आपका तात्पर्य क्या है, मै अच्छी तरह समझता हू, लेकिन और कोई इसे इस अनुदारतापूर्ण ढग से प्रस्तुत करता है तो इसका खमयाजा उसे ही भुगतना पड़ेगा और इसका दण्ड यह होगा कि उसकी रचना ठोस होते हुए भी लोग उसपर विश्वास नही करेंगे। नेहरू, आप किसी चीज को इस ढग से पेश नही कर सकते। आप न तो रामानन्द चटर्जी है और न शैलेन्द्रनाथ घोष। आप जवाहरलाल नेहरू है और यदि कोई अग्रेज आपको तथ्य का स्मरण दिलाता है तो उसे जरूर माफ कर देंगे।

पृ ४६५—अब डायनो को जीवित जलाने के बारे मे। डायने यूरोप महाद्वीप और स्काटलैण्ड मे जलाई जाती थी। मेरे खयाल मे ऐसा एक भी उदाहरण नही मिलेगा, जबकि इग्लैण्ड मे कोई भी डायन जलाई गई हो। वे या तो डुबो दी जाती थी अथवा फासी पर लटका दी जाती थी। यह एक छोटी बात है। लेकिन, मुझे याद है, उस गधे शैलेन्द्रनाथ घोष, 'अमरीका मे भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के अध्यक्ष' ने बोस्टन मे यह कहा था, "१८१८ मे आप लोग बोस्टन कामन में डायनो को जीवित जला रहे थे" और तब सभी श्रोता (स्त्री और पुरुष दोनो—विशेषत महिलाए) एक साथ खडे होगये और जोरो से "नही" कहकर चिल्लाये, क्योकि तीन बाते है, जिनपर बोस्टनवालो के कान जल्दी खडे होते है, वह साल १८१८ नही, बल्कि १६९० है, वह स्थान बोस्टन नही, सेलम है और उन्हे फासी पर लटकाया जाता था, जलाया नही जाता था। उसके बाद उसके एक-एक शब्द का हरेक ने मखौल उडाया।

प्रसगवश यह कह दू कि अग्रेजो मे तीन गुण है, जिनका कुछ श्रेय आप हम लोगो को दे सकते है, वैसे तो मानव-जाति की कहानी बडी दर्दनाक है। हमने किसी अन्य राष्ट्र से बहुत पहले डायनो के वध को रोक दिया था, हमने कानूनी उत्पीडन पहले ही समाप्त कर दिया था, और गुलामो की मुक्ति का मूल्य चुकाकर तो हमने वास्तव मे बडा शानदार काम किया। कम-से-कम जहा हम श्रेय के हकदार है, वहा तो श्रेय दीजिये ही। इससे निश्चय ही आप द्वारा की गई आलोचना को और बल मिलेगा।

पृ ४८१ और अन्य स्थलो पर 'अशोक'[1] 'असोक' का भद्दा रूप है।

पृ ५०७—'ब्लैक होल' पर सही टिप्पणी यह नही है कि यह मनगढत बात थी (इसपर मेरा विश्वास नही है) बल्कि यह है कि यह घटना एक मूर्खता थी, जान-बूझकर नही की गई थी और १९१८ मे मोपला बदियो की घुटन के बिल्कुल समान थी (जो अपेक्षाकृत कम क्षम्य है)।

---

[1] अग्रेजी में 'असोक' लिखा जाता है। इसीसे यह भ्रम पैदा हुआ है।

पृ ५१०—जब आप कहते है कि मराठो ने अंग्रेजो को "दक्षिण मे" हरा दिया तो मेरे खयाल मे आप 'दक्खन' का शब्दश अनुवाद करते है। हमारे लिए दक्षिण का अर्थ होता है मैसूर के आसपास का क्षेत्र, वरगाव का इलाका नही।

पृ ५५९—यह यकीन करना कठिन है कि आप दरअसल यह मानते है कि तेरह उपनिवेशो के साथ झगडा उतना साधारण था, जितना आप समझते है, और जिन युद्धो से उनको ही लाभ मिल रहा था, उनका खर्चा न देकर वे जो नीचता दिखा रहे थे, उसके खिलाफ ब्रिटेन का कोई पक्ष नही था।' मेरे खयाल मे ये सारे अश इस पुस्तक के सामान्य स्तर से नीचे ठहरते है। मै समझता हू, कोई भी अच्छा अमरीकी इतिहासज्ञ इसे स्वीकार नही करेगा। यदि बेल्जियम पर हमला ब्रिटेन की पूर्व-निश्चित योजना के लिए सिर्फ बहाना ही था तो "प्रतिनिधित्व के बिना कर लगाने" के सम्बन्ध मे आप क्या कहेगे? फिर भी आप जानते है कि इसके कारण कितने गम्भीर थे, और इन तेरह उपनिवेशो मे सहयोग इतना कम था कि जब गृह-युद्ध छिडा तो दक्षिण को यह दावा करने का अच्छा कानूनी आधार मिल गया कि वह सघ से सम्बन्ध-विच्छेद करने को स्वतन्त्र है। १७८९ मे वर्जिनिया के खिलाफ इस अधिकार को चुनौती भी नही दी गई (मेरा खयाल है)। लेकिन आप यह जानते है कि अमरीकी इतिहासकारो की नई पीढी उस क्रान्तिकारी युद्ध के बारे मे क्या लिखती है।

पृ ६०९—अत मे एक बात और। अन्तिम पैरे के बारे मे आप खुद अपने मन से पूछिये और कभी बताइये कि आपकी राय मे "उदार और सौजन्यपूर्ण व्यवहार" क्या होता?

ये सब बाते महान चमत्कारपूर्ण कार्य की तुच्छ आलोचनाए है। आपने ऐसा चाहा भी था। लेकिन मै अच्छी तरह जानता हू कि जो बाते बिना कोई हानि पहुचाये कही जा सकती है, वही लिखे जाने पर हमेशा आपत्तिजनक लगती है।　इन सबसे भी बडी मेरी शिकायत यह है कि उन तीनो किताबो पर आपने मेरा नाम नही लिखा। 'एडवर्ड टामसन को जवाहरलाल नेहरू की ओर से,' ऐसा लिखकर तीन पर्चिया आपको मेरे

पास भेजनी चाहिए ।

इन्दिरा से यह कहना न भूले कि वह जब इधर आये तो हमसे जरूर मिले । पेट्रिशिया एग्न्यू मेरी पत्नी की प्रिय सखियो मे से एक की पुत्री है (वह महिला हाल ही मे मर गई) ।

शुभकामनाओ सहित,

आपका,
एडवर्ड टामसन

१७५ महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२५ जून १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

सरहदी नीति पर तुम्हारा वक्तव्य अभी मिला । खानसाहव ने और मैंने उसे पढ लिया । मुझे वह वहुत पसन्द आया । पता नही स्पेनवालो और अग्रेजो की वमवारी विल्कुल एक-सी है या नही । क्या अग्रेजो द्वारा की हुई हानि की मात्रा मालूम कर ली गई है ? अग्रेजो की वमवारी का प्रकट कारण क्या वताया गया है ? इस वात पर हँसना भी मत और क्रोध भी न करना कि मै इन चीजो को उतना अच्छी तरह नही जानता जितना तुम जानते हो । अखवारो को जितना कम मै देखता हू उससे मुझे वहुत कम ही जानकारी हो सकती है । मगर मेरे प्रश्नो का उत्तर देने का कष्ट मत उठाना । तुम्हारे वयान पर होनेवाली प्रतिक्रियाओ का मै ध्यान रखूगा । शायद उनसे कुछ प्रकाश पडे । और जो कमी रह जाय वह तो जव हम मिलेगे तव तुम पूरी कर ही दोगे । आशा है, मौलाना आयगे । लेकिन वह न आ सके तो भी मै चाहूगा कि तुम तो उस तारीख पर अवश्य पहुच जाओ । इन तीनो शान्त दिनो में हम साथ रहेगे ।

आशा है, इन्दू अच्छी तरह होगी ।

सस्नेह,
बापू

१७६ खलीकुज्जमा के नाम

इलाहाबाद
२७ जून १९३७

प्रिय खलीक,

कल तीसरे पहर मैंने २५ जून के 'खिलाफत' अखबार मे वुन्देलखड चुनाव के वारे मे एक वयान पढा। इस वयान पर तुमको शामिल करके छ-सात आदमियो के दस्तखत थे। उसे पढकर मुझे ताज्जुव हुआ। मैं कभी नही सोच सकता था कि इस किस्म के दस्तावेज पर तुम्हारा नाम हो सकता है। किसी भी हालत मे मेरे लिए इसपर यकीन करना मुश्किल होता, लेकिन पिछले अप्रैल मे हमारी वातचीत के वाद तो मै अपनी आखो पर भरोसा ही नही कर सकता था। पिछले दो-तीन महीनो मे हिंदुस्तान मे होनेवाली घटनाओ के साथ मेरा ताल्लुक छूट गया था, कुछ तो मेरी वीमारी की वजह से और कुछ मेरी गैर-मौजूदगी से। लेकिन घटनाओ से उसूलो मे वहुत असर नही पडता और तुमने 'खिलाफत' मे जो कुछ कहा है वह उन उसूलो की जड काटता है। पहले हम इस वारे मे एकराय नही रहे होगे कि हमे किस किस्म के काम करने चाहिए। लेकिन मेरा खयाल हमेशा यह रहा कि हमारे आम नजरिये एक-से हैं। मालूम होता है, मेरे समझने मे भूल थी। जहातक मेरा ताल्लुक है, मैंने पहले भी अपने प्यारे उसूलो का ज्यादा खयाल रखकर काम किया है और आगे भी करूगा। मेरे कामो से जो नतीजे हो सकते है उनका खयाल न पहले वहुत रखा, न अव रखूगा। खयाल और काम की इस वुनियाद के विना मै पानी पर एक तिनके की तरह हो जाऊगा, जो हर हवा के झोके के साथ इधर-उधर जाता है और उसका कोई डाड या कुतुवनुमा (कम्पास) नही है। मैंने जिदगी को अक्सर एक भारी वोझा पाया है, लेकिन मुझे इस वात से कुछ तसल्ली रही है कि मैंने कुछ पक्के उसूलो पर कायम रहने की कोशिश की है।

तुमने जो कुछ किया, या कहा जाता है कि किया, उसपर मुझे गहरा अफसोस है। मेरा फर्ज है, तुमको वताऊ कि इस मामले मे मै क्या महसूस करता हू। मैंने सोचा था और मेरे खयाल से मुझे यह उम्मीद रखने का हक था कि तुम मुझसे चर्चा किये विना ऐसा कोई कदम नही उठाओगे। तुम्हारे

यकीन दिलाने का मेरे मन पर असर हुआ था और मै उसकी कद्र करता था। अव चूकि यह यकीन नही रहा, इसलिए कुदरतन मुझे कुछ-न-कुछ चोट महसूस हुई।

यह खत बिल्कुल निजी है। सियासी नज़रिये से इसे लिखने का मेरा काम नही था।

तुम्हारा,
जवाहरलाल

[चौधरी ख़लीकुज्जमा यू. पी. के एक खास कांग्रेसी थे। बाद में वह मुस्लिम लीग मे शामिल हो गये। विभाजन के होते ही वह पाकिस्तान चले गये।]

१७७. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे खत मुझे अच्छे लगते है। उनसे जो जानकारी मुझे होती है वह अन्यथा नही मिलती। इस्लाम-पक्षी आन्दोलन का मुझे कुछ भी पता नही था। उसपर मुझे आश्चर्य नही होता। मुलाकात पर तुमने मेरा वयान देखा होगा।

मेरा तरीका तुम्हे मालूम है। मुझे इन मुलाक़ातो से वल मिलता है। यह देखना तुम्हारा और दूसरे साथियो का काम है कि देश को, मै जो कुछ करता हू उसका, ठीक-ठीक अर्थ प्राप्त हो। मै चाहता हू कि तुम राजाजी के वारे मे कोई चिन्ता नही करोगे। वह विल्कुल ठीक है। फिर भी मै चाहूगा कि तुम अपनी शकाए उनपर प्रकट कर दो। मै १५ तारीख की शाम को शान्तिनिकेतन के लिए और उसके वाद १९ तारीख को वालिकादा के लिए रवाना हो रहा हू।

सस्नेह,
वापू

१७८. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
१० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

कल मौलानासाहव से मेरी लम्वी वाते हुई। यदि प्रान्तो मे मुस्लिम

मन्त्रियो का चुनाव उनकी सलाह से करना है तो मेरे विचार से इस आशय की सार्वजनिक घोषणा कर देना बेहतर होगा। मौलाना सहमत है। यदि तुम्हारे खयाल में कार्य-समिति से परामर्श लेना चाहिए तो मेरा सुझाव है कि तार से ले लिया जाय।

मैं आशा करता हू कि तुम हिन्दी-उर्दू के विषय मे जल्दी ही लिखोगे।

सस्नेह,

बापू

[मौलाना से मतलब यहा मौलाना अबुल कलाम आजाद से है।]

१७९ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा

१५ जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

आज चुनाव का दिन है। मै निगाह रख रहा हू।

परन्तु यह पत्र मै तुम्हे यह बताने के लिए लिख रहा हू कि मैंने कांग्रेसी मन्त्रिमडलो के कार्यकलाप और सम्बन्धित विषयो पर लिखना शुरू कर दिया है। मुझे हिचकिचाहट थी, परन्तु मैंने देखा कि जब मेरी भावनाए इतनी तीव्र होगई है तो लिखना मेरा कर्तव्य है। काश मै तुम्हे 'हरिजन' के लिए मेरे लेख की अतिम प्रति दे सकता! यह महादेव देख लेगे। यदि उनके पास नकल होगी तो भेज देगे। तुम देख लो तो मुझे बताना कि मै इस तरह लिखता रहू क्या? सारी स्थिति से निपटने के तुम्हारे काम मे मुझे हस्तक्षेप नही करना चाहिए, क्योकि देश के लिए मै तुम्हारा अधिक-से-अधिक उपयोग चाहता हू। यदि मेरे लिखने से तुम्हे अशान्ति हो तो मेरे हाथो निश्चित हानि होगी।

आशा है, मौलाना-सबधी मेरा पत्र तुम्हे मिला होगा।

सस्नेह,

बापू

१८० महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२२ जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मौलानासाहब एक दिन वर्धा ठहर गये थे और हमारी लम्बी बातचीत हुई। उन्होंने मुझे विधान-सभा के मुस्लिम लीगी और कांग्रेसी सदस्यों के समझौते का मसविदा दिखाया। मेरे ख़याल से यह अच्छा दस्तावेज़ है। परन्तु उन्होंने मुझे बताया कि तुम्हें तो यह पसन्द है, टंडनजी को नहीं है। मौलाना के सुझाव के अनुसार मैंने इसके विषय में टंडनजी को लिखा है। आपत्ति क्या है?

पांचसौ रुपया वेतन, बड़ी-सी कोठी और मोटर पर कड़ी आलोचनाएं हो रही हैं। मैं जितना ही सोचता हूं उतना शुरू में ही इतनी फ़जूलखर्ची बुरी मालूम होती है। इसके बारे में मैंने मौलाना से भी बातचीत की थी।

इन्दु कैसी है?

सस्नेह,
बापू

१८१ वल्लभभाई पटेल की ओर से

कांग्रेस हाउस,
गोपनीय बम्बई
३० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

पिछले दिनों में कुछ महत्वपूर्ण सवाल उठ खड़े हुए थे, इसलिए मैं २७ तारीख को वर्धा चला गया था। वहां से आज सुबह लौटा हूं। बहुत-से मामलों पर बापू से लंबा मशविरा किया। विभिन्न प्रान्तों में जो वेतन और भत्ते निश्चित किये गए हैं, उनके समाचारों से स्पष्ट ही उन्हें ज्यादा चिंता है। मैं तुम्हारी मंजूरी के लिए, जिन विभिन्न मुद्दों पर मेरी बापू से चर्चा हुई, उनपर हिदायतों के मसविदे की एक नकल तुम्हें भेज रहा हूं। तुम इनमें जो रद्दोबदल करना चाहो, कर सकते हो। परन्तु चूंकि मामला बहुत जरूरी है, इसलिए छहों मुख्य मंत्रियों के पास मैं उनके मार्ग-दर्शन के लिए हिदायतों के मसविदे की अग्रिम नकलें भेज रहा हूं साथ ही उन्हें यह सूचना

दे दी है कि यह मसविदा उन्हे अग्रिम रूप मे भेजा जाता है, लेकिन इसपर तुम्हारी मजूरी बाकी है। जब वह मुझे मिल जायगी तभी अतिम हिदायतें उन्हे भेजी जायगी।

समाचार-पत्रो की रिपोर्ट से मुझे मालूम होता है कि तुम्हारे प्रान्त मे मुस्लिम लीग से जो बात-चीत चल रही थी वह असफल रही। फिलहाल किसी ऐसे समझौते की अपेक्षा करना शायद ज्यादा जल्दबाजी होगी।

वर्धा से लौटने के बाद श्री नरीमान ने अपनी बदले की मुहीम जारी रखना ही पसन्द किया है। अखबारी मुहीम बहुत भद्दी और आतककारी हो गई है। श्री नरीमान का ताजा वक्तव्य तुमने समाचार-पत्रो मे जरूर देखा होगा। यह साफ होगया है कि अब वह किसी तरह जाच को टालना चाहते है, जिसको वह पहले चाहते थे, और इसका दोष वह कार्य-समिति पर डालने की कोशिश कर रहे है। अभी बापू के साथ उनका पत्र-व्यवहार चल रहा है और शायद बापू शीघ्र ही इस सबध मे अतिम वक्तव्य जारी करे। नरीमान ने उनको लिखे तुम्हारे पत्र के कुछ अश उद्धृत किये है। अगर मै इसे जरूरी समझू तो मै तुमसे इस पूरे पत्र को प्रकाशित करने की इजाजत चाहूगा। फिलहाल मैंने अपने-आपको सारे विवाद से अलग रखा है, जोकि पूरी तरह इकतरफा है। तुम्हारे लिए भी जरूरी हो सकता है कि बापू के ऐलान के बाद भी एक आखिरी बयान दो। इसलिए उनके सारे पत्र-व्यवहार की नकले मै कल तुम्हारी जानकारी के लिए भेज रहा हू।

कल मै कुछ दिनो के लिए अहमदाबाद जा रहा हू। आशा है, तुम ठीक होगे ?

तुम्हारा,
वल्लभभाई

फिर से—

इस चिट्ठी पर हस्ताक्षर करने के बाद मुझे ए पी से ज्ञात हुआ कि नरीमान ने एक लम्बा वक्तव्य देकर जाचवाली अपनी माग को वापस ले लिया है, परन्तु उन्होने अपने आरोप वापस नही लिये है, जोकि एक शरीफ आदमी की तरह उनको करना चाहिए था। अब बापू एक वक्तव्य देगे और उसके बाद तुम अतिम वक्तव्य दे सकते हो।

प जवाहरलाल नेहरू
इलाहाबाद।

१८२. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा,
३० जुलाई १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है कि महादेव ने तुम्हारे हिन्दी-सम्बन्धी निवन्ध की पहुच के अलावा कल यह भी लिख दिया है कि वाइसराय ने मुझे ४ तारीख को दिल्ली बुलाया है। महज मिलने की खातिर मैने उत्तर दिया है कि उन्होने मेरी इच्छा पहले से ही जान ली है, क्योकि खानसाहव पर लगाये गए प्रतिवन्ध और सीमा प्रान्त के दौरे की मेरी इच्छा के वारे मे मै उनसे मुलाकात मागना चाहता था।

तदनसार मै ४ तारीख को दिल्ली पहुच रहा हू। मुलाकात ११ ३० वजे है। इसलिए मुझे आशा है कि मै उसी दिन वापस होकर ५ तारीख को सेगाव पहुच सकूगा।

परन्तु यह पत्र तो तुम्हे जाकिर के खत की नकल भेजने के लिए है। वह सव मेरे उस पत्र का उत्तर था, जिसमे मैने वम्वई के हाल के दगे और हिन्दी-उर्दू के कम्वख्त विवाद पर अपनी प्रतिक्रिया लिखी थी। मैने सोचा कि इस विचारपूर्ण पत्र को तुम्हे भी वताऊ।

मै झासी के चुनाव को वुरी हार नही मानता। यह सम्मानपूर्ण पराजय है और उससे यह आशा होती है कि यदि हम परिश्रम करते रहे तो मुसलमानो तक कांग्रेस का सन्देश कारगर ढग से पहुचा सकते है। परन्तु मेरी यह राय अव भी कायम है कि केवल सन्देश ही पहुचाया जाय और साथ-साथ देहातों मे ठोस काम न किया जाय तो अन्तत हमारा उद्देश्य पूरा नहीं होगा। परन्तु यह सव इसपर निर्भर है कि हम शक्ति किस ढग से पैदा करना चाहते है।

मेहरअली का मद्रास का भाषण मेरे लिए आखे खोलनेवाला है। पता नही, वह सामान्य समाजवादी विचार को कहातक व्यक्त करते है। राजाजी ने मुझे उनके भाषणवाली एक कतरन भेजी थी। आशा है, उन्होंने तुम्हे भी एक नकल भेजी होगी। मै उसे बुरा भाषण कहता हू। तुम्हे इसपर ध्यान देना चाहिए। कांग्रेस की नीति के जैसी मै समझता हू, यह विरुद्ध पड़ता है।

मद्रास मे रॉय का भाषण भी हुआ। मै मान लेता हू कि तुम्हे ऐसी सब कतरने मिलती होगी। फिर भी तुरन्त तुम्हारे देखने के लिए कतरने साथ मे है, जो प्यारेलाल ने मेरे लिए तैयार की है। राय मुझे भी लिखते रहे है। तुम्हे उनका ताजा पत्र देखना चाहिए। मैने फाड न दिया हो तो वह इस पत्र के साथ होगा। उनके रवैये पर तुम्हारी क्या प्रतिक्रिया है ? जैसा मै तुम्हे पहले ही बता चुका हू, उन्हे समझना मेरे लिए कठिन हो रहा है।

खादी को तुम्हारा दिया हुआ नाम 'आजादी की वर्दी' जबतक हिंदुस्तान मे अग्रेजी भाषा बोली जायगी तबतक जिन्दा रहेगा। इस मनोहर शब्द-प्रयोग के पीछे जो विचार है उसका पूरी तरह हिन्दी मे अनुवाद करने के लिए किसी प्रथम श्रेणी के कवि की आवश्यकता होगी। मेरे लिए वह केवल काव्य ही नही, परन्तु वह एक ऐसे महान सत्य का प्रतिपादन करता है, जिसका पूरा अर्थ समझना अभी शेष है। सस्नेह,

बापू

यद्यपि राय के भाषण से सबधित अश मेहरअलीवाले अश के बाद ही आता है फिर भी इसका यह अर्थ नही है कि वह मेहरअली के अश के मुकाबले का है।

१८३ महात्मा गाधी की ओर से

रेल में,

३ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

यह मै दिल्ली ले जानेवाली रेलगाडी मे लिख रहा हू। मेरा प्राक्कथन या जो कुछ भी इसे कहो, साथ मे है। मै तुम्हे कोई लम्बी-चौडी चीज नही दे सका।

तुमने पश्तो और पजाबी के पहले 'शायद' रखा है। मेरा सुझाव है कि तुम यह क्रिया-विशेषण हटा दो। मिसाल के लिए खानसाहब पश्तो को कभी नही छोडेगे। मेरा खयाल है, वह किसी लिपि मे लिखी जाती है। भूल गया हू किसमे ? और पजाबी ? गुरुमुखी मे लिखी हुई पजाबी के लिए सिक्ख तो मर मिटेगे। उस लिपि मे कोई शोभा नही है। लेकिन मुझे मालूम हुआ है कि सिधी की तरह वह भी सिक्खो को हिन्दुओ से अलग करने के लिए खास तौर

पर ईजाद की गई थी। यह बात हो या न हो, फिलहाल तो सिक्खो को गुरुमुखी छोडने को राजी करना मुझे असभव लगता है।

तुमने चारो दक्षिणी भाषाओ मे से कोई सामान्य लिपि तैयार करने का सुझाव दिया है। मुझे उनके लिए चारो की मिली-जुली लिपि की तरह ही देवनागरी भी उतनी ही आसान मालूम होती है। व्यावहारिक दृष्टि से उन चारो मे से मिली-जुली लिपि का आविष्कार हो नही सकता। इसलिए मेरा सुझाव है कि तुम सिर्फ इतनी ही सामान्य सिफारिश करो कि जहा कही सभव हो, जिन प्रान्तीय भाषाओ का सस्कृत से सजीव सम्बन्ध है, वे अगर उसकी शाखाए नही है तो उन्हे सशोधित देवनागरी अपना लेनी चाहिए। तुम्हे मालूम होगा कि यह प्रचार जारी है।

बस, अगर तुम मेरी तरह सोचते हो तो तुम्हे यह आशा प्रकट करने मे सकोच नही होना चाहिए कि चूकि किसी-न-किसी दिन हिन्दुओ और मुसलमानो को दिल से एक होना ही है, इसलिए जो हिन्दुस्तानी बोलते है उन्हे भी एक देवनागरी लिपि ही अपना लेनी चाहिए, क्योकि वह अधिक वैज्ञानिक है और सस्कृत से निकली हुई भाषाओ की महान प्रान्तीय लिपियो के निकट है।

अगर तुम मेरे सुझाव आशिक या पूरे स्वीकार कर लेते हो तो तुम्हे आवश्यक परिवर्तन मजूर करते हुए स्थानो को खोज निकालने मे कोई कठिनाई नही होगी। तुम्हारा समय बचाने की खातिर मैने स्वय ही ऐसा करने का इरादा किया था, परन्तु अभी मुझे अपने शरीर पर इतना भार नही डालना चाहिए।

मै यह मान लेता हू कि तुम्हारे सुझाव के मेरे समर्थन का यह अर्थ नही है कि मै हिन्दी-सम्मेलनवालो से हिन्दी शब्द का प्रयोग छोड देने को कहू। मुझे विश्वास है कि तुम्हारा यह मतलब नही हो सकता। मै जहातक सोच सकता हू, मै उस मतलब को अतिम सीमा तक ले गया हू।

अगर तुम मेरे सुझावो को स्वीकार नही कर सकते तो ठीक-ठीक बात बताने की खातिर 'प्राक्कथन' मे यह वाक्य जोड देना बेहतर होगा "बहरहाल, मुझे उनका सामान्य ढग पर समर्थन करने मे कोई सकोच नही है।"

आशा है, इन्दू का आपरेशन सकुशल हो जायगा।

सस्नेह,
बापू

१८४ महात्मा गाधी की ओर से

३ अगस्त १९३७

मैंने हिन्दू-उर्दू के प्रश्न पर जवाहरलाल नेहरू का निवध वहुत ध्यान से पढा है। पिछले दिनो यह प्रश्न एक दुर्भाग्यपूर्ण विवाद वन गया है। इसने जो भद्दा मोड लिया है, उसके लिए कोई उचित कारण नही है। कुछ भी हो, राष्ट्रीय और शिक्षा की शुद्ध दृष्टि से सोचा जाय तो जवाहरलाल के निवध से सारे विषय के उचित निरूपण मे मूल्यवान सहायता मिलेगी। उनके प्रस्तावो को सम्वन्धित लोग व्यापक रूप मे स्वीकार कर ले तो उनसे यह विवाद, जिसने साम्प्रदायिक रग ले लिया है, खत्म हो जाना चाहिए। सुझाव विस्तृत और वहुत माकूल है।

मो. क गाधी

१८५ महात्मा गाधी की ओर से

रेल में
४ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मै मूर्ख हू। तुम्हारा पत्र मिलने पर मैंने अपनी फाइल देखी तो मेहरअली के भाषणवाली कतरन मिल गई। मैंने उनके भाषण का, न कि मसानी के भाषण का, हवाला दिया था।

यह पत्र मुझे वर्धा ले जानेवाली बहुत हिलनेवाली गाडी मे लिखा जा रहा है। अब रात के १० ३० बज गये है। मै नीद से जाग उठा, भाषण का खयाल आया और ढूढने लगा। कलवाला डिव्वा ज्यादा अच्छा था।

मै वाइसराय से मिला। तुमने सरकारी विज्ञप्ति देखी होगी। उसमे मुलाकात का सार सही-सही दिया गया है। कुछ और प्रासगिक बाते भी थी, जिनका जिक्र कृपालानी तुमसे मिलने पर करेगे। एक बात का उल्लेख यहा कर दू। जैसे मुझे बुलाया वैसे शायद वह तुम्हे भी बुलाये। मैंने उनसे कहा

कि अगर निमत्रण भेजा जायगा तो शायद तुम इन्कार नही करोगे। क्या मैंने ठीक कहा ?

मुझे अफसोस है कि मैंने राय के भाषण तुमपर थोपे। लेकिन मैंने सोचा कि तुम उन्हे पढोगे तो जरूर ही, लेकिन मुझे उनपर तुम्हारी राय जानने की जल्दी नही है। अगर तुम पहले ही पढ न चुके हो तो सुविधा से पढ लेना।

मैंने जान लिया कि तुम इन्दू का आपरेशन बम्बई मे करा रहे हो।

सस्नेह,

बापू

१८६ महादेव देसाई की ओर से

झांसी के निकट कहीं

४ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

वायदे के अनुसार पत्र लिखना दिन मे तो मेरे लिए असभव था और चूकि मुझे बापू का पत्र झासी मे १ ५० बजे डाक मे डालना है, इसलिए उसीके साथ अपना पत्र भी रख रहा हू। जिन मुद्दो पर मुझे तुम्हारे सामने जोर देना था वे ये है

१ पजाबी और पश्तो के पहले 'शायद' नही रहना चाहिए। (पृ २ और १०) बापू ने सुझाव दे दिया है, मै इतना और कहना चाहता हू कि सिक्खो के अनेक उत्तम गीत (गुरु नानक के और दूसरो के) जो उनकी गौरवशाली सम्पत्ति है, पजाबी मे है और यदि सिक्ख उसकी मान्यता के लिए नही लड़ते तोभी हमे उसे मान्यता देनी चाहिए। पश्तो के बारे मे मुझे याद है कि खानसाहब मुझसे कह रहे थे कि पश्तो की लिपी जैसी—एक प्रकार का उर्दू या नस्तालीक—एक लिपि है और सारे पठान यही भाषा बोलते है। खानसाहब और कुछ और लोग उर्दू जानते और बोलते है, क्योकि इन्होने कोशिश करके सीख ली है। दूसरे लोग—सिवाय पन-

सिवी ने उर्दू को सम्पूर्ण बनाकर अपनाया है और उसमे कुछ अक्षर ऐसे उच्चारणो के लिए जोड लिये है, जो सस्कृत मे तो है, मगर अरबी और फ़ारसी मे नही है। बुरा न माना जाय तो यो कह सकते है कि उसने उर्दू को सम्पूर्ण बना दिया है। इसलिए सिवी मे उर्दू समा सकती है, न कि उर्दू में सिवी। परन्तु मेरा अनुमान है कि तुम्हारा भी यही मतलब है। इतना ही है कि तुम उसे कम बुरा लगनेवाले ढग से पेश करोगे। मेरा कहना ठीक है?

दक्षिण भारत—(पृ ४ के ऊपर-ही-ऊपर) एक पैरा है। उससे अनजाने मे अलगाव की शरारत की ज्वाला भडक सकती है। कुछ कट्टरपथी आध्रो, तामिलो और कन्नडो ने हिन्दी के विरुद्ध एक हल्ला-सा खडा कर दिया है। सही बात तो यह है कि विद्वानो ने मान लिया है कि एक तरफ तामिल और मलयालम और दूसरी तरफ देवनागरी मे या एक ओर तेलुगु और कन्नड तथा दूसरी ओर देवनागरी मे जितनी निकटता है उतनी तामिल, मलयालम, तेलुगु और कन्नड मे आपस मे नही है। भाषा की हैसियत मे तामिल और मलयालम का एक वर्ग है और तेलुगु तथा कन्नड का दूसरा है। राजगोपाला-चार्य ने एक लेख-माला लिखकर सुझाया है कि देवनागरी मे कुछ परिवर्तन कर दिये जाय ताकि दक्षिण भारत के लिए उसे अपनाना आसान हो जाय और यह तथ्य कि लाखो दक्षिण भारतीयो ने थोडे-से प्रयत्न से देवनागरी लिपि सीख ली है, सारे दक्षिण के लिए देवनागरी लिपि के पक्ष मे एक प्रबल युक्ति है।

उस दिन मुझे एक दक्षिण भारतीय सौराष्ट्र से (जनसख्या लगभग ५०,०००) एक पत्र मिला था। उसका कहना है कि उनके यहा तेलुगु-तामिल की मिली-जुली लिपि थी जो अब नष्ट हो गई है, परन्तु वह तामिल और तेलुगु के बजाय देवनागरी को खुशी से अपना लेगे।

तामिलो, आन्ध्रो और कन्नडियो को हमारे धर्म-ग्रन्थ पढने पडते है, जो सब सस्कृत मे है। उनसे देवनागरी को अपनाने की आशा रखना उनपर बोझा डालना नही है, परन्तु धर्म-शास्त्रो के उनके अध्ययन मे सुविधा पैदा करना है।

अन्त मे, यदि चारो दक्षिणी भाषाए अपनी ही कोई मिली-जुली लिपि चाहती हो (जो मेरे खयाल से असम्भव है) तो सदा के लिए यह सभावना

छोड दो कि उत्तर भारतवाले दक्षिण भारतीय भापाए सीखेगे। कोई सामान्य लिपि होने से उत्तर भारतीयो को तामिल और तेलुगु जैसी भापाए सीखने की प्रवल प्रेरणा मिलेगी। (मै इन दो का ही उल्लेख कर रहा हू, क्योकि मलयालम तो तामिल और सस्कृत का सम्मिश्रण है और कन्नड का कोई ऐसा साहित्य नही, जिसकी तुलना किसी भी प्रकार से तामिल या तेलुगु के साथ की जा सके।)

अव एक ही अन्तिम विचार रह गया है, जिसका वर्णन करना मै भूल गया था। तेलुगु, कन्नड और मलयालम मे सस्कृत शब्दो की वहुत वडी मिलावट है। यह भडार दिन-दिन वढ रहा है और तामिल भी अव सस्कृत-शब्द वडी सख्या मे ले रही है। देवनागरी को अपनाने से यह प्रक्रिया तेज होगी।

इसलिए मुझे जरूर आशा है कि तुम देवनागरी और फारसी, इन दो लिपियो से अधिक का विचार नही करोगे।

३ पृ ७ यह वडा मामूली-सा मुद्दा है और जानकारी-भर की वात है। तुम कहते हो कि जन-साधारण के साथ सम्पर्क वढाने मे वगला सवसे आगे पहुची है। मुझे मालूम नही है। मै उस दिन अमिय चक्रवर्ती से वाते कर रहा था। उन्होने कहा कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की पुस्तको की भी वहुत विक्री नही हुई है। 'गीताजली' की इन सव वर्षो मे दो हजार प्रतिया, 'जीवन स्मृति' की अधिक-से-अधिक एक हजार प्रतिया इत्यादि। पता नही इस तथ्य से तुम वही नतीजा निकालोगे या नही, जो मै निकालता हू।

परन्तु झासी समीप आ रही है। अव मुझे वन्द करना चाहिए। इसे दुवारा देखने के लिए मेरे पास एक क्षण भी नही है। खराव अक्षरो के लिए क्षमा करना। यह कसूर मेरा नही, गाडी का है।

तुम्हारा,
महादेव

१८७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
८ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मेहरअली के भापण-सम्वन्धी तुम्हारे पत्र के एक मुद्दे पर लिखना मै

भूल गया था। मेरा मतलव ग्रीष्म विद्यालय के कैदियो को छोडने के वारे मे राजाजी की विज्ञप्ति से है। तुम्हारा पत्र प्राप्त होने से पहले मै उसे पढ चुका था, परन्तु उसपर मैने वुरा नही माना। मेरा विचार है कि चूकि तुमने तो ग्रीष्म विद्यालय के छात्रो की कार्रवाई को पसन्द किया था और मै किसी भी तरह से उसका समर्थन नही कर सकता था, इसलिए मेरे विचार से इस वात की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक था कि रिहाई का अर्थ इस कानून-भग का समर्थन करना नही है, और कानून-भग तो था ही। मुझे अन्देशा है कि जव काग्रेस सत्ता मे होगी तव वह अकसर वही भाषा काम मे लेगी, जो उसके पहले के शासक लिया करते थे। फिर भी उसका हेतु दूसरा ही होगा।

आशा है, वम्वई मे आपरेशन के सिलसिले मे तुम्हारी अच्छी गुजर रही होगी। जव वह हो जाय तो तार देना।

सस्नेह,

वापू

यदि नरीमान तुम्हारे पास आये तो उन्हे जाच करने की आज्ञा दे देना। मुझे खेद है कि वम्वई मे तुम्हे इस मामले की झझट रहेगी। महादेव तुम्हे बतायेगे कि मै क्या करता रहा हू।

वापू

१८८. अर्न्स्ट तोल्ले की ओर से

सान्ता मोनिका, केलीफोर्निया

२३ अगस्त १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

२९ जुलाई के पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। इतना कष्ट उठाकर आपने कितनी कृपा दिखाई है। आपके प्रयत्नो के लिए मै आपका वहुत कृतज्ञ हू। आप खुद सोच सकते है कि अगर मेरी पुस्तके हिन्दी और मराठी मे छप सकी तो मुझे कितनी प्रसन्नता होगी।

क्या आपको मेरा सुखान्त नाटक 'नो मोर पीस' (अब और शान्ति नही) मिला? मैने प्रकाशक से आपको एक प्रति भेजने के लिए कहा था।

मेरी पत्नी हॉलीवुड मे मेरे साथ रह रही है। वह बहुत बीमार थी,

लेकिन सौभाग्यवश अब वह अस्पताल से लौट आई है और तेजी से स्वास्थ्य लाभ कर रही है।

मैं चीन की घटनाओ का बडी उत्सुकता और दिलचस्पी के साथ अध्ययन कर रहा हू। ऐसा लगता है कि चीनियो के शक्तिशाली विरोध के बावजूद जापान जो प्रदेश लेना चाहता है उसे लेने मे वह सफल हो जायगा। राष्ट्रसघ की भी आजकल कैसी हास्यास्पद स्थिति है! जो सस्था मूलत जनता के अधिकारो की रक्षा करने और उसपर होनेवाले आक्रमणो को रोकने के लिए स्थापित की गई थी, वह इतनी असहाय होगई है कि निर्णय करना तो दूर, वह आजकल की आवश्यक समस्याओ पर विचार तक करने का साहस नही करती है।

हमारे इस युग की सबसे बडी कठिनाई यह है कि फासिस्ट और अर्द्ध-फासिस्ट राज्य तो इस बात को जानते है कि उन्हे क्या चाहिए और अपने सकल्प को कार्यान्वित करने के लिए वे हर प्रकार के साधनो का प्रयोग कर रहे है, जबकि प्रजातत्र देश दूषित अन्त करण के साथ रक्षा की चिन्ता मे लगे हुए है और सत्य का सामना करना नही चाहते, बल्कि समझौतो के रास्तो से भाग निकलना चाहते है, जिनसे कोई समस्या हल नही होती। स्पेन इसका एक दूसरा उदाहरण है। आजकल हमारे चारो ओर एक ऐसी उथल-पुथल मची हुई है, जो कि सारे ससार की राष्ट्रीय और सामाजिक समस्याओ तक फैल जायगी। १९१४ मे जो विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ था, वह वास्तव मे कभी समाप्त नही हुआ और पता नही कबतक चलता रहेगा। हम तो बस यह आशाभर कर सकते है कि जो कुछ भी अवश्यम्भावी रूप से होगा, उससे इस ससार के सभी आवश्यक अग छिन्न-भिन्न नही हो जायगे।

जर्मनी से मुझे जो समाचार मिले है, उनसे पता चलता है कि नाजी-विरोधी सघर्ष बडी बहादुरी के साथ चल रहा है, किन्तु इतना शक्तिशाली नही है कि आज की राजसत्ता पर प्रभाव डाल सके। जबतक कि सचमुच ही सकट की स्थिति पैदा न हो जाय तबतक उन नाजियो की शक्ति को स्वीकार करना ही होगा, जो कि जर्मनी को बडी ही निर्दयता के साथ युद्ध के लिए तैयार कर रहे है। इसका यह मतलब नही है कि मुझे इस बात मे विश्वास है कि वे निकट भविष्य मे ही युद्ध करना चाहते है। डराकर और

बहकाकर वे विजय प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे है और उस युद्ध से बचना चाहते है जो उनके लिए अत मे घातक सिद्ध हो सकता है। इस बीच वे फासिस्ट शक्तियो को सगठित करने की चेष्टा कर रहे है। कुछ दिन हुए मैने 'न्यूयार्क टाइम्स' मे एक लेख पढा था, जिसमे दक्षिण अमरीका के कुछ भागो मे नाजियो के प्रभाव के सम्बन्ध मे बहुत-से आश्चर्यजनक तथ्य प्रकाशित हुए थे।

मेरी पत्नी और मै आपको और आपकी पुत्री को अपनी शुभकामनाए और स्नेहपूर्ण आदर भेजते है।

आपसे फिर पत्र पाने की आशा मे,

आपका,
अर्न्स्ट तोल्ले

१८९. हाजी मिरजा अली (फकीर साहब इपी) की ओर से

[ईपी के फकीर उत्तर-पश्चिम सीमाप्रान्त के कुछ कबीलो के लोकप्रिय नेता थे। वह ब्रिटिश सरकार के घोषित शत्रु थे और उसे काफी परेशान करते थे।]

शीवाल
(वजीरिस्तान)
१० रज्जब, १३५६ हिजरी
१६ सितम्बर १९३७

आजादीपसन्द लोगो के रहनुमा और हिन्दुस्तानी कौम के सरदार के नाम

हम आपकी खिदमत मे अदब के साथ यह अर्ज करते है

हिन्दुस्तान के बहुत-से अखबारो के जरिए हमे यह मालूम हुआ कि वहा एक सिरे से दूसरे सिरे तक हमारे खिलाफ बहुत जबर्दस्त प्रोपेगैण्डा किया जा रहा है (यह कहने के लिए माफी चाहता हू)। हमारी बिल्कुल वही कैफियत है जो मसीहा की थी, हालाकि उनके मुकाबले मे हमलोग बहुत नाचीज है। हम लोग सच्चाई और जोश के साथ अपनी कौम और अपने मुल्क के तई वफादार है। यही वजह है कि इस जमाने के ईसाइयत के दुश्मन, जो हमे अपनी आजादी से महरूम रखना चाहते है, हमारे खिलाफ

बदनीयती से भरा झूठ बोल रहे है। लेकिन, जनाबेआला, आपको हम इतमीनान दिलाना चाहते है कि जबतक इन ज़ालिमो को हम लोग अपनी तलवार की नोक से अपनी जमीन से निकाल बाहर न करेगे या इस कोशिश मे खुद फना न हो जायगे तबतक सरकार हिन्द और हमारे दरमियान अमन कायम नही हो सकता। हमारे नजदीक आजादी का एक लमहा आरामतलब गुलामी के हजारो बरस से बेहतर है। (चाहे इस गुलामी से हमारी दुनियवी कैफियत कितनी ही बेहतर क्यो न हो।)

आगे हम यह अर्ज और करना चाहते है कि बन्नू और डेरा इस्माइल खा के करीब वक्तन-फ-वक्तन लोगो के जबर्दस्ती उडाने और डकैतियो के जो मामले सुनाई पडते है वे सब अग्रेजो के एजेण्टो की कारस्तानी के नतीजे है। इन बदफेलियो की हम हरगिज ताईद नही करते। हमारा मजहव इस तरह की बातो की साफ-साफ मुमानियत करता है। जो लोग इस किस्म के जुर्म करते है, इस्लाम के बमूजिब वे लोग 'जालिम' और 'मरदूद' है। इस्लाम से उनका कोई ताल्लुक नही। इस्लाम अमन और सुलह का पैगाम लाया है। वह जुल्म और ज्यादती की ताईद नही करता। ऐसी हरकते साफ तौर पर शैतानी और हैवानी है।

इस्लाम दुनिया मे तनाजो और जग को पसन्द नही करता। फिर भी जुल्म के आगे सिर झुका देना या एक बुजदिल की तरह जालिम के आगे घुटने टेक देना इस्लाम की तालीम के खिलाफ है। इस्लाम ने बुजदिलो पर बदतरीन लानते भेजी है।

आपको, जनाबेआला, यह सफाई के साथ समझना है कि जालिम सरकार और हमारे बीच आज की यह लडाई पूरे तौर पर इसलिए चल रही है कि हमारी आजादी के ऊपर बिला वजह हमला किया गया है, न कि इसलिए कि हममे इस्लाम के प्रोपेगैन्डा का जुनून है। अल्लाह ने मजहब के मामले मे कुरानशरीफ मे यह साफ-साफ हिदायत दी है कि—"ला इकराहा फिद्दीन", यानी मजहब के मामले मे कोई जबर्दस्ती नही होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि मजहव के मामले मे हर शख्स आजाद है। जिस मजहब को चाहे वह कुबूल करे और मुसलमान, हिन्दू या ईसाई जो चाहे बने। इसलिए कुरान से यह साफ है कि मजहव लोगो के मिजाज, अन्द-

रूनी कैफियत और रूहानी नज़रिये से ताल्लुक रखता है। इसीलिए कयामत का एक दिन मुकर्रर है कि जब, इन्सान नही, बल्कि अल्लाह इस ज़िन्दगी के आमालो के लिए सजा और इनाम अता करेगे। मोहतरम जनाब! आप हमारी बात पर ऐतबार कीजिये कि वजीरिस्तान की इस वक्त जो कैफियत है, उसके लिए (अग्रेजो के) जुल्म और हिन्द सरकार की हमला करके हमारे मुल्क को फतह करने की नीति जिम्मेवार है। इसके अलावा और कोई वजह नही। चुनाचे जबतक हम लोगो मे जिदगी की एक सास भी बाकी है तबतक हमारे लिए गुलामी कुबूल करना नामुमकिन है। अल्लाह के फजल से हिन्दुस्तान भी अपनेको इनके हाथो से आजाद करे और हम भी तलवार की नोक पर अपने मुल्क को आजाद करे। अल्लाह हमारी मुराद पूरी करे! आमीन!

मोहर
हाजी मिरजा अली
(फकीरसाहब इपी)

१९० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन, बगाल
२० सितम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

यह आश्वासन मेरे लिए बडा मूल्यवान् है कि विपत्ति के समय और जब जीवन की पकड सहसा ढीली पड जाय तो तुम्हारे स्नेह का पूरा-पूरा भरोसा कर सकता हू। इससे मेरा हृदय बहुत अभिभूत हुआ है।

सस्नेह तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

१९१ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१, अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

जहातक मेरा सबध है, पट्टाभि भी अच्छा चुनाव है। परन्तु मेरे खयाल से समिति के सदस्यो की राय ले लेनी चाहिए।

पता नही, वर्धा मे होनेवाले शिक्षा-सम्मेलन मे शरीक होने का समय तुम निकाल सकोगे या नही। इसके लिए तुम्हे निमत्रण गया है। समय निकाल सको तो मै चाहता हू कि आ जाओ। परन्तु मै यह नही चाहता कि अधिक महत्वपूर्ण कार्य के कारण तुम्हारी और कही आवश्यकता हो तो भी तुम सम्मेलन के लिए समय निकालो। बेशक दो दिन तक जोर पडेगा, परन्तु तुम आ सको तो तुम्हारे रहने से शाति मिलेगी। सस्नेह,

बापू

फिर से--

इस पत्र के साथ सैयद हबीब से मेरे पत्र-व्यवहार का परिणाम एक चैक और पत्र के रूप मे भेजा जा रहा है। मैने तुम्हारे साथ हुई बातचीत का जिक्र किये बिना उन्हे इधर-उधर से रुपया ले लेने के लिए खूब झिडक दिया है।

१९२ रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन, बगाल

१० अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र के लिए धन्यवाद। तुमसे मिलने की सभावना से मै बहुत ही प्रफुल्लित हू और तुम्हे शातिनिकेतन आने का कष्ट नही उठाना पडेगा। मै कल ११ अक्तूबर से लगाकर महीने के अत तक कलकत्ता मे रहने की आशा करता हू और २५ तारीख को, या जिस दिन भी तुम्हे सुविधा हो, तुमसे मिलने की उम्मीद करूगा। तुम जानते हो, मै अभी तक डाक्टरो के हाथो मे हू, जो प्रकृति की ओर से यह धमकी दे रहे है कि अगर मैने कलकत्ता मे बिजली का एक जादुई इलाज कराना स्वीकार न किया तो बडा भयकर दड मिलेगा। तुम्हे समय मिले तो एक बार नही, दो बार मुझसे मिल जाना। मै शायद शहर के बाहर किसी उद्यान-भवन मे ठहरूगा, और कृष्ण जो उन दिनो कलकत्ता मे होगा, तुम्हे मेरे पास ले आयेगा।

सप्रेम तुम्हारा,

रवीन्द्रनाथ टैगोर

१९३ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१२ अक्तूबर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। २५ तारीख को यहा से चलकर कलकत्ता आने की कोशिश कर रहा हू। तब मुझे काग्रेसी प्रान्तो मे मन्त्रि-मडलो के कार्य-कलाप का सब हाल बताना। आशा है, गले की खराबी और जुकाम थोडे ही दिन रहे होगे और तुमने पजाब का श्रम बरदाश्त कर लिया होगा। सरहद की जलवायु तो बहुत ही सुखद होगी। मै कितना चाहता हू कि कम-से-कम कुछ ही समय के लिए तुम आराम कर लो। सस्नेह,

बापू

१९४ अमृत शेर गिल की ओर से

[अमृत शेर गिल एक अत्यत प्रतिभाशाली कलाकार थीं, जिन्होने अपना शिक्षण पेरिस में पाया था और जिनके चित्र पेरिस की अकादमी में प्रदर्शित किये गए थे। चढती जवानी में ही अचानक उनकी मौत हो गई।]

६ नवम्बर १९३७

कुछ ही देर पहले किसीने मुझसे कहा, "आप जानती है, जवाहरलाल नेहरू बीमार है।" मुझे यह पता नही था। मै कभी अखबार नही पढती।

आपके बारे मे बहुत सोचती रहती हू, परन्तु किसी तरह—शायद इसी कारण—आपको कभी लिखने की इच्छा अनुभव नही हुई।

आपका पत्र पाकर चकित रह गई। कितना आनददायक था वह! क्या यह भी कहने की बात है?

पुस्तक के लिए धन्यवाद।

आम तौर पर जीवनियो और आत्मकथाओ को मै नापसद करती हू। उनमे झूठ की भनक होती है। उनमे अतिरजना अथवा प्रदर्शन-मात्र होता है। परन्तु मेरा विचार है, आपकी आत्मकथा मुझे पसद आयेगी। कभी-कभी आप अपने प्रभा-मडल को पृथक् कर सकते है। आपमे यह कहने की क्षमता है कि "पहले-पहल मैने जब समुद्र को देखा", जबकि दूसरे लोग कहेंगे, "पहले-पहल जब समुद्र ने हमारे दर्शन किये।"

चाहती हू, आपको ज्यादा अच्छी तरह जानू। मै उन लोगो के प्रति हमेशा आकर्षित हो जाती हू, जो इतने परिपूर्ण होते है कि वे असगत हो सकते है—बेसुरे हुए बिना, और जो अपने पीछे शोक-सताप के स्निग्ध धागे नही छोड जाते।

मै नही सोचती कि जीवन की दहलीज पर ही मनुष्य अपने-आपको अव्यवस्थित अनुभव करता है। होता यह है कि दहलीज पार करने के बाद ही उसे पता चलता है कि जो चीजे पहले सीधी-सादी मालूम होती थी और जो भावनाए स्वाभाविक लगती थी, वे ही अब अनतगुनी यातनादायक और जटिल है, और यह कि केवल असगति मे ही सगति होती है।

परन्तु वास्तव मे आपका मस्तिष्क व्यवस्थित है।

मुझे नही लगता कि आपकी मेरे चित्रो मे सचमुच रुचि थी। आपकी आखे मेरे चित्रो पर थी, परन्तु आप उन्हे देख नही रहे थे।

आप कठोर नही है। आपका चेहरा सौम्य है। मुझे आपका चेहरा अच्छा लगता है। वह भावनाशील, उद्दीपक और साथ ही अनासक्त है। मै एक कतरन साथ भेजती हू, जिसे मेरे पिता ने आपके पास भेजने के लिए कहा था। यह उन्हीकी लिखी हुई थी।

आपकी,

अमृत शेर गिल

१९५ सरोजिनी नायडू की ओर से

महात्माजी का शिविर,

कलकत्ता

१३ नवम्बर १९३७

मेरे प्रिय जवाहर,

मै बैबेल की मीनार के आधुनिक सस्करण मे से लिख रही हू। वह 'छोटा-सा इन्सान'[1] निस्सग भाव से बैठा पालक और उबली हुई ककडी खाने मे लगा है, जबकि उसके चारो ओर ससार-सागर के ज्वार-भाटे मे बगाली, गुजराती, अग्रेजी और हिंदी की लहरे उठकर परस्पर टकरा रही है। विधान और उसके साथी इस व्यक्ति की अपनी स्वास्थ्य-सबधी हठ-

[1]. गाधीजी की ओर संकेत है।

घर्मी से हार चुके है। वह सचमुच वीमार है सिर्फ अपनी सूखी हड्डियो और पतले होते खून मे ही नही, वल्कि अपनी अतरात्मा के भीतर। अपने युग का सवसे अकेला और व्यथित व्यक्ति हिन्दुस्तान का भाग्य-पुरुष अपनी ही नियति के कगार के समीप

दूसरे भाग्य-पुरुष तुम हो, जिसे मै जन्मदिवस की शुभकामनाए भेज रही हू। तुम्हे ये वक्त से नही मिलेगी, क्योकि वीच मे तुम्हारी चिट्ठी-पत्री पर नजर रखनेवाली आखे है। पिछले दो वर्षो से मै तुम्हारे अकेलेपन को और तुम्हारी व्यथा को तीव्रता से अनुभव करती रही हू और यह जानती रही हू कि और कोई चारा नही।

आनेवाले वर्ष मे तुम्हारे लिए मै क्या कामना करू ? सुख ? शाति ? विजय ? ये सव वस्तुए जो दूसरे लोगो को परम प्रिय है, तुम्हारे लिए गौण है करीव-करीव प्रासगिक है। मे तुम्हारे लिए कामना करती हू, मेरे प्रिय अटूट निष्ठा और अडिग सत्य साहस की, अपने काटोभरे रास्ते पर चलने के लिए, जिसपर आजादी की—व्यक्तिगत स्वाधीनता की नही, वल्कि एक राष्ट्र की मुक्ति की—चाह रखनेवाले और उसे अपनी जान से अधिक मूल्यवान माननेवाले हर व्यक्ति को चलना ही पडता है। उस ढालू और खतरनाक रास्ते पर तुम मजवूती के साथ चलते जाना चाहे दुख और व्यथा और अकेलापन ही हाथ आये। याद रखना कि तुम्हारे सारे त्याग का चरम वरदान स्वाधीनता ही है पर तुम्हे अकेले नही चलना पडेगा।

तुम्हारी स्नेहमयी,
सरोजिनी

१९६ महात्मा गाधी के नाम

१४ नवम्बर १९३७

प्रिय वापू,

महासमिति के अधिवेशन पर आपका लेख मैने अभी पढा। मैसूर के प्रस्ताव के वारे मे आपने कहा है कि महासमिति के लिए वह अनियमित था। यदि ऐसी बात थी तब तो उसपर चर्चा होने देना मेरा काम नही था और मुझे उसपर रोक लगा देनी चाहिए थी। मुझे किसी ऐसे सवैधानिक नियम की जानकारी नही है, जिससे यह नतीजा निकलता हो और इस तरह

का कोई नियम हो तो ही ऐसे प्रस्ताव को रोका जा सकता है जो मामूली तौर पर रखा जाय और महासमिति का बहुमत जिसका समर्थन करे। सविधान को छोड दे तो भी मुझे काग्रेस या महासमिति के पहले के किसी ऐसे फैसले का पता नही है, जिसमे यह कहा गया हो कि ऐसे मामलो पर विचार नही होना चाहिए। ऐसा कोई प्रस्ताव होता तो भी मेरी समझ मे नही आता कि वह महासमिति को किसी मामले पर विचार करने से, यदि वह विचार करना चाहे तो, कैसे रोक सकता है, जबतक कि उस प्रस्ताव मे कोई नियम न बना लिया जाय। महासमिति को किसी ऐसे प्रस्ताव पर विचार करने की पूरी आजादी है, जो खुद उसके पास किये हुए किसी पिछले प्रस्ताव के खिलाफ जाता हो, लेकिन अगर कोई अमल या कार्य-विधि का नियम है तो जबतक महासमिति उसे बदल नही देती तबतक उसपर अमल करना पडता है। ऐसे किसी नियम का तो सवाल नही है, परन्तु मुझे तो किसी ऐसे प्रस्ताव का भी पता नही है, जिसमे ऐसी नीति तय की गई हो, जिसका मैसूर के प्रस्ताव से उल्लघन होता है। हमारे जारी किये हुए पहले के बयानो मे उल्लेख किया गया है कि काग्रेस रियासतो मे दखलदाजी न करने की नीति का अनुसरण करना चाहती है। वे बयान स्वय महासमिति को दखल देने से, यदि वह दखल देना चाहती हो, रोक नही सकते। मै नही समझ सकता कि कानूनी शब्द 'अनियमित' कैसे लागू किया जा सकता है।

एक और सवाल उठता है कि दखल क्या है। क्या किसी प्रस्ताव मे किसी राज्य का जिक्र करना ही दखलदाजी है? क्या नागरिक स्वतत्रताओ की माग अथवा दमन की निदा दखलदाजी है? यदि ऐसा है तो काग्रेस खुद पिछले दो वर्षो मे निश्चित और असदिग्ध शब्दो मे उसकी दोषी रही है।

महासमिति के मैसूरवाले प्रस्ताव की भाषा बहुत खराब है और मै किसी भी सूरत मे नही चाहता था कि अभी महासमिति उसे पास करे। लेकिन इस मामले से मेरी भावनाओ का सबध नही है। मुझे तो एक लोक-तत्री सम्मेलन के अध्यक्ष की हैसियत से काम करना पडता है। प्रस्ताव मैसूर मे दमन की निदा का था। यह दमन कैसा भी हो तो क्या भविष्य मे राज्य के दमन की निदा करने से भी हमे परहेज रखना है? अगर इस दमन मे खुद काग्रेस पर हमला करना, हमारे झडे का अपमान करना या हमारे सग-

ठन पर रोक लगा देना आदि बाते होती है तो क्या हम चुप रहे ? इन बातो की सफाई हो जानी चाहिए ताकि हमारे दफ्तर और हमारे सगठन को निश्चित रूप से मालूम हो जाय कि हमे क्या ढग अख्तियार करना है।

आपने कहा है कि महासमिति को कम-से-कम दूसरे पक्ष की बात सुने बिना यह प्रस्ताव पास नही करना चाहिए था। क्या आपके ख़याल से हमारे लिए यह सभव है कि हम राज्यो मे जाकर जाच करने के लिए समितिया नियुक्त करे ? क्या रियासते रजामन्द होगी ? मैंने रियासतो को कई मौको पर यह सुझाव दिया है—जाच-समिति का नही, परन्तु इतना ही कि कोई व्यक्ति वहा जाकर दोनो ओर से जाच कर ले। इसको उन्होने हमेशा ठुकराया है।

यह मैसूरवाला मामला लबे समय से चला आ रहा है। कर्नाटक प्रदेश काग्रेस कमिटी ने इस मामले मे कुछ कदम उठाये है। उसके मत्री ने मैसूर के दीवान से लबी मुलाकात की है। मैंने दीवान को बार-बार लिखा है और उनके सामने बहुत-से निश्चित मामले रखे है। उन्होने लबे जवाब दिये है और मेरी राय मे राज्य की नीति को मुनासिब साबित नही कर सके है। महीनो से मै मैसूर के काग्रेसियो को आज्ञा भग करने से रोकता रहा हू और हाल ही मे नरीमान के सिवाय और किसीने आज्ञा भग की भी नही। अन्त मे कर्नाटक प्रातीय काग्रेस समिति ने स्थिति पर विचार किया और मैसूर की दमन-नीति की निदा की और आगे के लिए हमसे निर्देश मागे कि उन्हे क्या करना चाहिए। इसलिए यह कहना सही नही है कि महासमिति ने किसी-को उसकी बात सुने बिना या एक पक्ष की बात सुनकर किसीकी निदा की हो। हमारे लिए जितने मामूली रास्ते खुले हुए थे, उन सबको हमने आजमाया।

यह सब मै आपको लिख रहा हू, क्योकि मै खुद अपने दिमाग मे साफ रहना चाहता हू कि हमारी नीति क्या है। महासमिति ने और मैंने जो रास्ता अख्तियार किया, उसपर आपने ऐतराज किया है। मै अभी तक समझ नही पाया कि मैंने कैसे और कहा भूल की है और जबतक मै यह

समझ नही लेता तबतक दूसरी तरह काम नही कर सकता।

महात्मा गाधी
वर्धा
मध्यप्रदेश

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

१९७. महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा जाते हुए
१८ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा खयाल है कि उस भयकर रविवार की रात मे और सोमवार के मौन मे जब तुम मेरे आसपास मडरा रहे थे तब तुम्हारी आखो मे मै वह खानगी पत्र पढ सकता था। कमजोरी ने अभी मुझे छोडा नही है। सारे मानसिक श्रम से मुझे लम्बे विश्राम की आवश्यकता है, परन्तु शायद वह मिल नही सकता। यह पत्र तुम्हे यह खबर देने को लिख रहा हू कि मैने बगाल के कैदियो के बारे मे क्या किया है। मै यह भी जानना चाहता हू कि मेरा काम तुम्हे पसन्द आया है या नही। समझौते की बातचीत का दिमाग पर काफी बोझ रहा है। उसे शुरू करने से पहले मैने दोनो भाइयो से परामर्श कर लिया था कि बातचीत के द्वारा राहत प्राप्त करना वाछनीय है या नही। परिणाम के बारे मे उदासीन रहना और रिहाई के लिए जब भी हो जाय, लोकमत के विकास पर निर्भर रहना सम्भव था। दोनो भाई जोरो से बातचीत के पक्ष मे थे, जबकि सार्वजनिक आन्दोलन चलता रहे। मैने अपनी योजना भी बताई। वह उसी ढग की थी जैसी अडमान के कैदियो के नाम मेरे तार मे बताई गई थी। तदनुसार मै देवली से वापस लाये गए नजरबन्दो से और कल रात को हिजली के कैदियो से मिला। मत्रियो ने उन नजरबन्दो को, जिन्हे वह 'गाव और घर' मे 'नजरबन्द' कहते है, लगभग तुरन्त छोड देना स्वीकार कर लिया है और नजरबन्दो की छावनियो मे, जिन्हे छोडना वे सुरक्षित समझेगे उन्हे भी, चार महीने के भीतर रिहा कर दिया जायगा। बाकी के लिए, यदि वे पहले ही न छोड दिये गए हो तो, मेरी सिफारिश मान ली जायगी। मेरी सिफारिश नजरबन्दो के वर्तमान विश्वास के पता लगा लेने पर निर्भर रहेगी। यदि मै सरकार से कह सकूगा कि लोग स्वाधीनता

ठन पर रोक लगा देना आदि बाते होती है तो क्या हम चुप रहे ? इन बातो की सफाई हो जानी चाहिए ताकि हमारे दफ्तर और हमारे सगठन को निश्चित रूप से मालूम हो जाय कि हमे क्या ढग अख्तियार करना है।

आपने कहा है कि महासमिति को कम-से-कम दूसरे पक्ष की बात सुने बिना यह प्रस्ताव पास नही करना चाहिए था। क्या आपके ख़याल से हमारे लिए यह सभव है कि हम राज्यो मे जाकर जाच करने के लिए समितिया नियुक्त करे ? क्या रियासते रजामन्द होगी ? मैने रियासतो को कई मौको पर यह सुझाव दिया है—जाच-समिति का नही, परन्तु इतना ही कि कोई व्यक्ति वहा जाकर दोनो ओर से जाच कर ले। इसको उन्होने हमेशा ठुकराया है।

यह मैसूरवाला मामला लबे समय से चला आ रहा है। कर्नाटक प्रदेश काग्रेस कमिटी ने इस मामले मे कुछ कदम उठाये है। उसके मत्री ने मैसूर के दीवान से लबी मुलाकात की है। मैने दीवान को बार-बार लिखा है और उनके सामने बहुत-से निश्चित मामले रखे है। उन्होने लबे जवाब दिये है और मेरी राय मे राज्य की नीति को मुनासिब साबित नही कर सके है। महीनो से मै मैसूर के काग्रेसियो को आज्ञा भग करने से रोकता रहा हू और हाल ही मे नरीमान के सिवाय और किसीने आज्ञा भग की भी नही। अन्त मे कर्नाटक प्रातीय काग्रेस समिति ने स्थिति पर विचार किया और मैसूर की दमन-नीति की निदा की और आगे के लिए हमसे निर्देश मागे कि उन्हे क्या करना चाहिए। इसलिए यह कहना सही नही है कि महासमिति ने किसीको उसकी बात सुने बिना या एक पक्ष की बात सुनकर किसीकी निदा की हो। हमारे लिए जितने मामूली रास्ते खुले हुए थे, उन सबको हमने आजमाया।

यह सब मै आपको लिख रहा हू, क्योकि मै खुद अपने दिमाग मे साफ रहना चाहता हू कि हमारी नीति क्या है। महासमिति ने और मैने जो रास्ता अख्तियार किया, उसपर आपने ऐतराज किया है। मै अभी तक समझ नही पाया कि मैने कैसे और कहा भूल की है और जबतक मै यह

समझ नही लेता तबतक दूसरी तरह काम नही कर सकेगा।

महात्मा गाधी

वर्धा

मध्यप्रदेश

सप्रेम आपका,

जवाहरलाल

१९७. महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा जाते हुए

१८ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा ख़याल है कि उस भयकर रविवार की रात मे और सोमवार के मौन मे जब तुम मेरे आसपास मडरा रहे थे तब तुम्हारी आखो मे मै वह खानगी पत्र पढ सकता था। कमजोरी ने अभी मुझे छोडा नही है। सारे मानसिक श्रम से मुझे लम्बे विश्राम की आवश्यकता है, परन्तु शायद वह मिल नही सकता। यह पत्र तुम्हे यह खबर देने को लिख रहा हू कि मैने बगाल के कैदियो के बारे मे क्या किया है। मै यह भी जानना चाहता हू कि मेरा काम तुम्हे पसन्द आया है या नही। समझौते की बातचीत का दिमाग पर काफी बोझ रहा है। उसे शुरू करने से पहले मैने दोनो भाइयो से परामर्श कर लिया था कि बातचीत के द्वारा राहत प्राप्त करना वाछनीय है या नही। परिणाम के बारे मे उदासीन रहना और रिहाई के लिए जब भी हो जाय, लोकमत के विकास पर निर्भर रहना सम्भव था। दोनो भाई जोरो से बातचीत के पक्ष मे थे, जबकि सार्वजनिक आन्दोलन चलता रहे। मैने अपनी योजना भी बताई। वह उसी ढग की थी जैसी अडमान के कैदियो के नाम मेरे तार मे बताई गई थी। तदनुसार मै देवली से वापस लाये गए नजरबन्दो से और कल रात को हिजली के कैदियो से मिला। मत्रियो ने उन नजरबन्दो को, जिन्हे वह 'गाव और घर' मे 'नजरबन्द' कहते है, लगभग तुरन्त छोड देना स्वीकार कर लिया है और नजरबन्दो की छावनियो मे, जिन्हे छोडना वे सुरक्षित समझेगे उन्हे भी, चार महीने के भीतर रिहा कर दिया जायगा। बाकी के लिए, यदि वे पहले ही न छोड दिये गए हो तो, मेरी सिफारिश मान ली जायगी। मेरी सिफारिश नजरबन्दो के वर्तमान विश्वास के पता लगा लेने पर निर्भर रहेगी। यदि मै सरकार से कह सकूगा कि लोग स्वाधीनता

की प्राप्ति के लिए हिसक उपायो मे विश्वास नही रखते और समय-समय पर काग्रेस द्वारा पसन्द की गई काग्रेस की प्रवृत्तियो मे लगे रहेगे तो उन्हे छोड दिया जायगा । नीति की घोपणा किसी भी समय की जा सकती है । कई जेलखानो मे और हिजली की छावनी मे कैदियो के साथ जो वातचीत हुई उसका व्यौरा देने की मुझे आवश्यकता नही है । मुझे पता नही कि यह सब तुम्हे पसन्द है या नही । यदि वहुत नापसन्द हो तो मै चाहूगा कि तुम मुझे तार कर दो । नही तो मै तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा करूगा ।

अहमदावाद की हडतालो से मुझे अशाति हुई । अखवारो से जो कुछ जानकारी होती है उसके सिवा उनके वारे मे मै कुछ नही जानता। शोला-पुर के वारे मे भी यही वात है । यदि हम स्थिति पर कावू नही रख सकते, या तो इसलिए कि कुछ काग्रेसी लोग काग्रेस के अनुशासन को नही मानना चाहते, या इसलिए कि जो लोग काग्रेस के प्रभाव से वाहर है उनकी प्रवृत्तियो का नियत्रण काग्रेस नही कर सकती तो हमारा पदारूढ रहना काग्रेस के हित मे वाधक सिद्ध हुए विना नही रहेगा ।

'वन्देमातरम्' का विवाद अभी तक शान्त नही हुआ है । कार्य-समिति के निश्चय पर अनेक वगालियो को हार्दिक दु ख है । सुभाष ने मुझे वताया कि वह वातावरण को शात करने की कोशिश कर रहे है ।

आनेवाले गवर्नर के पद सभाल लेने के वाद जल्दी ही शायद मुझे वगाल लौट आना होगा ।

आशा है, तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा होगा । सरूप के वारे मे अखवारो की खवर चिन्ताजनक थी । उसपर जो जोर पड रहा है, क्या उसका स्वास्थ्य उसे सहन नही कर सकता है ?

यह पत्र नागपुर के निकट आते-आते लिखा जा रहा है । हम आज शाम को वर्धा पहुच रहे है ।

सस्नेह,

वापू

['दो भाई' शायद शरत बोस और सुभाष बोस है ।]

[काग्रेस कार्यसमिति के इस निर्णय पर कि राष्ट्रीय अवसरो पर 'वन्देमातरम्' गान की केवल प्रथम पक्तिया ही गाई जाय, एक साधारण-सा विवाद उठ खडा हुआ था ।]

१९८. महादेव देसाई की ओर से

मगनवाड़ी, वर्धा
१९ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

८ तारीख का तुम्हारा पत्र मिला। सेम्युअल के आगमन के विषय में मैंने तुम्हारी सब बात समझ ली और मै पोलक को लिख रहा हू कि वह तुमसे मिलना चाहते हो तो तुम खुशी से मिलोगे।

अनूपचन्द शाह के प्रस्ताव के सबध मे तुमने गाधी-सेवा-सघ के अस्तित्व के बारे मे उन्हे लिखकर बहुत अच्छा किया। अब मै उन्हे लिख रहा हू।

मैसूर-सबधी प्रस्ताव पर अपने लेख के विषय मे बापू खुद तुम्हारे १४ तारीख के पत्र का उत्तर देते, परन्तु वह अपना जवाब लिखवा नही सके। वह इतने अधिक क्षीण हो गये है कि डाक्टरो के ख़याल मे उन्हे परिश्रम करने देना खतरनाक होगा, परन्तु मैंने तुम्हारे पत्र का सार उन्हे बता दिया था। उन्होने मुझसे कहा कि उनकी राय मे हस्तक्षेप न करने की नीति का स्पष्ट भग हुआ है। वह जानते है कि पहले भी काग्रेस ने हस्तक्षेप का दोष किया है, परन्तु वह यह भी जानते है कि वह ठीक नही था और यदि उन्हे इसे बन्द करना अति आवश्यक प्रतीत न हुआ होता तो वह यह लेख न लिखते। उन्हे खुशी है कि तुम मानते हो कि प्रस्ताव की भाषा अच्छी नही थी और उन्हे भरोसा है कि यदि कार्य-समिति के दूसरे सदस्य इस बात की तरफ तुम्हारा ध्यान दिलाने की सावधानी रखते कि प्रस्ताव नियम-विरुद्ध है तो तुम प्रस्ताव पर हुए भापणो को रोक देते, क्योकि वे भाषण प्रस्ताव से भी बुरे थे। बापू चाहते है कि मै तुम्हे विश्वास दिला दू कि उनका इरादा तुम्हारी निन्दा करने का कभी नही था। तुम सिर तक काम मे डूबे हुए थे और कार्य-समिति के साथियो का फर्ज था कि तुम्हारा ध्यान दिलाते। तुम इतने अधिक अनुशासन-प्रेमी हो कि उनकी सलाह की उपेक्षा नही कर सकते थे, परन्तु बापू का विचार है कि वे लोग अपने कर्तव्य मे चूक गये।

बापू के दिमाग मे जो भावना है, उसे मेरी यह नीरस और भौडी भाषा व्यक्त नही कर सकती। जिस दिन उन्हे दौरा पडा. इस प्रस्ताव पर उन्हे बहुत

गहरी चिन्ता थी, और आज भी वह उसी हालत मे मालूम हुए, जब वह इस मामले की बातचीत कर रहे थे। मैंने उन्हे रोक दिया और कहा कि उनके विचारो को मै यथाशक्ति ज्यो-का-त्यो तुमतक पहुचा दूगा।

रक्त-चाप मे इतना उतार-चढाव रहता है कि डाक्टरो के खयाल से बापू को बहुत स्वतत्रता नही देनी चाहिए। वह एक पखवारे के भीतर कलकत्ता जाना चाहते थे, परतु वह स्वय मानते है कि शारीरिक दृष्टि से यह असभव है। उन्होने कम-से-कम उस समय तक बिस्तरे मे ही रहने का वचन दिया है, जबतक कि खून का दबाव एक पखवारे या इससे अधिक तक के लिए स्थिर न हो जाय। प्यार।

तुम्हारा,
महादेव

१९९ येगनेस् स्मेड्ली की ओर से

जनरल हेडक्वार्टर्स,
चाइनीज़ एर्थ रूट आर्मी, (रेड आर्मी)
वेस्टर्न शान्सी प्रॉविन्स, चीन
२३ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री नेहरू,

मै आपको फिर एक आवश्यक कार्य के सबध मे पत्र लिख रही हू।

जापान द्वारा अधिकृत प्रदेशो मे—उदाहरण के लिए सुयुआन, चहर और होपेई प्रान्तो मे—हजारो चीनी विद्यार्थियो, मजदूरो और किसानो ने विद्रोह करके स्वयसेवक दल बना लिया है और वे जापानियो से लड रहे है। उनके पास हथियार है, लेकिन न तो जाडे मे पहनने के कपडे है, न जूते और अक्सर कई दिनो तक उनके पास भोजन भी नही होता। यहा हमारी सेना बहुत गरीब है और वह उत्तर की जनता को सगठित तथा हथियारो से लैस कर रही है। उसके पास स्वयसेवको के लिए पैसे नही है। अभी-अभी उसने दो हजार लोगो की एक स्वयसेवक सेना को एक हजार डालर की रकम दी है, जो करीब पचास सेट फी आदमी पडता है। यह रकम चार-पाच दिन के भोजन का काम चलाने के लिए दी गई है, जिसका मतलब यह है कि लोगो को करीब-करीब भूखे रहना पडेगा।

क्या इडियन नेशनल काग्रेस चीनी स्वयसेवको के लिए कुछ रुपया दान मे दे सकती है? आज और पिछले हफ्ते भी मैने इस समस्या पर अपने सदर

मुकाम मे बातचीत की थी । हम अमरीको मे और यहा चीन मे भी रुपया जमा करने की कोशिश कर रहे है, हालाकि सभी जगह चीनी जनता बहुत भारी बोझ से दबी हुई है । इसीलिए अब मै इडियन नेशनल काग्रेस से अपील कर रही हू । हमारे स्वयसेवको के लिए कुछ अवश्य भेजिये और अगर आप भेजें तो 'बैक आव चाइना, सिआन्फू शाखा, सिआन, चीन' के नाम बैक-ड्राफ्ट बनाकर नीचे लिखे पते पर भेजे—

मिस येगनेस् स्मेड्ली
हवाई डाक से, द्वारा लिन पेह-चू, ची सिएन च्वाग ११,
हागकाग के मार्ग से । सिआन्फू, शेन्सी प्रान्त, चीन

आप जो कुछ भी करे, फौरन करे, क्योकि जापानी दक्षिण की ओर बढ रहे है । सिर्फ हवाई जहाज से हांगकाग के रास्ते भेजे, क्योकि हागकाग से सियान को हवाई जहाज का सीधा रास्ता है ।

हम आपसे अपील करते है कि आप चीनी जनता को दासता से लडने मे सहायता दे ।

भवदीया,
स्मेड्ली

२००. गोविन्दवल्लभ पन्त के नाम

निजी

२५ नवम्बर १९३७

प्रिय पन्तजी,

मै आज आसाम के लिए रवाना हो रहा हू और दिसम्बर के मध्य से पहले लौटने की सभावना नही है । जाने से पहले आपको लिखना और बताना चाहता हू कि जहातक काग्रेस मन्त्रिमडलो का सवध है, सारे हिदुस्तान मे घटनाए जिस ढग से हो रही है, उससे मुझे बडी तकलीफ हुई है । कार्य-समिति के सदस्यो को मैने जो पत्र भेजे है और जिनकी नकल आपको भी भेजी गई थी, उनमे मैने अपनी भावनाए जाहिर की है । यह राय प्रकट करने मे सयम रखा गया था, परन्तु उस सयम के पीछे विश्वास की तीव्रता थी । यदि मै पारिभाषिक भाषा मे कहू तो काग्रेसी मन्त्रिमडलो की वृत्ति क्राति-विरोधी हो

रही है। अलबत्ता यह जान-बूझकर नही किया जा रहा है, लेकिन जब चुनाव करना पडता है तो झुकाव इस तरफ को है। इसके अलावा आम रवैया जड है। हम जड नही बन सकते, क्योकि इसका मलतब यह हो जाता है कि हम केवल पिछली सरकारो की परम्परा को छोटे-मोटे फर्क के साथ निभा रहे है। सच तो यह है कि हम बहुत अर्से तक जड नही रह सकते, क्योकि दुनिया जड नही है। चुनाव जरूरी तौर से करना पडता है और मुझे डर है कि बहुत बार चुनाव गलत किस्म का होता है।

मुझे पूरा यकीन है कि काग्रेस मत्रिमडलो के आने से हमारी शक्ति बहुत बढ गई है। कुछ तो बिलाशक इसकी वजह उनके द्वारा किये गए शुरू-शुरू के कुछ काम है, लेकिन ज्यादातर तब्दीली मनोवैज्ञानिक थी और वह अनिवार्य थी। लेकिन हम मनोविज्ञान पर अथवा कुछ अच्छे कामो की नेकनामी पर जिन्दा नही रह सकते। हमको अब कई महीने काम करते हो गये। अब हमे ज्यादा बडे नतीजे दिखाने होगे, और अब जबकि आगे बढने के लिए वक्त आ रहा है तो हम पीछे जाने की स्पष्ट वृत्ति का परिचय देते है। अवश्य ही हम पीछे नही जा सकते, क्योकि आन्दोलन इतना प्रबल है कि वह हमे पीछे जाने नही देगा। परन्तु पीछे जाने की कोशिश करके उस आन्दोलन को बहुत कमजोर करते है और ठीक वही काम करते है, जो ब्रिटिश सरकार अनेक वर्षो से हमसे कराने की कोशिश करती रही है अर्थात् फूट पैदा करके काग्रेस से या काग्रेस के एक अग से ऐसी नीति स्वीकार कराई जाय जो असल मे साम्राज्यवादियो के पक्ष की नीति है। यदि ऐसा ही होता दीखता है तब तो हम जितनी जल्दी ही पद छोड दे, उतना ही बेहतर है। मेरा विचार बिल्कुल स्पष्ट है कि हम जितनी तेजी से आगे बढते रहे है, उससे बहुत अधिक तेजी से आगे नही बढ सकते तो हमारा भीतर रहने से बाहर रहना अच्छा है। असल मे फिलहाल तो खास तौर पर मद्रास और बबई मे सवाल पीछे जाने का नही है।

मुमकिन है, मेरा नजरिया गलत हो, परन्तु मै तो अपनी ही रोशनी के अनुसार विचार और काम कर सकता हू, और मुद्दे इतने गभीर है कि उन्हे छिपाया नही जा सकता।

आपका,

जवाहरलाल

२०१ चू तेह की ओर से

सदर मुकाम, एर्थ रूट आर्मी,
शान्सी, चीन
२६ नवम्बर १९३७

प्रिय श्री नेहरू,

हमने यहा के अखबारो मे पढा है कि आपने हमारे स्वतन्त्रता-सग्राम के समर्थन मे हिदुस्तान के कई नगरो मे सार्वजनिक सभाए की । अनुमति दीजिये कि मै चीनी जनता और खास तौर से एर्थ रूट आर्मी (चीन की लाल सेना) की ओर से आपको धन्यवाद दू ।

आप जानते है कि जापानियो ने चीन के बहुत-से शहरो और खास-खास रेल-मार्गो पर अधिकार कर लिया है । हमारी एर्थ रूट आर्मी, जो कि चीनी जनता की क्रातिकारी सेना है, जनता को उस लम्बी लडाई के लिए सगठित और सुसज्जित कर रही है, जिसके अन्त मे हमे विजय और मुक्ति मिलेगी । हमारा यह काम मुश्किल है, क्योकि हमारी सेना निर्धन है । उत्तर मे जहा-जहा भी हमारे अड्डे है, हम किसानो को सहायता दे रहे है और वे बडी तेजी से हमारी सेना का एक अभिन्न अग बनते जा रहे है । किन्तु एक समस्या है, जिसे हम हल नही कर पायेगे और उसीके बारे मे मै अब आपको लिख रहा हू ।

वे प्रदेश जो वास्तव मे जापान के अधिकार मे है—जैसे कि शान्सी के उत्तरी भाग मे रेलवे के किनारे-किनारे का प्रदेश, सुयुयान और चहार प्रान्तो के प्रदेश तथा पश्चिमी होपेई के भी प्रदेश—इन सभी स्थानो मे हजारो किसान, मजदूर और विद्यार्थी आपसे-आप विद्रोह कर उठे है । उन्होने हथियारो पर अधिकार कर लिया है और आक्रमण करनेवाली शाही फौज के खिलाफ वे स्वयसेवक दल बनाकर लड रहे है । इन स्वयसेवको के पास हथियार है, लेकिन उनके पास न गर्म कपडे है, न कम्बल, न जूते । उनके पास खाने का सामान भी बहुत कम है या अक्सर होता ही नही । अभी हाल मे उनमे से दो हजार आदमियो का एक दल इस प्रान्त के उत्तर-पूर्वी हिस्से की हमारी सेना की एक टुकडी मे आ मिला था । हम उनको सिर्फ १ हजार चीनी डालर दे पाते है, जो कि फी आदमी सिर्फ पचास सेट पडता है । यह रकम

करीव एक हफ्ते तक दिन मे एक वार के भोजन के लिए काफी होगी। हमारी समस्याए इतनी वडी है कि हम अपने स्वयसेवको को उनकी आवश्यकता के अनुसार सहायता नही दे पा रहे है। यह एक ऐसी समस्या है जो हमारे सामने हर समय रहती है। हम स्वयसेवको के लिए यहा चीन मे और विदेशो मे भी रुपया जमा करने की चेष्टा कर रहे है। मिस स्मेड्ली ने हमे वताया है कि हम आपको सहायता के लिए लिख सकते है और उन्हे विश्वास है कि इडियन नेशनल काग्रेस, जिसके कि आप अध्यक्ष है, हमारी सेना को कुछ धन दान मे देगी, जोकि वह स्वयसेवको को दे सकेगी। आप यह जान ले कि आप द्वारा भेजे गए पैसे-पैसे का हार्दिक स्वागत किया जायगा और वह स्वयसेवको के पास पहुच जायगा तथा उन्हे अपने सघर्ष को जारी रखने मे सहायता देगा।

सम्भव है, चीनी स्वयसेवको के नाम पर रुपया जमा करने के लिए आप कोई कमेटी वना सके। यदि ऐसा हो सके तो कृपया फौरन कीजिये। हम जानते है कि आपके देश मे ऐसे लाखो लोग है जो हमारे सघर्ष मे हमसे सहानुभूति रखते है और हमारी सहायता के लिए कुछ देने को तैयार होगे।

चीनी जनता की एर्थ रूट आर्मी के सेनापति की हैसियत से मै आपको और हिदुस्तान की नेशनल काग्रेस को और वहा की सारी जनता को यह वताना चाहता हू कि चीन दास नही वना है, न वह हारा है। हम कभी भी दास नही बनेगे, न वनाये जा सकते है। हमारी सेना कभी उत्तरी चीन से पीछे नही हटेगी। हम जनता के साथ रहेगे, उसे सगठित और हथियारो से लैस करते रहेगे और जापानी साम्राज्यवादी सेनाओ से लगातार उस समय तक लडते रहेगे जबतक कि उनका आखिरी आदमी हमारे देश से, जिसमे मचूरिया भी शामिल है, निकाल वाहर न किया जाय। जापानी चाहे कितना भी झूठ वोले और प्रचार करे, उनके धोखे मे न आये। हमारा सघर्ष तो अभी शुरू ही हुआ है। चीनी सरकार की नियमित सेनाए लड रही है। हमारी सेनाए कभी भी हराई नही जा सकेगी, क्योकि हम जनता की सेना है और हजारो की बढती हुई सख्या मे हमारे साथी हमारे कधे-से-कधा भिडाकर युद्ध कर रहे है।

हम लोग बहुत ही अनुशासनपूर्ण और अच्छी तरह से सिखाये हुए ल ह सैनिक है और हमारे सभी सिपाहियो को, नए वालियटरो से लेकर कमान्डरो तक को, बहुत ऊची राजनैतिक शिक्षा मिली हुई है। एशिया मे आज हम जो भूमिका अदा कर रहे है और भविष्य मे करेगे उसके प्रति हम पूरी तरह से जागरूक है। हम जानते है कि हम सिर्फ चीनी राष्ट्र और चीनी जनता की लडाई नही लड रहे है, बल्कि हम सारे एशिया की जनता की लडाई लड रहे है और हम दलित राष्ट्रो तथा दलित वर्गो की मुक्ति के लिए लडनेवाली विश्व-सेना का एक भाग है। अपनी इसी जागरूकता के कारण, हम आपसे, जो भारत की महान जनता के एक महान नेता है, अपने सघर्ष मे हर प्रकार की सहायता मागना उचित समझते है। चीनी स्वयसेवको के नाम मे हम आपकी आर्थिक सहायता, दवादारू, डाक्टरी औजारो, युद्ध का काम सीखे हुए डाक्टरो और नर्सो का ही नही, बल्कि उन स्वयसेवको का भी स्वागत करेगे जो हमारी सेना के स्वयसेवक दलो के साथ लडकर हमारी लडाई के प्रति अपनी एकता की भावना व्यक्त करेगे। हम आपसे प्रार्थना करते है कि आप इस सवाल पर पूरी गभीरता के साथ विचार करे, हमारी सहायता के लिए अपना आन्दोलन और भी तेज कर दे, जापानी सामान के बहिष्कार के आन्दोलन को और भी व्यापक तथा गहरा बना दे और अपनी जनता को हमारे स्वतत्रता-सग्राम की बातो के बारे मे सही जानकारी दे। यदि जापानी चीन पर कब्जा जमाने मे सफल हो जाते है तो एशिया का कोई भी राष्ट्र अनेक वर्षो, शायद बीसियो वर्षो, तक आजादी हासिल नही कर सकेगा। हमारा सघर्ष आपका सघर्ष है।

आपने हमारे लिए अबतक जो कुछ किया है, उसके लिए हमारी सेना एक बार फिर आपका हार्दिक धन्यवाद करती है।

आपका साथी,

चू तेह

कमाडर इन चीफ,

एर्थ रूट आर्मी, चीन

२०२ खलीकुज्जमा की ओर से

लखनऊ
२८ नवम्बर १९३७

प्रिय जवाहर,

कुछ दिन पहले, नत्थी कागजो के साथ मुझे तुम्हारा खत मिला। तुम्हे याद होगा कि पिछली मई मे जब बुन्देलखड का चुनाव लडा जा रहा था, मैंने तुम्हे तफसील से उन खतरो के बारे मे लिखा था, जिनके मुस्लिम अवाम से ताल्लुक पैदा करने की तहरीक उठ खडे होने का मुझे डर था। और मेरे खयाल से मौजूदा हालत काग्रेस की उसी पालिसी की नतीजा है। बावजूद मुश्तरका चुनावो और कम्यूनल एवार्ड के मुस्लिम चुनाव-हलको से काग्रेस के चुनाव लडने के हक को कोई रोक नही सकता, लेकिन मेरी समझ से जबतक मुसलमान मुश्तरका चुनावो के हक मे है तबतक यह ज्यादा बेहतर होता कि मुसलमान अपनी जमात की तरफ से अपने नुमाइन्दे चुनते। बदकिस्मती से मै इस मामले मे तुम्हे एकराय होने के लिए राजी न कर सका। नाखुशगवार वारदातो का सीधा ताल्लुक इन चुनावो से है और जबतक ये चुनाव जारी रहेगे तबतक, मुझे डर है, मौजूदा हालात का कोई हल नही निकल सकता। काग्रेस का मुस्लिम उम्मीदवार और उसके मददगार इस बात का जरूर ऐलान करेगे कि वे उतने ही नेक और पाक मुसलमान है, जितने कि उनके मुखालिफ मुसलिम लीगी, और वोटरो को अपनी-अपनी तरफ करने के लिए दोनो मुखालिफ अपने-अपने मजहबी जोश-खरोश का खुलकर इजहार करेगे। चाहे काग्रेस मुश्तरका चुनाव-हलको से अपने उम्मीदवारो को जिताने मे कामयाब हो भी जाय तब भी जाती तौर से मै ऐसा महसूस करता हू कि जबतक कम्यूनल एवार्ड को ठीक न कर दिया जाय तबतक इस मसले को लडाई की जड बनाना काग्रेस के लिए मुनासिब नही। अभी हाल मे बिजनौर के चुनाव के बाद डाक्टर मुजे ने अपने एक बयान मे काग्रेस को कम्यूनल एवार्ड की धज्जिया उडाये जाने पर मुबारकबाद दी है। मुझे यकीन है, ऐसे किसी खयाल से काग्रेस मुश्तरका चुनाव के तरीके के मातहत मुस्लिम चुनावो मे हिस्सा न लेगी, लेकिन काग्रेस की इस पालिसी का जरूरी नतीजा कम्यूनल एवार्ड को रद्द करना होगा, हालाकि काग्रेस

इस बात से एकराय है कि बिना आपसी समझौते के इसमे न तबदीली की जाय और न रद्दोबदल । लीग और काग्रेस के मुखालिफ खयाल के अलावा मुझे और कोई बात ऐसी नही दिखाई देती कि जिसका ताल्लुक दोनो जमातो के मेबरो के बीच की मौजूदा कड़ुवाहट से हो । और ये बाई-इलेक्शन भी हमेशा नही चलते रहेगे । जब ये खत्म हो जायगे तो लोग बैठकर ठडे दिल से, जो प्रोग्राम और काम हमारे सर पर है, उसके बारे मे सोचेगे । तब मै उम्मीद करता हू कि यह अलगाव बहुत-कुछ खत्म हो जायगा और लोग आपसी कड़ुवाहट को भूल जायगे ।

मुस्लिम लीग ने अब आजादी के मकसद को मान लिया है । उसका यह लाजमी फर्ज होना चाहिए कि वह हर ऐसी मुहीम मे मदद दे, जिसका मकसद हुकूमतशाही का खात्मा हो । जैसे ही काग्रेस लडाई का सरगर्म प्रोग्राम बनायेगी, मुझे यकीन है, लीग पीछे नही रहेगी । वह काग्रेस के साथ कन्धे-से-कन्धे लगाकर लडाई मे हिस्सा लेगी । इसी तरह जहातक असेम्बलियो के अदर काम करने का ताल्लुक है, लीग ने वर्धा के प्रोग्राम को पूरी तरह मान लिया है । लीग के मेबर उसकी ताईद करने को बधे हुए है ।

लोगो पर नामुनासिब असर डालने के बारे मे मौलाना शौकतअली ने जो बयान दिया है, उसकी तफसील के साथ खबर देने की हालत मे मै नही हू, लेकिन फिर भी मै यह मानता हू कि काग्रेस सरकार ने जनाब हाफिज मोहम्मद इब्राहीम से, अपनी वजारत कायम रखते हुए, असेम्बली की मेबरी से जो फिर से चुनाव लडने के लिए इस्तीफा दिलवाया वह अगर पूरी तरह से गैरकानूनी नही तो पक्के तौर पर बहुत गैरवाजिब था । गवर्नमेण्ट ऑव इडिया एक्ट ने गवर्नर को यह हक दिया है कि वह किसी ऐसे आदमी को, जो मेबर नही है, वजीर बना सकता है, बशर्ते कि वह अपने वजीर बनने के छ महीने के अदर अपनेको मेबर चुनवा ले । लेकिन यह कानून इस बात की इजाजत नही देता कि असेम्बली के मेबर की हैसियत से जो आदमी वजीर बनाया गया था वह अपनी वज़ारत तो कायम रख ले और असेबली की मेम्बरी से इस्तीफा दे दे । इसके अलावा आप आसानी से इस बात को समझ सकते है कि ८० बरस की परदेसी हुकूमत ने मुस्लिम जमात के अन्दर से मुखालफत के सारे जज़बात को करीब-करीब खत्म कर

दिया है और अब वह हुकूमत से डरने और अदब करने की आदी हो गई है। कोई शख्स अगर वजीर की हैसियत से चुनाव लडे तो लाजमी तौर पर उसे मुसलमानो की इस कमजोरी से फायदा मिलेगा ही। मैंने वजीरे-आज़म को इस रवैये के खिलाफ अपना ऐतराज भेज दिया था, लेकिन महज़ खत की पहुच के अलावा मुझे कोई जवाब नही मिला। बहरहाल अब तो यह सब पुरानी बात हो गई। जो इत्तिला तुमने मागी है, वह गालिबन नवाब इस्माईल खा दे सकेंगे।

लीग के प्रोपेगैण्डा के तरीके और उसके मेंबरो के ऐतराज करने काबिल और बेढगे तौर से पेश आने के बारे मे जो मिसाले दी गई है, मुझे यकीन है कि जो कुछ तुमको बताया गया है उसमे असलियत और सचाई होगी, लेकिन वह तसवीर का महज एक पहलू है। मुस्लिम काग्रेसमैन, अहरारी और जमियत के लोग, रोजाना जिस तरह गन्दी जबान इस्तेमाल करते है और गालिया देते है और जिस तरह का बेबुनियाद प्रोपेगेण्डा करते है, वह दूसरी तरफ के लिए भी कोई तारीफ के लायक बात नही है। मिसाल के तौर पर मै तुमको बताऊ कि मौलाना अताउल्लाह शाह बुखारी ने अपनी एक तकरीर मे लीग के नुमाइदो को "मुतफहन लाशें" (बदबू देनेवाली लाशे) कहकर बयान किया है। इसी तरह काग्रेस के एक अखबार 'हिन्दुस्तान' ने मुस्लिम लीग के मेंबरो को "भाड" और "मदारी" कहकर गैर-जिम्मेवार अखबारनवीसी की हद कर दी है। लाहौर की एक मसजिद मे लीग के एक हमदर्द पर अहरारो का हमला करना यह जाहिर करता है कि काग्रेस के ये मददगार हिसा की तरफ झुकाव मे वफादारी रखते है। ये लोग इस बात का ऐलान करते है कि ये अलग सियासी जमातो के होने मे यकीन नही करते, फिर भी मुसलमानो मे जो अलग जमात बनाये रखने की कमजोरी है, शायद इसीलिए ये लोग अपना मुस्लिम पार्टी का बिल्ला कायम रखे हुए है। हिन्दुओ और मुसलमानो के बीच की कड़ुवाहट की निस्बत आज मुसलमानो और मुसलमानो के बीच मे कही ज्यादा कड़वाहट है। मुझे यकीन है कि आगे आनेवाले वक्त मे गुस्से और गैरजिम्मेवरी की यह ज्यादती खत्म हो जायगी। जब एक-दूसरे के नज़रिये के बारे मे गलतफहमी का कोहरा और धुध साफ हो जायगे तो हम हिन्दुस्तान की आज़ादी

के लिए कन्धे-से-कन्धे भिडाकर काम कर सकेगे। इस बीच दोनो जमातो के जिम्मेवार मेबरो को अपनी-अपनी जमात के बेलगाम लोगो को समझा-बुझाकर और सही रास्ता दिखाकर कावू मे रखने की कोशिश करनी होगी।

तुम्हारा,
खलीक

२०३ महादेव देसाई की ओर से

मगनवाड़ी, वर्धा
२ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरभाई,

तुम्हारा २७ तारीख का पत्र मिला। मुझे आश्चर्य हुआ कि तुम लिख पाये और इससे भी अधिक आश्चर्य इसपर हुआ कि तुम इतना लम्बा लिख सके। तुम्हारा जो कुछ कहना है उसकी मै कद्र करता हू। मै तुमपर कोई तर्क थोपना ही नही चाहता था, क्योकि मैने मान रखा था कि तुम्हे तर्क की जरूरत नही है, परन्तु तुमने अपने पत्र मे जो अनुरोध किया था उसके प्रकाश मे तुम सिर्फ बापू की राय जानना चाहते थे।

बापू की हालत मे कोई सुधार नही है और हम सब पत्र-व्यवहार उनसे दूर रख रहे है, परन्तु मैने निश्चय किया कि डाक्टरो के आदेश के बावजूद मुझे तुम्हारा पत्र उन्हे सुना देना चाहिए। उन्हें खुशी हुई कि मैने पढकर सुना दिया और अगर उनके लिए ज़रा भी सभव होता तो वह जवाब लिखवा देते। परन्तु इसका तो प्रश्न ही नही था और मै ही अपनी भाषा मे तुम्हे बताने की कोशिश करूगा कि जब उन्होने यह लिखा कि मैसूर-वाला प्रस्ताव अनियमित है तब उनके दिमाग मे क्या था। पता नही, तुम्हें याद हो या न हो कि बापू ने यही बात कार्यसमिति मे भी कही थी। (उन्हे यही खयाल था और जमनालालजी से पूछने पर उन्होने इसका समर्थन किया।) और उन्हे विश्वास था कि इस प्रस्ताव की इजाजत नही दी जायगी। जव उन्हे मालूम हुआ कि वह पास होगया है तो उन्हे आघात लगा।

तुम्हारे अपने ही पत्र मे तुम स्वीकार करते हो कि प्रस्ताव की भाषा

ख़राब थी, परन्तु कदाचित् तुम यह कहोगे कि इससे वह गैरकानूनी नही हो जाता। बापू समझते है कि हो जाता है, क्योकि उसमे राज्य की दमन-नीति का विरोध ही नही किया गया है, वल्कि ब्रिटिश भारत के लोगो से मैसूर के लोगो की भरसक सहायता करने की अपील भी की गई है। यदि इससे लखनऊ के प्रस्ताव की भावना भग नही होती तो और क्या होता है? लखनऊवाला प्रस्ताव वहुत वहस-मुवाहसे के वाद निश्चित हुआ था और उसमे राजेन्द्रवावू की १-८-३५ की नीति-सम्वन्धी घोपणा का प्रतिविंव था और १७-१०-३५ को महासमिति ने उसे मजूर किया था। उस घोपणा का प्रस्तुत अश यह था "परन्तु यह समझ लेना चाहिए कि राज्यो के साथ लडाई जारी रखने का भार और दायित्व स्वय राज्यो के लोगो पर ही रहेगा। काग्रेस तो राज्यो पर मित्रतापूर्ण और नैतिक प्रभाव ही डाल सकती है और यह प्रभाव जहा भी सभव होगा, ज़रूर डाला जायगा। मौजूदा हालात मे काग्रेस के पास और कोई सत्ता नही है, यद्यपि भारत के लोग चाहे अग्रेजो के अधीन हो या राजाओ के या और किसी सत्ता के, वे है भौगोलिक और ऐतिहासिक दोनो दृष्टियो से एक और अविभाज्य। विवाद की गर्मी मे काग्रेस की मर्यादा को अक्सर भुला दिया जाता है। सही बात यह है कि और किसी नीति से सामान्य उद्देश्य ही विफल हो जायगा।"

यह घोषणा उस समय की प्रचलित नीति को ही दोहराना था और लखनऊ के प्रस्ताव ने अधिक-से-अधिक स्पप्ट शव्दो मे यह कहकर कि "हालात को देखते हुए रियासतो की भीतरी आजादी की कशमकश रियासतो के लोगो को खुद ही करनी पडेगी", उस घोषणा को काग्रेस के एक कानून का रूप दे दिया। मैसूरवाले प्रस्ताव के समर्थको ने काग्रेस की उस अपने-आप लगाई हुई मर्यादा को भुला दिया और काग्रेस की चिर-स्वीकृत नीति को भग कर दिया।

अब मै तुम्हारे दूसरे सवाल पर आता हू। तुम कहते हो "बापू यह भी उल्लेख करते है कि महासमिति के प्रस्तावो से सत्य और अहिसा का भग होता है। ये गभीर आरोप है और प्रमाणित होने चाहिए।" इत्यादि। स्वाभाविक है कि जब तुम यह लिख रहे थे तब बापू का लेख तुम्हारे सामने नही था। उन्होने कहा है कि प्रस्ताव (मसानी का) और भाषण 'मर्यादा के

बाहर' थे। उन्होने समझाया है कि कैसे मर्यादा के बाहर थे और फिर वे उनसे कहते है, "इस मामले मे जवाहरलाल नेहरू ने अपने विस्तृत वक्तव्य मे जो कुछ कहा है, उसका अध्ययन करे और उसे हृदयाकित करे।" उसके बाद यह वाक्य आता है "मुझे पक्का विश्वास है कि आलोचक अपने अमल मे सत्य और अहिसा से विचलित हुए।" यह बात खुद प्रस्ताव की अपेक्षा भाषणो के सम्बन्ध मे अधिक कही गई है। तुम्हे खुद कई वक्ताओ को रोकना पडा था और उन्हे सिद्धान्त और नीति तक ही सीमित रहने को कहना पडा था। श्री मसानी ने कहा, "बहुत-से राजनैतिक कैदी छोड दिये गए और पाबन्दिया हटा ली गई, मगर काग्रेसी प्रान्तो मे अभी तक कुछ कैदी है।" क्या यह इस बात को प्रमाणित करने को काफी है कि मत्री लोग साम्राज्यवाद के साथ तादात्म्य कर रहे है या वे हक और सिकन्दर हयात खा जैसे ही बुरे है ? क्या यह कहना सच है कि दमन का सारा शस्त्रागार कायम है, जबकि काग्रेस-मत्रियो के पदारूढ होने के दो मास के भीतर मोपला-अत्याचार कानून उठा दिया गया ? मै और भाषणो का उल्लेख नही करूगा।

मैसूरवाले प्रस्ताव के बारे मे बापू की राय यह थी कि जब हम खुद वहा गये और कानून का सामना किया तब मैसूर राज्य की नीति को दमन-नीति बताना असत्य है। "घृणित दमनास्त्र और राज्य मे से गुजरनेवालो पर लागू करने के लिए छपे हुए आदेश तैयार रखना" सत्यपूर्ण भाषा नही है।

तुम्हारे पत्र के बाकी हिस्से की बात यह है कि तुमने जो कुछ कहा है उसकी बापू बडी कद्र करते है। सिर्फ इसीलिए कि बापू कहते है, किसी चीज को तुम्हारे मान लेने का कोई प्रश्न नही हो सकता और अनुशासन का अर्थ यह कभी नही हो सकता कि "किसी मामले मे किसीकी अपनी बात चुप-चाप स्वीकार कर ली जाय।"

पता नही, तुम इससे पहले अखबारो को अपना बयान जारी कर चुके हो या नही। लेकिन अगर जारी नही किया है तो इस पत्र के प्रकाश मे तुम शायद कुछ तब्दीली करोगे। इस पत्र का या इसके कुछ हिस्सो का तुम जो चाहो सो उपयोग कर सकते हो, हालाकि यह मेरा पत्र है, बापू का नही

और मै इसे वापू को दिखाये विना डाक मे डाल रहा हू। अगर तुम्हे ऐसा लगे कि वयान ज्यो-का-त्यो चला जाय तो तुम उसे जारी करने में स्वतत्र हो, यानी तुम कह सकते हो कि तुम्हे उत्तर तो मिला मगर वह गले उतरने-वाला नही था और तुम्हें अपने ही अन्त करण के आदेश पर चलना चाहिए।

रही वात हमारे कुछ मत्रियो के कामो मे प्रकट होनेवाले सत्य और अहिसा के भग की, सो वापू चाहेंगे कि तुम साफ-साफ और पूरी वात लिखो और उनकी हाल की वीमारी की परवा न करो। कारण, वह भग कही से भी हो, उसकी निन्दा करनी होगी और अगर हमारे मत्री सचमुच अपरावी है तो वे निकाल देने लायक है।

वगाल के मामले मे तुम्हारा जो कुछ कथन है वह वापू ने सव समझ लिया। तुमसे यह आशा न रखकर कि तुम इन रिहाइयो पर 'हर्षोन्मत्त' हो उठोगे, वह तुमसे इतना ही पूछना चाहते थे कि जिस ढग से उन्होने गवर्नर से और मत्रियो से मुलाकात की और कैदियो तथा नजरवन्दो के सवाल पर चर्चा की वह तुम्हे पसन्द आया या नही।

स्नेहाधीन,
महादेव

२०४ येडलफ मायेर्स की ओर से

द्वारा दी टाइम्स ऑव इडिया
वम्बई
६ दिसम्वर १९३७

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मैंने अभी-अभी आपका 'भाषा का सवाल' नाम का पैम्फ्लेट पढा है, जिसमे आपने वेसिक इग्लिश की चर्चा की है। वेसिक मे मुझे साधारण से अधिक रुचि है और मुझे ऐसा लगता है कि अपने उत्साह के वावजूद आप उसके साथ अपने पैम्पलेट मे वहुत ही कम न्याय कर सके है। इसलिए मैं सोच-विचारकर एक ऐसा मुहावरा गढने की चेप्टा करता रहा हू, जिससे सार रूप मे यह स्पष्ट हो जाय कि आपके विवरण मे कहा और कितनी कमी है। तभी मुझे एक उद्धरण का स्मरण हो आया, जो आपने अपनी 'मेरी कहानी' मे दिया है। इसका कारण शायद यह है कि इसके लेखक

प्रोफेसर जॉन ड्यूई खुद बेसिक के एक उत्सुक समर्थक है। उद्धरण इस प्रकार है " किसी आदर्श लक्ष्य के लिए की गई कोई भी कार्रवाई अपने सामान्य और स्थायी मूल्य पर विश्वास होने के कारण एक धार्मिक वस्तु है।"

मेरे लिए बेसिक एक धर्म जैसी चीज है। इसका आशिक कारण यह है कि विचार-विनिमय के सामान्य (बल्कि सहायक) साधन के जरिये एक अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को या विश्वचेतना को जागृत करने की आवश्यक समस्या का एकमात्र व्यावहारिक हल स्पप्टत इसीमे मिलता है। इसके अलावा आशिक कारण यह भी है कि यह एक दैवी शस्त्र प्रतीत होता है, जिसके ज़रिये अगर आदमी चाहे तो शब्द के उस जादू तक पहुच सकता है, जिसने मानवता को कैद कर रखा है और जिससे लोकप्रिय तथा वैज्ञानिक दोनो ही तरह के विचारो पर वह घातक प्रभाव पडता है, जिसकी आपने स्वय अपनी पुस्तक मे चर्चा की है।

आपने अपने पैम्फलेट मे इनमे से एक भी पहलू को नही लिया ह, न अन्तर्राष्ट्रीय पहलू को और न सामाजिक शास्त्र के पहलू को ही। यह मै मानता हू कि बेसिक की चर्चा आपने केवल सयोगवश की है। लेकिन मै समझता हू कि बेसिक का जो व्यापक मानवतापूर्ण ध्येय है वह तो है ही, उसके अलावा भी अगर आपने बेसिक के साथ कुछ अधिक न्याय किया होता तो उससे आपकी बेसिक हिन्दुस्तानी की अपील को बल मिलता और उसकी सम्भावनाओ के प्रति लोगो मे अधिक रुचि उत्पन्न होती। मुझे पता नही कि आपने बेसिक का किस सीमा तक अध्ययन किया है। इसलिए मै आपके पास दो छोटी-छोटी किताबे यह सोचकर भेजने की धृष्टता कर रहा हू कि शायद आपने इन्हे न देखा हो। इनमे उन दो पहलुओ का वर्णन है, जिनका मैने उल्लेख किया है। ये पुस्तके है—स्वय ऑगडन-लिखित 'डेबबेलाइ-जेशन' और रिचार्ड्-लिखित 'बेसिक इन टीचिग ईस्ट एन्ड वेस्ट'। उम्मीद है कि आप इनपर नजर डालने और अवसर आने पर इनमे लिखी बातो का उपयोग करने के लिए समय निकाल सकेगे।

इन सब बातो से निश्चय ही मै एक झक्की मालूम होता होऊगा और कभी-कभी मै सोचता हू कि 'नो मोर वार' (अब और युद्ध नही) तथा

उस जैसे और आन्दोलनो से निराश होकर और हमारे ऊपर सकट के जो भयकर बादल मडरा रहे है उनके कारण, कही ऐसा तो नही कि मुझमे सतुलन की जो कुछ भी भावना थी, उसे अब मै खोता जा रहा हू। फिर भी कुल मिलाकर मुझे इस वात का विश्वास है कि लक्ष्य हमसे चाहे कितनी भी दूर हो और रास्ते की कठिनाइया चाहे कितनी भी बडी हो, हम एक स्थिति पर पहुच गये है, जहा एक समान भापा का प्रचार, वकीलो के शब्दो मे, मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक बन गया है और इसके बिना एक समान लक्ष्य की भावना कभी इतनी मजबूत नही हो सकती कि हमारी राष्ट्रीय प्रतिद्वन्द्विताओ पर विजय पा सके। इसलिए जो कोई भी इसे पास लाने की चेष्टा कर रहा है, वह इतिहास के कदम-से-क़दम मिलाकर आगे बढ रहा है। यह एक महान भावना है और अगर इतिहास और आदर्शवादिता की दृप्टि से मुझे इस बात का विश्वास न भी होता तब भी बेसिक को ससार के कोने-कोने मे शॉ, वेल्स, स्वेन हेडिन, हॉगवैन, ड्यूयी, डब्ल्यू के, लियाओ, हूक, ओकाकुरा, हक्सले, पर्सी नन, ईलियट स्मिथ, विकहैम स्टीड और मैडम लिटविनोफ जैसे लोगो से जो आश्चर्यजनक समर्थन मिला है, उससे मुझे पुन आश्वस्त होने मे सहायता मिलती है। ये थोडे-से लोग, जिनके नाम मैंने योही गिना दिये है, निश्चय ही सनकी नही है।

शायद इससे भी अधिक उत्साहवर्द्धक मेरी कामयाबी की बात यह है कि इस वर्ष जब मै इग्लैड छुट्टी पर गया हुआ था तब मै दो साल की चेप्टा के बाद 'टाइम्स ऑव इडिया' के जिद्दी सचालको को (जिनके यहा मै भी काम करता हू) बेसिक मे दिलचस्पी लेने के लिए प्रेरित कर सका। इस बात का और बेसिक के जन्मदाता ऑगडेन के साथ मैंने छुट्टी लेकर उनकी सस्था मे जो विशेष अध्ययन किया, इसका एक नतीजा यह हुआ है कि हम बहुत जल्दी ही हिदुस्तानी आवश्यकताओ को विशेप ध्यान मे रखते हुए बेसिक के बारे मे एक सस्ती पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे है। अग्रेजी पढाने की आजकल की बेकार और खर्चीली प्रणाली को बदलकर बेसिक को लाने के लिए जो व्यापक और गहरा आन्दोलन किया जानेवाला है, उसकी यह भूमिका है।

उसके सम्बन्ध मे आपके पैम्फ्लेट मे एक टिप्पणी है, जिससे कि

भ्रम पैदा हो सकता है। आपने लिखा है—"...और बेसिक का शब्दकोश वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यापारिक शब्दो को छोडकर ९८० शब्दों मे सीमित कर दिया गया है।" जैसाकि ऑगडन की पुस्तको मे सब जगह लिखा हुआ है, यह सख्या ८५० है और यदि इसमे ५० अन्तर्राष्ट्रीय शब्द भी मिला लिये जाय तब भी कुल जोड ९०० ही होगा। शायद आपने ऐसा भूल से लिख दिया है और मुझे आशा है कि आप हमे इस बात का अधिकार देगे कि आवश्यकता पडने पर हम इसका स्पष्टीकरण कर सके। इस बारे मे एक औपचारिक पत्र भी साथ मे भेजा जा रहा है।

अब जबकि मैंने ये सब बाते कहकर अपने मन का बोझ हल्का कर लिया है, मै आपको यह बताना चाहूगा—जो कि मै बहुत दिनो से बताना चाह रहा हू—कि आज से करीब एक साल पहले जब मैंने आपकी 'मेरी कहानी' पढी थी तब उसका मुझपर कितना गहरा असर पडा था। पहली बात तो यह है कि मेरे और आपके विचार बहुत-कुछ एक-से है। जैसा कि आप जानते है, इग्लैड मे जन्म और पालन-पोषण होने के बावजूद मै जाति का यहूदी हू और पुनरुत्थान के अपने राष्ट्रीय सघर्ष मे मैंने भी आपकी ही तरह अक्सर अपनेको 'अकेला और बेघर' अनुभव किया है। कुछ तो इसलिए कि फिलस्तीन मे, जहाकि मैंने जातीय आधार पर पाच वर्ष तक यह आन्दोलन चलाया था, वहा के आवासी अधिकतर प्रवासी यहूदी है (मै अग्रेजो के बीच हमेशा यहूदी और यहूदियो के बीच हमेशा अग्रेज बना रहा हू) और कुछ इसलिए कि मै अपनेको इस आन्दोलन के धार्मिक पहलू के साथ जोड़ न सका, खास तौर से इस विचारधारा से कि भगवान ने हमारी जाति को चुनकर बनाया है। लेकिन यह तो एक छोटी-सी बात है। पुस्तक को पढने के बाद जहा एक ओर हिदुस्तान के नेताओ और जनता की नैतिक वीरता और बलिदान के लिए प्रशसा की भावना उठी वहा मेरे मन मे मुख्य रूप से यह भी विचार आया कि अपनी निर्धनता और अपने पिछडेपन के बावजूद हिदुस्तान निकट भविष्य मे ही 'भीतरी (आत्मिक) और बाहरी (भौतिक)' विकास के बीच उस सतुलन और मेल को स्थापित कर लेगा जो कि आपके

कहने के अनुसार दुर्भाग्यवश पश्चिमी देश प्राप्त करने मे असफल रहे हैं और इस प्रकार वह सभ्य जीवन की कला का अनुकरणीय आदर्श ससार के शेप देशो के सामने रखेगा । मै समझता हू कि यह विचार सबसे पहले उस समय उठा जव मै आपकी पुस्तक मे जेल-जीवन का वर्णन पढ रहा था—वहा की भयानक अमानुषिकता के वारे मे ही नही, वल्कि भावी विकास की सम्भावनाओ से पूर्ण श्रेष्ठ मानवीय शक्ति के भयानक विनाश के वारे मे भी । उस समय मैने सोचा कि जव काग्रेस के हाथो मे सत्ता आयेगी तव निश्चय ही वह जेल-जीवन की उस प्रणाली को शीघ्र ही वदलने का प्रयत्न करेगी, जिसमे रहकर वह स्वय इतना दु ख भोग चुकी है और जिसे जेल के सुधारक सालो से ससार के सभी देशो मे निन्दनीय वताते रहे है, लेकिन जिसका कुछ असर नही पडा है । यही वात दूसरी चीजो के साथ भी है—जैसे शिक्षा, मजदूर-कल्याण, नशावन्दी आदि । मैंने निश्चित रूप से यह सोचा कि जो पीढी सोचने और काम करने के रूढिवादी तरीको के विरोधी वातावरण मे पाली-पोसी गई है उसमे दूसरे देशो के आरामकुर्सी मे वैठनेवाले सिद्धान्तवादियो की अपेक्षा सुधार करने की अधिक क्षमता होगी ।

जैसाकि मैने कहा यह एक साल पहले की वात है और पिछले कुछ महीनो मे मै सबसे अधिक रोमाचित यह देख-देखकर होता रहा हू कि अब जवकि आप लोगो को अपने देश के एक बहुत वडे भाग पर अधिकार प्राप्त हो गया है, आप व्यक्तिगत अनुभव पर आधारित समझ और सहानुभूति को तथा व्यक्तिगत यातना के वीच पले हुए आदर्श को व्यवहार मे लाने के लिए पहली वार प्रयत्न कर रहे है और पहली बार उसका रूप सामने आ रहा है । उदाहरण के लिए मन्त्रिपद से सम्वन्धित आत्म-त्यागपूर्ण आदेश, बदियो की मुक्ति, नशाबदी के प्रयोग, कृषि-सुधार, सार्वजनिक शिक्षा आदि ।

निस्सन्देह आपको यह अनुभव हो रहा है कि विनाशकारी आलोचना की अपेक्षा रचनात्मक चेप्टा अधिक कठिन होती है । लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि चूकि आपने सरलता, सत्य और अहिसा को अपना आदर्श मानकर काम करना शुरू किया है, इसलिए आप अपने लक्ष्य तक, अर्थात्

एक सुखी और सचमुच ही सभ्य समाज की स्थापना के ध्येय तक शायद पश्चिमी देशो से पहले ही और उनकी इच्छा के विरुद्ध भी पहुच जायगे ।

मै समझता हू कि गाधीजी, उनकी लगोटी और उनकी बकरी के दूध ने ससार को आत्मिक और भौतिक विकास के मेल का अर्थ कुछ-कुछ समझा दिया है। जहातक मेरा सवाल है, मै समझता हू कि सरलता पर ज़रूरत से ज्यादा जोर दिया गया है, फिर भी उसके पीछे जो आदर्श है वह (जहातक हिदुस्तान का सवाल है) आपके 'साध्य' और 'साधन' दोनो का प्रतीक है ।

मुझे ऐसा लगता है कि मेरा यह पत्र बडा असम्बद्ध-सा होगया है। मैने बहुत सारी बाते इसमे एकसाथ मिला दी है। अगर इसमे एकता का कोई सूत्र है तो वह इस विचार पर आधारित है कि शायद हिदुस्तान एक ऐसी सामाजिक क्रान्ति के बीच फसा हुआ है जिसकी सीमा मे शिक्षा भी अवश्य सम्मिलित होनी चाहिए और यह कि बेसिक का विचार (जोकि अपने-आपमे क्रान्तिकारी है) उस क्रान्ति मे एक महत्व-पूर्ण हिस्सा लेगा, जिसका असर न सिर्फ अग्रेजी के पढाने पर पडेगा बल्कि जिसका शिक्षा के तमाम मनोवैज्ञानिक और अध्यापकीय दृष्टिकोण पर पडेगा। (देखिये रिचर्ड्स) ।

आपका,

येडल्फ मायेर्स

२०५. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा

७ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलाल,

मैने मथुरा के प्रस्तावो या तुम्हारे भाषण को नही पढा। मै दोनो देखना चाहूगा ।

महादेव के पत्र मे तुम्हारी कोमल शिकायत पढी । मै क्या कर सकता हू ? मै जैसा हू वैसा ही तुम्हे मुझको स्वीकार करना होगा। मै जानता हू, तुम कर रहे हो। मै यह भी जानता हू कि मेरे प्रति तुम कितने

कोमल हो ।

क्रिप्स को जब चाहो अपने साथ ला सकते हो ।

सस्नेह,
बापू

२०६ राजेन्द्रप्रसाद की ओर से

पो आ. जीरादेई (सारन)
२४ दिसम्बर १९३७

प्रिय जवाहरलालजी,

आपका ता २९ नवम्बर का पत्र और उसके साथ के कागजात ठीक वक्त पर मिल गये थे, परन्तु मुझे खेद है कि काग्रेस के पिछले प्रस्ताव उस वक्त मेरे पास न होने के कारण मै आपको नही लिख सका ।

मै अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी की बैठक मे हाजिर नही था, इसलिए नही कह सकता कि उसकी कार्रवाई सत्य और अहिसा से किस प्रकार दूर चली गई । परन्तु मेरा खयाल है कि महात्माजी का सकेत श्री मसानी के प्रस्ताव के शब्दो की तरफ उतना नही होगा, जितना उसपर किये गए भाषणो की ओर रहा होगा ।

मैसूर-प्रस्ताव 'अधिकार के बाहर था' इस वक्तव्य पर काग्रेस के पिछले प्रस्तावो के सदर्भ मे विचार किया जाना है । मैसूर राज्य मे नागरिक स्वतत्रता को दबाने के लिए जो दमन की नीति जारी है, उसका इस प्रस्ताव मे महासमिति ने जोरदार विरोध किया और मैसूर की जनता को बधाई देते हुए और उसके न्यायोचित और अहिसात्मक सघर्ष मे उसकी सफलता की कामना करते हुए "रियासतो की जनता तथा ब्रिटिश भारत की जनता से राज्य के विरुद्ध मैसूर की जनता को अपने आत्म-निर्णय के अधिकार के लिए किये जानेवाले सघर्ष मे उसे प्रोत्साहन तथा समर्थन देने की अपील की ।" मै नही जानता कि महासमिति अथवा काग्रेस का इससे पहले ऐसा कोई प्रस्ताव है, जिसमे एक देशी राज्य के किसी खास कार्य या नीति के प्रति विरोध प्रकट किया गया हो और रियासतो तथा ब्रिटिश भारत की जनता से अपील की हो कि वह उस राज्य की जनता का उनके सघर्ष मे समर्थन करे तथा उसको प्रोत्साहन

दे । परपरागत नीति तो भारतीय रियासतो के मामलो मे हस्तक्षेप न करने की रही है । काग्रेस मे केवल तीन प्रस्ताव ऐसे हो चुके है, जिनके प्रकाश मे पता लगाया जा सकता है कि क्या नीति बदल दी गई है या उसमे कुछ हेर-फेर कर दिया गया है । १९२८ मे कलकत्ता-काग्रेस मे पास किये गए प्रस्ताव मे भारतीय रियासतो के लोगो को उनके न्यायोचित तथा शातिपूर्ण सघर्ष मे काग्रेस की सहानुभूति तथा प्रोत्साहन का आश्वासन दिया गया था । अगस्त १९३५ मे कार्य-समिति ने काग्रेस-नीति को अपने एक वक्तव्य मे विस्तारपूर्वक दोहराया, जिसे उसी वर्ष मद्रास मे महासमिति ने अपनी १७-१८ अक्तूबर की वैठक मे स्वीकार कर लिया । इस वक्तव्य मे रियासती लोगो के शान्तिपूर्ण और न्यायोचित सघर्ष के साथ काग्रेस की सहानुभूति और प्रोत्साहन की प्रतिज्ञा को दोहराने के वाद यह निर्देश दिया गया कि सहानुभूति तथा प्रोत्साहन किस किस्म का होगा तथा उनका रूप क्या होगा । "तो भी यह समझ लेना चाहिए कि रियासतो मे होनेवाले इस सघर्ष को चलाने की जिम्मेदारी और वोझ जाहरा तौर पर उनकी जनता पर ही पडेगा । काग्रेस तो रियासतो पर मित्रतापूर्ण तथा नैतिकतापूर्ण प्रभाव डाल सकती है और इतना तो जहा-जहा भी सभव होगा, वह जरूर करेगी । वर्तमान परिस्थितियो मे उसके पास कोई और शक्ति नही है, यद्यपि भारत की समस्त जनता, चाहे वह अग्रेजो के अधीन हो, चाहे राजाओ के या किसी दूसरी सत्ता के, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से एक है और अविभाज्य है । विवाद की गरमी मे प्राय काग्रेस की मर्यादाए भुला दी जाती है । वस्तुत दूसरी कोई नीति सामान्य उद्देश्य को असफल वना देगी ।" कलकत्ता-अधिवेशन के प्रस्ताव तथा महासमिति के इस वक्तव्य की अप्रैल १९३६ मे लखनऊ काग्रेस ने फिर से पुष्टि की और कहा कि "रियासतो के अन्दर होने वाली आजादी की लड़ाई का स्वरूप ही ऐसा है कि उसे स्वय वहा के निवासियो को ही लडना होगा ।" मेरी याद मे इस प्रस्ताव मे "मुख्यत" शब्द जोड़ देने के सशोधन को ठुकरा दिया गया था । महासमिति के कलकत्तावाले प्रस्ताव मे न केवल मैसूर के किसी कार्य और नीति का विरोध किया गया है, वल्कि रिया-

सतो और ब्रिटिश भारत की जनता से अपील की गई है कि वे मसूर की जनता को पूरा-पूरा समर्थन और वढावा दें। दूसरे शब्दो मे मित्रतापूर्ण और नैतिक प्रभाव डालने से यह कही आगे वढ जाता है और काग्रेस की मर्यादाओ को भुला देता है, और ठीक उसी नीति को अगीकार करता है, जिससे सामान्य उद्देश्य असफल हो जाता है और जिसका लखनऊ-काग्रेस के उस प्रस्ताव से मेल नही वैठता, जिसमें नीति के पिछले वक्तव्य की दुवारा पुष्टि की गई थी। वेशक काग्रेस को अपनी नीति वदल देने की पूरी छूट है, लेकिन जवतक वह कायम है तवतक यह महासमिति की अधिकार सीमा में नही है कि वह रियासत के भीतरी शासन मे हस्त-क्षेप करनेवाला प्रस्ताव स्वीकार करे और वहा चल रहे किसी सघर्ष में भाग ले। यदि महासमिति के प्रस्ताव पर अमल होता है तो कार्य-समिति को मैसूर की जनता की धन-जन तथा और सव तरह से मदद करनी पडेगी और यदि उसके आह्वान पर अमल होता है तो देशी राज्यो और ब्रिटिश भारत की जनता को भी यही करना चाहिए, परन्तु काग्रेस ने इस प्रकार के समर्थन के लिए कभी नही सोचा या वादा किया था। दूसरे, अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी का कलकत्तावाला प्रस्ताव लखनऊ-काग्रेस के प्रस्ताव का उल्लघन करता है। मेरा खयाल है कि गाधीजी ने इसी कारण कलकत्ता के प्रस्ताव को महासमिति के अधिकार से वाहर वताया है।

आपका,
राजेन्द्रप्रसाद

२०७ एडवर्ड टामसन की ओर से

स्कारटोप
बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड,
२ जनवरी १९३८

प्रिय नेहरू,

मै मानता हू कि मानवीय हित पहले आता है, लेकिन दूसरे जीवधारियो का भी महत्व है और उनके लिए भी साथ-ही-साथ कुछ होना चाहिए। अगर कुछ जातिया खत्म होगई तो यह एक ऐसी शरारत हो जायगी,

जो कभी दुरुस्त नही हो सकती। पुराने समय मे हिदुस्तान को खाई में डाल दिया गया और मुझे यह हमेशा ही बेहद बदतमीजी लगती रही है कि चन्द मालदार लोग और शासक यह समझे कि उन्हे एक देश की परम्पराओ को आपकी और आगे आनेवाली पीढियो के लिए नष्ट कर डालने का हक हासिल है।

आप इस बारे मे कुछ चीजें कर सकते है ? जब कोई जानवर या चिडिया सरक्षण मे इसलिए ली जाती है कि उसकी नस्ल खत्म होनेवाली है तो उसका वेचा जाना कानूनन अपराध माना जाना चाहिए। आपके यहा कुछ ऐसी चिडिया है, जो करीब-करीब खत्म हो चली है, लेकिन उनका मास खुले आम बिकता है। गैडो के सीग भी, जिन्हे कलकत्ता के चीनी तथा दूसरे लोग कामोद्दीपक समझते है, बेचे जाते है। इससे कोई अन्याय नही होगा कि इस प्रकार के नीच प्रयोजनो के लिए मागी जानेवाली वस्तुए मुनाफाखोरी से बाहर रखी जाय।

लेकिन सबसे जरूरी बात यह है कि इस तरह का जनमत तैयार किया जाय, जो शिकार की नीच मनोवृत्ति को समाप्त कर सके, ताकि हिदुस्तानी यह सुनकर कि फला राजा ने पाचसौ चीते मार डाले (जैसा कि रीवा ने किया है) या अनगिनत मुरगाबियो को गोली से उडा दिया या काले बारहसिंगे का शिकार करते हुए कोई राजा तीस मील फी घटे की रफ्तार से मोटर चला सकता है, तारीफ से 'वाह-वाह' करने से इन्कार करके पश्चिम का पथ-प्रदर्शन कर सके। इस प्रकार की झूठी प्रतिष्ठा को नप्ट करना होगा। दक्षिण अफ्रीका मे जनमत इसे नप्टप्राय कर चुका है (और कनाडा मे भी)। अहिसा की भावना पुन प्रतिष्ठित कीजिये और यह भावना फैलाइये कि हिदुस्तान के जगली जीव आपकी विरासत के एक अग है, जिन्हे दूसरे लोगो को नष्ट करने का कोई हक नही है।

एक साल हुआ, मैंने आपके यहा 'टाइम एण्ड टाइड' पत्र देखा था। अगर आप उसे अब भी पढते हो तो उसके ताजा (१ जनवरी) अक में महाराज बीकानेर पर लिखा मेरा लेख आपको दिलचस्प लगेगा।

मुझे यह पढ़कर बेहद खुशी हुई थी और उत्साह मिला था कि

काग्रेसी मन्त्री सिर्फ पाचसौ रुपया मासिक वेतन ले रहे है और—यद्यपि जीवन मे अनेक भ्रम होते है—मुझे यह सुनकर वडा दु ख पहुचा कि मत्रियो का यह त्याग अधिकतर मिथ्या है, क्योकि वाकी का वेतन वह 'भत्तो' के रूप मे ले लेते है। अगर यह सच है तो काग्रेस को इससे इतना वडा नुकसान पहुचेगा जितना कि किसी भी सरकार की कार्रवाई से नही पहुच सकता। मै उम्मीद करता हू कि आप मुझे वता सकेगे कि यह वात झूठ है। मुझे यह वात एक हिंदुस्तानी ने ही वताई थी, जिसे सच्चाई मालूम होनी चाहिए।

१९३८ के वर्ष के लिए शुभकामनाओ-सहित,

आपका,
एडवर्ड टामसन

२०८ सैयद वजीर हसन की ओर से

३८, केनिग रोड,
इलाहावाद
११ फरवरी १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

पिछले अक्तूवर मे लखनऊ मे मुस्लिम लीग के इजलास मे उसके सदर की तकरीर से न सिर्फ मुसलमानो और हिन्दुओ, वल्कि मुसलमानो और मुसलमानो के वीच गलतफहमी, झूठ और मजहवी तथा फिरकेवारान नफरत का फैलाव शुरू होगया। उस दिन से वाकयात के वारे मे वढा-चढाकर झूठे वयान निकालकर मजहवी नफरत और अकलियत के हको की आड मे रोज-व-रोज इसे वढाया जा रहा है। खास तौर से मै नीचे लिखी वातो का जिक्र कर सकता हू

१ यह कि काग्रेस एक हिन्दू जमात है।

२ वह हिन्दुस्तान मे स्वराज नही, बल्कि हिन्दूराज कायम करना चाहती है।

३ यह कि काग्रेस और सात सूबो मे उसकी सरकारे कम तादाद-वाले फिरको को, खासतौर पर मुसलमानो को, सताने और कुचलने की कोशिश कर रही है।

४ यह कि हिन्दुस्तान के आठ करोड लोगो के खयालो की सच्ची

नुमाइन्दा मुस्लिम लीग ही है ।

५ यह कि काग्रेस मे बहुत थोडे-से मुसलमान हैं और ये भी इस्लाम के तई गद्दार है ।

मै पक्के तौर पर महसूस करता हू कि अगर इस तरह के प्रोपेगैण्डा को चुनौती नही दी जाती और झूठ का परदाफाश नही किया जाता तो यह झूठ सच के तौर पर जारी हो जायगा और पूरे मुल्क की माली और सियासी आजादी की हमारी जो जद्दोजहद है उसपर इसका गहरा असर पडेगा ।

ऊपर कही गई बात को दिमाग मे रखते हुए मेरी यह पुख्ता राय है कि जिस कदर मुमकिन हो, बहुत बडे पैमाने पर ऐसे मुसलमानो और उनके लीडरो का एक जल्सा किया जाय, जिन्होने काग्रेस के उसूलो को मजूर किया है और उन लोगो का भी, जिन्हे मै काग्रेसी खयाल का कहूगा । यह जल्सा जल्द ही आनेवाली किसी तारीख मे, करीब मार्च के आखिर मे या अप्रैल के शुरू मे, किसी मरकज़ी जगह पर किया जाना चाहिए और इसमे जरूरी तजवीज पास करके मुस्लिम लीग के प्रोपेगैण्डे को गलत ठहराना चाहिए । मौलाना अबुल कलाम आजाद को इस जल्से का कन्वीनर होना चाहिए । मै यहा यह और कह दू कि मेरी मुराद यह नही है कि मुस्लिम लीग और काग्रेस के सदरो के बीच जो समझौते की बातचीत चल रही है, उसमे मै किसी तरह की कोई अड-चन डालू । इसके बदले इस जल्से की कार्रवाई से समझौते के लिए ज़मीन बहुत-कुछ साफ हो जायगी, क्योकि यह समझौता मुस्लिम लीग के मुसलमानो और काग्रेस के मुसलमानो दोनो को ही मजूर होना चाहिए । आखिर मे मै आपसे कहूगा कि इस खत के मजमून पर आप हरिपुरा मे अपने साथियो के साथ गौर करे और जल्दी ही फैसला करे । शायद इस बात का जिक्र करना मौजू होगा कि इस खत मे जो खयालात जाहिर किये गए है, उनसे काग्रेसी मुसलमानो की एक बड़ी तादाद एक राय है ।

आपका,

एस. वज़ीर हसन

[सैयद वज़ीर हसन बहुत सालो तक ऑल इंडिया मुस्लिम लीग के एक खास मेबर रहे ।]

२०९. मुहम्मदअली जिन्ना की ओर से

१, हेस्टिंग्स रोड,
नई दिल्ली
१७ मार्च १९३८

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

आपका ८ मार्च १९३८ का खत मुझे मिल गया। १८ जनवरी के आपके पहले खत से मुझे यह मालूम हुआ कि हिन्दू-मुस्लिम-एके को बढाने के लिए आप यह जानना चाहते है कि दोनो मे किन-किन बातो में फर्क है। मैंने आपको जवाब में लिखा था कि यह मामला खतो-किताबत से हल नही हो सकता और खतो-किताबत से हल करने की कोशिश वैसी ही नामुनासिब होगी जैसी अखबारो मे इस मामले पर बहस करने की कोशिश। इसपर आपने अपने ४ फरवरी के जवाब मे कांग्रेस के ऊपर मेरी कुछ फर्जी नुक्ताचीनी के बारे मे और मेरे कुछ और बयानो के बारे मे, जिनका उन बातो से, जिनपर हमें इस वक्त गौर करना चाहिए, कोई खास ताल्लुक दिखाई नही देता, अपनी शिकायतो की एक फेहरिस्त तैयार करके मुझे भेजी थी। आप इन्ही शिकायतो पर अडे रहे और अभी तक आपकी यही राय है कि हम उन्ही शिकायतो पर बहस जारी रक्खे, हालाकि इनका हमारे इस वक्त के मामले से कोई ताल्लुक नही है। जैसाकि मैंने अपने पिछले खत मे आपको पहले ही तफसील से समझा दिया, इस बहस के लिए मै तैयार नही हू।

मै समझता हू कि हमारी बातचीत की शुरुआत इस सवाल से हुई थी कि मुल्क की ज़िदगी में मुसलमानो के मजहब, उनकी तहजीब, उनकी ज़बान, उनके अपने निजी कानून, सरकार और मुल्क के इतज़ाम मे उनके सियासी हक, इन सबके बारे में मुसलमानो के हको की हिफाज़त किस तरह की जा सकती है। इस तरह के बहुत-से सुझाव दिये गए है, जो मुसलमानो को तसल्ली दे सकेगे और अकसरियतवाले फिरके में यकीन और महफूज़ होने का खयाल पैदा कर देगे। मुझे हैरत हुई, जब आपके जिस खत का मै जवाब दे रहा हू, उसमें आपने कहा है, "लेकिन वह कौन-से मामले है, जो मौजू है ? मुमकिन है कि मै कुन्दज़हन हू और या

इस मसले की पेचीदगियो से पूरी तरह वाकिफ नही हू । अगर ऐसा है तो मै इसका मुस्तहक हू कि आप मुझे रोशनी दे । मै बडा मशकूर होऊगा, अगर आप मुझे हाल का कोई ऐसा बयान बता दे जो अखबारो मे या किसी प्लैटफार्म से दिया गया हो और जिससे मुझे इस बात के समझने में मदद मिले ।" शायद आपने 'चौदह पाइटो' की बाबत सुन लिया है ।

इसके बाद आपने लिखा है, "इसके अलावा पिछले कुछ सालो मे बहुत-सी ऐसी बाते हुई है, जिनसे हालत अब बदल गई है ।" हा, मै आपसे एकराय हू । हाल मे अखबारो के अन्दर बहुत-से सुझाव सामने आ चुके है । मिसाल के तौर पर, अगर आप १२ फरवरी १९३८ के 'स्टेट्मैन' अखबार को देखे तो उसमे एक मज़मून है, जिसका हैडिंग है 'थ्रू मुस्लिम आईज़' (मुसलमानो की आखो से) । (आपके सुभीते के लिए मै उस मजमून की एक नकल इस खत के साथ भेज रहा हू) । उसके बाद १ मार्च १९३८ के 'न्यू टाइम्स' मे एक मजमून निकला है, जिसमे आपके हाल के एक बयान का जिक्र किया गया है । वह बयान, मै समझता हू, आपने हरिपुरा-काग्रेस के इजलास मे दिया था । अखबारो के मुताबिक आपने वहा यह कहा था कि "मैने इस सवाल को, जिसे फिरकेवारान सवाल कहा जाता है, खुर्दबीन लगाकर देखा, लेकिन अगर कही कुछ हो ही न तो दिखाई क्या दे सकता है ?" 'न्यू टाइम्स' के उस १ मार्च सन १९३८ के मज़मून मे भी बहुत-से सुझाव पेश किये गए है । (आपके सुभीते के लिए उसकी एक नकल भेज रहा हू) । इसके अलावा आपने मिस्टर अणे की उस मुलाकात को भी देखा होगा, जिसमे उन्होने काग्रेस को चेतावनी दी है और कुछ ऐसी बाते गिनाई है, जिनकी माग मुस्लिम लीग कर सकती है ।

अब इतने से आप अच्छी तरह समझ गये होगे कि जिस तरह के सुझाव दिये जा चुके है, या दिये जा सकते है, या जिनके दिये जाने की उम्मीद की जा सकती है, उन सबको हमे गौर से समझना होगा, और अखीर मे मै समझता हू कि हर सच्चे नेशनलिस्ट का यह फर्ज है, चाहे वह किसी भी जमात या किसी भी फिरके का क्यो न हो, कि वह इस सारी हालत को अच्छी तरह समझने की कोशिश करे और मुसलमानो और हिंदुओ

के बीच समझौता करावे और मुल्क मे सच्चे मानी मे एक मिला-जुला मोर्चा कायम करे । इस बात की उतनी ही फिक्र आपको होनी चाहिए, जितनी मुझे । आपका भी यह उतना ही फर्ज है, जितना मेरा, चाहे हम किसी भी जमात या फिरके के क्यो न हो । लेकिन अगर आप यह चाहते हो कि मै खुद इन सब सुझावो को जमा करके एक फरियादी के तौर पर आपके सामने पेश करु, ताकि आप और आपके साथी उनपर गौर कर सके तो मुझे डर है मै ऐसा नही कर सकता और न मै उन मुख्तलिफ बातो पर आपसे ज्यादा खतो-किताबत जारी रखने के लिए भी यह सब करने को तैयार हू । लेकिन अगर आप फिर भी इस बात पर ही जिद करे, जैसा कि आप करते मालूम होते है, जब आप अपने खत मे कहते है, "मेरा दिमाग, पेश्तर इसके कि वह ठीक-ठीक काम कर सके या मै कोई कदम उठाने की बात सोच सकू, यह चाहता है कि सब बात साफ-साफ सामने आ जाय । गोलमोल बात और असली मुद्दो से बचते रहने से तसल्ली-बख्श नतीजे पैदा नही हो सकते । मुझे यह बडा अजीब मालूम होता है कि बावजूद मेरे बार-बार पूछने के मुझे यह नही बताया जाता कि हमे किन बातो पर बहस करनी है ।"आपका यह लिखना न ठीक है और न असलियत के मुताबिक है, लेकिन अगर ऐसा हो तो मै आपसे गुजारिश करता हू कि आप काग्रेस से यह कहे कि वह बाजाप्ता तरीके से मुझसे खतो-किताबत करे और मै ऑल इडिया मुस्लिम लीग की कौसिल के सामने उस सारे मामले को पेश कर दूगा । यह मै इसलिए कह रहा हू, क्योकि आपने खुद अपने खत मे लिखा है कि "मै काग्रेस का सदर नही हू और न उस तरह की नुमाइन्दा हैसियत रखता हू, लेकिन अगर मै इस मामले मे किसी तरह की मदद कर सकता हू तो मै काग्रेस की खिदमत के लिए तैयार हू और मै बडी खुशी से आपसे मिलकर इनसब बातो पर आपसे बतचीत करूगा ।" जहातक आपसे मिलने और इन मामलो पर बातचीत करने का ताल्लुक है, मुझे यह कहने की जरूरत नही है कि मै खुशी से इसके लिए तैयार हू ।

आपका,

एम. ए. जिन्ना

२१०. महादेव देसाई की ओर से

१ वुडबर्न पार्क,
कलकत्ता
२० मार्च १९३८

प्रिय जवाहरभाई,

खाली से तुम्हारा पत्र पाकर खुशी हुई। इससे भी अधिक प्रसन्नता बापू को तुम्हारा हार्डीकर को दिया गया उत्तर पढकर हुई। उन्हे बहुत ही आनद हुआ कि जो कसर उन्होने रख दी थी तुमने पूरी कर दी। सारी चीज को रखने के तुम्हारे ढग को उन्होने बडा पसन्द किया, यद्यपि यह सभव है कि कुछ भागो मे वह जुदी भाषा काम मे लाते।

खाली के बारे मे बापू कहते है कि तुम्हारा चित्र अनिवार्य रूप मे लुभावना है, परन्तु उनका यह भी कहना है कि किसी प्रलोभन की जरूरत नही थी। उन्होने मुद्दत से वहा जाने की आकाक्षा रखी थी, परिवर्तन की खातिर इतनी नही, जितनी उस छोटे-से स्वर्ग को देखने के लिए जिसे रनजीत पृथ्वी पर उतार लाये है। वह उनके प्रयोगो मे गहरी दिलचस्पी रखते है और जव कभी उन्हे काम से छुट्टी मिल सकेगी, वहा जाने को उत्सुक रहेगे।

पिछली दफा से अब वह बहुत अच्छे है। जोर भी उतना ही अधिक पडा है, और उसका कोई फल निकलने की सभावना नही है, परन्तु उन्होने पिछली बार की अपेक्षा उसे अधिक अच्छी तरह सहन किया है।

प्यार,

तुम्हारा,
महादेव

२११. गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

लखनऊ
२३ मार्च १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

आपके कृपापत्र के लिए अनेक धन्यवाद। मुझे खुशी है कि खाली मे कुछ दिन विताकर आप कडी मेहनत के लगातार और सख्त वोझ से

कुछ राहत पा सके। जैसाकि आप कहते हैं, यह स्थान रमणीक है और यह हमारी कृतज्ञता का भी पात्र है, क्योंकि इसने अपने सुन्दर और स्वास्थ्यप्रद वातावरण मे आपको कुछ विश्राति और शाति का आनद उठाने का मौका दिया। मैं एक दूसरे व्यक्तिगत कारण से भी खाली का आभारी हू, इसलिए कि इसने आपको जो अवकाश प्रदान किया, उसके कारण मैं आपका शिक्षाप्रद पत्र पा सका।

अपने वारे मे आपने जो कहा है, जीवन की जो दृष्टि वताई है और विभिन्न प्रश्नो को आप जिस तरह देखते हैं, वह पद्धति, ये सव मेरे लिए विशेष रूप से मूल्यवान है। ऐसी वात नही कि मै उनकी तरफ से विलकुल अनजान था, परन्तु विभिन्न महत्त्वपूर्ण मामलो मे आपका दिमाग किस तरह काम करता है, उसका आपके इस पत्र मे स्पष्ट चित्र मुझे मिला। आपने हमारे सामाजिक जीवन के कुछ पहलुओ का भी उल्लेख किया है। सचमुच यह मानना पडेगा कि हममे से वहुतो का निजी जीवन एकदम नीरस, वजर, और मूर्खो का-सा भद्दा होता है, देखकर अत्यन्त दु ख होता है। इस पत्र मे उन सव वातो की वहस मे मैं नही पडना चाहता, जिनका आपने जिक्र किया है, क्योंकि अगर मैं उनके बारे मे कुछ लिखने वैठूगा तो यह पत्र वहुत अधिक लम्वा हो जायगा और मैं इतना लम्वा खर्रा इस समय आपके सिर नही मढना चाहता। ऐसा मैं बाद मे कर सकता हू।

आज तो मेरे दिमाग को यूरोप म हिटलर के राज्य-विप्लव और हमारे अपने प्रात के साम्प्रदायिक उपद्रव घेरे हुए है। ये घटनाए अस्थायी महत्त्व से ज्यादा अहमियत रखती है और इनकी तुलना मे दूसरी सारी समस्याए गौण हो उठती है। आस्ट्रिया पर कब्जा होना प्रथम श्रेणी के अतर्राष्ट्रीय महत्त्व की घटना है। इसके परिणाम जरूर ही बहुत दूरगामी होगे। तमाम राजनैतिक व्यवस्था अनिश्चित अवस्था मे है और दुनिया के सामने केवल दो विकल्प है—एक तरफ तो सशस्त्र क्रूर अधिनायकवाद और दूसरी तरफ व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतत्रता का पोषक जनतत्र। यद्यपि ये घटनाए यूरोप मे हो रही है, फिर भी इनके परिणामो से हम अछूते नही रह सकेगे।

इस सूबे के साप्रदायिक दगो में जो हिंसा तथा रक्तपात हुआ, उससे मुझे अत्यन्त क्लेश और दु ख हुआ है। अब तो इलाहाबाद और बनारस मे लगभग शान्ति है, परन्तु साप्रदायिक पागलपन किसी भी समय उभड़ सकता है। इलाहाबाद के उपद्रव के बारे मे आपका तार मिल गया था और मैंने भी एक तार आपको भेजा था, क्योकि समाचार-पत्रो मे आपने इन उपद्रवो का हाल पढा ही होगा और चूकि आप जल्दी ही यहा आनेवाले है, इसलिए मै उनके बारे मे विस्तार से नही लिखना चाहता। पिछले कुछ महीनो से राजनीति के लबादे मे मुस्लिम लीग द्वारा जो प्रचार हो रहा है, वही मुख्यरूप से इस तरह की हालतो के लिए जिम्मेदार है। धार्मिक भावनाओ को उभाडना बहुत आसान है और जब कोई दल अपने राजनैतिक मतलब को पूरा करने के लिए इसका सहारा लेता है तब उसे इसके परिणामो की शिकायत नही करनी चाहिए।

आशा, है आप स्वस्थ होगे।

सप्रेम आपका,
गो. व. पंत

२१२ सरोजिनी नायडू की ओर से

दि गोल्डन थ्रेशोल्ड,
हैदराबाद (दक्षिण)
२९ मार्च १९३८

प्रिय जवाहर,

मुझे आशा है कि पुराने जमाने के सत की भाति ही पर्वतो की ओर निगाह उठाकर तुमने भी उनसे शाति, शक्ति और प्रेरणा प्राप्त की होगी और तुम उसीकी जवानी के दिनो की तरह झरने के पास से पाच ककड उठाकर उनसे प्रत्येक गोलिआथ को मार सके होगे। तुम्हारे तो इतने सारे खास-खास गोलिआथ है, जिन्हे तुम मारना चाहोगे।[1]

---

[1] इसका आशय बाइबिल में वर्णित गोलिआथ नामक दैत्य से है, जिसने इजराइल की सेना को चुनौती दी थी और जिसे डेविड नामक गड़रिये ने गोफन से पत्थर फेंक-फेंककर मार डाला था। —सम्पा०

मुझे वहुत दुख है, और ऐसा लग रहा है मानो किसीने मुझे ठग लिया, और कि मैं कलकत्ता न जा सकूगी। कम-से-कम एक वार तो मैं डाक्टरो के हुक्म को मान ही रही हू, यद्यपि इसका कारण शायद मेरी भलमनसाहत इतना नही, जितना इस समय अन्य किसी काम के लिए शारीरिक असमर्थता है। इसलिए मैं ज्यादातर सोफे पर पडी-पडी अपने वगीचे मे चिडियो की चहचहाहट सुनती रहती हू। वुलवुलो ने सतरे के पेड मे घोसला वनाया है, और एक रामचिडिया दोपहर को फव्वारे मे नहाने आती है, और हनीवर्ड्स क्लिमैटिम और विग्नोनिया की वेलो मे व्यस्त है। क्या तुमने कभी एक फारसी कविता 'पत्तियो की ससद' का अनुवाद पढा है ?

जवतक वह 'छोटा-सा इन्सान' दूसरी चीजो पर अपना 'गाधी-जादू' चला रहा है, तवतक यह तो वताओ कि साम्प्रदायिक समझौते के सवाल पर 'नेहरू के मिजाज' का क्या हाल है ? मैं उस कठिन समस्या का सही हल पाने के लिए वहुत चितित हू। वेवे को एकदम वेवे-जैसी सर्दी होगई है, जिसकी तुलना वस उसकी वेवे-जैसी जिद से ही की जा सकती है। पर अव वह पहले से अच्छी है और अपने हाथ ऐसे रगो मे डुवोती रहती है, जिसके आगे जोसेफ का रगविरगा कोट भी कुछ नही और अपनी अलमारी मे भरे हुए कपडो को फिर से नया करती और तरह-तरह के रगो मे छिपाती रहती है।

मेरे पति १४ तारीख को 'कोते रोस्सो' द्वारा वियना जा रहे है। वेवे शायद उन्हे विदा करने बम्बई जाय और शायद वेटी के यहा ठहरे। हा, वेटी मुझसे वेहद नाराज है, क्योकि उसके विचार से मैं राजा के राजनैतिक विचारो को गभीर नही समझती। कैसी बच्ची है वह— और राजा भी!—प्यारे बच्चे! दोनो मे से एक मे भी जरा खुशमिजाजी होती तो उनके लिए—और मेरे लिए भी—कितना अच्छा होता।

इस पत्र का उद्देश्य तुम्हारे हालचाल का पता लगाने के लिए पूछताछ करना था। पर यह एकदम अपठनीय और वेसिर-पैर का दस्तावेज हो गया है! यह सौ फीसदी स्वदेशी कागज, देशभक्ति को साबित

करने के लिए तो बेहद अच्छा है, पर ओफ, इसपर लिखने मे कैसी तकलीफ होती है !

सप्रेम तुम्हारी,
सरोजिनी

मैने सी एल. यू के वास्ते पैसे के लिए बहुत-से लोगो को लिखा है, पर अभी कोई उत्तर नही ।

२१३. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव
२५ अप्रैल १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

महादेव के सीमाप्रान्त के दौरे के विवरण की प्रतिलिपि साथ मे है । चूकि मै नही जा सकता था और हमे अशातिप्रद समाचार मिल रहे थे, इसलिए मुझे लगा कि उन्हे भेज दिया जाय । मै यह विवरण सब सदस्यो मे नही घुमा रहा हू । मै मौलाना और सुभाष को नकले भेज रहा हू । विवरण से मै बेचैन होगया हू । महादेव को अधिक कहना है । अवश्य ही एक प्रति भाइयो[1] को भेज रहा हू । आशा है, तुमको भाइयो पर अपना बडा असर इस्तेमाल करने की प्रेरणा होगी । मै तो तार द्वारा उनके सम्पर्क मे हू ही । मुझे जो आघात लगा है, उसके बावजूद अगर खान-साहब चाहेगे तो मै कुछ दिन के लिए उस प्रान्त मे जा भी सकता हू । माल्म होता है, हम भीतर से कमजोर होते जा रहे है । इससे मुझे चोट लगती है कि हमारे इतिहास के इस बहुत नाजुक अवसर पर हम महत्व-पूर्ण मामलो मे सहमत दिखाई नही देते । मै तुम्हे बता नही सकता कि यह जानकर मुझे कितना घोर अकेलापन महसूस होता है कि आजकल मै तुम्हे अपने विचार का नही बना सकता । मै जानता हू, तुम प्रेमवश बहुत-कुछ करोगे । परन्तु राजनैतिक मामलो मे स्नेह के आगे आत्मसम-र्पण नही हो सकता, जब बुद्धि विद्रोह करती हो । तुम्हारी बगावत के कारण तुम्हारे प्रति मेरा आदर और भी गहरा है । परन्तु इससे अकेले-

---

[1] खान अब्दुल गफ्फार खा और डा. खानसाहब

पन का दु ख और भी तीव्र हो जाता है। लेकिन अब मुझे अपनी कलम रोकनी चाहिए।

प्यार,

बापू

२१४ महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद
२८ अप्रैल १९३८

प्रिय बापू,

मै आज सुबह लखनऊ से इलाहाबाद लौटा। आपका पत्र और साथ मे महादेव की सरहदी यात्रा पर उनके नोट की नकल मिली। मैंने इस नोट को पढ लिया है और मैं खानसाहब और अब्दुलगफ्फार खा को लिखूगा। महादेव ने जो कुछ लिखा है, उसपर मुझे अचरज नहीं है। मैंने स्वय जो कुछ देखा यह उसका स्वाभाविक विकास है, किन्तु मैंने यह आशा रखी थी कि वहा उस समय जो वृत्तिया देखने मे आई, उनपर कुछ रोक लगाई जायगी। आपके सिवा यह काम कारगर तरीके पर कोई आदमी कर सकता है तो वह मौलाना अबुल कलाम ही हैं। मेरे खयाल से यह बहुत आवश्यक है कि वह सरहद मे जाय। इस बीच मुझे यह आशा जरूर है कि दोनो खानबन्धु मत्रियो की सभा और कार्य-समिति के लिए आयगे।

जैसा आपको मालूम है, पिछले छ महीनो मे काग्रेस की राजनीति मे घटनाओ ने जो रुख अख्तियार किया है, उससे मुझे बडा दु ख हुआ है। जिन मामलो ने मुझे अशान्त किया है, उनमे से गाधी सेवा सघ का नया रूप भी है। हम बहुत तेजी से टैमनी हॉल[1] का ढग अपना रहे हैं और

[1] अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में समाजोपयोगी कार्यों के लिए न्यूयार्क में स्थापित सस्था, जो आगे चलकर अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए सभी तरीके अपनाने के कारण भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गई। —सम्पा०

यह देखकर तकलीफ होती है कि गाधी सेवा सघ भी मामूली सतह पर उतर आया है। वह तो दूसरो के लिए नमूना कायम कर सकता था और किसी-न-किसी तरह चुनाव जीतने पर उतारू एक दलगत सगठन बन जाने से इन्कार कर सकता था। मुझे बहुत दु ख होता है कि काग्रेस-मन्त्रि-मडल क्षमता के साथ काम नही कर रहे है और जो वे कर सकते थे वह भी बहुत नही कर रहे है। वे पुरानी व्यवस्था के बहुत ज्यादा अनुकूल बन रहे है और उसे उचित साबित करने की कोशिश कर रहे है। परन्तु बुरी होते हुए भी ये सब बाते बर्दाश्त की जा सकती थी। इससे कही बुरी बात यह है कि हमने जो ऊची प्रतिप्ठा इतनी मेहनत करके लोगो के दिलो मे बना ली है, उसे खो रहे है। हम मामूली राजनीतिज्ञो की सतह पर उतरते जा रहे है, जिनके कोई उसूल नही होते और जिनका काम रोजमर्रा के अवसरवाद के असर से होता है।

इसका कुछ कारण तो अलबत्ता दुनिया-भर की आम खराबी है और कुछ जिस सक्रमण-काल से हम गुजर रहे है वह है। फिर भी इससे हमारी खामिया सामने आती है और यह देखकर दु ख होता है। मेरे खयाल से काग्रेस मे काफी सद्भावनावाले लोग है, जो ठीक ढग से काम मे जुट जाय तो स्थिति का सामना कर सकते है। परन्तु उनके दिमाग दलगत सघर्षो से और इस व्यक्ति या उस गुट को कुचलने की इच्छा से भरे है। जाहिर है कि भले आदमियो की अपेक्षा बुरे ज्यादा पसन्द किये जाते है, क्योकि बुरे दलबदी मे साथ देने का वचन देते है। जब ऐसा होता है तब बिगाड तो होगा ही।

महीनो से मै महसूस करता हू कि जिस तरह से चीजे चल रही थी उनमे मै हिदुस्तान मे कारगर तौर से काम नही कर सकता था। जैसे हमेशा काम चलाया जा सकता है, वैसे अलबत्ता मैने भी चलाया, परन्तु मुझे यह महसूस हुआ है कि मै ठीक जगह पर नही हू और अयोग्य हू। (कारण तो और भी थे) परन्तु यह एक कारण था जिससे मैने यूरोप जाने का निश्चय किया। मैने महसूस किया कि मै वहा अधिक उपयोगी हो सकता हू और हर हालत मे मै अपने थके हुए और चक्कर मे पडे हुए दिमाग को तो ताजा कर ही लूंगा। मुझे आपके साथ विस्तार से किसी

मामले की चर्चा करने में कठिनाई मालूम हुई, क्योंकि आपके स्वास्थ्य की मौजूदा हालत मे मै आपको थकान और चिन्ता में डालना नही चाहता, और फिर मुझे यह भी अनुभव हुआ कि ऐसी चर्चाओ से कोई ठोस नतीजे नही निकलते ।

मैंने २ जून को बम्बई से जहाज पर रवाना होने का फैसला किया है । पता नही, मै कितने अर्से दूर रहूगा । परन्तु सभव है, मै सितम्बर के अन्ततक लौट आऊ ।

पहली मई को मै एक सप्ताह के लिए गढवाल जा रहा हू । स्वरूप मेरे साथ जायगी और हम बदरीनाथ और बर्फ पर थोडी-सी हवाई उडान करेगे । गढवाल से लौटकर मै मन्त्रियो की सभा और कार्यसमिति के लिए बम्बई जाऊगा ।

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

महात्मा गाधी,
जुहू (बम्बई)

२१५ महात्मा गाधी की ओर से

पेशावर जाते हुए, रेल में
३० अप्रैल १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

जिन्ना के साथ ३।। घटे की बातचीत का जो सक्षिप्त विवरण लिख डाला है, उसकी नकल साथ मे है । सभव है, तुम्हे और दूसरे सदस्यो को बातचीत का आधार पसन्द न आये । स्वय मुझे तो और कोई चारा नही दीखता । आज मेरी कठिनाई यह है कि मै तुम्हारी तरह देश मे इधर-उधर घूमता नही और इससे भी गभीर बाधा वह भीतरी निराशा है, जो मुझ-पर छा गई है । मै काम चला रहा हू, परन्तु यह सोचकर आत्म-ग्लानि होती है कि मेरा वह आत्म-विश्वास जाता रहा, जो मुझमे एक महीने पहले था । मुझे आशा है कि मेरे जीवन मे यह सिर्फ एक अस्थायी घटना है । मैने यह जिक्र इसलिए कर दिया है कि तुम्हे प्रस्तावो पर उनके गुणो के आधार पर जाचने मे मदद मिले। मै नही समझता कि पहले प्रस्ताव के बारे मे कठिनाई पेश आयेगी । दूसरा प्रस्ताव अपने सारे गूढार्थो सहित

अनोखा है। अगर वह तुम्हे न जचे तो उसे योही अस्वीकार कर देने मे सकोच न करना। इस मामले मे तुम्हे आगे होना पडेगा।

मै ११ तारीख को लौट आने की आशा रखता हू। मेरे इस तार के उत्तर मे कि सुभाष को जिन्ना के साथ जाब्ते से समझौते की बातचीत शुरू करनी चाहिए, उनका तार है कि वह १० तारीख को बम्बई मे होगे। मै चाहता हू कि तुम भी वहा जल्दी जा सको। मै मौलानासाहब को इसी ढग से लिख रहा हू और इस पत्र की नकल उन्हे भेज रहा हू।

प्यार, बापू

२१६. महात्मा गाधी की ओर से

७ मई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

गाधी सेवा सघ के नये स्वरूप मे ऐसी कौन-सी बात है, जिसने तुम्हे अशात बना दिया? मै स्वीकार करता हू कि उसकी जिम्मेदारी मेरी है। मै चाहता हू कि तुम मुझे नि सकोच बताओ कि तुम्हे किस चीज से अशाति हुई है? अगर मेरी भूल हुई है तो तुम जानते हो कि भूल मालूम होते ही मै अपने कदम पीछे हटा लूगा।

आम हालात खराब होने के बारे में मै तुमसे सहमत हू, भले ही दुर्बल स्थानो के सबध मे हमारा मतभेद हो।

शेष मिलने पर।

प्यार, बापू

२१७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२६ मई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

तुम कितने काम से काम रखनेवाले और मुस्तैद हो। मुझे खुशी है कि तुमने गुडगाव जिला काग्रेस कमेटी के मामले की जाच कर ली। आशा है, दोनो फरीक तुम्हारी सलाह को मान लेंगे। ऐसा ही होना चाहिए।

आज तुम्हारा पत्र मेरी और जिन्ना की बातचीत के मेरे विवरण के

वारे मे मिला और मेरा खयाल है कि उनसे मेरी दूसरी वातचीत अनिवार्य थी। मुझे आशा हे कि इससे कोई हानि नही होगी। तुम्हे समय मिल जाय तो जाल से मिलने के वाद मै चाहूगा कि तुम मुझे दो शब्द लिख भेजो। क्या अच्छा हो, यदि तुम अपने यूरोप के दौरे के दिनो थोडा-सा आराम ले लो और यहा की तरह सारा समय भाग-दौड मे ही न विता दो।

प्यार,

वापू

२१८. गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

ब्रुक हिल हाउस

नैनीताल

३० मई १९३८

प्रिय जवाहरलालजी,

खेद है कि आपके रवाना होने से पहले अपनी शुभकामनाए प्रकट करने तथा आपसे विशेष मामलो पर वातचीत करने मै स्वय नही आ सका। जव २१ या २२ तारीख को मै आपके साथ था, तव उपाध्याय से हो रही आपकी बातचीत से मै समझ गया था कि आप उसी रात को १०-३० बजे आजमगढ के लिए रवाना होगे। मै आपके यहा लगभग ८ वजे पहुचा और तेजी से रेलवे स्टेशन गया, परन्तु दुर्भाग्य से आपसे मुलाकात नही हो सकी। आपको विदा करने मैने इलाहावाद जाना चाहा, परन्तु ऐसा करने मे मै असमर्थ था, क्योकि अपनी लडकी की बीमारी के कारण, जो कि तेज मियादी बुखार से पीडित है, मुझे अचानक नैनीताल जाना पडा। जव आप हिन्दुस्तान से वाहर जा रहे है, मै अपनी समस्याओ और कठिनाइयो का रोना सुनाकर आपको परेशानी मे डालना नही चाहता। मै आपकी निर्विघ्न और सुखकर यात्रा, यूरोप मे आपके प्रसन्नतापूर्ण समय तथा जल्दी ही हिन्दुस्तान वापसी के लिए शुभ-कामना भेजता हू। देश से आपकी गैरहाजिरी से निस्सदेह हमारी कठिनाइया बढ जायगी। प्रान्त मे दूसरा कोई ऐसा प्रभावशाली व्यक्तित्व नही है, जिसके पास मुसीबत के समय विश्वास के साथ सही सलाह और मार्ग-दर्शन के लिए हम जा सके, और जो, अगर ऐसी जरूरत आ पडे तो प्रभावकारी ढग से मामलो मे हस्तक्षेप कर सके। तो भी मै महसूस करता हू कि ससार की

वर्तमान स्थिति पर विचार करते हुए, देश के व्यापक हितो के लिए, यह अनिवार्य है कि आप यूरोप जाय। वर्तमान सगठन बडी अनिश्चित अवस्था मे है और नई व्यवस्था का उदय होना ही है, जिसका दूसरे देशो की तरह भारत पर भी एक-सा प्रभाव पडेगा। ऐसे समय मे यह महत्वपूर्ण है कि हम बाहरी दुनिया से अपना सबध बनाये और इस काम के लिए सारे हिदुस्तानियो मे आप सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति है। हमपर तो शायद अपनी स्थानीय समस्याओ का ही बहुत ज्यादा भूत सवार है और हम मामलो को उस व्यापक दृष्टि से नही देख रहे है, जिस दृष्टि से देखना चाहिए। देश मे फैली नीरस गभीर उदासीनता धीरे-धीरे विचार और जीवन के नये स्पन्दनो को स्थान दे रही प्रतीत होती है और शहरी और ग्रामीण दोनो क्षेत्रो मे काफी बडे पैमाने पर वाछनीय और स्वस्थ क्रियाशीलता विद्यमान है। सर्वत्र लोगो की आखे खुल रही है और समस्याए स्पष्ट की जा रही है। तो भी मुझे इस मामले को विस्तार देने की जरूरत नही, क्योकि यह पत्र पहले ही बहुत लबा हो गया है।

आशा है, आप एक ऐसे निष्णात व्यक्ति के लिए मेरी प्रार्थना को ध्यान मे रखेगे, जो पुर्ननिर्माण के काम मे हमारा सहायक हो सके। यदि कोई आदमी मिल जाय तो मुझे अवश्य सूचित करेगे।

चि इन्दू से मिले तो उसे मेरा प्यार कहे।

सद्भावनाओ-सहित,

सस्नेह आपका,
गो. व. पन्त

[सन् १९३८ के जून के शुरू में मैं यूरोप गया। बम्बई से जिनेवा तक समुद्र से गया। वहां से मैं मार्सेलीज गया और मार्सेलीज से खुश्की की राह से बार्सेलोना गया, जहां मैंने कुछ दिन बिताये। उन दिनो स्पेन म गृहयुद्ध चल रहा था। इसके बाद मैं लन्दन चला गया।]

२१९. लार्ड लोथियन की ओर से

ब्लिक्लिग हॉल,
एल्सहम
२४ जून १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप इग्लैंड सकुशल पहुच गये और बार्सेलोना पर फ्रैंको के बमो से बच आये। मै यहा ९ जुलाई के सप्ताहात मे आपका स्वागत करने की प्रतीक्षा मे हू। उस पार्टी मे बहुत थोडे लोग होगे। आशा है, लेडी येस्टर होगी। वह बडी विनोदप्रिय है और उनसे मिलकर आप प्रसन्न होगे। जनरल आयरन साइड आयेंगे, जो कि इग्लैण्ड के सर्वोत्तम योद्धाओ मे से एक है, और जो आपको दुनिया के सैनिक और आम हालात से अवगत करा सकेगे। शायद किसी दूसरे से वह जानकारी आपको हासिल नही हो सकेगी। श्री टामस जोन्स भी होगे, जो बाल्डविन के प्रधान मन्त्रित्व के काल मे उनके सबसे नजदीकी सलाहकार थे और जो एक खास व्यक्ति है। मैने सर फिडलेटर स्टुअर्ट को भी बुलाने का कुछ विचार किया है। वह इडिया आफिस के प्रधान है। बडे अच्छे आदमी है, लेकिन मै सोचता हू कि वह कुछ ज्यादा सरकारी हो सकते है। इनके अलावा और कोई नही होगा। मुझे उम्मीद है कि पार्टी से पहले मै आपसे मिलूगा और तब अतिम व्यवस्था पर विचार हो जायगा। मेरा मुख्य उद्देश्य सुन्दर वातावरण मे आपको एक शात सप्ताह जुटाना है, जहा हम कुछ बातचीत भी कर सकेगे।

लोथियन

फिर से—

मुझे खेद है कि आपकी लडकी कही और व्यस्त है।

२२०. सर जार्ज शुस्टर की ओर से

[सर जार्ज शुस्टर तीसरी दशाब्दि के मध्य में भारत सरकार की कार्यकारिणी परिषद् में वित्त-मंत्री थे ।]

३० सेंट जेम्स प्लेस,
लन्दन, एस. डब्ल्यू. १
७ जुलाई १९३८

प्रिय पंडित जवाहरलाल नेहरू,

मैं आपके इस भाषण के बारे में बहुत सोचता रहा हूं जो आपने मजलिस की सभा को दिया था—खास तौर से आर्थिक समस्याओं के बारे में। मुझे अफसोस है कि मैं अपने विचार कुछ इस ढंग से रख रहा हूं कि उनसे आपका मौखिक रोष (मैं समझता हूं कि वह मौखिक से अधिक और कुछ नहीं था) न्याय-संगत सिद्ध होगा। मैं इस बात को सचमुच बहुत ज्यादा महसूस करता हूं कि आपको हिंदुस्तान में जिन आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है, वे मूलभूत कठिनाइयों से परिपूर्ण बड़ी महत्वपूर्ण समस्याएं हैं और ब्रिटिश प्रभाव को केवल हटा देने से वे हल नहीं हो सकेंगी।

से प्राप्त नही हो सकती । मेरा विश्वास है कि यह प्रयत्न एक महान सहकारिता की भावना पर आधारित होना चाहिए और वह हिंदुस्तान के तमाम गावो मे राष्ट्रीय नेताओ द्वारा फैलाया जाना चाहिए । दूसरी ओर, मै यह भी विश्वास करता हू कि आप जैसे राष्ट्रीय नेता उद्योग पर घातक आघात किये बिना ही अधिकाश सफलता प्राप्त कर सकते है, क्योकि वह उद्योग आजकल मुख्यत शहरो मे केन्द्रित है।

इन विषयो के प्रति अपनी विचारधारा का स्पष्टीकरण करने के लिए मै एक पेम्फलेट भेज रहा हू । इसमे मेरा वह भाषण है जिसे मैने आज से साढे तीन साल पहले (हिंदुस्तान से लौटने के तत्काल बाद ही) लदन की रॉयल सोसाइटी ऑव आर्ट्स मे दिया था। निश्चय ही यह बहुत ही प्रारम्भिक ढग का है और मुझे आशा नही है कि यह आपके लिए अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकेगा । फिर भी मुझे विश्वास है कि मैने जो कुछ भी कहा है उसमे आप सत्य का अश पायेगे और समस्या तक पहुचने के मेरे तरीके और ढग को पूर्ण रूप से सहानुभूतिरहित नही पायेगे । आप देखेगे कि इस भाषण मे मैने कहा था कि इस विषय पर मै गांधीजी के बहुत-से विचारो से सहमत हू । यदि आप इसको पढने का समय निकाल सके और इस सबध मे मुझसे आगे बातचीत करे तो मै अपनेको बडा सम्मानित मानूगा।

एक और चीज है, जिसके बारे मे मै आपसे फिर से बात करने का अवसर प्राप्त करना चाहूगा । मगल की शाम को मैने आपको यह योजना बताई थी कि मिस्टर विन्ट नाम के जिस नवयुवक से मैने आपका परिचय कराया था उन्हे कुछ विशेष विषयो का अध्ययन करने के लिए हिन्दुस्तान भेजा जाय । यदि आप इस समय मुझसे मिलने का अवकाश न निकाल सके तब भी मुझे आशा है कि आप मिस्टर विन्ट को हिदुस्तान मे अपने से मिलने के लिए अवसर देगे । जब वह आपके पास मेरी यह प्रार्थना स्वय लेकर जायगे तब मै आपको और भी अधिक विस्तार से बताऊगा कि हम क्या करना चाहते है ।

यदि आप समय निकाल सके तो आर्थिक और राजनैतिक प्रश्नो पर मतभेद होते हुए भी, मुझे और मेरी पत्नी को आपसे यहा लन्दन में

अपने घर पर मिलने का अवसर पाकर हार्दिक प्रसन्नता होगी। क्या आप सोमवार को हमारे यहां—जहां परिवारवालों के अतिरिक्त और कोई नहीं होगा—रात का भोजन करने आ सकेंगे ?

आपका,
जार्ज शुस्टर

पंडित जवाहरलाल नेहरू,
ऑरमैण्डे हाउस।

२२१. मैडम सनयात सेन की ओर से

चाइना डिफेन्स लीग
सेन्ट्रल कमेटी,
हांगकांग

२२२. हैवलेट जॉनसन की ओर से

डीनरी
कैन्टरबरी
१६ जुलाई १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

कैसी आनन्ददायक पुस्तके भेजी है आपने ! मै इनके लिए बडा कृतज्ञ हू और फुर्सत मिलते ही मै इन्हे पढने मे बडी लगन के साथ जुट जाऊगा।

आपका यहा आना हम लोगो के लिए सदा एक सुखद स्मृति बना रहेगा। उसे हम उतना ही महत्व देते है, जितना मिस्टर गाधी की यात्रा को। मै तो यह भी कहने का साहस करता हू कि आपकी यह यात्रा उनकी यात्रा की उसी प्रकार पूरक है, जिस प्रकार आपकी नीति उनकी नीति की। आपकी अगली यात्रा की मै बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करूगा। आशा है, वह इस बार अधिक लबी होगी।

आदरसहित,

आपका,
हैवलेट जॉनसन

२२३ एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
२० जुलाई १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

कुछ मनोदशाओ में मै एक अभिमानी व्यक्ति हू, (मुझे आशा है कि मै घमडी नही हू, वह तो बिल्कुल दूसरी चीज है) और उस अभिमान के कारण भी है। लेकिन आजतक मुझे किसी भी चीज से इतना अभिमान नही हुआ, जितना कि इस किताब से, जिसपर आपने लिखा है—"मेरे मित्र एडवर्ड टामसन को।"

मै जानता हू, आप ऐसे व्यक्ति है, जो अपनी अल्पभाषिता को अमानवीय दर्जे तक ले जाते है। मै यह भी जानता हू कि आप जो कहते है, उससे उन सारी चीजो का बोध होता है, जो उन शब्दो मे लाई जा सकती है।

मुझे आपसे और आपकी प्यारी बेटी तथा श्रीमती रॉबसन से मिलकर बड़ी खुशी हुई।

आपका,
एडवर्ड टॉमसन

२२४. श्रीमती पॉल रॉबसन की ओर से

लन्दन
शुक्रवार की शाम
जुलाई १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

आज के आनन्ददायक भोजन के लिए अनेक-अनेक धन्यवाद। पॉल और मैं आपके बहुत बडे प्रशसक है और हमारे साथ आपने अनुग्रहपूर्वक जो दो घटे विताये, उनसे हम रोमाचित हो उठे। किसी ऐसे आदमी के साथ, जिसकी रुचिया अपनी जैसी हो और जो हमारी विशेष समस्याओ और पृष्ठभूमि को समझता हो, आजादी के साथ बातचीत कर सकना एक बहुत बडा सौभाग्य है।

जैसाकि मैंने वचन दिया था मै आपको राष्ट्रीय नीग्रो काग्रेस की कार्रवाइयो का सक्षिप्त विवरण भेज रही हू। साथ मे मै अपनी भी एक विनम्र कृति भेज रही हू, जिसे लिखे आठ साल से भी अधिक हो गये है। अब जब मै बडी हो गई हूं, मुझे वह बचकानी-सी मालूम होती है, लेकिन उससे कुछ सीमा तक उस उद्देश्य की पूर्ति तो होती ही है, जिसकी पूर्ति मैने उससे करनी चाही थी, अर्थात् उससे अमरीका मे हब्शियो की पृष्ठभूमि की एक झलक मिल जाती है। मैने जान-बूझकर उसे व्यक्तिगत कथा का रूप दिया है, क्योकि मुझे लगा कि किसी दूसरे रूप मे लोग हब्शियो की पृष्ठ-भूमि मे रुचि नही लेगे। मुझे इसका वडा ही आश्चर्यजनक पुरस्कार मिला, क्योकि लोगो ने उसे खूब खरीदा और पढा और अब भी खरीदते तथा पढते है और अनजाने ही कुछ तथ्यो का परिचय प्राप्त कर लेते है।

जैसाकि निश्चय हुआ था, हम आपके साथ अगले सोमवार को गोले-

गल्लेन्ट्स मे खाना खायेगे। आपसे फिर मिलने की प्रतीक्षा में,

आपकी,
स्लॅडा गुड रॉवसन

२२५ मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

[जून १६३८ के शुरू में जब मैं समुद्र के रास्ते से यूरोप लौट रहा था तो मेरा जहाज स्वेज में रुका। वहा आने से कुछ ही पहले मुझे मिस्र की वफद पार्टी के नेता नहास पाशा का सदेश मिला, जिसमें मुझे निमत्रण दिया गया था कि मैं सिकदरिया में उनसे मिलूं। मैंने फौरन स्वेज से सडक द्वारा काहिरा, और फिर हवाई जहाज से सिकदरिया, जहां नहास पाशा और उनके साथियो से मैं मिला, जाने का निश्चय किया। उसके बाद मैं पोर्ट सईद गया और वहा किसी तरह से जहाज पकड़ लिया, जो कि इस बीच स्वेज नहर से चला गया था।

दिसवर १६२८ में यूरोप से हिंदुस्तान आते समय में कुछ दिनों के बाद मिस्र में रुका। मेरी बेटी इदिरा मेरे साथ थी।]

सां स्तिफनो
२ अगस्त १९३८

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे जहाज और लदन से भेजे आपके दोनो दोस्तीभरे खत मिले, जिनमे आपने मेरे साथियो और मेरे लिए वडे नेक जज़्बात ज़ाहिर किये है।

कहने की जरूरत नही कि आपके आने से हम लोगो को, और खासकर मुझे, कितनी खुशी हुई और उसकी याद कभी मिट नही सकती।

हालाकि आप कुछ घटे ही हमारे साथ रहे, पर वाकई यह एक खुशगवार मौका था और उससे हमे उस पाक मकसद के बारे मे अपने खयालात और जज़्बात एक-दूसरे के सामने जाहिर करने का मौका मिला, जिसके लिए हम अपने दोनो मुल्को मे लड रहे है। अगर सिर्फ हमारे दोनो मुल्को की एक-सी आजादी की जद्दोजहद को मिलाया जा सके तो हमारे मिलने से जरूरी तौर पर एक बहुत वडा फायदा होगा।

अगर मुझे आपको लिखने मे देर हुई है तो इसलिए क्योकि सबसे

पहले मैं हमारी नेशनल वफ्दिस्ट कांग्रेस की मीटिंग की तारीख तय करना चाहता था, जिससे मैं आपको निजी हैसियत से और आपकी पार्टी के डेली-गेशन को मीटिंग के दौरान मिस्र घूमने के लिए दावत दे सकूं। अभी तक मैंने यूरोप के सफर का अपना पक्का प्रोग्राम भी तय नहीं किया है।

वफ्द (वफ्दिस्ट पार्टी) ने अभी फैसला किया है कि इस साल हमारी कांग्रेस की मीटिंग २४ और २५ नवंबर को होगी। इसने यह भी फैसला किया है कि इस साल हिंदुस्तानी कांग्रेस, नजदीक-पूरब के दबाये हुए लोगों की कांग्रेस, फिलस्तीन की कांग्रेस और दीगर अरब अवाम को भी बुलाकर, अपनी कांग्रेस को मुल्की शक्ल देने के अलावा एक नई शक्ल दी जाय। अपने साथियों और अपनी तरफ से यह बुलावा आपको और कांग्रेस के डेलीगेशन को देते हुए मुझे बड़ी खुशी महसूस होती है।

कहने की जरूरत नहीं कि आपकी तरफ से बुलावा आने पर हम भी खुशी से वफ्दिस्ट पार्टी का डेलीगेशन हिंदुस्तान भेजेंगे।

जहांतक यूरोप में मेरे सफर के प्रोग्राम का ताल्लुक है, मैंने अपनी बीवी के साथ इस तरह तय किया है ११ अगस्त को हम लोग 'कवमार' जहाज में जिनेवा के लिए सवार होंगे और मातेकातिनी (इटली) को इलाज के लिए जायंगे। यह इलाज करीब-करीब पंद्रह से बीस दिन तक (पॉस होटल में) चलेगा। इलाज के बाद हम लोग दस रोज तक कोरतीना दम्पेजो (इटली मिरामोती होटल) में आराम करेंगे। उसके बाद स्विट्जरलैंड होते हुए पेरिस जायंगे। अगर हमारे लिए ठीक रहा तो हम लोग वहां रुक सकते है। ११ अक्तूबर तक हम पेरिस में रहेंगे और १२ अक्तूबर को नील में मार्सेल्स पर जहाज में बैठकर वापस लौटेंगे।

अगर इस सफर में यूरोप में हम लोग कहीं भी मिल सकें तो वाकई बड़ी खुशी की बात होगी और पिछली १० जून को सां स्तिफानो में हमने जो दिलचस्प बातचीत शुरू की थी, उसे जारी रखने का हम दोनों को मौका मिलेगा।

मैं अलग लिफाफे में आपके यहां आने के वक्त की तीन तस्वीरें भेज रहा हूं।

आपका,

एम. नहास

२२६. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
३१ अगस्त १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

अपनी सीमित शक्ति के कारण मुझे मजबूर होकर तुम्हे लिखने की इच्छा को दबा देना पडा था।

इन्दू के बारे मे मेरे तार के तुम्हारे जवाब की प्रतीक्षा है।

सघ के सबध में तुम्हारी चेतावनी मैंने समझ ली है। मै इस खबर पर विश्वास नही करता यानी अगर वह अफवाह से कुछ अधिक है तो। पहले काग्रेस की अनुमति लिये बिना वे उसे आमन्त्रित नही करेंगे। अनुमति उन्हे मिल नही सकती।

फिर रही बात यहूदियो की, सो मेरा बिल्कुल तुम्हारे जैसा ही खयाल है। मै विदेशी माल का बहिष्कार करता हू, विदेशी योग्यता का नही। और पीडित यहूदियो के लिए तो मेरी भावना तीव्र है। एक ठोस प्रस्ताव के रूप मे मेरा सुझाव है कि तुम सबसे योग्य व्यक्तियो के नाम इकट्ठे करलो और उन्हे साफ बता दो कि उन्हे हमारे भाग्य के साथ अपना भाग्य मिला देने और हमारा जीवन-स्तर स्वीकार करने को तैयार होना पडेगा। बाकी महादेव लिखेंगे।

प्यार,
बापू

२२७. महात्मा गाधी की ओर से

(१९३८-३९)

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै जानता हू, गलतफहमिया हो सकती है। इनका और अज्ञान या स्वार्थपूर्ण आलोचना का मुझपर कभी असर नही हुआ। मै जानता हू कि अगर हम भीतर से मजबूत है तो सब ठीक हो जायगा। विदेशी मामलो मे तुम मेरे पथप्रदर्शक हो। इसलिए तुम्हारे पत्र से मुझे सहायता मिलती है।

कुमारप्पा के मामले मे तुमने काफी से ज्यादा क्षति-पूर्ति कर दी है।

उनका पत्र तुम देखना पसन्द करोगे। उसे पढकर फाड सकते हो। हा, उनके जैसे कार्यकर्ता हमारे पास बहुत थोडे है।

प्यार,

बापू

२२८. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल, ऑक्सफोर्ड
२ सितम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

आपकी बहन और पुत्री की अस्वस्थता की खबर से हम दोनो दुखी है। विश्वास है, वे जल्द ही अच्छी हो जायगी।

आयरलैण्ड जाते समय आपका लदन का पता न लेकर मैंने कैसी बेवकूफी की। मैंने आपको प्राग् के पते पर तो लिखा ही, लदन के उस बिल्कुल गलत पते से भी लिखा। यह पता मेरी मूढ कल्पना की ही ईजाद था।

मैंने अभी कोर्डा से फोन पर बातचीत की है। वह रविवार को विमान द्वारा लदन जा रहे है और सोमवार की शाम को अमरीका रवाना होगे। इसलिए, अगर आप कुछ सप्ताह लदन मे रुके तो ठीक ही है, अगर नही तो आपसे न मिल सकने का उन्हे बडा मलाल रहेगा।

वह निश्चित रूप से एक पखवारे के अन्दर अमरीका से लौट आयेगे। उन्हे गुप्त रूप से यह चेतावनी दे दी गई है कि राजनैतिक अनिश्चय के कारण अधिक समय तक वहा रहना ठीक न होगा। विदेशो मे जो आशावाद प्रकट किया जा रहा है उसका आधार गलत है। न्यूरेम्बर्ग रैली से पहले निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता।

हो सकता है, कोर्डा अपनी अमरीका-यात्रा मुल्तवी कर दे, ऐसी कुछ सम्भावना है। इस बारे मे वह मुझे कल तीसरे पहर फोन पर बतायेगे।

लेकिन आप और आपके लोग क्यो न स्टूडियो देख ले। अगर कोर्डा सोमवार को अमरीका रवाना हो भी गये तो भी यह देखने मे तो कोई रुकावट होनी नही चाहिए कि आधुनिक सभ्यता का उनका "पेस्ट नम्बर वन" कैसे चल रहा है।

अथवा, अगर वह चले गये तो आप ऐसा क्यो न करे कि सप्ताह के

वाद मे, जव आपकी वहन विल्कुल स्वस्थ हो जाय और इदिरा भी आने की स्थिति मे हो, आप यहा चले आये ? वुधवार या गुरुवार को। आप लोग दोपहर का खाना हमारे साथ खाये, चाय भी यही पियें। हम आपको अरव गाव के सामने वहती हुई नदी, सूडानी किला, विक्टोरियन महल आदि दिखायेगे। वडी मजेदार चीजे है। आप जोल्टन कोर्डा से भी मिल सकेंगे। इन सवके पीछे उन्हीका कला-कौशल है।

जो हो, कल रात जव आप फोन करेंगे तो मै आपको यह निश्चित रूप से वता सकूगा कि कोर्डा अपनी अमरीका-यात्रा स्थगित कर रहे है या नही।

प्राग् से लिखा गया आपका पत्र वडा दिलचस्प और वहुत ज्ञानवर्द्धक था। मुझे वहुत पहले से मालूम है कि एलेन ऑव हर्टवुड एक असहनीय कटक था। लेवर पार्टी मे लोग उसे क्रीपिग जीसस के नाम से पुकारते है।

अगर कोर्डा के जाने के वाद सप्ताह मे देर से किसी दिन आना सुविधाजनक रहे तो आपकी वहन और पुत्री को देखने का आनन्द लाभ कर सकूगा। आशा है, वुधवार तक वे दोनो अच्छी हो जायगी।

अव ऐसा लगता है कि कोर्डा को गुप्त चेतावनी दी जाने की वात शायद नही कहनी चाहिए थी। लेकिन आपसे कहने में क्या हर्ज ! पता होने पर आप भी वही चेतावनी देते।

आपका,

एडवर्ड टामसन

स्टूडियो का निकटवर्ती स्टेशन डेनहम (पेडिंग्टन से) है, जो वेकस-फील्ड / प्रिसेज रिसबरा लाइन पर है। आध-आध घटे पर गाडी छूटती रहती है। हमने समय का पक्का पता करने की कोशिश की थी। लेकिन स्टेशन आफिस बन्द हो चुका था। फिर भी, गाडियो की सख्या काफी है।

२२९ जे बी कृपालानी की ओर से

स्वराज भवन,
इलाहाबाद
९ सितम्बर १९३८

प्रिय जवाहर,

मुझे अफसोस है, पिछले कोई तीन हफ्तो से तुम्हे नही लिख सका।

मै इलाहाबाद मे नही था। वर्धा होता हुआ मै परसो लौटा हू, जहा अध्यक्ष, मौलानासाहब, वल्लभभाई और राजेन्द्रबाबू किसी-न-किसी काम से मौजूद थे। मैने उनसे कृष्ण मेनन के बारे मे बात कर ली। जो कुछ मैने तुमको लिखा था, उस बारे मे वे सब मुझसे सहमत थे। उन्होने मुझसे यह भी कहा कि मै मेनन को लिख दू कि ग्लासगो मे होनेवाली 'शाति और साम्राज्य काग्रेस' मे वह हमारा प्रतिनिधित्व कर सकते है। इसीके अनुसार मैने मेनन को लिख दिया है। सुभाष ने कहा कि इस परिषद् को वह अपना एक सन्देश भेजेगे। मुझे आशा है, वह जरूर भेजेगे।

वफ्दिस्ट काफ्रेस मे शामिल होने के निमत्रण को मजूर करने के बारे मे अभी कुछ तय नही हुआ। जब हम दिल्ली मे २० तारीख को मिलेगे तब मै समिति के सामने मामले को दुबारा रख दूगा। इस बार महासमिति की बैठक भी होगी। जुलाई मे कार्य-समिति की पिछली बैठक मे बापू ने युद्ध और सैनिक शिक्षा के बारे मे अपने विचार हमे सक्षेप मे सुनाये थे। यह सब जल्दी मे किया गया था और बैठक के बिल्कुल अन्त मे। यह सुझाव दिया गया था कि पूरे दो दिन खास तौर पर इसी सवाल की चर्चा के लिए रखे जाय। इसलिए इस बार दो दिन इसके लिए दिये गए है। हम २० को दिल्ली पहुच जाना चाहते है, जबकि यह घोषित किया गया है कि हमारी औपचारिक बैठक २२ को शुरू होगी। महासमिति २४ से शुरू होगी।

यूरोप की स्थिति के बारे मे ता० ३० को बुडापेस्ट से लिखे तुम्हारे पत्र की नकले मैने कार्यसमिति के सभी सदस्यो को भेज दी है। चूकि हम शीघ्र ही मिल रहे है, इसलिए मध्य यूरोप की स्थिति की अलग से चर्चा के लिए कोई खास बैठक नही बुलाई जा सकती। युद्ध, शस्त्रीकरण और सैनिक शिक्षा के बारे मे हमारा जो आम रुख है, उसीके प्रकाश मे, मुझे विश्वास है कि इस सवाल पर चर्चा हो जायगी। तुम जानते हो कि केंद्रीय धारा-सभा ने भर्ती-विरोधी विधेयक स्वीकार कर लिया है, जिसमे सैनिक-भर्ती के खिलाफ प्रचार पर सजा रखी गई है। मुस्लिम लीग ने सरकार के साथ मत दिया। इसलिए युद्ध और दूसरे सवधित विषयो पर हमारे रुख के सवाल पर पूरी तरह से अगली बैठक मे विचार होगा। मै चाहता हू कि तुम उस समय यहा हो। यह इच्छा वर्धा मे हमारे दूसरे मित्रो ने भी प्रकट

की है। वल्लभभाई तो कहते थे कि दिल्ली की बैठको के लिए तुम समय से हवाई जहाज द्वारा आ सको तो वहुत अच्छा हो। आम तौर पर यह महसूस किया जाता है कि यह समय है जब तुम घरेलू राजनीति मे हमारी मदद करो।

१ ता को वुडापेस्ट से तुमने जो पत्र भेजा था, उसकी नकल मैंने वापू के पास भेज दी है। तुमको शायद याद हो कि फेडरेशन के वारे मे वापू मित्रो को जो छोटे-छोटे पत्र लिखते रहे है, उसी प्रसग मे यह पत्र था। वर्धा मे मैंने वापू के नाम आई अगाथा हैरिसन की चिट्ठी पटी थी। उन्होने लिखा था कि उन्हे दु ख है कि भूलाभाई के रुख को गलत समझा जा रहा है और उसे गलत ढग से प्रस्तुत किया जा रहा है। उनका कथन है कि उन्होने लन्दन मे ऐसी कोई वात नही कही जो हमारे प्रस्तावो मे प्रकट किये गए काग्रेस के रुख से मेल न खाती हो। इसका महत्व जो भी हो, यह तो केवल तुम्हारी जानकारी के लिए लिख दिया है।

मुझे मालूम हुआ है, पिछली वार इग्लैंड मे जिन विभिन्न लोगो या गुटो से तुम मिले, उनके प्रति जो रुख तुमने अख्तियार किया, उससे वापू को वडा सतोष हुआ। तफसील मे कोई राय नही दी, लेकिन तारीफ जोरदार की। किसी और ने कोई राय जाहिर नही की। मुझपर जो असर हुआ, वह मैंने तुमको लिख दिया है। सघ, सविधान-सभा और स्वतत्रता के वारे मे तुमने जो रुख अपनाया, उसकी हरकोई सराहना करता है। मेरी अपनी राय तो यह है कि मजदूर-दल ने योजना की जो रूपरेखा प्रस्तुत की है, उसका आज बहुत कम व्यावहारिक मूल्य है। भविष्य मे उसका मूल्य क्या होगा, यह बहुत-कुछ इग्लैड की दलीय राजनीति पर निर्भर करता है। लेकिन इस और किसी दूसरी चीज का भी दारोमदार आखिरकार विश्व-स्थिति पर है। यह बिल्कुल सभव है कि दुनिया की बिगडती हुई हालत के साथ इग्लैड हमारी बात और ज्यादा मानने को तैयार हो जाय, लेकिन उसकी आम राजनीति अनुदार ही रह सकती है। बाहरी खतरा अक्सर तीव्र घरेलू राजनैतिक नीतियो पर विपरीत प्रभाव डालता है। फिर भी मजदूर-दल के ज्ञापन को अगर प्रकाशित कर दिया जाता है तो प्रचार की दृष्टि से उसकी बडी कीमत होगी। कम-से-कम वह इतना तो दिखा देगा कि कुछ

गुट, वर्तमान मे वे कितने ही छोटे क्यो न हो, हमारे साथ यह सोचते है कि हिंदुस्तान और इग्लैंड मे दोस्ताना सबधो या किसी व्यापाराना समझौते से अधिक और कुछ नही होना चाहिए। वहा की जनता हिंदुस्तान की आजादी के विचार को अच्छी तरह जान लेगी।

तुम्हारे खत मे दफ्तर से सबध रखनेवाली जितनी भी सूचनाए थी, सबपर अमल हो गया है। लोहिया अब भी दफ्तर मे बने है और अपना हमेशा का काम कर रहे है। मैने उनसे कह दिया है कि तुम्हारे आने से पहले वह नही जा सकते। अहमद इस महीने के शुरू से ही हमे छोडकर चले गये है, परन्तु वह यही बस गये है। अशरफ भी अपना काम कर रहे है।

चीन जानेवाले हमारे शुश्रूषा-दल के साथ कोई राजनीतिज्ञ भी रहे, तुम्हारे इस सुझाव को मैने वर्धा मे अपने साथियो के सामने रख दिया है। परन्तु यह दल रवाना हो गया, उसके बाद तुम्हारा वह पत्र मुझे मिला। इसलिए उन्होने कहा कि इस प्रश्न पर भी अगली बैठक मे ही विचार हो सकेगा।

यहा जो कुछ चल रहा है वह सब विजयालक्ष्मी ने तुमको बताया होगा। हमे यह जानकर खुशी हुई कि अब इन्दिरा की सेहत पहले जैसी ठीक हो गई है। हम आशा करते है कि इस परिवर्तन से विजयालक्ष्मी भी बेहतर महसूस कर रही होगी। अहमदाबाद मे भारती से मालूम हुआ कि तुम्हारा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नही है। थोडा आराम क्यो न कर ले? हर आदमी पूछ रहा है कि तुम कबतक घर वापस आ रहे हो? तुम उसका कोई अदाज ही नही कराते। इस सबध मे अपनी राय लिखो।

मेरा और सुचेता का तुम सबको प्यार।

सप्रेम तुम्हारा,

जीवत

२३० क्रिस्टीन ह स्टर्जन की ओर से

कैर्नगोर्म,

क्यूरी मिडलोथियन

१९ सितम्बर १९३८

प्रिय डाक्टर नेहरू,

पिछले सप्ताह के 'मैनचेस्टर गार्जियन वीकली' मे आपका जो अत्यत

सुन्दर पत्र छपा है, उसके लिए मै आपको धन्यवाद देना चाहती हू । उस पत्र मे आपने वडे ही गौरव और स्पष्टवादिता के साथ वे भावनाए व्यक्त की है जो आजकल के दु खमय समय में हममें से भी वहुत-से लोग अनुभव करते है । मुझे उम्मीद है कि आपको इसी प्रकार के और भी पत्र उन लोगो के पास से प्राप्त होगे, जिन्हे मेरी ही तरह आजकल की अपनी सरकार की नीतिहीनता से धक्का और आघात लगा है और जो सच्चाई को जान गये है ।

हम यहा के महत्वपूर्ण व्यक्तियो में से नही है, लेकिन मै समझती हू कि इस देश मे हम जैसे सरल, शातिप्रिय और मूलत अच्छे आदमियो का वहुमत है, यद्यपि हमारे पास वह सस्था नही है जिसके जरिये हम अपनी आवाज दूसरो तक पहुचा सके । शायद कभी वह दिन आयेगा जव सामूहिक रूप से हम इतने उद्वेलित हो उठेगे कि दूसरो को अपनी इच्छा महसूस करा सके ।

इसके पहले कि आज जो कुछ भी कलकल करता हुआ एक साधारण-सा झरना मालूम देता है वह एक तीव्र वेगवती धारा वनकर उन्नति के मार्ग में आनेवाली धाराओ को वहा ले जाय, हमे शिक्षा, जागृति और सगठन के एक लम्वे और कठोर रास्ते को पार करना है । लेकिन मै आपको यह वताना चाहती हू कि हममे से वहुत-से लोग वौद्धिक और आत्मिक रूप से आपके साथ है । 'मैनचेस्टर गार्जियन' मे प्रकाशित आपके पत्र के उत्तर मे आपको जितने भी पत्र मिलेगे, समझ लीजिये कि उतने ही सैकडो और हजारो ऐसे अज्ञात तथा सतप्त लोग है, जिन्हे आपने सोचने मे सहायता दी है, किन्तु जो आपको यह बात लिखते नही ।

एक बार फिर आपको धन्यवाद । भगवान करे, आजाद हिदुस्तान और प्रजातत्रीय विश्व के लिए आप जो कार्य कर रहे है वह हर तरह से फले-फूले ।

आपकी,
क्रिस्टीन ह. स्टर्जन

२३१. टी. मैस्की की ओर से

१० अक्तूबर १९३८

प्रिय नेहरू,

मुझे यह सुनकर दुख हुआ कि आप अब सोवियत यूनियन की यात्रा पर नही आ सकते। मै जानता हू कि इसके लिए आप कितने इच्छुक थे। मुझे उम्मीद है कि जो यात्रा आपको विवश होकर स्थगित करनी पडी है उसके लिए आप कभी भविष्य मे अवसर निकाल सकेगे।

आप से जिनेवा मे मिलकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई थी और उस भेट की मधुर स्मृतिया सदा मेरे साथ रहेगी। मुझे हार्दिक आशा है कि आपकी पुत्री और बहन यदि अबतक बिल्कुल ही अच्छी नही हो गई है तब भी पहले से बेहतर जरूर होगी।

आपका,

टी. मैस्की

२३२. मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

हैलियोपोलिस

१७ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

आपके दोनो खत मिले और मैं तहेदिल से आपका उस हमदर्दी के लिए शुक्रगुजार हू, जो हमारे काहिरा लौटने पर हमारे शानदार इस्तकबाल के दौरान मे पुलिस के हाथो जान-बूझकर हमारी जान लेने के लिए की गई खौफनाक कोशिशो से बचने पर, मकराम पाशा और मेरे तई आपने जाहिर की है। गहरी चोटो और घावो के बावजूद, जिनसे हमे अभी तक पूरी तरह आराम नही हुआ है, अल्लाह ने हमारी जिदगी बचा दी।

मकराम पाशा को अपने माथे मे बहुत बडा आपरेशन करवाना पडा।

खुशी की बात है कि मकराम पाशा या मेरी कोई हड्डी नही टूटी।

लोग बहुत भडके हुए है।

हमारे कुछ दोस्तो को आपकी बहन के सिदकरिया उतरने पर उनका इस्तकबाल करने मे खुशी हासिल होगी और उनके साथ जाकर

उनके आराम के लिए सारी चीजो का इतजाम करने का मौका मिलेगा ।

जहातक आपका और आपकी लडकी का ताल्लुक है, हमारे साथियो का एक डेलीगेशन आपको सिकदरिया पर मिलेगा और सारे हफ्ते मिस्र मे और काहिरा मे अपने वीच आपको रखने का हमे मौका मिलेगा ।

साम्राज्यशाही और फिलस्तीन में हाल ही में हुई सरकारी कान्फ्रेस के वारे मे आपके खयालात से हम एकराय है ।

आपका,

मुस्तफा-अल-नहास

मैं इस खत की एक नकल अहतियातन लदन के पते पर भी आपको भेज रहा हू ।

२३३. सुभापचन्द्र वोस की ओर से

रेल से

१९ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहर,

तुम आश्चर्य कर रहे होगे कि मै भी कैसा अजीव आदमी हू कि तुमने इतने पत्र लिखे और मैने उनका कोई जवाव नही दिया । मुझे तुम्हारे सब पत्र मिल गये थे । काग्रेस कार्यसमिति के सदस्यो के नाम लिखे गए तुम्हारे पत्रो को सभीने पढा है । युद्ध-सकट के समय तुम्हारे वक्तव्य सामयिक और हमारे लिए सहायक थे ।

तुम कल्पना नही कर सकते कि इस अवधि मे तुम्हारा अभाव मुझे कितना खटका है । अवश्य ही, मै अनुभव करता हू कि तुम्हे परिवर्तन की सख्त जरूरत थी । मुझे अफसोस इसी वात का है कि तुमने काफी शारीरिक विश्राम नही लिया । कुल मिलाकर, समाचारपत्रो मे तुम्हे अच्छा स्थान मिला, रायटर की कृपा के कारण । जनता तुम्हारी यूरोप की गतिविधि और प्रवृत्तियो से परिचित रह सकी और लोग तुम्हारे उद्‌गारो मे गहरी दिलचस्पी लेते रहे है । मुझे वडी खुशी है कि तुम अपने यूरोप-प्रवास के दौरान मे इतना कीमती काम कर सके, हालाकि यहा हमने तुम्हारा अभाव बहुत अधिक महसूस किया ।

वापस लौटने पर तुम्हे अनेक समस्याओ का सामना करना होगा ।

हिन्दू-मुस्लिम सवाल है। मि जिन्ना असगत है और अकडे हुए है। अखिल भारतीय काग्रेस कमेटी के दक्षिणपथियो और वामपथियो मे फूट है। वामपथी उठकर चले गए थे, इसपर महात्माजी ने बुरा माना। फिर अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न है।

मुझे आशा है, तुम योजना-समिति की अध्यक्षता स्वीकार कर लोगे। अगर उसे सफल बनाना है तो तुम्हे स्वीकार करना ही होगा।

सप्रेम,

तुम्हारा स्नेही,
सुभाष

फिर से--

मै कल बम्बई से कलकत्ता पहुच रहा हू।

२३४. एडवर्ड टामसन की ओर से

बोर्स हिल,
ऑक्सफोर्ड
२१ अक्तूबर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बडा खेद है।

मै इस निश्चय पर पहुचा हू कि कुछ उदार किस्म का ही सही, लेकिन हू मै आखिरकार कजरवेटिव ही। हर चीज बडी उलझी है, और वामपथी लोग फिलस्तीन के प्रश्न पर बडे तीखे हो रहे है। 'मैनचेस्टर गार्जियन' हमेशा से विवेक-रहित जायोनिस्ट अखबार रहा है। अग्र-लेख लिखकर वह यही दिखाता रहा है कि अरब-अशान्ति का कारण इटली का प्रचार ही है। वह अमरीकनो के पत्रो को विशेष स्थान देता रहा है, जिनमे राष्ट्रवादियो के खिलाफ बडी कार्रवाई करने का आग्रह किया जाता रहा है। उसने मेरा एक पत्र छापने से इन्कार करके वापस कर दिया है। मेरे खयाल मे 'न्यू स्टेट्समैन' मे आज जो पत्र छपा है, यह मुझे उम्मीद है, वही है। 'न्यूज क्रॉनिकल' पत्र नही छापेगा, पर उसने कम-से-कम इतनी शिष्टता जरूर बरती है कि उसने पत्र को साफ इन्कारी के साथ वापस नही किया है। तीनो ही पत्रो मे उस भयकर घटना की चर्चा है, जिसे प्रकाशित करने की अनुमति मैंने आज 'टाइम एण्ड

टाइड' से ले ली है। (इसमे उस अश को मेरे लेख से काटकर निकाल दिया था)। 'न्यूज क्रॉनिकल' और 'डेली टेलीग्राफ' मे एक ही चित्र छपा है। लेकिन 'न्यूज क्रॉनिकल' ने उसका परिचय 'अरब लुटेरे लाये जा रहे है' इस रूप मे दिया है, जबकि 'डेली टेलीग्राफ' ने उन्हे 'अरब बदी' कहा है। 'डेली टेलीग्राफ' ने मेरा एक पत्र छापा, हालाकि उसने भी उस घटना को काट दिया। मेरी जिन्दगी में पहले कभी ऐसा मौका नही आया, जब किसी अलोकप्रिय आन्दोलन की सुनवाई कराना इतना असभव हो गया हो। अखबारो पर यहूदियो का प्रभुत्व है, इसपर पहले मै कभी विश्वास नही कर सकता था। यहूदी और अमरीकन मिलकर और 'लिबरल और लेबर' समाचार-पत्र अरब पक्ष की सुनवाई के हर प्रयास को कठोरतापूर्वक दबा रहे है। मेरे खयाल से 'टाइम एण्ड टाइड' का आज का 'फिलस्तीन पर नोट' बडा बेहूदा है। 'न्यू स्टेट्समैन' मेरा पत्र छाप देगा, इसमे मुझे बडा सन्देह है।

यह बात मुझ और आप ही तक रहे, मेरे खयाल मे लिडसे जीत नही सकेगा। बैठ जानेवाले दोनो ही उम्मीदवारो का आचरण ठीक नही रहा है। लेबरपार्टी का उम्मीदवार लोगो को यह एहसास कराता है कि उसके साथ व्यवहार अच्छा नही हुआ है। वह उस मच पर नही आयेगा, जिसपर लिबरल पार्टी का उम्मीदवार होगा और सुनने मे आया है कि उसने 'राजद्रोह' के सम्बन्ध मे 'डेली हेरल्ड' को एक पत्र लिखा था, जिसका इस्तेमाल उस कम्बख्त अखबार ने लिडसे के खिलाफ किया है। लिबरल उम्मीदवार बार-बार यह जता रहा है कि बैठकर उसने कितना अच्छा काम किया है और अनेक प्रमुख लिबरल नेता खुले आम हॉग के पक्ष मे हो गये है। मेरे खयाल मे वक्ताओ का ठीक-ठीक उपयोग नही हो रहा। जहातक मेरा खुद का सवाल है, मैने उसी क्षण कह दिया था मै जहा कही भी और जब कभी भी बोलने को तैयार हू, विशेषकर लिब-रलो और महिलाओ के बीच, क्योकि मै लिबरल हू (जहातक मेरा किसी पार्टी से ताल्लुक है) और मै उस कुख्यात भोज मे मौजूद था, जहा लिडबर्ग ने पहले हमारी सरकार को भयभीत कर दिया था। बाद मे उसने लायड जार्ज और मन्त्रिमडल की भी खबर ली। इससे और अन्य

कई सूत्रो से हाल की घटनाओ की अन्दरूनी कहानी से मै बहुत वाकिफ हू और मै अनिश्चित मन रखनेवाले लोगो को प्रभावित कर सकता हू। यही नही, जब मै क्रोधित हो जाता हू—और अब जितना मुझे क्रोध है, उतना जिन्दगी मे कभी नही आया—तो अच्छा भाषण करता हू। लेकिन पार्टी के लोग इस चुनाव मे केवल पके-पकाये वक्ताओ का उपयोग करेगे। यह चुनाव ऐसा है, जहा चुनाव-परिणाम निर्दलीय मतदाताओ पर निर्भर करेगा। पार्टीवालो ने मुझसे चन्दा भर लिया है। वे मुझे छोटी-सी गोष्ठी मे भी भाषण करने देना नही चाहते। बहरहाल हमारे सामने दो ऐसे उम्मीदवार है, जिनके भाषण, ऑक्सफोर्डवालो को जबानी याद है। पार्टी के अन्य लडाकू लोग तो है ही।

मै ऐसे लोगो मे नही हू, जो ऐसी सभा मे भाषण करते है, जहा से निकल ही न सके। लेकिन इस बार मै बवण्डर का सामना करना चाहता था। मै एक-दो वे बाते कहना चाहता था, जो लिडबर्ग ने कही थी और जो जान-बूझकर दबा दी गई थी। कुछ और बाते भी कहता। मै पहले ही जानता था कि लिडसे के खिलाफ क्या-क्या बाते कही जानेवाली है और मै उनका जवाब पहले ही दे देना चाहता था।

यहा जलियावाला बाग पर अक्षम्य दो बहसे होने पर टैगोर को जो एहसास हुआ था, मुझे भी वैसा ही हो रहा है। दुनिया को मेरे बारे मे गलतफहमी पैदा हो गई है और मै हताश हो चला हू, लेकिन अगर अरब लोग लदन मे एक सभा बुला सके और वक्ता की जरूरत हुई तो मै वहा बोलूगा। हमारे अखबारो ने जहातक जो कुछ करने का अवसर मुझे दिया, मैने किया है। लेकिन जैसाकि मै कहता हू, हमारे ही पक्ष के अखबार विवेकरहित है, 'मैचेस्टर गार्जियन' तो सबसे अधिक (यह तो वास्तव मे नफरत लायक और सकुचित विचार का अखबार है और हमेशा से रहा है)।

अब कुछ अधिक खुशी की बाते बता दू। 'दि ड्रम' की समालोचनाओ का कोर्डा की आत्मा पर बडा गहरा असर पडा है। पिछले मगलवार को उन्होने टेलीफोन किया था और मुझे डेनहम आकर मिलने को कहा था। वह साबू के लिए कोई कहानी जल्द प्राप्त करने के लिए बेचैन

है । साबू घोडा और हाथी सम्भालने मे तो वडा होशियार है । दूसरी बाते उसे उतनी नही मालूम । कोर्डा उसे चीथडो मे लिपटे एक गदे आदमी के रूप मे पेश करना चाहते है, हालाकि साहसिकताओ की भी भरमार रहेगी । उन्होने कहा कि मै भारतीय अभिनेताओ के माध्यम से एक सच्चा भारतीय जीवन पेश करना चाहता हू । अन्त मे उन्होने यह भी कहा कि मै हिदुस्तान के लिए कुछ प्रचार करना चाहूगा, एक ऐसा चित्र जिसमे हिदुस्तान के सौन्दर्य की झाकी होगी, ऐसे हिंदुस्तानी चरित्र रहेगे, जो हत्यारे और देशद्रोही नही थे, बल्कि ऐसे पुरुष और स्त्री, जिन्हे आप प्यार करते थे और जिनका आदर करते थे । इस बारे मे आपके क्या विचार है ? फिल्म ससारभर मे जाती है । प्रचार के हर साधन पर हमारे दुश्मनो का कब्जा है और मेरा मन उनका जवाब देने का होता है । मै एक ऐसी फिल्म बनाऊगा, जिसमे वे बस्तिया दिखाई जायगी, जिनमे हिदुस्तानी मजदूर रहते है । उसमे उनके कारखाने के हालात दिखाये जायगे । आप और नैन इसपर सोचे । ऐसी हालते मुझे कलकत्ता मे मिल सकती है—सडाध फैलाती हुई नहरे और दलदल जहा भूख से तडपडाते पुरुष और स्त्रिया रहते है । परन्तु सारी दुनिया को दिखाने के लिए प्रयाग-सगम की फिल्म बनाने के बारे मे आपके क्या विचार है ? गौरव-मडित गगा और यमुना हिदुस्तान की गरीबी और हिदुस्तान की सुन्दरता का ऐसा प्रदर्शन करती है, जिसे भुलाया नही जा सकता । यह काम मै कहा करू—कलकत्ता, ग्वालियर (उत्कृष्ट दृश्यावली के लिए), इलाहाबाद, कानपुर मे ?

हिदुस्तान के निवास के दिनो की मेरी मानसिक क्लान्ति की झलक इस अन्तिम उपन्यास मे है—एक बहुत ज्यादा थके हुए लेखक की एक बेहद थकानभरी किताब । इसमे कहानी जैसी कोई चीज नही है । इससे हमारे अपने कट्टरपथियो से लेकर हिदुस्तानी राष्ट्रवादी तक कोई खुश न होगा । हमारे कट्टरपथी तो आरम्भिक पृष्ठो के कारण मेरी जिन्दा खाल उतरवा लेना चाहेगे और अन्य पृष्ठो के कारण हिदुस्तानी राष्ट्र-वादी मुझपर पत्थरो की बौछार करना चाहेगे । यह कोई अच्छी किताब नही है, लेकिन अब तो लगभग मेरा खात्मा ही हो चुका है ।

आपके और आपकी पुत्री के लिए शुभकामना ।

आपका,
एडवर्ड

फिर से—

एच एन ब्रेल्सफोर्ड ने बडी बदमाशी की है । पिछले रविवार के 'रेनाल्ड्स' मे उसने यहातक आग्रह किया है कि चेकोस्लोवेकिया के शरणार्थियो को फिलस्तीन मे बसा दिया जाय । 'टाइम एण्ड टाइड' मे उससे मैने जो सीधे सवाल किये थे, उनका जवाब देने की कोशिश उसने कभी नही की । फिलस्तीन का प्रश्न मै उठा दू, यह बात 'टाइम एण्ड टाइड' वालो को नापसन्द थी । लेकिन उसकी 'नोट्स ऑन दि वे' की शर्त के अनुसार उसे छापना ही पडा । आपने गैरेट की 'दि शैडो ऑव दि स्वस्तिक' देखी है ?

२३५. रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर से

शातिनिकेतन
बंगाल
१९ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मैने अभी-अभी अखबारो मे तुम्हारे भारत लौटने की बात पढी है और मै जल्दी-से सारे देश के साथ अपना भी स्वागत का स्वर जोड देना चाहता हू ।

मै तुमसे मिलने को बहुत उत्सुक हू और यदि शातिनिकेतन-यात्रा भी अपने कार्यक्रम मे रख लो तो मुझे बडी प्रसन्नता होगी ।

अभी उस दिन डा मेघनाद साहा से भारतीय उद्योग के वैज्ञानिक नियोजन के बारे मे मेरी बडी लबी और दिलचस्प बातचीत हुई । मै भी इसके महत्व को मानता हू और क्योकि काग्रेस के दिशा-दर्शन के लिए सुभाष द्वारा बनाई गई समिति के अध्यक्ष बनना तुमने स्वीकार कर लिया है, मै इस विषय पर तुम्हारे विचार जानना चाहूगा ।

इदिरा को मेरी याद दिलाना और उसे मेरा प्यार देना ।

सप्रेम,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

[यह राष्ट्रीय योजना कमेटी है, जिसे सुभापचद्र वोस ने तव नियुक्त किया था जव वह काग्रेस के अध्यक्ष थे। मुझे इस कमेटी का अध्यक्ष वनाया गया था ।]

२३६ जयप्रकाशनारायण की ओर से

कालीकट
२३ नवम्वर १९३८

प्रिय भाई,

स्वदेश लौटने पर सारे राष्ट्र के साथ मै भी आपका स्वागत करता हू । मेरी इच्छा थी कि यह सभव होता कि मै जल्दी से इलाहावाद आता, आपसे मिलता और यूरोप मे जो दुखद घटनाए आपने अपनी आखो से देखी तथा आपके जाने के वाद यहा जो कुछ हुआ, उन सवके वारे मे आपसे वातचीत करता। यदि आप किसी तूफानी कार्यक्रम मे नही फस गये तो एक-दो हफ्तो मे मैं यह इच्छा पूरी कर सकूगा । मैं यहा मलावार मे पडा हुआ हू और अपनी साइटिका का आयुर्वेदिक इलाज करवा रहा हू । एकदम अच्छा तो नही हो गया हू, परन्तु कुछ सुधार लगता है । प्रभावती मेरे साथ है । अखबारो मे यह पढकर हमे खुशी हुई कि यूरोप-यात्रा से आपका स्वास्थ्य काफी सुधर गया है ।

मुझे आशा है कि इतनी वडी-वडी घटनाओ के वीच आप सोशलिस्ट वुक क्लव के छोटे-से काम को भूले नही है, जिसके वारे मे मैने आपको लिखा था । अपनी योजना से हम कुछ आगे है और सुभापवावू की सहायता से उसके लिए कलकत्ता मे ३०००) के करीव हम इकट्ठे कर सके है । क्लब का दफ्तर इलाहाबाद मे है और अहमद मैनेजिग डायरेक्टर की हैसियत से उसका काम देखते है । क्लब का किसी दल से सम्वन्ध नही है । यूरोप से भेजे अपने खत मे आपने सस्थापक सदस्य के नाते क्लव मे शामिल होने मे तबतक अपनी असमर्थता प्रकट की थी, जबतक आप

उसके बारे मे और ज्यादा मालूम न कर ले। इसी प्रकार किसी गुट के साथ मिलने के लिए भी आपने अपनी अनिच्छा प्रकट की थी। जैसा कि मैंने कहा है, क्लब का किसी गुट से सबध नही है और समाजवादी साहित्य को छोडकर और किसीके प्रति उसकी निष्ठा नही है। जहातक दूसरी बात का ताल्लुक है, अगर आपको वक्त होगा तो अहमद आपसे हमारी पूरी योजना पर चर्चा कर लेगे और कहने की जरूरत नही कि आपका कोई सुझाव होगा तो हमे उसे स्वीकार करने मे बहुत-बहुत खुशी ही होगी। सुभाषबाबू क्लब के सस्थापक सदस्य पहले ही बन चुके है। इसमे शामिल होने की आपकी इन्कारी से हमे बडा धक्का लगेगा। मै मानता हू कि क्लब छोटे पैमाने पर काम करेगा, परन्तु मेरा विचार है कि समाजवादी आदोलन से हिदुस्तान मे ऐसे परिणामो की आशा करना, जो उसके साधनो से परे है, तर्कसगत नही होगा। और, आप मुझे यह कहने के लिए क्षमा करेगे कि आपके लिए, जिन्हे स्वभावत बडे पैमाने पर ही काम करने की आदत है, हिदुस्तान मे समाजवादी प्रयत्नो से असहयोग करना ठीक नही होगा, महज इसलिए कि ये पुरानी और बडी सस्थाओ के प्रयत्नो के मुकाबिले छोटे है। मै सोचता हू कि हमारा यह अपेक्षा करना अनुचित नही है कि अगर आप अपनेको पूरी तरह हमारे साथ न मिलाये तो बतौर एक समाजवादी के थोडा-बहुत हम जो भी करे, उसे अच्छी तरह करने मे हमारी मदद करे।

आपने अपने पत्र मे कहा था कि हिदुस्तान मे राजनीति पुरानी लकीरो मे जा पडी है। आपकी अनुपस्थिति मे इन लकीरो मे वह और भी गहरी धस गई है। मै महसूस करता हू कि अगर मचो की राजनीति के शोर-गुल को छोड दिया जाय तो ऐसी चीजे हो रही है, जो काग्रेस को करोडो पद-दलितो के जनतत्रीय सगठन से बदलकर धीरे-धीरे उसे हिदुस्तान के स्थापित स्वार्थो के हाथ की कठपुतली बना रही है। गाधीवाद ने जो भद्दा रूप ग्रहण कर लिया है, वह इस परिवर्तन को और भी आसान कर देता है। वह काग्रेस को दुर्जन-सगठन का कवच पहना देता है। मुझे लगता है कि काग्रेस की नीति की प्रवृति के पुनर्परीक्षण की आवश्यकता उठ खडी हुई है, खास तौर पर काग्रेस-शासित प्रान्तो मे। उसके

सामाजिक और आर्थिक लक्ष्य को एक बार फिर से साफ करने की आवश्यकता भी है । काग्रेस ने मजदूर-आन्दोलन के प्रति, जिसका प्रतिनिधित्व ट्रेड यूनियन काग्रेस द्वारा होता है, जो रुख अख्तियार किया है वह उन लोगो की आखे खोल देनेवाला है, जो यह नही चाहते कि मत्रिमडलो का उपयोग मजदूर-सगठन के हाथ-पाव बाधकर उन्हे मालिको के हाथो सापने के लिए हो । आज हमारे सामने वास्तविक खतरा यह है कि मात्र भारतीय उद्योग ही राष्ट्र-रूप का पर्यायवाची बनता जा रहा है । फिर काग्रेस के सगठनो का कार्य है । आज ये प्राय कुछ भी काम नही कर रहे है और जहा वे काम कर रहे है वहा वे या तो चुनाव-यत्र होकर रह गये है या जो काम करते है और या चुनावो के लिए जो तैयारी करते है, उसका उन्हे कुछ भी भान नही है । मै सोचता हू कि अब आपको इस प्रश्न का जवाब देना होगा, कथनी से नही बल्कि करनी से कि काग्रेस को अपने उद्देश्यो की पूर्ति के लिए क्या केवल तथाकथित रचनात्मक कार्यक्रम पर ही निर्भर रहना चाहिए ? जब किसी गाधीवादी के सामने यह सवाल आता है कि क्या काग्रेस को अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए उचित रीति से तैयार किया जा रहा है तो उसका जवाब साफ और सीधा यही है कि केवल रचनात्मक कार्य द्वारा ही हम उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है । अब आपका काम देश को यह बताना है कि क्या केवल इतना करना काफी होगा या और भी कुछ करने की जरूरत है, और यह भी कि वह दूसरा कुछ क्या और कैसे करना होगा । जैसा कि आप जानते है, समाजवाद ने देश के सामने मजदूरो और किसानो के सगठन का कार्यक्रम रक्खा है, जिसमे युवको, स्वय-सेवको और विद्यार्थियो के सगठनो को भी बढाया जा सकता है । मजदूरो और किसानो के सगठनो को तो काग्रेस के अगो के रूप मे सोचा गया है, उसके प्रतिस्पर्धी सगठनो के रूप मे नही । आपने कार्यक्रम के बारे मे अनगिनत बार अपनी स्थिति साफ की है, परन्तु मै समझता हू कि अब वह समय आ गया है जब आपको आगे आना चाहिए और इन्हे नया रूप देने तथा बढाने का काम हाथ मे लेना चाहिए । अब आपको सोचना चाहिए कि इस देश के अधिकाश लोगो मे, और मै तो समझता हू कि खुद काग्रेसजनो मे भी, सामाजिक स्वतन्त्रता की जो

भावना और भूख असदिग्ध रूप मे है, उसे एक निश्चित रूप देकर स्थायित्व देने के लिए क्या किया जाना चाहिए। इस भूख को अभी तो केवल नये-नये समाजवादी सगठनो ने प्रकट भर किया है। इससे अधिक व्यापक प्रकाशन उसका अभी नही हो पाया है। मै समझता हू कि इसके लिए कुछ वुनियादी काम करने की जरूरत है और वह केवल आप ही कर सकते है, बशर्ते कि आप उसके लिए कुछ समय निकाल सके और सोचे।

यह तो हुआ हमारे राष्ट्रीय आदोलन के समाजवादी उद्देश्यो को एक नई दिशा और गति देने के बारे मे। एक तात्कालिक और ज्यादा महत्व का काम रह जाता है—दुश्मन पर अगले आक्रमण (क्या यह अतिम आक्रमण होगा ?) का। हमारे सामने इसकी कोई निश्चित धारणा है ? अपने-आपको इसके लिए तैयार करने के लिए हम क्या कर रहे है ? हम इसे कब आरभ करेगे ? इसके लिए क्या हमे तबतक ठहरना है, जबतक कि अग्रेज स्वय हमे मौका दे ? यह तो उनके ही अधिक हक मे होगा। मेरा खयाल है कि सत्याग्रह की पद्धति मे आक्रमण की योजनाओ की अग्रिम तैयारी की गुजायश नही होती। वहा तो केवल एक योजना होती है कि खूब कातो और इसी तरह के आत्मा को हिला देनेवाले काम करो। परन्तु क्या इससे आपको सन्तोष हो जायगा ? काग्रेस-कमेटियो को जनतान्त्रिक बनाना, लोकसपर्क, मुस्लिम-सपर्क, गुलामी के विधान को उखाड फेकना, इत्यादि जितनी भी योजनाए और कार्यक्रम आपने कार्य-समिति मे लड-झगडकर शामिल करवाये थे, उन सबको ताक मे रख दिया गया है। फिर भी आशा की किरण है—वह है रियासतो मे जागरण, और आप उसपर ध्यान देना चाहते है, यह प्रसन्नता की बात है। लेकिन दूसरी चीजो को आपके ध्यान की और ज्यादा जरूरत है।

मै आशा करता हू कि २३ नवम्बर को मै कालीकट से रवाना होऊगा और दिसम्बर के पहले हफ्ते मे विहार पहुच जाऊगा।

सप्रेम आपका,

जयप्रकाश

२३७. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव
२४ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा खत मिला। मै जानता था कि जहा तुम घोडे पर सवार हुए वहा फिर तुम अपने समय के मालिक नही रहोगे। मुझे जो कुछ मिल जायगा उसीसे सन्तोष कर लूगा।

गुरुदेव से पत्र-वाहक द्वारा मिला हुआ एक खत भेज रहा हू। मैने उत्तर दे दिया है कि मेरी अपनी राय यह है कि अगर उन्हे बगाल को भ्रष्टाचार से मुक्त करना है तो अध्यक्ष के काम से छुटकारा पा लेने की जरूरत है। मुझे सन्देह नही कि गुरुदेव या तो तुम्हे सीधा लिखेंगे या तुमसे बात करेंगे। तुम अपनी ही राय देना।

आशा है, इन्दू को यात्रा से कोई हानि नही हुई होगी।

प्यार,

बापू

२३८ खुवान नेग्रिन् लोपेथ की ओर से

[सन् १९३८ की गर्मियो के आरम्भ में मैंने रिपब्लिकन सरकार के निमंत्रण पर बार्सेलोना (स्पेन) की थोड़े दिन की यात्रा की थी। उन दिनो वहां गृहयुद्ध हो रहा था। वहां से लौटकर मैंने महात्मा गांधी को अपनी यात्रा के सम्बन्ध में लिखा और मेरी प्रार्थना पर गांधीजी ने रिपब्लिकन सरकार के प्रधानमंत्री के नाम एक पत्र लिखकर मेरे पास भेजा, जिसे मैंने प्रधानमंत्री के पास भेज दिया।]

एल प्रेसीडेटे डेल कोन्सेजो डी मिनिस्ट्रोस
व्याई मिनिस्ट्रो डी डिफेन्सा नेशनल

खुवान नेग्रिन् लोपेथन

बार्सेलोना (स्पेन)
२६ नवम्बर १९३८

मिस्टर जवाहरलाल नेहरू,
ओर्मोन्डे हाउस,
सेट जेम्स स्ट्रीट,
लन्दन, एस डब्ल्यू १

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे सचमुच बड़ा अफसोस है कि मैं आपके पिछले महीने की ११ तारीख के पत्र का इससे पहले उत्तर न दे सका। मैं आपको उस पत्र के लिए और साथ-ही-साथ उसके साथ भेजे गए महात्मा गाधी के पत्र के लिए धन्यवाद देता हू।

महात्माजी के पत्र का उत्तर मैं इस पत्र के साथ भेज रहा हूं। कृपाकर उसे आप उनके पास भेज दीजियेगा।

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि हमारे देश मे इतने थोडे दिन रहकर भी आप यहां के सबध मे इतने अच्छे विचार बना सके। आपने हमारी जनता के लिए जो अभिवादन और हमारी सफलता के लिए जो शुभ कामनाए भेजी है उनके लिए मै आपको हार्दिक धन्यवाद देता हू।

आप स्वयं देख रहे है कि हमे कैसी-कैसी बाधाओ के साथ लडना पड रहा है। हमे न केवल प्रजातत्र के घोषित शत्रुओ के विरुद्ध लडना पड रहा है, बल्कि दुर्भाग्यवश हमे उन लोगो की ओर से भी कठिनाई भोगनी पड़ रही है, जो हमारे मित्र बनने का ढोग रचते है।

सहानुभूति और प्रोत्साहन के कृपापूर्ण शब्दो के लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद।

आपका,
खु. नेग्रिन्
प्रधानमत्री

२३९. खुवान नेग्रिन् लोपेथ् की ओर से महात्मा गाधी के नाम

खुवान नेग्रिन् लोपेथ
एल प्रेजीडेन्टे डेल कोन्सेजो डी मिनिस्ट्रोज
वाई मिनिस्ट्रो डी डिफेन्सा नेशनल

बार्सेलोना
२६ नवम्बर १९३८

महात्मा गाधी,
सेगांव,
वर्धा (इण्डिया)

प्रिय मित्र,

आपका ४ सितम्बर का कृपापत्र, जो आपने हमारे नेक मित्र श्री नेहरू के द्वारा भेजा था, मुझे बहुत देर से मिला। यही कारण है कि मै इससे पहले उसका उत्तर देने का सौभाग्य प्राप्त न कर सका। आशा है, उसके लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

अपने प्रिय देश की स्वतत्रता के लिए हम जो बडा सघर्ष कर रहे है उसके लिए आपने हमारी जनता के प्रति सहानुभूति और प्रोत्साहन के शब्द लिखे है। उनके लिए मै आपको अपना हार्दिक धन्यवाद भेजता हू।

यह जानकर बडा सतोष होता है कि आप जैसे प्रतिष्ठा के लोग हमारे पक्ष मे है ओर हमारे कार्य की न्यायोचितता को पूरी तरह से समझते है। मुझे यह जानकर भी प्रसन्नता हुई है कि आपके देशवासी स्पेन की घटनाओ का बडी सहानुभूति और रुचि के साथ अध्ययन कर रहे है। आपने अपने पत्र मे जो शुभकामनाए और अभिवादन भेजे है उन्हे मै बडी प्रसन्नता के साथ अपनी सरकार, बहादुर सेना और जनता के पास पहुचा दूगा। उनकी ओर से और अपनी ओर से भी मै आपको हार्दिक धन्यवाद भेजता हू।

आपका,

ख़ु. नेग्रिन

२४० रवीन्द्रनाथ टैगोर की ओर स

शातिनिकेतन, बगाल

२८ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

मैने तुम्हे आने और मिलने के लिए इसलिए नही कहा था कि मुझे किसी निश्चित योजना पर बातचीत करनी थी या कोई अनुरोध करना था। मै सिर्फ बगाल के बारे मे तुम्हारी राय जानना चाहता था, जिसकी वर्तमान स्थिति मुझे उलझन मे डालती है और मुझे निराश करती है। मेरा प्रदेश चतुर तो है, पर नैतिक दृष्टि से अशिक्षित होने और अपने पडोसियो को हीन समझने के कारण अपनी इच्छा मे तनिक-सी भी बाधा पडते ही होशहवास खोकर पागलो-जैसी हरकते करने लगता

है। मैं उसकी दुर्बलता जानता हू, पर उसे विनाश की ओर बढते देखकर भी चुपचाप बैठे रहना और तटस्थ बने रहना मेरे लिए सभव नही। लेकिन साथ ही मैं इस बात के लिए भी बिल्कुल तैयार हू कि मैं अपने विशेष काम मे लगा रहू और उसकी देखभाल काग्रेस के ऊपर छोड दू। पर मै स्वय ढीले पेचो को कसने और चुभनेवाले हिस्सो को रेतकर दूर कर देने के लिए किसी वैयक्तिक शक्ति मे विश्वास करता हू—उस मुख्य मिस्त्री की भाति, जो इन्सान के नाते निर्दोष चाहे न हो, पर कुशल मिस्त्री हो। किन्तु मैं तुमसे बातचीत करना, और उससे भी अधिक तुम्हारी बात सुनना, चाहता हू, यद्यपि उससे कोई व्यावहारिक नतीजा चाहे न निकले। सच्ची बात यह है कि मै तुमसे मिलना चाहता हू, पर यह शायद तबतक सभव न हो पाये जबतक तुम्हारे पास कुछ खाली वक्त न हो।

मैं इदिरा के स्वास्थ्य के बारे मे चितित हू। आशा है, जाड़े के महीने हिदुस्तान मे बिताने से उसे मदद मिलेगी।

सप्रेम,

तुम्हारा,
रवीन्द्रनाथ टैगोर

२४१ अनिलकुमार चन्दा की ओर से

शान्तिनिकेतन, बगाल
२८ नवम्बर १९३८

प्रिय पडितजी,

गुरुदेव ने आज फिर आपको लिखा है, बहुत-कुछ मुझे लिखे आपके पत्र के उत्तर मे, परन्तु मुझे निश्चय नही है कि उनका पत्र आपको बहुत ज्यादा बोध देगा।

डा साहा की रैशनल प्लानिंग के विचारो ने उन्हे लुभा लिया है और वह कमेटी से बहुत आशा कर रहे है। इससे पहले कि आप दूसरा कोई काम अपने हाथ में ले, वह आपसे बातचीत करना चाहते थे, जिससे कहीं ऐसा न हो कि घटनाओ के प्रवाह से आप प्लानिंग कमेटी के काम से अपने-आपको सक्रिय रूप से अलग कर लें। आपसे मिलने की उनकी आतुरता का यही मुख्य कारण है।

वह यह भी चाहते है कि अगले वर्ष काग्रेस का अध्यक्ष कोई आधुनिक विचारोवाला व्यक्ति बने ताकि रिपोर्ट जब तैयार हो जाय तो उसे काग्रेस दिल से स्वीकार कर ले और उसे उठाकर पटक न दिया जाय। उनकी राय मे—और हम सबकी राय मे भी—हाई कमाण्ड में केवल दो व्यक्ति सही अर्थो में आधुनिक विचारो के है—आप और सुभाषबाबू। आपके प्लानिंग कमीशन के अध्यक्ष बन जाने से आपका सक्रिय सहयोग पहले ही मिल गया है और इसलिए वह बड़े आतुर है कि सुभाषबाबू दुबारा काग्रेस-अध्यक्ष चुन लिये जाय। मुझे आशा है, मुझमे जो विश्वास रक्खा गया है, उसका मै घात नही कर रहा हू—और आप सभवत पहले ही से जानते है। यदि न जानते होगे तो निश्चय ही आप जल्दी जान लेंगे—लेकिन उन्होने हाल ही मे गाधीजी को इस बारे मे लिखा है। यदि अब उनकी आपसे मुलाकात हो सकी तो सुभाषबाबू को पुन चुनवा लेने मे वह शायद आपकी मदद चाहेगे। यह दूसरा कारण है। इस सबके अलावा वह आपसे इसलिए भी मिलना चाहते है, क्योकि आपसे मिलकर उन्हे बहुत सहज आनद होता है और वह आपसे बातचीत करना चाहते है, क्योकि वह वास्तव मे आपको बहुत चाहते है।

उन्होने मुझसे कहा है कि यहा आने के लिए आप किसी भी कारण से अपना कार्यक्रम न बिगाडे, लेकिन अपनी सुविधा से जितनी जल्दी आ सके आ जाय। आपके आने से उन्हे आनद होगा, परन्तु प्राथमिकता आपके काम और काग्रेस की जरूरतो को मिलनी चाहिए।

इन्दिरा कैसी है ? उन्हे कुछ दिन आराम के लिए यहा क्यो न भेज दे ? हमारे लिए इससे बढकर खुशी की बात और क्या होगी ?

सादर, आपका,

अनिल

२४२. एडवर्ड टामसन की ओर से

वोर्स हिल,
ऑक्सफोर्ड,
२८ नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

सलग्न पत्र एक ब्रिटिश वकील ने लिखा था। वकील महोदय का चरित्र वडा ऊचा है और वह इस वात के मर्मज्ञ है कि गवाही किसको कहते है। मैने पूछताछ की है और मै सतुष्ट हू कि इस पत्र को तथ्य के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। कोई भी लिवरल अथवा लेवर अखवार इसे नही छापेगा, कोई लिवरल अथवा लेवर ससद-सदस्य कुछ पूछेगा नही। दलितो के सभी सच्चे दोस्त यहूदियो के आन्दोलन के पक्षपाती है और इसके विपक्ष की किसी भी वात पर नजर डालने के लिए तैयार नही। 'मनचेस्टर गार्जियन' यहूदी-आन्दोलन के अतिरिक्त कोई चीज अव नही छापता। अव अरव लोग वडी मुसीवत मे है। यहूदियो पर नाजी अत्याचार के कारण हर कोई अपनेको यहूदियो के खिलाफ दिखाना नही चाहता और वे (यहूदी) अमरीकी दवाव को दुगुना करने के मौको का इस्तेमाल कर रहे है और अपनी मागे वढाने के लिए सचेष्ट है। (मुझे यह कहते दु:ख होता है कि रूजवेल्ट ने भी अपने एक भापण मे यह कहा है कि फिलस्तीन का द्वार यहूदियो के लिए खोल दिया जाना चाहिए।)

मुसीवत तो यह है, यह सरकार चाहे खराव ही क्यो न हो, यदि अमरीका और हमारे वामपथियो का दवाव न हो तो फिलस्तीन मे सभ्यता-पूर्ण कार्रवाई करेगी।

मैं जो पत्र भेज रहा हू, उसकी प्रामाणिकता के वारे मे मुझे सतोष है। कोई सुझाव रखने का काम मेरा नही है। लेकिन १ अगर राष्ट्रीय काग्रेस इसी सिलसिले पर मजबूती के साथ अरबो का पक्ष ले और साफ-साफ ये वाते कह दे, जो हममे से कुछ लोग यहा कहते रहे है—यह कि, फिलस्तीन मे 'आतक के विरुद्ध आतक के कारण हिंदुस्तान को विमुख किया जा रहा है, तो इससे इस छोटे-से दलित राष्ट्र को वडा वल मिलेगा (फिलस्तीन मे जघन्य तरीके अपनाये जाने और उत्पीड़न की वाते सुनने मे

आ रही है, जो हिंदुस्तान मे पुलिस के खिलाफ कही जानेवाली कहानियो की याद दिलाती हैं)। २ मुस्लिम लीग से भी इसी तरह का प्रस्ताव पास कराने का कोई तरीका है ? हमारे लोग मुसलमानो की सहानुभूति खोने से बहुत घबराते है। दो प्रतिया भेज रहा हू, इस आशा में कि एक प्रति मुसलमानो तक पहुचाई जा सकती है। अब जबकि इकबाल नही रहे, मैं किसी प्रभावशाली मुसलमान को नही जानता। अकबर हैदरी हैं, पर वह कोई कार्रवाई नही करेंगे।

पता नही, यह पत्र आप तक पहुचेगा भी या नही। मैं भेज तो रहा हू, पर मुझे सन्देह है। अगर पहुच जाय तो सूचित कर दे।

आख के आपरेशन के लिए मेरी पत्नी लदन आई थी। वह ठीक नही रहा। आख की पुतली खिसक गई और एक दूसरा आपरेशन जरूरी था। उनके लिए बडी मुसीबत का समय था और बडी तकलीफ रही। वह अब भी नर्सिंग होम मे है और धीरे-धीरे अच्छी हो रही है।

क्रिसमस और नववर्ष की शुभकामनाए।

आपका,

एडवर्ड टामसन

(इमेरिटस फ्राम इण्डिया)

२४३. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा

३० नवम्बर १९३८

प्रिय जवाहरलाल,

चीनी मित्र आये और पाच के बजाय पैंतीस मिनट ले लिये। अन्त मे मुझे कोमलता से कहना पडा कि वे अपने समय से सात गुना अधिक ठहर गये।

अगाथा की वाइसराय से जो मुलाकात हुई उसके विवरण की तुम्हारी प्रति साथ मे है। मेरा सन्देश इतना ही कहने को था कि वे मुझे अग्रेज-जाति का मित्र समझे और उसका राजनीति से कोई सरोकार नही था।

आशा है, तुमको मेरा वह पत्र ठीक तरह मिल गया होगा, जिसमे मैंने सुभाष-सबधी गुरुदेव का पत्र भेजा था।

मैं आशा रखता हू कि तुम काम से अपने-आपको मार नही रहे हो और इन्दू के हालचाल अच्छे है।

सरूप जो भारी काम कर रही है उससे उसे छुडा देना चाहिए। उसे अपना जर्जर शरीर फिर से वना लेना चाहिए।

प्यार,

बापू

२४४. मुस्तफा-अल-नहास की ओर से

हैलियोपालिस,
१२ दिसम्बर १९३८

प्यारे दोस्त,

अपनी रवानगी के वक्त पोर्ट सईद से आपने जो वढिया खत भेजा था, उसका मुझपर वहुत असर हुआ। यकीन रखिये कि अगर हमारे साथ थोडे दिन रहने की आप अच्छी छाप लेकर गये है तो यहापर भी आपके ऐसे दोस्त है, जो आपके वारे मे उतनी ही वढिया यादे रखते है।

मै आपको वे अखवार भेज रहा हू, जिनमे आपके मिस्र मे रहने का व्यौरा दिया गया है। इनसे आपको पता चलेगा कि मिस्र के वफादार लोग आपको कितनी ऊची जगह देते है और आपकी कितनी इज्जत करते है।

फिलहाल मै उस सवाल को आगे लाने मे लगा हू, जो कि हमारे सामने है। मुझे उम्मीद है कि अपनी-अपनी आजादी को कायम रखते हुए हम साम्राज्यशाही के खिलाफ अपनी लडाई के एक-जैसे मुद्दो पर एक-दूसरे को वरावर खवर देते रहेगे। हम जैसे-जैसे आगे वढते है, वैसे-वैसे दुनिया की साम्राज्यशाही रुझान के वुरे कारनामे साफ होते जाते है। अफसोस है कि वे ही झगडे और आफत की असली जड है। मि दयालदास के जरिये पोर्ट सईद से आपने अपनी जो किताव भिजवाई, उसके लिए मै आपका शुक्र-गुजार हू। इस किताव के पढने से आपकी वहुत ही वहादुराना जिदगी के लिए मेरे नजदीक आपकी कद्र और भी वढी।

हमारी नेशनल वफ्दिस्ट काग्रेस की, जिसम वहुत ही अहम मसलो पर वहस होगी, पक्की तारीख की खवर देने की मै जल्दी ही उम्मीद करता हू।

मुझे अफसोस है कि आपकी वहन को उनके सिकदरिया में रहने के दिनो मे उनकी खराव तदुरुस्ती की वजह से हमारे दोस्त उतनी इज्जत नही दे सके, जितनी देना उनका फर्ज था और उनके लिए खुशी की वात थी।

प्यारे दोस्त, मेरी सच्ची दोस्ती मे यकीन रक्खो। मेरी वीवी मेरे साथ आपको और आपकी मेहरवान लडकी को नेक ख्वाहिशें भेजती है।

आपका,

एस. नहास

फिर से—

आपके जाने के दिन की ली गई कुछ तस्वीरे भेज रहा हू।

एम. एन

२४५. कामेल एल चादरजी की ओर से

वगदाद

१३ दिसम्वर १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

आज की तहजीव का एक सवसे वडा तोहफा शायद यह है कि विना निजी ताल्लुकात के भी एक इन्सान दूसरे लोगो से गहरी दोस्ती कायम कर सकता है। आपका मुल्क न जाने कितने सालो से यकीनन वहुत वडा है। कुदरत ने उसे कभी खतम न होनेवाले जरिये दिये है, हालाकि तहजीव की शुरुआत से ही हिदुस्तान उतना वडा नही रहा, जितना कि आज है। आज तो इसके दिमागी वीज फूटकर ऐसे आदमियो की शक्ल मे खिल उठे है, जिनकी मुल्क को जरूरत है, खास तौर से आप-जैसे निराले शख्स पूरबी आसमान पर चमककर, मेरे और मेरे भाइयो के मन मे वस गये है।

जबतक हिदुस्तान लगातार ऐसे अक्लमदो को पैदा करता रहेगा और दुनिया के लिए ऐसी कुरबानिया करता रहेगा, जो इन्सान की तारीख मे अपने ढग की निराली है, तवतक हिदुस्तान के आनेवाले जमाने के वारे मे मै नाउम्मीद नही हू।

हम आपकी जद्दोजहद की तहेदिल से तारीफ करते है और चाहते है कि हमे भी उसमे थोडा-बहुत हाथ वटाने का मौका मिले, क्योकि

हम दोनो एक ही नाव के मुसाफिर है। साम्राज्यशाही और नाजायज फायदा उठाने के खिलाफ की जानेवाली तहरीक की सच्ची कोशिशो पर अलग-अलग इकाइयो की शक्ल मे गौर नही करना चाहिए, बल्कि यह सोचना चाहिए कि न तो कोई जुगराफिया से ताल्लुक रखनेवाली हदे, न सियासी अड़चने, उन्हे दबा सकती है।

अरब दुनिया के इस हिस्से मे रहनेवाले हम जैसे लोगो को यह बात मजूर करनी चाहिए कि हमे आपकी जबरदस्त लडाई की बहुत थोडी जानकारी थी और मिस्टर यूसुफ मेहरअली से, जिनके साथ सिवा इसके और कोई खराबी न थी कि वह हमारे मुल्क मे बहुत कम ठहरे, हमे आपके सही मकसद की खबरे पाकर बडी खुशी हुई।

हम बहुत चाहते है कि आपकी तहरीक से ताल्लुक कायम करे और उससे वाकिफ हो। हम आपको और आप जैसे दूसरे हिदुस्तानी लोगो को निजी तौर से भी जानना चाहते है। मिस्र की तरह क्या आप कभी ईराक आने की बात नही सोचते, जो आपके इतना नजदीक है ? अगर मै यह कहू कि जिस तरह हमारा फर्ज है कि आपके बडे मुल्क और उसकी मुल्की और इन्सानी कोशिशो के बारे मे जितना भी हो सके उतनी जानकारी हासिल करे, उसी तरह आपको भी अरब दुनिया के इस हिस्से के बारे मे जानकारी हासिल करनी चाहिए तो शायद आप मेरे इस बयान की मुखालफत नही करेगे।

मुझे पक्का यकीन है कि मि मेहरअली का यह थोड़े दिन का सफर आपसे और आपकी तहरीक से, जिसको हम बडी दिलचस्पी के साथ देख रहे है, ताल्लुकात कायम करने की शुरुआत होगी।

इस खत को खत्म करने से पहले मै आपसे गुजारिश करता हू कि अपनी कामयाबी के लिए आप हमारी दिली ख्वाहिशे मजूर करे।

आपका,

कामेल एल चादरजी

सेक्रेटरी

दी पीपल्स रिफार्म पार्टी

२४६ एस. राधाकृष्णन की ओर से

लन्दन
३० दिसम्बर १९३८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे दु ख है कि हिंदुस्तान मे आपसे नही मिल पाया। एक या दो चीजे है, जिनके बारे मे आपसे बाते करना चाहता था।

१ आप जानते है, गाधीजी अपना सत्तरवा साल पूरा कर रहे है और उनकी अगली सालगिरह पर मेरा विचार उन्हे भेट करने के लिए एक ग्रथ निकालने का है, जिसमे केवल शुभकामनाए ही नही होगी, बल्कि उनके जीवन और कार्य पर ससार के बडे-बडे विचारको और नेताओ के निबन्ध और विचार भी होगे। ज्योही मै ऑक्सफोर्ड पहुचूगा, आपको उन लोगो की फेहरिस्त भेजूगा, जिन्हे लिखने के लिए निमत्रित किया गया है। फेहरिस्त मे आप और कोई नाम जोड सकते है। उसकी मुझे सूचना दे दे। आपकी राय मे हमारे भारतीय रजवाडो मे से किसीसे लिखने को कहा जा सकता है ? मुझे इसकी बडी चिन्ता है। मुझे दक्षिण अफ्रीका भी जाना है और जनरल स्मट्स और रामराव को मैने ईस्टर की छुट्टियो मे उसे निश्चित करने के लिए लिखा है।

१९ सितम्बर से ८ दिसम्बर १९३९ तक दक्षिण कैलिफोर्निया के विश्वविद्यालय मे एक सत्र तक के लिए काम करने को वचनबद्ध हू, परन्तु गाधीजी को दी जानेवाली इस भेट—ग्रथ—की दृष्टि से मुझे इसे स्थगित करना पडेगा। सभा इत्यादि की व्यवस्था के लिए मै आपपर निर्भर रहूगा। मै ग्रथ को अवसर के अनुरूप बनाने का भरसक प्रयत्न करूगा। वर्धा मे मैने प्यारेलाल से बातचीत की थी और उन्होने कहा कि इसमे उन्हे कोई आपत्ति नही हो सकती। हिन्दू तिथि के हिसाब से हम दिन रक्खेगे।

आपको भी इसके लिए लगभग एक हजार शब्दो की सामग्री देनी होगी और मार्च सन् १९३९ के अन्त तक आपका लेख मेरे पास पहुच जाय तो ठीक रहेगा।

२ मुझे गाधीजी द्वारा पता लगा कि गवर्नमेट ऑव इडिया एक्ट मे प्रस्तावित सघ के बारे मे उनकी मुख्य आपत्ति उस बेमेल तत्र पर है, जो

जनतत्रीय प्रातो तथा सामंतवादी राजाओ को साथ-साथ लाकर स्थापित किया जायगा। उनका आग्रह है कि उससे पहले कि राजा लोग सघ मे शामिल हो, वे अपने यहा उत्तरदायी शासन स्थापित कर ले। मैंने उनसे पूछा कि अगर राजाओ के प्रतिनिधियो का बहुमत ($\frac{1}{2}+1$) लोकप्रिय विधान-मडलो द्वारा चुनकर भेज दिया जाय तो उन्हे कोई आपत्ति होगी ? उन्हे यह पसन्द नही था। आपका क्या विचार है ?

ब्रिटिश सरकार को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनकी मशा हिंदुस्तान की जनता पर सघ को थोप देने की नही है, जबकि कांग्रेस उसका उसके वर्तमान रूप मे विरोध करती है।

१४ जनवरी तक मै इपीरियल होटल मे रहूगा। उसके बाद ऑक्स-फोर्ड जा रहा हू, जहा मेरा पता होगा—१५, वार्डवेल रोड।

आपका,
राधाकृष्णन

२४७ सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

लन्दन
३ फरवरी १९३९

प्रिय नेहरू,

मै बता नही सकता कि आपके लम्बे और मोहक पत्र को पाकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मुझे ऐसा लगता था कि हमारे एक-दूसरे के बीच सम्पर्क समाप्त होने का खतरा है, क्योंकि हम दोनो ही काम मे बहुत ज्यादा व्यस्त थे। हिंदुस्तान की स्थिति का आपने जो वर्णन किया है वह मेरे लिए बहुत ही बहुमूल्य है, यद्यपि इस समय—जैसाकि शायद आपने अखबारो मे पढा होगा—मै घरेलू समस्याओं और मजदूर पार्टी के भीतरी झगडो मे इतना फसा हुआ हू कि हिंदुस्तानी या औपनिवेशिक मामलो पर अधिक ध्यान केन्द्रित करना मेरे लिए मुश्किल है।

फिर भी मुझे इस बात की बडी खुशी है कि मै लन्दन मे हिंदुस्तानी स्वतन्त्रता-दिवस की सभा मे बोल सका।

यहा की स्थिति दिन-पर-दिन उग्र होती जा रही है। राष्ट्रीय सरकार के साथ जा मिलने की प्रवृत्ति मजदूर-दल मे बढती जा रही है। मै इसी

के खिलाफ लड रहा हू और विकल्पस्वरूप इस पक्ष म हू कि दूसरे विरोधी तत्व एक साथ मिल जाय। मै जो कुछ भी कर रहा हू उसको विस्तार से बताने की जरूरत नही है, क्योकि उसे आप 'ट्रिव्यून' में पढ सकते है, किन्तु इसमे सन्देह नही कि उसे मेरे देश में बहुत काफी समर्थन प्राप्त है और यद्यपि मै यह नही कह सकता कि मुझे पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे आशा अवश्य है कि अगले कुछ महीनो के भीतर-ही-भीतर हमें कुछ सफलता प्राप्त होगी।

क्षमा कीजिये, इस समय मै और अधिक नही लिख पा रहा हू, क्योकि मै बहुत ही जल्दी में हू।

आपका,
आर. स्टफर्ड क्रिप्स

२४८. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
३ फरवरी १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

चुनाव के बाद और जिस ढग से वह लडा गया उसे देखते हुए मै महसूस करता हू कि मैं काग्रेस के अगले अधिवेशन मे अनुपस्थित रहकर देश की सेवा करूगा। इसके अलावा मेरा स्वास्थ्य भी बहुत अच्छा नही है। मै चाहता हू, तुम मेरी मदद करो, मुझे शरीक होने को दबाना नही।

आशा है, तुम्हे और इन्दू को खाली मे आराम लेने से लाभ हुआ होगा। इन्दू को मुझे लिखना चाहिए।

प्यार,

बापू

२४९. सुभाषचन्द्र बोस के नाम

इलाहाबाद
४ फरवरी १९३९

निजी और गोपनीय

प्रिय सुभाष,

शान्तिनिकेतन मे हमने कोई घटेभर या ज्यादा बातचीत की थी,

लेकिन मेरा खयाल है कि हम स्थिति को साफ करने मे कामयाव नही हुए। असल मे हम कर भी नही सकते थे, क्योकि कई तरह की अनिश्चितताए है और मुझे मालूम नही, मामलात की क्या शक्ल वनेगी। हमे इन घटनाओ का इन्तजार करना होगा, लेकिन साथ ही ये घटनाए खुद हमपर और खास तौर पर तुमपर निर्भर करती है।

जैसा मैने तुमसे कहा, तुम्हे चुनाव लडने से कुछ तो फायदा हुआ और कुछ नुकसान। मै फायदे को मानता हू, लेकिन जो नुक्सान होगा, उससे आशकित हू। मै अव भी सोचता हू कि कुल मिलाकर वेहतर होता अगर यह खासतौर का सघर्प इस तरह न हुआ होता। परन्तु यह तो पुरानी वात है और हमे भविष्य का सामना करना है। इस भविष्य को हमे वडे नजरिये से, न कि व्यक्तियो के नजरिये से देखना होगा। जाहिर है कि हममे से किसीके लिए भी यह अच्छा नही कि हमारी इच्छा के अनुसार ही मामलात की शक्ल न वने तो हम गुस्सा कर ले। नतीजा कुछ भी निकले, हमे तो ध्येय मे पूरा योग देना है। यह मान लिया जाय तो भी सही रास्ता देखना आसान नही है और मेरा मन भविष्य के वारे मे चितित है।

पहली चीज जो हमे करनी होगी वह यह है कि एक-दूसरे के नजरिये को पूरी तरह समझ ले। अगर यह कर ले तो तजवीजो का वनाना आसान है। लेकिन हमारे मन मे सघर्ष और शकाए भरी हो कि सामनेवाले का क्या मकसद है तव भविष्य के निर्माण की कोशिश करना आसान काम नही होता। पिछले कुछ वरसो मे गाधीजी और वल्लभभाई और उनके खयाल के दूसरे कुछ लोगो के निकट सम्पर्क मे आया हू। हमारी वार-वार और लम्बी चर्चाए हुई है और हालाकि हम एक-दूसरे को कायल नही कर सके तो भी असर काफी जन्मा है, और मुझे विश्वास है कि हमने एक-दूसरे को वहुत हद तक समझ भी लिया है। १९३३ मे ही जेलखाने से निकलकर मै गाधीजी से मिलने पूना गया था, जहां वह उपवास के वाद आराम कर रहे थे। हमारे सग्राम के जुदे-जुदे पहलुओ के वारे में लम्बी वाते हुई और फिर हमारे वीच पत्र-व्यवहार हुआ, जो वाद मे छपा। उन पत्रो और वातचीतो मे हमारे स्वभाव-सवधी और वुनियादी मतभेद

भी जाहिर हुए और वहुत-सी चीजे जो एक-सी थी, वे भी सामने आई। तवसे खानगी मे और कार्य-समिति मे कई वार चर्चाए हुई है। कई मौको पर मै अध्यक्ष-पद से और कार्य-समिति से भी त्यागपत्र देने को तैयार हो गया था, लेकिन मै रुका, क्योकि मैने सोचा कि इससे ऐसे मौके पर सकट पैदा हो जायगा, जव एकता की निहायत जरूरत थी। शायद मेरी भूल हुई।

अव यह सकट ऐसे तरीके पर आया है, जो दुर्भाग्यपूर्ण है। मेरा अपना कार्यक्रम निश्चित करने से पहले मुझे कुछ कल्पना होनी चाहिए कि तुम्हारे खयाल से काग्रेस को क्या होना चाहिए और क्या करना चाहिए। मुझे तो इस वारे मे कुछ भी मालूम नही है। वामपक्ष और दक्षिणपक्ष के वारे मे और सघ-शासन वगैरा के वारे मे वहुत-सी वाते हुई है, फिर भी जहातक मै याद कर सकता हू तुम्हारी सदारत के दौरान मे हमने कार्य-समिति मे इन सवालो के वारे मे कोई खास महत्व की वातो पर चर्चा नही की। मुझे पता नही तुम किसे वामपक्षी और किसे दक्षिणपक्षी समझते हो। अध्यक्ष के चुनाव के दौरान तुम्हारे वयानो मे जिस ढग से इन शव्दो का प्रयोग किया गया उनसे यह अर्थ निकलता था कि गाधीजी और कार्य-समिति मे जो उनकी मडली समझी जाती है वे दक्षिणपक्षी नेता है। उनके विरोधी जो भी हो, वे वामपक्षी है। यह मुझे विल्कुल गलत-वयानी दिखाई देती है। मुझे ऐसा मालूम हाता है कि कई कहे जानेवाले वामपक्षी कथित दक्षिणपक्षियो से अधिक दक्षिणपक्षी है। तेज भापा और काग्रेस के पुराने नेतृत्व की नुक्ताचीनी करने और उनपर हमला करने की क्षमता राजनीति मे वामपक्ष की कसौटी नही है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि तात्कालिक भविष्य मे हमारे मुख्य खतरो मे से एक यह है कि ऐसे लोग पदारूढ होगे और जिंम्मेदारी के स्थान मे आ जायगे, जिनमे कुछ भी जिम्मेदारी की भावना नही है या स्थिति को वे अच्छी तरह समझते नही है और न उनमे ऊचे दर्जे की बुद्धि मालूम होती है। वे ऐसी स्थिति पैदा कर देगे, जिससे वडी प्रतिक्रिया हुए विना नही रहेगी और फिर सच्चे वामपक्षियो का सफाया हो जायगा। चीन का उदाहरण हमारे सामने है और मै नही चाहता कि हिदुस्तान उस दुर्भाग्यपूर्ण रास्ते को अपनाये। मेरा बस चले तो मै उसे रोक।

मेरे खयाल से वामपक्ष और दक्षिणपक्ष शब्दो का प्रयोग आम तौर पर बिल्कुल गलत और गडबड पैदा करनेवाला हुआ है। यदि इन शब्दो के बजाय हम नीतियो के बारे मे बात करे तो कही बेहतर होगा। तुम किस नीति के समर्थक हो ? सघ-विरोधी ? बहुत ठीक। मेरा खयाल है कि कार्य-समिति के सदस्यो का बडा बहुमत उसका समर्थन करेगा और इस मामले मे उनकी कमजोरी का सकेत करना न्यायपूर्ण नही है। क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर न होता कि इस मामले की चर्चा कार्यसमिति मे पूरी तरह की जाती और इस बारे मे कोई तजवीज भी पेश की जाती और फिर उसकी प्रतिक्रियाए देखी जाती ? अपने साथियो के साथ इस मामले की पूरी चर्चा किये बिना उन सबपर पीछे हटने का दोष लगाना अवश्य ही न्याय नही था। मै यहा उस बात को नही दोहराऊगा जो मैने तुमसे इस असाधारण अभियोग के बारे मे कही थी कि सघ-शासन मे मन्त्रिमडलो का वटवारा पहले ही हो चुका है। अनिवार्य रूप से अधिकाश लोगो ने सोचा कि कार्य-समिति के तुम्हारे साथी दोषी थे।

तुम्हे याद होगा कि मैने यूरोप से तुमको और कार्य-समिति को लम्बी रिपोर्ट भेजी थी। मैने बहुत ब्यौरेवार चर्चा की थी कि सघ-शासन के प्रति हमारा क्या रवैया होना चाहिए और निर्देशो की माग की थी। तुमने मुझे कोई निर्देश नही भेजा, पहुच तक नही दी। गाधीजी मेरे तरीके से सहमत थे और मुझे बताया गया है कि कार्य-समिति के अधिकाश सदस्य भी सहमत थे। मुझे अभी तक पता नही कि तुमपर क्या प्रतिक्रियाए हुई, परन्तु मुझे सूचना देने की बात छोड दी जाय तो भी क्या तुम्हारे लिए यह मौका नही था कि इस मामले की कार्यसमिति मे खूब चर्चा की जाय और इधर या उधर फैसला कर लिया जाय ? दुर्भाग्य से इस मामले मे और दूसरे मामलो मे तुमने कार्यसमिति मे बिल्कुल निष्क्रिय वृत्ति धारण की है, हालाकि कभी-कभी वाहर तुमने अपने विचार प्रकट किये है। नतीजा यह निकला कि तुमने एक निर्देशक अध्यक्ष की अपेक्षा स्पीकर के रूप मे अधिक काम किया है।

महासमिति के दफ्तर का काम पिछले साल के दौरान मे बहुत बिगड

का जवाव शायद ही दिया गया हो। नतीजा यह होता है कि दफ्तर के वहुत-से मामले अनिश्चित काल तक लटके रहते है। ठीक जिस समय हमारे सगठन को गहरे ध्यान की जरूरत है, उस समय मुख्य कार्यालय कारगर तरीके पर काम नही करता।

हमारे सामने रियासतो का सवाल है, हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न है और किसानो तथा मजदूरो की समस्या है। इनके वारे मे कई दृष्टिकोण है और कुछ सघर्ष भी है। क्या इनमे से किसीपर तुम्हारे निश्चित विचार है जो अपने साथियो के विचारो से भिन्न है ? वाम्वे ट्रेड डिस्प्यूट्स विल को लो। मै उसकी कुछ धाराओ से सहमत नही हू और यदि मै यहा होता तो उन्हे वदलवाने की पूरी कोशिश करता। क्या तुम भी असहमत हो और हो तो क्या तुमने उन्हे वदलवाने की कोशिश की ? किसानो-सबधी आम स्थिति के सवध मे, वगालसहित, विभिन्न प्रान्तो मे, मुझे पता नही कि तुम्हारे निश्चित विचार क्या है।

प्रान्तीय काग्रेसी सरकारे तेजी से छोटे-मोटे सकटो की ओर जा रही है और यह विल्कुल सभव है कि रियासती आन्दोलन के वढने से कोई वडा सकट उपस्थित हो जाय, जिसमे हम सव और प्रान्तीय सरकारे भी फस जायगी। तुम्हारे खयाल से हमे कौन-सा रास्ता अख्तियार करना चाहिए ? वगाल मे मिले-जुले मत्रिमडल की तुम्हारी इच्छा का सविधान-वाद की ओर वह जाने के खिलाफ तुम्हारी नाराजी के साथ मेल नही वठता। मामूली तौर पर इसे एक दक्षिणपक्षी कार्रवाई समझा जायगा और खास तौर पर अव जवकि स्थिति का तेजी के साथ विकास हो रहा है।

और फिर वैदेशिक नीति का भी सवाल है। तुम जानते हो कि खास तौर पर इस नाजुक मौके पर मै उसे बहुत अहमियत देता हू। जहातक मै समझ सकता हू, तुम भी देते हो। परन्तु अभी तक मुझे ठीक-ठीक पता नही है कि तुम किस नीति की कल्पना करते हो। मुझे सामान्य रूप मे गाधीजी का नजरिया मालूम है और मै उनसे पूरी तरह सहमत नही हू, हालाकि अतर्राष्ट्रीय सकट के दो-तीन वर्षो मे हम साथ-साथ चले है और चल सकते है और उन्होने मेरे नजरिये से पूरी तरह सहमत हुए बिना

अक्सर उसे स्वीकार किया है ।

ये और कई दूसरे सवाल मेरे मन मे पैदा होते है और मै जानता हू कि और बहुत-से लोगो को भी उनसे परेशानी होती है। उनमे वे लोग भी शामिल है, जिन्होने चुनाव मे तुम्हारे लिए राय दी है। यह बिल्कुल मुमकिन है कि इनमे से बहुत-से लोग काग्रेस मे उठनेवाले सवालो पर बिल्कुल दूसरी तरह राय दे और वहा कोई नई स्थिति पैदा हो जाय ।

कार्य-समिति की रचना से बहुत-सी समस्याए खडी होगी । अतिम समस्या ऐसी समिति बनाने की होगी, जिसे महासमिति का और आम तौर पर काग्रेस का विश्वास प्राप्त हो। वर्तमान परिस्थिति मे यह स्वय बहुत कठिन बात है । ऐसी समिति का होना बहुत अच्छी बात नही है, जो ऐसे लोगो की इच्छा पर कायम रहती है, जो जिम्मेदार नही समझे जाते और जिनकी प्रमुखता का मुख्य कारण यह हो कि वे जिसे दक्षिण-पक्षी समझते है, उनकी उन्होने टीका-टिप्पणी की है । ऐसी समिति पर किसीका, चाहे वह वामपक्षी हो या दक्षिणपक्षी, विश्वास नही होगा । वह या तो उठाकर फेक दी जायगी या महत्वहीन बनकर रह जायगी ।

यह बिल्कुल सभव है कि रियासती सग्राम के बढने पर वल्लभभाई और गाधीजी तक उसमे अधिकाधिक फस जायगे। हिदुस्तान की राजनीति मे वह केन्द्रीय वस्तु बन जायगी और कोई कार्यसमिति, जिसमे दूसरे लोग होगे, कारगर नही होगी और उसका महत्व नही रहेगा । पिछले दस-पद्रह साल मे कार्यसमिति का हिदुस्तान मे और बाहर भी बहुत ऊचा दर्जा रहा है। उसके फैसलो का कुछ अर्थ माना जाता है और उसकी बात मे ताकत होती है। वह इतनी चिल्लाती नही है, परन्तु जो कुछ वह कहती है उसके पीछे ताकत और क्रिया होती है । मुझे डर है कि हमारे बहुत-से कथित वामपक्षी और किसी बात की अपेक्षा तेज भाषा मे अधिक विश्वास करते है । मेरे दिल मे नरीमान-ढग के सार्वजनिक कार्यकर्त्ता के लिए कुछ भी प्रशसा नही है और इस किस्म के बहुत लोग है ।

हम दुखदायी पेच मे फस गये है और फिलहाल मुझ उसम से

निकलने का कोई रास्ता नजर नही आता । मै पूरी कोशिश करने को तैयार हू, लेकिन स्पष्टीकरण और नेतृत्व तुम्हारी तरफ से होना चाहिए और तभी दूसरो के लिए यह निश्चय करना सभव होगा कि उनका मेल बैठता है या नही । इसलिए तुमको मेरा सुझाव है कि तुम स्थिति के सभी गूढार्थो की जाच करो, ऊपर बताई समस्याओ पर विचार करो और उनपर एक ब्यौरेवार नोट लिखो । इसे प्रकाशित करने की जरूरत नही, परन्तु उसे उन लोगो को दिखलाना चाहिए, जिन्हे तुम सहयोग के लिए निमत्रण दो । ऐसा नोट चर्चा का आधार बन जायगा और चर्चा से तुमको मौजूदा गुत्थी सुलझाने मे मदद मिलेगी । बातचीत से बहुत फायदा नही होता । वे अस्पष्ट और अक्सर गुमराह करनेवाली होती है और हमारे यहा पहले ही काफी अस्पष्टता रही है । मै चाहता हू कि तुम ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने के बारे मे अपने सुझाव का विस्तार करो । ठीक-ठीक तुम इस बारे मे क्या कार्रवाई करना चाहते है और बाद मे क्या करोगे ? जैसा मैने तुमको बता दिया है, मुझे यह विचार बिल्कुल पसन्द नही है, परन्तु यह सभव है कि अगर तुम इसका विस्तार करो तो शायद मै उसे ज्यादा अच्छी तरह समझ सकू । मैने अखबारो मे तुम्हारा बयान देखा है । मेरे लिए वह इतना अस्पष्ट है कि मै तुम्हारी इस स्थिति को नही समझ सकता । इसलिए मेरा अनुरोध है कि पूरा स्पष्टीकरण करो ।

सार्वजनिक मामलो मे सिद्धान्त और नीतिया होती है । हममे एक-दूसरे को समझने और साथियो की नेकनीयती मे विश्वास रखने की बात भी होती है । अगर यह समझ और विश्वास नही है तो लाभदायक सहयोग बहुत कठिन हो जाता है । उम्र बढने के साथ-साथ मै साथियो के बीच इस विश्वास और समझ को अधिकाधिक महत्व देने लगा हू । मै बढिया-से-बढिया उसूलो का भी क्या करू, अगर मुझे सबधित व्यक्ति मे भरोसा न हो ? अनेक प्रान्तो की दलबदिया इसका उदाहरण है और जो लोग मामूली तौर पर सम्माननीय और खरे है उनमे अत्यन्त कटुता और अक्सर बिल्कुल बेउसूलपन पाया जाता है । मै इस तरह की राजनीति को हजम नही कर सकता और मैने कई साल से अपने-आपको

उससे बिल्कुल अलग रखा है । मै किसी गुट या किसी दूसरे आदमी के समर्थन के बिना निजी तौर से काम करता हू, हालाकि मुझे खुशी है कि मुझे बहुतो का विश्वास प्राप्त है । मुझे लगता है कि यह प्रान्तीय खराबी अब अखिल भारतीय स्तर पर फैलाई जा रही है । यह मेरे लिए बडी गम्भीर चिन्ता का विषय है ।

तो हम फिर इस बात पर आ जाते है राजनैतिक समस्याओ के पीछे मनोवैज्ञानिक समस्याए है और उनसे निपटना हमेशा अधिक कठिन होता है। इसका एक ही उपाय है कि एक-दूसरे के साथ बिल्कुल खुले दिल से बात करे और इसलिए मुझे आशा है कि हम सब पूरी तरह साफ-साफ बाते करेगे ।

मै यह आशा नही रखता कि तुम इस पत्र का जवाब फौरन दोगे। इसमे कुछ दिन लगेगे । लेकिन मै चाहूगा कि तुम मुझे इसकी पहुच भेज दो ।

तुम्हारा,
जवाहर

२५० वल्लभभाई पटेल की ओर से

बम्बई
८ फरवरी १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा पिछला पत्र बारडोली मे मिला, जो मेरे उस आग्रह के उत्तर मे था कि तुम सयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर करो या एक स्वतन्त्र वक्तव्य दो । मैने तुम्हे यह सुझाव बापू के कहने पर दिया था । तुम्हारा जवाब भी मैने उन्हे दिखा दिया है और उन्होने मुझसे कहा है कि इसके बारे मे मै अपने विचार तुम्हे लिख दू । वह स्वय भी उस पत्र से अप्रसन्न हुए, परन्तु मैने तुम्हे और ज्यादा कष्ट देना ठीक नही समझा । सयुक्त वक्तव्य भी उन्हीके कहने से जारी किया गया था । वास्तव मे मैने उनसे कह दिया था कि मुझपर कीचड उछालने का यह एक और बहाना हो जायगा, लेकिन वह नही माने और मैने उनकी आज्ञा का पालन किया । मौलाना ने अन्तिम क्षण पर अपना नाम वापस ले लिया ।

वास्तव मे मुझे प्रसन्नता है कि हम हार गये । बिना एक विचार की

कार्य-समिति के कोई भी प्रभावकारी काम सभव नही है। मै तो सदा ऐसे अवसर के लिए भगवान से प्रार्थना करता रहा हू।

जिससे मै सबसे ज्यादा घृणा करता हू वह वह तरीका है, जो इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनेको वामपक्षी कहने का दावा करनेवाले लोगो द्वारा, और उससे भी ज्यादा अध्यक्ष द्वारा, अपनाया गया, जिसका हमपर यह आरोप है कि हम ब्रिटिश सरकार के साथ षड्यत्र मे शामिल हो गये है और स्थायी तौर पर सघ-मत्रिमडल भी बना लिया है। दुश्मनो को भी हमारी ईमानदारी पर भरोसा है, परन्तु हमारे अध्यक्ष को नही। किसी तरह भी हमे इस बारे मे सदेह नही है कि हमे क्या करना है और मैने सुभाष को लिख भी दिया है कि हम उनकी सुविधा से बाहर निकल आने को तैयार है। जीवत तुम्हे उस पत्र की एक नकल दिखायेंगे, जो मैने कल उन्हे भेजा है।

मै तुम्हारे विचार नही जानता, परन्तु इतनी आशा तो है कि हमने जो कुछ करने का सोचा है, उसके लिए कम-से-कम तुम हमे दोष नही दोगे। मेरा विचार है कि मेरी किस्मत मे ही गालिया खाना बदा है। बगाल के अखबार मुझपर आगबबूला है और खरे और नरीमान-काड के लिए वे मुझे दोष देते है, हालाकि मेरे सब साथी भी इन कामो के लिए सयुक्त रूप से जिम्मेदार है। तथ्य यह है कि डा. खरे के मामले मे सुभाष शुरू से आखिर तक उपस्थित थे और उन्होने ही सारी चीज का सचालन किया था।

बडौदा मे भी मेरे कारण एक बवडर उठ खडा हुआ है। महाराष्ट्र के अखबारो मे मेरे विरुद्ध जहर भरा रहता है। वे मेरे खून के प्यासे है।

राजकोट की वजह से सारे काठियावाड मे आग-सी सुलग रही है। वहा जबरदस्त जन-जागृति हो गई है। अगर रेजिडेन्टो ने दबाव न डाला होता तो सारे नरेश फौरन झुक जाते।

आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

तुम्हारा,
वल्लभभाई

२५१. सुभाषचद्र बोस की ओर से

चौरम, जिला गया
१० फरवरी १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे तुम्हारा लबा पत्र कलकत्ता मे मिला। तुमने मेरी कमजोरियो का जिक्र किया है। जबकि मुझे उनका पूरी तरह भान है, मुझे कहना चाहिए कि कहानी का दूसरा पहलू भी है। इसके अलावा किसीको उन बाधाओ को नही भुलाना चाहिए, जिनका मुझे सामना करना पडा। उनका मै इस पत्र मे जिक्र नही करना चाहता, कुछ तो इसलिए कि उससे एक विवाद छिड जायगा और कुछ मुझे दूसरो की आलोचना करनी पडेगी। अब मुख्य प्रश्न त्रिपुरी काग्रेस के कार्यक्रम का है। जयप्रकाश तुमसे १२ ता को मिलेगे और कार्यक्रम के बारे मे मेरे विचार तुम्हे बतायेगे। मै उसी समय तुमसे मिलना चाहता, किन्तु मैं नही समझता कि यह सभव हो सकेगा। जो हो, मै ता २० को इलाहाबाद मे तुमसे मिलने की कोशिश करूगा।

राजकोट आदि के बारे मे मैंने तुम्हारा वक्तव्य देखा। वक्तव्य बहुत अच्छा है, किन्तु मेरे विचार से उसमे एक दोष है। ब्रिटिश सरकार राजाओ के जरिये काग्रेस से लडना चाहती है, किन्तु हमे उसके जाल मे नही फसना चाहिए। रियासती समस्याओ के बारे मे राजाओ के साथ मोर्चा लेते हुए भी, हमको स्वराज्य के प्रश्न पर ब्रिटिश सरकार को सीधी चुनौती देनी चाहिए। तुम्हारे वक्तव्य मे मुझे यह विचार नही मिला और मै अनुभव करता हू कि अगर हम स्वराज्य का प्रश्न छोड देते है और केवल रियासती प्रश्नो पर ब्रिटिश सरकार और राजाओ से लडना शुरू कर देते है तो हम अपनी असली लडाई से भटक जाने का खतरा मोल ले रहे है। शेष मिलने पर।

सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

२५२ वाई टी वू की ओर से

दी नेशनल कमिटी,
ऑव यगमेन्स क्रिश्चियन एसोसियेशन ऑव चाइना
१३१, म्यूजियम रोड, शघाई
२३ फरवरी १९३९

प्रिय श्री नेहरू,

आपसे वारडोली मे मिलने के वाद मै कुशलपूर्वक और सानन्द घर लौट आया। वारडोली मे इतनी व्यस्तता के वीच भी आपने हमसे जो भेट की थी और जहाज पर मेरे पास आपने जो सदेश भेजा था, उसके लिए मै एक वार फिर कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू। वह सदेश और साथ-ही-साथ जो सदेश आपने मिस्टर साई को भेजा था, उन दोनो का ही चीनी भाषा मे अनुवाद किया गया और वे सिंगापुर, हागकाग तथा शघाई मे चीनी और विदेशी पत्रो मे प्रकाशित हुए।

यह पत्र मै आपको उस वातचीत की पुष्टि करने के लिए लिख रहा हू, जो हमने आपकी आत्मकथा को चीनी भाषा मे अनुवादित करने के वारे मे की थी। हम इस कार्य को जल्दी ही आरम्भ करने जा रहे है और मेरा खयाल है कि आप अपने प्रकाशको को भी इसकी सूचना दे देना चाहेगे। जैसाकि मैने आपसे वारडोली मे कहा था, चीन अन्तर्राष्ट्रीय कापीराइट योजना का सदस्य नही है और वह लेखको तथा प्रकाशको से अनुमति लिये विना ही पुस्तके छापता रहा है। फिर भी हमारे एसो-सिएशन प्रेस ने अपनी यह नीति रखी है कि वह कम-से-कम लेखक को सूचना दे देता है और जव कभी सम्भव होता है तव शिष्टाचार के नाते अनूदित पुस्तक की कुछ प्रतिया भी उसे भेज देता है।

अनुवाद को हमे कुछ सक्षिप्त करना पडेगा, जिससे कि उसका आकार कुछ कम हो जाय और उसे सस्ते दामो मे निकाला जा सके। अगर आपको इसमे कोई आपत्ति हुई तो हम ऐसा नही करना चाहेगे।

निश्चय है कि आपकी इस पुस्तक से चीनी पाठको को वडी प्रेरणा

मिलेगी, जैसीकि कुछ साल पहले गाधीजी की आत्मकथा के अनुवाद से मिली थी ।

भवदीय,
वाई. टी. वू
प्रधान सम्पादक

२५३. शरच्चन्द्र बोस के नाम

इलाहाबाद
२४ मार्च १९३९

प्रिय शरत्,

गाधीजी मौलाना आजाद से मिलने आज सुबह यहा पहुचे और उन्होने मुझे आपका २१ मार्च का उनके नाम का खत दिखाया। उसे पढकर मुझे दु ख और अचरज हुआ। हम सब जानते है कि प्रमुख काग्रेसियो मे नीति और कार्यक्रम की बातो पर मतभेद है और हमने अक्सर अपने-अपने नजरिये को प्रकट किया है, हालाकि हम साथ-साथ चलने मे कामयाव हुए है। आम तौर पर काग्रेस ने गाधीजी के कार्यक्रम का पालन किया है और उनके नेतृत्व को स्वीकार किया है। खुद मुझे ऐसे मतभेदो मे कोई नुकसान दिखाई नही देता, बशर्ते कि सामान्य कडी वनी रहे और हम मिलकर काम करते रहे। हमारे आन्दोलन मे ये प्राणशक्ति के चिह्न है। परन्तु आपके पत्र मे शायद ही किसी नीति या कार्यक्रम के सवाल का जिक्र है। उसमे निजी मुद्दो का जिक्र है और खास आदमियो के खिलाफ गम्भीर आरोप लगाये गए है। उससे बहस नीची सतह पर उतर आती है और यह जाहिर है कि यदि किसी आदमी या गुट की दूसरे के खिलाफ ऐसी राय हो तो किसी सामान्य कार्य मे आपसी सहयोग अस-भव हो जाता है। मुझे पता नही कि आपके पत्र मे इस बारे मे सुभाष के विचार कहातक व्यक्त होते है। कुछ भी हो, यह जाहिर है कि आपने जो निजी सवाल उठाये है, उनकी सफाई नही होगी तो उनसे कारगर सहयोग मे बाधा पडेगी।

आपके पत्र से निजी मुद्दा तीव हो जाता है। लेकिन यह सवाल तो पहले भी था और, जैसा आपको मालम है, त्रिपुरी मे वह प्रमुख रहा।

जव अध्यक्ष के चुनाव के दो-तीन दिन वाद मै सुभाप से मिला तो मुझे इसका महत्व मालूम हो गया और मैने उनसे इसकी सफाई कर लेने का अनुरोध किया। उसके थोडे ही दिन बाद ४ फरवरी को मैने उन्हे एक लम्बा खत लिखा, जिसमे मैने उनसे अनुरोध किया कि जहातक उनका सबध है, राजनैतिक मुद्दो की सफाई करले, क्योकि वामपक्ष और दक्षिणपक्ष की वहुत ज्यादा अस्पष्ट वाते होती रही थी और उनसे हालत पर कोई रोशनी नही पडती थी और मैने खानगी पहलू का भी जिक्र किया था। मैने यह लिखा था

"सार्वजनिक मामलो में सिद्धान्त और नीतिया होती है। हममें एक दूसरे को समझने और साथियो की नेकनीयती मे विश्वास रखने की वात भी होती है। यदि यह समझ और विश्वास नही है तो लाभदायक सहयोग वहुत कठिन हो जाता है। उम्र वढने के साथ-साथ मै साथियों के वीच इस विश्वास और समझ को अधिकाधिक महत्व देने लगा हू। मै वढिया-से-वढिया उसूलो का भी क्या करू, अगर मुझे सवधित व्यक्ति मे भरोसा न हो ? अनेक प्रान्तो की दलवन्दिया इसका उदाहरण है। और जो लोग मामूली तौर पर सम्माननीय और खरे है, उनमे अत्यन्त कटुता और अक्सर विल्कुल वेउसूलपन पाया जाता है। मै इस तरह की राजनीति को हजम नही कर सकता और मैने कई साल से अपने-आपको उससे विलकुल अलग रखा है। मै किसी गुट या किसी दूसरे आदमी के समर्थन के बिना निजी तौर से काम करता हू, हालाकि कि मुझे खुशी है कि मुझे वहुतो का विश्वास मिला हुआ है। मुझे लगता है कि यह प्रान्तीय खरावी अव अखिल भारतीय स्तर पर फैलाई जा रही है। यह मेरे लिए वडा गम्भीर चिन्ता का विपय है।

"तो हम फिर इस बात पर आ जाते है राजनैतिक समस्याओ के पीछे मनोवैज्ञानिक समस्याए है और उनसे निपटना हमेशा अधिक कठिन होता है। इसका एक ही उपाय है कि आप एक-दूसरे के साथ बिल्कुल खुले दिल से बात करे और इसलिए मुझे आशा है कि हम सब पूरी तरह साफ-साफ बाते करेगे।"

दुर्भाग्य से सुभाष को राजनैतिक या निजी सवालो की सफाई

करने का समय नही मिला या इच्छा नही थी। जब वह गाधीजी से मिलने वर्धा जा रहे थे तब मैंने उनसे फिर अनुरोध किया था कि निजी पहलू साफ-साफ तौर पर निपटा ले क्योकि अपने बयान मे उन्होने जो आरोप लगाये थे वे गभीर थे और जहा-के-तहा नही छोडे जा सकते थे। उनकी बाद की सफाई से मामला बिल्कुल नही सुधरा था। उन्होने इस बारे मे गाधीजी से बात करने का वचन दिया था, लेकिन बाद मे ऐसा हुआ कि उन्होंने इस विषय का जिक्र तक न किया।

इस प्रकार यह मामला, जैसा मुझे भय था, काग्रेस के सामने आ गया और इससे दूसरे मुद्दो के विचार पर भी असर पडा। मेरा अपना रवैया इस मामले मे मेरे लिए अनोखा था और मै दोनो तरफ के किसी भी आदमी के विचारो से पूरी तरह सहमत नही हो सका। इसलिए मैंने विषय-समिति या खुली काग्रेस मे इस चर्चा मे कोई भाग नही लिया। लेकिन मुझे बहुत तेजी से अनुभव हुआ कि अध्यक्ष के बयानो में जो आरोप लगाये गए थे वे साथियो के प्रति अन्यायपूर्ण थे और उन्हे वापस लेना चाहिए। खुली काग्रेस मे मेरा हस्तक्षेप सिर्फ कार्यवाहक अध्यक्ष की बात कहने और जो कार्यविधि अपनाने की थी उसे अग्रेजी मे समझाना ही था। किसी-न-किसी कारणवश कुछ प्रतिनिधि नही चाहते थे कि मै जरा भी बोलू, हालाकि उन्हे यह मालूम नही था कि मै क्या बोलनेवाला था और उनकी तरफ से सगठित रुकावट हुई, जो आपने देखी। मैंने खयाल किया कि थोडे-से प्रतिनिधियो की इस अडगेबाजी के कारण हट जाना या झुक जाना मेरे लिए नामुनासिब होगा, जबकि लगभग एक लाख प्रतिनिधि और दर्शक, जिन्होने अत्यन्त उल्लेखनीय शान्ति और अनुशासन का पालन किया, मेरी बात सुनना चाहते थे। इसलिए मै डेढ घटे तक डटा रहा। मै कबूल करता हू कि कुछ सैकिड के लिए मुझे गुस्सा आ गया और मैंने आपसे कह दिया कि यह हुल्लडबाजी और फासिस्ट व्यवहार था। मै इस बारे मे आपसे कह रहा था, न कि श्रोताओ से, हालाकि मेरे कुछ शब्द माइक्रोफोन पर चले गये होगे। मुझे गुस्से मे आने का अफसोस है, मगर आप अवश्य समझ लेगे कि मुझपर दबाव बहुत पडा था।

मैंने यह सफाई जरा लम्बी दी है, क्योकि इस घटना मे मेरा खुद का

सवध था। और वातें जिनका आपने जिक्र किया है वहुत-कुछ मेरी जानकारी के वाहर की है, लेकिन जो आरोप आप लगाते है वे इतने आश्चर्यजनक है कि मुझे उनके सच होने पर भरोसा नही होता। मै मानता हू कि काग्रेस के दिनो मे वोट मागने का काम व्यापक रूप में हुआ और सव तरह की वाते कही गई होगी। मुझे इस तरह की चीज से अरुचि है, इसलिए मै दूर-दूर रहा और प्रतिनिधियो के शिविर मे भी नही गया। अलवत्ता, शुरू-शुरू मे उत्तर प्रदेश काग्रेस-समिति की सभा मे गया था। लेकिन आपके आरोप पुरानी कार्यसमिति के कुछ प्रमुख सदस्यो के खिलाफ है। मुझे इनके वारे मे कोई जानकारी नही है और मुझे विश्वास है, आप सहमत होगे कि व्यक्तियो के विरुद्ध निश्चित सवूत के विना ऐसे आरोप योही नही लगाये जा सकते। किसीके लिए यह कहना वेहूदा वात थी कि सुभाष की वीमारी वनावटी थी और जहातक मै जानता हू मेरे किसी साथी ने इसका सकेत भी नही किया। सच तो यह है कि हम सवको वडी चिन्ता थी।

भूलाभाई देसाई ने क्या कहा होगा, इसका जवाव देना तो उन्हीका काम है। मै तो यही मानता हू कि आपने गलत समझा, क्योकि मै कल्पना नही कर सकता कि वह ऐसी बात कहेगे।

कार्यवाहक अध्यक्ष के निर्णय अथवा व्यवहार के वारे मे कुछ भी कहना मेरा काम नही है। परन्तु मुझे विश्वास है कि फिर से सोचने पर आप मुझसे सहमत होगे कि वह वहुत कठिन स्थिति मे थे और उन्होने कार्रवाई शान और इन्साफ के साथ चलाई। राष्ट्रीय माग के प्रस्ताव पर आपको सशोधन रखने देने मे उन्होने किसी बात को खीचा होगा, परन्तु आपको काग्रेस के सामने अपना नजरिया रखने का पूरा मौका था। मतदान के समय प्रस्ताव का विरोध करनेवाले आप अकेले ही आदमी थे। मै आपको वताऊ कि मुझे इसपर कितना अचरज हुआ था, क्योकि मै कल्पना नही कर सकता था कि अपने-आपको वामपक्षी समझनेवाला कोई काग्रेसी उसका विरोध करेगा।

त्रिपुरी मे मेरे निवास के दिनो मे प्रतिनिधि-कैपो से तरह-तरह की खवरे और अफवाहे मेरे कानो तक पहुचती थी। कुछ तो बहुत ही

भट्टी थी, परन्तु मैने प्रमाण के विना किसीको भी मानने से इन्कार कर दिया । आपकी जाच के लायक एक मामला वगाल के प्रतिनिधियो को प्रतिनिधि-टिकिट देने का था । यह जिम्मेदार व्यक्तियो का वयान था और महासमिति के दफ्तर से किसी हद तक उसका समर्थन हुआ कि वहुत-से टिकिट ऐसे लोगो के लिए जारी किये गए, जो त्रिपुरी नही आये थे । यह भी कहा गया कि प्रतिनिधियो को काग्रेस मे लाने के लिए वडी-वडी रकमे खर्च की गई ।

मेरे खयाल से आपके या दूसरो के लगाये हुए विविध आरोपो की कुछ-न-कुछ जाच करना वाछनीय है । यह अनुचित है कि ऐसे आरोप अस्पष्ट रूप मे लगाये जाय, और वहुत-से आदमी उन्हे मान ले तो इससे वह सावित नही हो जाता । हम अपने सार्वजनिक जीवन को एक-दूसरे की निन्दा की सतह तक गिरने नही दे सकते ।

आपने काग्रेसी मत्रियो का जिक्र किया है। मै उनकी तमाम प्रवृत्तियो का वहुत प्रशसक नही हू, लेकिन त्रिपुरी मे उन्होने जो भाग लिया उसपर आपकी आपत्ति से मुझे अचरज होता है । क्या मत्री होने के कारण उन्हे काग्रेस मे भाग नही लेना चाहिए ? यह तो अजीव प्रस्ताव है और मेरे विचार से गलत है। जहातक मुझे मालूम है वे अपनी निजी हैसियत मे काम कर रहे थे और इसका उन्हे पूरा हक था। उनके 'भौतिक प्रभाव' से आपका क्या मतलव है ? मै समझता हू कि इसकी सफाई हो जानी चाहिए, क्योकि इसके विचित्र गूढार्थ है, जो विल्कुल अनुचित है। मेरी समझ मे यह भी नही आता कि काग्रेस की प्रवृत्तियो मे भाग लेने का अर्थ काग्रेस पर छा जाना हो । इससे तो वे वहुत दूर है ।

मैने आशा रखी थी कि भीतरी और वाहरी सकट के इन दिनो मे काग्रेसियो मे वहुत-कुछ सहयोग हो सकेगा, और इसके लिए त्रिपुरी मे और पहले भी मैने परिश्रम किया। मुझे साफ नजर आता है कि किसी कार्रवाई अथवा वामपक्षी आदोलन के पहले यह अत्यावश्यक है कि हम कारगर तौर पर काम करे। अगर हम ऐसा नही करते तो सारे आदोलन फिजूल है और उनका कोई नतीजा नही निकलता, और हममे धीरे-धीरे परन्तु निश्चित रूप से यही वृत्ति आ रही है। इसी वजह से मैने दिल्ली

से सुभाष को तार द्वारा सुझाव दिया था कि त्रिपुरी के प्रस्ताव के अनुसार कार्यसमिति जल्दी बना ली जाय । मैंने यह भी सुझाया था कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति का विचार करने के लिए महासमिति की बैठक की जाय ।

त्रिपुरी के प्रस्ताव मे काग्रेस के अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सहयोग की कल्पना की गई थी और नीति थोडी बहुत ज्यो-की-त्यो जारी रहनेवाली थी । आपके पत्र से यह अर्थ निकलता है कि यह सभव नही है । मुझे मालूम नही कि सुभाष का भी यही विचार है या क्या । है तो स्पष्ट ही ऐसी ज़िच पैदा हो गई है जिसे महासमिति ही मिटा सकती है और महासमिति की बैठक जितनी जल्दी हो जाय, उतना अच्छा है ।

मै हमेशा की तरह जोर के साथ महसूस करता हू कि हमे जो नीति और कार्यक्रम चलाना है उसके बारे मे हमारे अपने दिमाग साफ होने की बहुत ज्यादा जरूरत है। खास तौर पर कथित वामपक्षियो को साफ रहना चाहिए । वामपक्षियो के लिए अस्पष्ट रहना और दु साहस की स्थिति मे बह जाना खतरनाक है । मेरा अनुरोध है कि सुभाष अपनी स्थिति साफ करे और आपको भी मेरा यही सुझाव है । मै देखता हू कि बहुत-से लोग, जो अपने-आपको वामपक्षी कहते है, ऐसे उपाय और नीतिया सुझाते है जो बहुत दक्षिणपक्षी और नरम है । बगाल मे मिले-जुले मन्त्रिमडल के सवाल को ही लीजिये। किन्ही हालात मे इसकी कल्पना की जा सकती है, परन्तु इस समय तो यह निश्चित रूप से एक दक्षिणपक्षी कदम है। मेरी समझ मे नही आता कि आप बगाल मे सदिग्ध हालात मे मिला-जुला मन्त्रिमडल क्यो चाहे और फिर भी दूसरी जगह काग्रेस-मन्त्रिमडलो पर आपत्ति करे, हालाकि कमजोरिया होते हुए वे भी बेहतर हालात मे काम कर रहे है ।

आपने त्रिपुरी मे कार्यसमिति के कुछ पुराने सदस्यो की तरफ से अडगेबाजी होने का जिक्र किया । मै नही जानता, आपका इससे क्या मतलब है । किसी व्यक्ति या गुट के काग्रेस के सामने कोई प्रस्ताव रखने पर आपका ऐतराज हो तो बात दूसरी है । इसके अलावा मै नही जानता कि वहा क्या अडगेबाजी की गई ।

आपने अपने पत्र मे ऐसी भाषा इस्तेमाल की है, जो बहुत ही तेज और

कडवी है। मुझे उसे पढकर बडा अफसोस हुआ और मुझे उसका औचित्य मालूम नही हुआ। मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात से हुई कि तमाम राजनैतिक प्रश्नो पर व्यक्तिगत मामले छा गये है। यदि काग्रेसजनो मे संघर्ष होना ही है तो मै दिल से आशा रखता हू कि उसे ऊची सतह पर रखा जायगा और नीति और सिद्धान्त के मामलो तक ही वह सीमित रहेगा।

मै इस पत्र की नकल सुभाष को भेज रहा हू। गाधीजी ने भी इसे देख लिया है।

आपका,

श्री शरत्चन्द्र बोस,
कलकत्ता

जवाहरलाल नेहरू

२५४. सुभाषचद्र बोस की ओर से महात्मा गांधी के नाम

जीलगोरा पो. आ.
जिला मानभूम, बिहार
२५ मार्च १९३९

प्रिय महात्माजी,

आशा है, आपने आज शनिवार २५ तारीख का मेरा वह बयान देख लिया होगा जो मैने उन लोगो को जवाब देने के लिए निकाला है, जो मुझपर काग्रेसी मामलो मे गतिरोध पैदा करने का दोष लगा रहे है। हमारे सामने तात्कालिक और जरूरी समस्या नई कार्यसमिति का गठन करने की है। इस समस्या को सतोषजनक रूप से हल करने के लिए व्यापक महत्व रखनेवाली कुछ दूसरी समस्याओ पर हमको पहले विचार करना चाहिए। फिर भी मै प्रथम समस्या को पहले हाथ मे लूगा।

इस समस्या के बारे मे अगर आप कृपाकर नीचे लिखे मुद्दो पर अपनी राय मुझे बता सकेगे तो मै आभारी होऊगा

१ कार्यसमिति के गठन की आपकी मौजूदा कल्पना क्या है? क्या वह समानशील होनी चाहिए या काग्रेस के भीतर मौजूद विभिन्न पार्टियो या गुटो के आदमी उसमे लिये जाने चाहिए, ताकि समिति मिलाकर, जहातक सभव हो, काग्रेस के सामान्य स्वरूप को

हो सके ।

२ अगर आपकी अब भी यही राय हो कि समिति को समानशील होना चाहिए तो जाहिर है कि एक ओर मेरा जैसा आदमी तथा दूसरी ओर सरदार पटेल एव आप लोग एक ही समिति मे नही रह सकते । (मै यहा यह कह दू कि मैने इस विचार का विरोध किया है कि समिति को समानशील होना चाहिए ।)

३ अगर आप इससे सहमत हो कि कार्यसमिति में विभिन्न पार्टियो अथवा गुटो का प्रतिनिधित्व हो तो हरेक की सख्या कितनी हो ?

मेरी राय मे काग्रेस मे दो मुख्य पार्टिया या 'ब्लॉक' है। उनका सख्याबल कम-ज्यादा बराबर-बराबर है । अध्यक्षीय चुनाव मे हमारा बहुमत रहा । त्रिपुरी मे बहुमत दूसरे पक्ष का था, किन्तु ऐसा काग्रेस-समाजवादी पार्टी के रुख के कारण हुआ । अगर काग्रेस-समाजवादी पार्टी तटस्थ न रहती तो अनेक बाधाओ के होते हुए भी, (इनका मै बाद की चिट्ठी में या मिलने पर जिक्र करूगा) खुले अधिवेशन मे हमको बहुमत मिलता ।

४ मुझे यह व्यवस्था न्यायसगत प्रतीत होती है कि सात सदस्यो के नाम मै सूचित करू और सात नाम सुझाने के लिए आप सरदार पटेल से कहे ।

५ इसके अलावा अगर मुझे अध्यक्ष बना रहना हो और ठीक तरह से काम करना हो तो सेक्रेटरी मेरी पसद का होना चाहिए ।

६ कोषाध्यक्ष का नाम सरदार पटेल सुझा सकते है ।

अब मै पन्त-प्रस्ताव के एक-दो मुख्य फलितार्थो का जिक्र करूगा । (मै इस बारे मे विस्तार से अलग चिट्ठी लिखूगा) । एक तो यह कि क्या आप इसे मेरे प्रति अविश्वास का प्रस्ताव समझते है और क्या आप यह चाहेगे कि उसके फलस्वरूप मै इस्तीफा दे दू ? मै आपसे यह प्रश्न इसलिए पूछता हू कि इस प्रस्ताव की स्वय उसके समर्थको ने भी अनेक व्याख्याए की है ।

दूसरे, पन्त-प्रस्ताव के पास हो जाने के बाद अध्यक्ष की सही स्थिति क्या है ? काग्रेस-सविधान की धारा १५ कार्यसमिति को नियुक्त करने के बारे मे अध्यक्ष को कुछ अधिकार देती है और सविधान की उस धारा में

अभी तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। साथ ही पन्त-प्रस्ताव यह कहता है कि कार्यसमिति मुझे आपकी इच्छा के अनुसार बनानी चाहिए। इसका असली नतीजा क्या हुआ ? क्या मेरा कोई स्थान रहता है ? क्या आप कार्यसमिति के सदस्यों की सूची अपनी इच्छा के अनुसार बनायेंगे और मुझे आपके फैसले की घोषणा कर देनी होगी ? इसका नतीजा यह होगा कि कांग्रेस-संविधान की धारा १५ उसमें तब्दीली हुए बिना ही रद्द हो जायगी।

इस बारे में मुझे यह कहना चाहिए कि पन्त-प्रस्ताव में उपर्युक्त धारा स्पष्टतः अवैधानिक और अनियमित है। असल में तो पन्त-प्रस्ताव सारा ही बैठक में आने के कारण अनियमित था। यह मेरे अधिकार में था कि मैं पूरे पन्त-प्रस्ताव को अनियमित करार दे देता, जिस प्रकार कि मौलाना आजाद कांग्रेस के पूना अधिवेशन में राष्ट्रीय मांगवाले प्रस्ताव में शरत्चन्द्र बोस के संशोधन को अनियमित ठहराने के अधिकारी थे। फिर, वैधानिक दृष्टि से पन्त-प्रस्ताव को विचार के लिए स्वीकार कर लेने के बाद भी मुझे कार्यसमिति के गठन-सम्बन्धी उसकी आखिरी धारा को अनियमित ठहरा देना चाहिए था, क्योंकि वह कांग्रेस-संविधान की धारा

ठीक हो तो आपने मुझसे यह कहा था कि जबतक मैं आपके दृष्टिकोण को स्वेच्छापूर्वक स्वीकार नही करता, आत्म-समर्पण का मतलब आत्म-दमन होगा और आप आत्मदमन को पसद नही कर सकते। अगर मुझे अध्यक्ष बना रहना है तो क्या अब भी मुझे कठपुतली अध्यक्ष की तरह काम न करने की सलाह देगे, जैसीकि आपने गत वर्ष दी थी ?

मैने ऊपर जो कुछ लिखा है, उसका मतलब यह है कि अध्यक्ष के चुनाव और खासकर त्रिपुरी-काग्रेस मे जो कुछ हुआ, उसके बाद भी काग्रेस की सब पार्टियो (या गुटो) के लिए साथ काम करना सभव हो सकता है।

अपने अगले पत्र में कुछ समस्याओ की चर्चा करूगा, जिनमे से कुछ का मैने अपने आज के अखबारी बयान मे जिक्र किया है।

मेरी तबीयत मे धीरे-धीरे पर बराबर सुधार हो रहा है। काफी नीद न आने के कारण ही मुख्यत जल्दी सुधार नही हो रहा है।

आशा है, भारी काम-काज मे फसे रहने के बावजूद आपका स्वास्थ्य बराबर सुधर रहा होगा।

प्रणाम !

आपका,
सुभाष

२५५ सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो. आ.
जिला मानभूम, बिहार
२८ मार्च १९३९

प्रिय जवाहर,

मुझे लगता है कि तुम कुछ समय से मुझे बहुत ज्यादा नापसद करने लगे हो। यह मै इसलिए कहता हू कि कोई भी बात, जो मेरे विरुद्ध पडती हो, उसे तुम बडे उत्साह से ग्रहण कर लेते हो और मेरे पक्ष मे जानेवाली बातो की उपेक्षा करते हो। मेरे राजनैतिक विरोधी मेरे खिलाफ जो कुछ कहते है, उसे तुम मान लेते हो, किन्तु तुम उनके खिलाफ कही जा सकने-वाली बातो के प्रति करीब-करीब अपनी आखे बन्द कर लेते हो। मै इस कथन को आगे स्पष्ट करने की कोशिश करूगा।

मेरे लिए यह एक पहेली ही है कि तुम मुझे इतना अधिक नापसद क्यो करने लगे हो। जहातक मेरा सबध है, जबसे मै सन् १९३७ मे नजर-बदी से बाहर आया हू, मै व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में तुम्हारा बहुत अधिक लिहाज और खयाल रखता आ रहा हू। राजनैतिक दृष्टि से मैंने तुम्हे अपना बडा भाई और नेता माना है और अक्सर तुम्हारी सलाह लेता रहा हू। पिछले साल जब तुम यूरोप से वापस आये तो मै तुम्हारे पास इलाहाबाद आया और पूछा कि अब तुम हमे क्या नेतृत्व दोगे। आम तौर पर, जब मै तुम्हारे सामने इस रूप मे आया तो तुम्हारे जवाब अस्पष्ट और अनिश्चित रहे। उदाहरण के लिए, गत वर्ष जब तुम यूरोप से लौटे तो तुमने मुझे यह कहकर टाल दिया कि तुम गाधीजी से परामर्श करोगे और उसके बाद मुझे बताओगे। जब हम वर्धा मे मिले, तब तुम गाधीजी से मिल लिये थे, किन्तु तुमने मुझे कुछ भी निश्चित नही बताया। बाद मे तुमने कार्यसमिति के सामने कुछ प्रस्ताव पेश किये, जिनमे नया कुछ नही था और न देश को कोई नेतृत्व दिया गया था।

अध्यक्ष-पद के पिछले चुनाव के बाद एक कटु विवाद छिड गया और उसके दौरान मे बहुत-सी बाते कही गई—कुछ मेरे हक मे और कुछ मेरे खिलाफ। तुम्हारे उद्गारो और बयानो मे हरेक मुद्दे का मेरे विरुद्ध अर्थ लगाया गया। दिल्ली के एक भाषण मे तुमने यह कहा बताया कि तुम मेरे द्वारा या मेरे पक्ष मे हुए चुनाव-प्रचार को पसद नही करते। मै नही जानता कि तुम्हारे मन मे ठीक-ठीक क्या था, किन्तु तुमने इस तथ्य को बिल्कुल ही भुला दिया कि मेरी चुनाव-अपील डा पट्टाभि की अपील पत्रों में छपने के बाद ही जारी हुई थी। जहातक चुनाव-प्रचार का ताल्लुक है, तुमने जाने या अनजाने इस तथ्य को नजर-अदाज किया कि दूसरे पक्ष का चुनाव-प्रचार कही ज्यादा बढा-चढा था और डा पट्टाभि के लिए मत प्राप्त करने में कांग्रेसी मत्रि-मडलो की मशीनरी का पूरा-पूरा उपयोग किया गया। दूसरे

पक्ष के साथ थे—और अधिकतर प्रदेश काग्रेस कमेटिया उसके हाथो में थी। उन सबके खिलाफ मेरे पास क्या था ? मै अकेला खडा था। मुझे व्यक्तिश पता है—क्या तुम्हे मालूम नही—कि कई जगह चुनाव-प्रचार डा पट्टाभि के लिए नही, गाधीजी और गाधीवाद के लिए हुआ, हालाकि अनेक आदमियो ने ऐसे मिथ्या प्रचार के वशीभूत होने से इन्कार कर दिया। फिर भी, एक सार्वजनिक सभा मे खडे होकर, तुमने ऐसे आधार पर मेरी निन्दा करने की कोशिश की, जो बिल्कुल गलत प्रतीत होता है।

अब त्यागपत्रो की बात ले लो। बारह सदस्यो ने त्यागपत्र दिये। उन्होने एक स्पष्ट पत्र लिखा—शिष्ट पत्र था वह, जिसमे उन्होने अपनी स्थिति को बिल्कुल स्पष्ट कर दिया। मेरी बीमारी का खयाल करके उन्होने मेरे बारे मे एक भी कटु शब्द का प्रयोग नही किया, हालाकि वे चाहते तो मेरी प्रतिकूल आलोचना कर सकते थे। किन्तु तुम्हारा बयान—उसके बारे मे मै क्या कहू ? मै कटु भाषा का प्रयोग नही करूगा और केवल यही कहूगा कि वह तुम्हारे लायक नही था। (मुझे बताया गया है कि तुम अपने बयान का मोटे रूप मे त्यागपत्र के भीतर समावेश कराना चाहते थे, किन्तु यह स्वीकार नही किया गया।) तुम्हारे बयान से ऐसा असर पडता है कि अन्य बारह सदस्यो की तरह तुमने भी त्यागपत्र दे दिया है, किन्तु इस समय तक आम जनता के सामने तुम्हारी स्थिति एक पहेली बनी हुई है। जब कोई सकट पैदा होता है तो अक्सर तुम इस पक्ष या उस पक्ष मे अपनी राय नही बना पाते और नतीजा यह होता है कि जनता को तुम दो घोडो पर सवारी करते हुए दिखाई देते हो।

मै फिर तुम्हारे २२ फरवरी के वक्तव्य पर आता हू। तुम्हारा खयाल है कि तुम जो कहते हो या करते हो, उसमे बहुत ही युक्तियुक्त और सगत रहते हो। किन्तु विभिन्न अवसरो पर तुम्हारे रुख से अक्सर लोग स्तब्ध और आश्चर्यचकित रह जाते है। कुछ उदाहरण ले लो। २२ फरवरी के अपने वक्तव्य मे तुमने कहा कि तुम मेरे दुबारा चुने जाने के खिलाफ थे और इसके तुमने कुछ कारण दिये। उन कारणो की २६ जनवरी को अल्मोडा से जारी किये अपने वक्तव्य मे दिये गए कारणो से तुलना करो। तुमने स्पष्टत अपना आधार बदल लिया। फिर कुछ बम्बई के मित्रो ने मुझसे

कहा कि तुमने उनसे पहले कहा था कि तुम्हे मेरे अध्यक्ष-पद के लिए खडे होने मे कोई एतराज नही है, बशर्ते कि मै वामपक्ष के उम्मीदवार के रूप मे खडा होऊ।

अल्मोडा के बयान को तुमने यह कहकर खत्म किया था कि हमको व्यक्तियो को भुला देना चाहिए और केवल सिद्धान्तो और अपने ध्येय को ही याद रखना चाहिए। तुम्हे कभी यह खयाल नही आया कि व्यक्तियो को भुला देने की बात तुम तभी कहते हो, जब कुछ खास व्यक्तियो का सवाल सामने होता है। जब सुभाष बोस दुबारा चुने जाने के लिए खडा होता है तो तुम व्यक्तियो की उपेक्षा करते हो और सिद्धान्तो आदि की दुहाई देते हो। जब मौलाना आजाद पुन निर्वाचन के लिए खडे होते है तो तुम्हे लम्बा प्रशसा-गीत लिखने मे कोई सकोच नही होता। जब मामला सुभाष बोस और सरदार पटेल तथा दूसरो के बीच होता है तो सबसे पहले सुभाष बोस को अपने व्यक्तिगत प्रश्न का खुलासा करना चाहिए। जब शरत् बोस त्रिपुरी मे कुछ बातो की शिकायत करते है (उन लोगो के रवैये और व्यवहार की शिकायत करते है, जो अपनेको महात्मा गाधी के कट्टर अनुयायी कहते है) तो तुम्हारे खयाल से वह व्यक्तिगत प्रश्नो के स्तर पर उतर आते है, जबकि उन्हे अपनेको सिद्धान्तो और कार्यक्रमो तक ही सीमित रखना चाहिए था। मै स्वीकार करता हू कि मेरा तुच्छ दिमाग तुम्हारी सगतता को समझने मे असमर्थ है।

बारडोली की बैठक से पहले की अवधि से सबध रखती है । जवाब मे जब मैंने यह कहा कि जनता मे आम खयाल यह है कि मेरे खिलाफ शिकायत मेरे 'चुनाव वक्तव्यो' से ताल्लुक रखती है तो उन्होने कहा कि यह तो अतिरिक्त आरोप है । आखिर इसका यह मतलब हुआ कि तुम्हारे मवक्किल 'लाछन के मामले' को उतना महत्व नही देते जितना तुम उनके वकील की हैसियत से देते हो । त्रिपुरी मे, चूकि सरदार पटेल और अन्य लोग काग्रेस महासमिति की बेठक मे शामिल होने के लिए चले गये और वादा करके भी बैठक के बाद वापस नही लौटे, मै इस बारे मे और बातचीत नही कर सका, ताकि यह मालूम करता कि कार्यसमिति की बारडोली की बैठक के बाद की कौन-सी घटनाओ से उनका आशय है । किन्तु मेरे भाई शरत् ने इस बारे मे सरदार पटेल से बात की थीं तो उन्होने शरत् को बताया कि उनको मुख्य शिकायत मेरे उस रवैये पर है, जो मैंने काग्रेस महासमिति की दिल्ली की बैठक मे, सितम्बर १९३८ मे अपनाया, जबकि समाजवादी बैठक से उठ-कर चले गये थे । इस आरोप पर मुझे और मेरे भाई दोनो को बडा आश्चर्य हुआ, किन्तु प्रसगवश उससे यह भी पता चल गया कि सरदार पटेल और दूसरो के मन मे 'लाछनवाले मामले' का उतना महत्व नही है, जितना महत्व उसे तुमने दिया है । असल मे, जब मै त्रिपुरी मे था, कई प्रतिनिधियो ने मुझे बताया (मै तुम्हे बता दू कि वे मेरे समर्थक नही थे) कि 'लाछन-वाले मामले' को तो उस समय तक करीब-करीब भुला ही दिया गया था, जबतक कि तुमने अपने बयानो और उद्गारो द्वारा इस विवाद को पुन सजीव नही कर दिया । और इस बारे मे मै तुम्हे बताऊ कि काग्रेस अध्यक्ष के चुनाव के बाद से कार्य-समिति के बारह भूतपूर्व सदस्यो ने जितना एक साथ मिलकर नही किया, उससे अधिक तुमने मुझे जनता की निगाह मे गिराने के लिए किया है । अवश्य ही, अगर मै सचमुच इतना दुष्ट हू तो यह तुम्हारा अधिकार ही नही, बल्कि कर्त्तव्य भी हो जाता है कि तुम जनता के सामने मेरा पर्दाफाश करो । किन्तु शायद तुमको यह प्रतीत होगा कि जो दुष्ट व्यक्ति तुम्हारे समेत बडे-से-बडे नेताओ, महात्मा गाधी और आठ प्रान्तीय सरकारो के विरोध के बावजूद अध्यक्ष चुना गया, उसमे कुछ तो अच्छाई होगी । उसने अपने अध्यक्ष-काल मे देश की कुछ तो सेवा की

होगी कि उनकी पीठ पर कोई संगठन न होने पर भी और भारी बाधाओं के बावजूद वह इतने वोट प्राप्त कर सका ।

तुमने अपने २२ फरवरी के वक्तव्य में आगे कहा है : "मैंने कांग्रेस अध्यक्ष को सुझाया कि यह सबसे पहला और सबसे जरूरी विचारणीय मुद्दा है, किन्तु अबतक इसे निपटाने की कोई कोशिश नहीं की गई ।" किन्तु ये पंक्तियां लिखते समय तुमको यह खयाल क्यों नहीं आया कि गलतफहमी को दूर करने के लिए मेरा सरदार पटेल और दूसरों से मिलना जरूरी था और यह कार्यसमिति की २२ फरवरी की बैठक के समय ही हो सकता था ? अथवा क्या तुम यह खयाल करते हो कि मैंने कार्य-समिति की बैठक को टाला ? यह नहीं है कि 'लांछनवाले मामले' के बारे में मैंने १५ फरवरी को महात्मा गांधी से चर्चा नहीं की, हालांकि उन्होंने एक बार उसका जिक्र किया था, किन्तु उस समय मैं तुम्हारे ही इस निर्देश का पालन कर रहा था कि हमको व्यक्तिगत सवालों के बजाय सिद्धान्त और कार्यक्रमों को ज्यादा महत्व देना चाहिए । मैं तुम्हें बता दूं कि जब महात्मा गांधी ने मुझसे कहा

स्पष्ट न करने का आरोप भी लगाया है। मेरा खयाल है कि मेरी अपनी नीति है, वह गलत या सही हो सकती है। त्रिपुरी में अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में मैंने उसका अत्यंत स्पष्ट शब्दों में जिक्र किया है। मेरी विनम्र राय में, भारत की और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए हमारे सामने एक ही समस्या—एक ही कर्तव्य है—कि ब्रिटिश सरकार के सामने स्वराज्य का प्रश्न पेश करें। इसके साथ-साथ, सारे देश में रियासती जनता के आन्दोलन के पथ-प्रदर्शन की भी एक व्यापक योजना बनानी चाहिए। मेरा खयाल है कि त्रिपुरी-कांग्रेस के पहले भी मैंने अपने विचारों की स्पष्ट झांकी तुम्हें उस समय दे दी थी, जब हम शांतिनिकेतन में और बाद में आनन्द भवन में मिले थे। मैंने अभी-अभी जो लिखा है, वह भी कम-से-कम निश्चित नीति ही है। अब मैं तुमसे पूछता हूं कि तुम्हारी क्या नीति है? हाल के एक पत्र में त्रिपुरी-कांग्रेस द्वारा स्वीकृत राष्ट्रीय मांग-संबंधी प्रस्ताव का तुमने जिक्र किया है, और तुम उसे काफी महत्व देते प्रतीत होते हो। मुझे खेद है कि एकदम ऐसा अस्पष्ट प्रस्ताव, जिसमें भली लगनेवाली सामान्य बातें कही गई हों, मैं पसंद नहीं कर सकता। वह हमें कहीं भी नहीं ले जा सकता। अगर हम स्वराज्य के लिए ब्रिटिश सरकार से लड़ना चाहते हैं और हम अनुभव करते हों कि उसके लिए उपयुक्त समय आ गया है तो हमको ऐसा साफ-साफ कहना चाहिए और आगे कदम बढ़ाना चाहिए। तुमने एक से अधिक बार मुझसे कहा है कि चुनौती देने का विचार तुम्हें जंचता नहीं। पिछले बीस वर्षों में महात्मा गांधी ब्रिटिश सरकार को बार-बार चुनौतियां देते रहे हैं। इन चुनौतियों और जरूरत होने पर साथ-साथ लड़ाई की तैयारी करने के फलस्वरूप ही वह ब्रिटिश सरकार से इतना कुछ प्राप्त कर सके हैं। अगर तुम सचमुच यह मानते हो कि राष्ट्रीय मांग को मनवा लेने का समय आ गया है तो चुनौती देने के अलावा तुम और कौन-सा रास्ता अपना सकते हो? पिछले दिनों महात्मा गांधी ने राजकोट के सवाल पर चुनौती दी थी। क्या तुम चुनौती के विचार का इसलिए विरोध करते हो कि मैंने उसे पेश किया है? अगर यही बात है तो उसे साफ-साफ और बिना किसी लाग-लपेट के क्यों नहीं कहते?

सार रूप में कहूं तो मैं यह नहीं समझ पाता कि देश की आन्तरिक राज-

नीति के बारे मे तुम्हारी क्या नीति है । मुझे याद पड़ता है, मैंने तुम्हारे किसी एक बयान मे यह पढा था कि तुम्हारे खयाल से राजकोट और जयपुर, देश के सभी अन्य राजनैतिक प्रश्नो को ढक लेगे । मै तुम्हारे जैसे बडे नेता के मुह से ऐसा उद्गार सुनकर स्तब्ध रह गया । मै नही समझ सकता कि कोई भी सवाल स्वराज्य के मुख्य सवाल को कैसे ढक सकता है ? राजकोट इस विशाल देश के भीतर एक छोटा-सा बिन्दु है । जयपुर का क्षेत्र राजकोट से कुछ बडा है, किन्तु जयपुर का सवाल भी हमारी ब्रिटिश सरकार के साथ चलनेवाली मुख्य लड़ाई की तुलना मे चिऊटी की चटक-मात्र है । फिर, हम यह नही भूल सकते कि देश मे छ सौ से अधिक रियासते है । अगर हम मौजूदा टुकडो मे विभक्त, थेगली लगानेवाली और समझौता-पसद नीति का अनुसरण करते रहेगे और अन्य राज्यो मे लोक-सघर्ष स्थगित कर देगे तो रियासतो मे नागरिक स्वतत्रता और उत्तरदायी शासन स्थापित करने मे हमे ढाईसौ साल लग जायगे और उसके बाद हम स्वराज्य की बात सोचेगे ।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे तुम्हारी नीति और भी अधिक पगु है । कुछ समय पहले जब तुमने काग्रेस कार्यसमिति के सामने इस आशय का प्रस्ताव किया कि यहूदियो को भारत मे बसने दिया जाय तो मै आश्चर्यचकित रह गया । जब कार्यसमिति ने (शायद महात्मा गाधी की सहमति से) इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया तो तुमको बड़ी चोट लगी । विदेश-नीति यथार्थवादी विषय है और उसका निर्धारण मुख्यत राष्ट्र के हित की दृष्टि से ही होना चाहिए । उदाहरण के लिए रूस को ले लो । अपनी आन्तरिक राजनीति मे वह साम्यवाद का पोषण करता है, किन्तु अपनी विदेश-नीति पर वह कभी भी अपनी भावनाओ को हावी नही होने देता । यही कारण है कि जब उसे अपना फायदा नजर आया तो उसने फ्रासीसी साम्राज्यवाद के साथ समझौता कर लेने मे कोई सकोच नही किया । फ्रास-रूस-समझौता और चेकोस्लोवाक-रूस-समझौता इसकी पुष्टि करते है । आज भी, रूस ब्रिटिश साम्राज्य के साथ समझौता करने के लिए उत्सुक है । अब बताओ, तुम्हारी विदेश नीति क्या है ? भावनाओ के बुदबुदो और नेक शिष्टाचारो से विदेश-नीति का निर्माण नही होता । हर समय पराजित ध्येयो की वकालत करते

रहने तथा एक ओर जर्मनी और इटली जैसे देशो की निन्दा करने और दूसरी ओर ब्रिटिश और फासीसी साम्राज्यवाद को सदाचरण का प्रमाणपत्र देने से कोई काम बननेवाला नही है।

पिछले कुछ समय से तुम्हे और महात्मा गाधी समेत हर सबधित व्यक्ति को मै यह समझाने की कोशिश कर रहा हू कि हमको अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का भारत के हक मे फायदा उठाना चाहिए और इस उद्देश्य से अपनी राष्ट्रीय माग एक चुनौती के रूप में ब्रिटिश सरकार के सामने रखना चाहिए, किन्तु मै तुम्हे या महात्मा गाधी को तनिक भी प्रभावित नही कर सका, हालाकि देश की जनता का एक बडा भाग मेरे रुख को पसद करता है और ग्रेट ब्रिटेन के भारतीय विद्यार्थियो ने अनेक हस्ताक्षरोवाला एक दस्तावेज मुझे भेजा है, जिसमे मेरी नीति का समर्थन किया गया है। आज जब त्रिपुरी-प्रस्ताव के बधनो के बावजूद, कार्यसमिति की तुरन्त नियुक्ति न करने के लिए तुम मुझे दोष देते हो तो अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति अचानक तुम्हारी निगाह मे असाधारण महत्व धारण कर लेती है। मै पूछता हू, यूरोप मे आज ऐसा क्या हुआ है जो अप्रत्याशित था ? क्या अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का प्रत्येक विद्यार्थी यह नही जानता था कि वसन्त मे यूरोप मे सकट पैदा होगा ? जब मै ब्रिटिश सरकार को चुनौती देने की बात कहता था तो क्या मैने बार-बार इसका जिक्र नही किया ?

अब मै तुम्हारे बयान के दूसरे हिस्से पर विचार करूगा। तुम कहते हो "यह कार्य-समिति फिलहाल तो अस्तित्व मे नही है और अध्यक्ष, जैसा कि शायद वह चाहते है, अपने प्रस्ताव तैयार करने और उन्हे काग्रेस के सामने पेश करने के लिए स्वतत्र है। उनकी इच्छा के अनुसार साधारण कामकाज को निपटाने के लिए भी कोई बैठक नही बुलाई गई।" मुझे आश्चर्य है, तुम ऐसे अर्द्ध-सत्य या मै कहू असत्य का आश्रय कैसे ले सकते हो ? कार्यसमिति के बारह सदस्य अकस्मात् और अप्रत्याशित रूप मे अपने इस्तीफे मेरे आगे धर देते है और फिर भी तुम उनको नही, मुझे ही दोष देते हो कि शायद मै प्रस्ताव तैयार करने के लिए स्वतत्र होना चाहता था। फिर, सामान्य कामकाज निपटाने से मैने तुम्हे कब रोका ? काग्रेस के लिए प्रस्ताव तैयार करने के मुख्य काम के बारे मे भी, हालाकि मैने त्रिपुरी-

काग्रेस तक कार्यसमिति की बैठक स्थगित करने का सुझाव दिया था, किन्तु क्या मैने सरदार पटेल से अपने तार मे यह नही कहा कि समिति के दूसरे सदस्यो से परामर्श करे और उनकी राय मुझे तार द्वारा सूचित करे ? अगर तुम्हे इस बारे मे जरा भी शक है तो कृपया सरदार के नाम मेरे तार पर एक नजर डाल लो। मेरा तार इस प्रकार था

"सरदार पटेल, वर्धा।

कृपया महात्माजी के नाम मेरा तार देखे। खेद के साथ अनुभव करता हू कि कार्यसमिति काग्रेस तक स्थगित कर दी जाय। कृपया साथियो से परामर्श करे और राय तार से सूचित करे।

—सुभाष"

त्रिपुरी-काग्रेस के समाप्त होने के सात दिन बाद तुमने मुझे इस आशय का तार भेजा कि काग्रेस मे गतिरोध के लिए मै ही जिम्मेदार हू। तुम्हारी समस्त न्याय-भावना के बावजूद तुमने यह अनुभव नही किया कि त्रिपुरी-काग्रेस ने जब पडित पन्त का प्रस्ताव पास किया तो वह अच्छी तरह जानती थी कि मै सख्त बीमार हू, महात्मा गाधी त्रिपुरी नही आये है और हम दोनो का निकट भविष्य मे मिलना मुश्किल होगा। तुमने यह भी नही सोचा कि मेरे हाथो से अवैधानिक और अनियमित रूप से कार्य-समिति नियुक्त करने का अधिकार छीनकर काग्रेस ने स्वय गतिरोध की जिम्मेदारी अपने सिर पर ली है। अगर पडित पत के प्रस्ताव ने निष्ठुरतापूर्वक काग्रेस-सविधान की अवहेलना न की होती तो मैने १३ मार्च १९३९ को कार्यसमिति को नियुक्त कर दिया होता। तुमने काग्रेस के सात दिन बाद ही मेरे विरुद्ध सार्वजनिक आन्दोलन शुरू कर दिया, हालाकि तुम्हे मेरे स्वास्थ्य की दशा का अच्छी तरह पता था और मेरे नाम दिया हुआ तुम्हारा तार मुझे मिलने के पहले ही अखबारो मे छप गया। जब त्रिपुरी के पहले पूरे पखवारे कार्य-समिति के बारह सदस्यो के त्यागपत्र देने के कारण काग्रेस के मामलो मे गतिरोध रहा तो क्या तुमने विरोध मे एक शब्द भी कहा ? क्या तुमने मेरे प्रति एक शब्द भी सहानुभूति का कहा ? तुमने हाल के एक पत्र मे लिखा है कि तुम अपनी ही ओर से बोलते हो या काम करते हो और तुमको और किसीका प्रतिनिधि नही मानना चाहिए। यह हमारी बदकिस्मती है

कि तुम्हे यह कभी नही सूझता कि तुम दूसरो को दक्षिण-पथियो के हिमायती के रूप मे नजर आते हो। उदाहरण के लिए अपने २६ मार्च के पत्र को ही ले लो। तुम उसमे कहते हो "मैने तुम्हारा बयान आज पत्रो मे पढा। मुझे डर है इस तरह के दलीलबाजी से युक्त बयान स्थिति को सुधारने मे सहायक नही होगे।"

इस समय, जबकि कई हल्को से मेरे ऊपर अन्यायपूर्ण हमले हो रहे है—जैसा कि कहा जाता है, कमर से नीचे प्रहार किये जा रहे है—तुम विरोध में एक शब्द नही कहते, तुम मेरे लिए एक शब्द सहानुभूति का नही बोलते। किन्तु जब मै आत्म-रक्षा मे कुछ कहता हू तो तुम्हारी प्रतिक्रिया होती है—"ऐसे दलीलबाजीवाले बयान अधिक सहायक नही होगे।" क्या तुमने मेरे राजनैतिक विरोधियो के बयानो के लिए भी ऐसे ही विशेषणो का प्रयोग किया है ? शायद उनकी तुम सराहना करते होगे।

फिर, तुम अपने २२ फरवरी के वक्तव्य मे कहते हो "स्थानीय काग्रेसी झगडो को सामान्य तरीके से निपटाने के बजाय सीधे शीर्ष-स्थान से निपटाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है और इसका यह नतीजा होता है कि खास गुटो और पार्टियो के साथ रियायत होती है, गोलमाल पैदा होता है और काम की हानि होती है। मुझे यह देखकर दु ख होता है कि हमारे सगठन के हृदय-स्थल मे नये तरीके दाखिल किये जा रहे है, जिनसे स्थानीय झगडे ऊचे स्तरो पर भी फैल जायगे।"

इस प्रकार का दोषारोपण पढकर मुझे दु ख-मिश्रित आश्चर्य हुआ, जबकि तुमने सब तथ्यो का पता लगाने की परवा नही की है। कम-से-कम तुम यह तो कर सकते थे कि मुझसे तथ्यो के बारे मे, जिस रूप मे कि वे मुझे मालूम है, पूछ लेते। मै नही जानता कि यह लिखते समय तुम्हारे दिमाग में कौन-सी बाते थी। एक मित्र का कहना है कि तुम दिल्ली प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के मामलो के बारे मे सोच रहे हो। अगर यही बात है तो मै तुम्हे बिल्कुल साफ-साफ बता दू कि दिल्ली के बारे मे मैंने जो कुछ किया, मेरे लिए वही करना ठीक था।

इस सबध मे मुझे कहने की इजाजत दो कि ऊपर से हस्तक्षेप करने के मामले मे कोई काग्रेस-अध्यक्ष तुमसे बाजी नही मार सकता। शायद तुम

उन बातो को भूल गये जो तुमने काग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से की है या शायद अपनी ओर विवेचक दृष्टि से देखना मुश्किल होता है। २२ फरवरी को तुम मुझपर ऊपर से हस्तक्षेप करने का आरोप लगाते हो। क्या तुम यह भूल गये कि ४ फरवरी को तुमने मुझे एक पत्र लिखा था, जिसमे तुमने मुझपर निराग्रही और निष्क्रिय अध्यक्ष होने का आरोप लगाया है ? तुमने लिखा है "वस्तुत तुमने निर्देश देनेवाले अध्यक्ष की अपेक्षा प्रवक्ता (स्पीकर) की हैसियत अधिक रखी है।" तुम्हारा यह आरोप सबसे अधिक आपत्तिजनक है कि मै पक्षपातपूर्ण ढग से काम कर रहा हू और किसी खास पार्टी या गुट के प्रति रियायत कर रहा हू। क्या व्यक्तिश' मेरे प्रति नही तो काग्रेस के अध्यक्ष के प्रति तुम्हारा यह कर्तव्य नही था कि उसके विरुद्ध समाचारपत्रो मे ऐसा गभीर आरोप लगाने के पहले उचित जाच कर लेते ?

यदि चुनाव-विवाद पर समग्र दृष्टि से कोई विचार करे तो वह यही सोचेगा कि चुनाव का दगल समाप्त हो जाने के बाद यह सारा प्रकरण भुला दिया जायगा, लडाई के अस्त्रो को दफना दिया जायगा और जैसाकि मुक्केबाजी के दगल के बाद होता है, मुक्केबाज हँसते हुए हाथ मिला लेगे। किन्तु सत्य और अहिसा के बावजूद ऐसा नही हुआ। चुनाव-परिणाम को खिलाडी की भावना से स्वीकार नही किया गया, मेरे विरुद्ध मन मे गाठ बांध ली गई और प्रतिशोध की भावना गतिशील कर दी गई। तुमने कार्य-समिति के अन्य सदस्यो की ओर से शस्त्र ग्रहण किये। तुम्हे ऐसा करने का पूरा अधिकार था। किन्तु क्या तुमने कभी यह नही सोचा कि कुछ मेरे पक्ष मे भी कहा जा सकता है ? क्या कार्यसमिति के दूसरे सदस्यो के लिए इसमे कुछ अनुचित नही था कि मेरी अनुपस्थिति मे और मेरी पीठ-पीछे एकत्र होते और डा पट्टाभि को काग्रेस की अध्यक्षता के लिए खड़ा करने का फैसला करते ? क्या सरदार पटेल और दूसरो के लिए यह अनुचित न था कि कार्य-समिति के सदस्य के नाते कांग्रेस-प्रतिनिधियो से डा पट्टाभि का समर्थन करने की अपील करते ? क्या चुनाव-कार्य के लिए सरदार पटेल का महात्मा गाधी का नाम और उनकी सत्ता का उपयोग करने मे कुछ भी अनुचित नही था ? क्या सरदार पटेल का यह कहना अनुचित नही था कि

मेरा द्वारा चुना जाना देश के हित के लिए हानिकर होगा ? क्या विभिन्न प्रान्तो मे काग्रेस-मत्रिमडलो का वोट हासिल करने के लिए उपयोग करने मे कोई गलती नही थी ?

जहातक कथित 'लाछनो' का ताल्लुक है, मुझे जो कुछ कहना था, वह मैं अपने अखवारी वयानो मे और त्रिपुरी में विपय-समिति के सामने अपने भापण मे पहले ही कह चुका हू । किन्तु मैं तुमसे एक सवाल पूछना चाहूगा । क्या तुम यह भूल गये कि जव लार्ड लोथियन भारत का दौरा कर रहे थे तो उन्होने सार्वजनिक रूप मे कहा था कि सव काग्रेसी नेता सघ-योजना के वारे में प नेहरू से सहमत नही है ? इस उद्‌गार के क्या तात्पर्य और अर्थ है ?

तुमने अपने २२ फरवरी के वयान में सगठन के शिखर पर पारस्परिक सदेह के वातावरण और विश्वास की कमी की शिकायत की है । क्या मै तुमसे कहू कि अध्यक्षीय चुनाव होने तक तुम्हारे कार्यकाल की अपेक्षा मेरे कार्यकाल मे कार्यसमिति के सदस्यो में सदेह और विश्वास का अभाव कही कम था ? उसके फलस्वरूप हमारे त्यागपत्र देने की कभी नौवत नही आई, जैसाकि, तुम्हारे ही कथनानुसार, तुम्हे एक से अधिक वार करना पडा । जहातक मुझे मालूम है, झगडा चुनाव-सघर्ष मे मेरी सफलता के वाद से शुरू हुआ । अगर मै हार गया होता तो ज्यादा सभव यही था कि जनता को 'लाछन' प्रकरण के वारे मे सुनने को मिलता ही नही ।

तुम यह अक्सर कहते रहते हो कि तुम अपना ही प्रतिनिधित्व करते हो, और किसीका नही, और तुम्हारा किसी भी पार्टी से सवध नही है । अक्सर यह वात तुम इस ढग से कहते हो मानो इस वात पर तुम वडा गर्व या सुख अनुभव करते हो । साथ ही, कभी-कभी तुम अपनेको समाजवादी—'पक्का समाजवादी' भी कहते हो । मेरी समझ मे नही आता कि कोई समाजवादी, जैसाकि तुम अपनेको मानते हो, व्यक्तिवादी कैसे हो सकता है ? एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न होता है । मेरे लिए यह भी एक पहेली है कि तुम जिस व्यक्तिवाद के समर्थक हो, उसके जरिये समाजवाद कभी भी कैसे स्थापित हो सकता है । अपने पर किसी भी पार्टी का बिल्ला न लगाकर आदमी सव पार्टियो का प्रिय हो सकता है, किन्तु उसका मूल्य क्या ? अगर

एक आदमी किन्ही विचारो और सिद्धान्तो मे विश्वास रखता है तो उसे उन्हे साकार करने की कोशिश करनी चाहिए और यह किसी पार्टी या सगठन के जरिये ही किया जा सकता है। मैने आजतक नही सुना कि किसी देश ने बिना पार्टी के समाजवाद की स्थापना की है या उस दिशा मे कदम आगे बढाया है। महात्मा गाधी की भी अपनी पार्टी है।

एक और विचार है, जिसका तुम अक्सर राग अलापते हो—उसके बारे मे भी मै कुछ कहना चाहूगा। मेरा आशय राष्ट्रीय एकता के विचार से है। मै भी उस विचार का पूरा समर्थक हू, जैसा कि, मै मानता हू, सारा देश है। किन्तु इसकी एक प्रकट सीमा है। जिस एकता की हम कोशिश करते है या कायम रखना चाहते है, वह काम करने की एकता होनी चाहिए, हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहने की नही। एक पार्टी अगर दो टुकडो मे बटती है तो यह हमेशा ही बुरा नही होता। ऐसे मौके आते है जब आगे बढने के लिए अलहदगी जरूरी होती है। जब रूस की सोशल डेमोक्रेट पार्टी सन् १९०३ मे टूटी और बोलशेविक और मेनशेविक अस्तित्व मे आये तो लेनिन ने राहत की सास ली थी। मेनशेविको का भारी बोझ सिर से उतर गया और लेनिन ने महसूस किया कि आखिर तेज तरक्की का रास्ता खुल गया है। भारत मे जब 'मोडरेट' (नरम दली) काग्रेस से अलग हो गये तो किसी भी प्रगतिशील विचार-धारा के व्यक्ति ने इस अलहदगी पर अफसोस प्रकट नही किया। उनके बाद, जब बहुत-से काग्रेसी सन् १९२० मे काग्रेस से हट गये तो शेष काग्रेसियो ने उनकी जुदाई पर आसू नही बहाये। इस तरह की अलहदगियो से वास्तव मे आगे बढने मे मदद मिली। कुछ समय से

अमल मे लाना स्वीकार कर लेता है तो उसके विरोधी, अपने दृट सिद्धान्तो के बावजूद, उमी एकता के नाम पर अपने राजनैतिक विश्वामो के विरुद्ध सघ-योजना को स्वीकार करने के लिए प्रेरित हो सकते है। एक क्रान्तिकारी आन्दोलन में एकता साध्य नही हुआ करती, सावन ही होती है। उनकी तभी तक जरूरत है, जबतक कि वह प्रगति में सहायक होती है। ज्यो-ही वह प्रगति में बाधक बनने लगती है कि वह एक बुराई बन जाती है। मै पूछता हू, अगर काग्रेस बहुमत से सघ-योजना को स्वीकार कर ले तो तुम क्या करोगे ? क्या तुम उस फैसले के आगे सिर झुकाओगे या उसके खिलाफ बगावत करोगे ?

तुम्हारा इलाहाबाद से लिखा ४ फरवरी का पत्र दिलचस्प है। उससे प्रकट होता है कि मेरे प्रति तुम्हारा रुख उस समय तक कडा नही हुआ था जैसाकि बाद मे हुआ। उदाहरण के लिए तुम अपने पत्र में लिखते हो "जैसा कि मैने तुमसे कहा, तुम्हारे चुनाव-सघर्ष से कुछ लाभ हुआ है तो कुछ हानि।" बाद मे तुम्हारी यह धारणा बन गई कि मेरा दुबारा निर्वाचित होना बिल्कुल बुरा हुआ। आगे तुमने लिखा है "इस भविष्य पर हमको व्यक्तियो के अर्थ मे नही, बल्कि व्यापक दृष्टि से विचार करना चाहिए। जाहिर है कि घटना-चक्र हमारी इच्छा के अनुकूल नही घूमा, केवल इसी-लिए हममे से किसीको रुष्ट नही हो जाना चाहिए। कुछ भी होता रहे, हमे तो अपने ध्येय की पूर्ति के लिए पूरी ताकत खर्च करनी होगी।" यह स्पष्ट है कि तुम 'लाछन'-प्रकरण को वह महत्व नही देते थे, जो बाद मे देने लगे। यही नही, जैसा मैं पहले कह चुका हू, 'लाछन'-प्रकरण पर बाद मे जो आन्दो-लन हुआ, उसके मुख्यत जनक तुम्ही थे। इस बारे मे शायद तुम्हे याद होगा कि जब हम शातिनिकेतन मे मिले थे तो मैने सुझाया था कि अगर हमारी कोशिश के बावजूद हम कार्य-समिति के सदस्यो का सहयोग हासिल न कर सके तो हमको काग्रेस को चलाने की जिम्मेदारी से मुह नही मोडना चाहिए। उस समय तुम मुझसे सहमत हुए थे। बाद मे, पता नही, किन कारणो से तुम मानो बडी बहादुरी से दूसरे पक्ष मे जा मिले। बेशक, तुम्हे ऐसा करने का प्रत्येक हक हासिल था, किन्तु फिर तुम्हारा समाजवाद या वामवाद कहा गया ?

अपने ४ फरवरी के पत्र मे तुमने एक से अधिक वार यह आरोप लगाया है कि मेरी अध्यक्षता के जमाने मे सघ जैसे महत्वपूर्ण सवालो पर चर्चा नही हुई। यह एक अजीव आरोप है जवकि तुम खुद करीब छ महीने देश से बाहर रहे। क्या तुम्हे पता है कि जव श्री भूलाभाई देसाई के कथित लन्दनवाले भाषण पर तूफान पैदा हुआ था तो मैंने कार्यसमिति को यह सुझाया था कि सघ के विरुद्ध हमे अपना प्रस्ताव दोहराना चाहिए और देश मे सघ-विरोधी प्रचार चलाना चाहिए, पर मेरा प्रस्ताव गैर-जरूरी समझा गया। क्या तुम्हे मालूम है कि वाद मे जव कार्यसमिति की वैठक सितम्बर मे दिल्ली मे हुई तो सघ की निन्दा करनेवाला प्रस्ताव जरूरी समझा गया और काग्रेस महासमिति ने ऐसा प्रस्ताव स्वीकार किया ?

इस पत्र मे एक आरोप तुमने यह लगाया है कि मैंने कार्यसमिति मे निष्क्रिय रुख रखा और मैंने वस्तुत निर्देशक अध्यक्ष वनने के वजाय स्पीकर की तरह काम किया। इस प्रकार का कथन कुछ न्यायोचित नही है। क्या यह कहना गलत होगा कि आमतौर पर कार्यसमिति का ज्यादातर समय तुम खुद ही ले लेते थे ? अगर कार्यसमिति मे तुम्हारे जितना वाचाल कोई दूसरा सदस्य होता तो हम अपना काम कभी निपटा ही नही पाते। इसके अलावा, दूसरे तौर-तरीके कुछ ऐसे थे कि तुम लगभग अध्यक्ष के काम अपने हाथो मे ले लेते थे। अवश्य ही मै तुम्हारी लगाम खीचकर समिति को सम्हाल सकता था, किन्तु उसके फलस्वरूप हमारे वीच खुली दरार पड जाती। वहुत साफ-साफ कहू तो तुम कभी-कभी कार्यसमिति मे लाड-प्यार से विगडे वेटे की तरह वर्ताव करते थे और अक्सर तुम्हारा पारा चढ जाता था। अव वताओ, तुमने अपनी तमाम 'गरममिजाजी' और उछल-कूद से क्या नतीजे हासिल किये ? तुम आमतौर पर घटो अडे रहते और तव आखिर मे घुटने टेक देते। सरदार पटेल और दूसरो के पास तुमसे निपटने के लिए एक कुशल तरीका है। वे तुम्हे खूव वोलने देगे और अन्त में तुमसे कहेगे, अच्छा प्रस्ताव लिख डालो। एक वार तुमको प्रस्ताव वनाने दिया कि तुम खुश हो जाओगे, फिर भले ही वह प्रस्ताव कैसा भी क्यो न हो। मैने तुम्हे अपने मुद्दे पर आखिर तक डटे रहते शायद ही कभी देखा है।

मेरे खिलाफ दूसरा अजीव आरोप यह है कि पिछले वर्ष मे काग्रेस

महासमिति के दफ्तर की हालत बड़ी खराब हो गई है। मै नही जानता कि तुम्हारे खयाल से अध्यक्ष के क्या काम है। मेरे ख्याल से वह किसी शानदार क्लर्क या शानदार सेक्रेटरी से कही ज्यादा हैसियत रखता है। अध्यक्ष की हैसियत से तुम सेक्रेटरी के काम भी अपने हाथ मे ले लिया करते थे, किन्तु यह कोई वजह नही कि दूसरे अध्यक्ष भी तुम्हारे जैसा ही वर्ताव करे। इसके अलावा, मेरी मुख्य कठिनाई यह थी कि कांग्रेस महासमिति का दफ्तर काफी दूर था और जनरल सेक्रेटरी मेरी पसन्द का नही था। यह कहने मे कोई अतिशयोक्ति न होगी कि जैसा एक सेक्रेटरी को अपने प्रेसीडेण्ट के प्रति वफादार होना चाहिए, वैसा जनरल सेक्रेटरी वफादार न था। (मै जान-बूझकर बहुत नरम शब्दो मे यह बात कह रहा हू।) असल में, कृपालानीजी को मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझपर थोपा गया। शायद तुम्हे याद होगा कि मैंने कांग्रेस महासमिति के दफ्तर का एक भाग कलकत्ता लाने की भरसक कोशिश की, ताकि मै उसके काम की ठीक तरह से देखभाल कर सकू। किन्तु तुम सबने उसका विरोध किया और अब तुम उल्टे मुझे ही कांग्रेस महासमिति के दफ्तर की कमियो के लिए दोष देते हो! अगर कांग्रेस महासमिति का दफ्तर, जैसा तुम कहते हो, सचमुच बिगडा है तो इसके लिए मै नहीं, बल्कि जनरल सेक्रेटरी जिम्मेदार है। तुम मुझपर यही आरोप लगा सकते हो कि मेरे अध्यक्ष-काल मे जनरल सेक्रेटरी के काम मे कम हस्तक्षेप हुआ और उसे पहले की अपेक्षा वास्तव मे ज्यादा अधिकार प्राप्त रहे। फलस्वरूप, अगर सचमुच कांग्रेस महासमिति के दफ्तर की हालत खराब हुई है तो उसकी जिम्मेदारी मुझपर नही, बल्कि जनरल सेक्रेटरी पर है।

मुझे आश्चर्य है कि बिना पूरे तथ्य जाने तुमने यह आरोप लगाया है कि मैंने बम्बई श्रमिक विवाद विधेयक को उसकी मौजूदा शक्ल मे स्वीकृत होने से रोकने की भरसक कोशिश नही की। असल मे, कुछ समय से, तथ्यो का पता लगाने की चिन्ता किये बिना तुमने मेरे खिलाफ आरोप लगाने की, कभी-कभी सार्वजनिक रूप से लगाने की, कला का विकास कर लिया है। अगर तुम जानना चाहते हो कि मैंने इस बारे मे क्या किया तो सबसे अच्छी बात यह होगी कि सरदार पटेल से पूछ देखो। जो बात मैंने नही की, वह यही कि मैंने इस सवाल पर उनके साथ नाता नही तोडा।

अगर यह अपराध है तो मै अभियोग को स्वीकार करता हू । प्रसगवश, क्या तुम्हे पता है कि बम्बई की काग्रेस-समाजवादी पार्टी ने विधेयक का उसके मौजूदा रूप मे समर्थन किया था ? और अब तुम्हारी अपनी वात ले लो। क्या मै पूछ सकता हू कि तुमने इस विधेयक की स्वीकृति को रोकने के लिए क्या किया ? जब तुम बम्बई लौटे तो तुम जरूर कुछ कर सकते थे। मेरे खयाल से कुछ श्रमिक कार्यकर्ता तुमसे मिले थे और उनको तुमने कुछ उम्मीद बधाई थी । मेरी अपेक्षा तुम अच्छी स्थिति मे थे, कारण, तुम मेरी अपेक्षा कही अधिक गाधीजी को प्रभावित कर सकते हो। अगर तुमने जोर लगाया होता तो जहा मै विफल रहा, वहा तुम सफल हो सकते थे । क्या तुमने ऐसा किया ?

एक और मामला है, जिसके वारे मे तुम अक्सर मेरे ऊपर तीर चलाया करते हो । वह है मिला-जुला मन्त्रिमडल बनाने का विचार । सिद्धातवादी राजनीतिज्ञ की तरह तुमने हमेशा के लिए यह तय कर दिया कि मिला-जुला मन्त्रिमडल दक्षिण-पथी कदम होगा । इस प्रश्न पर अपने आखिरी निर्णय की घोषणा करने के पहले क्या तुम एक बात करोगे ? क्या तुम एक पखवारे के लिए असम का दौरा करोगे और फिर आकर मुझे बता-ओगे कि क्या वर्तमान मिला-जुला मन्त्रिमडल प्रगतिशील रहा है अथवा प्रतिक्रियावादी ? इलाहाबाद मे बैठकर बुद्धिमत्ताभरे ऐसे उद्गार प्रकट करने से क्या फायदा, जिनका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नही ? सादुल्ला-मन्त्रिमडल के पतन के बाद जब मै असम गया तो मुझे एक भी ऐसा काग्रेसी नही मिला, जो मिला-जुला मन्त्रिमडल बनाने पर जोर न देता हो । तथ्य यह है कि प्रात प्रतिक्रियावादी मन्त्रिमडल के नीचे कराह रहा था । हालत बद से बदतर होती जा रही थी और भ्रष्टाचार रोजाना बढता जा रहा था । जब नये मन्त्रिमडल ने पद ग्रहण किया तो असम की समस्त काग्रेसी विचारधारा को माननेवाली जनता ने राहत की सास ली और नये विश्वास और आशा का अनुभव किया । अगर तुम पदग्रहण की नीति को सारे ही देश के लिए छोडने को तैयार हो तो मै भी असम और बगाल जैसे प्रान्तो के काग्रेसजनो के साथ-साथ उसका स्वागत करूगा । किन्तु अगर काग्रेस-पार्टी सात प्रान्तो मे पदग्रहण करती है तो

यह जरूरी है कि दूसरे प्रान्तो में मिले-जुले मन्त्रिमडल स्थापित हो। अगर तुम्हे पता हो कि मिला-जुला मन्त्रिमडल बनने के बाद तमाम बाधाओ और कठिनाइयो के बावजूद असम की हालत मे जितना सुधार हुआ है तो तुम अपनी राय बिल्कुल बदल लोगे।

बगाल के बारे मे, मुझे भय है कि तुम करीब-करीब कुछ नही जानते। अपनी अध्यक्षता के दो वर्षो मे तुमने उस प्रान्त का कभी दौरा नही किया, हालाकि उस प्रान्त को जिस भयकर दमन मे से गुजरना पडा, उसे देखते हुए उसकी ओर दूसरे प्रान्तो की अपेक्षा कही अधिक ध्यान देने की जरूरत थी। क्या तुमने कभी यह मालूम करने की परवा की कि हक-मन्त्रिमडल के पद ग्रहण करने के बाद उस प्रान्त मे क्या हुआ ? अगर तुमने की होती तो तुम एक सिद्धान्तवादी राजनीतिज्ञ की तरह बात न करते। तब तुम मुझसे सहमत होते कि अगर इस प्रान्त को बचाना हो तो हक-मन्त्रिमडल को खत्म होना चाहिए और मौजूदा परिस्थितियो मे सर्व-श्रेष्ठ शासन की यानी मिले-जुले मन्त्रिमडल की स्थापना होनी चाहिए। किन्तु यह सब कहते समय मुझे यह भी कहना चाहिए कि मिले-जुले मन्त्रिमडलो का सवाल इसलिए उठता है कि पूर्ण-स्वराज्य का सक्रिय सघर्ष स्थगित कर दिया गया है। इस लडाई को कल शुरू कर दो और मिले-जुले मन्त्रिमडलो की सारी चर्चा हवा मे उड जायगी।

अब मै तुम्हारे दिल्ली के २० मार्च के तार का जिक्र करूगा। उसमे तुमने कहा है "अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति और नाजुक राष्ट्रीय समस्याओ की दृष्टि से कार्यसमिति का गठन और दफ्तर के इन्तजाम जरूरी है।" आदि। कार्यसमिति के शीघ्र गठन की जरूरत को हरकोई समझ सकता है, किन्तु तुम्हारे तार मे मेरी कठिनाइयो के लिए तनिक भी सहानुभूति नही दिखाई दी। तुम अच्छी तरह से जानते हो कि अगर पन्त का प्रस्ताव पेश और स्वीकृत न हुआ होता तो कार्यसमिति की घोषणा १३ मार्च को हो गई होती। जब यह प्रस्ताव पास हुआ तो काग्रेस अच्छी तरह जानती थी कि मै सख्त बीमार हू, महात्मा गाधी त्रिपुरी नही आये है और मेरा उनसे निकट भविष्य मे मिलना मुश्किल होगा। मै यह समझ सकता हू कि कार्यसमिति के गठन मे एक महीने की देरी हो जाती है तो स्वभावत

लोगो को बेचैनी होगी। किन्तु त्रिपुरी-काग्रेस के एक सप्ताह बाद ही आन्दोलन शुरू कर दिया गया और 'लाछन'-प्रकरण की तरह ही इस मामले मे भी तुमने ही मेरे खिलाफ आन्दोलन शुरू किया। क्या महात्मा गांधी से मिले बिना कार्यसमिति का गठन करना आसान था ? मै महात्मा-जी से कैसे मिल सकता था ? और क्या तुम भूल गये कि गत वर्ष हरिपुरा-काग्रेस के छ सप्ताह बाद कार्यसमिति की बैठक हुई थी ? क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारा तार अखबारो मे छपने के बाद मेरे खिलाफ कुछ लोगो ने और अखबारो ने जो आन्दोलन शुरू किया, वह सर्वथा शुद्ध हेतु से प्रेरित था ? क्या मै जान-बूझकर कार्यसमिति को नियुक्त न करके काग्रेस के मामलो मे गतिरोध पैदा कर रहा था ? अगर आन्दोलन सर्वथा उचित न था तो क्या एक सार्वजनिक नेता की हैसियत से तुम्हारा यह कर्त्तव्य न था कि तुम मेरे पक्ष मे कुछ शब्द बोलते—उस समय जबकि मै बिस्तर मे पडा था ?

मै तुम्हारे इस आरोप की चर्चा कर चुका हू कि मेरी अध्यक्षता के जमाने मे काग्रेस महासमिति की हालत खराब हुई है। इस बारे मे मै एक शब्द और कहूगा। क्या तुम्हे यह खयाल नही हुआ कि तुम मेरी निन्दा करने की कोशिश मे जनरल सेक्रेटरी की निन्दा करने के अलावा दफ्तर के सारे कर्मचारियो की भी निन्दा कर रहे हो ?

तुमने अपने तार मे 'नाजुक राष्ट्रीय समस्याओ' का जिक्र किया, जिनके लिए तुम तुरन्त कार्यसमिति के गठन की माग करते हो, हालांकि तुम कहते हो कि तुम कार्यसमिति मे नही रहना चाहते। कृपया बताओ भी कि ये 'नाजुक राष्ट्रीय समस्याए' क्या है ? तुमने अपने एक पिछले पत्र मे कहा था कि राजकोट और जयपुर की समस्या ही अत्यन्त नाजुक समस्या है। पर चूकि महात्माजी इन मामलो मे निपट रहे है एक तरह से वे कार्यसमिति और महासमिति के कार्यक्षेत्र से बाहर है।

तुमने अपने तार मे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का भी जिक्र किया है। मैने अखबारो मे देखा है कि तुम्हारे द्वारा इसका उल्लेख होने के बाद कई आदमी जिनमे तनिक भी अन्तर्राष्ट्रीय समझ नही है, जो अन्तर्राष्ट्रीय मामलो को समझने की कोई इच्छा नही रखते और जो अन्तर्राष्ट्रीय

स्थिति का भारत के हित मे उपयोग भी नही करना चाहते, वोहेमिया और स्लोवाकिया की किस्मत के वारे में चिन्तित हो उठे है । जाहिर है कि यह मुझपर प्रहार करने का अच्छा हथियार मिल गया है । पिछले दो महीनो मे यूरोप में ऐसा कुछ नही हुआ, जिसकी आशा नही थी । चेकोस्लोवाकिया मे हाल मे जो कुछ हुआ वह म्युनिख-समझौते का नतीजा है । असल मे यूरोप से जो जानकारी मुझे मिलती रही है, उनके आधार पर मै पिछले छ महीनो मे कांग्रेसी मित्रो से कहता रहा हू कि वसन्त मे यूरोप मे सकट पैदा होगा, जो गरमियो तक जारी रहेगा । इसलिए मे अपनी ओर से गतिवान कदम उठाने पर जोर देता आया—वह यह कि ब्रिटिश सरकार को पूर्ण स्वराज्य की माग करनेवाली चुनौती दी जाय । मुझे याद पडता है कि जब मैने पिछले दिनो (शान्तिनिकेतन या इलाहाबाद मे) एक वार तुमसे अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति की चर्चा की थी और उसके आधार पर ब्रिटिश सरकार के सामने राष्ट्रीय माग पेश करने की दलील दी थी तो तुमने यह ठडा उत्तर दिया कि अन्तर्राष्ट्रीय तनाव कुछ साल जारी रहनेवाला है । अचानक ही तुम अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के वारे मे वडे उत्साही हो गये हो । किन्तु मै यह वता दू कि तुम्हारी ओर से या गाधीवादी समुदाय की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का हमारे हित मे उपयोग कर लेने का कोई इरादा नजर नही आता । तुम्हारे तार मे यह भी लिखा है कि अन्तर्राष्ट्रीय सकट पर विचार करने के लिए कांग्रेस महासमिति की वैठक जल्दी होनी चाहिए । किस मकसद के लिए ? एक लम्बा-चौडा प्रस्ताव पास करने के लिए, जिसका कोई व्यावहारिक नतीजा न हो ? या तुम अपनी राय वदल लोगे और कांग्रेस महासमिति से कहोगे कि अब हमको पूर्ण स्वराज्य की ओर कदम वढाना चाहिए और एक चुनौती की शक्ल मे राष्ट्रीय माग ब्रिटिश सरकार के सामने पेश करनी चाहिए ? नही, मै महसूस करता हू कि या तो हम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति का अपने हित मे लाभ उठाये या फिर उसकी वात ही न करे। अगर हम कुछ करना-धरना नही चाहते तो खाली दिखावा करना वेकार है ।

मुझे वताया गया है कि जब तुम दिल्ली मे थे तो तुमने महात्माजी

को यह सदेश दिया कि उन्हे मौलाना आजाद से मिलने इलाहाबाद जाना चाहिए। यह जानकारी बिल्कुल गलत हो सकती है। लेकिन अगर गलत न हो तो क्या तुमने उनको सुझाया कि उन्हे साथ-साथ धनबाद भी हो आना चाहिए? जब मेरे सेक्रेटरी ने तुमको २४ मार्च को टेलीफोन किया कि अखबारो मे यह छपा है कि डाक्टरो की मनाही के कारण महात्माजी धनबाद नही आ सकते और इसका आप खडन करे तो तुमने ऐसी कोई इच्छा प्रकट नही की कि महात्माजी धनबाद आये, हालाकि तुम इस बात के लिए बडे उत्सुक थे कि मुझे गाधीजी की इच्छा के अनुसार कार्यसमिति के गठन की घोषणा कर देनी चाहिए। टेलीफोन पर तुमने यही कहा कि धनबाद गाधीजी के कार्यक्रम मे शामिल नही है। क्या तुम्हारे लिए महात्माजी को धनबाद आने के लिए रजामद करना इतना अधिक मुश्किल था? क्या तुमने कोशिश की? तुम कह सकते हो कि उन्हे राजकोट के मामले मे वापस दिल्ली लौटना था। किन्तु उनकी वाइसराय से मुलाकात पूरी हो चुकी थी और जहातक सर मारिस ग्वायर से मिलने की बात है, सरदार पटेल को मिलना था, न कि महात्माजी को।

राजकोट-प्रकरण के सम्बन्ध मे मै कुछ शब्द कहना चाहूगा। समझौते की शर्तो को, जिनके आधार पर महात्माजी का उपवास समाप्त हुआ, तुम काफी अच्छा समझते हो। कोई भी हिन्दुस्तानी ऐसा नही होगा, जिसे महात्माजी का जीवन बच जाने पर खुशी और राहत अनुभव नही हुई होगी। किन्तु जब हम समझौते की शर्तो की तर्क की बारीक निगाह से जाच-पडताल करते है तो हमे क्या मालूम होता है? पहली बात तो यह कि सर मारिस ग्वायर को, जो सघ-योजना के अविभाज्य अग है, पच मान लिया गया। क्या इसका यह अर्थ नही कि हमने अप्रत्यक्ष रूप मे सघ-योजना को स्वीकार कर लिया? दूसरे, सर मारिस न तो हमारे आदमी है, और न स्वतत्र एजेट ही है। वह सीधे-सादे रूप मे सरकार के आदमी है। ब्रिटिश सरकार के साथ अपने किसी भी विवाद मे अगर हम किसी हाईकोर्ट जज या सेशन जज को पच मान ले तो ब्रिटिश सरकार इसके लिए खुशी से राजी हो जायगी। उदाहरण के लिए बिना मुकदमा

चलाये नजरबद राजबदियो के मामले मे ब्रिटिश सरकार हमेशा गर्व के साथ कहती है कि तलबधी कागजात दो हाईकोर्ट या सेशन जजो के सामने रखे जाते है। किन्तु हमने इस व्यवस्था को कभी सतोषजनक नही स्वीकार किया। फिर राजकोट के मामले मे भिन्न तरीका क्यो स्वीकार किया गया ?

इस बारे मे एक और मुद्दा है, जिसे मै नही समझ पाता और जिन-पर तुम प्रकाश डाल सकते हो। महात्मा गाधी वाइसराय से मिलने गये और उनकी भेट हो चुकी। अब वह वहा क्यो इन्तजार कर रहे है ? अगर सर मारिस ग्वायर को जरूरत हो तो सरदार पटेल को इन्तजार करना चाहिए। अगर महात्माजी वाइसराय से मुलाकात कर चुकने के बाद दिल्ली मे ठहरे रहते है तो क्या इसमे अप्रत्यक्ष रूप मे ब्रिटिश सर-कार की प्रतिष्ठा नही बढती ? तुमने अपने २४ मार्च के पत्र मे लिखा था कि महात्माजी का कई दिन तक दिल्ली मे ठहरने का निश्चय हो चुका है और वह बाहर नही जा सकते। मै तो ऐसा सोचता हू, महात्माजी के लिए दिल्ली मे इन्तजार करते रहने के बजाय और कई जरूरी काम करने को पडे है। अगर महात्माजी थोडा भी परिश्रम करे तो जिस बहाव और गतिरोध आदि की तुम इतनी शिकायत करते हो, उसे देखते-देखते समाप्त किया जा सकता है। किन्तु इस बारे मे तुम चुप हो और सारा दोष मेरे लिए सुरक्षित रखते हो।

अपने २३ मार्च के पत्र मे तुमने लिखा है "मैने बाद मे दूसरे लोगो को यह गोलमोल बात करते पाया कि काग्रेस महासमिति की बैठक बुलाई जाय। मै ठीक-ठीक नही जानता कि इन आधारो पर कौन सोच रहा है और महासमिति की बैठक बुलाने का उनका क्या उद्देश्य है, सिवा इसके कि उससे स्थिति और स्पष्ट हो सके।" खबरे काफी तेजी से और दूर-दूर फैलती है और मुझे सूचना मिली है कि कुछ केन्द्रीय एम एल ए महा-समिति की बैठक जल्दी बुलाने के अनुरोध-पत्र पर महासमिति के सदस्यो के हस्ताक्षर प्राप्त करने की कोशिश कर रहे है, मानो मै महासमिति की बैठक बुलाने को टाल रहा हू और जान-बूझकर काग्रेस के मामलो मे गतिरोध पैदा कर रहा हू। क्या तुमने इस तरह की चर्चा दिल्ली मे या

अन्यत्र नही सुनी ? यदि हा, तो क्या तुम समझते हो, यह कदम न्यायोचित और सम्माननीय है ?

इसी २३ मार्च के पत्र मे तुम राष्ट्रीय माग के प्रस्ताव और शरत् द्वारा उसके विरोध का जिक्र करते हो। जहातक शरत् के रुख का सबध है, वह शायद इस बारे मे तुम्हे लिखनेवाले है। किन्तु यह कहना सही नही है कि उनके विरोध के अलावा प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ। मैने कई लोगो से सुना है कि उन्होने प्रस्ताव का विरोध किया, इसलिए नही कि उसमे कुछ बुनियादी खराबी थी, बल्कि इसलिए कि उसका कोई व्यावहारिक अर्थ नही था। वह भी उन निर्दोष प्रस्तावो जैसा था जो हर काग्रेस-अधिवेशन के अन्त मे पेश किये जाते है, अनुमोदित होते है और या तो सर्वसम्मति से या मूक रूप मे पास किये जाते है। वह कौन-सा अमली नेतृत्व देता है ?

इस बारे मे मै यह कहे बिना नही रह सकता कि पिछले वर्षो मे काग्रेस के प्रस्ताव बहुत ज्यादा लम्बे-चौडे रहे है। उन्हे 'प्रस्तावो' की अपेक्षा 'निबध' कहना ज्यादा ठीक होगा। पहले हमारे प्रस्ताव सक्षिप्त, विषय-सगत और व्यावहारिक होते थे। मेरा खयाल है कि हमारे प्रस्तावो को यह नई शक्ल देने मे तुम्हारा हाथ रहा है। जहातक मेरा सम्बन्ध है, मै लम्बे निबधो के बजाय अमली प्रस्ताव ज्यादा पसद करता हू।

तुमने अपने पत्रो मे एक से अधिक बार आज की काग्रेस मे 'दुस्साहसिक प्रवृत्तियो' का जिक्र किया है। तुम्हारा ठीक-ठीक आशय क्या है ? मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे ध्यान मे कुछ खास व्यक्ति है। क्या तुम नये आदमियो और औरतो के काग्रेस मे आने और प्रमुखता प्राप्त करने के विरुद्ध हो ? क्या तुम चाहते हो कि काग्रेस का शीर्ष नेतृत्व चन्द व्यक्तियो के लिए ही सुरक्षित रहे ? अगर मेरी याददाश्त मुझे धोखा नही देती तो सयुक्त प्रान्त की प्रान्तीय काग्रेस कमेटी की परिषद ने एक बार इस आशय का नियम स्वीकार किया था कि किन्ही काग्रेस सस्थाओ मे एक व्यक्ति तीन साल से अधिक पदाधिकारी न रहे। प्रकटत यह नियम मातहत सस्थाओ के लिए था और उच्च सस्थाओ मे एक ही व्यक्ति उसी पद पर दसो साल तक रह सकता है। तुम कुछ भी कहो, हम सब, एक अर्थ मे,

दुस्साहसी है, कारण, जीवन एक दीर्घ दुस्साहस है। मैने तो सोचा था कि जो लोग अपनेको प्रगतिशील कहते है, वे काग्रेस सगठन की नई श्रेणियो मे नये खून का स्वागत करेगे।

तुम्हारे लिए यह सोचने का कोई कारण नही है कि शरत् का पत्र मेरी ओर से लिखा गया। (यहा मै तुम्हारे २४ मार्च के पत्र का हवाला दे रहा हू।) उनका अपना व्यक्तित्व है। जब वह यहा से कलकत्ता लौटे तो उन्हे गाधीजी का तार मिला कि वह उन्हे पत्र लिखे। अगर गाधीजी ने इस तरह का तार नही दिया होता तो मुझे शक है कि उन्होने पत्र लिखा भी होता। किन्तु मै यह कह दू कि महात्माजी को लिखे गए उनके पत्र मे कुछ ऐसी बाते है जो मेरी भावनाओ को प्रकट करती है।

शरत् के नाम तुम्हारे पत्र के बारे मे मुझे कुछ कहना है। मै तुम्हारे पत्र से यह अर्थ लेता हू कि त्रिपुरी मे वातावरण आदि के बारे मे उन्होने जो कुछ लिखा, उसपर तुम्हे आश्चर्य हुआ। इसपर मुझे आश्चर्य होता है। हालाकि मै स्वतत्रतापूर्वक आ-जा नही सकता था, किन्तु स्वतत्र जरियो से उस जगह के दूपित वातावरण की मुझे काफी रिपोर्ट मिली थी। मेरी समझ मे नही आता कि तुम उस जगह आये-गये और फिर भी कैसे तुम्हे उसकी गध नही आई या तुमने उसके बारे मे सुना नही ?

दूसरे, तुम्हारा यह कहना है कि त्रिपुरी मे दूसरे सवालो के विचार पर व्यक्तिगत प्रश्नो की छाया पडी। तुम्हारा कहना सही है। सिर्फ तुमने यह और नही जोडा कि यद्यपि तुम इस विषय पर विपय-समिति या खुले अधिवेशन मे बोले नही, पर तुमने इन व्यक्तिगत प्रश्नो को तीव्र बनाने मे और उन्हे सार्वजनिक दृष्टि मे प्रधानता दिलाने मे और किसी भी व्यक्ति की अपेक्षा अधिक योग दिया।

तुमने शरत् के नाम अपने पत्र मे कहा है "किसीके लिए भी यह कहना बेहूदा बात थी कि सुभाष की बीमारी बनावटी है और मेरे किसी भी साथी ने मेरी जानकारी मे ऐसा इशारा नही किया।" जब तुम ऐसा कहते हो तो लगता है कि तुमने अपनी आखो पर बिल्कुल रगीन चश्मा चढा दिया है, जबकि त्रिपुरी मे और उसके पहले मेरे राजनैतिक विरोधियो ने सब जगह इस आशय का व्यवस्थित प्रचार किया था। यह

एक और अतिरिक्त प्रमाण है कि पिछले कुछ समय से तुम्हारा मेरे विरुद्ध झुकाव रहने लगा है (देखो इस पत्र का प्रारभ)। मै नही सोचता कि शरत् ने त्रिपुरी के वातावरण आदि के बारे मे जो कुछ कहा है, वह जरा भी अत्युक्तिपूर्ण है।

तुमने त्रिपुरी मे सुनी कुछ अरुचिकर रिपोर्टो का जिक्र किया है। तुम्हारे लिए यह अजीब और अशोभनीय बात है कि तुम उन्ही रिपोर्टो से प्रभावित होते हो जो हमारे विरुद्ध जाती है। मै कुछ उदाहरण देता हू। क्या तुम जानते हो कि बगाल ही एक ऐसा प्रान्त नही है जिसके प्रतिनिधियो के टिकिट जारी करने के बारे मे शिकायते की गई है ? क्या तुम जानते हो कि इसी तरह की शिकायते आन्ध्र के विरुद्ध भी की गई थी ? किन्तु तुम केवल बगाल का जिक्र करते हो। फिर, क्या तुम्हे पता है कि जब बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी के दफ्तर ने मूल रसीदे खो जाने के कारण दुहरी रसीदे जारी की तो उसने इस बारे मे काग्रेस महासमिति के दफ्तर को चेतावनी दे दी थी और कहा था कि उसे प्रतिनिधि टिकिट जारी करने मे सावधानी रखनी चाहिए ? क्या तुमने यह जानने की परवा की कि इस गलती के लिए कौन जिम्मेदार है, बगाल प्रान्तीय काग्रेस कमेटी या काग्रेस महासमिति का दफ्तर ?

फिर, तुमने प्रतिनिधियो को लाने मे बडी रकम खर्च करने का जिक्र किया है। क्या तुम नही जानते कि पूजीपति और पैसेवाले लोग किस पक्ष मे है ? क्या तुमने सुना है कि पजाब के प्रतिनिधियो को लारी भर-भरकर लाहौर से लाया गया ? शायद डा किचलू इसपर रोशनी डाल सकते है। पजाब की एक प्रसिद्ध महिला काग्रेस कार्यकर्त्री ने, जो मुझसे पाच दिन पहले मिली थी, बताया कि हमे सरदार पटेल की हिदायत के अनुसार लाया गया है। मै नही जानता, किन्तु निश्चय ही तुमको थोडी तटस्थता की भावना रखनी चाहिए।

त्रिपुरी मे काग्रेस-मत्रियो के रवैये के बारे मे मुझे दो बाते कहनी है। मुझसे महासमिति के बहुत-से सदस्यो ने अनुरोध किया कि मतदान पर्ची के जरिये होना चाहिए। जब मैने इसका कारण पूछा तो उन्होने कहा कि अगर उन्होने खुले रूप से काग्रेस मत्रियो के विरुद्ध वोट दिया तो उन्हे

दिक्कत मे फसना पडेगा। इसका क्या मतलब ? दूसरे मै इसके खिलाफ हू कि काग्रेसी मत्री उस तरह दलगत तरीके से मत सग्रह करे। इसमे शक नही कि उन्हे ऐसा करने का वैधानिक हक है, किन्तु इसका नतीजा यह होगा कि हर प्रान्त मे काग्रेस पार्लामेटरी पार्टी मे फूट पड जायगी। अगर काग्रेसी मत्रियो को अपने प्रान्त की असेम्बलियो और परिषदो के तमाम काग्रेसी सदस्यो का सयुक्त समर्थन प्राप्त नही होगा तो वे कैसे अपना काम चला सकेगे ?

क्या तुम इससे सहमत नही कि त्रिपुरी-काग्रेस मे (विषय-समिति मे भी) पुराने नेतृत्व ने जनता की दृष्टि मे निष्क्रिय रख रखा और मत्री रगमच पर हावी रहे ? जब शरत् ने यह कहा तो क्या वह गलती पर थे ?

यह जले पर नमक छिडकना हुआ जब तुम शरत् के नाम अपने पत्र मे कहते हो "त्रिपुरी-प्रस्ताव काग्रेस-अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सहयोग की कल्पना करता है।"

तुम इसी पत्र मे दावा करते हो कि तुमने त्रिपुरी मे और उसके पहले काग्रेसियो मे सहयोग स्थापित करने की कोशिश की। क्या मै तुम्हे यह अप्रिय तथ्य बताऊ कि दूसरे लोगो की इस बारे मे दूसरी राय है ? उनके खयाल से, त्रिपुरी-काग्रेस मे काग्रेसजनो और काग्रेसजनो के बीच जो खाई पैदा हुई, उसकी जिम्मेदारी से तुम बच नही सकते।

अब मै तुम्हे अपनी नीति और कार्यक्रम स्पष्ट करने की दावत देता हू—अस्पष्ट सामान्य बातो के द्वारा नही, बल्कि यथार्थवादी विस्तार के साथ। मै यह भी जानना चाहूगा कि तुम क्या हो, समाजवादी या वामपक्षी या मध्यमार्गी या दक्षिणपथी या गाधीवादी या और कुछ ?

तुम्हारे शरत् को लिखे पत्र मे दो प्रशसनीय वक्तव्य है, "तमाम राजनैतिक प्रश्नो पर व्यक्तिगत पहलुओ को प्रधानता मिलते देखकर मुझे सबसे अधिक दु ख हुआ। अगर काग्रेसियो मे सघर्ष होना है तो मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि उसे ऊचे स्तर पर और नीति तथा सिद्धान्त के मामलो तक ही सीमित रखा जाय।" अगर तुमने खुद अपनी बात पर अमल किया होता तो काग्रेस राजनीति की दूसरी ही शक्ल हुई होती।

जब तुम कहते हो, तुम्हारी समझ मे नही आया कि त्रिपुरी मे क्या

रुकावट थी तो मै तुम्हारे 'सीधेपन' की बलाये लिये बिना नही रह सकता। त्रिपुरी-कांग्रेस ने असल मे सिर्फ एक ही प्रस्ताव पास किया और वह था पन्त-प्रस्ताव और उसमे तुच्छता और प्रतिशोध की भावना भरी हुई थी। सत्य और अहिसा के हिमायतियो ने अध्यक्ष के निर्वाचन के बाद दुनिया को बताया कि वह बहुमत के रास्ते मे रोडे नही अटकायेगे और बाधा न डालने की भावना से उन्होने कार्य-समिति की सदस्यता से त्यागपत्र दिया है। त्रिपुरी मे उन्होने बाधा डालने के अलावा और कुछ नही किया। उन्हे ऐसा करने का अधिकार था, किंतु उन्होने ऐसे दावे क्यो किये, जिन्हे अमल मे उन्होने झुठलाया ?

मै इस लम्बे पत्र को समाप्त करने के पहले कुछ और बातो का जिक्र करूंगा।

तुमने त्रिपुरी मे बगाल के प्रतिनिधियो को टिकिट जारी करने मे हुई दिक्कत का जिक्र किया है। एक दिन मैने पत्रो मे पढा कि कलकत्ता की एक सार्वजनिक सभा मे कांग्रेस महासमिति के एक सदस्य ने कहा कि उसने सयुक्त प्रान्त के कुछ प्रतिनिधियो से सुना है कि इस तरह की दिक्कत सयुक्त प्रान्त के बारे मे भी पेश आई थी।

क्या तुम यह नही सोचते कि पन्त-प्रस्ताव का बुनियादी हेतु महात्मा-जी को मेरे विरुद्ध खडा करना था ? क्या तुम ऐसे कदम को प्रामाणिक समझते हो, जबकि मेरे और महात्माजी के बीच, कम-से-कम जहातक मेरी तरफ का सवाल है, कोई खाई पैदा नही हुई थी ? अगर पुराने नेता मुझसे लडना चाहते थे तो उन्होने सीधे तरीके से ऐसा क्यो नही किया ? उन्होने महात्मा गाधी को हमारे बीच मे क्यो डाला ? यह चतुर युक्ति थी, किन्तु सवाल यह है कि क्या यह कदम सत्य और अहिसा के अनुकूल था ?

मै तुमसे यह पूछ चुका हू कि क्या तुम सरदार पटेल के इस कथन को उचित समझते हो कि मेरा दुबारा निर्वाचन देश के ध्येय के लिए हानिकर होगा ? तुमने इस बारे मे एक शब्द भी नही कहा कि उन्हे अपना यह कथन वापस लेना चाहिए। इस प्रकार तुमने अप्रत्यक्ष रूप से उनके आरोप का समर्थन किया। अब मै तुमसे यह पूछता हू कि तुम

महात्माजी के इस आशय के उद्गार के बारे मे क्या सोचते हो कि आखिर मे (सुभाष) देश का शत्रु नही हू । क्या तुम सोचते हो कि इस प्रकार का कथन उचित था ? यदि नही तो क्या तुमने मेरे पक्ष में महात्माजी से एक भी शब्द कहा ?

तुम कुछ लोगो की इस चाल के बारे में क्या सोचते हो कि जब हम त्रिपुरी में थे तो दैनिक पत्रो मे यह प्रकाशित हुआ था कि पन्त-प्रस्ताव को महात्माजी का पूरा समर्थन प्राप्त है ?

और अब तुम पन्त-प्रस्ताव के बारे मे क्या सोचते हो ? त्रिपुरी मे यह अफवाह थी कि तुम उसके बनानेवालो मे से एक थे । क्या यह तथ्य है ? क्या तुम इस प्रस्ताव को पसद करते हो, हालाकि उसपर मतदान के समय तुम तटस्थ रहे थे ? तुम उसकी क्या व्याख्या करते हो ? क्या तुम्हारे खयाल मे वह अविश्वास का प्रस्ताव था ?

मुझे खेद है कि मेरा पत्र इतना लम्बा हो गया है । बेशक, उनसे तुम्हारा धीरज खो जायगा, किन्तु मुझे लम्बा लिखना पडा, क्योंकि मुझे बहुत-सी बाते कहनी थी ।

सभव है, मुझे तुम्हे फिर लिखना पडे या अखबारो मे बयान देना पडे । यह अपुष्ट रिपोर्ट है कि कुछ लेखो मे तुम मेरी अध्यक्षता की प्रतिकूल आलोचना कर रहे हो। जब मै तुम्हारे लेख पढूगा तो मै इस विषय मे कुछ कह सकूगा और हमारे काम की तुलना कर सकूगा, खासकर इस बात की कि वामपक्ष के ध्येय को तुमने दो साल मे और मैने एक साल मे कितना आगे बढाया ।

अगर मैने कठोर भाषा का प्रयोग किया हो या कही तुम्हारी भावनाओ को चोट पहुचाई हो तो क्षमा कर देना । तुम खुद कहते हो कि स्पष्टता सबसे अच्छी वस्तु है और मैने स्पष्ट होने की कोशिश की है, शायद नग्न रूप से स्पष्ट ।

मेरी तबीयत धीमे, पर लगातार सुधर रही है। आशा है, तुम स्वस्थ होगे।

सस्नेह तुम्हारा,

सुभाष

२५६ महात्मा गांधी की ओर से

नई दिल्ली
३० मार्च १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे दो पत्र मिले। दोनों अच्छे थे।

तुम्हें पत्र-व्यवहार की नकलें भेज रहा हूं।

यू पी की घटनाओं से मुझे अशांति होती है। मेरा हल यह है कि या तो तुम्हें प्रधानमंत्री बन जाना चाहिए या मंत्रिमंडल को तोड़ देना चाहिए। तुम्हें उच्छृंखल तत्वों पर काबू पाना चाहिए।

जो समाजवादी यहां आये थे, उनसे मेरी तीन दिन दिल खोलकर बातें हुईं। नरेन्द्रदेव तुम्हें खबर देंगे। वह अपने-आप न दें तो तुम मंगा लेना।

प्यार,

बापू

२५७ महात्मा गांधी की ओर से सुभाषचंद्र बोस के नाम

नई दिल्ली
३० मार्च १९३९

प्रिय सुभाष,

अपने तार का जवाब पाने की खातिर मैंने तुम्हारे २५ तारीख के पत्र का उत्तर देने में देर की है। सुनील का तार मुझे कल रात को मिला। अब प्रातःकाल की प्रार्थना के समय से पहले उठकर यह उत्तर लिख रहा हूं।

चूंकि तुम्हारे खयाल में पंडित पंत का प्रस्ताव अनियमित था और कार्य-समिति-सम्बन्धी कलम स्पष्ट रूप में अवैधानिक और नाजायज है, इसलिए तुम्हारा मार्ग नितान्त स्पष्ट है। समिति का तुम्हारा चुनाव अबाधित होना चाहिए।

इसलिए इस विषय में तुम्हारे कई प्रश्नों को मेरे उत्तर की जरूरत नहीं।

जब हम फरवरी में मिले थे तबसे मेरी राय मजबूत हुई है कि जहां मौलिक बातों पर मतभेद हो, जैसा हम सहमत थे कि है, वहां मिली-

जुली समिति हानिकर होगी । इसलिए यह मानकर कि तुम्हारी नीति को महा-समिति के बहुमत का समर्थन प्राप्त है, तुम्हे बिल्कुल उन्ही लोगो की बनी हुई कार्यसमिति रखनी चाहिए, जो तुम्हारी नीति मे विश्वास करते है ।

हा, मै उसी विचार पर कायम हू, जो मैने हमारी फरवरी की मुलाकात मे सेगाव मे प्रकट किया था कि मै किसी भी प्रकार से तुम्हारे आत्म-दमन मे भागीदार होने का अपराधी नही बनूगा । स्वेच्छापूर्वक आत्म-विलय दूसरी चीज है । किसी ऐसे विचार को दबा लेना, जिसे तुम देश-हित के लिए प्रबल रूप मे रखते हो, आत्म-दमन होगा । इसलिए अगर तुम्हे अध्यक्ष के रूप मे काम करना है तो तुम्हारे हाथ खुले रहने चाहिए। देश के सामने जो परिस्थिति है, उसमे किसी मध्यम मार्ग की गुजायश नही है ।

जहातक गाधीवादियो का सम्बन्ध है (यदि यह गलत शब्द-प्रयोग करे तो) वे तुम्हे बाधा नही पहुचायेगे । जहा सभव होगा, तुम्हारी सहायता करेगे और जहा सहायता नही कर सकेगे, वहा अलग रहेगे । अगर वे अल्पमत मे है तब तो कुछ भी कठिनाई नही होनी चाहिए। जहा वे स्पष्ट बहुमत मे होगे वहा शायद वे अपने-आपको दबाकर न रख सके ।

लेकिन मुझे जिस चीज की चिन्ता है वह यह हकीकत है कि कांग्रेस के मतदाता फरजी है और इसलिए बहुमत और अल्पमत का पूरा अर्थ नही रह जाता । फिर भी जबतक काग्रेस की भीतरी सफाई नही हो जाती तबतक जो हथियार हमारे पास फिलहाल है उसीसे काम चलाना होगा । दूसरी चीज, जिससे परेशानी है, वह है हमारा आपसी भयकर अविश्वास । जहा कार्यकर्त्ताओ मे परस्पर अविश्वास हो वहा मिल-जुलकर काम करना असभव हो जाता है ।

मेरे खयाल से तुम्हारे पत्र के और किसी मुद्दे का जवाब देने की आवश्यकता नही है ।

जो कुछ करो भगवान से मार्ग-दर्शन लेते रहो। डाक्टरो की आज्ञाओ का पालन करके जल्दी अच्छे हो जाओ ।

प्यार,

बापू

जहांतक मेरा सम्बन्ध है, हमारे पत्र-व्यवहार को प्रकाशित करने की जरूरत नही। परन्तु तुम्हारा दूसरा विचार हो तो छापने की मेरी इजाजत है।

२५८. सुभाषचन्द्र बोस के नाम

निजी और खानगी

इलाहाबाद
३ अप्रैल १९३९

प्रिय सुभाष,

तुम्हारा २८ मार्च का लम्बा खत मेरे पास अभी-अभी पहुचा और मै जल्दी से जवाब दे रहा हू। सबसे पहले तो मै यह कहना चाहता हू कि मुझे कितनी खुशी हुई कि तुमने मुझे इतना पूरे और साफ तौर पर लिखा है और स्पष्ट कर दिया है कि मेरे बारे मे और विविध घटनाओं के बारे में तुम्हारे क्या भाव है। अक्सर स्पष्ट करने से चोट लगती है, लेकिन लग-भग हमेशा ही वह वाछनीय है, खास तौर पर उन लोगों के बीच जिन

है । लेकिन जहातक त्रुटियो का सबध है, या कम-से-कम उनमें से अनेक का सबध है, मुझे कुछ कहना नही है । मै अपराध स्वीकार करता हू, क्योकि मै अच्छी तरह समझता हू कि दुर्भाग्य से मुझमें वे त्रुटिया है । मै यह भी कह सकता हू कि तुम्हारे उन उद्गार की सचाई की मै पूरी तरह कद्र करता हू कि जबसे तुम १९३७ मे नजरबन्दी से निकले, तुमने मेरे साथ बहुत ही आदर और लिहाज का वर्ताव खानगी में और सार्वजनिक जीवन में भी किया । इनके लिए मै तुम्हारा कृतज्ञ हू । मै खुद भी हमेशा तुम्हारे लिए आदर और स्नेह रखता रहा और अब भी रखता हू हालाकि कभी-कभी तुमने जो कुछ किया या जिस तरह किया, वह मुझे कतई पसन्द नही आया । मेरा खयाल है कि किसी हद तक हमारे स्वभाव अलग-अलग है और जीवन तथा उसकी समस्याओ के प्रति हमारा दृष्टिकोण एक-सा नही है ।

अब मै तुम्हारे पत्र को निपटाऊगा और एक-एक पैराग्राफ को लूगा ।

मै भूल रहा हू कि मैने तुमसे क्या कहा था, जब पिछले नवम्बर मे मेरे यूरोप से लौटने पर तुम मुझसे इलाहाबाद मे मिले थे । तुम कराची से कलकत्ता जाते हुए थोडी देर के लिए यहा उतर पडे थे । मै कल्पना नही कर सकता कि तुमको निश्चित उत्तर दे सकने से पहले उस समय गाधीजी से पूछने के लिए मेरे पास क्या चीज थी । मुझे यह भी याद नही कि सवाल क्या था । लेकिन शायद मेरा मतलब यह था कि मेरा अपना कार्यक्रम विभिन्न मामलो पर गाधीजी की प्रतिक्रिया पर निर्भर होगा । तुमको याद होगा कि हरिपुरा से पहले और पीछे मैने तुमसे क्या कहा था । मै कार्यसमिति के सदस्य के नाते उससे सबध रखने के बारे मे उस समय बहुत बेचैन था और छोडना चाहता था । इसका कारण यह था कि मुझे अधिकाधिक ऐसा अनुभव हुआ था कि वहा मै कोई उपयोगी काम नही कर रहा था । दूसरा कारण यह भी था कि गाधीजी, जिसे 'एक विचार की' समिति कहते थे, उसकी दृष्टि से सोच रहे थे और मै नही समझता था कि मै उसका अग बन सकता हू । मेरे सामने उस समय यह चुनने का मौका आगया कि मै उससे चुपचाप हटकर बाहर से उसे सहयोग दू या गाधीजी और उनके गुट को चुनौती दू । मुझे लगा कि हिंदुस्तान के हितो

के लिए और हमारे पक्ष के लिए यह हानिकारक होगा कि मै या तुम यह निश्चित फूट पैदा करो। बेशक यह कहना बेहूदा है कि किसी भी कीमत पर एकता होनी चाहिए। कभी-कभी एकता हानिकारक हो सकती है और उस समय वह नही रहनी चाहिए। यह सब उस समय की परिस्थिति पर निर्भर करता है, और मुझे उस समय दृढ विश्वास था कि गाधीजी और उनके गुट को बाहर निकाल देने से या उसकी कोशिश से एक नाजुक मौके पर हम बहुत कमजोर हो जायगे। मै उस स्थिति का सामना करने को तैयार नही था। साथ ही जो घटनाए हो रही थी, उनमे से बहुत-सी मुझे नापसद थी। और कुछ मामलो मे, जैसे रियासतो और मत्रिमडलो के बाबत, गाधीजी का आम रवैया भी मुझे पसन्द नही था।

मै यूरोप चला गया और जब वापस आया तो फिर पुरानी समस्या सामने आई। उसी समय तुम मुझसे मिले और शायद मैने तुम्हे बताया कि मेरे मन मे क्या था। मेरा अपना दिमाग साफ था। परन्तु स्थिति के बारे मे मेरी क्रिया गाधीजी की प्रतिक्रियाओ पर निर्भर थी। अगर अब भी वह एक-जैसे विचारोवाली बात पर जमे हुए थे तब तो मेरा कोई स्थान नही था, नही तो मै कार्य-समिति के सदस्य की हैसियत से सहयोग देने की कोशिश करता। मै इस मुद्दे पर काग्रेस मे दो दल करने के लिए तैयार नही था। मेरा दिमाग तो हिदुस्तान मे और बाहर बढते हुए सकटो से भरा हुआ था और मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद हमे चद महीनो के दौरान ही किसी बडे सग्राम का सामना करना पडेगा। गाधीजी के सक्रिय भाग और नेतृत्व के बिना उस सग्राम के कारगर होने की संभावना नही थी।

इस सग्राम की मेरी कल्पना का आधार सघ-शासन नही था। मै चाहता था कि काग्रेस सघ-शासन के सवाल को लगभग मुर्दा समझ ले और आत्म-निर्णय तथा सविधान-सभा की माग पर सारा जोर लगाये और उसे विश्व-सकट से सबद्ध करके रखे। मुझे लगा कि सघ-शासन का मुकाबला करने पर बहुत ज्यादा जोर देने से इस मुर्दे को जिन्दा रखने मे मदद मिलती थी और अधिक बुनियादी सतह पर सोचने और बाद मे कार्रवाई करने मे बाधा पड़ती है। जब मै इग्लैड मे था तब तुमने इस आशय का एक बयान जारी किया था कि तुम सघ-शासन से अन्त तक

लड़ोगे और कांग्रेस ने उसे मान लिया तो भी लड़ोगे। तुम्हारे इस बयान का इंग्लैंड में ठीक उल्टा असर हुआ। हर शख्स ने कहा कि अगर कांग्रेस का अध्यक्ष मद्य-शासन के मुद्दे पर इस्तीफे की बात सोच रहा है तो जरूर कांग्रेस उसे स्वीकार करनेवाली है। मुझे लाचारी महसूस होती थी और मैं इस दलील का आसानी से जवाब नहीं दे सकता था।

मैंने दो प्रस्ताव इस आधार पर तैयार किये। उनमें कोई असाधारण बात नहीं थी, सिर्फ जोर देने का ढंग दूसरा था। तुम्हें मालूम है कि कार्य-समिति के लिए सारे प्रस्ताव इस दृष्टि से बनाने पड़ते हैं कि दूसरे सदस्य सहमत हो जायं। कोई ऐसा मसविदा बनाना, जो अपनेको अधिक पसंद हो, परन्तु जो दूसरों को मंजूर न हो, बहुत आसान है। कार्य-समिति के सामने इन प्रस्तावों को रखने में मेरा विचार यह था कि अगली कांग्रेस में अधिक व्यापक और दूर तक जानेवाले प्रस्ताव के लिए जमीन भी तैयार की जाय और देश का मानस भी तैयार किया जाय। किन्तु मेरे प्रस्ताव मंजूर नहीं हुए और मुझसे कहा गया कि उनपर कांग्रेस के समय विचार होना चाहिए।

कार्य-समिति की इसी बैठक में मैंने यहूदियों के बारे में एक प्रस्ताव रखा। तुमको याद होगा कि इससे पहले ही जर्मनी में यहूदियों के विरुद्ध एक भयंकर कत्ले-आम हो चुका था और संसारभर में उसकी गूंज थी। मुझे लगा कि हमें इस बारे में अपनी राय जरूर जाहिर करनी चाहिए। तुम कहते हो कि तुम "हक्के-बक्के रह गये, जब मैंने एक ऐसा प्रस्ताव पेश किया जो हिंदुस्तान को यहूदियों के लिए शरण का स्थान बनाना चाहता था।" मुझे यह जानकर आश्चर्य होता है कि तुम्हारी इस मामले में इतनी तीव्र भावनाएं हैं, क्योंकि जहांतक मुझे याद है, तुमने उस समय अपने विचार निश्चित रूप से प्रकट नहीं किये। परन्तु क्या मेरे प्रस्ताव के लिए यह कहना न्यायपूर्ण है कि वह हिंदुस्तान में यहूदियों के लिए एक शरण-स्थान स्थापित करना चाहता था? पुराना मसविदा मेरे सामने है। उसमें कहा गया है "इस समिति को इस बात पर कोई ऐतराज नहीं है कि यहूदी शरणार्थियों में से जो निपुण और विशेषज्ञ हैं और जो हिंदुस्तान की नई व्यवस्था के योग्य हैं और हिंदुस्तानी आदर्श स्वीकार करते हों, उन्हें

हिंदुस्तान मे नौकरी दे दी जाय।" मैने इस सवाल को यहूदियो को सहायता देने के नजरिये से नही सोचा था, हालाकि हमारे देश को हानि पहुचाये बिना जहा सभव हो ऐसी सहायता देना वाछनीय था, लेकिन मेरा नजरिया तो हमारे विज्ञान और उद्योग वगैरा के लिए प्रथम श्रेणी के आदमी साधारण वेतन पर प्राप्त करके अपनी ही सहायता करने का था। नाजियो का कब्जा हो जाने के बाद कई देशो ने अच्छे आदमी चुनने के लिए वियना मे विशेष कमीशन भेजे। तुर्की को इन विशेषज्ञो से बडा लाभ हुआ है। मुझे सही किस्म के कलाविद और विशेषज्ञ जुटाने का यह आदर्श मौका दिखाई दिया। थोडी तनखाहो पर उनके यहा आने से दूसरे वेतन कम करने मे भी हमे सहायता मिलती। वे एक विशेष अवधि के लिए न कि हमेशा के लिए बसने को आते और उनकी एक सीमित सख्या ही आती, और उनमे भी वे ही आते जो हमारे लिए निश्चित रूप मे उपयोगी होते और जो हमारे आदर्शो और राजनैतिक नजरिये को मानते। लेकिन इस प्रस्ताव पर भी सहमति नही हुई, इसलिए उसे छोड दिया गया।

काग्रेस-अध्यक्ष के चुनाव के बाद दिल्ली मे दिये गए मेरे भाषण का तुमने जिक्र किया है। मुझे अफसोस है कि मैने वह अखबारी खबर नही देखी, जिसका उल्लेख तुमने किया है, हालाकि बाद मे किसीने मुझे उसके बारे मे बताया था। सच तो यह है कि मैने तुम्हारे या तुम्हारे चुनाव के बारे में कुछ नही कहा। मै दिल्ली और पजाब-काग्रेस के उपद्रवो और झगडो का जिक्र कर रहा था और यह कहा था कि पदो की लिप्सा और उसके लिए मत बटोरने की बेहद लालसा पाई जाती है। मैने उसे बुरा बताया। शायद अखबारवालो के दिमाग मे तुम्हारा चुनाव था, इसलिए उन्होने मेरे कथन को तोड-मरोडकर रख दिया। सभा मे जो लोग मौजूद थे उनसे और दूसरे लोगो से मैने पूछा और मैने जो कुछ कहा था उसके बारे मे उन्होने मेरे ही खयाल की पुष्टि की।

तुम्हारा यह कहना बिल्कुल सही है कि डाक्टर पट्टाभि के लिए मत बटोरने का बहुत काम हुआ, जैसा तुम्हारे लिए भी हुआ। चुनाव के लिए मत बटोरने मे मुझे कोई आपत्ति दिखाई नही देती। मुझे ठीक-ठीक पता नही है कि तुम्हारे यह कहने का क्या अर्थ है कि पट्टाभि के लिए

मत प्राप्त करने में काग्रेसी मन्त्रिमडलो का तत्र इस्तेमाल किया गया। मै नही जानता कि उस काम के लिए वहा कौन-सा तत्र है और अवश्य ही उत्तर प्रदेश मे तो मैने उसे काम करते नही देखा। अलबत्ता, एक मामले मे तुम्हारे पक्ष में ऐसा जरूर हुआ। मुझे कोई कल्पना नही है कि हमारे मन्त्रियो ने किस तरफ राय दी, लेकिन मेरा यह ख्याल है कि आधे से अधिक ने पट्टाभि के लिए मत नही दिये है और जहातक मै जानता हू, इससे भी कम लोगो ने दिये होगे। एक मत्री ने राय देने से इन्कार कर दिया, एक ने तुम्हारे लिए सक्रिय और सार्वजनिक रूप मे वोट मागे और यह आम राय थी कि इन्होने तुम्हारे लिए वहुत-से मत प्राप्त किये।

सार्वजनिक सभा मे मै तुम्हारी निदा करू, इसपर तुम्हारा ऐतराज करना विल्कुल सही है। ऐसा करना निहायत वेजा होता। लेकिन हकीकत यह है कि मैने दिल्ली मे या और कही ऐसी कोई वात नही की।

अव मै उस वयान पर आता हू, जो मैने कार्य-समिति के वारह सदस्यो के इस्तीफे के समय जारी किया था। जव मैने कार्य-समिति के कुछ और सदस्यो द्वारा अपनाये गए उग्र रवैये की अपेक्षा नरम रुख पेश करने का साहस किया तो दो दिन तक लवी वहस हुई। उस वैठक से पहले जव मैने सुना था कि त्यागपत्र की सभावना है तव मैने इसे रोकने की चेष्टा की थी। मैने दुवारा यही कोशिश की, लेकिन कई कारणो से स्थिति पहले से कही मुश्किल होगई। तुम जानते हो कि तुम्हारे अध्यक्षीय वक्तव्यो मे कार्य-समिति के कुछ सदस्यो पर जो छीटे उडाये गए उनके वारे मे मेरे तीव्र विचार थे। मैने तुमसे इसका वार-वार जिक्र किया था। तुम गाधीजी से मिलने जा रहे थे तव मैने विशेष रूप से तुम्हारे दिल पर यह वात जमाने की कोशिश की थी कि राजनैतिक सवालो की चर्चा करने से पहले इस मामले की सवसे पहले सफाई होनी चाहिए। जयप्रकाश मुझसे सहमत थे। जब दो आदमियो के वीच मे सन्देह और अविश्वास की दीवार हो तो कोई राजनैतिक चर्चा नही हो सकती। तुमने अपने वयानो मे जो कुछ कहा था वह सर्वथा अनुचित था। ऐसी स्थितिवाले शख्स के लिए, जो अन्दरूनी और काग्रेस-अध्यक्ष की जगह पर हो, स्पष्ट ही यह अच्छी बात नही है कि वह अखबारी अफवाहो अथवा बाजारू बयानो

को दोहराये। उसके बारे मे यह माना जाता है कि उसकी जानकारी होगी और उसके एक सकेत से भी लोगो को विश्वास हो जाता है। यह सही है कि तुमने किसीके नाम का उल्लेख नही किया, परन्तु तुम्हारे बयानो को पढनेवाला हर आदमी जरूर इस नतीजे पर पहुचा कि तुम्हारा मतलब कार्य-समिति के कुछ सदस्यो से था। किसी व्यक्ति का इस कथन से ज्यादा बडा अपमान नही हो सकता कि जिस पक्ष की वह सार्वजनिक रूप मे हिमायत करता है उसे गुप्त रूप मे धोखा देता है और सघ-शासन मे मत्रिमडलो का आपस मे बटवारा भी कर दिया है। वह एक मनगढन्त बयान था और उससे दिल को चोट लगी।

ऐसे बयान से तुम्हारे और गाधीजी के बीच आगे कोई सहयोग होने मे कारगर बाधा उपस्थित होगई, क्योकि दूसरे लोग तो एक तरह से गाधीजी के प्रतिनिधि थे। मै उत्सुक था कि तुम दोनो मे सहयोग हो, क्योकि दूसरा विकल्प मुझे बहुत हानिकारक मालूम हुआ। इसलिए मैने तुम्हे दबाया कि इस रुकावट को साफ कर दिया जाय और गाधीजी के साथ साफ-साफ बात कर ली जाय। मैने समझा, तुम ऐसा करने के लिए सहमत थे। बाद मे जयप्रकाश और गाधीजी से यह मालूम होने पर अचरज हुआ कि तुमने तो इस विषय का जिक्र तक नही किया। मै स्वीकार करता हू कि इससे मै बहुत परेशान हुआ और इससे मैने समझ लिया कि तुम्हारे साथ काम करना कितना कठिन था।

गाधीजी ने मुझे यह भी कहा कि तुम्हारी मुलाकात से उन्होने यह खयाल बनाया कि तुम उनके सहयोग के लिए बहुत उत्सुक नही थे, हालाकि तुमने योही सहयोग उनसे मागा जरूर था। ऐसा मालूम होता था कि तुम्हारा विचार ऐसे विभिन्न व्यक्तियो की कार्य-समिति बनाने का था, जिनका तुमने इस काम के लिए पहले ही विचार कर लिया था और शायद वचन दे दिया था। अवश्य ही तुमको ऐसा करने का पूरा हक था। परन्तु इन सब बातो से सकेत मिलता था कि तुम गाधीजी और उनके गुट के सहयोग के अलावा कुछ और ही सोच रहे थे।

पजाब के चुनाव, दिल्ली के चुनाव और आध्र मे नेल्लोर के सबध में तुमने जो कार्रवाई की थी उससे मै चौक गया, कार्रवाई से इतना नही, जितना

उसके करने के ढग से। तुमने महासमिति-कार्यालय से पूछे विना या आद्य के मामले में प्रान्तीय काग्रेस-समिति से पूछे विना सीधी कार्रवाई कर ली। पजाव मे तुमने महासमिति कार्यालय की तरफ से होनेवाली जाच को वन्द करने का तार भेज दिया। दिल्ली में तुमने प्रान्तीय काग्रेस-कमेटी से पहले पूछे विना कार्रवाई की। मेरा खुद का खयाल है कि तुम्हारा दिल्ली-सबधी फैसला गलत था। लेकिन यह महत्व की वात नही है। मुझे ऐसा लगा कि तुमपर व्यक्तियो और गुटो का सीधा असर पड रहा है और किसी पदाधिकारी को जो अव्यक्तिगत और मामूली तरीका अपनाना चाहिए, उसे तुम कुचले दे रहे हो। यह ढग मुझे खतरो से भरा हुआ मालूम हुआ।

तुम कहते हो कि "ऊपर से हस्तक्षेप करने की आदत मे कोई काग्रेस-अध्यक्ष मुझे मात नही दे सकता।" मै महसूस करता हू कि मै दखल देनेवाला आदमी हू। लेकिन जहातक महासमिति के काम का सबध, है मुझे याद नही पडता कि मैने महासमिति के दफ्तर के काम मे दखल दिया हो, हालाकि मै अक्सर उसपर असर डालने की कोशिश करता था। मेरी जान-बूझकर यह नीति थी (और इस आशय के गश्ती पत्र जारी किये गए थे) कि दखल न दिया जाय और प्रान्तीय मामलो मे महासमिति-कार्यालय भी हस्तक्षेप न करे, जवतक कि अनिवार्य न होजाय।

जव ये विविध घटनाए मुझे बेचैन कर रही थी तभी गाधीजी और वल्लभभाई के नाम तुम्हारे तार आये और इनका अर्थ यह समझा गया कि तुम नही चाहते थे कि हम कार्य-समिति की बैठक करे या मामूली कामकाज भी निपटाये। तुम्हारा कहना है कि तुम्हारा मतलब कोई ऐसी मनाही नही था, लेकिन तारो का जरूर ही यह मतलव निकल सकता था। यह सभव था कि तुमसे पूछ लिया जाता कि तुम्हारा क्या मतलब था, लेकिन यह अवाछनीय प्रतीत हुआ, क्योकि इसका मतलव यह होता कि हम तुमको दबाकर कोई ऐसी चीज करना चाहते है, जो शायद तुम नही चाहते थे कि हम उस वक्त करे।

इन सब बातो से स्पष्ट होता था कि तुम अपनी ही पसद के साथियो के साथ किसी मार्ग का अनुसरण करना चाहते थे, कार्यसमिति के पुराने सदस्य भार बन गये थे और उनकी कोई खास जरूरत नही रह

गई थी। उनके लिए त्याग-पत्र देना बिल्कुल जरूरी होगया। उनका ऐसा न करना तुम्हारे प्रति, देश के प्रति और अपने प्रति अन्याय होता और लोकतत्री कार्य-प्रणाली के विपरीत होता। मै नही समझता कि वे कैसे रुक सकते थे या उनके इस्तीफे से कैसे गत्यवरोध पैदा हुआ। त्यागपत्र न देने से अवरोध उत्पन्न हो जाता, क्योकि उसके कारण तुम जो कार्रवाई मुनासिब समझते वह नही कर सकते थे।

तुमने ठीक ही बताया है कि मैंने बेवकूफी का-सा रवैया अख्तियार किया। मैंने दरअसल इस्तीफा नही दिया और फिर भी ऐसा दिखाया मानो मैंने वैसा किया हो। इसका कारण यह था कि मै अपने साथियो के सारे नजरिये से बिल्कुल असहमत था। मेरा जोरदार खयाल था कि उस परिस्थिति मे मै तुमको सहयोग नही दे सकता था। लेकिन उतना ही जोरदार मेरा खयाल यह था कि मै एक तरह दूसरो से भी अलग हो रहा हू। असल मे यह दूसरा भाव अधिक प्रबल था, क्योकि इसका अर्थ एक ऐसे अध्याय को खत्म करना था, जो लम्बा होगया था। 'नेशनल हेरल्ड' में मैंने जो लेखमाला लिखी उसका पहला लेख तुम पढोगे तो शायद तुमको कुछ-कुछ पता लगेगा कि मेरा दिमाग किस तरह काम कर रहा था।

इस्तीफे के सामान्य पत्र मे मेरे २२ फरवरीवाले बयान को शामिल करने का कोई सवाल नही था। मेरा बयान स्पष्ट ही निजी था और उसे और कुछ नही समझा जा सकता था। मुझे दूसरो के साथ त्यागपत्र मे शामिल होने को बहुत दबाया गया था। मैंने इन्कार कर दिया था। मैंने उनका त्यागपत्र तुमको भेज दिये जाने के बाद तक देखा भी नही था।

मै तुमको थोडा और समझा दू कि पिछले दो-तीन महीने मे मेरे मन मे किस बात से बहुत बडी बेचैनी रही है। मै दो बडे कारणो से तुम्हारे चुनाव मे खडे होने के खिलाफ था एक तो उस समय उसका यह अर्थ होता कि गाधीजी से सबध टूट रहा है और मै नही चाहता था कि ऐसा हो (इस बात की चर्चा करने की जरूरत नही है कि ऐसा क्यो होता। मुझे लगा कि ऐसा होगा।) दूसरे मैंने सोचा कि उससे सच्चे वामपक्ष को हानि होगी। वामपक्ष इतना शक्तिशाली नही था कि वह स्वय भार को उठा ले और जब सचमुच काग्रेस मे मुकाबला होगा तो वामपक्ष हार

जायगा और फिर उसके विरुद्ध प्रतिक्रिया होगी। मैं इसे तो सभव समझता था कि तुम पट्टाभि के खिलाफ चुनाव जीत जाओगे लेकिन मुझे बहुत सदेह था कि जिसे गाधीवाद कहते है, उसके साथ साफ लडाई में तुम काग्रेस को अपने साथ ले जा सकोगे। अगर सयोगवश तुम काग्रेस मे बहुमत प्राप्त कर लेते तब भी गाधीजी के बिना देश मे प्रबल समर्थन न मिलता और कारगर काम और इससे भी अधिक सग्राम के लिए तैयारी बहुत मुश्किल हो जाती। देश मे पहले ही इतनी अधिक फूट फैलानेवाली वृत्तिया मौजूद थी और उनपर काबू पाने के बजाय हम उन्हे बढा देते। इस सबका नतीजा यह होता कि ठीक जिस समय हमें शक्ति की आवश्यकता थी तब हम राष्ट्रीय आन्दोलन को कमजोर कर देते। तुम्हारे दुबारा चुने जाने के मेरे विरोध के दो मुख्य कारण थे। बम्बई के कुछ मित्रो ने तुमसे जो कुछ कहा वह पूरी तरह सही नही था। मैंने तो यह कहा था कि अगर तुम्हारे कुछ निश्चित वामपक्षी सिद्धात और नीतिया है तब तो तुमको दुबारा चुनाव मे खडे होने का कोई मतलब हो सकता है, क्योकि तब तो चुनाव से लोगो को विचारो और नीतियो की शिक्षा मिलती। लेकिन थोडे-बहुत व्यक्तिगत आधार पर चुनाव लडने मे यह खूबी भी नही होती। जो हो, ऊपर दिये हुए कारणो से मैंने तुम्हारा चुनाव के लिए खडा होना वाछनीय नही समझा।

मेरे २६ जनवरी और २२ फरवरी के बयान जरूर ही कुछ भिन्न है, लेकिन मै नही समझता कि उनसे नजरिये का कोई परिवर्तन प्रकट होता है। पहला बयान तुम्हारे चुनाव से पहले जारी हुआ था और मै भरसक किसीका पक्ष नही लेना चाहता था। मुझे डा० पट्टाभि के लिए अपील करने को कहा गया था। यह मैंने मजूर नही किया। इसलिए मेरा बयान जान-बूझकर हल्का कर दिया गया। बाद मे कुछ और तथ्य मेरी जानकारी में आये। मैने तुम्हारे चुनाव-सबधी बयान देखे और कई और बाते हुई, जिनका मैने ऊपर उल्लेख किया है। मैने यह भी देखा कि तुम्हारा तरह-तरह के लोगो से गहरा सबध होगया था, जो तुमपर बहुत असर डाल रहे थे। इन व्यक्तियो मे से कुछ स्वय तो वाछनीय थे, लेकिन मेरे खयाल से वे किसी वामपक्षी मत अथवा किसी सगठित मत के प्रतिनिधि नही

थे। इसीलिए पारिभाषिक राजनैतिक अर्थ मे मै उन्हे साहसी कहता हू। किसी आदमी मे या राष्ट्र मे साहस की वृत्ति होना अवश्य ही बहुत वाछनीय वस्तु है, परन्तु राजनैतिक सघर्प मे इस शब्द का एक खास अर्थ होता है। वह सबधित व्यक्ति के लिए हरगिज बेइज्जती का शब्द नही है। मैने साहसी वृत्ति को बिल्कुल पसद नही किया और उसे हमारे काम के लिए हानिकारक समझा। अस्पष्ट वामपक्षी नारो के साथ कोई स्पष्ट वामपक्षी विचारधारा अथवा सिद्धान्तो का न होना इन वर्षो मे यूरोप मे बहुत नजर आया। इससे फासिज्म का विकास हुआ है और जनता के बहुत बडे समुदाय गुमराह हुए है। भारत मे इस तरह की घटना की सभावना से मेरा मन भर गया और मुझे बेचैनी हुई। अतर्राष्ट्रीय मामलो मे तुम्हारे विचार मुझसे भिन्न थे और हमारा नाजी जर्मनी अथवा फासिस्ट इटली की निदा करना तुमको पूरी तरह पसद नही था। इससे मेरी बैचैनी और बढ गई और सारे चित्र को देखते हुए मैने उस दिशा की बिल्कुल कल्पना नही की, जिसमे तुम हमे ले जाना चाहते थे।

इस दिशा अथवा तुम्हारे विचारो के बारे मे मुझे पूरा भरोसा नही था, हालाकि सामान्य सकेतो से मुझे अशाति हुई, इसलिए मैने फरवरी के शुरू मे किसी समय तुम्हे लिखा और अनुभव भी किया कि इन मामलो की सफाई के लिए तुम कोई नोट लिखो। तुम्हारे पास ऐसा करने के लिए समय नही था और फिर तुम बीमार होगये। मेरी कठिनाइया बनी रही और मेरे चित्त को बेचैन करती रही। २२ फरवरी के मेरे बयान मे और उसके बाद भी 'नेशनल हेरल्ड' मे मेरे लेखो मे इन सब बातो की ही झलक है। यह सभावना थी कि कार्यसमिति इधर-उधर के तत्वो से बनेगी, जिनका कोई सगत दृष्टिकोण नही होगा, लेकिन जिनकी एकमात्र कडी सामान्य विरोध की होगी। यह कोई अच्छी बात नही मालूम हुई। मै नही समझ पाया कि मै उसमे कैसे शरीक हो सकता था। मुझे पुरानी कार्यसमिति के साथ भी काफी मुश्किल पेश आ चुकी थी, हालाकि मतभेदो के होते हुए भी हम एक-दूसरे को समझते थे और सालो तक साथ-साथ निभ सके थे। उस स्थिति मे वने रहने की-भी मेरी इच्छा नही थी, फिर भी छोटी-सी कार्यकारिणी मे मेरा ऐसे लोगो के साथ सबध कैसे

होता जिनके और मेरे बीच मे एक-दूसरे को समझने की कमी भी नही थी ।

एक निजी पहलू भी मै तुमको साफ-साफ बता देना चाहता हू । मै बराबर महसूस करता रहा कि तुम दुबारा चुने जाने के लिए बेहद उत्सुक थे । राजनैतिक दृष्टि से उसमे कोई बेजा बात नही थी और तुम्हे दुबारा चुने जाने की इच्छा रखने का और उसके लिए काम करने का पूरा हक था । लेकिन इससे मुझे दुख जरूर हुआ, क्योंकि मेरे खयाल से तुम्हारा इतना बडा पद था कि तुमको इस किस्म की चीज से ऊपर रहना चाहिए था । मुझे यह भी लगा कि यदि तुम दूसरी तरह से काम करते तो तुम नीतियो और गुटो पर कही अधिक प्रभाव डाल सकते थे ।

तुमने मुझे यह याद दिलाया है कि वल्लभभाई ने तुम्हारे बारे मे क्या कहा और बताया है कि मैने इसके लिए उनकी आलोचना नही की । जहातक चुनाव के समय जारी किये गए अलग-अलग बयानो का सम्बन्ध है, मुझे वे बिल्कुल पसन्द नही आये है । काश कोई भी बयान न दिया जाता ! लेकिन जहातक मुझे याद है, उनमे कोई ऐसी खास बात मुझे दिखाई नही दी, जिससे मेरा हस्तक्षेप जरूरी होता । वल्लभभाई के ये शब्द कि तुम्हारे चुनाव से देश के हित को हानि पहुचेगी, सूरत भेजे गये एक खानगी तार मे इस्तेमाल किये गए थे । मेरे खयाल से इसमे फर्क पड जाता है कि कोई बात किसी सार्वजनिक बयान मे कही जाय या किसी निजी पत्र अथवा तार मे । यह बात भी महत्वपूर्ण है कि यह सदेश तुम्हारे भाई को भेजा गया था । यह कहने मे एक तेज बात है, मगर इसमे कोई बेइज्जती करने का इरादा नही मालूम होता । यदि वल्लभभाई की पक्की राय है कि हिदुस्तान की भलाई के लिए गाधीजी का नेतृत्व आवश्यक है और तुम्हारे फिर से चुने जाने से हिदुस्तान उस नेतृत्व से वचित हो सकता है तो वह जरूर ऐसा सोच और कह सकते है । ठीक इसी तरह हम गाधीजी का कितना ही आदर करे तो भी हम इस फैसले पर पहुच सकते है कि गाधीजी का नेतृत्व देश के लिए खतरनाक और हानिकारक है ।

मैने तुमको लिखा था कि तुम्हारे दुबारा चुनाव से कुछ हानि और

कुछ लाभ हुआ है। मेरी अब भी वही राय है, हालाकि लाभ से हानि अधिक हो सकती है। हानि इस अर्थ मे कि इससे हमारे सगठन मे फूट पडती है। लाभ यह हुआ कि इससे हमारे पुराने नेताओ मे से कुछ लोगो का आत्मसतोप हिल गया। मेरे मन मे कोई शका नही कि तुम्हारे पक्ष मे राय बहुत-कुछ इस आत्मसतोष के विरुद्ध थी और किसी हद तक उन तरीको के खिलाफ थी, जो काम मे लिये गए थे। मैंने यह बात गाधीजी और दूसरे लोगो को बार-बार और जोर के साथ बताई है और इसपर ध्यान देने की प्रार्थना की है। अध्यक्ष के चुनाव के मतदान के रूप में जो नाराजी जाहिर की गई उसमे सार था।

तुमने मुझे याद दिलाया है कि जहा एक तरफ मै ऊपर से तुम्हारे दखल देने पर आपत्ति करता हू वहा मैंने ४ फरवरी को तुम्हे लिखा था कि अध्यक्ष के नाते तुम बहुत कम अडते हो और निष्क्रिय रहते हो। यह सही है। मैंने जिस हस्तक्षेप का जिक्र किया वह तुम्हारे दुबारा चुनाव के ठीक पहले और ज्यादातर बाद मे हुआ। इसका ताल्लुक पहले के काल से नही था। जब मैंने तुम्हारे अडने की बात कही तो मेरा मतलब पिछले साल कार्यसमिति मे तुम्हारे रवैये से था। मैंने यह आशा रखी थी कि तुम वहा अधिक जोरदार नेतृत्व करोगे, हालाकि मै फूट नही चाहता था। मै यह भी नही चाहता था कि अध्यक्ष की हैसियत से तुम प्रान्तीय मामलो मे दखल दो। तुमने इस बात का जिक्र किया है कि कार्य-समिति के कुछ सदस्य तुम्हारी अनुपस्थिति मे इकट्ठे हुए और तुम्हारे पीठ-पीछे अध्यक्ष-पद के लिए डा पट्टाभि को खडा करने का निश्चय किया। मेरा खयाल है कि इस बारे मे वल्लभभाई के बयान से कुछ गलतफहमी पैदा होगई है। जहातक मै जानता हू, ऐसी कोई बैठक नही हुई। बारडोली मे हुआ यह था कि मौलाना आजाद पर गाधीजी और मैंने तथा दूसरो ने भी दबाव डाला कि वह खडा होना मजूर कर ले। उनकी इच्छा नही थी। जिस दिन मै बारडोली से रवाना हो रहा था (तुम्हारे रवाना होने के दूसरे दिन), उस दिन मै गाधीजी से और दूसरे लोगो से विदा लेने गया। हममे से कुछ गाधीजी की कुटिया के बरामदे मे खडे थे। मै भूल रहा हू कि मौलाना और वल्लभभाई के सिवा वहा और कौन था। मौलाना ने फिर कहा कि उन्हे यह जिम्मे-

दारी उठाने मे सकोच है। इसपर वल्लभभाई ने कहा कि अन्त में मौलाना इन्कार कर दे तो डा पट्टाभि को राजी होने के लिए कहना चाहिए। मुझे डा पट्टाभि का नाम इसके लिए पसन्द नही था, इसलिए इनका खडन किये वगैर मैने फिर कहा कि मौलाना को राजी करना ही चाहिए। थोडी देर वाद मै वारडोली से चला आया। इलाहाबाद पहुचने पर मुझे तार से यह सूचना मिली कि मौलानासाहब सहमत होगये है। मै सीधा अल्मोडा चला गया और अध्यक्ष के चुनाव से पहले दिन तक वहा रहा।

रही वात 'लाछनोवाले' प्रस्ताव की, सो हकीकत यह है। इस मामले की सफाई करने के लिए तुम्हे एक से ज्यादा वार दवाने के अलावा मेरी इस मामले मे अधिक दिलचस्पी नही हुई। मै समझता था कि तुम्हारी तरफ से सफाई हुए विना गाधीजी और तुम मिलकर काम नही कर सकते। गाधीजी या राजेन्द्रवावू या सरदार पटेल का इस वारे में क्या विचार था यह तो वे ही कह सकते है। उनका मुझपर निश्चित असर यह हुआ कि वे इसे वडा महत्त्व देते थे। जव हम त्रिपुरी पहुचे तव मुझे फिर ऐसा ही कहा गया। मेरी अपनी निश्चित राय तो यह थी कि मामले को तुम या राजेन्द्रवावू या दोनो सक्षिप्त वक्तव्यो द्वारा महासमिति मे रख दो और इसके वारे मे कोई प्रस्ताव न लाया जाय। और लोग इससे सहमत नही हुए। एक सुझाव यह दिया गया कि महासमिति के लिए प्रस्ताव का मसविदा तैयार किया जाय। मेरा खयाल है कि काग्रेस से वचने का विचार नही था, वल्कि विषय-समिति शुरू होने से पहले वातावरण साफ करने का था। सदा की भाति प्रस्ताव का मसविदा वनाने को मुझसे कहा गया। मैने कहा कि मै सहमत नही हू, मगर तुम्हारे दृष्टिकोण को यथासभव व्यक्त करने की चेष्टा करूगा। मैने महासमिति के लिए प्रस्ताव का एक सक्षिप्त मसविदा बना दिया, जिसमे पुरानी कार्य-समिति और गाधीजी के नेतृत्व और नीति के प्रति विश्वास प्रकट किया गया और यह भी कहा गया कि उस नीति का कोई भग नही होना चाहिए। उसमे न तो 'लाच्छनो' का जिक्र था और न गाधीजी की इच्छानुसार कार्यसमिति वनाने का। यह प्रस्ताव पसन्द नही किया गया और बाद मे शायद और लोगो से सलाह करके राजेन्द्रबाबू ने एक लम्बा और सशोधित प्रस्ताव पेश किया (गोविन्द

वल्लभ पन्त तबतक नही पहुचे थे)। मुझे यह प्रस्ताव पसन्द नही आया और मैने ऐसा कहा। मैने कहा कि मेरे ख़याल से अपने-आपमे लाछनोवाली धारा, जिस रूप मे वह रखी गई थी, आपत्तिजनक नही थी, परन्तु फिर भी मुझे वह अवाछनीय मालूम हुई और यह कि उसपर रोष होगा, खास तौर पर चूकि तुम बीमार थे। मुझे बताया गया कि प्रस्ताव मे इस मामले का कुछ-न-कुछ जिक्र करना बहुत बडे महत्व की बात थी, क्योकि जिन लोगो के सम्मान पर कलक लगाया गया था उनकी स्थिति की कुछ ऐसी सफाई किये बिना उनके लिए अपना सहयोग देना असभव था। उनके काम करने के लिए यह भी बहुत जरूरी था और गाधीजी की नीति पर चलना भी। यह भी कहा गया कि उल्लेख अधिक-से-अधिक नरम और अव्यक्तिगत बना दिया गया है। इससे आगे वे नही जा सकते थे।

इसके बाद मुझे कुछ कहना नही था। मैने स्पष्ट कर दिया कि कुछ बातो मे मै प्रस्ताव को दुर्भाग्यपूर्ण मानता था। लेकिन चूकि यह उनके लिए सम्मान का विषय था, इसलिए मेरा उसके साथ और अधिक वास्ता नही रहा। मै उसकी चर्चा मे भाग नही लूगा।

उसके बाद मुझे मालूम नही क्या हुआ। महासमिति की बैठक मे ही मैने देखा कि गोविन्दवल्लभ पन्त उसे पेश करनेवाले थे। तुम वहा मौजूद थे। बाद मे जब प्रस्ताव विषय-समिति को दिया गया तब मै प्रस्ताव के कुछ समर्थको के पास गया और फिर सुझाव दिया कि कुछ परिवर्तन कर दिये जाय। मैने बताया कि मूल प्रस्ताव महासमिति के लिए था, ताकि इस घटना और विवाद को समाप्त किया जाय, परन्तु अब चूकि वह काग्रेस मे जा रहा था, इसलिए उसपर दूसरी दृष्टि से विचार करना चाहिए। मुझे फिर कहा गया कि यह इज्जत का सवाल था और जबतक उसकी सफाई नही होती तबतक वह सहयोग की दृष्टि से कैसे सोच सकते थे। तुमको याद होगा कि काग्रेस से पहले उन्होने तुमसे कहा था कि वह तुम्हारे साथ सहयोग नही कर सकेगे। वह इस प्रस्ताव को एक ऐसा जरिया समझते थे, जिसके कारण सहयोग का प्रयत्न हो सके। इसके अलावा कोई जरिया नही था।

खुले अधिवेशन के पहले दिन जब तुम बहुत बीमार थे, मैने प्रस्ताव

को बदलवाने की एक और जोरदार कोशिश की। मुझे सफलता नही मिली, हालाकि श्री अणे के महासमिति मे भेजने के प्रस्ताव को मजूर करने में सब सहमत थे। श्री अणे का यह ख्याल मालूम होता था और उनकी बात का हम सबपर यह असर पड़ा कि उनका प्रस्ताव बगाल के बहुत-से भाइयो को पसन्द था। हमपर यह भी असर पड़ा (वह गलत हो सकता है) कि तुम्हे भी उनका प्रस्ताव पसन्द था। बाद मे जो कुछ हुआ वह तुमको मालूम है।

दूसरे दिन जब काग्रेस के अधिवेशन मे, जो विषय-समिति के मडप में हुआ था, गोविन्दवल्लभ पन्त प्रस्ताव पेश कर रहे थे तब सुरेश मजूमदार मेरे पास आये। उन्होने सुझाया कि प्रस्ताव महासमिति को भेज दिया जाय अर्थात् उन्होने श्री अणे के प्रस्ताव को फिर से ताजा किया। उन्होने कहा कि पिछली रात कुछ गलतफहमी होगई थी और अब यह प्रस्ताव फौरन मान लिया जायगा। मैने उन्हे बताया कि खास तौर पर इस स्थिति में जब पन्तजी सचमुच मामले को पेश कर रहे थे, मै लाचार था। मै पहले कई तरह से भरसक प्रयत्न कर चुका था और अब सबधित पक्षो के पास जाना बेहतर होगा। मुझे मालूम नही, बाद मे उन्होने क्या किया।

रही बात यह कि त्रिपुरी मे और प्रतिनिधियो के शिविर में पर्दे के पीछे क्या-क्या हो रहा था, सो इस बारे मे शायद तुम्हारी जानकारी मुझसे अधिक है। मै तो अपने तम्बू से बाहर भी नही निकला, सिवा विशेष समारोहो के लिए और मेरे पास मिलनेवाले भी बहुत ही थोडे आये। कुछ मै मिस्री प्रतिनिधियो के साथ भी लगा रहा।

तुमने मेरे 'मवक्किलो' का जिक्र किया है। मुझे डर है कि ये मवक्किल मेरी वकालत से बहुत खुश नही है और मै उनका अप्रिय बनने में सफल होगया हू। कितनी बहादुरी की बात है कि लगभग हरेक को नाखुश कर दिया जाय!

यह 'लाच्छनो' वाला प्रस्ताव अवैधानिक था या अनियमित, यह फैसला करना तुम्हारा काम है। इस सवाल पर मै अपनी राय दू, इसमे बहुत सार नही है। मुझे कुदरती तौर पर दिलचस्पी है कि काग्रेस का काम चलता रहे और अवरोध की भावना, जो आज हममे है, दूर हो जाय। मुझे आश्चर्य है कि तुम ऐसा सोचते हो कि मैने तुम्हारे विरुद्ध सार्वजनिक आन्दोलन छेड

दिया है। गाधीजी के साथ मेरी बात होने के बाद मुझे बडी चिन्ता हुई और मैंने स्थिति पर देर तक विचार किया। मेरा दुर्भाग्य है कि अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओ का मुझपर जितना असर होना चाहिए, उससे अधिक होता है। यूरोप मे बहुत गभीर सकट पैदा होगया था, जिसका परिणाम युद्ध हो सकता था। मुझे लगा कि हमे निष्क्रिय होकर घटनाओ का इतजार नही करना चाहिए। गाधीजी के नाम शरत् के तार से पता चला कि वह उनसे मिलने नही आ रहे थे। इस प्रकार जब घटनाए तेजी से हो रही थी तब भी कुछ नही किया जा रहा था। इसपर मैंने वह तार भेजने का निश्चय किया। मैंने वह तार बाद मे गाधीजी को तथा और एक-दो को बताया। मैंने किसी अखबारवाले को न तो दिया, न दिखाया। सच तो यह है कि मैंने उस समय गाधीजी के साथ एक-दो व्यक्तियो के अलावा किसीसे उसका जिक्र भी नही किया। अब भी मैंने औरो को नही बताया है। शायद किसीको दूसरो से जानकारी मिली और उसने अखबारवालो को दे दी।

क्या तुम्हारा खयाल नही है कि त्रिपुरी से पहले कार्यसमिति के बारह सदस्यो के त्यागपत्र और काग्रेस के बाद की स्थिति की तुलना सही नहीं है? उनके इस्तीफो के कारण कोई अवरोध नही था या नही होना चाहिए था। अवरोध हो जाता यदि वे त्यागपत्र न देकर काम करने का आग्रह करते। उनके त्यागपत्रो पर नाराजी जाहिर न करके, मेरे खयाल से, व्यक्तिगत और सार्वजनिक दोनो कारणो से उनके लिए और कोई रास्ता खुला नही था।

जब मैंने दिल्ली से तुमको तार भेजा तो मै अच्छी तरह जानता था कि तुम वहा नही आ सकते। मै चाहता था कि तुम यह सुझाव दो कि गाधीजी तुमसे मिलने धनबाद चले जाय। मेरा खयाल है कि तुम उन्हे बुलाते तो वह चले जाते। यह स्वाभाविक था कि बिना बुलाये जाने मे उन्हे सकोच हुआ। त्रिपुरी का प्रस्ताव विहित था अथवा अविहित, प्रारम्भ तुम्हारे हाथ मे था। जबतक उन्हे यह ज्ञान न हो कि तुमपर क्या प्रतिक्रिया होगी, वह कोई कदम नही उठा सकते थे। शायद तुमको ऐसा लगा कि वह धनबाद न आ सके। जब तुम्हारे सेक्रेटरी ने मुझे यहा टेलीफोन किया तब गाधीजी दिल्ली जाने के लिए सचमुच स्टेशन पर जा रहे थे। अगर निकट भविष्य

में खबर मिलना कठिन था तो भी मेरे ख्याल मे तुम एक-दूसरे के साथ पत्र-व्यवहार करके जमीन साफ कर सकते थे। तुम्हारा यह कहना मेरे प्रति बडा अन्याय है कि मैंने वह तार दिल्ली मे तुमको परेशान करने या तुम्हारे विरुद्ध किसी आन्दोलन का अगुआ बनने के लिए भेजा।

मै यह भी कह दू कि जहातक मेरा सबध है, मुझे गाधीजी का यह विचार बिलकुल पसन्द नही आया कि वह ग्वायर के निर्णय की प्रतीक्षा मे दिल्ली ठहरे रहे। मुझे उनका उपवास या ग्वायर के पास मामला भेजना भी अच्छा नही लगा। समझौते की जिन शर्तो के अनुसार गाधीजी का उपवास खत्म हुआ उनका मैने बहुत विचार नही किया। मैने उनका उपवास समाप्त होने पर प्रसन्नता प्रकट कर दी और बस।

यह पत्र बहुत ही लम्बा होगया और मैने उसे लगभग एक लगातार बैठक मे तुम्हारा पत्र पाने के तुरन्त बाद लिखा है। फिर भी और कई ऐसी बाते है, जिनका तुमने उल्लेख किया है और जिनके बारे में मै कुछ कह सकता था। तुमने मेरी जो कमजोरिया बताई है उनकी चर्चा करना मेरे-लिए जरूरी नही है। मै उन्हे स्वीकार करता हू और मुझे उनका दु ख है। तुम्हारा यह कहना ठीक है कि अध्यक्ष के रूप मे मै अक्सर एक सचिव अथवा बडे क्लर्क की तरह काम करता था। मुझे अपना सचिव और क्लर्क आप ही बनने की आदत बहुत अर्से से है और मुझे डर है कि मै इस तरह से दूसरो के अधिकार का अतिक्रमण करता हू। यह भी सच है कि मेरे कारण काग्रेस के प्रस्ताव लम्बे, बातूनी और निबधो जैसे हो जाते है। मेरा खयाल है कि कार्यसमिति मे मै बहुत ज्यादा बोलता था और हमेशा जैसा चाहिए वैसा बर्ताव नही करता था।

तुम्हारे वामपथी और दक्षिणपथी शब्द-प्रयोग पर मैने आपत्ति की, क्योकि मेरे खयाल से तुम उन्हे अस्पष्ट और ढीले-ढाले रूप मे इस्तेमाल कर रहे थे। अवश्य ही वामपथी और दक्षिणपथी जैसी चीज तो है। वह काग्रेस मे भी मौजूद है और देश मे भी। लेकिन यदि ये शब्द ठीक तौर पर काम मे न लिये जाय तो उनसे गडबड पैदा हो सकती है और होती है।

मै नही सोचता कि मैने कभी यह कहा कि राजकोट और जयपुर दूसरे विषयो को आच्छादित कर लेते है। शायद मैने यह कहा था कि राज-

कोट अर्थात् गाधीजी का उपवास और उसके विविध गूढ़ार्थ कई ढग से वातावरण पर छाये रहे।

बबई के मालिक-मजदूर के झगडो-सबधी बिल के बारे मे यह बात है कि मै उसके कानून बन जाने के बाद हिन्दुस्तान पहुचा। बबई मे गोली भी उससे पहले चल चुकी थी। इसका उल्लेख मै एक तथ्य के रूप मे ही कर रहा हू, न कि बहाने के रूप मे।

उत्तर प्रदेश काग्रेस मे हमारे यहा एक नियम है कि प्रातीय काग्रेस कमेटी से लगाकर गाव तक कोई आदमी किसी कमेटी का लगातार दो वर्ष तक अध्यक्ष नही हो सकता।

तुमने विविध प्रान्तो से प्रतिनिधियो को त्रिपुरी ले जाने में भ्रष्टाचार का हवाला दिया है। जहातक मेरे अपने प्रान्त का सबध है, मेरा विश्वास है कि इस किस्म की कोई चीज की गई थी, हालाकि मुझे पक्की तरह से उसका पता नही है। शायद दूसरी जगह भी ऐसा किया गया हो। मेरा सुझाव है कि सभी प्रान्तो मे जाच करा ली जाय। इससे हमारे सगठन को बल मिलेगा। तुम मुझसे पंतजी के प्रस्ताव का मेरा अर्थ पूछते हो। मै नही समझता कि वह अविश्वास का प्रस्ताव था, लेकिन वह ऐसा अवश्य था, जिससे तुम्हारे निर्णय मे पूर्ण विश्वास के अभाव का सकेत मिलता था। रचनात्मक रूप मे वह गाधीजी के प्रति विश्वास का वोट है।

मै समाजवादी हू अथवा व्यक्तिवादी ? क्या ये दोनो शब्द परस्पर विरोधी है ? क्या हम सब ऐसे सम्पूर्ण मानव है कि हम अपनी व्याख्या एक-दो शब्दो मे ठीक-ठीक कर सकते है ? मै मानता हू कि स्वभाव और शिक्षा-दीक्षा से मै व्यक्तिवादी हू और बुद्धि से एक समाजवादी हू, फिर चाहे इसका कुछ भी अर्थ हो। मै आशा करता हू कि समाजवाद व्यक्तित्व का हनन अथवा दमन नही करता। असल में इसके प्रति मेरा आकर्षण इसलिए है कि वह असख्य व्यक्तियो को आर्थिक और सास्कृतिक गुलामी से मुक्त कर देगा। परन्तु चर्चा के लिए मेरा विषय रोचक नही है, खास तौर पर एक अत्यन्त लम्बे पत्र के ठेठ अन्त मे। इसे यही छोड़ दो कि मै एक असतोषजनक मानव-प्राणी हू, जिसको अपने-आपसे और ससार से असतोष है और जिस छोटी-सी दुनिया मे वह रहता है, वह भी उसे बहुत पसन्द नही करती।

राष्ट्रीय अथवा अतर्राष्ट्रीय मामलों के बारे में अपने विचारों पर तडके ही लिखने का साहस नही होता। आम तौर पर मैं उनके बारे में चुप नही रहता। तुमने देखा है कि मैं बोलता बहुत हू और लिखता और भी अधिक हू। अभी इसे यही छोड देता हू। परन्तु यह जरूर कहूगा कि जहा मैं अक्सर हारे हुए पक्षो की हिमायत और जर्मनी तथा इटली जैसे देशो की निन्दा करता हू, वहा मैं नही समझता कि मैंने ब्रिटिश और फ्रेंच साम्राज्यवाद को कभी सदाचार का प्रमाणपत्र दिया है।

एक-दो दिन हुए, मैंने तुम्हे एक लेखमाला के कुछ लेख भेजे थे, जो मैंने त्रिपुरी से पहले 'नेशनल हेरल्ड' को दिये थे। उनमें से एक लेख रह गया था। अब पूरे लेख अलग से भेज रहा हू। 'फ्री प्रेस जर्नल' या और किसी पत्र के लिए हाल मे मैंने कोई लेख नही लिखा।

सस्नेह तुम्हारा,
जवाहरलाल

श्री सुभाषचन्द्र बोस,
कांग्रेस अध्यक्ष,
डाकघर जीलगोरा,
जिला मानभूम

२५९ शरत्चन्द्र बोस की ओर से

कलकत्ता
४ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपके २४ तारीख के लम्बे पत्र के लिए अनेक धन्यवाद। हालांकि गाधीजी को २१ तारीख को भेजे मेरे पत्र की लगभग हर बात से आप असहमत है, फिर भी आपके पत्र को पढकर मुझे एक तरह से खुशी हुई, क्योकि उसमे दूसरे व्यक्ति का दृष्टि-बिंदु मिला। उसके जवाब मे देरी होने का मुझे बहुत दु:ख है। देरी की वजह मेरी खराब तदुरुस्ती थी, जो दुर्भाग्य से अब भी वैसी ही चल रही है।

आपका यह कहना बिल्कुल सही है कि मेरे पत्र मे नीति और कार्यक्रमो की नहीं, निजी प्रश्नो की चर्चा है। लेकिन ऐसा जान-बूझकर ही किया गया है। ऐसी बात भी नही कि मैं सिद्धान्तो और व्यक्तियो के बीच

के अतर और उनके सापेक्ष महत्व को नही जानता। सच तो यह है कि अगर मेरे लिए सभव होता तो आपकी भाति मैं भी सिद्धान्तो और कार्य-क्रमो के स्तर पर ही चर्चा करना पसद करता, लेकिन दुर्भाग्य से राज-नीति मे हम हमेशा कोरे सिद्धान्तो पर ही जीवित नही रह सकते। वर्त्त-मान विवाद मे तो केवल सिद्धान्तो और कार्यक्रमो तक अपने-आपको सीमित रखना और भी कठिन है, क्योकि अध्यक्ष के चुनाव का शुरू से ही, यदि पूरी तरह नही तो बहुत-कुछ, वैयक्तिक रूप रहा है।

आप खुद कहते है कि मेरे उठाने के पहले से ही वैयक्तिक सवाल मौजूद था और त्रिपुरी मे इसने दूसरे मुद्दो के विचार पर भी अपना रग चढा दिया। इसमे मैं आपसे पूरी तरह सहमत हू। असल मे, मैं तो यह भी कहूगा कि दूसरे सब मुद्दे प्राय भुला दिये गए थे। इसीलिए मैने वैय-क्तिक प्रश्नो को खोलकर रख दिया और महात्माजी से अनुरोध किया कि वह लीक मे से हमे बाहर कर दें। सिद्धान्तो आदि को लेकर व्यर्थ बात करने से कोई लाभ नही था, जबकि असली रोडे तो व्यक्तिगत विरोध और द्वेष है—वह विद्वेप, जो सुभाष के किसी कार्य से या उनके सोचने के ढग से पैदा नही हुआ, बल्कि पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो के रुख और कामो से उपजा है।

इससे मुझे व्यक्तिगत मतभेदो की शुरुआत के आपके विवरण मे एक बहुत गभीर छूट का पता चला है। माना जाता है कि अपने चद पुराने साथियो के बारे मे सुभाष ने कुछ कहा। आपकी धारणा है कि यह मत-भेद उसी बात से आरभ हुआ। यह सही नही है, क्योकि आपके विवरण मे शुरुआत की और उस घटना के सबसे महत्वपूर्ण भाग की उपेक्षा है। गलतफहमी के इस अध्याय का प्रारम्भ बारडोली मे हुआ, जहा एक खास दल अगले साल के काग्रेस के अध्यक्ष के सवाल को तय करने के लिए इकट्ठा हुआ और अध्यक्ष और कार्य-समिति के कुछ दूसरे सदस्यो की बिना जानकारी के और उनके पीठ-पीछे उसने कुछ निश्चय कर लिये और कुछ व्यवस्थाए भी कर डाली। ये विचित्र और गुप्त कार्यवाहिया मेरी समझ से एकदम परे है। मुझे ताज्जुब है कि क्या आपको उनमे साथियो के बीच का वह विश्वास और वह सद्भाव दिखाई देता है,

जिसको आप कहते है कि आप बहुत महत्व देते है ? क्या आप ऐसे मामले मे अध्यक्ष को विश्वास मे लेने की अनिच्छा को उचित ठहरा सकते है, जिसका काग्रेस और उसके अध्यक्ष दोनो के साथ अत्यन्त गहरा सबध आता है और जिसपर अध्यक्ष को अपनी बात कहने का अधिकार था ? हा, यह बात अलग है कि यह औचित्य अध्यक्ष के प्रति महज व्यक्तिगत विद्वेप से अथवा उसके सामने दिल खोलकर बात कहने की अनिच्छा से उत्पन्न हुआ हो।

जहातक मुझे पता है, सुभाप ने अपनी तरफ से ऐसे व्यवहार के लिए कोई अवसर नही दिया। उसने अपने पूरे कार्य-काल मे एक ओर गाधीजी को और दूसरी ओर कार्य-समिति के अपने साथियो को भी पूरा-पूरा सहयोग दिया। कार्य-समिति की बारडोलीवाली बैठक की तारीख तक उसके और उसके साथियो के बीच किसी भी प्रकार की गलतफहमी की छाया तक नही थी। चुनाव के बाद भी गाधीजी को पूरे दिल से सहयोग देने के अपने इरादे मे वह कभी कच्चा नही पडा। जब हम सब बारडोली मे थे, उस समय उसके साथियो ने अध्यक्ष के चुनाव के प्रश्न को उसके सामने क्यो नही रक्खा और इसपर सागोपाग विचार क्यो नहीं किया ? त्रिपुरी मे पहली बार मैने सुना कि सरदार को और कुछ दूसरे लोगो को भी पिछले सितम्बर मे महासमिति की दिल्लीवाली बैठक के सुभाष द्वारा सचालन के सबध मे शिकायत रही, जबकि उसने समाजवादी दल के कुछ सदस्यो को नागरिक स्वाधीनता के प्रस्ताव पर विस्तार से चर्चा करने की अनुमति दी। उनका यह भी कहना था कि इससे सुभाप में उनका विश्वास डिग गया। दिल्ली की बैठक के बाद जब हम वर्धा और बारडोली मे मिले तो इस शिकायत का इशारा तक भी नही किया गया।

वास्तव में अगले वर्प के लिए अध्यक्ष के चुनाव के सबध मे गुप्त रूप से बारडोली मे हुए विचार-विमर्श और लोगो मे खुलेपन की कमी के बारे मे मै जितना सोचता हू उतना मुझे लगता है, मानो एक षड्यन्त्रकारी दल ने कोई साजिश की है, जो चाहता है कि उसे शाहशाह बनानेवाला समझा जाय—उसके हाथ मे सारी सक्रिय शक्ति रहे—और जो काग्रेस को अपनी इच्छाओ के स्वर मे बुलवाना चाहता है।

आपके सामने मै स्पष्ट रूप से स्वीकार करूगा कि साथियो के रूप मे काम करने और टीम बनाने की दृष्टि से पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो मे लगभग पूरी तरह से विश्वास खो चुका हू । ऐसा मैने इच्छापूर्वक अथवा सहज भाव से नही किया । मेरे इन पुराने साथियो ने स्वय एक-एक कदम करके मुझे इस निराशा तक पहुचाया है । इस समाचार ने कि ये लोग बारडोली मे इकट्ठे हुए और इन्होने अध्यक्ष के पीठ-पीछे अध्यक्षता के बारे मे निर्णय कर लिया, मुझे गहरी चोट पहुचाई और इनकी सद्-भावना और वफादारी मे मेरे विश्वास को, जो कि उस समय तक अटल था, हिला दिया । फिर अध्यक्ष के चुनाव के बारे मे बयान और पत्र-व्यवहार निकला, परन्तु त्रिपुरी मे मैने जो कुछ देखा और मुझे अनुभव कराया गया उसके मुकाबले मे ये चीजे बडी छोटी थी । वहापर मैने जो अनुदारता और तगदिली देखी, जो कुछ मामलो मे कपट और द्वेष की हद तक पहुच गई थी, उससे मै दग रह गया ।

मैने चद लोगो के बारे मे जो बाते आपको बताई उन्हे वैसा मान लेना आपको मुश्किल लगे तो मुझे अचरज नही होगा । दूसरो के बारे मे ऐसी बातो पर विश्वास करना मनुष्य पसद नही करता, साथियो के बारे मे तो और भी नही । फिर आपका जैसा स्वभाव और शिक्षण है उसे देखते हुए आपके लिए यह और भी मुश्किल होगा कि आप जिन व्यक्तियो के साथ जुडे हुए है, उनके बारे मे बुरा विचार रक्खे । क्या विश्वास करने की इस असमर्थता की मिसाल हमे ससार मे नही मिलती कि मौजूदा ब्रिटिश सरकार के सदस्यो के बीच इटन और हैरो मे आचार के स्तरो और मूल्यो के जो तरीके व्यवहार मे आते है, दुनिया मे उनसे जुदा तरीके भी है ? उनका विश्वास है कि हिटलर और मुसोलिनी सबसे अच्छे है और उन्हे तब गहरा धक्का लगता है जब उन्हे पता चलता है कि ये तानाशाह क्रिकेट, स्कूल के दिनो के पुराने सबध, आदि की कद्र नही करते है । साथ-ही-साथ आप व्यक्तिवादी है । जैसाकि आप स्वय कहते है, आप किसी दल या किसी दूसरे आदमी तक की मदद के विना अकेले ही काम कर सकते है । जिस प्रकार की राजनीति मे आपको रुचि नही है, उसकी तरफ से आप इस तरह अपना मुह फेर सकते है, मानो वह है ही नही । परन्तु हर आदमी

इतना भाग्यशाली नही होता कि वह राजनीति की चीजो को नजरदाज कर सके। स्वभावत वे वहा की गन्दगी और वदवू दोनो से घवडा उठते है और घवराहट मे उनकी जवान से ऐसी भाषा निकल पडती है, जिसे उन लोगो के लिए समझना मुश्किल होता है, जिन्होने जिन्दगी के गदे पहलू को न देखने का निश्चय कर लिया है।

मैने जो आरोप लगाये है, उनमे कुछ तो मेरे स्वय के अन्वेषण द्वारा प्रमाणित होते है और कुछ ऐसे लोगो की साक्षी द्वारा, जिनके कथनो पर मेरा पूरा विश्वास है। मैने सिर्फ सुनी-सुनाई वात या अफवाह के आधार पर कुछ नही कहा है। अगर मै वैसा करता तो इन इलजामो की फेहरिस्त और अधिक लम्वी हो जाती या हो सकती। अगर मौका आया तो मै अपने आरोपो के समर्थन मे सारी सामग्री को उन व्यक्तियो के सामने अवश्य ही रख दूगा, जिनका वास्ता सचाई का पता लगाने से रहता है। परन्तु सामान्य तौर पर मै कह सकता हू कि सुभाष के पुराने साथियो का रुख इतना खुला और साफ था कि यदि कानूनी कार्रवाई के लिए जिस प्रकार के सवूतो की आवश्यकता होती है, उनकी जरूरत यहा भी समझी जाय तो मुझे आश्चर्य ही होगा। अगर मेरे इलजामो के वारे मे सचाई का पता लगाने मे आपकी रुचि हो—वास्तविक, न कि कानूनी सचाई— तो आपको अलग-अलग क्षेत्रो मे पूछताछ करनी पडेगी और आप अपने-आपको सतुष्ट कर सकेगे कि हर चीज, जो मैने लिखी है, तथ्य पर आधारित है। उनकी ओर से हाल ही मे जो इन्कारी आई है, उसके होते हुए भी, मै यही कहता हू। त्रिपुरी मे उन्होने जो पार्ट अदा किया, उससे मुझे जितना आश्चर्य हुआ उससे ज्यादा आश्चर्य मुझे वास्तव मे उनकी इस इन्कारी से हुआ है। अव मै साफ तौर से समझता हू कि काग्रेस के उच्च क्षेत्रो मे 'सत्य और अहिसा' का क्या अर्थ है।

मुझे डर है कि काग्रेस के मत्रियो के बारे मे मैने जो टिप्पणी की, उसको आप ठीक तरह से नही समझ पाये। उनके काग्रेस की कार्यवाहियो मे हिस्सा लेने के बारे मे मुझे कोई ऐतराज नही है, परन्तु आप आदमी को पूरी तरह पद से पृथक नही कर सकते, और काग्रेस के काम मे मत्रियो की मौजूदगी तथा उनके सक्रिय भाग लेने के फलितार्थो के प्रति हमे जागरूक रहना पडता

है, खास तौर पर इस प्रकार के विवाद मे, जो सुभाष के चुनाव पर उठाया गया था। प्रान्तीय सरकारो के सदस्यो के रूप मे उनके पास बडी ताकत और साधन है, जिनमे दूसरो पर अनुग्रह करना भी शामिल है। गैर-सरकारी काग्रेसी सदस्यो के पास इस शक्ति और इन साधनो का सतुलन करने के लिए कोई चीज नही है। व्यावहारिक दृष्टि से मत्रियो के मुकाबले काग्रेस के गैर-सरकारी सदस्य निश्चित रूप से अलाभ की स्थिति मे है, क्योकि मत्रियो का सरकारी असर तो पडेगा ही, चाहे वे स्वय इसका उपयोग न भी करना चाहे, हालाकि उनसे ऐसी अपेक्षा रखना कि वे उपयोग नही करना चाहेगे, जरूरत से ज्यादा होगा। इसके साथ ही अगर वे गतिहीन हो जाय और वर्तमान व्यवस्था को बनाये रखने मे ही रुचि रक्खे तो उनका असर और उनकी आवाज काग्रेस की गतिशीलता मे निश्चय ही बाधक होगी। पद-ग्रहणवाला प्रस्ताव मजूर होने के बाद से प्रान्तो मे और काग्रेस के सगठन मे जो परिवर्तन हुए है, उनसे सम्पर्क रखनेवाला हर व्यक्ति जानता है कि यह एक खतरा पैदा हो गया है। होनेवाली चीज की ओर से आखे मूद लेने मे कोई फायदा नही।

इसके अतिरिक्त आपको यह याद रखना है कि त्रिपुरी मे मत्रियो ने अपने-आपको विषय-समिति और खुले अधिवेशन मे वाद-विवाद मे हिस्सा लेने तक ही सीमित नही रखा, उन्होने सक्रिय होकर और डटकर प्रचार किया, और इस उद्देश्य से वे प्रतिनिधियो के कैपो मे भी चक्कर लगाते रहे। वैधानिक दृष्टि से देखे तो उनके आचरण का अर्थ यही था। अपने-अपने प्रातो मे सुभाष के खिलाफ मत्री लगातार प्रचार करते रहे। इसके बावजूद जब सुभाष और पुरानी कार्य-समिति के कुछ सदस्यो के बीच चुनाव का मसला आया तब प्रातीय काग्रेस द्वारा चुने गये प्रतिनिधियो ने सुभाष के पक्ष मे ही घोषणा की। मत्री इस फैसले को अतिम फैसला स्वीकार करने को तैयार नही थे और उसे पलटने के लिए उन्होने प्रयत्न किया। उन्हे भय था कि अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम का मतलब होगा ससदीय कार्यक्रम मे परिवर्तन। अततोगत्वा वे सफल हो गये। अब सवाल यह है मतदाताओ के निर्णय को वफादारी के साथ स्वीकार कर लेने के उनके रास्ते मे क्या रुकावट थी? जाहिरा तौर पर यह स्पष्ट रुकावट पुरानी

कार्य-समिति के सदस्यो के प्रति उनकी वफादारी थी। ऐसी दशा मे उन खास लोगो का मामला उठा, जिन्होने एक स्वतत्र चुनाव के निर्णय को नही माना, वल्कि उल्टे उन्होने उसे रद्द करने की कोशिश की और अत मे ऐसा करने मे वे कामयाव हो गये। मै नही सोचता कि ऐसा हो सकता था, अगर सवधित व्यक्तियो के पीछे प्रातीय सरकारो की प्रतिष्ठा और शक्ति नही होती। इतने पर भी यदि आपको यह विश्वास न हो कि मत्रियो का प्रभाव काग्रेस के स्वतत्र जनतात्रिक निर्णयो को उलट सकता है तव मै आपको दूसरे किसी प्रकार से अपनी राय का नही वना सकता।

काग्रेस मे एकता की जरूरत के लिए जितने आप जागरूक है, उतना मै भी हू। परन्तु हमें सोचना यह है कि इस एकता को कैसे लाया जाय ? क्या किसी एक आदमी के पक्ष मे पद त्यागकर यानी 'नेता-सिद्धात' को स्वीकार करके, या हमेशा के लिए किसी गुट के हाथो मे सत्ता सौप करके, अथवा महत्वपूर्ण विचारधाराओ को एक स्थान पर लाकर और कोई सर्व-सम्मत कार्यक्रम अगीकार करके, या द्विदलीय प्रणाली को लाकर, जिसमे वहुमत-दल शासन चलायेगा और अल्पमतवाला दल विरोध मे रहेगा ? इन प्रश्नो का जवाव दिया ही जाना है। नीतियो और कार्यक्रमो के सवाल को लेने से भी पहले, काग्रेस को किस तरीके से चलाया जाय, उसके वारे में हमे अपने विचारो को स्पष्ट करना है। एक स्वीकृत वैधानिक नियम के अभाव मे पद के लिए भ्रमपूर्ण सघर्ष और परिणामस्वरूप फूट का उठ खडा होना निश्चित है। सच्ची एकता को प्राप्त किये विना दो दलो मे से एक दल को अपने दु ख भूल जाने की सलाह देने का ज्यादा असर होना सभव नही है, खासतौर पर तव जवकि दूसरा दल अपनी निजी वेजारी को भूल जाने मे अपनी असमर्थता दिखाता हो और अपनी बात को अत तक ले जाने के लिए तुला हो। ऐसा मालूम होता है कि आप यह महसूस नही कर सके है कि पडित गोविदवल्लभ पत का-सा कोई प्रस्ताव निश्चित रूप से फूट की ओर ले जायगा और काग्रेस के विभिन्न गुटो के वीच, भविष्य मे, सहयोग मे अडचन पैदा करेगा। अब भी देश मे इस प्रस्ताव को लेकर जो भावना उठ रही है, उसकी शक्ति को आप नजरन्दाज करते मालूम होते है। देश के विभिन्न भागो मे इसमे कमी-वेशी हो सकती है, लेकिन इसमे कोई सदेह नही कि

वह चारो ओर फैली है। प्रस्ताव और उसके द्वारा दिखाई गई वैयक्तिक कटुता दोनो ने कांग्रेस की एकता पर गहरी चोट की है। अंत में परिणाम यह होगा कि या तो वे सभी प्रगतिशील तत्वो को कांग्रेस से बाहर निकाल देंगे, जिससे असली ताकत एक छोटे-से गुट के हाथ मे रह जायगी और इस प्रकार कांग्रेस निष्प्राण हो जायगी या अपनी फूट मे ही पडी कांग्रेस मे सत्ता के लिए झगडे-टटे चलते रहेगे।

मै नही समझता कि आप क्यो कहते है और कैसे कह सकते है कि पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो की ओर से कोई अडचन नही डाली गई, जबकि सबको साफ दिखाई देता है कि विरोध ठेठ शुरू से आखीर तक रहा। अडचनें कहा-कहा डाली गई, यह मै सामने रखने की कोशिश करूगा।

अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम की घोषणा के बाद यदि यह नजरिया अख्तियार किया जाता कि उसका अर्थ पुरानी कार्य-समिति की नीति और कार्यों की अस्वीकृति है तो कार्य-समिति के सदस्यो के सामने एकमात्र सम्मानपूर्ण रास्ता यही था कि वे वफादारी से निर्णय को मानते और अध्यक्ष को पूरी तरह उसकी मरजी पर छोड़ देते कि वह विधान के अनुसार काम करे। लेकिन निजी हैसियत से मै इस नजरिये को ठीक नही मानता और बहुत-से लोग मेरी जैसी राय रखते है। सबसे पहले तो अध्यक्ष के चुनाव के परिणाम को मै दो व्यक्तियो—सुभाष और डा पट्टाभि सीतारमैया—के दावो पर जनता का फैसला मानता हू। दूसरे, अबतक अध्यक्ष के चुनाव के लिए जो पद्धति अपनाई जाती रही थी, उसके लिए मतदाताओ की अस्वीकृति, अर्थात् मतदाता नही चाहते थे कि कुछ इने-गिने लोगो द्वारा इस सवाल का फैसला किया जाय, बल्कि वे चाहते थे कि चुनाव में उनकी एक असरदार आवाज रहे और जनतत्रीय सस्था का अपनी राय को प्रकट करने का अधिकार रहे।

ऐसी सूरत मे अध्यक्षीय चुनाव के बाद सबसे अधिक समझदारी का और सीधा रास्ता यह होता कि सर्वसम्मत नीति और कार्य की योजना पर राय जानी जाती। महात्माजी के द्वारा ऐसा करना बिल्कुल आसान था, क्योकि उनकी सलाह की अवहेलना करने या उनके प्रभाव पर उगली

उठाने का सवाल ही नही उठता। सुभाप के चुनाव के कारण काग्रेस में महात्माजी की स्थिति मे कोई अन्तर नही पडता। फिर भी समझौते पर पहुचने की कोशिश करने के बजाय पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो ने अपने त्याग-पत्र देकर एक गतिरोध पैदा कर दिया। ऐसा करने मे उन्होने रोडे अटकाने जैसा काम किया, क्योकि, जैसाकि घटनाओ ने दिखाया, सत्ता छोडने की उनका मशा तनिक भी नही था, बल्कि इसपर जमे रहने के लिए उन्होने महात्माजी की आड ले ली। उन्होने देश को यह समझने का मौका दिया कि क्योकि उनकी ओर से नामजद आदमी अध्यक्ष नही चुना गया, इसलिए उन्हे काग्रेस से अपना सहयोग खीच लेना पड सकता है। इस पृष्ठभूमि मे भी ज्यादा गभीर धमकी थी कि काग्रेस-नियत्रित प्रातीय सरकारे भी शायद त्याग-पत्र देना जरूरी समझे। मै नही कहता कि यह आखिरी सुझाव कार्य-समिति के सदस्यो के नाम पर दिया गया था, जिन्होने त्याग-पत्र दिया था, या स्वय मत्रियो के नाम पर, परन्तु समाचार-पत्रो मे ये अटकले प्रकाशित हुई और इनका कही किसीने खण्डन नही किया। इन अटकलो ने जनता को उस दिशा मे विचार करने का काफी मौका दे दिया। त्रिपुरी में जो कुछ हुआ वह अडचन की दूसरी सीढी थी। आपका यह कहना कि कुछ व्यक्तियो या गुटो के द्वारा काग्रेस के सामने कुछ प्रस्तावो को पेश किये जाने का मतलब अडचन डालना नही होता है, बेहद सीधापन कहा जायगा। आप तो इस तरह लिखते है मानो ये प्रस्ताव हवा मे हो और उनकी न कोई पृष्ठ-भूमि हो, न इतिहास और न जडे ही। प्रस्तावो का मतलब ही क्या, अगर वे प्रस्तावको के कार्य की योजना को प्रकट न करते हो? इस दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर पडित गोविदवल्लभ पत का प्रस्ताव कार्य की इस योजना को व्यक्त करता है। अध्यक्ष के हाथ बाधकर और कार्य करने की उसकी आजादी को छीनकर इस प्रस्ताव मे अध्यक्षीय चुनाव के असर को रद्द करने की कोशिश की गई है। अध्यक्ष को उसके पद से हटाने की कोशिश करने के मुकाबले यह किसी प्रकार कम बाधक नही था। अध्यक्ष को हटाने की बात, जो पहले सोची गई थी, इसलिए नही आजमाई गई, क्योकि वह आसानी से पार पडनेवाली नही थी।

काग्रेस द्वारा पारित एक औपचारिक प्रस्ताव द्वारा अध्यक्ष से कार्य-

समिति को नामजद करने का अधिकार छीनना अपने-आपमे काग्रेस मे पहले से अपनाई जानेवाली प्रथा को छोडने का चौका देनेवाला कदम था। यह इसलिए भी फिजूल था, क्योकि सुभाष ने विना गाधीजी के मशविरे के कार्य-समिति के बनाने की बात न कभी कही थी, न सोची तक थी। अगर इस प्रकार के विशेष निर्देशन की जरूरत इस साल थी तो मै कहूगा वह १९२१ से काग्रेस के गाधी-युग से अबतक लगातार रही।

प्रस्ताव मे जो कपट भरा हुआ था वह मुझे और भी बुरा लगा। प्रस्ताव की मशा थी पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो के लिए विश्वास प्राप्त करके उन्हे फिर से सत्तारूढ करना। परन्तु उसी समय महात्माजी के लिए विश्वास के मत के प्रश्न को लेकर असली मुद्दे को घुटाले मे डाल दिया गया, मानो त्याग-पत्र देनेवाले पुरानी कार्य-समिति के सदस्यो के प्रति विश्वास प्रकट किये बगैर महात्माजी मे विश्वास प्रकट नही हो सकता था। मै मानता हू कि महात्माजी के खुद के बयान ने दो अलग-अलग व्यक्तिगत मसलो को आपस मे मिला देना आसान कर दिया। मेरा यह कहना अनुचित नही होगा कि पुरानी कार्य-समिति के सदस्य ज्यादा हिम्मत और खरापन दिखाते अगर वे खुद अपनी जिम्मेदारी पर यह कदम उठाने का निश्चय करते और महात्माजी की आड़ न लेते। उनका स्पप्ट कर्तव्य तो यह था कि महात्माजी को इस सारे विवाद से अलग रखते, जैसा कि उन्हे हमारे राजनैतिक जीवन मे रहना चाहिए।

आपके पत्र मे कुछ और भी मुद्दे है, जिनकी सफाई होनी चाहिए। वगाल के प्रतिनिधियो को दोहरे प्रतिनिधि-टिकट देने का जहातक सवध है, मैने पूछताछ की और यह वात मालूम हुई कि वगाल के वहुत-से प्रतिनिधियो ने त्रिपुरी पहुचने पर पाया कि वे अपने साथ प्रतिनिधि कार्ड नही लाये और उसीके मुताविक उन्होने अपनी ओर से दूसरे कार्डो के लिए अर्जी दी। कही देर न होजाय, इसलिए अपने उन दोस्तो की ओर से भी अर्जी दे दी, जो उस समय तक आ नही पाये थे। इस वात का पता लगते ही त्रिपुरी मे वगाल प्रान्तीय काग्रेस कमिटी के पदाधिकारियो ने तुरन्त दूसरे प्रतिनिधि-टिकट देने का काम अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी ने लेकर खुद सभालने को कहा, क्योकि प्रतिनिधियों की उनकी व्यक्तिगत जानकारी

की वजह से उनके लिए काम को जल्दी और विना गलती किये निवटा लेना सभव था। परन्तु महासमिति के दफ्तर ने यह सहयोग लेने से इन्कार कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो प्रतिनिधि सीधे अपने साथियो से वगैर मिले और सलाह किये महासमिति के दफ्तर पर चले गये, उन्हें दुवारा कार्ड मिल गये। इस मौके पर वगाल प्रान्तीय काग्रेस के पदाधिकारियो ने दुवारा हस्तक्षेप किया और दो-दो वार दिये गए टिकटो को खोज निकाला और उन्हे ठीक किया, सिवा छ को छोडकर, जिनका पता नही लग सका। इसके अतिरिक्त वगाल प्रान्तीय काग्रेस के सुझाव पर एक अधिकारी अखिल भारतीय काग्रेस कमिटी की ओर से और एक वगाल प्रान्तीय काग्रेस कमिटी की ओर से, इस प्रकार दोनो ने मिलकर वगाल के प्रतिनिधियो की पडाल मे प्रवेश की जाच की, जिससे इस वात का सदेह तक न रहे कि कोई भी अनधिकृत व्यक्ति वगाल के प्रतिनिधि के नाम पर पडाल मे घुस गया है। मै जानता हू, जाच मे एक भी गलत आदमी नही पाया गया। इस जाच से दोहरे टिकट देने की गलती गौण हो जाती है। मुझे सूचित किया गया है कि आध्र के प्रतिनिधियो के वारे मे गभीर अनियमितता हुई है। मुझे पता नही कि उस मामले मे भी प्रतिनिधियो की जाच के लिए इसी प्रकार का तरीका अपनाया गया या नही। शायद आप इस वारे मे कुछ पूछताछ करेगे।

मेरे लिए यह एक नई खबर है कि प्रतिनिधियो को काग्रेस मे लाने के लिए पैसा खर्च किया गया। क्या मै जान सकता हू कि किसके द्वारा, कव और कहा? पहले जव 'परिवर्तनवादियो' और 'अपरिवर्तनवादियो' मे कशमकश होती थी तव हम खूव सुना करते थे कि दोनो गुटो की ओर से अपने-अपने समर्थको के सफर-खर्च देने मे पैसा खर्च किया जा रहा है और इस प्रकार काग्रेस में उनकी उपस्थिति निश्चित की जा रही है, लेकिन मैंने कभी भी मामले की तहकीकात करने की परवा नही की। आपके पत्र से मुझे सबसे पहले पता लगा कि इस समय भी उसी तरह पैसा खर्च किया गया।

आप लिखते है कि आप द्वारा पेश की गई राष्ट्रीय माग के विरुद्ध मुझे देखकर आपको आश्चर्य हुआ। अगर मुझे अपना सशोधन पेश करने

की इजाजत दे दी गई होती तो मेरे द्वारा इस प्रस्ताव का औपचारिक विरोध करने की नौबत ही नही आती । परन्तु चूंकि यह अवसर मुझे नही दिया गया, इसलिए मैंने अनुभव किया कि मुझे प्रस्ताव के विरुद्ध अपना विरोध दर्ज कराना है, और अपने इस रुख के कारण मैंने अपने भाषण मे दिये । मेरी राय मे वह एक बेअसर और निष्फल माग थी, जिसका कोई परिणाम होनेवाला नही था । इसी तरह के प्रस्ताव हर साल किये जाते रहे और उनसे न तो हमारे दुश्मन हमारी राय के कायल हुए और न हमारे लोगो का हौसला बढा, क्योकि उनमे यह नही बताया गया था कि अगर वे मजूर न किये गए तो आगे क्या निश्चित इरादा होगा और क्या कदम उठाये जाने की योजना होगी । समय की सीमा के सुझाव का विरोध करते हुए आप इस तरह बोले, मानो काग्रेस के इतिहास मे यह कोई नई चीज थी । हमारी आज की माग को पूरा करने के लिए एक समय-सीमा निर्धारित करने मे यदि अति है तो मै अनुमान करता हू कि यह तब भी थी जब मुझसे बडे लोगो द्वारा काग्रेस के प्रस्तावो मे इस प्रकार की समय-सीमाए शामिल की गई थी । अगर जरा-सा मौका मिलते ही, हिटलर की तरह, बिना रू-रियायत के सख्ती और मजबूती से चोट करने का विचार आपके दिमाग मे होता और अगर मै इस बात का कायल हो जाता कि आपमे ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर इस तरह चोट करने की आवश्यक शक्ति है तो मै समय-सीमा रखने की आपकी हिचकिचाहट को समझ सकता था । लेकिन मेरा विश्वास है कि ये आकस्मिक उलट-फेर, जिनके लिए कोई पूर्व-सूचना नही दी गई थी, सत्य और अहिसा के सिद्धातो के विरुद्ध है । सत्य की खातिर हमने हमेशा सावधानी रखी है कि जो हम करनेवाले है, उसे दुश्मन पर जाहिर कर दे, जिससे उसे यह कहने का जरा भी बहाना न मिले कि वह बेखबर था । आकस्मिकता युद्ध का एक बहुमूल्य सिद्धात है, लेकिन मेरे विचार से सत्याग्रह का नही ।

जो हो, यह सब मुद्दे से परे की बात है, क्योकि मेरी राय मे काग्रेस के दक्षिण-पक्ष का समय-सीमा रखने का आधार अपनी शक्ति का बोध नहीं था, बल्कि अपनी कमजोरी की चेतना थी । दक्षिण-पंथी लोग हिन्दुस्तान की जनता मे उसके सक्रिय प्रतिकार करने की क्षमता मे और उस प्रतिकार

को सगठित करने की अपनी निजी क्षमता मे विश्वास खो चुके है। वे समय-सीमा इसीलिए नही चाहते, क्योकि उसकी समाप्ति पर उन्हे बुलाया जायगा और कोई कदम उठाने पर मजबूर किया जायगा। स्थिति का मेरा निदान यही है। हो सकता है, मैं पूरी तरह ठीक न होऊ।

आगे किस नीति और कार्यक्रम का अनुसरण किया जाय, इस सबध में मैंने अपने विचार साफ तौर से उन प्रस्तावो में बता दिये है, जो मैंने काग्रेस महासभा के कार्यालय को भेजे है। इससे पहले जलपाईगुनी मे हुए बंग प्रातीय सम्मेलन मे भी अपने अध्यक्षीय भाषण मे मैंने उन विचारो को जतला दिया था। दुर्भाग्य से त्रिपुरी मे उठाये गए व्यक्तिगत प्रश्न ही सारी चीजो पर छाये रहे। जहातक बगाल में मिली-जुली सरकार के औचित्य या अनौचित्य का सबध है, मैंने गत कार्य-समिति की बैठको में अपने विचारो को स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है। पद-ग्रहण की स्वीकृति निश्चित रूप से दक्षिण-पक्षीय कदम है। लेकिन एक बार काग्रेस इसके पक्ष मे निर्णय कर लेती है तो मेरी राय में, तथाकथित काग्रेसी प्रातो और तथा कथित गैर-काग्रेसी प्रातो मे भेद नही किया जा सकता और न किया जाना चाहिए, बशर्ते कि कागेस का कार्यक्रम गैर-कागेसी प्रातो में भी स्वीकार कर लिया जाता है। आखिरकार यह भी तो एक सयोग है कि कुछ प्रातो मे काग्रेस बहुमत मे है—एक ऐसा सयोग, जो अपने-आपमे इस सयोग पर आधारित है कि इन प्रातो मे हिंदू बहुमत मे है। मुझे उम्मीद है कि पिछले दो साल के अनुभव से आपको यह तसल्ली होगई होगी कि अबतक काग्रेस मत्रिमडलो ने गवर्नमेट ऑव इडिया एक्ट से लडने या उसे समाप्त करने के लिए कुछ भी नही किया है।

आपका यह मानना कि मैंने गाधीजी को जो कुछ लिखा है, उसका मतलब यह है कि अध्यक्ष और गाधीजी के बीच सहयोग खत्म हो जाय, सही नही है। मै आपको पहले ही बता चुका हू कि महात्माजी की स्थिति और नीति तथा पुरानी कार्यसमिति के कुछ सदस्यो की स्थिति और नीति को मै एक-जैसी नही मानता। इस नुक्ते पर मुझे और ज्यादा जोर देने की जरूरत नही है, क्योकि इसपर मै काफी लिख चुका हू।

इससे पहले कि मै यह पत्र समाप्त करू, मै एक और भूल सुधारना

चाहूगा । अक्सर यह मान लिया जाता है कि मैं जो कुछ लिखता हू वह सुभाष के विचारो का भी प्रतिनिधित्व करता है, परन्तु ऐसा हमेशा नही होता, क्योकि न मै हर बात मे सुभाष का मशविरा लेता हू और न ले सकता हू, और न वह ऐसा करता है । हा, इस खास मामले मे गाधीजी को लिखे अपने पत्र की एक नकल मैने उसके पास भेज दी है और अब यह कहना उसीपर है कि किन मुद्दो पर वह मुझसे सहमत है और किनपर नही। मैं उसका वकील नही हू ।

आशा है, आप अच्छे होगे । पिछले दो या तीन हफ्तो मे मेरा स्वास्थ्य बहुत खराब रहा है । मै ईस्टर की छुट्टियो मे पहाडो पर जाकर आराम करने की सोच रहा हू ।

सप्रेम आपका,

शरतचन्द्र बोस

२६० सुभाषचन्द्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो आ.
जिला मानभूम, बिहार
१५ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

पता नही, महात्माजी तुमको हमारे बीच चल रही चिट्ठी-पत्री की नकले भेज रहे है या नही, जैसे कि वह दूसरो को भेजते है । अगर तुमको ये नकले न मिली हो तो मै तुमको सबसे ताजा स्थिति बताना चाहूगा । उसके बाद मैं तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूगा और तुम्हारी सलाह भी कि आगे मुझे क्या करना चाहिए ।

महात्माजी का आग्रह है कि कार्यसमिति समानशील होनी चाहिए । वह चाहते है कि मै ऐसी समिति का गठन कर लू और अपने कार्यक्रम की घोषणा कर दू । उसके बाद मैं कांग्रेस महासमिति की स्वीकृति प्राप्त करू ।

मैने महात्माजी से बार-बार कहा है कि मै ऐसी कार्यसमिति एक से अधिक कारणो से नही बना सकता । इसके अलावा कांग्रेस ने मुझे अपना कार्यक्रम बनाने और उसकी घोषणा करने का निर्देश नही दिया है । मुझे तो सिर्फ एक खास तरीके से अर्थात पन्त-प्रस्ताव के अनुसार कार्यसमिति का गठन करना है ।

कुछ वैकल्पिक सुझाव देने के बाद मैंने आखिर मे यह कहा है कि सब-कुछ निष्फल रहने पर उनको कार्यसमिति गठित करने की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेनी चाहिए—कारण मै ममानशील समिति बनाने की उनकी सलाह का पालन नही कर सकता। अपने दो आखिरी पत्रो में मैंने उनसे यह अनुरोध किया है कि वह यह जिम्मेदारी उठा ले।

मै नही कह मकता कि महात्माजी कार्य-समिति की घोपणा करेगे। अगर वह कर देते है तो गतिरोध ममाप्त हो जायगा। किन्तु अगर वह नही करते तो ? उस दशा मे मामला अनिर्णीत अवस्था मे कांग्रेस महासमिति के सामने जायगा। उस अवस्था मे महासमिति क्या करेगी,यह मै नही जानता।

मै महसूस करता हू कि अगर चिट्ठी-पत्री के जरिये कोई समझौता नही होता है तो मुझे गाधीजी से प्रत्यक्ष मिलकर समस्या को सुलझाने की आखिरी कोशिश करनी चाहिए। किन्तु राजकोट की वजह से गाधीजी की गतिविधि अनिश्चित है। यह भी पक्का नही है कि कांग्रेस महासमिति की बैठक के समय वह कलकत्ता आ सकेंगे, हालाकि उन्होने मुझे तार दिया है कि वह आने की 'जी-तोड' कोशिश करेगे।

अब अगर गाधीजी कार्यसमिति का निर्माण नही करते और मै गाधीजी से मिलने का समय निकालने के लिए कांग्रेस महासमिति की बैठक स्थगित कर देता हू तो कैसा ? क्या महासमिति के सदस्य इसका समर्थन करेगे या मुझपर टालमटोल करने का दोप मढेगे ? बहुत-से लोगो की राय है कि जब-तक हम मिलते नही और समझौते की आखिरी कोशिश नही करते, महा-समिति की बैठक नही होनी चाहिए। बैठक उसी दशा मे स्थगित करनी पडेगी जबकि महात्माजी २७ से पहले कलकत्ता नही आ पाते, जिस दिन कि कार्यसमिति की बैठक होनी है। बैठक स्थगित करने के बारे मे तुम्हारा क्या खयाल है ?

अगर महात्माजी तुमको न भेज चुके हो तो अबतक पूरा पत्र-व्यवहार मै तुम्हे भेज सकता हू।

एक बात और। क्या कुछ घटो के लिए तुम यहा आ सकोगे ? उस दशा मे हम बात कर सकेंगे कि आगे मुझे क्या करना चाहिए। इस बारे मे तुम्हारी सलाह भी मिल जायगी।

यह पत्र संक्षिप्त है और जल्दी मे लिखा गया है और एक मित्र के हाथ भेज रहा हू। पता नही, मै ताजा स्थिति स्पष्ट कर पाया हू या नही—आशा तो यही है कि मैने कर दी है।

अगर तुम यहा आने का समय निकाल सको तो तुम तूफान एक्सप्रेस (८ डाउन) से आकर कुछ समय बचा सकते हो। वह साढे चार बजे शाम पहुचती है और तुम बम्बई मेल से लौट सकते हो, जो धनबाद आधी रात को पहुचती है। जमदोबा धनबाद से नौ मील है। स्टेशन पर तुम्हे कार मिल जायगी।

सस्नेह तुम्हारा,
सुभाष

२६१ महात्मा गाधी के नाम

इलाहाबाद,
१७ अप्रैल १९३९

प्रिय बापू,

प्यारेलाल सुभाष के साथ आपके पत्र-व्यवहार की नकले मेरे पास भेजते रहे है। मुझे अंदेशा है कि इस चिट्ठी-पत्री से अडचन की स्थिति आगई है और मुझे कोई रास्ता इससे निकलने का दिखाई नही देता। मै उस आदमी की जैसी बदकिस्मती की हालत मे हू, जो दोनो मे से एक भी नजरिये से सहमत नही है। इस कारण मैने यही उत्तम समझा कि चुप रहू और किसीको कुछ न लिखू और न जनता मे कुछ कहू। लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि हमारे लिए इस तरह लाचारी मे बहते चले जाना बहुत अच्छा नही है। मामले इतने गभीर और नतीजे इतने दुखदायी है कि उनकी कल्पना नही की जा सकती।

मुझे लगता है कि कोई रास्ता नही निकलेगा, जबतक कि आप बहुत हद तक खुद जिम्मेदारी उठाने को तैयार नही होगे। आपको अगुआ बनना होगा और आप घटनाओ के होते रहने के लिए ही इतजार नही कर सकते। सुभाष मे अनेक कमजोरिया है, परन्तु प्रेम से उन्हे समझाया जा सकता है। मुझे विश्वास है कि आप निश्चय कर लेगे तो कोई रास्ता निकाल सकेगे।

राजकोट का महत्व मै खूब समझता हू, परन्तु आप मेरे इस विचार से सहमत होगे कि काग्रेस का बडा सवाल उससे कही अधिक महत्वपूर्ण है और वह हमारी सारी प्रवृत्तियो का नियमन करेगा। इसलिए मेरी आपसे प्रार्थना है कि थोडे दिन राजकोट के मामलो पर ध्यान न देकर भी आप काग्रेस की तरफ ध्यान दे। इस विचार से घबराहट होती है कि शायद आप महासमिति की बैठक मे शरीक न हो। उसका तो यही मतलब है कि हालात बिगडते जाय और काग्रेस चूरचूर होजाय। सही तरीका यह है कि महासमिति की बैठक मे पहले कोई निपटारा कर लिया जाय। महासमिति पर इस मामले को छोड देना तो और भी गडबड पैदा करना होगा। काश आप सुभाष से मिल लेते! इस मुलाकात का कोई अच्छा नतीजा निकलने के अलावा भी इससे कई तरह की मदद मिलती।

कार्यसमिति के बनने में देर लगना बुरा हुआ। परन्तु हम झगडने के लिए ही मिले तो यह और भी बुरा होगा। हालाकि यह मुझे बहुत ही नापसद है, फिर भी एक-दो सप्ताह के लिए महासमिति का अधिवेशन मुल्तवी कर देना बेहतर होगा, ताकि आपको सुभीता रहे और निपटारे का ज्यादा मौका मिले।

मुझे अभी ही सुभाष का एक पत्र मिला है। उनका कहना है कि मै उनसे स्थिति की चर्चा करने के लिए कुछ घटो के लिए मिल लू। मुझे अदेशा है कि हमारी बातचीत का कोई निश्चित परिणाम नही निकल सकेगा, क्योकि मेरे हाथ मे कुछ है नही। फिर भी मै उन्हे इन्कार नही कर सकता और एक-दो दिन मे जाने का विचार है। मै उनसे क्या कहूगा, इसका मेरे मन मे स्पष्ट विचार नही है। मेरे खयाल से मै उन्हे यही सलाह दे सकता हू कि वह आपसे यह कह दे कि कार्यसमिति के नाम सुझाने का काम वे पूरी तरह आपपर छोडते है। वह अपने कुछ सुझाव आपको दे सकते है, परन्तु साफ तौर पर यह समझकर कि आप उन्हे स्वीकार या अस्वीकार कर सकते है। कार्यक्रम की बात यह है कि वह त्रिपुरी-काग्रेस के प्रस्तावो के अनुसार होगा, जिनमे और बातो के साथ-साथ निश्चित रूप से यह बता दिया गया है कि पिछले कार्यक्रम मे कोई भग नही होगा।

अगर सुभाष इससे सहमत हो जाते है तब जिम्मेदारी आपपर रहती

है और आप उससे बच नही सकते। मेरा दिल्ली मे भी यह खयाल था और अब भी है कि आप सुभाष को अध्यक्ष मान ले। उन्हे निकाल देने का प्रयत्न करना मुझे निहायत गलत कदम मालूम होता है। रही बात कार्य-समिति की, सो इसका फैसला करना आपका काम है। लेकिन मै यह जरूर समझता हू कि एक-जैसे विचारोवाली कल्पना का सकीर्ण अर्थ किया गया तो उससे शान्ति अथवा कारगर काम नही हो सकेगा। कुछ-न-कुछ तो एक-जैसे विचार जरूर होने ही चाहिए, नही तो हम काम नही कर सकते। मै नही समझता कि कार्यसमिति मे चन्द लोगो के होने से नीति मे कोई बुनियादी फर्क हो जायगा। अवश्य ही जिन आदमियो की नेकनीयती पर हमे जरा भी विश्वास न हो उन्हे स्वीकार करना कठिन होता है। परन्तु समान विचारो के सिद्धान्त का विस्तार राजनैतिक दृष्टिकोण के भेद तक नही करना चाहिए, बशर्ते कि काम की सामान्य पृष्ठभूमि स्वीकार कर ली जाय। आखिर तो हमे याद रखना होगा कि समान विचारो की कार्यकारिणी बना देने से हम समान विचारो की काग्रेस तो नही बना लेते। दूसरी बात ज्यादा आसान हो जाती है, यदि हममे विचारो की व्यापक समानता हो।

आपको पिछले कई महीनो से काग्रेस की घटनाओ से बडा कष्ट हुआ है और आपने भ्रष्टाचार आदि की निदा की है। मै समझता हू कि काग्रेस मे हरेक सयाना तत्व, चाहे उसके राजनैतिक विचार कुछ भी हो, इस समस्या को हल करने के लिए उत्सुक है। मै काग्रेस के बाहर की बहुत-सी बातो पर काफी ध्यान दे रहा हू और मुझे कहना पडता है कि घटना-चक्र और नई शक्तियो के पैदा होने से मुझे घबराहट होती है। मै केवल साम्प्रदायिक प्रश्न का ही जिक्र नही कर रहा हू। उसमे भी गहरी शक्तिया काम कर रही है। अगर इस नाजुक अवसर पर काग्रेस कमजोर और छिन्न-भिन्न हो जाती है तो परिणाम विनाशकारी हो सकते है। हमे एक होकर रहना ही चाहिए। इसलिए मै आपसे प्रार्थना करता हू कि इस मामले को निपटाने का आप निश्चय कर ले, भले ही निपटाने का तरीका हम सबको पसन्द न हो। हम इसी तरह अपनी पसन्द की दिशा मे जा सकते है, नही तो हमारे पैर रुक जाते है।

एक बात अपने बारे मे भी। यह मेरा दुर्भाग्य है कि मै अत्यधिक

व्यक्तिवादी हू । पिछले दिनो कार्यसमिति की बैठको मे मुझे अपना निभाव बहुत कठिन मालूम हुआ और शायद मैं अपने साथियो के लिए भी एक आफत होगया था । इसका कारण दोनो तरफ सद्भाव की कमी नही था। इसलिए मुझे महसूस हुआ कि मुझे कमेटी में नही रहना चाहिए । इससे भी अधिक प्रवल कारणो से सुभाष की बनाई हुई भिन्न प्रकार की कमेटी मे शरीक होने का विचार मुझे कठिन लगा । मेरे भाव अब भी वे ही है, लेकिन जो रुकावट पैदा होगई है उसे देखते हुए कोई रास्ता निकल आता है और कमेटी मे मेरा रहना सहायक समझा जाता है तो मैं रहना मजूर कर लूगा । मुझे यह चीज कोई बहुत प्रिय नही है, परन्तु मैं यह जरूर महसूस करता हू कि मौजूदा गैर-मामूली हालात मे अगर यह जिम्मेदारी मुझे दी गई तो मैं उससे बच नही सकता ।

महात्मा गाधी, सप्रेम आपका,
राजकोट । जवाहरलाल

२६२ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
१७ अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

जब मैं अपनी इलाहाबाद मे लगी चोट के बारे मे सोचता हू तो यह लगता है कि अगर ऐसा कलकत्ता मे हो जाता तो मेरे अपने आदमी भी उससे ज्यादा मेरे आराम और इलाज के लिए नही कर पाते, जो इलाहाबाद मे मेरे लिए किया गया । सच तो यह है कि मेरे नजदीकी और प्यारे-से-प्यारे रिश्तेदार भी मेरे लिए उतनी गहराई से महसूस नही कर पाते, जितना आपने वहा मेरे लिए किया । मैं नही समझ पाता कि कैसे मैं आपके तई अपनी अहसानमदी जाहिर करू । यकीन कीजिये, आपके प्यार और मेहरबानी के लिए मेरा दिल अहसान से भरा हुआ है ।

बहुत-सी ऐसी मामूली बाते होती है, जो दिल पर गहरा असर डालती है । इलाहाबाद से चलते वक्त आपने मेरे आराम-देह सफर के लिए बहुत मामूली-से-मामूली तफसील को देखा, हालाकि यह सफर सिर्फ एक रात

का था। मुझे पता नही था कि कितनी चीजे मेरे साथ भेजी गई थी। यहा पहुचने पर मुझे मालूम हुआ कि यू डी कोलोन तक की शीशी भी टोकरी मे रख दी गई थी।

मुझे नही मालूम कि आपने गाधीजी के नाम सुभाष के खत देखे है या नही। यह अफसोस की बात है कि सुभाषबाबू बिल्कुल उसी जगह है, जहा वह त्रिपुरी के पहले थे और इस बात की कोई उम्मीद नही कि वह त्रिपुरी की तजवीज पर अमल करके हालत को सुधारेगे। एक तरफ तो वह कहते है कि पन्त की तजवीज आईन के खिलाफ है और इसलिए हक के बाहर है, दूसरी तरफ वह चाहते है कि गाधीजी कुछ शर्तो को माने। इसके साथ-साथ वह बेएहतियाती से यह दावा करने मे भी नही सकुचाते कि अगर सोशलिस्ट गुट गैरजानिबदार न बन जाता तो पन्त की तजवीज गिर जाती। बावजूद इस सबके, इस बात की कोई उम्मीद नही है कि काग्रेस सुभाषबाबू के साथ चल सके। लगता है, सब चीजे ठप्प हो जायगी। इसलिए हमे आइन्दा क्या करना है, इसे तय कर लेना चाहिए।

मै सुभाषबाबू के मामले को न तो राइटिस्टो और लेफ्टिस्टो की लडाई मानता हू और न काग्रेस की मिली-जुली या एकराय वर्किंग कमेटी का ही सवाल मानता हू। यह महज सुभाष और उनके कुछ हिमायतियो का मामला है। यह उलझन किस तरह खत्म होती है, इसकी ज्यादा अहमियत नही। हमे तो इन सवालो पर आजादी से और खास तौर से गौर करना चाहिए, जिससे कोई हल निकल सके।

मुझे उम्मीद है, आपको मेरा पिछला खत मिल गया होगा और आपने मुलतान अहमद के बारे मे लखनऊ फोन कर दिया होगा।

आपका,
ए. के आजाद

२६३ सुभाषचद्र बोस की ओर से

जीलगोरा पो आ.
२० अप्रैल १९३९

प्रिय जवाहर,

मैने आज महात्माजी को दो तार भेजे है। उनमे से एक तार उनके

नाम के मेरे आज के पत्र मे भी दोहराया गया है। मै अपन पत्र और नार की नकलें इम चिट्ठी के साथ भेज रहा हू।

पत्र-व्यवहार को प्रकाशित न करने के तार के बारे मे मैने तुम्हारे नाम का उपयोग किया है। आशा है, तुमको ऐतराज नही होगा।

मुझे गाधीजी के बुखार की चिन्ता है। आशा है, वह ठीक हो जायगा। परमात्मा न करे, अगर वह बना रहता है तो हम क्या करेगे ? कृपाकर इस सभावना के बारे मे कुछ सोचना। मै कल २१ ता को कलकत्ता के लिए रवाना हो रहा हू।

सप्रेम तुम्हारा,
सुभाष

२६४ सुभाषचद्र बोस की ओर से महात्मा गाधी के नाम

जीलगोरा पो आ
जिला मानभूम, बिहार
२० अप्रैल १९३९

प्रिय महात्माजी,

मैने आज आपको यह तार भेजा है

"महात्मा गाधी, राजकोट।

आपको बुखार आने की खबर से बहुत चिन्तित हू। आपके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हू। जवाहरलालजी और मुझे हार्दिक आशा है कि हमारी मुलाकात का अच्छा नतीजा निकलेगा और समान ध्येय के लिए सभी काग्रेसजनो का सहयोग सभव होगा। कलकत्ता मे हमारी जल्दी होनेवाली मुलाकात की दृष्टि से हम दोनो पत्र-व्यवहार को उस मुलाकात के पहले प्रकाशित करना अवाछनीय समझते है। प्रणाम—सुभाष।"

पिछले तीन सप्ताह मे हमारे बीच लम्बा पत्र-व्यवहार हुआ है। जहातक कार्यसमिति के गठन का सबध है, इस पत्र-व्यवहार का कोई ठोस नतीजा नही निकला है। फिर भी शायद एक दूसरी तरह से हमारे विचारो का स्पष्टीकरण करने मे वह मददगार हुआ है। किन्तु अब तात्कालिक सवाल को हल करना होगा, कारण हम अधिक समय तक कार्यसमिति के

बिना काम नही चला सकते । देश की और अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति को देखते हुए यह जरूरी हो जाता है कि काग्रेसजन अपने मतभेदो को समाप्त कर दें और सयुक्त मोर्चे का निर्माण करे। आपको अच्छी तरह मालूम है कि अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति किस प्रकार दिन-प्रति-दिन बिगडती जा रही है । ब्रिटिश पार्लमेंट के सामने पेश हुए सशोधन विधेयक से प्रकट होता है कि अगर युद्ध का सकट उपस्थित होता है कि तो ब्रिटिश सरकार काग्रेसी मत्रिमडलो को जो थोडे-बहुत अधिकार मिले हुए है, उनको भी छीन लेने की तैयारी कर रही है । सारी जानकारी को ध्यान मे रखते हुए इसमे जरा भी शक की गुजाइश नजर नही आती कि हम असाधारण रूप से भारी सकट के निकट पहुच रहे है । हम उसका सामना उसी अवस्था मे कर सकेगे जब हम अपने मतभेदो को तुरन्त मिटा देगे और अपने सगठन मे एकता और अनुशासन स्थापित करने की पूरी-पूरी कोशिश करेगे। यह काम उसी दशा मे हो सकेगा, जब आप आगे आकर नेतृत्व करे । तब आप देखेगे कि हम सब आपको पूरा सहयोग देते है और आपका अनुसरण करते है । आप यह भी देखेगे कि भ्रष्टाचार को समाप्त करने और हिसा की प्रवृत्ति पर अकुश लगाने के बारे मे हमारे बीच मतैक्य है—हालाकि देश मे विद्यमान भ्रष्टाचार और हिसक भावना की मात्रा के बारे मे मतभेद हो सकता है । कार्यक्रम का निश्चय तो काग्रेस या काग्रेस महासमिति ही करेगी । हालाकि प्रत्येक व्यक्ति को इन सस्थाओ के सामने अपने विचार रखने का असदिग्ध हक हासिल है। कार्यक्रम के बारे मे मेरा यह खयाल है कि जो सकट शीघ्र ही हमारे सिर पर आ रहा है वही बडी हद तक हमारे कार्यक्रम का निर्धारण करेगा और तब इस बारे मे किसी बडे मतभेद की कोई गुजाइश नही रह जायगी।

मै बडी उत्सुकता और आशा के साथ काग्रेस महासमिति की बैठक के पहले कलकत्ता मे या उसके निकट आपसे मिलने की प्रतीक्षा कर रहा हू । बगाल मे और अन्य प्रान्तो मे यह राय तेजी से बन रही है कि काग्रेस कार्य-समिति की समस्या सैद्धान्तिक मतभेदो और पिछले मतभेदो या गलत-फहमियो के बावजूद आपसी समझौते से हल की जानी चाहिए । पन्त-प्रस्ताव के अनुसार कार्य-समिति का गठन करने की जिम्मेदारी आपकी

है और जब आप यह जिम्मेदारी उठाते है तो आप देखेगे कि हम अपनी शक्तिभर आपको सहयोग देंगे।

जवाहर कल यहा थे। हमारी मौजूदा स्थिति पर लम्बी चर्चा हुई। मुझे खुशी हुई कि हमारे विचार मिलते है।

हम सोचते है कि कलकत्ता से बहुत दूर न हो, ऐसे किसी रास्ते के स्टेशन पर आप एक दिन के लिए उतर पडे और हम शाति के साथ बातचीत कर ले। अगर आप नागपुर के रास्ते आये तो खडगपुर के निकट मिदनापुर सबसे अच्छी जगह रहेगी। अगर आप छिउकी के रास्ते आते है तो हमे वर्दवान के निकट कोई जगह देखनी होगी। मैने इस बारे मे आपको एक तार भेजा है और आपके उत्तर की इतजार करूगा। मैने जवाहर को बातचीत मे शामिल होने को कहा है और उन्होने कृपा करके मान लिया है।

आपके बुखार के बारे मे मै चिन्तित हू। मेरी प्रार्थना है कि वह जल्दी ही ठीक हो जाय।

सविनय प्रणाम। आपका,

सुभाष

२६५ सुभाषचद्र बोस की ओर से महात्मा गाधी के नाम

२० अप्रैल १९३९

महात्मा गाधी, राजकोट।

बडी खुशी की बात है, आप २७ ता को कलकत्ता आ रहे है। आप जहा चाहे ठहरे, कोई ऐतराज नही। आपके आराम और सार्वजनिक सुविधा की दृष्टि से मेरा सुझाव है कि आप शहर के किनारे नदी-तट के उद्यान-भवन मे ठहरे। सतीशबाबू से परामर्श करने के बाद कलकत्ता से आपको फिर तार करूगा। जवाहरलालजी कल यहा थे। हमारे खयाल से यह वाछनीय होगा कि आप कलकत्ता के निकट किसी जगह एक दिन के लिए उतर पडे, जहा हम दोनो आपसे व्यक्तिगत बातचीत के लिए मिल सकते है। अगर आप इस विचार से सहमत हो और अपने रास्ते की खबर तार से दे दे तो मै बीच के किसी सुविधाजनक स्टेशन पर आपके ठहरने का इन्तजाम कर दूगा। २१ ता को कलकत्ता जा रहा हू।

सुभाष

२६६ लेडी येस्टर की ओर से

लन्दन
१० मई १९३९

प्रिय पडित जवाहरलाल नेहरू,

आपको याद होगा कि पिछली गर्मियो मे आपने मुझसे गैडिल्यू नाम की नागा जाति की लडकी की बात बताई थी, जो सन् १९३० मे हुई कुछ मणिपुरी यात्रियो की हत्या के सवध मे सन् १९३३ मे कैद की गई थी। उसके मामले मे मैने इडिया आफिस से कुछ लिखा-पढी की थी, जिसके फलस्वरूप उन्होने जाच-पडताल की और इस सवध मे मुझे काफी विस्तृत जानकारी भेजी। सक्षेप मे, मुझे बताया गया है कि जादोनग नाम के एक आदमी ने अपनेको एक प्रकार के मसीहा के रूप मे स्थापित कर लिया था और गैडिल्यू उसकी पुरोहितानी थी और जिस हत्या की चर्चा की गई है वह जादोनग के धर्म-देवताओ के सामने एक प्रकार के बलिदान के रूप मे थी। आशका की जाने लगी थी कि इस धर्म के नागा अनुयायियो द्वारा कूकियो की पूरी-की-पूरी जाति के मारे जाने का खतरा था। मुझे बताया गया है कि इन हत्याओ मे गैडिल्यू का हाथ होने के काफी प्रमाण है, किन्तु केवल इसलिए कि वह अभी युवावस्था मे थी और उसपर जादोनग का प्रभाव था, अदालत ने उसके मृत्यु-दड को वदल दिया है।

यह भी बताया गया है कि नागाओ का यह आन्दोलन अभी समाप्त नही हुआ है और अगर गैडिल्यू छोड दी गई तो फिर उठेगा। "इस समय गैडिल्यू मणिपुर राज्य और असम प्रान्त की शाति के लिए खतरे का एक सम्भावित साधन मानी जाती है।"

भारत-मत्री ने इस बात पर जोर दिया है कि गैडिल्यू के दण्ड का मामला शाही प्रतिनिधि के अधीन है और चूकि यह प्रश्न ब्रिटिश राज्य से नही, बल्कि मणिपुर के आन्तरिक मामलो से सवध रखता है, इसलिए वह गवर्नर के निर्णय मे हस्तक्षेप करने को तैयार नही है।

मैने उन्हे लिखा था कि क्या एक ऐसी कम उम्र की लडकी के लिए रचनात्मक सुधार का व्यवहार कैद से अधिक लाभप्रद नही होगा, खास तौर से अब जबकि जादोनग का प्रभाव हट गया है? उसके उत्तर मे मुझे बताया

गया है कि जेल मे बोर्सटल प्रणाली सशोधित रूप मे लागू है और उसके अनुसार शिक्षा की सुविधाए दी जाती है। मुझे इस बात का भी विश्वास दिलाया गया है कि गैडिल्यू के मामले मे मेरे जो सुझाव थे वे गवर्नर के पास विचारार्थ भेज दिये जायेगे। मुझे पक्की उम्मीद है कि मेरी चेष्टाओ का कुछ-न-कुछ फल निकलेगा, यद्यपि मुझे इस बात का अफसोस है कि इस काम मे इतनी देर लग गई।

मुझे आशा है कि आपकी पुत्री और बहन अब पहले से अच्छी है।

आपकी,
नैन्सी येस्टर

[गैडिल्यू एक नागा लडकी थी। उसे मृत्यु-दड दिया गया था। नागा-विद्रोह हुआ था। इस लडकी की अवस्था केवल २० वर्ष की ही थी। उसके मृत्यु-दड पर मुझे बडा आघात लगा और मैंने उसका मामला अपने हाथ में लिया।]

२६७ माओत्से तुग की ओर से

येनान, शेन्सी
२४ मई १९३९

श्री ज नेहरू,
आनन्द भवन,
इलाहाबाद (यू पी)

प्रिय मित्र,

डाक्टर एम अटल के नेतृत्व मे भारत का जो चिकित्सा-दल यहा आया है और भारत की राष्ट्रीय महासभा ने चीनी जनता को उसके जापानी साम्राज्यवादियो से युद्ध करने के लिए अभिवादन और प्रोत्साहन के जो सदेश भेजे है, उन्हे प्राप्त करके हमने बडी प्रसन्नता और सम्मान का अनुभव किया है।

हम आपको सूचित करना चाहते है कि भारतीय चिकित्सा-दल ने यहा अपना काम शुरू कर दिया है। एर्थ रूट आर्मी के सभी सदस्यो ने उनका बडे उत्साह के साथ स्वागत किया है। दल के सदस्यो मे हमारी समान कठिनाइयो मे हाथ बटाने की जो भावना है, उससे उसके सम्पर्क

मे आनेवाले सभी लोग बडे प्रभावित हुए है ।

आपने चिकित्सा-सबधी और दूसरी वस्तुओ की जो सहायता दी है उसके लिए हम आपकी महान् भारतीय जनता और राष्ट्रीय महासभा को धन्यवाद देते है और उम्मीद करते है कि वे भविष्य मे भी इस प्रकार की सहायता देते रहेगे और हम मिलकर जापानी साम्राज्यवादियो को निकाल बाहर करेगे ।

अन्त मे, किन्तु कम महत्व के साथ नही, हम आपको अपना धन्यवाद, शुभ कामनाए और हार्दिक अभिवादन भेजना चाहते है ।

आपका,

माओत्से तुग

२६८ वल्लभभाई पटेल की ओर से

बम्बई

३ जुलाई १९३९

प्रिय जवाहर,

सर एस १ तारीख को बापू से मिले और अपनी क्षेत्रीय योजना के बारे मे उनसे बातचीत की । बापू ने उनसे कहा है कि इस योजना पर उनसे बातचीत करने की जरूरत नही है, लेकिन राजेन्द्रबाबू का सन्देश उन्हे मिल गया है और अगर वह और उनके मुस्लिम लीगी साथी कौमी सवाल को हल करना चाहते है तो वह राजेन्द्रबाबू और काग्रेस के दूसरे मित्रो से मिल सकते है, इस स्पष्ट समझ के साथ कि किसी भी पक्ष की तरफ से किसी भी बात पर कोई आश्वासन नही है । आज रात को वह फिर आ रहे है । इसमे से कुछ भी नतीजा निकलनेवाला नही है ।

बापू ने सीमा-प्रान्त जाना मुल्तवी कर दिया है, क्योकि उन्हे बादशाह खान का तार मिला कि उन्हे ५ जुलाई को रवाना होना चाहिए ।

उस दिन तुम गुस्से मे आगये और 'हरिजन' मे प्रकाशित उनकी मुलाकात के मामले पर बहुत आवेश मे बातचीत की । उस बात पर तुमको इतना ज्यादा नाराज देखकर हम सबको बडा दु ख हुआ और हमने अनुभव किया कि तुमने बापू के साथ बहुत अन्याय किया । मुझे यह भी लगा कि इस तरह की एक-दो घटनाए उन्हे सार्वजनिक जीवन से अलग हट

पाने का निर्णय लेने को बाध्य कर देगी। वह ७१ वर्ष के है और उनकी बहुत-सी ताकत खत्म हो चुकी है। जब तुम्हारी भावनाओ को चोट पहुचती है तो उन्हे भी बडा दु ख होता है। मै नही सोचता कि वह जितना तुमको चाहते है उतना और किसीको चाहते हो, और जब वह देखते है कि उनके किसी कार्य मे तुमको दु ख पहुचा है तो वह बडे सोच मे पड जाते है और दुखी हो उठते है। उस शाम के बाद से वह पूरी तरह छुट्टी पाने की सोचने लगे है। पेरिन और भरूचा की उनसे बातचीत और राजेन्द्रबाबू के नाम खुरशेद के पत्र ने आग मे घी का काम किया है।

मै उन्हे यह समझाने की कोशिश कर रहा हू कि वह जल्दी मे कोई निश्चय न करे। परन्तु तुम उन्हे जानते हो और वह क्या करेगे, इसका मुझे कोई पता नही है।

तुमको यह सब बता देना मुझे बहुत जरूरी मालूम हुआ, इसलिए लिख रहा हू। यदि तुम उचित समझो तो उन्हे लिख सकते हो कि तुमने पूरी तरह सलाह-मशविरा किये बगैर कोई निर्णय न करे।

तुम्हारा,
वल्लभभाई

२६९ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
२९ जुलाई १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

धामी के लोगो का पथ-प्रदर्शन करने के बजाय मैने उन्हे तुम्हे सौप दिया है। मेरे खयाल से मेरी तरफ से किसी हस्तक्षेप के बिना तुम्हीको यह भार वहन करना चाहिए। राज्यो का यह विचार दिखाई देता है कि काग्रेस को अलग रखा जाय और उसकी तथा देशी राज्य परिषद् की उपेक्षा की जाय। मै 'हरिजन' मे पहले ही सुझाव दे चुका हू कि तुम्हारी समिति से पूछे बिना किसी रियासती सघ या मडल को अपने-आप कार्रवाई नही करनी चाहिए। मुझे कुछ करना ही हो तो तुम्हारे मार्फत करना चाहिए अर्थात् जब तुम मुझसे पूछो तो जैसे कार्यसमिति को अपनी राय दे देता हू वैसे ही तुम्हे दे दू। कल ग्वालियरवालो को भी मैने ऐसा ही कहा है। तुम्हारी समिति को

ठीक ढग से काम करना है तो उसे थोडा-सा पुनर्गठित करना होगा।

आखिर मेरा कश्मीर जाना नही हुआ। शेख अब्दुल्ला और उनके मित्रो को मेरा सरकारी मेहमान बनने का विचार सहन नही होता। अपने पिछले अनुभव के आधार पर मैंने शेख अब्दुल्ला की अनुमति की आशा से राज्य का प्रस्ताव मजूर कर लिया था। परन्तु मैंने देखा कि मेरी भूल हुई। इसलिए राज्य के आतिथ्य की स्वीकृति रद्द करके मैंने शेख का आतिथ्य स्वीकार किया। इससे राज्य को परेशानी हुई। इसलिए मैंने वहा जाने का विचार ही छोड दिया। मुझसे दोहरी मूर्खता का अपराध हुआ—एक तो तुम्हारे बिना वहा जाने का विचार करने का दु साहस किया और दूसरे राज्य का प्रस्ताव मान लेने से पहले शेख की इजाजत नही ली। मैंने सोचा था कि राज्य का प्रस्ताव मजूर करके मै प्रजा की सेवा करूगा। मुझे स्वीकार करना चाहिए कि शेख और उनके मित्रो के सम्पर्क से मुझे खुशी नही हुई। वे हम सबको बहुत ही बेतुके मालूम हुए। खानसाहब ने उन्हे समझाया, मगर कोई नतीजा नही निकला।

तुम्हारी लका-यात्रा शानदार रही, मुझे इसकी परवा नही कि तात्कालिक परिणाम क्या हुआ। सालेह तैयबजी मुझसे अनुरोध कर रहे है कि तुम्हे बर्मा भेजू और एण्ड्रूज तुम्हारा विचार दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्ध मे कर रहे है। लका के लिए तो काग्रेस के शिष्टमडल की कल्पना मुझे स्वय स्फूर्ति से हुई। इन दो स्थानो की प्रेरणा उकसाने पर भी नही होती। लेकिन ये बाते तो जब मिलेगे तब करेगे। आशा है, तुम ताजे हो और कृष्णा मजे मे है। प्यार।

बापू

२७० महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा

११ अगस्त १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

योजना-समिति के बारे मे (और समय न होने के कारण) कार्यसमिति की मौजूदगी मे तुमसे बात करने को आधा ही मन था। शकरलाल आज सुबह तुमसे बात करके आये थे। साथ मे इस मामले पर कृपालानी को उन्होंने

जो पत्र लिखा था उसकी नकल भी लाये थे। उनकी आपत्ति मे मेरी सहानुभूति थी। इस समिति के काम-काज को न तो मै कभी समझ सका हू और न उसकी कद्र ही कर सका हू। पता नही, वह समिति को बनानेवाले प्रस्ताव की चहारदीवारी के भीतर ही काम कर रही है या नही। मै नही जानता कि उसके कार्यकलाप से कार्यसमिति को परिचित रखा जा रहा है या नही। उसकी अनेक उप-समितियो का हेतु भी मेरी समझ मे नही आया है। मुझे ऐसा लगा है कि एक ऐसे प्रयत्न मे जिसका कोई फल नही निकलेगा, बहुत-सा रुपया और परिश्रम बर्बाद किया जा रहा है। ये मेरी शकाए है। मै प्रकाश चाहता हू। मै जानता हू, तुम्हारा मन चीन मे है। अगर तुम्हारे ख्याल से शाह तुम्हारे विचार प्रकट कर सकते है तो मै उनसे जान लेने की कोशिश करूगा या तुम अपने महान मिशन से लौट आओ तबतक प्रतीक्षा करूगा। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे और तुम्हे मातृ-भूमि मे सुरक्षित लौटा लाये। प्यार।

बापू

२७१ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता

१७ अगस्त १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपके खत के लिए शुक्रिया। मैने आपके इलाहाबाद के पते से एक के बाद एक दो खत भेजे है। मुझे उम्मीद है, वे आपको मिल गये होगे।

मुझे नही मालूम आया राजेन्द्रबाबू ने मेरा खत कमेटी के सामने पेश किया या नही। खुद उन्होने और वल्लभभाई ने जोर दिया था कि अगर मै हाजिर नही हो सकता तो उस सूरत मे अपनी राय भेज दू और इसीलिए मैने तफसील मे अपनी राय लिख दी थी। मेरी राय मे सुभाषबाबू का तर्ज गलत था और वर्किग कमेटी के लिए जरूरी था कि वह अपनी राय जाहिर करे। लेकिन मैने यह सुझाव दिया था कि इस मौके पर बहुत ज्यादा सख्ती न दिखाई जाय। मैने तजवीज की थी कि वर्किग कमेटी उसी तरह की एक तजवीज पास करे, जिस तरह की आपने यू पी मे पास की है और बाकी

चीज सदर के ऊपर छोड दे । उसके बाद सदर उन लोगो से खतो-किताबत करे और अगर वे लोग कमेटी की तजवीज से एकराय हो तो उनके खिलाफ सदर चाहे तो आगे की कार्रवाई खत्म कर दे । लेकिन अगर वे इस हद तक भी तैयार न हो तब उन्हे उनके मौजूदा ओहदो से निकाल बाहर किया जाय । लेकिन अगले साल उनके चुनाव पर कोई बन्दिश न लगाई जाय ।

मैने आपको फोन पर बाते करने की तकलीफ दी, क्योकि मै समझता था कि इस मामले पर गौर करने मे आप हिस्सा लेगे, लेकिन अब मालूम हुआ कि आप करीब-करीब अलहदा रहे और आपकी राय के बगैर फैसला किया गया ।

आपका,

आजाद

२७२. मैडम सनयात सेन की ओर से

हांगकांग

१५ सितम्बर १९३९

प्रिय मित्र,

आपके चीन आने पर आपका स्वागत न कर सकने के कारण मुझे जो गहरी निराशा हुई उसीको प्रकट करने के लिए ये थोडी-सी पक्तिया लिख रही हू । डाक्टर मुखर्जी से मुझे अभी-अभी मालूम हुआ है कि मेरा सदेश आपको चुगकिग मे नही मिला । मै आपसे मिलने के लिए हवाई जहाज से आने की योजना बना रही थी, लेकिन तभी अखबारो मे यह पढ-कर मुझे बडा अफसोस हुआ कि आप स्वदेश लौट गये है । फिर भी मुझे विश्वास है कि हम जल्दी ही मिलेगे । मै उस दिन की बडी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रही हू जब हम आपका स्वतत्र चीन मे स्वागत कर सकेगे ।

डाक्टर मुखर्जी के साथ चिकित्सा-सम्बन्धी सहायता-कार्य के बारे मे मेरी काफी लम्बी बातचीत हुई और हमने इस बात पर विचार किया कि पहले जो चीजे हम यूरोप से मगाते थे वे अब जब वहा से नही मिल सकती तब आपके देश से हमे कितनी और किस प्रकार की सहायता मिल सकती है । मुझे यकीन है कि उनसे मेरी जो बातचीत हुई है और हिंदुस्तान मे चाइना डिफेस लीग की शाखा स्थापित करने के बारे मे मैने जो सुझाव

दिये है वे मव वातें वह आपको वतायेगे। हो सकता है कि यहा की जटिल स्थिति के कारण हमें अपनी मस्था कुनमिन या क्वीलिन में ले जानी पडे। परिवर्तन हुआ तो आपको मूचित करुगी।

आप जिस कार्य का नेतृत्व कर रहे है उससे मै अपनेको परिचित रखने की चेप्टा करती हू और माथ-ही-माथ आपके उद्देश्य की प्रगति का पूरी सहानुभूति के साथ अध्ययन करती हू, क्योकि वही चीन का भी उद्देश्य है।

अभिवादन सहित आपकी,

सुग चिन्ग लिन्ग

२७३ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्घा

१८ सितम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

च्याग काई शेक के नाम मेरा पत्र साथ में है। पत्र मै चाहता था उससे लम्वा होगया। शायद मूल के साथ टाइप की हुई प्रति भेजना अच्छा रहेगा। महादेव कल मद्रास गये। प्यार,

बापू

२७४ कृष्ण कृपालानी के नाम

[कृष्ण कृपालानी काफी समय तक रवीन्द्रनाथ टैगोर के सेक्रेटरी रहे थे। इस समय वह साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी है।]

आनन्दभवन, इलाहाबाद

२९ सितम्बर १९३९

प्रिय कृष्ण,

२५ सितबर का तुम्हारा खत अभी मिला। तुम्हे उस आदमी का बहुत लिहाज नही है, जो बेहद काम मे घिरा हुआ है। अगरचे मामला अहम है, तोभी मै मामूली तौर पर इस वक्त उसपर कुछ भी लिखने से तुमसे माफी माग लेता, लेकिन जव मैने प्रो साहा[1] का तुम्हारे नाम लिखा

[1] मेघनाद साहा, एफ. आर. एस., प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री थे। कुछ वर्ष पहले उनका देहांत होगया।

खत पढा तो मुझे उसमे इतने ज्यादा गलत बयान मिले कि मै पूरी तरह खामोशी अख्तियार नही कर सकता, इस आशका से कि कही उनसे गलत-फहमिया पैदा न होजाय। उन्होने बार-बार मेरा जिक्र किया है और मेरे बारे मे कई ऐसी बाते कही है, जिनसे योजना-समिति मे मैने जो कुछ कहा है, उसकी बिल्कुल गलत छाप पडे बिना नही रहेगी।

मुझे डर है कि इस विषय पर फिलहाल मै पूरे विस्तार से नही लिख सकता। अभी तो मै सिर्फ प्रोफेसर साहा या दूसरे लोगो के दिमाग का भ्रम दूर करने की कोशिश करूगा।

योजना-समिति की बैठको मे सीधे गाधीजी के उसूलो पर किसी भी अवस्था मे बहस नही हुई। काग्रेस की तजवीजो मे जिस तरह काग्रेस के उसूल दिये गए है उनपर हमने जरूर चर्चा की और इस तरह हमने अप्रत्यक्ष रूप मे गाधीजी के उसूलो का जिक्र किया, जिन्होने गये बीस सालो से काग्रेस पर बडा असर डाला है। मैने कभी यह नही कहा कि श्री कुमारप्पा या किसी दूसरे की बनिस्बत मै गाधीजी के विचारो को ज्यादा अच्छी तरह समझने का दावा करता हू। मेरा खयाल है कि इस खास मामले मे श्री कुमारप्पा गाधीजी के विचारो के बारे मे यकीनन मुझसे कही ज्यादा बोलने का हक रखते है। ग्रामोद्योग के काम मे उनका गाधीजी के साथ बरसो से नजदीक का ताल्लुक रहा है। इसलिए ग्रामोद्योगो और उनके बारे मे गाधीजी के विचारो के सबध मे बोलने का उन्हे पूरी तरह हक है।

योजना-समिति मे मैने जो कुछ कहा, वह यह था कि काग्रेस ने कभी भी अपने-आपको बडे पैमाने के उद्योगो के खिलाफ घोषित नही किया, लेकिन बहुत-सी वजहो से, जिन्हे मै ठीक समझता हू, उसने कुटीर-उद्योगो पर जोर दिया है। निजी हैसियत से मेरा बडे पैमाने के उद्योगो को बढ़ाने मे विश्वास है। ताहम मैने राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक कारणो से खादी-आदोलन और बडे ग्रामोद्योगो की पूरे दिल से हिमायत की है। मेरे खयाल मे दोनो के बीच जरूरी तौर पर झगडा नही है, हालाकि कभी-कभी दोनो को किस तरह बढाया जाय या उनके किन्ही खास पहलुओ के बारे मे झगडा हो सकता है। इस मामले मे मै ज्यादा हद तक गाधीजी के दृष्टिकोण की नुमाइदगी नही करता हू, लेकिन व्यवहार मे दो दृष्टिकोणो मे अभी तक

कोई खास झगडा नही रहा है ।

मुझे यह साफ दिखाई देता है कि कुछ जरूरी और खास उद्योग—प्रतिरक्षा उद्योग, और लोक-सेवा के काम तो बडे पैमाने पर ही होने चाहिए। कुछ दूसरे उद्योग ऐसे है, जो बडे पैमाने पर या घरेलू उद्योगो के पैमाने पर हो सकते है। घरेलू उद्योगो के बारे मे जुदा-जुदा राये हो सकती है। इस मतभेद के पीछे दृष्टिकोण और जीवन-दर्शन का मतभेद है और जहातक मैं श्री कुमारप्पा को समझा हू, उन्होने दृष्टिकोण के इस भेद पर ही जोर दिया है। उनका नुक्ता यह था कि बडे पैमाने की मौजूदा पूजीवादी प्रणाली बटवारे के मसले को नजरदाज कर देती है और इसकी बुनियाद हिसा पर है । इसने मै पूरी तरह एकराय हू । उनका हल यह था कि छोटे-छोटे उद्योगो के बढने से बटवारा ज्यादा ठीक होता है और हिसा का तत्व बहुत कम हो जाता है। मै इससे भी सहमत हू, लेकिन इससे हम बहुत दूर नही जा पाते है। हिसा, एकाधिकार और सम्पत्ति का एक जगह सग्रह, ये मौजूदा आर्थिक ढाचे से पैदा हुए है। बडे पैमाने के उद्योगो से अन्याय और हिसा नही होती, लेकिन पूजीपतियो और पैसा लगानेवाले लोगो द्वारा बडे उद्योगो के दुरुपयोग से अन्याय और हिसा होती है। यह सच है कि मशीन आदमी की ताकत को बेहद बढा देती है, निर्माण और विनाश दोनो के लिए। मेरे विचार से पूजीवाद के आर्थिक ढाचो को बदलने से मशीन के बुरे इस्तेमाल और हिसा को मिटाया जा सकता है। निजी मिलकियत और लोभ पर समाज के जिस ढाचे की बुनियाद है, वह जरूरी तौर पर होड से पैदा होनेवाली हिसा को बढावा देता है। समाजवादी समाज मे यह बुराई चली जायगी, साथ ही हमारे लिए वह अच्छाई रह जायगी, जिसे बडी मशीन लाती है।

मै सोचता हू, यह सच है कि बडे उद्योग और बडी मशीन मे कुछ खतरे विरासत मे आते है। शक्ति के एक जगह इकट्ठी हो जाने की प्रवृत्ति होती है। मुझे पक्का यकीन नही है कि इसे पूरी तरह खत्म किया जा सकता है। लेकिन मै दुनिया या किसी तरक्की-पसद मुल्क की कल्पना नही कर सकता, जो बडी मशीन को तिलाजलि दे सके। अगर यह मुमकिन हो तो इसका नतीजा होगा उत्पादन का बुरी तरह नीचे गिरना और इस तरह जिदगी

के मानदण्डो का नीचे चला जाना। एक मुल्क के लिए उद्योगीकरण से दूर रहने की कोशिश करने का नतीजा यह होगा कि वह आर्थिक तथा अन्य प्रकार से दूसरे ज्यादा उद्योग-धधोवाले मुल्क का शिकार हो जायगा और वे इसका शोषण करेगे। छोटे-छोटे उद्योग-धधो को बडे पैमाने पर बढाने के लिए, जाहिर है कि राजनैतिक और आर्थिक सत्ता जरूरी है। यह नामुमकिन है कि जिस मुल्क ने अपनेको पूरी तरह छोटे-छोटे उद्योग-धधो मे लगा दिया है, वह कभी भी इस राजनैतिक या आर्थिक सत्ता को हासिल कर सके और इसका असर यह होगा कि वह जैसे चाहता है उस तरह छोटे-छोटे उद्योग-धधो को भी आगे नही बढा सकेगा।

इसलिए मै महसूस करता हू कि बडी मशीन को बढाना और उसका इस्तेमाल करना और इस तरह हिदुस्तान का उद्योगीकरण करना उचित और अनिवार्य है। साथ ही मै इस बात का भी कायल हू कि चाहे कितना ही उद्योगीकरण हो जाय, हिदुस्तान मे छोटे-छोटे उद्योगो को बढाने की जरूरत से मुह नही मोडा जा सकता, और वह भी सिर्फ सहायक उद्योग के रूप मे नही, बल्कि अलग इकाइयो के रूप मे। मै नही जानता कि अगली एक-दो पुश्तो मे विज्ञान क्या कर दिखायगा, लेकिन जहातक मुझे दिखाई देता है, बडे उद्योगो के साथ-साथ हिदुस्तान के लिए छोटे-छोटे उद्योग भी जरूरी रहेगे और उन्हे हर तरह से बढावा मिलना चाहिए। इसलिए मसला दोनो के बीच ताल-मेल बिठाने का है। यह राज्य की ओर से योजना का सवाल है। आज की अव्यवस्थित पूजीवादी प्रणाली मे इसको सतोपजनक ढग पर सफलतापूर्वक नही किया जा सकता।

इस सवाल पर अपने विचार मैने थोडे मे जाहिर करने की कोशिश की है। मै किसी दूसरे के विचारो का खुलासा करने की बात नही सोच सकता हू, लेकिन मै महसूस करता हू कि छोटे उद्योगो की वकालत करने-वालो से सहयोग करना आसानी से मेरे लिए मुमकिन है, भले ही मै उनके बुनियादी दृष्टिकोण को स्वीकार न कर सकू।

बदकिस्मती से हमारा साबका इस समय समाजवादी राज्य से नही पड रहा है, लेकिन हम बदलती हुई हालत मे से गुज़र रहे है, जबकि पूजीवादी निजाम टूट रहा है। इसमे अनेक मुसीबते उठ खड़ी होती है। जो हो, यह

साफ है कि आज भी जो उसूल लागू किये जाय वे वही हो, जो काग्रेस ने रखे हैं, यानी बुनियादी उद्योग-सेवाए, यातायात वगैरा राज्य के अधीन या नियत्रण मे हो। अगर बुनियादी उद्योगो मे सभी महत्त्वपूर्ण उद्योग आ जाते है तो हमें बहुत हद तक समाजीकरण हासिल हो जाता है। हमारी नीति के जरूरी नतीजे के तौर पर मै यह भी कहूगा कि जहा निजी स्वामित्व के बडे उद्योग और छोटे उद्योग मे झगडा हो, वहा वह बडा उद्योग राज्य का हो जाना चाहिए या उसपर राज्य का नियत्रण रहना चाहिए। उस हालत मे राज्य को किसी भी नीति को, जो कि वह निश्चित करता है, अख्तियार करने की ताकत और छूट होगी, और वह दोनो का तालमेल बिठा सकेगा।

पिछले बीस वर्षो मे काग्रेस की नीतियो के काफी तजुर्बे की बुनियाद पर मै विश्वास के साथ कह सकता हू कि छोटे उद्योग हिंदुस्तान के लिए बडे आर्थिक और सामाजिक लाभ के रहे है। यह बिल्कुल सही है कि काग्रेस यह मानकर चली है कि बडे पैमाने के उद्योग अपनी देख-भाल करने के लिए काफी मजबूत है और इसलिए ज्यादा ध्यान छोटे उद्योगो पर दिया जाना चाहिए। इस बात को मुनासिब सदर्भ मे समझने की जरूरत है। हमारा सगठन तो गैर-सरकारी है और राज्य का आर्थिक ढाचा हमारे नियत्रण से एकदम बाहर है। ऐसी हालत मे बडे पैमाने के उद्योगो को बढावा देने का मतलब निजी निहित स्वार्थों को बढावा देना होता है, अक्सर विदेशी निहित स्वार्थो को। हमारा मकसद सिर्फ यही नही है कि हिंदुस्तान की बेकार पडी इन्सानी ताकत और साथ ही बडी तादाद मे लोगो के बेकार वक्त का इस्तेमाल करके पैदावार को बढावे, बल्कि हिंदुस्तान की जनता मे अपने पैरो पर खडे होने की ताकत भी पैदा करे। काग्रेस ने इसमे बडी हद तक कामयाबी हासिल की है।

इस विषय पर महज सिद्धान्त के रूप मे, हवा मे, विचार नही किया जा सकता, बल्कि इसका ताल्लुक उन परिस्थितियो और जीवन के तथ्यो के साथ होना चाहिए, जो मुल्क मे मौजूद हो। हम मानवीय तथ्य को कभी नजरदाज नही कर सकते। आज चीन मे छोटे उद्योगो की तरफ कोई खास झुकाव नही है। लेकिन हालातो ने चीनियो को अपने गावो के उद्योग-धधो और सहकारी सस्थाओ को तेजी के साथ बढाने के लिए मजबूर कर दिया

है। हमारे गावो के उद्योग-धधो के आदोलन मे चीन की बहुत दिलचस्पी है और मुझसे उन्होंने कहा था कि हम उद्योग-धधो के अपने कुछ विशेषज्ञो को चीन भेजे। मुमकिन है कि कुछ अच्छे चीनी विशेषज्ञ भी हमारे गाव के उद्योग-धधो के तरीको को समझने आये।

प्रोफेसर साहा कहते है कि गाव के उद्योग-धधे पुराने तरीको पर ही निर्भर नही रहने चाहिए। कोई भी नही कहता कि वे रहने चाहिए। विज्ञान की नई-से-नई तकनीक का फायदा उठाया जाना चाहिए। परन्तु ऐसा करने मे यह याद रखना चाहिए कि गाववालो के लिए क्या सभव है और क्या साधन उनके पास है। अगर कोई चीज उनकी पहुच के बाहर है तो वह व्यावहारिक नही है। अगर बिजली बहुत सस्ती हो और गावो मे आसानी से पहुचाई जा सके तो उससे पूरा फायदा उठाना चाहिए। अगर गाव के उद्योग के लिए नई तरह की मशीन ज्यादा खर्चीली हो या जो गाव मे आसानी से न सुधारी जा सके तो मौजूदा हालत मे यह गाववालो के लिए ज्यादा अच्छी नही है। मामूली पुराने ढग की सादी मशीन, जैसे मामूली चर्खा, न-कुछ मे से कुछ पैदा कर देती है, क्योंकि उसपर गाववाला खाली या बेकार घटो मे काम करता है। उस गाववाले को जरूर उससे अच्छी मशीन दीजिये।

जापान की जो मिसाल प्रो साहा ने दी है, वह बहुत ठीक नही है। वहा छोटे-छोटे उद्योग नही है, लेकिन विकेन्द्रित उद्योग है। इसमे शक है कि बडे पैमाने के भरे-पूरे उद्योगो के मुकाबले इन्हे कितनी तरजीह दी जा सकती है।

प्रो साहा सोचते मालूम होते है कि हिंदुस्तान मे कुछ लोग यह महसूस नही करते कि बुनियादी उद्योगो का नियत्रण विदेशी शोषको के हाथो मे है। वे हमारे नेताओ पर इल्जाम लगाते है, मानो इनमे उनकी मजूरी हो। दरअसल यह गैर-मामूली बात है और यह जाहिर करती है कि हिंदुस्तान मे क्या हो रहा है, इसकी जानकारी प्रो साहा को नही है। यह छोटे या बडे उद्योग का सवाल नही है। हमारे उद्योग मे विदेशी निहित स्वार्थों के दखल की हर हिंदुस्तानी निन्दा करता है, और उन्हे रोकने के लिए लगातार कोशिशे की गई है। प्रो. साहा बिना तहकीक भी जानकारी

के यह भी कहते हैं कि काग्रेस के मन्त्री उद्योगपतियो के (जिनमे ज्यादातर विदेशी है) हाथो की कठपुतली-मात्र है। यह सच है कि हमारे मन्त्री कई तरह से परिस्थितियो के हाथो की कठपुतली है और वे जिस तरह चाहते है उस तरह काम नही कर सकते। आज हर सरकार पूजीवादी आर्थिक ढाचे के चगुल मे फसी है, परन्तु यह कहना कि हमारे नेता मुगल बादशाहो के जैसा अपराध कर रहे है और विदेशी व्यापार यूरोप के व्यापारियो के हाथो मे जाने दे रहे है अचरजभरा है, और हिंदुस्तान के हाल के इतिहास की तमाम राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक घटनाओ की जानकारी की कमी को जाहिर करता है।

यह विपय बहुत बडा है। मैने तो सिर्फ एक या दो पहलुओ को छुआ है, जो मुझे सूझे। यह विपय तो इस तरह का है कि जिसपर चर्चा हो और पूरी तरह से हो, लेकिन यह बदकिस्मती है कि प्रो साहा का खत ऐसी भावना से लिखा गया है, जो वैज्ञानिकता या तटस्थता से बहुत दूर है।

तुम्हारा,
जवाहरलाल

श्री कृष्ण कृपालानी
शातिनिकेतन, बगाल।

२७५. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

हाउस ऑव कामन्स
११ अक्तूबर १९३९

प्रिय नेहरू,

मै इस इन्तजार मे रहा हू कि आपकी ओर से बाते कुछ अधिक निश्चित होती हुई दिखाई दे तब मै आपको पत्र लिखू। मै जो कुछ भी यहा कर सकता था, करता रहा हू। मै जेटलेन्ड से मिला था और मैने उन्हे स्थिति की गम्भीरता को समझाने की चेष्टा की। मैने अपनी ओर से कुछ सुझाव भी रखे, जो कि उन सुझावो जैसे है, जिन्हे (जैसाकि अब मुझे कृष्ण से मालूम हुआ है) आपने स्वीकार कर लिया है। जेटलेन्ड ने खुद कहा कि इन सुझावो को वह तार से वाइसराय के पास भेज देगे और मुझे उम्मीद है कि उन्होने ऐसा किया भी है। लेकिन यह बात वाइसराय के साथ आपकी पहली मुलाकात से एक दिन पहले की है। मै समझता हू कि हमे यहां काग्रेस के कार्य के लिए

बहुत काफी प्रचार करने मे सफलता मिली है, जिसे मैं दूसरी स्थितियो को ध्यान में रखते हुए आश्चर्यजनक रूप से अच्छा मानता हू। लेकिन स्वभावतः हम जनता के मत पर बहुत ज्यादा दबाव डालने की आशा नही कर सकते। मन्त्रिमडल के सदस्यो के सामने मैंने देश-विदेश और युद्ध की सामान्य स्थिति के बारे मे जो बहुत-से विवरण उपस्थित किये है उनमे मैंने लोकतन्त्र और स्वतन्त्रता के तर्क की भी चर्चा करने की चेष्टा की है, जैसाकि वह हिंदुस्तान के प्रति हमारी प्रवृत्ति से सिद्ध होता है। इसलिए मुझे विश्वास है कि सम्भावित परिणामो की ओर से मन्त्रिमडल पूरी तरह से सचेत है, यद्यपि मुझे इस बात का निश्चय नही है कि असल मे जो वास्तविक स्थिति पैदा हो रही है उसकी यथार्थता की ओर से वे लोग अभी जागरूक हुए है या नही। मजदूर-दल, जिसका कि आप जानते है, मैं अब सदस्य नही रह गया हू, एक बहुत ही अच्छा और सहायक दृष्टिकोण अपना रहा है और वह सरकार पर दबाव भी डाल रहा है। मुझे उम्मीद है कि कुछ ही दिनो मे हम इस मामले को कामन्स-सभा मे खोलकर रख देगे, क्योंकि उससे और भी अधिक प्रचार होगा।

लेकिन इन बातो के बावजूद, इस प्रकार से एक निरर्थक सकेत-मात्र से कुछ अधिक की आशा रखना सम्भव से बहुत ज्यादा की उम्मीद करना होगा। विंस्टन चर्चिल के मन्त्रिमडल मे आ जाने से भारतीय स्वतन्त्रता के समर्थकों की सख्या बढी नही है, फिर भी यह एक अच्छी बात है कि वह सब बातो को यथार्थता की दृष्टि से देखते है। अपनी इसी यथार्थवादी प्रवृत्ति के कारण ही उन्हे रूसी मामलो में दूसरो की अपेक्षा अधिक कीर्ति मिली है।

ऐसे समझौते की आशा नही की जा सकती, जिसपर यहा के सब लोग सहमत हो, और ऐसी हालत मे, मुझे डर है—मैं समझता हू कि आपको भी उतना ही डर होगा—कि हिंदुस्तान मे एक बार फिर हिंसात्मक दमन का चक्र चल पडेगा।

अब मैं दो-चार शब्द यूरोप की स्थिति के बारे मे कहना चाहूगा, जैसीकि वह आज दिखाई देती है। मुझे उम्मीद है कि आपने 'ट्रिब्यून' में मेरे लेख देखे होगे और उनसे आपको इस बात का सकेत मिल गया होगा कि मेरा दिमाग किस दिशा मे कार्य कर रहा है, यद्यपि आपको यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारे पीछे सेंसर मडराता रहता है। मैंने जो कुछ भी लिखा है उसमे सेंसर के लोगो ने अभी तक कुछ अधिक या महत्वपूर्ण परिवर्तन नही किया है। लेकिन कुछ मामलो मे हम राय देने के लिए इतने स्वतत्र नहीं है, जितने कि होने चाहिए। जबतक मैं युद्ध का समर्थन कर रहा हू तबतक निश्चय ही मुझे कोई ऐसी बात नही कहनी चाहिए जिसको जर्मनी का रेडियो इस देश के खिलाफ उद्धृत कर सके।

यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि जर्मनी और रूस मे नई जागृति के कारण वहा की स्थिति मे परिवर्तन आगया है। फ्रास की सरकार द्वारा अपने यहा के सबसे बडे राजनैतिक दल का दमन, इटली के साथ पुन मैत्री की स्थापना और हिंदुस्तान तथा औपनिवेशिक समस्याओ के प्रति हमारी सरकार का रुख, इन सभी बातो से यह पता लगता है—जैसाकि कल दस्तादिये ने कहा था—कि यह युद्ध सिद्धान्तो का युद्ध नही है। मैं समझता हू कि यह एक बहुत ही घातक और दु खदायी स्वीकारोक्ति है। कुछ लोग अब भी सोचते है कि हम लोकतत्र और स्वतत्रता के सिद्धान्तो के लिए लड रहे है, किन्तु अब यह बिल्कुल स्पष्ट होगया है—जैसा कि पहले भी हो चुका है—कि इस बहाने साम्राज्यवाद अपने जीवन के लिए लड रहा है। यह जीवन का सघर्ष है और यह बहुत ही गम्भीर होगा, खास तौर से अगर रूस और जर्मनी हमारे विरुद्ध मोर्चा ले ले, जो कि बिल्कुल भी असम्भव नही है। इसलिए हमारे लिए यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदुस्तानी जनता के साथ ठीक सम्बन्ध बनाये रखने के लिए हम जो कुछ भी कर सकते है, करे।

जबतक ब्रिटिश सरकार अपने युद्ध-सम्बन्धी उद्देश्यो के बारे मे पहले

से अधिक निश्चित और स्पष्ट वक्तव्य नही देगी और जबतक ये घोषित उद्देश्य अबतक के खोखले शब्दो को असलियत का जामा नही पहनायेगे तबतक निश्चय ही इस देश मे बहुत बडा और गहरा मतभेद बना रहेगा। इसका सकेत अभीसे मिलने लगा है और चाहे कैसा भी दमन-चक्र क्यो न चलाया जाय, वह स्थिति को और भी अधिक बिगाडने के अतिरिक्त और कुछ नही कर सकता।

दुर्भाग्य की बात है कि पिछले कुछ वर्षो मे राजनीति का जो रूप रहा है उससे यहा की सरकार के पैर और भी मजबूत हो गये है और फिल-हाल उसमे कोई परिवर्तन आने की आशा नही है। लेकिन जबतक ऐसा परिवर्तन नही होगा तबतक इच्छित लाभ प्राप्त नही हो सकता।

आज की बहुत ही अन्धकारपूर्ण विचारधारा मे एक उज्ज्वल रेखा यही है कि अधिकाश जनता, जिनमे कुछ कट्टर-से-कट्टर अनुदारदली भी है, इस बात को महसूस करने लगे है कि हमारी पुरानी सभ्यता खत्म हो चुकी है और अब वे उस नई सभ्यता का निर्माण करने मे हाथ बटाने को तैयार है जिसकी उन्नति के रास्ते मे किसी भी निहित स्वार्थ को बाधा नही डालने दी जा सकती, यहातक कि उनके अपने निहित स्वार्थो को भी नही। यह एक बहुत ही उल्लेखनीय और स्पष्ट परिवर्तन है। ये लोग इस बात को जानने के लिए बडे चिन्तित है कि आखिर हम लोग किस बात के लिए लड रहे है। अपने युद्ध-उद्देश्य के बारे मे हमने जो नीति प्रकट की है, अगर युद्ध उसीके आधार पर चलता रहा तो इसमे सन्देह नही कि यहा और हिदुस्तान मे दोनो ही जगह झगडे उठ खडे होगे। यह बात मै यहा की सरकार को समझाने की पूरी कोशिश करता रहा हू और मुझे विश्वास है कि यहा के मन्त्रिमडल मे भी अब कुछ-कुछ जागृति पैदा होगई है। कठिनाई यह है कि सदा की तरह इस जागृति के आने मे इतनी देर लग जायगी कि फिर बिगडी बात बन नही सकेगी। यह भी एक कारण है जिससे मै उम्मीद करता कि काग्रेस अपनी घोषणा पर एक चट्टान की तरह अडिग रहेगी, क्योकि उससे हम लोगो को भी सरकार को यह समझाने मे सहायता मिलेगी कि कुछ-न-कुछ निश्चयात्मक रूप मे अवश्य करना चाहिए। केवल अस्पष्ट गोलमोल घोषणाओ पर ही भरोसा नही रखा जा सकता।

आपको और काग्रेस को मेरी शुभ कामनाए। काश कि आप और हम मिलकर विस्तार के साथ बातचीत कर सकते!

आपका,
स्टैफ़र्ड क्रिप्स

२७६. रोजर बाल्डविन की ओर से

न्यूयार्क सिटी
१२ अक्तूबर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

'विश्व-इतिहास की झलक' के अग्रेजी सस्करण की आपने जो प्रति भेजी है उसके लिए अत्यत कृतज्ञ हू। पुस्तक-प्रकाशन की दृष्टि से ही नही, बल्कि विद्वत्तापूर्ण खोज और आकर्षक अभिव्यक्ति की दृष्टि से भी यह एक अद्भुत कृति है।

मुझे यह सोचकर आश्चर्य होता है कि जेल के एकान्त मे आप कैसे इतनी सामग्री एकत्र कर सके और उसे इतनी सफलता के साथ छाट सके। मै तो ऐसा काम करने मे घबरा जाऊगा और मुझे तो यह काम जीवनभर का काम मालूम देगा। अमरीका के सम्बन्ध मे आपने जो टीका-टिप्पणी की है, उसे मैने बडी दिलचस्पी के साथ पढा है और मै उससे पूरी तरह सहमत हू। आज से एक साल पहले युद्ध के कगार पर खडे, कापते ससार के सम्बन्ध मे भी मैने आपका सुन्दर परिच्छेद पढा है।

अब जबकि वह कगार को पार कर चुका है, मै समझता हू कि हम सब लोग इतिहास के सबसे सहारकारी परिवर्तनो की धारा मे बह रहे है और इस बात का पूरा-पूरा खतरा है कि हम लोग विश्व-सघ के तट की ओर नही जायगे, जहा स्थायी शान्ति के लिए निश्शस्त्रीकरण और स्वतत्र व्यापार आवश्यक माना गया है, बल्कि नई तानाशाहियो की स्थापना की दिशा मे जायगे। मै स्वभाव से आशावादी हू, लेकिन आजकल समय बडा कठोर है। समाचारपत्रो के पढने से मुझे ऐसा लगता है कि हिदुस्तान मे भी यही दशा है। काग्रेस की कार्रवाइया और उसके अनेकानेक विरोधी तत्वो के समाचार भी यहा काफी विस्तार के साथ छपते है। इन समाचारो मे आपके भी

उल्लेखनीय कार्यों के समाचार होते है।

हार्दिक शुभकामनाओ सहित,

आपका मित्र,
रोजर बाल्डविन

२७७. रघुनन्दनशरण की ओर से

[रघुनन्दनशरण दिल्ली के एक प्रमुख उद्योगपति थे। वह यहां के प्रमुख कांग्रेसी भी थे। नवाबजादा से मतलब लियाकतअली खां से है, जो बाद में पाकिस्तान के प्रधान मंत्री बने।]

दिल्ली
निजी और गोपनीय १४ अक्तूबर १९३९

प्रिय पडितजी,

आपके दिल्ली से चले जाने के दो दिन बाद मे नवाबजादा से, उनके द्वारा फोन से बुलाये जाने पर, मिला। हालाकि किसी खास चीज पर हमने चर्चा नही की, तो भी मेरे लिए यह साफ था कि वह जानना चाहते है कि क्या मि जिन्ना से आपकी बातचीत और आगे बढेगी या नही। यह भी साफ तौर से मालूम होता था कि वह हिन्दू-मुस्लिम सवाल का हल सच्चे दिल से चाहते है।

इसके कुछ ही समय बाद सुभाष दिल्ली आये। आने के थोड़ी देर बाद ही उन्होने मुझे फोन किया और कहा कि मै उनसे फौरन मिल लू। मै तुरन्त उनसे मिलने चला गया और आपसे हुई मुलाकात के बारे में जितना थोडे मे हो सकता था, उतने मे उन्हे बता दिया। उनपर यह गलत छाप जान पडती थी कि 'स्टेट्समैन' मे प्रकाशित खबर किसीके उकसाने से छपी है। मैने उन्हे बताया कि ऐसा नही है। वाइसराय से मिलने से पहले वह मि जिन्ना से नही मिल सके। उनके पास इनके लिए समय नही था। यहापर यह कहा जा सकता है कि मि जिन्ना चाहते थे कि इससे पहले कि वह वाइसराय-भवन के लिए रवाना हो, उनसे मिल लें।

इसलिए वह दोपहर वाद मिले। रात को लाला शकरलाल ने मुझसे कहा कि हाई कमाण्ड में विश्वास का नितात अभाव समझौते के मार्ग मे रुकावट था और अगर सारी वाते सुभाष पर छोड दी जाती तो जो होता, समझौते पर पहुचने मे कोई दिक्कत न होती। मुझे तो वस्तुत इसपर विश्वास करना ही मुश्किल होगया, इसलिए दूसरे दिन सुबह मै सुभाष से मिला। उन्होने भी कम-ज्यादा वही वात मुझे वताई, जो पिछली रात को लाला शकरलाल ने कही थी। इसपर मैने उनसे पूछा कि क्या मि जिन्ना आपपर उतनी पूरी तरह अविश्वास करते है, जितने कि आपके साथी? इस सवाल से थोडा घवराते हुए उन्होने उत्तर दिया कि अगर आप सबसे पहले अपने साथियो को किसी ऐसे समझौते को मानने के लिए राजी कर सकते है, जिसपर आप मि जिन्ना से व्यक्तिगत वातचीत के परिणाम पर पहुच सके तो आप मि जिन्ना से अपनी वातचीत उपयोगितापूर्वक आगे वढा सकते है। उन्होने मि. जिन्ना को झूठे अभिमान का साक्षात अवतार वताया और यह भी कहा कि सफलतापूर्वक उनसे कैसे निवटना चाहिए, यह केवल वही जानते है। मैने कहा कि अगर मि जिन्ना से आगे वातचीत करने का मौका आया तो उनकी सेवाए आपको अवश्य सुलभ रहेगी। परन्तु उन्होने कहा कि जहातक कांग्रेस का सबध है, वहा वह कुछ भी नही है, इसलिए वह इस वातचीत मे अच्छी तरह भाग नही ले सकेगे। मैने उनसे कहा कि वास्तव मे यह तो कोई वाधा है नही। फिर भी उन्होने मुझसे कहा कि मै उनसे शाम को, उनके मि जिन्ना से मिलने के वाद, मिलू। मैने ऐसा ही किया। उन्होने मुझसे कहा कि मि जिन्ना आपसे मिलकर और मामले पर आगे चर्चा करके खुश होगे, वशर्ते कि कार्यसमिति आपको औपचारिक या अनौपचारिक रूप से उनसे वात करने का अधिकार दे दे।

सच पूछिये तो सुभाष ने जो कुछ कहा, उसपर मुझे जरा भी विश्वास नही हुआ। इसके लिए मेरे पास उचित कारण है। कुछ समान दोस्तो ने मुझे वताया कि मुलाकात का मि जिन्ना पर अनुकूल असर हुआ और उन्हे उम्मीद है कि वातचीत फिर आगे वढाई जायगी। इसकी पुष्टि करने के लिए मै नवावजादा से फिर मिला। वडी भावना के साथ

अपनी बातचीत की शुरुआत करते हुए उन्होने कहा कि अगर हमारे नेता सिर्फ इस मौके पर अपने-आपको जरा ऊपर उठा ले तो हम इस बडे मौके का आजादी हासिल करने मे कामयाबी के साथ फायदा उठा सकते है। आखिर यह साम्प्रदायिक सवाल ऐसा नही है, जिसे हल न किया जा सके। मैने उन्हे विश्वास दिलाया कि मै भी उनकी भावनाओ को सही मानता हू और सभी सही तौर पर सोचनेवाले लोग ऐसा ही कहेगे। फिर मैंने उनसे पूछा कि आपकी और मि जिन्ना की बातचीत, जो इतनी खुशी के साथ शुरू हुई थी, न्यायसगत समाप्ति तक क्यो नही बढ सकी ? उन्होने थोडा आश्चर्य प्रकट किया और कहा कि मि जिन्ना ने वुनियादी सवालो के बारे मे अपने विचार आपको पूरी तरह बता दिये है, अब अगला कदम आपको उठाना है। यह फैसला आपको करना है कि उन्होने जो आधार बताये है वे आपको मजूर है या नही ? उन्होने यह भी कहा कि जहातक मि जिन्ना का ताल्लुक है, उनका रुख बडा दोस्ताना और गभीर है और जहातक सभव होगा, वह झगडे के मुद्दो को टालेगे। उन्होने यह भी कहा कि सब लोगो मे इस काम के लिए सबसे काबिल और उनकी पसदगी के आदमी आप ही है। नवाबजादा ने बताया कि अभी जैसा प्रोग्राम है, उसके मुताबिक मि जिन्ना अभी कुछ दिन दिल्ली मे ही ठहरेगे। अगर इस बारे मे कुछ करना है तो सरकार की तरफ से कुछ ऐलान होने से पहले ही हो जाना चाहिए। अगर आप समझे कि मि जिन्ना के साथ आपकी बातचीत से कुछ फायदा होगा तो कृपया मुझे खबर कर दे। जैसी हिदायत होगी, मै वैसा ही करूगा।

शायद आपको यह जानना दिलचस्प लगेगा कि मुफ्ती किफायतुल्ला और जमीयत-उल-उलेमा के दूसरे नेताओ से सुभाषबाबू मिले थे। उन्होने इनसे यह आश्वासन चाहा कि वह फारवर्ड ब्लाक का समर्थन करेगे। सुभाप ने साफ तौर पर उन्हे जता दिया कि काग्रेस अब आगे जो भी निश्चय करे, वह तो सरकार से लड़ेगे ही। अब ब्रिटिश सरकार से कोई समझौता करने मे वह शरीक नही होगे। मुफ्तीसाहब ने उन्हे सलाह दी है कि वह तसल्ली से तबतक इतजार करे जबतक कि काग्रेस कोई फैसला न कर ले। जल्दबाजी करने से कोई फायदा नही होगा। उचित यही होगा कि

सारे राष्ट्रीय सगठन मिलकर काम करें। सुभापबाबू कुछ निराश से होकर ही लौटे है।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा।

सादर आपका,
नन्दन

२७८ रघुनन्दनशरण की ओर से

दिल्ली
१७ अक्तूबर १९३९

प्रिय पण्डितजी,

आपका कृपा-पत्र मिलते ही मैंने नवाबजादा से सम्पर्क स्थापित किया। उन्होने मुझे फोन किया और कहा कि मि जिन्ना इस मामले पर मुझसे वातचीत करना चाहेगे। इसलिए मै गया और उनसे वातचीत की। अभी लौटा हू और अब आपको लिख रहा हू।

वह मुझसे बडी सौजन्यता और गहरी भावनाओ के साथ मिले और वातचीत की शुरुआत १९२२ के साल के प्रसग की याद दिलाते हुए की, जबकि मै उनसे और उनकी पत्नी से खूब मिला करता था। उन्होने वातचीत भावनापूर्ण ढग और खुले दिल से की। वह खासतौर पर अच्छे मूड मे थे और विनोदी मालूम पड रहे थे। शुरु मे ही उन्होने मुझसे आपको झूठी वातो और गप्पो के खिलाफ चेतावनी देने के लिए कहा। बडे ही स्पष्ट शब्दो मे उन्होने कहा कि सुभाष और उनके लोग जो कुछ कह रहे है, उसमे एक शब्द भी विश्वास करने का नही है। उन्होने कहा कि मै यह सोच भी नही सकता कि मैंने किसीसे कहा हो कि कार्य-समिति के सदस्यो मे मेरा विश्वास नही है। इसके विपरीत उन्होने कहा कि वर्किंग कमिटी के अधिकाश सदस्यो को तो वह बहुत आदर की दृष्टि से देखते है। आपके बारे मे वातचीत करते हुए उन्होने कहा कि आपके लिए उनमे बडा स्नेह है और आपके चरित्र और ईमानदारी के प्रति उनके दिल मे बडी इज्जत है। फिर उन्होने कहा कि हिन्दू-मुस्लिम मसले के बारे मे अपनी तरफ से उन्हे जो कुछ कहना था वह कह चुके है, अगले कदम का दारोमदार आपपर है। असल मे उन्होने कहा कि उन्होने निश्चित रूप से आपसे अनुरोध किया है कि आप अपने साथियो

से मशविरा कर ले और फिर बातचीत को आगे बढावे । वाइसराय के साथ बातचीत के बारे मे उन्होने आपसे कहा था कि अगर जरूरत हुई तो इस मुलाकात के बाद वह आपसे सपर्क कर लेगे । आपके अपने साथियो से मशविरा कर लेने के बाद वह पूरी अपेक्षा रखते है कि हिन्दू-मुस्लिम मसले पर चर्चा करने के लिए वह फिर सम्पर्क करेगे । उन्होने कहा कि यह बडे दु ख की बात है कि मामला दोस्ती की भावना से नही सुलझाया जा सका । उन्होने बताया कि हमारे बीच उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव का-सा फासला नही है । जितना हम सोचते है उससे ज्यादा हम एक-दूसरे के नजदीक है । उन्होने कहा कि आपके साथ बातचीत का सूत फिर से जोडने का वह दरअसल स्वागत करेगे । वह यहा कम-से-कम २२ तक रहेगे । उन्होने २२ ता. को वर्किंग कमिटी की बैठक दिल्ली मे बुलाई है । इसके बाद वह कहा-कहा जायगे, यह वह ठीक-ठीक नही जानते ।

एक समाचार-पत्र का प्रतिनिधि वाइसराय के बयान अथवा कहू, वाइसराय की उस घोपणा की, जो अगले दिन सुबह प्रकाशित हो जायगी, खबर पहले से ही उन्हे देने आया था । मेरा विचार था कि सारी चीजो से मि. जिन्ना बहुत दुखी और बेहद निराश थे । जाहिरा तौर से इसका उनपर अच्छा असर पडा । मैने इसे शाम को पढा था और मुझे कहना चाहिए कि मै एकदम निराश हुआ । यह हमारी उम्मीद से ज्यादा खराब है । कोई घोषणा इससे ज्यादा प्रतिक्रियावादी और कमीनेपन से भरी हुई नही हो सकती थी । मुझे तो लगा, मानो जेल जाने के लिए मुझे बिस्तर बाध लेना चाहिए ।

मै यह कहने का साहस करता हू कि आपसी समझ पैदा करने का यही समय है । मि जिन्ना की चित्त-वृत्ति उपयुक्त है । आप उन्हे लिखिये और उनके साथ मुलाकात का इतजाम करा लीजिये । निश्चय ही आप दोनो मिलकर जो समझौता कर लेगे वह दोनो सस्थाओ को स्वीकार होगा ।

आशा है, आप स्वस्थ और अच्छे होगे ।

सादर आपका,

नन्दन

फिर से—

आपको यह बताना रह गया कि मैने दो महत्वपूर्ण नुक्तो पर खास

तौर पर सकेत किया था—एक यह कि मुस्लिम लीग को स्वतन्त्रता के लिए काग्रेस के दावे का समर्थन करना चाहिए, दूसरे उसे अपना यह विचार छोड देना चाहिए कि दो राष्ट्र है, एक हिन्दू और दूसरा मुस्लिम। उसका उन्होने कोई साफ जवाब नही दिया। परन्तु जैसीकि उनकी आदत है, उन्होंने अपना विरोध या नामजूरी जाहिर नही की। इसके विपरीत हमारी बातचीत जारी रही और धीरे-धीरे वह अधिकाधिक मधुर और मैत्रीपूर्ण होती गई, शब्दो और विषय दोनो दृष्टियो से। अपने विचार प्रकट करने के लिए उन्होने अपनी बात जिस तरह पेश की और जो शब्द कहे, उनपर अगर विश्वास किया जा सके तो उनसे समझौता होने मे जरा भी कठिनाई नही होनी चाहिए। लीग के दूसरे खास-खास सदस्यो के मुकाबले, बेहिचक मेरी राय है कि वह उनसे हर तरह से बढकर है। मुझे लगा कि मै सचमुच किसी ऐसे आदमी से बात कर रहा हू जिसके अन्दर कुछ 'दम' है। अगर उन्हे केवल अपने प्रति सहिष्णु बना सके तो उनपर विश्वास और भरोसा किया जा सकता है—यह है वह अचूक राय, जो मैने उनके बारे मे बनाई है।

पत्र-वाहक आपके जवाब के लिए वही रुकेगा। अगर आप मि जिन्ना के नाम कोई पत्र देना चाहें तो इसीके हाथ भेज सकते है और मै ऐसी व्यवस्था कर दूगा कि कोई फौरन जाकर उन्हे दे आये।

सादर आपका,

नन्दन

२७८. मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

लखनऊ,

निजी १८ अक्तूबर १९३९

प्रिय जिन्ना,

नदन ने कल की उनकी और आपकी मुलाकात और बातचीत के बारे मे मुझे लिखा है। मुझे अफसोस है कि कुछ गलतफहमी की वजह से आपने तो यह समझ लिया कि मै दिल्ली मे आपसे फिर मिलूगा और मैने यह समझा कि आप मुझे टेलीफोन करेगे। सचमुच मै आपसे फिर मिलने की उम्मीद कर रहा था और आपकी तरफ से किसी सदेसे के पाने के इतजार में था। यह सही है कि इसका ताल्लुक वाइसराय के साथ बातचीत से था।

हमारी दूसरी बातचीत हालाकि लम्बी थी तो भी मामूली चीजो को लेकर थी और मै इस मामले को ज्यादा गहराई से समझने के लिए दूसरा मौका चाहता था।

मै आपसे खुशी से फिर मिलूगा। अगर अभी मेरे पास वक्त होता तो मै इस काम के लिए दिल्ली चला आता। लेकिन यह मुश्किल मालूम होता है, क्योकि मुझे कल इलाहाबाद जाना है और कुछ घटे वहा ठहरने के बाद काग्रेस वर्किंग कमिटी के लिए वर्धा जाना है। अगले कुछ दिनो मे आप भी बहुत घिरे रहेगे। वाइसराय के बयान के बाद हालत बहुत तेजी से बदल सकती है और आगे के लिए कुछ मन्सूबे बाधना आसान नही है। लेकिन वर्धा की बैठक के बाद मै आपसे बबई या दिल्ली मे, जहा भी आपको सहूलियत हो, मिलने की पूरी कोशिश करूगा। अगर आप जल्दी ही बबई जाते हो तो वर्धा से मै वहा भी जा सकता हू या मै दिल्ली जा सकता हू।

मै आपसे बिल्कुल एकराय हू कि अबतक हिन्दू-मुस्लिम मसले का निपटारा दोस्ताना ढग से नही हो सका। मुझे इस मामले मे बडा ही अफसोस होता है और मुझे अपने पर शर्म आती है, क्योकि इसके हल करने मे मै कोई ठोस मदद नही कर सका हू। मुझे आपके सामने मजूर करना पडता है कि इस मामले मे मुझे अपने ऊपर भरोसा नही रहा, हालाकि आम तौर पर मेरी ऐसी आदत नही है। लेकिन पिछले दो-तीन सालो का मुझपर जबरदस्त असर हुआ है। मेरा अपना दिमाग दूसरी ही सतह पर चलता है और मेरी ज्यादातर दिलचस्पिया दूसरी ही तरफ है। इसलिए हालाकि मैंने इस मसले पर बहुत गौर किया है और उसकी ज्यादातर बारीकियो को समझता हू, फिर भी मुझे महसूस होता है कि मै कोई पराया आदमी हू और मेरे जजबात कुछ दूसरे है। इसलिए मुझे हिचक होती है।

लेकिन इससे कोई हल निकालने मे मदद देने की ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश करने मे कोई रुकावट नही होती और मै जरूर मदद दूगा। मुस्लिम लीग मे आपकी कद्र और असर की वजह से आपके लिए यह काम इतना मुश्किल नही होना चाहिए, जितना लोग सोचते है। मै आपको पूरी ईमानदारी से यकीन दिला सकता हू कि वर्किंग कमिटी के सारे मेंबर दिलोजान से हल निकालना चाहते है। मेरे लिए यह बहुत ही अचरज और अफसोस की

वात है कि हम अवतक इस कोशिश में कामयाव नहीं हुए, क्योंकि आखिर तो झगडे के असली मामले आसानी से निपटाने के काबिल होने चाहिए और है।

इसलिए मैं वर्धा की वैठक के वाद जल्दी-से-जल्दी आपसे मिलने की कोशिश करूगा। मेहरवानी करके अपना प्रोग्राम मुझे वताइये। जव हम मिलेंगे तव मैं खुशी से इस सवाल के तमाम पहलुओं पर चर्चा करूगा। लेकिन मेरे खयाल से आगे चलकर लीग के कुछ नुमाइन्दो का काग्रेस के नुमाइन्दो से मिलना वेहतर होगा। आप जरूर ही समझ जायगे कि फिलहाल मेरा दिमाग तेजी से हो रहे वाकयात से भरा है। मैं नही जानता कि अगले कुछ हफ्तो के दौरान मे वे हमें कहा ले जायगे। वाइसराय का वयान अपनी साम्राज्यशाही चुनौती की वजह से हम सवको ताज्जुव में डालनेवाला है। जहातक मैं समझ सकता हू, काग्रेस के लिए उनके सुझावो को पूरी तरह नामजूर कर देने के सिवा कोई रास्ता नही है और इसके जरूर ही हमारे और दूसरो के लिए गहरे नतीजे होगे। मैं नही जानता कि आप और मुस्लिम लीग के आपके साथी क्या फैसला करेंगे। लेकिन मैं दिल से यकीन करता हू कि आप भी वाइसराय के वयान पर अपनी जोरदार नामजूरी जाहिर करेंगे और जो ढग उन्होने सुझाया है उसके मुताविक मदद देने से इन्कार कर देंगे। मैं जोर के साथ महसूस करता हू कि ब्रिटिश सरकार ने हम हिदुस्तानियो की शान और खुददारी की वेइज्जती की है। वे मान वैठे है कि हम तो उनके रवैये के पिट्ठू है, जिन्हे जव और जहा वे चाहे हुक्म दे सकते है।

मुझे मालूम नही कि आप लखनऊ का 'नेशनल हेरल्ड' पढते है या नही। मेरा लिखा हुआ एक लेख उसमे आज सुवह निकला है और दूसरा कल सुवह निकलेगा। इन लेखो मे वाइसराय के वयान का मुझपर जो असर हुआ, वह नपी-तुली जवान मे दिया गया है। दोनो लेख इस खत के साथ भेज रहा हू। आपको कल, यानी जुमेरात १९ अक्तूबर को, टेलीफोन करने की कोशिश करूगा। मेरा आगे का प्रोग्राम यह है—इलाहावाद २० अक्तूबर, वर्धा २१ अक्तूवर और इसी तरह आगे।

मुझे आपसे दिल्ली मे मिलकर बहुत खुशी हुई थी ।

आपका,
जवाहरलाल नहरू

मोहम्मदअली जिन्ना,
नई दिल्ली

२८०. महात्मा गाधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२६ अक्तूबर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

मैने देख लिया है कि यद्यपि मेरे प्रति तुम्हारा स्नेह और आदर कायम है, फिर भी हमारे बीच दृष्टिकोण का अन्तर दिन-दिन तीव्र होता जा रहा है। शायद हमारे इतिहास मे यह सबसे नाजुक काल है। जिन अत्यत महत्व-पूर्ण प्रश्नो पर हमारा ध्यान लगा हुआ है उनपर मेरे बहुत प्रबल विचार है। मै जानता हू कि उनपर तुम्हारे भी प्रबल विचार है, परन्तु वे मुझसे भिन्न है। प्रकट करने का तुम्हारा तरीका मुझसे अलग है। मुझे भरोसा नही कि जिन विचारो को मै बहुत प्रबल रूप मे रखता हू उनमे दूसरे सदस्य मेरे साथ है या नही। मै इधर-उधर घूम नही सकता। मै आम लोगो के, काग्रेस के कार्यकर्ताओ के भी, सीधे सम्पर्क मे नही आ सकता। मुझे लगता है कि तुम सबको मै अपने साथ नही रख सकता तो मुझे नेतृत्व नही करना चाहिए। कार्यसमिति के सदस्यो मे अलग-अलग मत नही होने चाहिए। मै महसूस करता हू कि तुम्हे पूरी तरह काम सभालकर देश का नेतृत्व करना चाहिए और मुझे अपनी राय प्रकट करने को स्वतन्त्र छोड देना चाहिए। अगर तुम सबका यह खयाल हो कि मुझे पूरी तरह मौन रखना चाहिए तो मुझे आशा है कि मुझे उसीके अनुसार करने मे कोई कठिनाई नही होगी। अगर जरूरी समझो तो आकर तुम्हे सारी चीज पर चर्चा कर लेनी चाहिए।

प्यार,

बापू

२८१ महात्मा गांधी की ओर से

रेलवे स्टेशन, दिल्ली
४ नवम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे चले जाने के बाद ही कृपालानी ने मुझे बताया कि उत्तर प्रदेश में सविनय भंग के लिए बड़ा जोश और तैयारी है। उन्होंने यह भी कहा कि गुमनाम कागज घुमाये गए है और लोगों से तार काटने और रेलें उखाड़ने के लिए कहा गया है। मेरी अपनी राय यह है कि अभी सविनय भंग के लिए कोई वातावरण नहीं है। यदि लोग कानून अपने ही हाथों में ले लेते हैं तो मुझे सविनय भंग की कमान छोड़ देनी होगी। मैं चाहता हूं कि तुम इस सप्ताह का 'हरिजन' पढ़ो। उसमें इस संबंध में मेरी स्थिति बताई गई है। तुमसे इसीकी चर्चा करने का मेरा इरादा था। परन्तु वह होना नहीं था। हमारे इतिहास के इस नाजुक वक्त में हममें कोई गलतफहमी नहीं होनी चाहिए और संभव हो तो एक विचार होना चाहिए।

प्यार,

बापू

२८२. चू चिया-हुआ की ओर से

कुओमिन्तांग की सेंट्रल एक्जीक्यूटिव कमिटी
चुगकिंग
११ नवम्बर १९३९

श्री जवाहरलाल नेहरू,
स्वराज्य भवन,
इलाहाबाद, भारत

प्रिय श्री नेहरू,

कुछ दिन हुए आपका तार पाकर बड़ी प्रसन्नता हुई थी, जिसमें आपने अपने सकुशल भारत पहुंच जाने की सूचना दी थी। युद्ध की परिस्थिति में आपका यहां आना सदा स्मरण रहेगा। आपकी इस यात्रा ने चीन की जनता पर बहुत ही गहरा और महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

चीन और हिंदुस्तान के जिस पारस्परिक सबध की आपने यहा अपनी यात्रा के समय चर्चा की थी, उसकी वृद्धि के बारे मे आपके विचार बड़े व्यापक और विस्तृत है और उनकी मै हृदय से सराहना करता हू। वे विचार हमारे सुगसाई, जनरल च्याग काई-शेक के निर्देशो के साथ चीनी-हिंदुस्तानी सहयोग-योजना की उस रूपरेखा मे सम्मिलित कर लिये गए है, जिसका मसविदा मैने तैयार किया था। यह रूपरेखा अब स्वीकृत कर ली गई है और उसपर अलग से अमल किया जायगा। उसकी मुख्य बाते ये है—

१. चीन के प्रोफेसर हिंदुस्तान मे और हिंदुस्तान के प्रोफेसर चीन मे विभिन्न विश्वविद्यालयो मे पदग्रहण करे।

२ दोनो देश विद्यार्थियो का चुनाव करके एक-दूसरे के यहा अध्ययन करने के लिए भेजे।

३ प्रकाशित सामग्री का आपस मे विनिमय किया जाय और उनका चीनी या हिन्दुस्तानी भाषा मे अनुवाद किया जाय।

४ सेन्ट्रल न्यूज एजेसी की एक शाखा कलकत्ता मे और एक उप-शाखा बम्बई मे स्थापित की जाय और उनके माध्यम से एक-दूसरे देश की जानकारी प्राप्त की जाय।

५ जाच तथा यात्रा करनेवाले शिष्टमडल एक देश से दूसरे देश मे भेजे जाय अथवा जाच या मैत्रीपूर्ण सम्पर्क के लिए विशेषज्ञ भेजे जाय। इसके अन्तर्गत चीन की ओर से प्रारभिक रूप मे निम्नलिखित कामो की योजना बनाई गई है—

१ हिंदुस्तान जाने के लिए बौद्ध भिक्षुओ के एक यात्री-दल का सगठन।

२ हिंदुस्तान मे कपडे के व्यवसाय, सूती कपडे की सहकारी समितियो और दूसरी औद्योगिक स्थितियो की जाच करने के लिए विशेषज्ञो को भेजना और हिंदुस्तान के उद्योगपतियो तथा कृषि-व्यवसायियो से मिलना एव विचार-विनिमय करना।

३ एक ऐसे दल का सगठन करना जो हिंदुस्तान की यात्रा करके विज्ञान-सबधी बातो की जाच तथा अध्ययन करे।

इनके अतिरिक्त इस साल जब आल इडिया नेशनल काग्रेस का सालाना

जलसा होगा तब हम उस महान अवसर पर अपना एक प्रतिनिधि भेजेगे।

निजी अभिवादन-सहित,

आपका,
चू चिया-हुआ

२८३ महात्मा गाधी की ओर से

सेगाव, वर्धा
१४ नवम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे पत्र नियमित आते रहते है। राजेन्द्रबाबू के नाम तुम्हारा खत मैने देख लिया। उसे देखने से पहले उसपर मै 'हरिजन' के लिए एक टिप्पणी लिख चुका था। मै तुम्हारे पास पेशगी नकल भेजने की कोशिश करूगा।

अगर इलाहाबाद मे तुम्हे मेरी ज्यादा दिन जरूरत हो तो मुझे रख लेना।

हमारे यहा के बयानो के लन्दन म होनेवाले स्वार्थपूर्ण सम्पादन की मुझे चिन्ता नही होती। समय मिला तो 'न्यूज क्रॉनिकल' के लिए एक सक्षिप्त सन्देश लिख डालूगा। उस पत्र की ओर से मुझे समूल्य अधिकार प्राप्त है।

शेष मिलने पर। प्यार,

बापू

महादेव ने मुझे अभी याद दिलाया है कि आज तुम्हे ५० वर्ष पूरे होते है। आशा है, तुम शेष ५० भी पूरे करोगे और वही शक्ति, स्पष्टवादिता और प्रबल प्रामाणिकता कायम रखोगे।

२८४. महादेव देसाई की ओर से

सेगाव, वर्धा होकर
१४ नवम्बर १९३९

सत्रह वर्ष पूर्व हमने तुम्हारी सालगिरह लखनऊ जिला जेल की एक बैरक मे मनाई थी। मुझे मालूम नही कि उस दिन तुम्हे भी कोई कल्पना

होगी कि तुम इतने मशहूर हो जाओगे । लेकिन यदि आध्यात्मिक और बौद्धिक प्रगति नापने मे कोई गणित सभव हो तो तुमने अक-गणित की अपेक्षा रेखागणित के हिसाब से प्रगति की है । ईश्वर करे, तुम्हारे जीवन की दूसरी अर्द्ध शताब्दी मे, जो कल शुरू होती है, तुम्हारी प्रगति इसी गति से जारी रहे और तुम्हारे वे 'मानवीय' गुण ज्यो-के-त्यो बने रहे, जिनके कारण हम-जैसे साधारण लोगो को ऐसा महसूस होता है कि जितनी ऊची उडान तुम करते हो उसके बावजूद हम तुम्हारे बराबर की सतह पर है ।

तुम अधीर होकर कह उठोगे, "ये क्या वाहियात बाते हो रही है ?" फिर भी राष्ट्र के इस शुभ दिन जो सच्ची भावनाए उठ रही है, उन्हीको प्रकट करने का यह एक प्रयत्न है ।

सस्नेह तुम्हारा,
महादेव

२८५. सरोजिनी नायडू की ओर से

हैदराबाद (दक्षिण)
दिवाली, १९३९

मेरे प्यारे जवाहर,

तुम्हारे जीवन की पहली आधी शताब्दी इतिहास, गीत और गाथा बन चुकी है । मेरी कामना है कि उत्तरार्द्ध के प्रारभिक वर्षो मे ही तुम्हारे स्वप्न और कल्पनाए पूर्ण हो और मानव-प्रगति के इतिहास मे तुम्हारा नाम महान मुक्तिदाताओ की सूची मे अमर हो जाय । . .

मै तुम्हारे लिए रीतिसम्मत 'शुभ उपहार' की कामना नही कर सकती । मुझे नही लगता कि निजी सुख, आराम, अवकाश, धन-दौलत आदि साधारण वस्तुओ का, जिन्हे मामूली स्त्री-पुरुष बडी नियामत समझते है, तुम्हारे जीवन मे अधिक महत्व होगा । दुख, पीडा, बलिदान, कष्ट, सघर्ष—हा, तुम्हारे लिए जीवन के पूर्व-निर्धारित उपहार यही है । तुम किसी-न-किसी प्रकार इन्हीको चरम आनद, विजय और स्वाधीनता का सार बना लोगे । तुम भाग्य-पुरुष हो, जो भीड के बीच भी अकेला रहने के लिए जन्म लेता है, जिसे लोग बेहद प्यार करते है, पर समझते जिसे बहुत कम है ।

तुम्हारी जिज्ञासु आत्मा को अपना लक्ष्य मिले और वह गौरव तथा सौंदर्य के साथ आत्म-दर्शन कर सके, यही मेरी कामना है। यही तुम्हारी कवयित्री और सहकर्मिणी बहन का आशीर्वाद है।

सरोजिनी नायडू

मै १७ को आगरा और १९ को सवेरे २-३२ पर पवित्र प्रयागराज पहुचूगी।

२८६ आसफ अली के नाम

इलाहाबाद
१६ नवम्बर १९३९

प्रिय आसफअली,

आपका १४ ता का खत मिला। लडाई मे आगे होनेवाली घटनाओ के बारे मे अदाज लगाना मुश्किल है। लेकिन एक बात मुझे तयशुदा मालूम होती है। रूस के खिलाफ या दूसरी कोई गुटबन्दी बहुत दिन नही चलेगी। यूरोप मे उनकी गाडी उलट गई है और उसको फिर से खडा करना बहुत मुश्किल होगा। हिंदुस्तान मे लडाई से पहले के हालात फिर से नही आ सकते और पुरानी शर्तो पर काग्रेस सूबो मे सरकार का काम नही सभालेगी।

मुझे मालूम नही कि जिन्ना के साथ फिरकेवारान बातचीत के बारे मे आपका ठीक-ठीक खयाल क्या है। मैने जिन्ना से कह दिया कि मै बिल्कुल तैयार हू और उनके खत का इन्तजार कर रहा हू। लेकिन असल मे जिन्ना के और हमारे बीच मे कोई फिरकेवारान अडचन नही है। यह मुश्किल तो सियासी है। काग्रेस जिस किस्म की कार्रवाई की आदी है, उसके मुताबिक वह (जिन्ना) अपने-आपको नही बना सकते। इसलिए फिरकेवारान मसले के निपटारे की बुनियाद पर मिली-जुली सियासी कार्रवाई की नजर से बात करना इस बुनियादी हकीकत को नजरदाज करना है। मेरा यह मतलब नही कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर कार्रवाई नही कर सकते। मै समझता हू कि वे कर सकते है और बहुत हद तक करेगे। लेकिन इस

वक्त इसका किसी फिरकेवारान सवाल पर दारोमदार नही है।

श्री आसफअली एम. एल ए, आपका,
कूचा चेलान, जवाहरलाल नेहरू
दिल्ली

२८७. एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सबरी वक्स
३ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

आपने मुझे कुछ गलत समझा। मेरे कहने का मतलब यह कभी नही था कि कौसिल मे काम मिल जाने को मै एक 'मौका' समझता हू। आपको यह जान लेना चाहिए कि मै किसी स्थान अथवा उपाधि को कोई महत्व नही देता। मेरा मतलब यह था कि सेना की एकागिता को प्रभावित करने का वह एक मौका था।

मेरा अब भी यह विचार है कि जबतक सेना की एकागिता मे सुधार नही होता, तबतक हिंदुस्तान को स्वाधीन राज्य घोषित नही किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त मेरा वह पुराना मूर्खतापूर्ण सपना अब भी विद्यमान है कि ब्रिटिश साम्राज्य का प्रवर्तन समान राष्ट्रो के समूह मे विश्व के सयुक्त राज्य (यूनाइटेड स्टेट्स ऑव दि वर्ल्ड) के रूप मे हो सकता है। मै जानता हू, यह बात आपको मूर्खतापूर्ण लगेगी, लेकिन मै आपको एक साथी नागरिक के रूप मे देखना चाहूगा। जो हो, मेरी राय मे आप पजाब को सेना के नियत्रण मे छोड नही सकते और उस गडबड को थोड़ा सुधारना ही पडेगा।

परन्तु यह सब मेरे और आपके बीच की छोटी बाते है। अब उन बातो की चर्चा हो जो सचमुच कुछ महत्व रखती है।

मैने इदू को देखा है। वह ठीक लगती है और भली-चगी भी है। यह बात ठीक है कि वह दुबली है और निस्सदेह उसकी अभी वही हालत है, जिसे नाजुक कहा जाता था और उसे सावधानी बरतनी पडेगी। वह अन्दर से बिल्कुल सूख गई है और किशोरावस्था की समाप्ति के साथ इन कठिन दिनो के बीत जाने के बाद उसे वास्तविक ताकत प्राप्त होगी। जो हो, वह

पहले से अच्छी है। हमने चाहा था कि वह हमारे यहा आ जाय, लेकिन वह कहती है कि मै १५ दिसम्बर को स्विट्जरलैण्ड जा रही हू। यदि कुछ हुआ—जैसे स्विटजरलैण्ड पर जर्मनी का आक्रमण —तो हम देख लेगे, आप उनके बारे मे कोई चिन्ता न करे।

जबसे मै लौटा हू, तबसे मुझे अपने दिन बडे लबे लगते रहे है और मुझे बडी बेचैनी महसूस होती रही है। यहा लौटने पर देखा कि एक भाई मर रहा है और उनके पास दो बार मुझे बुलाया गया है और कई दिन मैने वहा बिताये है। डाक्टर ने कह दिया, "साफ-साफ बता दू, मै उसे जीवित रखने की भी कोशिश नही कर रहा हू। ऐसा करना बडी निर्दयता होगी।" कई डाक्टरो ने ऐसा कहा है और सब इस बात पर सहमत है कि उसके बचने की कोई उम्मीद नही है। लेकिन उसमे बडी आत्मशक्ति है। वह कहता है, मै मरनेवाला नही और मरने से इन्कार करता है। डाक्टरो में मेरा बहुत कम विश्वास है और अगर्चे मै जानता हू कि इस बारे में मेरी कोई जानकारी नही है फिर भी मेरी भावना ऐसी है कि इस खतरे को पार करने का अब भी सयोग हो सकता है। वह मुझसे छोटा है और उसका व्यक्तित्व बडा आकर्षक है।

कोई काम करना मेरेलिए असम्भव रहा है, और मेरे काम का मानो अन्त नही है। तीन दिन पहले मेरी पत्नी मेरे स्थान पर चली गई थी। वह आज रात को लौट रही है।

सुनिये, वृद्ध और अधिक विवेकी लोगो की बात सुनने की आपकी आदत नही है। है क्या ? अध्यक्ष के मच पर आपकी हरकतो के बारे मे सरोजिनी ने कई कहानिया सुनाई थी, वे मुझे याद है। "ओह, वह श्रोताओ के बीच चले जाते और जिस बेचारे ने उनका खडन किया होता उसे पकड लेते, उसकी मुश्के बाधकर पडाल मे उसे इतने घूसे लगाते कि हर किसीके मन मे उस गरीब के लिए भय पैदा हो जाता।" ये आदते आपने हैरो मे सीखी थी क्या ? लेकिन, मै इतनी दूर हू कि आप मेरी मुश्के बाधकर मुझे घूसे नही लगा सकते (आप मुझे खिन्न बना देते है!) इसलिए मै कहूगा कि सुनिये' सिर्फ कुछ मिनट।

अपनी रोड्स रिपोर्ट तैयार करने के लिए मै दिन-रात लगा रहा हू।

इसके कुछ अश इदिरा को दिखाये थे। उनमे आपके बारे मे चर्चा थी। कल मुझे ऑक्सफोर्ड जाना पडा। आई सी एस प्रोबेशनरो से बातचीत की। आज प्रात रोड्स ट्रस्ट के सेक्रेटरी लार्ड एल्टन से बाते हुई है। कल एक वार्ता के सिलसिले मे लायनेल कर्टिस भी वहा थे। दो बाते है १ रोड्स ट्रस्ट हिंदुस्तान पर कुछ धन व्यय करना चाहता है। मै हिंदुस्तान के लिए पिल्ग्रिम ट्रस्ट के तरीके पर कुछ करने की सोच रहा हू। हमारे पिल्ग्रिम ट्रस्ट को तो आप जानते है? इसका सचालन वडी दक्षतापूर्वक हो रहा है। यह ऐसे कार्यो के लिए अनुदान देता है जो करने योग्य है, सिर्फ अस्थायी दान नही, बल्कि ऐसे काम शुरू करता है अथवा उसमे सहयोग देता है, जो कुछ रचनात्मक है। मेरा विचार एक ऐसा कोष स्थापित करने का है, जो ऐसे हिंदुस्तानियो को अनुदान देगा, जो आर्थिक क्षेत्र मे वास्तव मे मूल्यवान शोध कर रहे है; जैसे गन्ने या फलो की किस्मो का विकास, अथवा अनुसूचित जातियो के लिए कोई काम, या वुनियादी तालीम का काम ही। २. रोड्स ट्रस्ट अपना एक पुराना प्रस्ताव मनवाने के लिए विश्वविद्यालय पर दबाव डालने जा रहा है। यह प्रस्ताव मेरी पहली रिपोर्ट का परिणाम है। इस प्रस्ताव के अन्तर्गत कुछ हिंदुस्तानी विद्वानो से भारतीय ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक विषय पर ऑक्सफोर्ड मे भापण करने को कहा जायगा। वताइये, कौन आदमी अच्छा रहेगा? ऐसा आदमी हो जो भारतीय झडे को ऊचा वनाये रखे, हमारे मनोरजन कक्षो (कामन रूम) मे सवसे अच्छी तरह मिल-जुल सके, हमारे अडर-ग्रेजुएट छात्रो से मिलजुल सके और न केवल ऑक्सफोर्ड, बल्कि बाहरी जनसमुदाय के सामने भी वोल सके।

अव कान खोलिये और फिर सुनिये। मै वडी गभीरतापूर्वक कह रहा हू। यह प्राचीन विश्वविद्यालय जिस किसी व्यक्ति को रोड्स मेमोरियल लेक्चरार वनने का निमत्रण देता है, तो यह उस व्यक्ति को दिया गया विश्वविद्यालय का कई दृष्टियो से सवसे वडा सम्मान होता है। यह एक विल्कुल भिन्न कार्य है। यह लेक्चरार किसी मनोरजन-कक्ष (कामन रूम) का सदस्य वनाया जाता है, सामान्यत ऑल सोल्स का, जो शायद सर्वोत्तम है, क्योकि यहा वह हमारे सभी प्रमुख राजनीतिज्ञो से मिल पाता है। (वैसे आपको मै अपने कालेज ओरियल के लिए ही चाहूगा)। वह ग्रीष्मकालीन सत्र मे

आता और अपनी इच्छानुसार तीन, चार या पाच लेक्चर देता है। विश्वविद्यालय उसे अपने सिर आखो पर रखता है और उसका उद्घाटन-भाषण अपने-आपमे एक घटना होती है। यह लेक्चरर विदेशी ही हो सकता है, अर्थात् वह इस टापू के बाहर से ही आयेगा। यह आदमी हमेशा अग्रिम पक्ति से ही लिया जाता है। हमारे बीच आइन्स्टीन, स्मट्स, फ्लेक्सनर आ चुके है। कुछ वर्ष पूर्व इस ट्रस्ट ने इकबाल और शास्त्री को बुलाने का प्रयत्न किया था। दोनो ही व्यक्तित्ववाले व्यक्ति थे। किसी राजनीतिज्ञ के लिए यह वडा मौका है। हम ऐसा आदमी चाहते है, जो अपनी इच्छा से अडर-ग्रेजुएट छात्रो के समक्ष अनौपचारिक ढग से बोल सके। इस तरह की चीज से तो आप वाकिफ ही है। किसी कमरे मे कुछ लोगो के साथ गपशप। लेकिन यह नियुक्ति बहुत ऊचा सम्मान मानी जाती है। यह लेक्चरार अपनी इच्छानुसार किसी भी विषय पर बोल सकता है, लेकिन हम ऐसा आदमी पसन्द करते है, जो महत्व की चीजो पर ही बोले और विश्वविद्यालय की उन भाषणो को प्रकाशित करने की इच्छा रहती है। यह बात हम ही तक रहे—रोड्स ट्रस्ट एक व्यक्ति को निमन्त्रित करनेवाला है, जिसका नाम जवाहरलाल नेहरू है। हिंदुस्तान को स्वाधीन घोषित करना हमारे वश की बात नही (मै ट्रस्टी नही हू, मेरा इतना महत्व नही है कि यह पद मिल सके, लेकिन मेरे कहने का तात्पर्य तो आपको मालूम ही है, ट्रस्टियो पर मेरा कुछ प्रभाव है) फिर भी हम लोग कुछ दूसरे ढग से काम कर सकते है, किसी व्यक्ति को चुन ले और उससे कहे—सम्पूर्ण अग्रेजी-भाषी ससार के सामने यह कहने का हमे सम्मान दीजिये कि हम आपको हर दृष्टि से दुनिया के श्रेष्ठ व्यक्तियो मे से मानते है और एक विश्वविद्यालय की हैसियत से हम आपको अधिक-से-अधिक निकट और व्यक्तिगत रूप से जानने का गौरव लेना चाहते है। इकबाल और शास्त्री ने इसे ठुकरा दिया (मेरा यही अनुभव रहा, कृपया इसे दोहराइये नही। मैने ही पत्र-व्यवहार किया था)। आप इसे कभी नही ठुकराइये, इसपर अच्छी तरह सोच लीजिये। इससे आपको बडे पैमाने पर राजनीति के लिए उपयुक्त काम करने का अवसर प्राप्त होगा। आप हमारे सामने अपने दिमाग और अनुभव से कुछ रचनात्मक तस्वीर रख सकते है, अगर चाहे तो अपना विशिष्ट

राष्ट्रीय अनुभव रख सकते है, हमारे एकान्त और पृथक्त्व को झटका दे सकते है, दुनिया के नक्शे पर अपनी जनता को प्रस्तुत कर सकते है (एक बार आपने मुझसे कहा था कि मै अच्छा राजदूत हू और आप है भी)। और इगलैड की सुहानी गर्मियो मे आप हमारे नौजवानो (विश्व मे सबसे अच्छे) को देखेगे। अनेक विश्वविद्यालय-सदस्यो के सामने, जिन्होने छात्रो के अलावा किसी हिंदुस्तानी या अन्य किसी विदेशी को नही देखा है, आप हिंदुस्तान की एक बिल्कुल नई तस्वीर रख सकते है, आप सभी राजनैतिक नेताओ से मिल मकते है (चाहने पर भी बच नही सकते), क्योकि वे सबके सब ऑक्सफोर्ड आते है। आप वह काम कर सकते है, जिसे टैगोर ने शुरू किया था और जिसे वह अपने मन की उडानो का प्रकाशन करके पूरा नही कर पाये। यह काम बिल्कुल गैरसियासी है। इडिया आफिस दूर से भी इसमे टाग नही अडाता। . यदि यह काम आपको दिया जाय तो स्वीकार कर लीजिये, क्योकि यह सयोग से ही मिल रहा है। इसका मतलब यह हुआ है कि यह आपके दैव और आपके दानव का आदेश है। आप आश्वस्त रहे, कोई गडबड न होगी। विश्वविद्यालय-श्रोताओ को मै पहले ही सावधान कर दूगा कि वे वक्ता के प्रति श्रद्धानत हो और ध्यानपूर्वक सुने, अन्यथा यह भयकर वक्ता उनके बीच ही प्रकट हो जायगा, उन्हे बडी मार लगायेगा, मानो वे किसी काग्रेसी सभा के श्रोता हो। यदि यह काम आपने स्वीकार नही किया तो दूसरा नम्वर होगा सप्रू का (यह बात हमी तक रहे)। जहा-तक तकरीर करने और मनोरजन-कक्षो मे मिलने-जुलने का सवाल है, वह इस काम को अच्छी तरह निभा लेगे। लेकिन उनके आने मे हमारे राजनीतिज्ञो की कट्टरता और भी वढ जायगी। मैने आपके लिए ही सप्रू का नाम हटा दिया है। वह बाद मे आ सकते है। इसी सिलसिले मे आप इदिरा को देख सकेगे। आपको छ सप्ताह तक ही हिंदुस्तान से वाहर रहना पडेगा।

ऐसा लगता है कि रोड्स ट्रस्ट मुझे दक्षिण अफ्रीका भेजना चाहता है, वहा के विश्वविद्यालय तथा अन्य गोष्ठियो मे हिंदुस्तान के इतिहास और राजनीति तथा सस्कृति के वारे मे भाषण करने के लिए। ऐसा इसलिए कि मैने ट्रस्टवालो से कह दिया है कि दक्षिण अफ्रीका के दृष्टि-

कोण से हिंदुस्तानी भावना को चोट पहुच रही है। मै वृद्ध हो चला हू, बहुत थका-थका गया हू और मेरा दिमाग भी साथ नही दे रहा। यदि मुझसे हिंदुस्तान की सेवा हो सकती है तो मै जाऊगा हालाकि दक्षिण अफ्रीका मे मुझे भय लगता है—वह दुनिया में सबसे ज्यादा बदहुकूमत का मुल्क है। लेकिन मै तो एक सेवक-भर हू और अब अवस्था ऐसी नही रही कि कोई दूसरा काम कर सकू। यदि आप ऑक्सफोर्ड आयें तो मै कुछ अधिक सेवा करने का प्रयत्न कर सकूगा और उन अज्ञानियो और असभ्यो के सामने हिंदुस्तान के लिए बोल सकूगा, और मै भी कोई बुरा राजदूत नही हू।

मुझे मालूम हुआ है कि से विट आपके साथ है। मुझे इस बात का दु ख है कि उसके बारे में आपसे मैने कुछ अप्रिय बाते कह दी। मुझे ऐसा करना नही चाहिए था। वह भला आदमी है। सिर्फ वह बडा उलझा-उलझा और रहस्यमय लगता है। उसकी आवाज मुझे नही भाती। उसने मेरे मन में खिन्नता पैदा होती है। उसपर कृपा बनाये रखे, मेरी तरफ से प्रायश्चित्त के रूप मे ही सही।

'मैनचेस्टर गार्जियन' और 'टाइम एण्ड टाइड' के लिए दो लेख लिखे है। मैने कई राजनीतिज्ञो और हाउस के कुछ लोगो से बातचीत की है। लौटने के बाद से भूत की तरह काम किया है, इसलिए मेरे बारे मे यथासम्भव दयापूर्वक सोचिये। मै बुरा नही चाहता, और ऐसी बात नही कि कोई अंग्रेज मूर्ख नही हो सकता और, कोई काम करवा सकना विशेष रूप से कठिन रहा है।

मै अपनी दो किताबे भेज रहा हू। इन्हे पढकर आपको खिन्नता होगी। लेकिन आपने तो मागी थी। मेहरबानी करके मेरे देश के बारे मे निराश न होइये। हममे से कुछ लोग हिंदुस्तान के लिए यथाशक्ति काम कर रहे है और अपनी त्रुटियो के बावजूद हम अन्य कुछ राष्ट्रो से अच्छे ही है। अब भी इग्लैंड मे बहुत-सी बाते है और वे अच्छी है।

आपका,

एडवर्ड टामसन

हरकोई हिंदुस्तान के बारे मे सचाई जानना चाहता है। मैनचेस्टर

चैम्बर ऑव कामर्स और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से लेकर कामन्स-सभा और कट्टरपथी विद्वानो की सोसाइटिया तक मुझे फोन पर और पत्रो द्वारा निमत्रण-पर-निमत्रण दे रहे है। ऐसे समय मै हिदुस्तान जानेवाला हू। यह मेरी बेवकूफी ही तो है। इसी बुधवार को कुछ ससद-सदस्यो के सामने मै फिर भाषण करनेवाला हू।

'मैनचेस्टर गार्जियन' के लिए मैने तीन लेख तैयार किये थे, जो अब नही मिल रहे। इसमे कोई शक नही कि आगथा हैरिसन या मेनन ने वे लेख आपके या गाधीजी के पास भेज दिये।

ए. टा.

२८८. महादेव देसाइ के नाम

९ दिसम्बर १९३९

प्रिय महादेव,

तुम्हारा ५ ता का पत्र मिला। जाकिर हुसैन ने बापू को जो सुझाव दिया है उससे मै बिल्कुल सहमत नही हू। सवाल यह नही है कि हम मुस्लिम लीग को खास तरह की मान्यता दे। इसके बहुत दूर तक जानेवाले नतीजे है और इसमे काग्रेस के तमाम बुनियादी सिद्धान्तो को छोड देने की बात है। इसका अर्थ काग्रेस को छिन्न-भिन्न कर देना होगा।

तुमने जिन्ना का नया बयान जरूर देखा होगा। राजनैतिक झूठ और बेहयाई की भी हद होती है, लेकिन सारी मर्यादाओ का उल्लघन कर दिया गया है। मेरी समझ मे नही आता कि मै अब जिन्ना से मिल भी कैसे सकता हू। दो ही दिन हुए मैने उन्हे लिखा था कि मै जल्दी ही बम्बई जानेवाला हूं और तब उनसे मिलने की मुझे आशा थी। कल से मैने इस मामले पर काफी विचार किया है और मैने उन्हे दूसरा पत्र भेजने का निश्चय किया है, जिसकी नकल बापू की जानकारी के लिए साथ मे है।

स्टैफर्ड क्रिप्स यहा आये हुए है और कल दिल्ली और लाहौर के लिए रवाना हो रहे है। वहा से वह बबई और वर्धा जायगे। फिलहाल वह १७ ता. की सुबह रविवार को वर्धा पहुचेगे। वहा दो दिन ठहरेगे। मुझे ये तारीखे पसन्द नही है, क्योकि ये बापू के मौन और कार्यसमिति के साथ टकराती है। वे वहा १८ और १९ ता. को जाते तो कही अच्छा रहता।

यह क्रिप्स के भी अधिक अनुकूल होता।

क्रिप्स हेली, गुन्टर, फिनलेटर, स्टीवर्ट और जेटलैण्ड से लबी बातचीत करते रहे हैं। मेरा खयाल है वह हैलीफैक्स से भी मिले हैं। उन्होंने इन लोगो के सामने कोई प्रस्ताव किया, जिसका उनके कथनानुसार अच्छा असर हुआ, हालाकि किसीने अपने-आपको उनके लिए बाधा नही। मैने यह प्रस्ताव देखा है। उसमे कुछ वाछनीय पहलू है। लेकिन मेरे खयाल से उसमे दो-तीन घातक दोष है। मै बापू के लिए बाद मे तुम्हे शायद नकल भेजू, लेकिन मै चाहता हू कि तुम उसे बिलकुल गुप्त रखो।

मै बता दू कि जहा क्रिप्स बिलकुल सीधे है और उनकी योग्यताए असदिग्ध है, वहा उनके निर्णय पर हमेशा भरोसा नही किया जा सकता।

शायद मै १२ ता. के आसपास बबई जाऊगा।

श्री महादेव देसाई, सप्रेम तुम्हारा,
सेगाव। जवाहरलाल

२८९ मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

इलाहाबाद
९ दिसम्बर १९३९

प्रिय जिन्ना,

दो दिन हुए मैने आपको एक खत भेजा था और यह खबर दी थी कि मेरा बबई जल्दी ही जाने का इरादा हे और वहा आपसे मिलने की उम्मीद रखी थी। कल सुबह अखबारो मे मैने आपका बयान पढा, जिसमें २२ दिसम्बर निजात का दिन मुकर्रिर किया गया है। उस दिन इस बात पर अल्लाताला का शुक्रिया अदा किया जायगा कि आखीर काग्रेस सरकारो का कामकाज बन्द होगया। मैने इस बयान को कई मर्तबा बहुत गौर से पढा है और इस मामले पर चौबीस घटे तक गहराई से सोचा है। इस खत में मुद्दो, खयालो या नतीजो के बारे मे किसी बहस मे पडने का मेरा काम नही है। आपको इनके बारे मे मेरे खयाल मालूम है। ये मैने पूरी ईमानदारी और सच्चाई जानने की इच्छा से बनाये है। मुमकिन है, मेरी गलती हो, लेकिन मैने ज्यादा रोशनी की खोज की, पर वह अभी मिली नही।

मगर कल से जो चीज मुझे बुरी तरह सता रही है वह यह अहसास

है कि जिंदगी और सियासत दोनो मे कीमतो और मकसदो की हमारी समझ मे बहुत बडा फर्क है। हमारी बातचीत के बाद मैंने यह उम्मीद की थी कि वह फर्क इतना ज्यादा नही है, लेकिन अब तो खाई पहले से भी चौडी मालूम होती है। इन हालात मे मै नही समझता कि हमारे सामने जो मसले है, उनकी आपस मे चर्चा करने से कोई फायदा होगा। चर्चा के फायदेमद होने के लिए कोई ऐसी जमीन और मकसद होने चाहिए, जिनपर आम रजामदी हो सके। मै समझता हू कि आपके तई और खुद अपने तई मेरा फर्ज है कि यह मुश्किल आपके सामने रख दू।

आपने दिल्ली मे मुझे एक खत दिखलाया था, जो आपको विजनौर से मिला था। मैंने उस मामले की जाच की तो मुझे खबर मिली कि आपको मुद्दे जिस तरह से बताये गए वे सही नही है और विल्कुल गुमराह करनेवाले है। अगर जो कुछ हुआ उसकी आप सफाई चाहे तो मै आपके लिए विजनौर से मगा सकता हू। इसके लिए मै चाहता हू कि आपने जो खत मुझे दिल्ली मे दिखाया था, उसकी नकल मुझे भिजवा दे।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

मि. मोहम्मद अली जिन्ना

२९०. मोहम्मद अली जिन्ना की ओर से

वम्बई
१३ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे आपका ९ दिसम्बर का खत मिला। अखवारो मे आपके दौरो के प्रोग्राम को देखकर मैं समझ नही पा रहा था कि आपको अपना जवाव कहां भेजू। हाल की खबर के मुताविक आप १४ दिसम्बर को वम्बई पहुच रहे है, इसलिए मैं आपके वम्बई के पते पर यह खत भेज रहा हूं। मैं आपसे पूरी तरह एकराय हू कि "चर्चा के फायदेमद होने के लिए कोई ऐसी जमीन और मकसद होने चाहिए, जिनपर आम रजामदी हो।" इसी वजह से

दिल्ली में पिछली अक्तूबर मे मि गाधी और आपने मेरी जो वातचीत हुई थी, उनमे मैंने दो वातें नाफ कर दी थी : पहली वात यह कि जवतक काग्रेन मुस्लिम लीग को हिन्दुस्तान के मुसलमानो की पक्की और नुमाइदा जमात मानने को तैयार नही है, तवतक हिन्दू-मुस्लिम-समझौते की वात चलाना मुमकिन नही है। ऑल इडिया मुस्लिम लीग की वर्किंग कमेटी ने इस वातचीत के लिए यही वुनियादी शर्त रखी है। दूसरी वात यह है कि काग्रेस वर्किंग कमेटी की तजवीज मे, जिसपर १० अक्तूबर १९३९ को ऑल इडिया काग्रेस कमेटी ने भी मोहर लगाई है, जिस ऐलान की माग की गई है, वह अव्वल तो साफ नही है, न अमल में आनेवाली है और फिर जवतक अकलियत के मसले मे हममे आपस मे कोई समझौता न हो जाय तवतक हम उस माग की तसदीक नही कर सकते। मुस्लिम लीग को भी वाइसराय के ऐलान से तसकीन नही है। यदि खुशनसीवी मे हम हिन्दू-मुस्लिम सवाल को तय कर ले तो हम ऐसी हालत मे आ जायगे कि एकराय से दरमियानी शक्ल निकाल सकें और इस वात की माग करें कि हिज मैजिस्टी की सरकार इसका ऐसी शक्ल में ऐलान करे, जिससे हम सवको तसल्ली हो। दिल्ली मे मि. गाधी को या आपको न तो मेरा पहला सुझाव मजूरी के काविल लगा, न दूसरा, लेकिन आपने मेहरवानी करके ख्वाहिश जाहिर की कि आप मुझसे फिर मिलना चाहेगे और मैंने यह कहा था कि मै हमेशा खुशी से आपसे मिलूगा। आपके पहली दिसवर के खत के जवाव मे, जिसमे आपने मुझसे ववई मे मिलने की ख्वाहिश जाहिर की है, मैंने आपको इत्तिला दी थी कि मै दिसम्वर के तीसरे हफ्ते तक वम्वई मे रहूगा और आपसे मिलकर मुझे खुशी होगी, और मै सिर्फ यही कह सकता हू कि अगर आप इस मामले की वातचीत को आगे वढाना चाहते है तो मै आपके अख्तियार मे हू। आपने विजनौर के वाकये की तरफ जो इशारा किया है, उसके वारे मे मुझे यकीन है कि आप मुझसे एकराय होगे कि उसके वारे मे किसी नतीजे पर पहुचने से पहले उसकी पूरी-पूरी अदालती जाच होनी चाहिए। सिर्फ एक वाकये पर बहस करना हमारे लिए वेकार है, क्योकि मै जिस नतीजे पर पहुचा हू, उसके हिसाब से आईन के मुकम्मल अमल और काग्रेस सरकार के खिलाफ हमारे इलजामो की शाही कमीशन के जरिए पूरी-पूरी

जाच होनी चाहिए ।

आपका,
एम. ए. जिन्ना

२९१. मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

बम्बई
१४ दिसम्बर १९३९

प्रिय जिन्ना,

आपके १३ दिसम्बर के खत के लिए शुक्रिया । वह मुझे आज दोपहर यहा पहुचने पर दिया गया । मैने आपको इलाहाबाद से आखिरी खत मुसलमानो की तरफ से "निजात और शुक्रिया अदा करने के दिन" को मनाये जाने के बारे मे आपके बयान को पढने और उसपर पूरा गौर करने के बाद भेजा था । उस बयान से मुझे बहुत तकलीफ हुई थी, क्योकि उससे मैने महसूस किया कि अवाम के मसलो के बारे मे हमारे नजरिये मे खाई बहुत बडी है । इस बुनियादी फर्क को देखते हुए मैने सोचा कि चर्चा के लिए आम रजामदी की जमीन क्या है और मैने अपनी मुश्किल आपके सामने रक्खी । वह मुश्किल अब भी है ।

आपने अपने खत मे दो और इब्तिदाई शर्तो पर जोर दिया है, जिनके बाद ही चर्चा के लिए आम रजामदी की जमीन पैदा हो सकती है । पहली शर्त यह है कि काग्रेस को यह समझना होगा कि मुस्लिम लीग हिदुस्तान के मुसलमानो की पक्की और नुमाइदा जमात है। काग्रेस ने लीग को हमेशा मुसलमानो की बहुत असरवाली जमात समझा है और इसी वजह से हमारे बीच मे जो भी फर्क हो, उन्हे निपटाने के लिए हम ख्वाहिशमद रहे है । लेकिन शायद आपका कहना इससे कुछ ज्यादा है और उसमे यह बात शामिल है कि जो मुसलमान लीग मे नही ह उन्हे हम किसी-न-किसी तरह रद्द करदे या उनसे नाता तोड दे । आप जानते है कि काग्रेस मे मुसलमान बड़ी तादाद मे है और वे हमारे बहुत नजदीकी साथी रहे है और है । मजदूर-सघो और किसान-सभाओ के अलावा जमीयत-उल-उलेमा, ऑल इडिया शिया काफ्रेस, मजलिसे ऐहरार, ऑल इडिया-

मोमिन कान्फ्रेस, वगैरा मुस्लिम जमाते है, जिनके बहुत-से मुसलमान मेंबर है। आम तौर पर इन जमातो और आदमियो में से बहुतो ने वही सियासती मच अपना लिया है, जो काग्रेस में हमने अपनाया है। हम उनसे ताल्लुक नही तोड सकते और न किसी तरह अपनापन छोड सकते है।

आपने कई मौको पर ठीक ही बताया है कि काग्रेस हिंदुस्तान में हरेक आदमी की नुमाइदगी नही करती। बेशक, नही करती है। मुसलमान हो या हिन्दू, वह उन लोगो की नुमाइदा नही है, जो उससे एकराय नही है। आखिरी तौर पर देखें तो वह अपने मेंबरो और हमदर्दो की ही नुमाइदा है। यही बात मुस्लिम लीग की भी है। इसी तरह और कोई जमात भी अपने ही मेंबरो और हमदर्दो की नुमाइदगी करती है। लेकिन एक बहुत बडा फर्क यह है कि जहा कागेस के आईन के मुताबिक जो उसके मकसद और तरीको को मजूर करते है उन सबके लिए उसकी मेंबरी खुली है, वहा मुस्लिम लीग का दरवाजा सिर्फ मुसलमानो के लिए खुला है। इस तरह आईन की रु से काग्रेस की मुल्की बुनियाद है और वह अपनी खुदी मिटाये बगैर उस बुनियाद को नही छोड सकती। आप जानते है कि हिन्दू महासभा मे बहुत-से हिन्दू है, जो हिन्दू होने के नाते इस खयाल के खिलाफ है कि काग्रेस उनकी नुमाइदगी करे, और फिर सिक्ख और दूसरे लोग भी है, जो दावा करते है कि फिरकेवारान मामलो पर गौर होने के वक्त उनकी बात सुनी जानी चाहिए।

इसलिए मुझे अदेशा है कि अगर आपकी यह मर्जी है कि और सब जमातो को छोडकर हम मुस्लिम लीग को ही मुसलमानो की नुमाइदा जमात समझे तो हम इसे बिल्कुल मजूर नही कर सकते। इसी तरह यह भी हकीकत के खिलाफ होगा कि हम काग्रेस जमात के इतने बडे होने के बावजूद काग्रेस के लिए ऐसा ही दावा करे। लेकिन मै यह कहूगा कि जब दो जमाते एक-दूसरे के साथ निपटती है और आपसी दिलचस्पी के मसलो पर गौर करती है तब ऐसे सवाल नही उठा करते।

आपका दूसरा मुद्दा यह है कि मुस्लिम लीग ब्रिटिश सरकार की तरफ से कोई ऐलान होने की काग्रेस की माग की ताईद नही कर सकती। मुझे यह जानकर तकलीफ होता है, क्योकि इसका मतलब यह हुआ कि फिरकेवारान सवालो के अलावा खालिस सियासी बुनियाद पर भी हमारे

नजरियो मे फर्क है। काग्रेस की माग असल मे यह है कि लडाई के मकसद बता दिये जाय और खास तौर पर हिदुस्तानी आजादी का ऐलान कर दिया जाय और हिदुस्तानियो का यह हक मान लिया जाय कि वे बाहरी दखलदाजी के बिना खुद अपना आईन तैयार कर ले। अगर मुस्लिम लीग इसपर राजी नही होती तो इसका मतलब यह है कि हमारे सियासी मकसद बिल्कुल अलग-अलग है। काग्रेस की माग नई नही है। वह काग्रेस के आईन की पहली कलम मे मौजूद है और पिछले कई सालो से हमारी पालिसी की बुनियाद उसीपर रही है। मै तो यह सोच भी नही सकता कि काग्रेस इसे कैसे छोड सकती है या बदल सकती है। मै खुद तो उसे बदलने की किसी भी कोशिश की पूरी मुखालफत करूगा। लेकिन यह निजी मामला नही है। ऑल इडिया काग्रेस कमिटी की एक तजवीज है, जिसकी हिदुस्तानभर मे हजारो मीटिंगो ने ताईद की है और मै उसे हर्गिज नजरन्दाज नही कर सकता।

इस तरह यह दिखाई देता है कि सियासी नजरिये से हमारी कोई रजामदी की जमीन नही है और मकसद भी जुदा है। इससे भी चर्चा मुश्किल और बेकार हो जाती है। जिस वजह से मैने आपको पिछला खत लिखा, वह अभी मौजूद है, यानी आपके सुझाव के मुताबिक मुसलमानो की तरफ से निजात का दिन मनाया जाना मुमकिन है। इससे ज्यादा अहमियत रखनेवाले और दूर तक जानेवाले सवाल पैदा होते है, जिनमे इस वक्त मेरे जाने की जरूरत नही है। लेकिन उनका असर तो हम सबपर पड़ता ही है। फिरकेवारान मसले के बारे मे इस नजरिये का मेल उसे हल करने की कोशिश के साथ नही हो सकता।

इसलिए मेरा खयाल है कि इस मौके पर, इस हालत मे और इस बुनियाद के साथ हमारे मिलने से कोई फायदा नही होगा। लेकिन मै आपको यकीन दिलाना चाहता हू कि काग्रेस और लीग के बीच फिरकेवारान या दूसरे मसलो पर खुली और साफ चर्चा करने के लिए हम हमेशा तैयार है।

बिजनौर के वाकये के बारे मे आपने जो कहा वह मेरे खयाल मे है। हमारी यह बदकिस्मती रही है कि इकतरफा ढग से इल्जाम लगाये जाते

है और उनकी कभी जांच नहीं की जाती और न उन्हें निपटाया जाता है। आप समझ सकते हैं कि शिकायतें करना बहुत आसान है और मुनासिब जांच के बिना उनपर बुनियाद रखना बहुत ही खतरनाक है।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

मि मोहम्मदअली जिन्ना
बम्बई

२९२. मोहम्मद अली जिन्ना की ओर से

बंबई
१५ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहर,

आपका १४ दिसम्बर १९३९ का खत मुझे मिला। मुझे अफसोस है कि दूसरे मुद्दे पर आपको मेरी बात ठीक नहीं जची। मैंने यह नहीं कहा कि ब्रिटिश सरकार के ऐलान की कांग्रेस की मांग की मुस्लिम लीग तसदीक नहीं करेगी। मैंने यह कहा था कि हम लोग ऐलान के बारे मे कांग्रेस की मांग को, जो उसने वर्किंग कमिटी की तजवीज के जरिये पेश की है और जिसकी तसदीक १० अक्तूबर १९३९ को ऑल इंडिया कांग्रेस कमिटी ने की है, उन वजहों से तसदीक नहीं कर सकते, जिनका जिक्र मैं अपने खत मे कर चुका हूं।

अगर कांग्रेस की इस तजवीज मे किसी तरह का कोई फेर-बदल नहीं हो सकता और जैसाकि आप कहते हैं कि निजी तौर पर आप इसकी तबदीली करने की किसी भी कोशिश की पूरी तरह से मुखालफत करेंगे और आपने इस बात को साफ कर दिया है कि आप किसी तरह भी मुस्लिम लीग को हिन्दुस्तान के मुसलमानों की नुमाइंदगी करनेवाली जमात नहीं मान सकते तो ऐसी हालत मे क्या मैं यह जान सकता हूं कि आप मुझसे क्या करने की उम्मीद या ख्वाहिश रखते हैं?

आपका,
एम. ए. जिन्ना

२९३. मोहम्मद अली जिन्ना के नाम

बंबई

१६ दिसम्बर १९३९

प्रिय जिन्ना

आपके १५ दिसम्बर के खत के लिए शुक्रिया। आपने जो फर्क बताया उसे मै अच्छी तरह समझता हू। बेशक, मुस्लिम लीग ब्रिटिश सरकार की तरफ से होनेवाले किसी ऐलान के खयाल की मुखालफत नही कर सकती। सवाल सिर्फ यह उठ सकता है कि ऐलान किस किस्म का होगा और उसमे क्या होगा। काग्रेस ने तो इतनी ही माग की थी कि लडाई के मकसद बता दिये जाय, हिदुस्तान की आजादी को मान लिया जाय और अपना आईन खुद बनाने का हिदुस्तानियो का हक मजूर कर लिया जाय। वैसे तो यह हक आजादी मे समाया ही हुआ है। ये सब बुनियादी उसूल है, जो आजादी के हमारे मकसद से पैदा होते है और चूकि मुस्लिम लीग का भी यही ऐलानिया मकसद है, इसलिए उनके बारे मे रायो का कोई फर्क नही होना चाहिए। इन उसूलो के लागू करने मे बेशक कई अहम मामलो पर गौर करना पडेगा, लेकिन जहातक बुनियादी मागो का सवाल है, वे तो हिदुस्तानी कौमियत की जान है। उन्हे छोड देना या काफी बदल देना आजादी के हमारे मामले को ही मिटा देना है।

लडाई के बारे मे भी काग्रेस ने पिछले ग्यारह बरसो मे अपनी पालिसी का बार-बार ऐलान किया है। मौजदा ऐलान उसी पालिसी का लाजमी नतीजा है। इस पालिसी के बनाने मे खुद मेरा भी कुछ हिस्सा रहा है और मैने उसे अहमियत दी है। आप समझ जायगे कि इतने दिनो की जमी-जमाई और बुनियादी पालिसियो को बदलना कितना मुश्किल है। यह सवाल दूसरा है कि ऐसा करना मुनासिब है या नही। असल मे ये पालिसियां सियासी है और मै तो यह भी कहूगा कि यही पालिसिया है, जो हिंदुस्तानी आजादी की माग से पैदा होती है। ब्यौरे की बातो पर गौर और उनकी चर्चा हो सकती है। उनके लागू करने के बारे मे आपसी मदद ली जानी चाहिए और खास तौर पर जुदा-जुदा गुटो और अकलियत के फायदों पर होशियारी से गौर करना चाहिए और उनकी हिफाजत होनी चाहिए।

लेकिन इन ऐलान की बुनियाद को ही चुनौती देना यह जाहिर करता है कि सियासी नजरिये और पार्टियो मे बडा फर्क है। इसका हिन्दू-मुस्लिम-सवाल से कोई वास्ता नही है। इसीकी वजह से मै महसूस करता हू कि हमारे सियासी मकसदो मे आम रजामदी की बात बहुत थोड़ी है।

मै फिर कह दू कि जहातक मुझे मालूम है, हमारी तरफ से कोई भी मुस्लिम लीग के हक, असर और अहमियत को न चुनौती देता है, न उसे कम मानता है। इसी वजह से हम उनके साथ मामलो की चर्चा करने और हमारे सामने जो सवाल है उनका तसल्लीवख्श हल निकालने के लिए तैयार रहे है। वदस्किमती से हम इन सवालो की ठीक-ठीक चर्चा तक भी कभी नही पहुच पाते, क्योकि पहले से शर्तें लगाकर हम अपने रास्ते मे वहुत-सी रुकावटे और अडचनें पैदा कर लेते है। मै आपको वता चुका हू कि इन शर्तो का दूर तक जानेवाला असर होता है। मै नही समझता कि क्यो उनकी वजह से हमारी सारी तरक्की रुके या हम इन मसलो पर गौर न कर सके? इन अडचनो को हटाकर सवाल से ही भिड जाना मुश्किल नही होना चाहिए। लेकिन चूकि ये अडचने वनी रहती है और दूसरी उनमे जोड दी जाती है, इसलिए मजबूरन मेरा खयाल होता है कि असली दिक्कत सियासी नजरिये और मकसदो मे फर्क की है।

फिलहाल २२ दिसम्वर को सारे हिंदुस्तान मे किये जानेवाले मजाहरे के फैसले ने जहनी रुकावट पैदा कर दी है, जिससे आपस मे मिलकर चर्चा करना नामुमकिन है। इसका मुझे वहुत ही अफसोस है और मै दिल से चाहता हू कि आप इस रुकावट को जरूर दूर कर दे, क्योकि इससे आपस मे मनमुटाव ही पैदा हो रहा है और हो सकता है। मुझे अव भी उम्मीद है कि आप ऐसा कर सकेगे।

मै आपको यकीन दिलाना चाहता हू कि अपनी तरफ से मै कोई कोशिश उठा नही रखना चाहता, जिससे आपस मे समझौता और निपटारा हो सके। लेकिन आप मुझसे नही चाहेगे, जैसे कि मै आपसे नही चाहूगा कि किसी भी वात के लिए दिमागी ईमानदारी और मकसद की सचाई को छोडा जाय। उससे कुछ खास हाथ भी नही लग सकता। मेरे कुछ गहरे

सियासी खयालात है और मैने कई बरसो से उनके मुताबिक कसकर काम किया है। मै उन्हे किसी भी हालत मे नही छोड सकता और इस वक्त जब दुनिया एक जबर्दस्त मुसीबत की तकलीफो मे फसी है, तब तो उन्हे हर्गिज नही छोडा जा सकता।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

२९४. महात्मा गांधी की ओर से

सेगांव, वर्धा
२८ दिसम्बर १९३९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र मिला। मै चीनी पत्र सुरक्षित रखूगा।

मुक्ति-दिवस को 'टाइम्स ऑव इडिया' मे पूरे पृष्ठ का विज्ञापन मिला है। परन्तु सच यह है कि सब जगह उसका कोई असर नही हुआ दीखता।

फजलुल हक का अभियोग-पत्र तुमने पढा है? इसके बारे मे कुछ भी कहना या करना नही चाहिए?

तुमने मुझे कुमारप्पा के पत्र नही भेजे, जिनपर तुमने सख्त एतराज किया था। वह यहा है। मैने उनसे पूछा तो वह कहते है कि हाल मे तो उन्होने कुछ नही भेजा। तुम्हारे पास जो कुछ हो, जरूर मेरे पास भेज दो।

प्यार,

बापू

२९५. एडवर्ड टामसन के नाम

इलाहाबाद
५ जनवरी १९४०

प्रिय एडवर्ड,

मुझे खबर लगी है कि आपके छोटे भाई का कुछ दिन पहले इंतकाल

हो गया । मुझे यह सुनकर बडा रज हुआ, क्योकि यह मै समझ सकता हू कि इससे आपपर कैसी गुजरेगी । अपने पिछले खत में आपने उनकी बीमारी का जिक्र किया था और कहा था कि उनके लिए बहुत कम आशा है । इस बुरी खबर के कारण मुझे आपके खत का जवाब देने मे झिझक हो रही है ।

कल की डाक में आपकी दो पुस्तके 'जान आर्निसन' और 'कलेक्टेड पोयम्स' मिली । मुझे बहुत खुशी है कि आपने ये पुस्तकें, खास तौर पर कविताए, भेजी । आप चक्कर तो और मैदानो मे भी लगाते हे, फिर भी जाहिर है कि आप कवि ही है ।

अखबारो में मै आपके कुछ पत्र और लेख भी पढता रहा हू । वे मुझे पसन्द आये । आप जब यहा आये उस समय जो स्थिति थी, उससे असल मे स्थिति अब जुदा नही है, अलबत्ता बहुत-सी घटनाए हो चुकी है । आपने जिन्ना के 'मुक्ति-दिवस' की बात सुनी होगी । उन्होने किसी भी तरह के मुनासिब रवैये को नामुमकिन बना दिया है । लेकिन अबकी बार तो उन्होने हद ही कर दी और मुस्लिम हल्को मे उससे काफी गुस्सा पैदा हुआ है ।

लेसिन से इन्दिरा का पत्र आया है । वह वहा खुश मालूम होती है और वह जगह उसे पसन्द है । डाक्टर ने उससे कह दिया है कि वह तीन महीने के भीतर उसे खूब तन्दुरुस्त बना देना चाहते है । इससे उसमे खूब उत्साह आगया है ।

आपने सेना की जिस कठिनाई का जिक्र किया है वह तो है ही, हालाकि मेरे खयाल से वह उतनी महत्वपूर्ण नही है, जितनी आप बताते है । पजाब से सेना को करीब ५२ फीसदी आदमी मिलते है और मुझे बताया गया है कि हिन्दुस्तान-भर मे मुसलमानो का अनुपात लगभग ३२ फीसदी है । मुझे पता नही कि ब्रिटिश साम्राज्य समान राष्ट्रो के किसी बडे गुट मे, दुनिया के सयुक्त राज्यो मे, शामिल हो जायगा या नही, लेकिन अगर आपका पुराना सपना सही होता हो तो मुझे बडी खुशी होगी । यह बहुत अच्छी बात होगी कि आपके सुझाव के अनुसार यात्री-ट्रस्ट जैसी कोई चीज हिदुस्तान के मामले मे दिलचस्पी ले । आपका

दूसरा प्रस्ताव यह है कि मै आपको किसी ऐसे हिदुस्तानी विद्वान का नाम सुझाऊ जो किसी हिदुस्तानी ऐतिहासिक अथवा साहित्यिक विपय पर व्याख्यानमाला दे सके । लगे हाथो कोई नाम सुझाना तो मुश्किल है । वैसे एक नाम सूझ रहा है, डा. ताराचन्द का। पता नही, आप उन्हे जानते है या नही । कुछ साल हुए वह ऑक्सफोर्ड मे थे और वहा से उन्होने इतिहास के किसी विपय पर डॉक्टरेट ली थी । इस वक्त वह यहा इलाहाबाद विश्वविद्यालय मे प्रोफेसर है । वह हिदुस्तानी तरीख के मुगल-काल के खास जानकार है और खास तौर पर इस बात के कि इस्लाम और हिन्दू-धर्म का एक-दूसरे पर क्या असर और क्या प्रतिक्रिया हुई और कैसे उन्होने एक तरह का समन्वय पैदा करने की वृत्ति रखी । कुछ दिन हुए उन्होने इतिहास-परिपद् के सामने इस विपय पर एक बहुत अच्छा निबन्ध पढा था ।

प्रोफेसरो वगैरा के साथ मेरा अपना परिचय कुछ सीमित-सा है और यह बिल्कुल संभव हे कि बेहतर आदमी इधर-उधर हो ।

मैंने रोड्स-स्मारक-व्याख्यान के बारे मे आपके सुझाव को ध्यान से सुना है। मै आपसे सलाह लूगा और अचानक इन्कार नही करूगा । इस सम्मान और प्रतिष्ठा के बारे मे जो कुछ आपने कहा है, उस सबकी मै कद्र करता हू और हम सबको इन दोनोका लालच है। लेकिन आप शायद विश्वास नही करेगे कि मै जरा शर्मीला आदमी हू और नये क्षेत्रो मे घुसने का साहस करने मे सकोच करता हूं । फिर भी मै अपना दिमाग खुला रखूगा और देखूगा कि हालात क्या शक्ल लेते है । हममें से कोई अगले चन्द महीनो मे क्या करनेवाला है, यह कहना कठिन है । कई कारणो से मै इग्लैण्ड और शायद अमरीका जाना बहुत पसन्द करूगा । मुझे हमेशा महसूस होता है कि हिदुस्तान के लिए, हिदुस्तान के बाहर मै ज्यादा उपयोगी हो सकता हू । यह भावना कि मै वहाके लिए पूरी तरह योग्य नही हू, मेरे पीछे लगी हुई है और मेरे इन्कार को मन्द करती है ।

साथ मे दो चित्र है, जिनसे आपको इलाहाबाद की याद आती रहेगी ।

ऐलेन लेन चाहती है कि मै हिंदुस्तान की मौजूदा परिस्थिति पर एक पैग्विन पुस्तक लिखू । उस तरह का काम असल में आपका है, मेरा नही । मुझे पूरी तरह मालूम नही कि इनके बारे मे मुझे क्या करना चाहिए । लिखने को मेरे लिए समय निकालना बहुत कठिन है ।

आपका,
जवाहरलाल नेहरु

डॉ. एडवर्ड टामसन
सॉण्डर्स क्लोज, ब्लेडलो,
एलसबरी, इग्लैण्ड

२९६. जे. होम्स स्मिथ के नाम

[जे. होम्स स्मिथ एक अमरीकी पादरी थे ।]

मेरठ
१० जनवरी १९४०

प्रिय श्री होम्स स्मिथ,

मुझे आपका १ जनवरी का पत्र इलाहाबाद से मेरी रवानगी से थोडी देर पहले मिला । मुझे उत्तर मे यह पत्र भेजकर खुशी हो रही है और मुझे यह आशा है कि अमरीका के मित्रो के साथ सम्पर्क करने और वहा के आपके साथियो को सदेश देने का मकसद इस पत्र से सिद्ध हो जायगा ।

हिंदुस्तान की आजादी के काम के लिए आपके महान उत्साह का और अमरीका में इस काम को बढाने के लिए कुछ-न-कुछ करने की आपकी इच्छा का मैंने स्वागत किया है । इसके कारण आपको लालबाग-आश्रम से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने मे सकोच नही हुआ । मुझे आशा है कि अमरीका मे हमारे मित्रो और हमदर्दों तक आप हमारे अभिनन्दन पहुचा देगे । जहा हम पूरी तरह समझते है कि हिंदुस्तान की आजादी की लडाई हिंदुस्तान मे ही चलानी और जीतनी पडेगी, वहा हम अमरीका के लोगो की नेक राय और सहानुभूति को भी बहुत बडा महत्व देते है । ससार मे आज उनका सबसे बलशाली लोकतत्र है और वे विश्व के मामलो के पुनर्निर्माण मे निस्सदेह प्रमुख भाग अदा करेगे । चूकि हम खुद हिंदुस्तान मे एक लोकतत्री स्वतत्र राज्य के आदर्श के भक्त है और

उसके लिए वधे हुए है, इसलिए हम बहुत-सी बातो मे कुदरती तौर पर अमरीका की तरफ देखते है। मुझे साफ मालूम होता है कि उस वक्त तक संसार की समस्याओ का उचित निपटारा नही हो सकता, जबतक कि उस निपटारे मे हिंदुस्तान और चीन को भी शामिल नही किया जाता और उनके साथ स्वतंत्र राष्ट्रो का-सा वर्ताव नही किया जाता। कुदरती तौर पर हम अपने लिए आजादी मागते है। लेकिन हमने साफ कर दिया है कि हम नई विश्व-व्यवस्था के पक्ष मे है और ससार के मामलो को ऐसा रूप देने मे हिंदुस्तान खुशी से सहयोग देगा। यह काम शान्ति, स्वतत्रता और लोकतत्र के आधार पर ही सतोपजनक रूप मे किया जा सकता है। इसलिए यह निहायत जरूरी हो जाता है कि हिंदुस्तान और चीन मे आजादी और लोकतत्र होना चाहिए, नही तो कोई संतोपजनक राजनैतिक अथवा आर्थिक निपटारा नही होगा और वर्तमान सतुलन का अभाव और सघर्प वना रहेगा। जाहिर है कि हिंदुस्तान और चीन के वास्तविक और सभावित दोनो तरह के जवरदस्त साधनो को विश्व के मामलो मे महत्वपूर्ण भाग अदा करना चाहिए।

फिलहाल हमे हिंदुस्तान की आजादी पर सारी शक्ति लगानी होगी। लेकिन हम इसे ससार के व्यापक हित की दृष्टि से देखने की कोशिश करते है और ऐसा करने मे हम अनिवार्य रूप से अमरीका का विचार करते है। आपको मालूम है कि यूरोप की लडाई के बारे मे हमने क्या रवैया अख्तियार किया है। हमने फासिस्ट और नाजी सिद्धान्त का हमेशा विरोध किया है और सब तरह के हमलों की निन्दा की है। यदि हमें विश्वास हो जाता कि मौजूदा जग एक ओर आजादी और दूसरी ओर नाजीवाद के बीच सघर्ष है तो हम खुशी से अपना वजन आजादी के पक्ष मे डाल देते। लेकिन हमने ब्रिटिश सरकार से युद्ध के उद्देश्यो को बताने और हिंदुस्तान को आजाद मुल्क समझने के लिए जो अनुरोध किया उसमें हमे मुह की खानी पडी और हमने साफ तौर पर कह दिया गया कि यह लडाई असल मे ब्रिटिश साम्राज्यवाद की रक्षा के लिए है। इस उद्देश्य के लिए हम अपने मनुष्यो और साधनो का उपयोग होने देना मंजूर नही कर सकते। अगर हम नाजीवाद के खिलाफ है तो साम्राज्यवाद के भी विरुद्ध

हम अंग्रेजो की साम्राज्यवादी नीति का समर्थन करने के लिए फस जायेंगे और कई तरह के बुरे कामो मे शरीक हो जायगे । इसलिए मेरा खयाल है कि हमे बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए और बिल्कुल साफ कर देना चाहिए कि हम युद्ध के इन साम्राज्यवादी उद्देश्यों का समर्थन नही करेंगे ।

जैसा मैने ऊपर बताया है कि स्थिति जल्दी ही बहुत ज्यादा पेचीदा हो सकती है, अगर पश्चिमी शक्तिया रूस के विरुद्ध गतिमान हो जाय और इटली के साथ उनका पड्यन्त्र सफल हो जाय । वे इसे साम्राज्य के विरुद्ध धर्मयुद्ध बतायेंगे और उसकी आड मे न केवल अपने साम्राज्य को मजबूत करने की कोशिश करेंगे, बल्कि सोवियत रूस के समाजवादी राज्य को भी छिन्न-भिन्न कर देगे । रूसी नीति के साथ हम सहमत हो या न हो, यह हर नुक्तेनिगाह से एक आफत होगी । मेरी आपसे प्रार्थना है कि इस बात को ध्यान में रखे और हिंदुस्तानी वार्ताओ को इस दृष्टि से देखे ।

आप देखेंगे कि आपके लेखो मे एक-दो आशावादी शब्दो के प्रयोग और उत्तर प्रदेश के गवर्नर के आनन्दभवन में आने जैसी छोटी घटनाओ से हर जगह यह असाधारण असर पडा है कि ब्रिटेन के साथ किसी-न-किसी तरह का निपटारा हो रहा है और कांग्रेसी मन्त्रिमडल जल्दी ही फिर पदारूढ हो जायगे । जिन्ना हमारी आजादी का मजाक उडाकर इससे फायदा उठा रहे है । मुस्लिम लीग को अपना सर जरा उठाने का मौका मिल जाता है और हमारे पत्र-सपादक तो हमेशा की तरह गलत व्यवहार करते ही हैं । इन सब बातो से हिंदुस्तान और इग्लैण्ड दोनो मे जनता के मन पर गलत असर होता है । इससे समझौते की सभावना भी बहुत कम हो जाती है । फिर भी यही होगा कि वाइसराय शिकायत करेगा कि उसे गुमराह किया गया । 'पायनियर' ने यह शीर्षक लगाया है—"कांग्रेस मन्त्रिमडलो के त्यागपत्र एक धोखाधडी", इत्यादि । हर जगह पूछा जा रहा है कि पर्दे के पीछे क्या हो रहा है ? हर जगह किसी बडी और आकस्मिक घटना की आशा लगी हुई है ।

इनसब बातो का हकीकत से और वर्तमान परिस्थिति से मेल नही बैठता । इतना ही नही, किसी भी तरह की दिमागी या दूसरी तैयारियो,

के लिए गलत वातावरण पैदा होता है ।

मुझे खुद को तो यकीन है कि निपटारे की कोई वास्तविक सभावना नही है, हालाकि ब्रिटिश सरकार बेशक उसे पसन्द करेगी । लेकिन जो हमारी कम-से-कम मांग है, उसे वे माननेवाले नही है । आज ब्रिटिश सरकार पहले से कही ज्यादा प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यवादी है और उससे हमारी बात मान लेने की आशा रखना ऐसी बात की आशा रखना है, जो इस स्थिति मे हो नही सकती । झूठी आशाए पैदा करना इन्साफ और मसलहत दोनो के खिलाफ है और उससे हमारी स्थिति कमजोर भी हो सकती है । मेरा सुझाव है कि दूसरे पहलू पर जोर देना अधिक न्याय-पूर्ण है ताकि दूसरा पक्ष ठीक-ठीक जान सके कि क्या मामला है और वह उसके अनुसार अपनेको बना ले ।

महात्मा गाधी

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

२९८. महात्मा गाधी के नाम

निजी

इलाहाबाद
४ फरवरी १९४०

प्रिय बापू,

आप कल दिल्ली पहुचेंगे और ऐसा मालूम होता है कि आप एक सप्ताह या अधिक वहा ठहरनेवाले हैं । मुझे पता नही कि वहा क्या घट-नाए होगी और इनमें से किसीको बुलाने की आपको जरूरत हो सकती है या नही । मैं खुद तो नही समझता कि ऐसा होने की [illegible] की सभावना

की महत्वपूर्ण बैठको में शरीक होना है, जो मैंने कुछ मामलो पर विचार करने के लिए खास तौर पर बुलाई है। अगर मै वहा नही गया तो सारी बैठक का काम बिल्कुल गडबड और बेकार हो जायगा। बम्बई में मैं ९ ता की सुबह से १२ ता की रात तक रहूगा। १२ ता की रात को लखनऊ के लिए रवाना हो जाऊगा। १४, १५ और १६ ता को प्रान्तीय काग्रेस और प्रतिनिधियो की सभाओ के लिए लखनऊ मे रहूगा। बाद के दो दिन, मुझे आशा है, बडी सभाओ के लिए गोरखपुर में होऊगा। अगले दो सप्ताह के लिए फिलहाल मेरा यह कार्यक्रम है।

पिछले महीने में जो घटनाए हुई है, इन सबसे मेरा यह विश्वास पक्का हुआ है कि इस आशा के लिए जरा-सा भी कारण नही है कि ब्रिटिश सरकार हमारी स्थिति को स्वीकार कर लेगी। असल मे बहुत-सी घटनाए ऐसी हुई है, जिनसे साफ जाहिर होता है कि वे लोग एक बहुत निश्चित साम्राज्यवादी नीति पर चल रहे है। आपने देखा होगा कि ब्रिटिश ससद ने अभी एक बिल पास किया है, जिसमे 'गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट' मे सुधार करके कर लगाने के बारे मे प्रान्तीय सरकारो के अधिकार सीमित कर दिये है। यह खास तौर पर उत्तर प्रदेश के सम्पत्ति-कर को ध्यान मे रखकर किया गया है। इस तरह वह कर उठा दिया गया। ऐसे फैसले मे यह दोष तो है ही कि वह प्रान्तीय विधान-सभा के अधिकारो को कम कर देता है। इसके अलावा उसके लिए जो समय और तरीका चुना गया वह ब्रिटिश सरकार के साम्राज्यवादी दृष्टिकोण का प्रमाण है और इससे जाहिर होता है कि उस दृष्टिकोण मे कोई परिवर्तन नही हुआ।

पता नही, आपका ध्यान रॉयल सैन्ट्रल एशियन सोसायटी द्वारा सगठित लदन के हाल एक के सामाजिक समारोह की तरफ आकर्षित किया गया है या नही। लार्ड जेटलैंड सभापति थे और कई मत्रिमडल के मत्री मौजूद थे। जाहिरा मकसद तो लदन मे मुस्लिम सस्कृति और धर्म का एक केन्द्र स्थापित करना था, पर असली मकसद इस्लामवाद के प्रचार को बढावा देना और हिदुस्तान मे इस भावना का दुरुपयोग करना और इस्लामी देशो मे युद्ध के मित्र-राष्ट्रो को लाभ पहुचाना था।

यह असाधारण बात है कि किस तरह लडाई सच्चे साम्राज्यवादी ढग पर बढ रही है और किस तरह घटनाए दोहराई जा रही है ।

इन सब बातो का इस धारणा के साथ मेल नही बैठता कि इग्लैण्ड अपने साम्राज्य को समेटने की तैयारी कर रहा है, न यह देखकर तनिक भी प्रोत्साहन मिलता है कि वाइसराय से मुलाकात करने के लिए आपके नेतृत्व मे फिर लोगो का एक जलूस बनाया जा रहा है । वही पुराना खेल फिर खेला जा रहा है, पृष्ठभूमि वही है, विविध उद्देश्य वे ही है, पात्र वे ही है और परिणाम भी वही होना चाहिए ।

किन्तु कुछ दुर्भाग्यपूर्ण अप्रत्यक्ष परिणाम भी है । देश मे आनेवाले समझौते का वातावरण फैला हुआ है, जबकि वास्तव मे उसके लिए कोई कारण नही है । वह कमजोर करनेवाला और हिम्मत तोड़नेवाला है, क्योकि वह ताकत से पैदा नही हुआ है, परन्तु कई आदमियो के मामले मे तो किसी भी तरह सघर्ष से बचने और सत्ता के जो छिछडे हमारे पास पहले थे, उन्हे फिर से प्राप्त करने की अत्यधिक लालसा से पैदा हो रहा है । सघर्ष अवाछनीय तो है, परन्तु जाहिर है कि वह हर कीमत पर नही टाला जा सकता, क्योकि कभी-कभी टालना खुद ही एक निहायत महगा और हानिकारक मामला होता है। लेकिन अभी तो सघर्ष का कोई तात्कालिक प्रश्न नही है । सवाल है हमारी अपनी स्थिति को शान के साथ कायम रखने का और उसे किसी तरह कमजोर न करने का। मुझे अदेशा है कि इग्लैण्ड और हिदुस्तान दोनो में यह असर व्यापक रूप मे फैला हुआ है कि हम किसी भी हालत मे कोई सघर्ष नही करेगे और इसलिए हम जो भी शर्ते हमे प्राप्त हो जायगी उन्हे स्वीकार कर लेगे । इस प्रकार का खयाल हमे साहसहीन बनाता है । मैंने पिछले पखवारे में देखा है कि हमारे काग्रेस के प्रतिनिधियो के चुनावो पर भी इसका असर पडा है । बहुत लोग जो सघर्ष की सभावना के डर से पीछे-पीछे रह रहे थे अब फिर आगे आ गये है, क्योकि पद और सत्ता के आनद भोगने की सभावना उन्हे फिर सामने दिखाई दे रही है । अवाछनीय लोगो को काग्रेस से बाहर रखने का कई महीनो का प्रयत्न कुछ असफल होगया, क्योकि हिदुस्तान के वातावरण मे इस आकस्मिक परिवर्तन के कारण

उन्हे विश्वास होगया कि समझौता होनेवाला है ।

ब्रिटिश सरकार भागा चाहे नरम काम मे ले, परन्तु उसकी प्रतिक्रिया भी हमारे प्रतिकूल हो रही है । अवश्य ही वह हमारे साथ समझौता करना चाहती है, क्योंकि उसे युद्ध मे हमारा समर्थन चाहिए । लेकिन यह बहुत निश्चित है कि वह जरा-सी भी वास्तविक सत्ता छोडना और हमसे समझौता करने के लिए अपनी बुनियादी साम्राज्यवादी नीति को बदलना नही चाहती । साम्प्रदायिक सवाल पर वह अपना पुराना षड्यत्र जारी रख रही है और रखेगी, भले ही कभी-कभी वह काग्रेस को तसल्ली देने के लिए मुस्लिम लीग के विरुद्ध कुछ आलोचना के शब्द इस्तेमाल करती है । जहातक उसका सबध है, वह अपनी वर्तमान स्थिति को ज्यो-की-त्यो रखते हुए हमे अपने पक्ष में करने की कोशिश करेगी । यह सभव हो तो उसके लिए बहुत अच्छा है । यह नही होता है, जैसाकि उसे भी दीसता है, तब वह समय-समय पर हिदुस्तानी नेताओ से बातचीत करती रहेगी, मामले को अधिक वक्त तक खीचेगी, यह दिखायेगी कि हम समझौते के किनारे पर आ गये है और इस प्रकार ससार और हिदुस्तान दोनो के लोकमत को शान्त रखेगी । उसके दृष्टिकोण से इस दूसरी नीति मे यह लाभ और है कि वह हमारी शक्ति को थका देगी और हमे ठडा कर देगी, ताकि यदि अत मे सघर्ष आ ही जाय तो उसके लिए जरूरी वातावरण न रहे । इग्लैण्ड के सरकारी हलको मे यह आम विश्वास है कि बातचीत करने और उन्हे स्थगित कर देने की उनकी नीति का यह परिणाम हुआ है और काग्रेस-मत्रिमडलो के इस्तीफे के समय हिदुस्तान मे जो स्थिति खतरनाक मालूम होती थी, वह अब बहुत आसान होगई है और खतरो का कोई अदेशा नही रहा ।

मुझे ऐसा मालूम होता है कि जहा हम सघर्ष को जल्दी नही ला सकते और नही लाना चाहिए और जहा हमे किसी सभव और सम्मानपूर्ण समझौते के लिए दरवाजा बद कर देने की आवश्यकता नही, क्योकि आपके तरीके मे दरवाजा कभी बद नही किया जाता, वहा हमे यह भी बहुत साफ कर देना चाहिए कि हमारी पहले बताई हुई शर्तो के अलावा और किसी तरह न समझौता हो सकता है, न होगा । सच तो यह है कि इन

हालात का भी लड़ाई की घटनाओ के दृष्टिकोण से थोडा-सा सिहावलोकन करना पडेगा। जैसा हमने पहले कहा था, वैसा अव नही कह सकते कि हम यह जानना चाहते है कि यह युद्ध साम्राज्यवादी है या नही। हमे ब्रिटिश सरकार ने जो उत्तर दिया है वह और लडाई मे और विदेशी मामलो मे उसकी नीति बरावर पूरी साम्राज्यवादी रही है। इसलिए हमे जरूर इस माने हुए तथ्य के आधार पर चलना पडेगा कि यह एक साम्राज्यवादी युद्ध है, चाहे दावा इसके विरुद्ध कुछ भी किया जाय। युद्ध और ब्रिटिश-नीति दिन-दिन अधिकाधिक अपशकुनवाली होती जा रही है, और मै हर्गिज नही कहूगा कि हिदुस्तान किसी भी तरह उस साम्राज्यवादी दुस्साहस मे फसे, क्योकि इससे हिदुस्तान को न केवल भौतिक वल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से भी हानि ही हो सकती है। आज मुझे यह मुद्दा वहुत ज्यादा महत्वपूर्ण दिखाई देता है।

इस तरह मुझे मालूम होता है कि हमे सवसे महत्वपूर्ण काम यह करना है कि हम ससार के, ब्रिटिश सरकार के और हिदुस्तानी जनता के सामने अपनी स्थिति विल्कुल साफ कर दे। समझौते के इस मुद्दे पर वहुत ज्यादा गलतफहमी है और यह गलतफहमी विल्कुल हमारे विपरीत और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनुकूल है, क्योकि वह हमारे सावनो का युद्ध के लिए दुरुपयोग कर रहा है और यह वहाना भी कर रहा है कि उसे हमारा वहुत सद्भाव प्राप्त है। ब्रिटिश सरकार या वाइसराय के पास हमारे जाने से वे गलतफहमिया वढती है और ब्रिटिश सरकार सही समझौते से और भी दूर हटती है।

राजगोपालाचारी के कुछ हाल के भापणो से मुझे दु ख हुआ है, क्योकि उनमे औपनिवेशिक दर्जे और इसी तरह की वहुत ही समझौते की-सी वाते है। काग्रेस वहुत-सी आवाजो मे वोलती है और आश्चर्य नही कि इसका नतीजा गडवड और परेशानी हो। कम-से-कम आजादी के सवाल पर तो एक ही आवाज निकलनी चाहिए।

मैने आज आपपर दो लम्बे पत्र थोप दिये है, जिसके लिए मै आपसे क्षमा चाहता हू ।

सप्रेम आपका,
जवाहरलाल

महात्मा गाधी,
नई दिल्ली

२९९. अबुल कलाम आजाद के नाम

इलाहाबाद
२२ फरवरी १९४०

प्रिय मौलाना,

कुछ मुद्दे है, जो गौर के लिए आपके सामने रखना चाहता हू। कल स्टेशन पर हमे कोई चर्चा करने के लिए बहुत कम वक्त मिला।

१ जबसे लडाई शुरू हुई, ब्रिटिश सरकार की सारी पालिसी से यह साबित होता है कि वे लोग जानबूझकर और बराबर साम्राज्यशाही ढग पर चल रहे है। लडाई से पहले चैम्बरलेन-सरकार बिल्कुल प्रतिक्रियावादी मगरूर थी और कई मौको पर उन लोगो ने फासिस्ट और नाजी ताकतो को बढावा दिया और यूरोप मे जमहूरियत को कुचला। अबीसीनिया, स्पेन, आस्ट्रिया, चैकोस्लोवाकिया और अल्बानिया के मामले मे यह साफ होगया। मचूरिया मे भी उनकी पालिसी इसी किस्म की थी। इग्लैण्ड मे १०० साल से ज्यादा के दौरान मे मि चैम्बरलेन की सरकार सबसे ज्यादा प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यशाही सरकार हुई।

लेकिन जब उनकी अपनी सल्तनत को खतरा पैदा हुआ तब उन्होंने जमहूरियत की पनाह ली और लडाई शुरू कर दी। यह यकीन करना मुश्किल था कि वे लोग अचानक जमहूरी बन गये है। बाद की घटनाओ ने बता दिया है कि उनकी पुरानी पालिसी बिल्कुल नही बदली है और सच तो यह है कि अब और भी तेजी के साथ उसके पीछे चला जा रहा है। फर्क इतना ही है कि वे हिटलर को हटाना चाहते है, क्योकि वह उनकी सल्तनत के लिए खतरा बन गया है। यह पुरानी पालिसी यूरोप और दूर पूरब और अमरीका मे भी तमाम प्रतिक्रियावादी तत्वो

को बढावा देने की और रूस को कमजोर बनाने की कोशिश की थी, क्योंकि रूस इन तमाम प्रतिक्रियावादी तत्वो के लिए और साम्राज्य-शाही के लिए भी चुनौती के तौर पर खडा था। जहा एक तरफ बढती हुई नाजी ताकत के डर की वजह से वे कभी-कभी मदद के लिए रूस की तरफ देखते थे, वहा रूस के लिए और बढती हुई जमहूरियत के लिए उनकी नापसदगी इतनी ज्यादा थी कि वे रूस के साथ किसी भी तरह हाथ नही बटा सकते थे। इसलिए आखिरी वक्त तक उन्होने हिटलर और मुसोलिनी के तई खुश रखने की पालिसी बरती और इस तरह उनकी ताकत वहुत बढाई। उनका मकसद यह था कि हिटलर को सोवियत रूस के खिलाफ लडाई मे फसाकर अपने दो खास दुश्मनो को इस तरह कमजोर बनाया जाय। वे किसी भी हालत मे नही चाहते थे कि जर्मनी या इटली मे तरक्की-पसद हुकूमत हो।

इस तरह वे खेल खेलते रहे। आखिर मे रूस ने महसूस किया कि उस हालत मे उसके लिए वडा खतरा था और चूंकि उसे ब्रिटिश पालिसी के खिलाफ पूरा शक था, इसलिए उसने नाजी जर्मनी के साथ समझौता करके उस पालिसी को बिगाडने की कोशिश की। इससे इस वक्त तो ब्रिटिश तजवीजे गडबड होगई।

अग्रेजी पालिसी वुनियाद मे सोवियत के खिलाफ बनी रही और यह अजीब वात है कि आज भी जब इग्लैण्ड की जर्मनी के साथ लडाई है तो बिटिश सरकार जर्मनी के मुकावले रूस के कही ज्यादा खिलाफ है। उनका मकसद जर्मनी मे किसी-न-किसी तरह की भीतरी तवदीली कराने का है, जिससे हिटलर के वजाय जर्मनी के फौजी नेताओ के हाथ मे वागडोर आ जाय और फिर उनके साथ सुलह कर ली जाय। इसके वाद इग्लैड, फास, जर्मनी और दूसरे मुल्को का रूस पर मिला-जुला हमला हो। यह घटना होगी या नही, कहना मुश्किल है। लेकिन वात यह है कि ब्रिटिश पालिसी लडाई के पहले और वाद मे वरावर प्रतिक्रियावादी और साम्राज्यशाही रही है, चाहे उनके ऐलान कुछ भी हो।

२. रूस ने कई भूले की है और मेरे खयाल से उसका फिनलैड पर हमला करना खास तौर से वहुत गहरी भूल थी, उसूल और मसलहत

दोनो की नजर से । यह सच है कि इग्लैण्ड फिनलैंड को रूस के खिलाफ साजिश की जगह और रूस पर हमला करने के लिए कूदने के मच के तौर पर इस्तेमाल कर रहा था । रूस इस घटना की बात से डर गया और उसने फौरन हमला करके पेशबन्दी करने की कोशिश की । यह वडी बेवकूफी का काम था और वह इग्लैण्ड और फ्रास के हाथो मे खेल गया और साथ ही दुनियाभर की तरक्की-पसद राय उसके खिलाफ होगई । इससे इग्लैण्ड को यह ढोंग करने का मौका मिल गया कि वह जमहूरियत का दोस्त है और उनके पिछले कुछ सालो के पापो को लोग भूल गये । राष्ट्र-सघ ने फासिस्ट और नाजी हमलो की तो कभी चर्चा तक नही की थी, लेकिन रूस की बुराई करने को वह एकदम जाग गया । अब मेरे मन मे कोई शका नही है कि रूस की पालिसी हाल मे गलत रही है और उसकी बुराई होनी ही चाहिए, लेकिन साथ ही हमे याद रखना चाहिए कि इस पालिसी की यह शक्ल कैसे बनी । इसकी वजह से यह हुआ कि ब्रिटिश सरकार की तरफ से रूस को घेर लेने की बराबर कोशिश होती रही । अब तो यह बात ज्यादा अहमियत की है कि हम अच्छी तरह समझ ले कि इग्लैण्ड अपने साम्राज्यशाही फायदे के लिए और लडाई को रूस तक फैला देने के लिए फिनलैंड की हालत का नाजायज़ फायदा उठाने की कोशिश कर रहा है । इसमे हमारे लिए खतरा भरा है, क्योकि अगर इग्लैड और रूस मे लडाई हुई तो हमारी अपनी सरहदे उसमे फस जाती है और हमारे लिए अपनी पालिसी के बारे मे साफ रहना जरूरी हो जाता है । जहा हमे रूस की बहुत-सी कार्रवाइयो की नुक्ताचीनी और बुराई जरूर करनी चाहिए, वहा यह निहायत खतरनाक बात होगी कि हम ब्रिटिश साम्राज्यशाही को अपने फायदे के लिए उसका फायदा उठाने दे ।

मेरे खयाल से यह बडे दु ख की बात होगी कि रूस अपग बना दिया जाय और लडाई की वजह से वह कमजोर होजाय, क्योकि तब तो साम्राज्यशाही का फकत एक ताकतवर मुखालिफ भी नही रहेगा । लेकिन यह बात छोड दे तो भी कोई चीज जिससे ब्रिटिश साम्राज्यशाही मजबूत होती हो, हमारे लिए खतरनाक है । इसलिए यह बहुत अहम बात है कि हम अपने दिमाग मे रूस के तई ब्रिटेन की मौजूदा पालिसी के बारे मे साफ रहे

और यह ऐलान कर दे कि हम उसके खिलाफ है और रूस के खिलाफ ब्रिटिश कार्रवाई की हम किसी भी हालत मे ताईद नही कर सकते और न उसे पसद कर सकते है। मेरे खयाल से हम पालिसी साफ जाहिर कर दें तो उसका असर पडेगा। अगर ब्रिटेन यह सोचता है कि जो कुछ वह करता है उसे हिंदुस्तान बहुत ऐतराज किये बिना मान लेगा तब तो यह बिल्कुल मुमकिन है कि लडाई फैल जाय और रूस उसमे फस जाय। इसके नतीजे हमारी अपनी हिंदुस्तानी सरहद के लिए क्या होगे, यह सोचने की बात है। दूसरी तरफ अगर इग्लैड यह महसूस करता है कि उसकी तरफ से रूस पर हमला होने के खिलाफ हिंदुस्तान मे जबरदस्त ऐतराज है और ऐसी किसी भी पालिसी की हिंदुस्तान मे मुखालफत होगी तो इग्लैड दूसरे हलको मे इस लडाई को फैलाने से पहले बहुत हिचकिचा सकता है। इस वक्त ब्रिटिश सरकार इस पसोपेश मे है कि उसे क्या करना चाहिए। वह रूस पर हमला करना चाहती है, लेकिन नतीजो से डरती है। अगर उसे भरोसा होजाय कि हिंदुस्तान मे उससे अमन हो जायगा तो वह हमला कर देगी, नही तो हाथ रोक लेगी। इसलिए इस मामले मे हमारे रवेये की अहमियत है और उसे ज्यादा-से-ज्यादा सफाई और मजबूती के साथ जाहिर कर देना मुनासिब है।

३ इग्लैड और फ्रास मे जो कुछ हो रहा है, उससे साबित होता है कि ये मुल्क कितने ज्यादा प्रतिक्रियावादी होते जा रहे है। फ्रास मे आज फौजी तानाशाही है और लोगो की आजादी पूरी तरह दबा दी गई है। बीसो पार्लमेट के मेबर वहा गिरफ्तार कर लिये गए है,क्योकि सरकार को उनके खयालात पसद नही है। इसी वजह से कई सौ म्यूनिसिपैलिटिया खत्म कर दी गई है। इग्लैड मे बात यहातक तो नही बढी है, लेकिन रवैया वही है। अमली तौर पर इग्लैड और फ्रास की सरकारे ज्यादा-से-ज्यादा फासिस्ट बनती जा रही है, हालाकि वे बात जमहूरियत की करती है। वे लडाई के मकसदो के बारे मे कोई भी बात कहने से इन्कार करती है और १९१४ की तरह उनका साफ मकसद है कि अपनी-अपनी सल्तनतो की जड मजबूत कर ले और अपने मुकाबले की सल्तनतो को और अपनी सल्तनतो के भीतर और बाहर की तमाम तरक्की-पसद ताकतो को कमजोर कर दे। सितम्बर मे काग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के सामने जो सवाल रखा उसका

जवाब साफ-साफ ब्रिटिश पालिसी और फ्रेंच पालिसी ने दे दिया। वह जवाब यह है कि वे साम्राज्यशाही की तरफ है और उसे कायम रखने के लिए लड रहे है। अब हम तो फासिस्म और नाजीशाही की बुराई करते है और हिटलर लडाई में जीत गया तो बुरा होगा। हम यह नही चाहते। इसके मुकाबले ब्रिटिश साम्राज्यशाही की जीत का मतलब यह है कि चैम्बरलेनशाही जारी रहेगी और पहले से ज्यादा मजबूत हो जायगी। यह भी उतना ही बुरा है और उससे बराबर लडाइया होती रहेगी। इसलिए राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हरेक नजरिये से हमारे लिए ऐसी जीत मे किसी भी तरह मदद देना बेवकूफी होगी। इस वजह से इग्लैंड और हिंदुस्तान के बीच के हिंदुस्तानी मसले के किसी अन्दरूनी हल की बात छोड दी जाय तो भी यह साफ हो जाना चाहिए कि हम ब्रिटिश सल्तनत को महफूज रखने के लिए किसी साम्राज्यशाही लडाई मे अपनी ताकत नही लगायेंगे।

४ इस्लामशाही फिर किस तरह से पैदा होकर उठ रही है, यह भी आपने देखा होगा। इसकी वजह महज यहा की मुस्लिम लीग या दूसरी जमाते ही नही है। बुनियादी तौर पर इसकी वजह यह है कि ब्रिटिश सरकार उसे बढावा देना चाहती है। १९१४ मे और बाद मे इस्लामशाही साम्राज्य की मुखालफत करनेवाली ताकत थी। उसने ब्रिटिश सरकार की लडाई की कोशिश को कमजोर किया और बाद मे हिंदुस्तान के खिलाफत-आन्दोलन की बुनियाद को ही बदल दिया। आज भी वही खयाल ब्रिटिश साम्राज्यशाही की हिमायत मे इस्तेमाल किया जा रहा है। इससे किसी हद तक हिंदुस्तान का कौमी मोर्चा भग होता है और नजदीकी पूरब के मुस्लिम अवाम की राय पर इगलैंड के हक मे असर पडता है। तुर्की का इग्लैंड के लिए दोस्ताना ताकत होना भी इस मामले मे ब्रिटिश पालिसी को मदद पहुचाता है। मुझे मालूम नही कि ब्रिटिश प्रोपेगैण्डा का मुस्लिम मुल्को मे क्या असर हुआ ह, लेकिन मैं यह बताना चाहता हू कि इस्लामशाही के नये दौर की शुरुआत पक्के तौर से साम्राज्यशाही है।

५ इन सब बातो से साबित होता है कि किस तरह हमारे अपने सब अन्दरूनी मसलो का, चाहे वह फिरकेवारान मसला हो चाहे आजादी का बडा मसला हो, लडाई के बडे सवालो और ब्रिटेन की गैरमुल्की पालिसी

के सवालो के साथ गहरा ताल्लुक है। अगर हम हिंदुस्तान को अलग समझे तो भूल करते है। फिरकेवाराना मसले की खास मुश्किले ब्रिटिश सरकार के मौजूदा रवैये की वजह से है। अगर मुस्लिम लीग या सिकन्दर हयात राजी हो जाय तो भी उसे हल करना हमारे लिए बहुत मुश्किल हो जाता है। जरूर ही ब्रिटिश सरकार हिंदुस्तानी मसले का हल चाहती है ताकि वह लडाई मे अपनेको मजबूत बना सके और अपनी साम्राज्यशाही की जड जमा सके। सिकन्दर हयात पूरी तरह ब्रिटिश पालिसी के हक मे काम कर रहा है, इसलिए वह भी वही बात करना चाहता है। लेकिन बुनियादी तौर पर इस पालिसी का दारोमदार ब्रिटिश साम्राज्यशाही की ताकत बढाने पर है। दूसरी तरफ हमारी पालिसी साम्राज्यशाही को कमजोर करने पर मुनहसिर है। यह बुनियादी फर्क है जो समझौता नही होने देता और वाइसराय के साथ या मुस्लिम लीग के साथ कितनी ही बातचीत कर ली जाय, यह दिक्कत उस वक्त तक दूर नही होगी जबतक कि ब्रिटिश सरकार खुद अपनी साम्राज्यशाही छोडने को तैयार नही हो जाती। वर्किंग कमेटी के १४ सितम्बरवाले बयान मे उससे इसी कुरबानी की माग की गई थी। ऐसा करना तो बहुत दूर रहा, ब्रिटिश सरकार ने अपनी साम्राज्यशाही पर मोहर लगाई है। हिंदुस्तान के रवैये की बड़ी अहमियत है, क्योकि उससे अमरीका और दूसरे अलग रहनेवाले मुल्को पर असर पडता है। अमरीका इस वक्त बहुत जोर के साथ हिटलर के खिलाफ और उस खयाल से अंग्रेजो के हक मे है। साथ ही इसमे शक नही कि वह ब्रिटिश साम्राज्यशाही के हक मे भी नही है और इसलिए वह अंग्रेजो का साथ देने मे हिचकिचाता है। अगर अंग्रेज अमरीका को समझा दे कि उन्होने हिंदुस्तान के साथ समझौता कर लिया है तो इससे उन्हे जबरदस्त मदद मिलेगी।

६ पिछले चन्द महीनो मे ब्रिटिश सरकार के साथ समझौते के बारे मे बातचीत से इतनी गडबड हुई है कि हमारे अपने लोग और दुनिया गुमराह हो गई और कोई नही जानता कि क्या होने वाला है। मेरे खयाल से हमे बिल्कुल साफ कर देना चाहिए कि साम्राज्यशाही को बचाने मे हमारे साथ कोई समझौता नही हो सकता और ऐसी तमाम कोशिशे जितनी जल्दी

छोड दी जाय उतना अच्छा है। इस बारे में कोई आखिरी बात हो जानी चाहिए।

७ पिछले चन्द महीनो मे हिन्दुस्तान में ब्रिटिश पालिसी धीरे-धीरे मनमाने ढग की हुकूमत पर लौट आने की रही है और हिन्दुस्तान से बाहर के लोगो को इससे अचरज होता है कि कैसे हमने चुपचाप चैन से इसके आगे सिर झुका लिया है। न सिर्फ चुनी हुई सूबाई सरकारे उखाड दी गई है, बल्कि पार्लामेंट मे तरमीमी कानूनों के जरिये सूबाई सरकार का दायरा दरअसल छोटा कर दिया गया है। इस किस्म की चीज वाइसराय के तमाम मीठे लफ्जो से ज्यादा जोर से बोलती है। मामूली तौर पर आईन के महज मुल्तवी होने से ही कडी जद्दोजहद हो जानी चाहिए थी, लेकिन हमने इसे चुपचाप बर्दाश्त कर लिया। हमने तरमीमी कानूनो को भी बर्दाश्त कर लिया। आईन की यह तरमीम, जहातक हमारा ताल्लुक है, अहमियत नही रखती। इससे तो ब्रिटिश पालिसी का झुकाव मालूम होता है। इन सब बातो से पता चलता है कि हमारे और ब्रिटिश सरकार के बीच मे कोई आम रजामदी की चीज नही है और ब्रिटिश साम्राज्यशाही हमेशा की तरह मजबूत हो रही है।

८ जैसा मैंने आपको कल शाम बताया था, मुझे यह बहुत खतरनाक मालूम होता है कि मौजूदा सूबाई विधान-मडलो की बनी हुई सविधान-सभा मान ली जाय। यह बालिग मताधिकार की हमारी बुनियादी माग को छोड देना है। यह माग हम पिछले चार साल से कर रहे है। इसका यह भी मतलब है कि हमारी सविधान-सभा ब्रिटिश साम्राज्यशाही के ढाचे के भीतर होगी। मौजूदा हालात मे इससे फिरकेवाराना और दूसरे झगडे पैदा होगे और इस तरह हमारी अपनी कमजोरी का दिखावा किया जायगा और सविधान के बारे मे कोई समझौता नही होगा। नतीजा यह होगा कि हमे कुछ छोटी-मोटी तब्दीलियो के साथ १९३५ के कानून के अदर रहकर काम करना होगा। अगर सविधान-सभा को कामयाब होना है तो उसे इस कानून और ब्रिटिश साम्राज्यशाही दोनो के ढाचे के बिल्कुल बाहर रहना चाहिए। ब्रिटिश सरकार के साथ हमारे ताल्लुकात के सवाल पर तभी गौर होना चाहिए जबकि सविधान-सभा हमारा सविधान तैयार कर

ले । बालिग मताधिकार की तकनीकी मुश्किल अप्रत्यक्ष चुनाव की बीच की कार्रवाई से दूर की जा सकती है । मुद्दा यह है कि इस संविधान-सभा को हिंदुस्तानी अवाम का एक ऐसा हिस्सा माना जाय, जो ब्रिटिश साम्राज्य-शाही और ब्रिटिश पार्लमेंट के दायरे के बिल्कुल बाहर रहकर काम करता हो, नहीं तो वह ब्रिटिश पार्लमेंट के किसी कानून का पुछल्ला बनकर रह जायगी ।

९ मेरे खयाल से यह भी साफ कर देना चाहिए कि नौकरी की मौजूदा शर्तों और कन्ट्रोल वगैरा के रहते हुए हमारी सूबाई सरकारें फिर से काम नहीं कर सकतीं । मुझे खुशी है कि पंतजी ने इसपर जोर दिया है । सरकार का सारा ढांचा ऊपर से नीचे तक बदलना चाहिए ।

मुझे उम्मीद है कि इतना लंबा खत लिखने के लिए आप मुझे माफ करेंगे । मेरे दिमाग में और बहुत-से खयाल हैं, लेकिन अब मुझे खत्म करना चाहिए ।

आपका,
जवाहरलाल

मौलाना अबुल कलाम आजाद,
१९ ए बालीगंज सर्कुलर रोड,
कलकत्ता ।

३००. कृष्ण कृपालानी के नाम

इलाहाबाद
२६ फरवरी १९४०

श्री कृष्ण कृपालानी,
शान्तिनिकेतन, बंगाल

प्रिय कृष्ण,

तुम्हारा खत मिला । तुम सुधीर सेन के नाम मेरा पत्र विश्वभारती त्रैमासिक में छाप सकते हो । लेकिन मेरा खयाल है कि ऐल्महर्स्ट के नाम का उसमें जिक्र करना ठीक नहीं होगा । तुम कह सकते हो कि पत्र किसी अंग्रेज दोस्त के लिए लिखा गया है । साथ में तुम यह टिप्पणी भी दे सकते हो :

"यह साफ तौर से समझ लेना चाहिए कि सम्पूर्ण भारतीय स्वाधीनता

की शर्त अत्यावश्यक है और उनकी चर्चा करने या उनमें मीनमेख निकालने की गुजाइश नही है। जब मै आजादी की बात करता हू तो यह जरूरी नही कि उसका अर्थ ब्रिटेन के साथ अतिम रूप से सबध-विच्छेद कर लेना है। मेरा विचार यह है कि ब्रिटेन साम्राज्यवादी न रहे। उसका अभी या निकट भविष्य मे तो कोई लक्षण दिखाई नही देता। सब बातो से यही जाहिर होता है कि ब्रिटिश सरकार पूरी तरह साम्राज्यवादी सत्ता के रूप में ही काम कर रही है और वह अपने साम्राज्य की रक्षा करने और अपने साम्राज्यवाद को मजबूत बनाने पर तुली हुई है। जाहिर है कि किसी भी भावी व्यवस्था मे, यदि वर्तमान व्यवस्था को जारी नही रखना है तो, विभिन्न राष्ट्रो में गहरा सहयोग होना चाहिए। विश्व-सघ की आजकल बडी चर्चाए है। ऐसा कोई सच्चा सघ बने तो आजाद हिंदुस्तान कुदरती तौर पर उसका सदस्य बनेगा, लेकिन अगर प्रस्ताव यूरोपियन राज्यो के सघ का अथवा यूरोप, अमरीका और ब्रिटिश उपनिवेशो का सघ बनाने का है तो उसका नतीजा तो यही हो सकता है कि एशिया और अफ्रीका का शोषण करने के लिए साम्राज्यवादी सत्ताओ को मजबूत किया जाय। इससे हम कभी सहमत नही हो सकते।

"सारा मुद्दा यह है कि साम्राज्यवादी रचना के साथ किसी भी तरह बधकर हम हिंदुस्तान के भविष्य का विचार नही कर सकते। अगर हम सविधान-सभा की बात कहते है तो वह कोई ऐसी चीज नही होगी जो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के ढाचे के भीतर रहे। लेकिन वह उसके बाहर होगी। आपत्ति इगलैड या दूसरे देशो के साथ सहयोग करने पर नही है, लेकिन किसी भी ऐसी रचना के साथ, जो साम्राज्यवादी हो, सहयोग करने पर है।"

उस दिन मैने एक लम्बा पत्र न्यूयार्क के कुछ फेडरल यूनियनवालो को लिखा था। शायद तुम्हे उस पत्र मे दिलचस्पी हो, इसलिए उसकी नकल तुम्हारे लिए भेज रहा हू। अगर तुम चाहो तो उसके अश छाप सकते हो।

तुम्हारी पत्रिका मे से लेकर छापी हुई गृह-उद्योगो पर मेरे पत्र की कई नकले मुझे मिल गई। नदिता जब यहा आई थी तब मैने उसके कुछ

चित्र लिये थे । क्या अनिल चदा ने वे तुमको दिखाये या उनकी प्रतियां दी ?

तुम्हारा,
जवाहरलाल नेहरू

३०१ एडवर्ड टामसन की ओर से

एलसबरी, बक्स
७ मार्च १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

मेरे खयाल मे यह पत्र शायद रनजीत को मिलना चाहिए । इसके लिए वास्तव मे एक प्रखर बुद्धिवाले पाठक की जरूरत है ।

जानता हू, हिदुस्तान मे एक नदी है, जिसे बाहर के लोग गैंजेज और हिदुस्तानी गगा कहते है । टेम्स को 'तरल इतिहास' कहा जाता रहा है, गगा भी तरल (बहुत-कुछ) और इतिहास है । मै शायद इस अक्तूबर मे फिर हिदुस्तान आ रहा हू । अक्तूबर से पहले भी आ सकता हू । गगा की फिल्म बनानी है—कैलास से लेकर सागर तक । मुझे बताइये, इसके लिए कुल मिलाकर अच्छा समय कौन-सा ठीक रहेगा । इन बातो को ध्यान मे रखना पडेगा १. सुन्दर दृश्यावली । मेरे खयाल मे वर्षा का मौसम, जो बादो के साथ इस दृश्य को उपस्थित करता है, सबसे अच्छा रहेगा २ सुविधा । वर्षा का मौसम खराब रहता है । ३ मेले, जैसे आपके इलाहाबाद का कुम्भ-मेला । लोग सौन्दर्य-गौरव-मडित दृश्यो, मनुष्यो और उनके मेलो की झाकी लेना चाहते है । मेरे खयाल मे किराये पर मोटरकार लेकर नदी के किनारे-किनारे चलना सबसे अच्छा रहेगा ।

मैंने आपका एक पत्र देखा है जिससे मै प्राय पूरी तरह सहमत हू । एल्महर्स्ट ने मुझे यह पत्र दिखाया था ।

मेरा बडा लडका अब सेना मे सेकेण्ड लेफ्टिनेट है और जल्द ही विदेश जाने वाला है । कहा जायगा, यह पत्र मे नही बता सकता । ६ महीने मे वह २० वर्ष का हो जायगा । छोटा लडका स्कूल मे पढता है । मुझे फ्लू हो गया था और अब मेरी पत्नी इससे पीडित है, अन्यथा हम लोग ठीक-ठाक चल रहे है ।

मुझे आशा है कि उदिग के समाचार से आप सन्तुष्ट है।

आज सुबह मै प्रसन्नता अनुभव कर रहा हू, अनोखी बात है। सरकार फिलस्तीन के प्रश्न पर दृढ है। मेरे दल के लोगो ने, वामपन्थियो ने, जो अरबो के विरुद्ध और यहूदियो के पक्ष मे पागल हो रहे है, जैसे अनैतिकतापूर्ण तर्क पेश किये है, वैसे मैने कभी नही सुने थे। इसके कारण मै तेजी से 'टोरी' होता जा रहा हू।

हिदुस्तान आने पर मै टैगोर के शान्तिनिकेतन की भी फिल्म बनाऊगा। आवश्यक जानकारी देकर मेरे मित्र मेरी सहायता कर सकते है। मै समझता हू, पटना जैसे स्थानो पर होटल है। लेकिन हरिद्वार अथवा दूसरी छोटी-छोटी जगहो में भी है क्या ? यदि हम मोटरकार से गगा के किनारे-किनारे चले तो हमे कई स्थानो पर ठहरना पडेगा। .. बाद को शायद मै रनजीत के साथ उडीसा के जगलो की सैर कर सकू। लेकिन शायद ऐसा होगा नही। जो हो, अगर मै राजी कर सका तो अपनी पत्नी को भी साथ लाने का विचार है।

उनका कहना है कि यह पत्र देकर आपको कष्ट नही देना चाहिए। मेरा भी कुछ ऐसा ही खयाल है। इस पत्र को रनजीत तक पहुचा भर देगे क्या ? मेरे पास उनका पता नही है, सिर्फ नैन का पुराना आफिस का पता है।

आपका,

ए. टा.

३०२ अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता

२७ मार्च १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

जब १५ तारीख को सुबह आपने रेल मे मुझे मेरी तकरीर का अंग्रेजी तर्जुमा दिया तो मैने यह देखने के लिए उसे सरसरी तौर से उलट-पलट लिया कि वह कैसा हुआ है। अब से पहले उसे फुरसत से पढने का मुझे वक्त ही नही मिला था। अब जबकि पहले की बनिस्वत मै कम घिरा हू, मैने आपके अंग्रेजी तर्जुमे को गौर से पढा। इसने मुझपर जो असर डाला, उसने मुझे मजबूर कर दिया कि मै अपनी हस्ब-मामूल खामोशी

को तोडकर आपके ऊचे दिमाग और गैर-मामूली काबलियत की तहेदिल से तारीफ करू । मैंने जितना सोचा था, उससे कही ज्यादा अग्रेजी पर आपका दखल है । मुझे यह कहने मे कोई हिचकिचाहट नही कि हमारे वक्त के चोटी के काबिल लोगो मे से भी बहुत थोडे ऐसे लोग है, जो कई दिनो मे भी इतना बडा काम करने की हिम्मत नही कर सकते, जो आपने चन्द घटो मे, बिना किसी खास कोशिश के, कर लिया ।

तर्जुमा करना एक तरह से नई चीज लिखने से कही ज्यादा मुश्किल है । असली मजमून की अदबी शक्ल बनाये रखना और साथ ही तर्जुमे के जरिये लेखक के अदबी तर्ज को जाहिर करना कोई आसान काम नही है । जिस आदमी का दोनो जबानो पर एक-सा काबू है, वही यह काम करने की हिम्मत कर सकता है । आपके तर्जुमे मे असली मजमून की कोई भी खासियत बिगडी नही है और आपने अग्रेजी तर्जुमे मे मेरे उर्दू के अदबी ढग को इतनी कामयाबी के साथ निबाहा है कि अगर पढनेवालो को ऐसा लगे कि असली तकरीर उर्दू मे नही, अग्रेजी मे लिखी गई थी, तो मुझे अचरज नही होगा ।

आपके तर्जुमे की एक दूसरी खासियत है तामीरी खयालात की गजब की बुलन्दी, जिसमे से ब्यौरे निकलते है । आपने पूरी तरह मेरे उस ख़याल को देख लिया, जिसने मेरी तकरीर और जुमलो को यह शक्ल दी है । दर-असल आपने जब तर्जुमा शुरू किया तो जो कुछ मैंने कहा है, उसकी पूरी तस्वीर आपके सामने थी । यकीनन यह बडा मुश्किल काम था, खासतौर पर जबकि मेरे अपने मजमून से आपको कोई सीधी मदद नही मिल सकती थी ।

अग्रेजी तर्जुमे की जरूरत की नजर से कही-कही आपने तर्जुमे मे कुछ घटा-बढी करदी है । मैंने इन सब तब्दीलियो को बडे गौर से देखा और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि बाज जगह आपने तर्जुमे को मेरे मज-मून से बेहतर कर दिया है । तर्जुमे मे कही भी मेरी तकरीर की स्पिरिट और शक्ल मे कोई खामी नही आने पाई ।

वाइसराय के ऐलान पर नुक्ताचीनी करते हुए मैंने यह लिखा था

"सफो-पर-सफे पढ जाने के बाद भी बमुश्किल इस कदर बताने

पर मुस्तर्इद होता है . " अब यहा पर 'बमुश्किल' लफ्ज मैने मिसाल के तौर पर इस्तेमाल किया था। आपने मेरी मिसाल की शक्ल को बनाये रखते हुए उसके भाव को इस तरह लिखा है ·

"सफो-पर-सफे पढ जाने के बाद बहुत झिझक के साथ आखिर परदा उठता है। हमें एक झलक मिलती है ।" जो चीज मैं 'बमुश्किल' लफ्ज के जरिये जाहिर करना चाहता था, आपने अपने फैले हुए फिकरे में उसे और जोरदार तरीके से जाहिर किया है। मै यह मजूर करता हू कि आपका तर्जुमा मुझसे कही ज्यादा मौजू है। इस तरह की कई खूबसूरतियो में से यह सिर्फ एक है।

मै शायद ३० तारीख को इलाहाबाद पहुचने की उम्मीद कर रहा हू। मै समझता हू कि तबतक आप इलाहाबाद मे ठहरे रहेगे।

आपका,
अ. क. आजाद

३०३. एडवर्ड टामसन के नाम

इलाहाबाद
७ अप्रैल १९४०

प्रिय एडवर्ड,

आपका ७ मार्च का पत्र मिला। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि आप अक्तूबर मे या जल्दी ही हिंदुस्तान आ रहे है। उस समय आप मुझे कहा पायगे और पा भी सकेगे या नही, इसका मुझे पता नही। परन्तु कुछ भी हो, हिंदुस्तान वही होगा और गगा भी वही होगी।

गगा की फिल्म बनाने का आपका विचार दिलचस्प है। मै इसे अपने से ज्यादा काबिल रनजीत को सौप रहा हू। लेकिन चूंकि मै खुद भी जरा कल्पनाशील हू, इसलिए उसके बारे मे कुछ कहना चाहता हू। दुर्भाग्य से रनजीत की तबीयत अच्छी नही है और वह बिस्तर मे है। लेकिन मैने इसका जिक्र उनसे किया और उन्हे इस बारे मे काफी उत्साह हुआ। लेकिन उनके दिमाग में विचारो की बाढ आ गई और जो कुछ मै नीचे लिख रहा हू, वह कुछ उनकी तरफ से भी आया है।

चूंकि गंगा इतिहास है, इसलिए ऐतिहासिक पहलू प्रकट होना चाहिए। गंगा का परम्परा, पुराण, कला, सस्कृति और इतिहास के साथ गहरा सबध है। आप उसे हर जगह सामने आती हुई पायगे। इस विपय की काफी चर्चा करना बहुत बडा काम होगा। लेकिन कुछ भी हो, इतिहास और परम्परा के पहलू की उपेक्षा नही की जा सकती। अध-विश्वास के पहलू पर जोर देने की जरूरत नही है। फिर भी हिंदुस्तान के पुराण और कला को समझने के लिए गगा के पौराणिक उद्गम का जिक्र किया जा सकता है, यानी यह दिखाया जा सकता है कि गगा शिव की जटाओ से गिर रही है। जटा से मतलब हिमालय पर्वत से है। मेरे खयाल से इसका सबसे अच्छा तरीका यह है कि इसको चित्रित करनेवाले कुछ प्रसिद्ध स्थापत्यो की नकल कर दी जाय। ऐसे अनेक स्थापत्य है।

फिर कुछ प्रसिद्ध ऐतिहासिक दृश्य दिखाये जाने चाहिए। मिसाल के तौर पर आर्यो का आना और उनका पहले-पहल गगा पर पहुचना और इस शानदार नदी को देखकर खुश होना। सर मुहम्मद इकबाल के मशहूर गीत "सारे जहा से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" की दो प्रसिद्ध पक्तिया है। उनमे आर्यो के आने का उल्लेख है। चित्र मे इन पक्तियो का लाना अच्छा रहेगा। पक्तिया ये है .

ऐ आबरूदे गंगा वह दिन है याद तुझको
उतरा तेरे किनारे जब कारवां हमारा।

पाकिस्तान-आन्दोलन के इन दिनो मे यह ध्यान देने की बात है कि मुसलिम लीग के एक नेता ने इस बारे मे क्या कहा था।

और फिर बहुत-सी लडाइयां भी गगा के आसपास हुई है। चद्रगुप्त मौर्य के काल मे यूनानी आक्रमण गगा के पास ही कही रोका गया था, शायद इलाहाबाद से दूर नही था। चद्रगुप्त के समय के जीवन को दिखाने-वाला चित्र बढिया रहेगा। उस समय कन्नौज बडा शहर था। वहा की बनी हुई चीजे, खास तौर पर तलवारे और फौलाद के हथियार मशहूर थे। मेरे खयाल से सिकदर के हमले का बयान करनेवाले शाहनामे मे भी और सोहराब व रुस्तम के वर्णनो मे भी कन्नौज की तलवारो का जिक्र आता है।

इससे पहले रामायण और महाभारत की कथाए गूथी जा सकती

है। बाद मे अशोक के काल और उसके साथ गगा पर स्थित उसकी विशाल राजधानी पाटलिपुत्र का जिक्र हो सकता है।

भारतीय साहित्य मे गगा का जिक्र भरा पडा है और आपको उसके नाम का जिक्र बर्मा, हिन्द-चीन और दूसरी जगहो पर भी मिलेगा। हर्ष के समय के चीनी यात्री ह्यूनत्सान ने इलाहाबाद के कुभ-मेले का वर्णन किया है, जो उस समय भी प्राचीन उत्सव था। अवश्य ही असख्य ऐतिहासिक घटनाए है, जिनको लिया जा सकता है। गगा की घाटी और खास तौर पर दोआबा, अर्थात् गगा और जमुना के बीच का इलाका इतिहास और परम्परा तथा गीतो से भरा पडा है। अगर आप बहुत सुन्दर और शालीन नदी जमुना को लें तो आपको मथुरा और वृन्दावन के चारो ओर सारी कृष्ण-लीला और ब्रजभाषा के मधुर गीत मिल जाते है।

इस देखे-जोखे के लिए कोई निश्चित समय सुझाना मुश्किल है। जाडो मे गगा सकरी हो जाती है और अनेक स्थानो पर देखने लायक नही रहती। ठीक समय वर्षा ऋतु का रहेगा। लेकिन बडे मेले अधिकतर सरदी के दिनो में होते है। उनमे सबसे बडा इलाहाबाद का कुभ है, जो १२ साल मे एक मर्तबा होता है। आपका सौभाग्य है कि यह कुभ अगले साल जनवरी और फरवरी मे पड रहा है।

मुझे मालूम नही कि आप गगा के उद्गम गगोत्री तक पहुच सकते है या नही। यह मुश्किल यात्रा है और रेल के बाद आपको उसमे एक पखवाडा लग सकता है। ज्यादातर यात्रा घोडे पर करनी पडेगी, क्योकि वहा गाडी की सडके नही है। आप तेज सवार हो तो शायद आप एक हफ्ते मे भी पूरा कर सके। मै खुद भी वहा गया हू, लेकिन दो बरस पहले। मै काफी दूर तक गढवाल के पहाडो मे गगा के साथ-साथ गया था और बाद मे हवाई जहाज से बदरीनाथ गया था और गगा को आकाश से देखा था।

हरिद्वार, जहा गगा पहाडो से निकलकर आती है, और आसपास का प्रदेश बेशक महत्त्वपूर्ण है।

ठहरने की कोई खास दिक्कत नही है। आम तौर पर इस्पेक्शन हाउस अथवा डाक-बगले है। पटना जैसे स्थान मे घटिया दर्जे के होटल भी है,

लेकिन मित्रो के यहा इतजाम कर लेना आसान है ।

जमुना के पास अभी-अभी मैने एक हफ्ते से अधिक बिताया है और मुझे इस नदी के साथ अधिकाधिक लगाव होता जा रहा है ।

मुझे उम्मीद है, आप 'गैंजेज' शब्द का प्रयोग नही करेगे । मुझे वह नापसद है । 'गगा' कही भला मालूम होता है । पता नही, कैसे आपके पूर्वजो ने इस अच्छे नाम को बदलकर गैंजेज कर दिया । एक मित्र ने समझाया है और वह ठीक मालूम होता है कि गैंजेज गगाजी का अपभ्रश है ।

नैन और रनजीत और मै सब आनन्दभवन मे साथ रहते है, इसलिए पता एक ही है । नैन अभी बम्बई मे है ।

इदिरा ठीक हो रही है, लेकिन मै चाहता हू कि उसकी प्रगति और तेज हो । वह जल्दी ही हिंदुस्तान लौटने के लिए बहुत ज्यादा उत्सुक है और मेरा अपना विचार यह है कि वह और तीन-चार महीने के बाद लौटे । लेकिन मै समझता हू कि आखिर सलाह डाक्टरो की ही मानी जायगी ।

आपका,

जवाहरलाल

डा एडवर्ड टामसन
एल्सबरी,
वक्स (इग्लैण्ड)

३०४. अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
२४ अप्रैल १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपके २१ अप्रैल के खत के लिए शुक्रिया । मै आपसे एकराय हू कि अगर कृष्ण मेनन अपने आप असरीका जाते है तो यह वक्त के लिहाज से एक हद तक फायदेमद होगा । अगर यह सवाल काग्रेस की वर्किंग कमिटी की बैठक के पहले हमारे सामने आया होता तो यह उसी बैठक मे तय हो जाता । फिर भी मै जनरल सेक्रेटरी को लिख रहा हू कि वह फौरन उन्हे १०० पौड भेज दे और मुझे उम्मीद है कि आप बम्बई से उन्हे कम-से-

कम १०० पौंड भिजवाने का इतजाम कर देंगे।

आप कहते है कि मै भी उन्हे एक खत लिखू। मै सोचता हू कि अगर मै काग्रेस के सदर की हैसियत से उन्हे लिखता हू तो उसका लाजमी तौर पर यह मतलब होगा कि वह वहापर काग्रेस की तरफ से जा रहे है और जैसा कि आप खुद लिखते है, मामले को उस हद तक ले जाना मुनासिब नही। बेहतर यह होगा कि आप उन्हे अपने खत में लिखें—"मुझे यह सुनकर खुशी हुई कि आप अमरीका जा रहे है। मुझे उम्मीद है कि वहा आपकी मौजूदगी से उन लोगो को हिन्दुस्तान की मौजूदा हालत को समझने में मदद मिलेगी।" आपका खत उन्हे जिम्मेवारी की हैसियत देने में पूरी-पूरी मदद देगा। इससे वह हालत भी बच जायगी, जो सदर की तरफ से सीधा लिखने से पैदा हो सकती है।

मसूरी के दोस्तो के तीन मकान थे, वे भर गये है। क्या आपके दोस्तो मे से कोई मसूरी मे मकान का इतजाम कर सकता है? अगर यह वैसे मुमकिन न हो तो मै किराया देने को तैयार हू। मकान अच्छा होना चाहिए और खुला होना चाहिए। अगर कोई आदमी आपके खयाल मे हो तो मेहरबानी करके इतजाम के लिए उसे तार दे दें। कलकत्ता का मौसम मेरी तन्दुरुस्ती पर बुरा असर डाल रहा है।

मसूरी के बाद मैंने नैनीताल और अल्मोडा की बाबत भी सोचा। मै इसके मुतल्लिक पन्तजी को लिख रहा हू।

आपका,

अ. क आजाद

पडित जवाहरलाल नेहरू,
बम्बई।

३०५ एडवर्ड टामसन की ओर से

एल्सबरी, बक्स
२८ अप्रैल १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपका लम्बा खत मिला। हा, ठीक ही मै जानता था कि रनजीत ही मेरे लिए उपयुक्त आदमी है। लेकिन रनजीत और नैन दोनो से मुझे

बडा डर लगता है। इसीलिए आपकी आड लेकर उन दोनो तक अपनी बात पहुचानी पड़ती है।

सेंसर के कारण कहने योग्य बहुत ही कम बाते रह जाती है। आपको मालूम हुआ होगा कि नार्वेजियन युद्ध बडा ही दर्दनाक है। मै नार्वे जाने की कोशिश मे हू। ऐसी हालत मे, जबकि मेरा १९ वर्ष का लड़का कमीशन प्राप्त कर चुका है और जरूर और जल्दी ही कही विदेश जायगा, मेरा हाथ-पर-हाथ रक्खे बैठे रहना और मुसीबतो का मुकाबला न करना बड़ा तकलीफदेह है। अगर सचमुच कयामत का दिन आ गया है तो मै तूफानो के बीच मे रहना चाहूगा, सुरक्षित कगारो पर नही। यदि हमारी सभ्यता और अग्रेज कौम के नाम पर धब्बा लगनेवाला है तो मै जीवित रहकर यह सब देखना नही चाहूगा। यहा अग्रेज कौम से मतलब किसी भी कदर उस अस्त-व्यस्त जाति से नही है, जिसकी आप कल्पना करते है और जिसपर स्काचो और आयरिशो की सारी नीचता आरोपित करते है। फिर भी मेरी उम्र के लोगो के लिए मोर्चे के निकट जाना कठिन ही है।

ठीक है, गगा के बारे मे मुझे याद रहेगा। लेकिन यह फिल्म, पत्र लिखते समय मेरा पहले जो खयाल था, उससे कही अधिक महत्त्वाकाक्षापूर्ण होगी। मेरा डायरेक्टर अभी कनाडा मे है और शीघ्र ही वापस आयगा। हम लोगो की फिल्म दुनिया की महान फिल्मो मे से एक होगी और...जो हो, यदि मै पहले की तरह एक बार फिर बहकर हिन्दुस्तान के सुन्दर किनारो पर जा लगा तो सीधा रनजीत के पास जाकर इस बारे मे बात करूगा।

हिन्दुस्तान जाना मेरे लिए कठिन होता जा रहा है। मै अब दक्षिण हिन्दुस्तान का सबसे ज्यादा नफरत की निगाह से देखा जानेवाला अग्रेज होनेवाला हू। अभी-अभी सुनने मे आया है कि मद्रास विश्व विद्यालय ने 'एन इडियन डे' को जो कि 'सिक्स पैनी पैग्विन' माला मे निकल गई है, १९४२ के लिए बी ए के कोर्स मे लगा दिया है। मुझे उम्मीद है, उसपर कोई-न-कोई नोट्स तैयार करेगे। यह याद करके मेरा सिर झुक जाता है कि इस किताब को

जब मैने लिखा था तब मै नौसिखिया था। मेरी इच्छा है कि आपके विश्व-विद्यालय 'एन इंडियन' के बदले, जो महज एक उपन्यास है, 'दि राइज एंड फुलफिलमेंट' का उपयोग करे। यह किताब अच्छी है।

आपके नाम अपने छोटे लड़के का पत्र साथ मे भेज रहा हू। इस पत्र को मुझे हिन्दुस्तान लाना चाहिए था। शायद यह आपको दिलचस्प लगेगा।

अगाथा हैरिसन से यह जानकर हम लोगो को बडी प्रसन्नता हुई कि इंदिरा की सेहत ठीक होती जा रही है। उसे बहुत बुरे दिन गुजारने पड़े है। जब वह इंग्लैंड लौट आये तो कृपया हमे सूचित कर दें। मेरी इच्छा है कि इस स्थान को आप देखें। दक्षिण-पूरबी इंग्लैंड में यह सबसे सुन्दर और प्यारा गाव है। अगर आपने इस तरह का स्थान—वनफूलो, दतकथाओ और इतिहास से परिपूर्ण—नही देखा, तो इगलैंड नही देखा।

हिन्दुस्तान के लिए मुझे बड़ा दुख है। मै कह तो कुछ नही सकता, पर सोचता बराबर हू। मुझे इस बात का खेद है कि पिछले नवम्बर में आप जिन्नासाहब के साथ समझौता नही कर सके। इससे आपकी स्थिति बहुत मजबूत हो जाती। तार्किक दृष्टि से उसे स्थगित करना आपके लिए ठीक ही रहा, लेकिन ..काश समझौता हो जाता! और उस समय मालूम हुआ था कि समझौता हो सकता है। मै आपकी हर सेवा के लिए तैयार हू और ऐसे मौके आ सकते है, जब मै आपकी सहायता कर सकूगा। फिर भी, एक-दो बाते गहरी पैठ चुकी है और उनका प्रचार भी हुआ है। अब हर कोई जानता है कि हिन्दुस्तान को बिना पूछे युद्ध मे शामिल राष्ट्र घोषित करके हमने भारी भूल की है। यदि मै वहा आपसे मिल सका तो कहने योग्य कई बाते होगी। फिलहाल हमारी भावनाए आपके साथ है और हमे बडी आशा है, इंदिरा जल्द ही ठीक हो जायगी।

आपका,

ए टा

३०६. अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
९ मई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

मसूरी के बारे मे मुझे आपका तार मिला, जिसके लिए मै आपका मशकूर हू। नैनीताल में इन्तजाम हो जाने की वजह से मैंने मसूरी का इरादा छोड दिया।

मै यहा ६ तारीख को पहुचा। हालात ने अगर इजाजत दी तो मैं यहा जुलाई तक ठहरूगा। आप भी गालिबन वम्बई मे मई के अखीर तक ठहरेगे और फिर इलाहाबाद के लिए रवाना होगे। नैनीताल क्यो न आवे और कुछ वक्त तक मेरे साथ रहे। प्लानिग कमेटी की रिपोर्ट आप यही रहकर तैयार कर सकते है। जहातक सूबे के काम का सवाल है, इलाहाबाद और नैनीताल मे कोई फर्क नही। इसके अलावा यहा आपकी मौजूदगी बहुत-से मामलो मे फौरन सलाह-मशविरे के खयाल से मुफीद होगी।

मि० अ० पटवर्धन से वर्धा मे मेरी बाते हुई। उन्होने मुझसे कहा कि किसी और मौके पर वह मुझसे बात करेगे, लेकिन मुझसे मिल न सकेगे। मेहरबानी करके उनसे वर्किंग कमेटी की मेबरी के बारे मे दरियाफ्त करे। मै आपको इसलिए तकलीफ दे रहा हू, क्योकि मै उनका पता नही जानता। सोशलिस्ट दोस्त भी बिल्कुल निकम्मे साबित हुए। उनमे इतनी हिम्मत नही कि काम कर सके। वह मुखालफत से डरते है और अपने पैरो पर मजबूती से खडे होने की हिम्मत नही करते। इस नाजुक मौके पर मुझे उम्मीद थी कि उनसे कुछ मदद मिलेगी, लेकिन मेरी उम्मीदे झूठी साबित हुई।

अगर पटवर्धन इसके लिए तैयार नही है तो फिर जल्द किसी दूसरे आदमी को नामजद करना चाहिए। क्या आप कोई नाम सुझा सकेगे ?

इम्पीरियल टोबेको कम्पनी ने मेरे पास जो नोट भेजा है उससे मालूम होता है कि मजदूरो ने जो कुछ कहा था उसके खिलाफ हडताल की कुछ

और ही वजह है। ताहम मैं कोशिश कर रहा हू कि इज्जत के साथ समझौते की कोई सूरत निकले।

आपका,
अ. क. आजाद

३०७. अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
२५ मई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

आपके १६ तारीख के खत के लिए शुक्रिया। अचरज के साथ मैंने अखबारो में राजेन्द्रबाबू का बयान पढा और इसी बीच मुझे उनका खत भी मिला। इस खत से मुझे साफ-साफ पता चला कि उनके खयालो का रुझान किस तरफ है। मैंने उन्हे जो जवाब भेजा, मुझे अफसोस है, उसकी नकल मे आपको भेजने से मजबूर हू। मेरा जवाब उर्दू में था और इस दफ्तर मे सिर्फ जाब्ते के खतो की नकल रखी जाती है। जहातक काग्रेस के मौजूदा रवैये का ताल्लुक है, मेरा खत करीब-करीब वैसा ही था जैसा कि आपका। मुझे यह जानकर खुशी हुई कि इस मामले मे हम दोनो के खयाल एक से है और यह सबसे ज्यादा तसल्ली की बात है कि गांधीजी भी इससे पूरी तरह एकराय है।

राजेन्द्रबाबू के बयान के मुकाबले आसफअली का बयान कही ज्यादा ऐतराज करने लायक है। वाकई उससे मुझे चोट पहुची। मैंने आसफ-अली को एक के बाद एक दो बहुत तेज खत लिखे। अब वह मुझे यकीन दिला रहे है कि आगे से ऐसे बयान नही देंगे।

जो कुछ आपने मुझे और राजेनबाबू को अपने खतो मे लिखा है, जहा-तक काग्रेस के रवैये का सवाल है, वह बिल्कुल दुरुस्त है। कोई वजह नही दिखाई देती कि इस वक्त तब्दीली का कोई सवाल उठाया जाय। लेकिन इसके साथ-साथ आपने दो बाते ऐसी लिखी है, जिनसे मैं मुत्तफिक नही हू। मुझे ताज्जुब है कि काग्रेस के तर्जेअमल के बारे मे आपका दिमाग जो तजवीज कर रहा है उसके साथ इनका मेल कैसे बैठेगा। राजेनबाबू के खत मे आप लिखते है "हम अगर तैयार भी हो तब भी फौरन सत्याग्रह

का सवाल नही उठता; क्योकि मेरी समझ से इस खास मौके पर, जबकि ब्रिटेन खतरे मे है, यह ठीक न होगा कि हम उसका गला दबोचने दौडे ।" आपने अपनी लखनऊ की तकरीर मे भी इसी खयाल को जाहिर किया है । 'पायोनियर' ने आपके असली लफ्जो को देना जरूरी समझा . "यह बात हिन्दुस्तान की शान के खिलाफ है कि वह इग्लैण्ड की कमजोरी से फायदा उठाकर इस वक्त सत्याग्रह शुरू कर दे ।" मै इस तरह के सोचने के तरीको को बिल्कुल नही समझ सकता ।

दरअसल यह तरीका ही बिल्कुल गलत है कि हम सियासी जद्दो-जहद के मामले मे पहले से कुछ बुनियाद बना ले और तब अपने तर्जेअमल के मुतल्लिक गलत नतीजे निकाले । मै नही जानता कि हिन्दुस्तान की 'शान' क्या है ? मै सिर्फ यही जानना चाहता हू कि सोच-समझकर जो फैसला किया गया है वह हमे कहा ले जायगा । हम अधो की तरह अधेरे मे नही भटक सकते । हम जो भी रास्ता चुने, वह आख खोलकर चुने । इससे ज्यादा बेकार की बात क्या होगी कि हम एक रास्ता तय करेऔर फिर उसपर चलने से इन्कार करे !

हमने ब्रिटेन को पूरा-पूरा मौका दिया कि वह हमे अपने साथ लेकर चले, मगर उसने सख्ती के साथ ऐसा करने से इन्कार कर दिया। हमने मजबूर होकर यह फैसला किया कि हम इस साम्राज्यशाही लडाई मे हिस्सा नही लेगे । अगर हमारा मौजूदा फैसला ऐसा है कि जो ब्रिटेन को (गाधीजी के लफ्जो मे) 'परेशानी' मे डालता है या आपके लफ्जो मे हिन्दुस्तान की 'शान' के खिलाफ है तो इसका कोई इलाज नही हो सकता । हम इसके लिए जिम्मेवार नही है । इसके लिए जिम्मेवार है ब्रिटिश सरकार का नासमझी-भरा गरूर ।

आप कहते है कि इस मौके पर हमे सत्याग्रह नही शुरू करना चाहिए, लेकिन सत्याग्रह से आपकी मुराद क्या है ? क्या यह लड़ाई का ऐसा नया ऐलान होगा कि जिसे काग्रेस को अभी तय करना है ? काग्रेस की लडाई सिर्फ यह है कि लड़ाई मे किसी तरह की भी मदद न दी जाय। अमल मे अभी इस रोक को एक खास हद से आगे नही बढाया गया, लेकिन इसे आगे बढाना जरूरी है । अपने-आपको गिरफ्तार करने और लडाई के आर्डिनेन्सो

के मारे उसकी शक्ल अपने-आप सिविल नाफरमानी की हो जायगी ।

अगर आपके इखलाकी फलसफे को, हिन्दुस्तान की शान को खयाल में रखते हुए, दुरुस्त समझ लिया जाय तो उसका एक ही मतलब निकलेगा, यानी रामगढ़ कांग्रेस का फैसला हिन्दुस्तान की शान और इज्जत के बिलकुल खिलाफ था ।

इसी खत मे आप आगे लिखते है कि अगर सरकार के साथ किसी शक्ल मे समझौता हो गया तो हमारा आगे के लिए क्या रवैया होगा ? आप कहते है, "अगर ये सब बातें मान ली जाय (यानी आजादी, आत्म-निर्णय और बालिग मताधिकार के मुताबिक चुनी हुई सविधान-सभा) तब भी इससे यह नतीजा नही निकलता कि हम लडाई में अपनी खास ताकत लगा दें ।"

लेकिन अगर इनमे यह नतीजा नही निकलता तो हम यह उम्मीद क्यो करे कि ब्रिटिश सरकार, जो कुछ हम माग रहे है, वह सब हमे दे देगी । बेशक अगर वह मजबूर कर दी जाय तो वह हमे ये सब चीजे बेमन दे सकती है । लेकिन इस वक्त ताकत-आजमाइश का तो कोई सवाल ही नही उठता, जबकि सत्याग्रह की इखलाकी ताकत का इस्तेमाल भी हिन्दुस्तान की 'शान' के खिलाफ समझा जा रहा है ।

मै नही समझता कि इतना उलझन से भरा हुआ और बेतुका खयाल आपके दिमाग मे किस तरह घुस गया । कम-से-कम आपसे तो यह उम्मीद नही की जाती थी कि आप इस तरह से सोचेगे ।

मुझे उम्मीद है कि लाहौर का आपका कयाम आपके कामो मे पूरी तरह मददगार हो रहा होगा ।

मुझे आज ही सिकन्दर हयात का एक तार मिला है। उसकी एक नकल शायद आपको भी भेजी गई है। मैने तार से जवाब भेज दिया है कि मौजूदा हालात के लिए हम लोग जिम्मेवार नही है, बल्कि ब्रिटिश सरकार जिम्मेवार है ।

आपका,
अ. क. आजाद

पडित जवाहरलाल नेहरू,
मार्फत डाक्टर खानसाहब,
भूतपूर्व प्रीमियर, पेशावर

३०८. खान अब्दुल गफ्फार खां की ओर से

दंगा गली, हजारा जिला
१३ जुलाई १९४०

प्रिय पडितजी,

आपका तार कल यहा मुझे दगा गली मे मिला। कैम्प के लिए अभी कोई आखरी तारीख मुकर्रर नही हुई है। लोग मेरा इन्तजार कर रहे थे। यहा पहुचते ही मैने उन्हे फौरन लिख दिया है। जो तारीख तय होगी, आपको उसकी इतिला की जायगी। राजाजी और मौलानासाहब ने जो राय जाहिर की है वह आपने रेडियो पर सुनी होगी। इसके अलावा जिन्नासाहब और मौलानासाहब मे जो बाते हुई उसपर भी गौर किया होगा। मौलानासाहब ने जो कुछ कहा, उसे तो मै समझा हू, लेकिन जिन्नासाहब का क्या मकसद है, यह मै नही समझ सका।

जबतक कैम्प चलेगा तबतक मै यही रहूगा। उसके बाद काम शुरू करूगा। यहा की आबहवा काफी अच्छी है और मेरी सेहत बहुत-कुछ बेहतर हुई है। यूनुससाहब ने भी मुझे लिखा है। वह लिखते है कि खास श्रीनगर मे काफी गरमी है, लेकिन वह अपना ज्यादातर वक्त गावो मे खर्च करते है।

पूना आना मेरे लिए मुमकिन न होगा। लेकिन अगर ऑल इडिया काग्रेस कमेटी ने वहा भी वह तजवीज मजूर की तब मै ऑल इडिया काग्रेस कमेटी से भी अपना इस्तीफा देने के लिए आजाद हू।

मुझे उम्मीद है, आप अच्छे होगे। मेहरबानी करके उपाध्याय और दूसरे साहबान को मेरा सलाम कहे।

अब्दुल वली, गनी, रोशन और मेहरताज आपको बहुत-बहुत याद करते है और आपको अपना सलाम भेजते है।

आपका,
अब्दुल ग़फ़्फ़ार

३०९. अबुल कलाम आजाद की ओर से

नैनीताल
१९ जुलाई १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

१६ तारीख के खत के लिए शुक्रिया। मेहरबानी करके मेरा बयान दोबारा पढ़ें। मैंने यह नही कहा कि तजवीज एकराय से मजूर हुई थी। मैंने तजवीज के महज दिमागी पहलू की ही सफाई देते हुए कहा है कि सब लोग अपने 'दिमागो' में साफ थे कि अगर हिन्दुस्तान की माग मजूर की जाती है तो उसे (हिन्दुस्तान को) लड़ाई में शामिल होना चाहिए। चुनाचे 'स्टेट्समेन' और दूसरे अखबारो ने मेरे बयान से यही मतलब निकाला है।

मै मशकूर होऊगा अगर आप उसके बारे में उस वक्त तक कोई बयान शाया न करें जबतक हम लोग पूना मे मिल न ले। इसके बारे में मै आपसे तफसील में बाते करना चाहता हू। अफसोस है कि हमे दिल्ली मे कोई ऐसा मौका न मिल सका। मुझे चीन से खत की नकल मिल गई है।

आपका,
अ. क. आजाद

३१०. जयप्रकाशनारायण की ओर से

[जयप्रकाशनारायण ने यह पत्र हजारीबाग जेल से भेजा था, जहा वह उस समय कैद थे।]

आदमी द्वारा दिया जाय २० जुलाई १९४०

प्रिय भाई,

आप कल्पना कर सकते है कि हाल की घटनाओ ने हमको कितनी चोट और दु ख पहुचाया होगा। राजाजी ने तो हमारी पीठ मे छुरा ही भोंक दिया है। यह जानकर बडी तसल्ली हुई कि इस भद्दी चीज का आपने और खान-साहब ने विरोध किया, लेकिन क्या इतना ही काफी है? यहा हममे से सब आपसे आशा और प्रार्थना करते है कि महासमिति मे और देश मे आप विरोध का नेतृत्व करे। समिति से आप त्यागपत्र दे दे। एक समझौते के बाद अगर

यह हो जाय तो आप काग्रेस को जाकर छोड दे और शेष राजनैतिक काम और हिदुस्तानी क्रान्ति के सामाजिक काम के खास हिस्से को पूरा करने के लिए आप एक नया राजनैतिक दल बना ले। क्या आप यह करेगे ? यह तो शायद आप सब जानते होगे कि राजाजी के प्रस्ताव से काग्रेस की मृत्यु की घटी बजी है। काग्रेस को बाटने का भय तो अब अवास्तविक हो गया है। गाधीजी अपने ढग के एक शानदार आदमी है, परन्तु सीधे नही तो उलटे, उनका समर्थन देशद्रोहियो की ओर होगा। वल्लभभाई और राजाजी गाधीजी को छोडने मे हिचकिचाये नही है। क्या आप अपने प्रत्यक्ष ऐतिहासिक कर्त्तव्य मे हिचकिचायगे ? मै नही जानता कि आप क्या और कितना कुछ कर सकेगे। परन्तु हर सूरत मे अपने पीछे आनेवालो के मार्ग को तो आप आलोकित जरूर कर जायगे।

यह पत्र आवेश या गुस्से मे नही लिखा गया है, बल्कि बहुत ठंडे दिमाग से और सोच-समझकर।

आपका,

जयप्रकाश

फिर से—

अक्तूबर के मध्य मे मेरे छूटने की सभावना है।

३११. चेंग यिन-फुन की ओर से

चीनी शाखा
इन्टरनेशनल पीस कैम्पेन
पो. बा. १२३, चुंगकिंग, चीन
२१ अगस्त १९४०

प्रिय श्री नेहरू,

पिछला पत्र आपको इसी साल ९ जनवरी को लिखा था, जिसे काफी लम्बा अरसा बीत चुका है। यह विलम्ब हमारी किसी असावधानी के कारण नही हुआ है—हमे तो अक्सर आपको लिखने की इच्छा हुआ करती थी—किन्तु इतने दिनो के कठोर तथा लगातार सघर्ष ने हमें करीव-करीव पूरी तरह से मूक वना दिया है। हमे तो कार्य और सहनशीलता को ही अपना साथी समझकर धैर्यपूर्वक आगे वढना है।

अवतक हम जिन विचारो और भावनाओ को अपने मन मे सचित करते आये है, उनके सामने सर झुकाने के अलावा अब हमारे पास कोई चारा नही रह गया है । हिंदुस्तान के इतिहास के इस कठिन मोड़ पर भी आप अभी एक ऐसे मित्र को नही भूल पाये है जो आपके पड़ोस में आप ही जैसे ध्येय के लिए लड रहा है । चीन के प्रति आपकी स्नेहपूर्ण सहानुभूति का एक नया प्रमाण हमें आपके उस लेख मे मिला है, जो अभी हाल ही में 'भारत, चीन और इग्लैंड' शीर्षक से लखनऊ के 'नेशनल हेरल्ड' मे प्रकाशित हुआ है । आपकी इस अटूट सहानुभूति और समर्थन के लिए हम एक बार फिर अपनी कृतज्ञता और सराहना की भावना प्रकट करते है और ऐसा करने मे हमें विश्वास है कि हम समस्त चीनी जनता की भावना का प्रतिनिधित्व कर रहे है । आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि 'भारत, चीन और इग्लैंड' को हमने चुगकिंग मे बहुत ज्यादा प्रचारित किया है । जिस रूप में यह अशत 'हैंको हेरल्ड' के चुगकिंग सस्करण मे और चीन के सबसे प्रभावशाली पत्र 'ता कुग पाओ (ल' इम्पारशियल) मे छपा है, उसकी कतरने हम इस पत्र के साथ भेज रहे है ।

तुष्टीकरण की जिस नीति पर इंगलैंड लगातार चल रहा है, उसका परिणाम स्वय-सिद्ध है और अभी से इग्लैंड को उसके कडवे फल चखने पड रहे है । वर्मा सडक को वन्द करने मे इगलैंड का कोई लाभ नही है, इससे उसका पूर्वी सीमान्त अधिक सुरक्षित नही हो सकता । जिस दिन भी जापानी दक्षिण की ओर बढेगे, वे इगलैंड की इस नीति की परवा नही करेगे और इंगलैंड पैंतालीस करोड निवासियो के एक बहुत बडे राष्ट्र की मित्रता को खो बैठेगा । किन्तु चीनी जनता इससे भयभीत नही है, बिल्कुल नही । जिस तरह हिंदुस्तान की जनता पूर्ण स्वतत्रता के अतिरिक्त और किसी वस्तु से सन्तुष्ट नही होगी, उसी तरह जिस उद्देश्य के लिए हमने हथियार उठाये है वह जबतक पूर्ण नही हो जायगा तबतक कोई भी शक्ति हमे लडते रहने से नही रोक सकेगी, चाहे हमे कितनी ही कठिनाइयो का सामना क्यो न करना पडे । चीन के लाखो सपूतो के प्राण और यहा की अपरिमित सम्पत्ति व्यर्थ ही बलिदान नही की जायगी । जिन लोगो को हमसे महान आशाए है, वे निराश नही होगे ।

निश्चय ही यह देखकर दुःख होता है कि बार-बार मुह की खाकर भी ब्रिटेन के कूटनीतिज्ञ यह नही सीख सके कि आक्रमणकारियों के प्रति अपनी सरकार की विदेश-नीति निर्धारित करने मे उन्हे सावधानी से काम लेना चाहिए। किन्तु जिन देशो पर आक्रमण हुआ है, वे इन महानुभावो के चतुर सकेतो से शिक्षा लेना नही भूल सकते। इसलिए इसमे कोई आश्चर्य की बात नही कि इस साल के आरभ में भारतीय काग्रेस ने ब्रिटेन के असली युद्ध-उद्देश्यो का खण्डन किया। अदूरदर्शितापूर्ण स्वार्थ से आखे बन्द रहने के कारण आज की स्थिति मे ब्रिटिश सरकार से यह आशा नही की जा सकती कि जो बडी-बडी बाते खतरे मे है, उनपर वह ध्यान दे सकेगी। फिर भी हम यह विश्वास करने के लिए तैयार नही है कि आज ब्रिटिश सरकार जिस विरोधी नीति पर चल रही है, उसमे उसे अपने देश के प्रवुद्ध व्यक्तियो का पूरा समर्थन प्राप्त है। हमे आज भी ब्रिटिश इन्टरनेशनल पीस कैम्पेन का वह स्पष्ट वक्तव्य याद है, जो उसकी ओर से वर्तमान यूरोपीय युद्ध के आरम्भ होने के कुछ ही दिनो बाद प्रकाशित हुआ था और जिसमे ब्रिटिश सरकार से अनुरोध किया गया था कि हिंदुस्तान की तीव्र मागो को साहस-पूर्वक स्वीकार करके वह उन प्रजातत्रीय सिद्धान्तो के प्रति अपने विश्वास का प्रमाण प्रस्तुत करे, जिनका समर्थक होने का वह दावा करती है। जहा-तक बर्मा-सड़क के मौजूदा मामले का सवाल है, लन्दन मे रहनेवाले चीनी राजदूत को ब्रिटिश जनता की ओर से सहानुभूति के अनेक सदेश प्राप्त हुए थे, किन्तु जबतक ये दूरदर्शी लोग अपनी वर्तमान स्थिति मे पडे रहेगे—एक ऐसी स्थिति, जिसपर सरकार की नीति का कोई प्रभाव नही है—तबतक ब्रिटेन धीरे-धीरे उस सहानुभूति को भी खोता चला जायगा, जो अब भी उसके पक्ष मे है। इसके नैतिक और भौतिक परिणाम घातक होंगे।

हमे हिंदुस्तान की जनता से बड़ी हमदर्दी है। वहा जो कुछ भी होता रहा है, उसका हम यहां बडी दिलचस्पी के साथ अध्ययन करते रहे है। जीवन-मरण के सघर्ष में इस तरह डूबे रहने के कारण हम इस समय चीन आपकी कोई सेवा करने मे असमर्थ है; फिर भी हमें विश्वास है कि हमारे महान कार्य की सफल समाप्ति परोक्ष रूप से आपके लिए सहायक सिद्ध होगी। आप तो चीनी जनता के [illegible] देश के उद्देश्यो को

अच्छी तरह जानते ही है। हमारी राष्ट्रीय भावना में ये उपदेश कूट-कूटकर भरे हुए है।

आपके सघर्ष से हमने सदैव प्रोत्साहन और प्रेरणा प्राप्त की है। अपनी खोई हुई स्वतत्रता के लिए हमारे हिंदुस्तानी मित्र कठिनाइयो का सामना करते हुए जिस तत्परता के साथ प्रयत्न कर रहे है उसने हमे अपनी स्वतन्त्रता को, जो अब भी हमारी मुट्ठी मे है, और भी अधिक प्यार के साथ सुरक्षित रखने की प्रेरणा दी है। हमे विश्वास है कि महात्मा गाधी और आपके नेतृत्व में हिंदुस्तान तथा जनरल च्याग काई शेक के नेतृत्व में चीन के प्रयत्न अन्तत हमे हमारी राष्ट्रीय मुक्ति की ओर ले जायगे, जो कि हमारा समान उद्देश्य है। इन दोनो देशो की जनता के सगठित सकल्प को कोई भी वस्तु डिगा नही सकती। हमारा यह विश्वास हमारे आक्रमण-विरोधी युद्ध के तीन साल के अनुभव पर आधारित है। पैंतालीस करोड जनता का यह सकल्प कि वह दासता और शोषण के सामने घुटने नही टेकेगी, उस शक्ति-शाली शत्रु के विरुद्ध महान दीवार का काम कर रहा है, जो कि युद्ध-सामग्री और तैयारी दोनो में हमसे श्रेष्ठ है।

हिंदुस्तान और चीन के इतिहास मे कभी एक-दूसरे के सीमान्त पर कोई सशस्त्र सघर्ष नही हुआ। इतिहास इस बात का साक्षी है कि सद्भावनापूर्ण यात्राओ के माध्यम से हमने एक-दूसरे की सस्कृति से केवल लाभ ही उठाया है। हमारे बीच चिरस्थायी मित्रता की यह एक दृढ नीव है। हमे विश्वास है कि राष्ट्रीय मुक्ति के लिए हमने आपस मे मिलकर जो सकल्प कर रखा है वह हमारी मित्रता के बन्धन को और भी मजबूत कर देगा। हम उस दिन की बडी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे है जब हिंदुस्तान और चीन के निवासी विश्व-शाति के लिए हाथ-मे-हाथ डालकर और कधे-से-कधा मिला-कर काम करेगे। हिंदुस्तान के सबध मे हमे यहा बहुत ही कम समाचार मिलते है। आप हमे जो कुछ भी जानकारी भिजवा सकेगे उसे पाकर हमे खुशी होगी। हम समझते है कि यहा हम उसका अधिक-से-अधिक प्रचार कर सकेगे और इस प्रकार आपसी सद्भावना को बढाने मे योग दे सकेगे।

आपके श्रेष्ठ प्रयत्नो के लिए समस्त सद्भावनाओसहित,

आपका,
चॅग यिग-फुन
कार्यवाहक सचिव

पडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद, हिंदुस्तान

३१२. मैडम च्याग काई शेक की ओर से

जनरलसिमो का सदर मुकाम
चुंगकिंग, जेचुआन
चीन
१० सितम्बर १९४०

प्रिय श्री नेहरू,

न जाने कितनी बार विचार आया कि पत्र लिखकर आपको उन पत्रो के लिए धन्यवाद दू, जो आपने श्री हु लियेन चुग के जरिये भेजे थे—साथ ही उस पत्र के लिए भी, जो आपने चीन के कौसल जनरल के द्वारा भेजा था।

इन कष्टपूर्ण दिनों मे जनरलसिमो और मै दोनो ही हिंदुस्तान की घटनाओ को बडी दिलचस्पी और चिन्ता के साथ देखते रहे है। आपकी

है वहातक चारो ओर गिरे हुए मकानों के मलबे और खडहर-ही-खडहर दिखाई देते है। हममें से जो लोग अभी सही-सलामत है, वे मिल-जुलकर उन हजारो वेघर शरणार्थियों को राहत पहुचाने के लिए लगातार मेहनत कर रहे है, जिनके पास मानव और सम्पत्ति के इस मूर्खतापूर्ण सहार के कारण पेट भरने का कोई भी साधन नही रह गया है। इतनी भयकर निर्दयता की आजतक शायद ही किसी मनुष्य ने कल्पना की हो।

किन्तु मार्के की बात यह है कि हमारी जनता का नैतिक बल टूटा नही है। जैसा कि कुछ यूरोपीय देशो के साथ हुआ है, ठीक उसके विपरीत, हम पर जितना ही कडा दवाव पडा है, उतनी ही हमारी जनता अधिक दार्शनिक बनती गई है। हम इतना दु ख और इतनी पीड़ा उठा चुके है कि हमे ऐसा लगता है, मानो सारा जीवन वस एक वात में केन्द्रित हो गया है—वह यह कि हम लोग धीरज के साथ कष्ट सहते रहे और आक्रमण के विरुद्ध अपने विरोध को जारी रखने के लिए दृढतापूर्वक प्रयत्न करते रहे, जिससे कि चीन सदा के लिए जीवित रहे।

पिछले तीन सप्ताह से मै इफ्लुएजा से पीडित हू और जवर्दस्ती चारपाई पर पडी हू। मेरी इस स्थिति को जिन वातो ने सहनीय वनाया है, उनमें से एक आपकी 'मेरी कहानी' को पढते रहना भी है। अपने जीवन में डटकर पढने के लिए समय निकाल सकना मेरे लिए कठिन है और मैंने आपकी पुस्तक को शाति और फुरसत के साथ पढना चाहा, जैसा कि इसके लिए उचित था। अवतक मेरे पास इसके लिए समय नही था, किन्तु अव मै सचमुच अनुभव करती हू कि मै आपको जान गई हू, क्योकि अपने देश की मुक्ति के लिए वीरतापूर्वक सघर्ष करते हुए आपके हृदय ने आपको जो प्रेरणाएं दी है, उन्हे शान्ति के साथ और ध्यानपूर्वक सुनने का अवसर मुझे अव मिला है।

आपकी पुस्तक एक महान ग्रथ है, क्योकि इसमे एक ऐसी मानव-आत्मा की तीर्थ-यात्रा का विवरण है, जो कि दिन-प्रति-दिन के सघर्ष के शोर-गुल से ऊपर उठकर एक ऐसे बौद्धिक और भावनामय ससार मे पहुच गई है, जिसमे भावुकता की दुर्बलता नही है, किन्तु जो इतना अधिक मर्मस्पर्शी है कि उसके कारण युग-युग की महानतम कृतियो मे स्थान पाने योग्य हो गया है।

जनरलसिमो और मैं आपको और हिंदुस्तान को अपना स्नेहपूर्ण अभिवादन भेजते है और आपके लिए उज्ज्वल भविष्य की तीव्र आशा रखते है।

आपकी,
मेलिंग सूंग च्यांग

३१३. जी. गेस्ट लेवो की ओर से

लन्दन
२९ सितम्बर १९४०

प्रिय महोदय,

आपके जीवन से काफी लम्ब अपने जीवन मे मैंने स्वभावत बहुत-सी भाषाओ मे बहुत-सी पुस्तके पढी है, किन्तु उनमे से किसीको भी पढ़कर उसके लेखक के प्रति मेरे मन मे व्यक्तिगत आदर की इतनी तीव्र भावना उत्पन्न नही हुई जितनी कि आपकी पुस्तक पढकर। यदि आप क्षमा करें तो मै शेक्सपियर के नीचे लिखे शब्दो को, जिन्हे मैंने करीब चालीस साल से नही पढा है और जिन्हे मुझे उम्मीद है, मै ठीक-ठीक लिख रहा हूं, मै काल बदलकर उद्धृत करना चाहूगा और शेक्सपियर के स्वर-मे-स्वर मिलाकर कहना चाहूगा—

"उसका जीवन उच्च है और उसमे पचतत्त्वो का
ऐसा सुन्दर मिश्रण हुआ है कि प्रकृति खडी होकर .
सारे ससार से कह सकेगी 'यह मानव है।' "

आपका,
जी. गेस्ट लेवो
(एम ए. मेग्डेलेन, ऑक्सफोर्ड)

३१४. खान अब्दुल गफ्फ़ार खां की ओर से

लखनऊ
१८ अक्तूबर १९४०

प्रिय जवाहरलालजी,

मै खैरियत से कल यहा पहुच गया। नेहरूसाहब[1] स्टेशन पर तशरीफ लाये

---

[1] नेहरूसाहब से मतलब मेरे भतीजे से है, जो उस समय लखनऊ में था।

थे। मै उनके मकान पर वहुत आराम से ठहरा और आज दो वजे की गाडी से मै जा रहा हू। खाने मे वेहद तकल्लुफ वरता गया—शायद उन्होने मुझे मेहमान समझ लिया था। मै मेहरताज से मिला और उसकी प्रिंसिपल से भी लम्बी वातचीत की। वह कहती है कि मेहरताज वहुत भली लडकी है, मगर जोशीली है और आसानी से दूसरी लडकियो का असर कबूल कर लेती है। प्रिंसिपल ने मुझसे वादा किया है कि मेहरताज की तालीम के अलावा वह और वातो मे भी उसका खयाल रखेगी।

मै चाहता हू कि आप भी कभी-कभी मेहरताज को लिखे कि उसे अपने को और दुनिया को समझना चाहिए। उसे समझना चाहिए कि उसका मकसद क्या होना चाहिए। आप उसे यह भी लिखे कि वह अव वडी हो गई है और अव उसे वच्चे की तरह वर्ताव नही करना चाहिए। मै इस मामले मे और कुछ नही लिखना चाहता, क्योकि आप ये सव वाते पूरी तरह समझते है।

चलते-चलते मै मौलानासाहव से भी मिला और उन्हे कुछ वाते वताई, जिनके वारे मे उन्होने आपसे फोन पर वाते करने का वादा किया। उन्होने गालिवन आपसे वाते की होगी। दरअसल सेगाव मे महात्माजी ने मुझे वह वात वताई थी। उन्हे इस वात की फिक्र थी कि जवाहरलाल उनके नजरिये से विल्कुल एकराय नही है। विनोवा से वाते करने के वाद उन्होने यह कहा। वह समझ नही पा रहे थे कि उन्हे क्या करना चाहिए। मैने उन्हे इतमीनान दिलाया कि मै पडितजी से स्टेशन पर मिला था और उनसे जो वाते की वे काफी तसल्लीवख्श थी। कुछ लोगो को (शुवहा ?) था। इसलिए मैने यहा पहुचते ही मौलानासाहव को अपने खयाल वताये। वह मुझसे एकराय थे। यह तय हुआ कि आपको फोन से इत्तिला दी जाय। मुझे उम्मीद है कि आप महात्माजी को लिखेगे और उन्हे इतमीनान दिलायेगे ताकि जिस तरह महात्माजी चाहते है, उस तरह मामला हो जाय। मै और मौलानासाहव दोनो यही चाहते है।

यहा सव खैरियत है और मै आप सवकी खैरियत चाहता हू।

आपका,

अब्दुल गफ्फार

३१५. जनरलसिमो च्यांग काई शेक की ओर से

१८ अक्तूबर १९४०

प्रिय श्री नेहरू,

पिछले साल चुगकिंग मे आपसे जो आनन्दपूर्ण बाते हुई थी उनकी सुखद स्मृति अब भी मेरे मन मे ताजा है। अक्सर मुझे उस आत्मिक मैत्री की याद करके बडा सतोष होता है, जो आपके चीन आने के फलस्वरूप हमारे बीच स्थापित हो गई है।

इस अवसर पर मै आपको सूचना देना चाहता हू कि आक्रमणकारी जापानियो का हमारा विरोध, जो राष्ट्र के समर्थन से और भी दृढ बनता जा रहा है, दिन-पर-दिन शक्ति और नैतिकता दोनो ही दृष्टि से बलवान होता जा रहा है। आज की अराजकतापूर्ण स्थिति से भविष्य मे किसी विश्वव्यापी व्यवस्था का जन्म होगा कि नही, यह बात—मुझे पूर्ण विश्वास है—हम एशियाई देशो के सम्मिलित सघर्ष के परिणाम पर निर्भर है। जापान की बढती हुई महत्त्वाकाक्षा और विश्व के महत्त्वपूर्ण परिवर्तनो को निगाह मे रखते हुए हमे अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए सबसे पहले शाति को भग करनेवाले मुख्य शत्रु से निबटना होगा।

मुझे विश्वास है कि आपके देश के नेता, जो वास्तविक विश्व-स्थिति से अच्छी तरह परिचित है, एक ऐसी नीति अपनायगे, जो आज की घटनाओ की जरूरत के मुताबिक बिल्कुल आवश्यक है और वे लोग हमारे आक्रमण-विरोधी सघर्ष मे हमारी भावना तथा महत्त्वाकाक्षा का पूरी तरह समर्थन करेगे।

श्री ताई ची-ताओ आपके देश की मैत्रीपूर्ण यात्रा करने जा रहे है। मैने अनुरोध किया है कि वह आपसे मिलकर आपतक मेरी हार्दिक शुभ-कामनाए पहुचा दे।

आपका,
च्यांग काई शेक

३१६. महात्मा गाधी की ओर से

[सन् १९४० मे, जहां गांधीजी सविनय अवज्ञा आन्दोलन को जरूरी समझते थे, वहां वह आन्तरिक अशांति और हिसा को भी टालना चाहते थे,

खासकर युद्ध का समय होने के कारण। इसलिए उन्होंने यह फैसला किया था कि कुछ चुने हुए लोग ही कानून भंग करें। उन्होंने इस काम के लिए आचार्य विनोबा भावे को पहला व्यक्ति चुना। सूची में मेरा नाम दूसरा था।]

वर्धा
२१ अक्तूबर १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

तो विनोबा का निश्चय कर दिया गया। उनकी चार दिन की वजारत मेरी दृष्टि में बिल्कुल सफल रही।

मैं एक टिप्पणी जारी कर रहा हू, जिसे तुम देखोगे। प्रोफेसर ने टेलीफोन पर कहा कि तुम तैयार हो। मैंने तुम्हारा बयान भी देख लिया। मैं अब भी तुमसे पूछना चाहूगा कि मैं जो कुछ लिख और कर रहा हू, उसमे तुम्हे कोई भी चीज पसन्द आ रही है या नही। मैं नही चाहता कि तुम केवल अनुशासन-प्रेमी की तरह चलो। मेरी वर्तमान कल्पना मे उन लोगो की जरूरत है, जो योजना में—उसकी सब बातो मे नही, परन्तु मुख्य वस्तु मे—विश्वास रखते हो। अक्लमद को इशारा काफी है।

सभव हो तो मुझे तार दे देना।

प्यार,

बापू

३१७. महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा
२४ अक्तूबर १९४०

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा तार पाकर खुशी हुई। यदि मेरा बयान जाने दिया गया है तो तुमने इससे पहले देख लिया होगा।

अगर तुम तैयार हो तो अब अपना सविनय भग बाकायदा घोषित कर सकते हो। मेरा सुझाव है कि तुम अपने श्रोताओ के लिए कोई गाव चुन लो। मैं नही समझता कि ये लोग तुम्हे अपना भाषण दोहराने देंगे। जहातक विनोबा का सबध है, वे अपनी योजनाओ के साथ तैयार नही थे। परन्तु तुम्हे वे आजाद रहने दे तो मेरा सुझाव है कि तुम विनोबा के लिए निश्चित की गई योजना पर चलो। परन्तु तुम्हारा और कुछ खयाल हो तो तुम अपने

ही मार्ग का अनुसरण करो। मैं इतना ही चाहता हू कि मुझे अपना कार्य-क्रम दे दो। अपनी तारीख आप ही तय कर लो, लेकिन इस तरह से कि तारीख और जगह का ऐलान करने का मुझे समय मिल जाय। सभव है, वे लोग तुम्हे अपना पहला कार्यक्रम भी पूरा न करने दे। सरकार की तरफ से ऐसे हरेक कदम के लिए मै तैयार हू। हमारे कार्यक्रम को प्रकाश मे लानेवाले हर उचित उपाय का तो मै उपयोग कर लूगा, मगर मेरा आधार इसीपर रहेगा कि नियमित विचार अपना असर आप पैदा करता है। यदि यह मानना तुम्हारे लिए कठिन हो तो मै तुमसे कहूगा कि निर्णय स्थगित रखो और परिणाम देखते रहो। मै जानता हू कि तुम खुद धीरज रखोगे और अपनी तरफ के लोगो को भी धीरज रखने को कहोगे। मुझे मालूम है, मेरे प्रति वफादारी रखकर तुम कितना जोर बर्दाश्त कर रहे हो। मेरे लिए वह अमूल्य है। आशा है, वह उचित साबित होगी, क्योकि अब तो 'करने या मरने' की बाते है। पीछे तो लौटना नही है। हमारा पक्ष अकाट्य है। झुकने का सवाल नही। इतना ही है कि मुझे प्रत्यक्ष रूप मे यह दिखा देने के लिए कि अहिसा जब विशुद्ध होती है तब उसमे क्या ताकत है, मुझे अपने ढग से चलने दिया जाय।

मौलानासाहब ने फोन से कहा कि दूसरी बार सत्याग्रह के लिए मुझे दूसरा आदमी चुनना चाहिए। मैंने उन्हे बताया कि तुम जाने को राजी हो तो मै ऐसा नही कर सकता। 'हरिजन' के सबध मे मैंने जो कदम उठाया है, उसपर तुम्हारी प्रतिक्रिया जानना चाहूगा।

प्यार,

बापू

३१८. मैडम च्यांग काई शेक की ओर से

हांगकांग
१६ जनवरी १९४१

प्रिय श्री नेहरू,

श्री ताई ची-ताओ के जरिए आपने मुझे जो पत्र दिया था उसे मेरे पति ने मेरे पास भेजा है। पिछले दो महीने से मै बीमार हूं और हागकांग

मे इलाज करवा रही हू । युद्ध के आरम्भ मे जब मै शघाई के मोर्चे का दौरा करने गई थी तब मोटर से गिरकर बाहर जा पडी थी और मेरी पसली टूट गई थी । उसके एक सप्ताह बाद ही मै फिर से काम करने लगी थी । तभी से मेरी पीठ मे हमेशा तकलीफ रही है, किन्तु कार्य मे अधिक व्यस्त रहने के कारण मैने इसपर अधिक ध्यान नही दिया था । इन गर्मियो में पीडा सच-मुच असहनीय हो गई थी । इस बीच हर रोज बम गिरते रहे और मैने ऐसा महसूस किया कि बमबारी का मौसम समाप्त होने से पहले मेरे लिए चुग-किंग छोडना असभव होगा ।

जब मै हागकाग आई तब एक्सरे से पता चला कि मेरी रीड की हड्डी बिल्कुल टेढी-मेढी हो गई थी । इसलिए इसमे ताज्जुब क्या कि मुझे करीब-करीब लकवा मार गया था । मै चिकित्सा करा रही हू और अब पहले से बहुत अच्छी हू । उम्मीद है, कुछ हफ्तो में मै बिल्कुल ठीक हो जाऊगी और फिर से काम करने लगूगी । लौटने पर मै श्री ताई से मिलूगी और तब मुझे आपके बारे मे ठीक-ठीक खबर मिलेगी ।

शायद मुझे यह बताने की जरूरत नही कि आपके गिरफ्तार किये जाने की खबर सुनकर मै कितनी दुखी हुई हू । तबसे मुझे लगातार आपका ध्यान आता रहा है और मै चाहती रही हू—बहुत चाहती रही हू—कि आपके लिए और हिदुस्तान के लिए कुछ कर सकू । जैसा कि आपने लिखा था, समय का अन्दाजा दिनो से नही लगाया जा सकता । आप यहा बहुत थोडे दिन रहे, फिर भी मुझे ऐसा लगा जैसे आप हमारे एक प्रिय पुराने मित्र हो । जनरलसिमो ने और मैने दोनो ही ने यह अनुभव किया कि आपकी और हमारी आत्माए एक-दूसरे से सम्पूर्ण तादात्म्य के साथ मिली और समान उद्देश्य तथा समान महत्वाकाक्षाए होने के कारण आप हमारे सच्चे साथी है ।

मै आपके लिए बहुत ही कम या यह कहिये कि कुछ भी नही कर सकती, किन्तु यदि यह जानकर कि हमे आपसे स्नेह है और आपपर विश्वास है, आपके ये दिन कुछ कम नीरस बन सकते है, तो विश्वास रखिये कि हमे यह सोचकर बडी प्रसन्नता होती है कि इस ससार मे आप जैसी नि स्वार्थ और साहसी आत्माए है और हमे इस बारे मे सन्देह नही कि हिदु-

स्तान को अपने उद्देश्य मे सफलता मिलेगी। आपकी विजय के लिए हमारे हृदय और हमारी प्रार्थनाए सदा आपके साथ रहेगी।

जिस मित्र के हाथो मे ये पक्तिया सौप रही हू, वह कुछ ही मिनटो मे जानेवाले है। इसलिए इन थोडे-से शब्दो मे यह वता सकना मेरे लिए सम्भव नही कि आपके गिरफ्तार कर लिये जाने से यहा हमारी जनता मे व्याकुलता की कैसी लहर दौड गई है। वहुत-से ऐसे लोग, जिन्होने व्रिटिश प्रजातत्र से आशाए वाध रखी थी, आज अपने आपसे प्रश्न कर रहे है कि कही उन्होने साम्राज्यवाद को भूल से उदारतावाद तो नही समझ लिया था। इससे अधिक और क्या कहू!

मेरे मित्र, आपको मेरी समस्त शुभ कामनाए है।

मेलिग सूंग च्यांग

३१९. जीन फ्रॉस्ट की ओर से

न्यूयार्क
मगलवार, १५ अप्रैल १९४१

प्रिय श्री नेहरू,

मै आपसे विल्कुल अपरिचित हू, इसलिए यह मेरी धृष्टता है कि मै आपको पत्र लिखने का साहस कर रहा हू, किन्तु इसके लिए मै अपने को एक प्रकार से विवश पा रहा हू, इसलिए आपसे प्रार्थना करता हू कि आप इसका वुरा न माने। आपने मुझे सोचने के लिए वहुत सामग्री दी है और मै आपका अत्यधिक कृतज्ञ हू। मेरी समझ मे नही आता कि अब इसके आगे मै क्या कहू! मेरे पास जितने भी थोडे-वहुत शब्द है उनके द्वारा मै अपने मौन हृदय की कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू। मेरी समझ मे नही आता कि मै अपनी भावनाए किस प्रकार व्यक्त करू, क्यो कि जो कुछ भी मैने गहराई के साथ अनुभव किया है उसे व्यक्त करने मे मै हमेशा डरता रहा हू। किन्तु इस समय आवश्यकता भय से बड़ी मालूम होती है, इसलिए मै जो कुछ भी कहना चाहता हू उसे अच्छे-से-अच्छे ढग से कहने की चेष्टा करूगा।

मै आपकी 'मेरी कहानी' पढता रहा हू। यह मेरी प्रिय पुस्तक वन गई

है। उन्हें पढ़कर मैं अपने प्रति बड़ी लज्जा का अनुभव करने लगा हू। अब वह समय आ गया है जब मुझे अपने पर पूरी तरह लज्जित होना चाहिए। पिछले दिनों निराशा और भ्रम की अपनी केचुल मे पड़े-पड़े मैंने बहुत समय नष्ट किया है। सारी जिन्दगी मैं विद्रोही बना रहा। मेरे पास कभी कोई कार्यक्रम नही रहा है। फिर भी अपने सम्पर्क में आनेवाली प्राय प्रत्येक वास्तविकता के लिए मेरे पास काफी कठोर शब्द रहे हैं। मैंने अपनेको मनुष्यों से बिलकुल अलग करके रखा और आश्चर्यपूर्वक सोचता रहा कि मैं किसलिए उदास रहता हू। जिस समाज में मैं बड़ा हुआ था, उससे निकल भागने की मुझमें प्रबल इच्छा मालूम दी और ऐसा मैंने अपने परिवार को कष्ट में डालकर भी किया। लेकिन मेरे साथ 'गढे से निकले तो खाई मे गिरे' वाली कहावत चरितार्थ हुई और आज मैं खाई मे हू और वह भी अपने परिवारवालो को कष्ट देकर। मेरा खयाल है कि मैं बहुत दिनो तक यह महसूस करता रहा कि मेरे परिवारवालो को बिना किसी शर्त के मेरा भरण-पोषण करना चाहिए, क्योकि मैंने ऐसा कोई भी काम नही किया है, जिससे उनपर से मेरा बोझ, या यो कहिये कि मेरे उग्र मतो का बोझ, दूर हो जाय।

आज मैं अपनेको गन्दे-से-गन्दे कीडे से भी हीन मानता हु। मुझे इस बात की बहुत सख्त जरूरत है कि मैं अपना सिर ऊचा उठा सकू और अपनेको ईमानदार कह सकू। आखिरकार मुझे प्रेरणा मिल गई है। अब मुझे ऐसा लगने लगा है कि जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण काम आदर्शों की रक्षा करना है और उनकी रक्षा हर कीमत पर और राह में कही अटके बिना करनी चाहिए। अन्तत मैंने यह सीख लिया है कि जो कुछ हो चुका है वह बदला नही जा सकता। फिर भी मैं ऐसा अनुभव करता हू कि जैसा मैं कभी था, लेकिन अब नही हू, उसके लिए मैं थोडा-बहुत प्रायश्चित कर सकता हू या कम-से-कम प्रायश्चित्त करने का प्रयत्न कर सकता हू। ओह, मैं कितने बुरे ढग से ये सब बाते कह रहा हू।

जो हो, मुझे अपने इस परिवर्तन के लिए आपको धन्यवाद देना है। इस ससार को रहने योग्य एक अच्छा स्थान बनाने मे मेरा जो कुछ भी हिस्सा हो सकता है उसे मैं पूरा कर देना चाहता हू। दूर अन्धकार में

प्रकाश देखकर मै बियावान मे खडा-खडा चिल्ला रहा हू—"धन्यवाद है आपको।" किन्तु यह प्रकाश धीरे-धीरे, बहुत ही धीरे-धीरे, आगे बढ रहा है और हवा या पानी या मनुष्य-जाति के छल-कपट की पहुच से बाहर है। शायद मेरा यह कथन आलकारिक मालूम हो और उससे कुछ स्पष्ट न हो, फिर भी मै जो कुछ कह रहा हू, उसे मै अपने हृदय से करना चाहता हू (हृदय के ऊपरी, मध्यम और पार्श्व के हिस्सो से भी।)

आपका,
जोन फ्रॉस्ट

३२०. रफी अहमद किदवई की ओर से

गोरखपुर
२६ अप्रैल १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

श्रीमती पडित के चीन जाने के फैसले से मुझे कुछ फिक्र हो गई है। इसलिए नही कि लडाई का खतरा है, बल्कि इसलिए कि हिन्दुस्तान की हालत नाजुक है। मै महसूस करता हूं कि अगर हम अपने मामलो मे ईमानदार है और हम चाहते है कि दूसरे भी यकीन करें कि हम ईमानदार हैं तब श्रीमती पडित जैसे खास लोगो को ऐसे किसी काम को हाथ में नहीं लेना चाहिए, जिसका सीधा ताल्लुक हमारे कामों से न हो। इसी तरह मै इसे भी मुनासिब नही समझता कि राजेन्द्रबाबू की इज्जतवाला आदमी मुल्कभर मे इस तरह के जल्सो मे हिस्सा लेता हुआ घूमे, फिर चाहे वह दरभगा मे जनेऊ हो और चाहे दिल्ली मे तालीमी सघ की बैठक।

मुझे यकीन है कि आप या श्रीमती पडित मेरे इस तरह लिखने से बुरा न मानेगे।

मै अच्छा हू और खुश हू और मुझे खुशी है कि लार्ड हैलीफैक्स की इन धमकियो से कोई परेशानी नही है कि वह २० साल तक लडाई चलायेगे, जिसका मतलब है जेल मे हमारी लगातार नजरबन्दी।

आपका,
रफी

३२१. पूर्णिमा बनर्जी की ओर से

इलाहाबाद
७ मई १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

यह सोचा भी नही जा सकता कि पूरे चार साल तक मैं आपसे मिल भी न पाऊ। जब आप लखनऊ में थे, मैं जानती थी कि आपका वक्त बेहद घिरा हुआ है और शायद देहरादून मे भी 'बाहरी' लोगो के लिए आपके पास समय नही होगा। मैं कल्पना करती हू, मैं बाहरी ही कही जाऊगी। लेकिन मैं आपसे मिलना चाहती हू। इसकी कोई खास वजह नही है, महज मेरी निजी इच्छा है।

मुझे पप्पू के साथ मसूरी मे जाना पडेगा, इसमें मैं अनिच्छा अनुभव कर रही हू। परन्तु वह सत्याग्रह की धमकी देते है और अगर मैं न जाऊ तो खुद भी जाने से इन्कार करते है। इस तरह अडे रहकर मुझे उनकी छुट्टी खराब करना बुरा लगता है और इसलिए लगता है कि आखिर मुझे झुकना ही पडेगा। यह समस्या तभी हल हो सकती है, जबकि मैं इस बीच गिरफ्तार कर ली जाऊ।[1]

. . . .

सिर्फ आम और फौरन जरूरत की चीजो को छोडकर मैं कभी कुछ लिखने की नही सोचती हू।

मैं २५ को सुबह ७-३० बजे देहरादून में होऊगी। वहा आपसे मिलने की मेरी बडी इच्छा है। अगर मेरा ऐसा सौभाग्य न हो तो २५ के बाद किसी भी दिन मुलाकात करने को तैयार हू। मसूरी से मैं आसानी से आ सकती हू।

मुलाकात के लिए मैं अलग से सुपरिंटेडेट को अर्जी दे रही हू। अगर इससे पहले गिरफ्तार करली गई तो सुपरिटेडेट को सूचना दे दूगी, जिससे अगर दूसरे किसीकी मुलाकात आपके साथ हो सकती हो तो वह मारी न जाय।

---

[1] यहा का कुछ अश सेसर ने काट दिया है।

मैं तो यह भी नही जानती कि यह चिट्ठी पाने की आपको इजाजत मिलेगी ।

थोडी देर के लिए इन्दू से मिली थी । अब तो लगता है कि मैं इतनी बडी, बूढी और बुजुर्ग हो गई हू और इतनी वीत चुकी हू कि हाल ही मे यूरोप से लौटनेवाले इन तेजस्वी लोगो से कोई चर्चा भी नही कर सकती । मैंने कृष्ण मेनन के बारे मे पूछा । इदू कहती है कि वह हमेशा की तरह ही 'अस्थिर' है ।

आजकल इलाहाबाद मे कोई नही है । इस पहलू से जेल से बाहर रहना या भीतर रहना एक-सा ही बुरा है ।

कैदियो की इलाहाबाद की टोली मजे मे है । मुजफ्फर पहचान मे आनेवाले नही है । पिछले शनिवार को मैं उनसे मिली थी । उन्हे फायदा हुआ है ।

यहा से रवाना होने से पहले मौलाना से मिलने का मेरा इरादा है । मेरा खयाल है कि गरमी और जेल एक क्षण के लिए भी उनकी शाति को भग नही कर पाये होगे और जिदगी के प्रति उनकी हमेशा की दृष्टि मे भी कोई फर्क नही पडा होगा । दर-असल जेले बेकार की सस्थाए है । ये किसीमे तब्दीली नही करती । ये न तो सुधार करने मे सफल होती है और न दमन करने मे ।

आप कैसे है ? मुलाकाते भी बेकार की चीजे है और मुझे यकीन है कि आपसे मिलने के बाद मुझे अच्छा नही लगेगा, लेकिन फिर भी उसमे कुछ तो है ही । अच्छा न लगने पर भी किसी चीज के लिए कीमत चुकाने से बचने या भागने मे मेरा विश्वास नही है ।

इलाहाबाद-टोली की महिला सत्याग्रही तारीख ८ तक छूट जायगी । सुचेता को फैजाबाद की अपनी लीडरी का खमियाजा भुगतना पड़ रहा है । एक साल की सजावाली सिर्फ तीन है—वह, लक्ष्मीदेवी और उमा भाभी । मेरा समय अच्छी तरह से कटा, सिवा कम्यूनिटी बैरकों में रहने की तकलीफ के । श्रीमती पडित और मैं कुछ दिन इलाहाबाद मे साथ-साथ थे ।

मैं प्रभावती से मिली । शायद आप जानते है, जयप्रकाश देवली में है ।

राममनोहर ठीक है, परन्तु उन्होंने दाढ़ी बढ़ा रक्खी है और सिर सफाचट करा दिया है। मेरा मतलब है, सिरके बाल। उनकी सूरत देखते ही बनती है। मेरा खयाल है उन्हें, उसकी परवा नहीं है, क्योंकि उनके आसपास वहां कहीं आइना तो है नहीं, नहीं तो वह फौरन पहले जैसी सूरत बना लेते। पिछले महीने की २८ तारीख को मैं उनसे मिली थी।

देहरादून में सुन्दरतम पक्षियों में से कुछ हैं। क्या आपके अहाते में भी कभी आ निकलते हैं? पक्षियों की देख-भाल में मैं कुछ निपुण हैं। अगर आप पसन्द करें तो मैं आपके लिए एक किताब ले आ सकती हू, जिसमें आपको हिन्दुस्तान के सब पक्षी मिलेंगे। आप उनका नाम जान सकेंगे। मसूरी मे मैं वहुत दूर घूमने जाती हू और पक्षियो को देखते रहने में बडा आनन्द आता है।

सस्नेह आपकी,
नोरा

३२२. रिचार्ड राइत्सनेर की ओर से

सुडेटन जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी के
लन्दन स्थित प्रतिनिधि
लन्दन,
१३ अगस्त १९४१

प्रिय पडित नेहरू,

बहुत सोच-सकोच के वाद हमने आपको पत्र लिखने और निर्वासित सुडेटन सोशलिस्टो की ओर से अभिनन्दन भेजने का निर्णय किया है। सन् १९३८ की भाग्य-निर्णायक गर्मियो मे बोडनवाच और प्राग् मे हमारी आपसे जो बातचीत हुई थी, उसकी याद अबतक ताजा है। आज भी हम आपके उस प्रोत्साहन के लिए ऋणी है जो आपने हिटलरशाही के विरुद्ध बिना किसी समझौते के लडाई जारी रखने के लिए हमे दिया था। म्यूनिख-समझौते के वाद हमे मैदान से हट जाना पडा था। हमारे बीस हजार अच्छे-से-अच्छे आदमी तीसरे राइक के कन्सट्रेशन कैम्पो मे ठूस दिये गए थे। उन मे से बहुत-से मर गये है, फिर भी हमे इस बात का गर्व और विश्वास है कि हमने सघर्ष करके अपने दल की इज्जत बढाई है—एक ऐसे दल की, जिसे

एक जनतत्रीय देश मे नाजीवाद के विरुद्ध अन्तिम राजनैतिक लडाई लडने का सौभाग्य प्राप्त है। हमने अपने तीन हजार दोस्तो को भाग निकलने मे सहायता दी है । आज वे इगलैण्ड, स्वीडन और कनाडा मे निर्वासितो की तरह रहकर समय काट रहे है और भयानक-से-भयानक हत्याकाड के बावजूद हमारे मित्र स्वदेश मे प्रसन्न है । हमे अपने उन साथियो से जो डचाउ मे दो साल रहने के बाद भी आज जिन्दा है, चिट्ठिया और बधाइया मिली है । उन्होने हमे विश्वास दिलाया है कि अपने पुराने आदर्शों के लिए वे दृढतापूर्वक सघर्ष करते रहेगे ।

पडित नेहरू, आपको यह पत्र हम एक ऐसे आन्दोलन के नाम पर लिख रहे है, जिसके सदस्यो की सख्या घटनाक्रम के कारण कम तो हो गई है, लेकिन जो यूरोपियन सोशलिज्म की अमर शक्ति के अभिन्न अग है ।

हम आपके और आपके दोस्तो के गिरफ्तार किये जाने से दुखी है । हमे इस बात का अफसोस है कि नेशनल काग्रेस का शक्तिशाली प्रगतिवादी वर्ग इस महान सघर्ष से बाहर है । हमे ऐसा लगता है, कि नेशनल कांग्रेस और ब्रिटिश सरकार के सबधो के बीच जो गतिरोध उत्पन्न हो गया है उससे नेशनल सोशलिज्म और फासिज्म के विरुद्ध मोर्चा लेनेवाली विश्व की डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट शक्तियो के बीच एक गहरी खाई खुद गई है । हिदुस्तान की समस्या की ऐतिहासिक और सामाजिक पृष्ठभूमि से हम पर्याप्त रूप से परिचित नही है और हम उससे सम्बन्धित दोनो शक्तिशाली सहयोगियों मे से एक को भी सलाह देने का अधिकार नही रखते, किन्तु हमे विश्वास है कि जबसे रूस युद्ध मे आया है तबसे युद्ध ने मुक्ति-युद्ध का रूप ले लिया है । हमे यह भी विश्वास है कि हिटलर, मुसोलिनी और फ्रास की पराजय से सारे ससार मे प्रजातत्रीकरण का एक नया युग आरम्भ होगा और इस विकास-क्रम मे हिदुस्तान को अपनी स्थिति सुधारने का अच्छा अवसर मिलेगा ।

सोशलिस्ट होने के नाते हम चाहते है कि इस युद्ध की विभीषिका से एक स्वतत्र और सयुक्त यूरोप का प्रादुर्भाव हो । हमारी सारी चेष्टाएं इसी उद्देश्य की प्राप्ति की ओर लगनी चाहिए । हमारे रास्ते मे वहुत-सी प्रबल बाधाए है. फिर भी हमे इससे प्रोत्साहन मिलता है, कि सभी राष्ट्रो

की प्रगतिशील शक्तिया इस बात को निरन्तर बढती हुई स्पष्टता के साथ अनुभव कर रही है कि शान्ति तभी दृढ और सुरक्षित हो सकती है जब उसके मूल में यह भावना हो कि सभी स्वतंत्र देश और उनकी जनता एक-दूसरे पर निर्भर है। यूरोप को स्वतन्त्र हिदुस्तान जैसे सहयोगी की आवश्यकता है, लेकिन हिदुस्तान को भी स्वतन्त्र यूरोप जैसे सहयोगी चाहिए।

इस दृष्टि से क्या हम आपको कुछ ऐसे सुझाव भेज सकते है, जिनका प्रभाव आपसे और हमसे समान रूप से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नो पर पडता है ?

हो सकता है कि ब्रिटिश नीति ने गलतिया की—उदाहरण के लिए म्यूनिक के पहले शिकार हम बने—फिर भी फास के पतन और रूस पर हिटलर के आक्रमण के बीच के सालो मे ससार की स्वतत्रता का पूरा बोझ इगलैण्ड की जनता पर ही था। १९३८ के पतझड मे हमारे स्वप्न बडी कटुता के साथ छिन्न-भिन्न हो गये थे और शायद यही कारण है कि हम उस कटुता को समझ पा रहे है, जो आप अपने कारागृह मे अनुभव करते है। किन्तु देश मे निर्वासितो की तरह रहते हुए हमने अपनी आखो से अग्रेज राष्ट्र को पीडा भोगते और सघर्ष करते देखा है, जिसके कारण हमारी कडवी भावनाए प्रशसा में बदल गई है। पडित नेहरु, विश्वास कीजिये कि जिस समय लन्दन की जनता घातक बमबारियो का आश्चर्यजनक साहस के साथ सामना कर रही थी, उस समय निस्सदेह वह किसी साम्राज्य-वादी उद्देश्य का प्रतिपादन नही कर रही थी। वह स्वतन्त्रता के लिए लड रही थी, ठीक वैसे ही, जैसे आप अपने देश मे और हमारे साहसी वीर सुडेटन क्षेत्रो मे लड रहे है।

हमारा विचार है कि स्वतन्त्रता, जनतन्त्र और शान्ति के युग की स्थापना मे योग देनेवाली समस्त शक्तियो को इस युद्ध के बाद कधे-से-कधा भिडा-कर एक ही रास्ते पर चलना पडेगा। हमे आशा है कि हिदुस्तान मे भी स्थितिया अच्छाई की ओर मोड लेगी।

यद्यपि हमारी चेक-सुडेटन-जर्मन समस्या हिन्दू-मुस्लिम एकता की समस्या से बहुत ही कम समता रखती है, फिर भी हम बडे प्रसन्न होगे यदि किसी दिन हम अपने स्वतन्त्र देश मे आपका एक स्वतन्त्र अतिथि के

रूप मे स्वागत कर सके और मध्य यूरोप के सगठन की समस्याओ के बारे मे आपकी राय ले सके। इसे आप हमारा निमंत्रण समझिये और एक बार फिर प्राग् और बोडनबाच मे हमारे अतिथि बनने की कृपा कीजिये।

तब हम और आप अग्रेजी मे बातचीत कर सकेगे, क्योकि अपने निर्वासिन के वर्षो मे हमने इगलैण्ड की भाषा, साहित्य और दर्शनशास्त्र से परिचित होने का अवसर निकाल लिया है।

अपने सभी साथियो की ओर से हम आपको अपनी गहरी-से-गहरी सहानुभूति का विश्वास दिलाते है।

अगर आप राजनैतिक साहित्य पढने की स्थिति मे हो तो हम आपको 'इगलैण्ड और अन्तिम स्वतत्र जर्मन' नामक पुस्तिका की और सुडेटन समस्या के भावी समझौते के बारे मे अपने दल के घोषणा-पत्र की एक-एक प्रति भिजवा रहे है।

आपका,
रिचार्ड राइत्सनेर
वेनजल जेकश्च

३२३. एलिनोर एफ. रैथबोन की ओर से

[चूंकि उस समय मैं जेल मे था, इसलिए यह पत्र यू. पी. के गवर्नर के पास भेजा गया था, जिन्होने इसे मेरे पास देहरादून जिला-जेल में भिजवा दिया था।]

कामन्स सभा
लन्दन
२८ अगस्त १९४१

प्रिय पडित नेहरू,

आपके लम्बे पत्र के लिए धन्यवाद। यह मुझे कई सप्ताह पहले मिल गया था, किन्तु कार्य अधिक होने के कारण मैं इस इन्तजार मे थी कि पार्लमेट की छुट्टी हो तब जवाब दू। यह समय बरबाद नही गया है, क्योकि इस बीच आपके पत्र को श्री एमेरी, बहुत-से ससद-सदस्य और भारतीय मामलो मे विशेष रूप से दिलचस्पी लेनेवाले कितने ही दूसरे लोग पढ चुके है।

मै पूरे पत्र का उत्तर देने की चेष्टा नही करूगी, बल्कि केवल उन्ही बातो को लूगी जो मुझे अपने और आपके बीच विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रतीत होती है ।

मुझे अफसोस है कि आप ऐसा अनुभव करते है कि "हिंदुस्तान के साथ इग्लैण्ड के सम्बन्ध पर विचार करने के लिए हमारे बीच कोई समान आधार नही है ।" मै समझती हू कि इनके लिए काफी आधार इस बात में है कि हम दोनो ही न सिर्फ हिंदुस्तान की जनता के लिए, बल्कि सभी देशो की जनता के लिए स्वतन्त्रता, जनतत्र और सामाजिक उन्नति मे समान रूप से विश्वास करते है । किन्तु इसमें सन्देह नही कि हम दोनो इन साध्यो की व्याख्या बिल्कुल भिन्न-भिन्न रूप से करते है और उनकी प्राप्ति के साधनो तथा गति के सम्बन्ध मे बहुत ज्यादा मतभेद रखते है ।

गति के बारे में जो मतभेद है वह मुझे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण मालूम देता है । पिछले बीस वर्षो में आपने थोडा-थोडा करके स्वशासन का जो अधिकार प्राप्त किया है और कुछ शर्तो पर आपको भविष्य मे औपनिवेशिक स्वराज्य का जो वचन दिया गया है, उसे आप 'तिरस्कार और अपमान' मानते है । मेरी और करीब-करीब सभी अग्रेजो की दृष्टि मे स्वशासन और दूसरे सुधारो को थोडा-थोडा करके देने मे हिंदुस्तान के साथ उसी प्रणाली को व्यवहार मे लाया गया है, जिसका व्यवहार हमारी सरकारो ने स्वय हमारे साथ किया है । यह वही प्रणाली है, जिसपर हमारी अपनी स्वतत्रताए धीरे-धीरे करके खडी की गई है और जिसके द्वारा हमने उन्नति की है । यही कारण है कि हमने 'क्रमिक विकास की अनिवार्यता' मे विश्वास करना सीखा है—उसकी दार्शनिक नही, बल्कि व्यावहारिक अनिवार्यता मे । इसका यह अर्थ नही है कि इस प्रणाली के विरुद्ध हम अक्सर चीखते-चिल्लाते नही है । इसकी गति बहुधा अनावश्यक रूप से धीमी मालूम देती है और जब सुधार अन्तिम रूप से प्राप्त हो जाता है तब यह सोचकर बडा बुरा लगता है कि न जाने कितने उसकी प्रतीक्षा-ही-प्रतीक्षा मे मर मिटे । फिर भी कुल मिलाकर हमे यह बात स्वीकार करनी पडती है कि इस प्रणाली ने अच्छा काम किया है और हमे उन अनेक दुर्भाग्यो से बचा लिया है, जिनका पहाड हमारे देशवासियो पर पहले टूट चुका है—उदाहरण

के लिए, रक्तमय विद्रोह, हिसात्मक प्रतिक्रियाए, कुविचारित सुधार, जिन्हे सम्पूर्ण रूप से लागू करने पर परिणाम बुरा निकला, अच्छे सुधार, जो इतनी सरलता से मिल गये कि उनसे लाभान्वित होनेवाले लोग यह अनुभव ही नही करते कि उन्हे कुछ मिला है और इसलिए वे न तो उनकी कीमत समझते है, न उनकी रक्षा करते है ।

गति के सिलसिले मे मुझे यह बात बडी अजीब मालूम देती है कि आप जैसे विचारोवाले हिदुस्तानी जब अपने ही देश नही, बल्कि दूसरे देशो की भी सुरक्षा तथा हित पर प्रभाव डालनेवाले महान राजनैतिक परिवर्तनो पर वाद-विवाद करते है तब तो कहते है—'या तो पूरा लेगे या बिल्कुल नही' और 'सबकुछ एक ही बार मे दे दो', किन्तु जब सामाजिक सुधारो की बात आती है, जहा तेजी कम खतरनाक होती है, तब हिदुस्तानी भी उतने ही क्रमश वादी दिखाई देने लगते है, जितने कि हम है । कम-से-कम बाल-विवाह और पर्दा के प्रश्नो के सिलसिले मे तो मुझे ऐसा ही लगा । इन कुप्रथाओ के सम्बन्ध मे ब्रिटिश अधिकारियो के धीमे और भयभीत आचरण को अधिकाश उग्र-से-उग्र हिदुस्तानी सुधारको ने चुपचाप स्वीकार कर लिया और मुझे इस बात का कोई सकेत दिखाई नही देता कि स्वतत्र हिदुस्तान उनके सम्बन्ध मे कुछ अधिक तीव्रता से कार्य कर सकेगा, यद्यपि मै जानती हू कि इस बात का दावा अवश्य किया गया है । हा, अस्पृश्यता की ओर गाधीजी का रुख एक अपवाद अवश्य है । किन्तु उसका सम्बन्ध पुरुषो और स्त्रियो दोनो से है । फिर भी इन दोनो सामाजिक कुप्रथाओ ने निश्चय ही हिदुस्तान के स्वास्थ्य, शक्ति, शिक्षा आदि की उन्नति को इतना ही रोका है, जितना कि ब्रिटिश शासन के मत्थे थोपी जा सकनेवाली किसी भी त्रुटि ने रोका होगा ।

जो अग्रेज करीब-करीब आप ही जैसा दृष्टिकोण रखते है, उनके प्रयत्नो को भी आप बहुत ही उपेक्षा की दृष्टि से देखते है । "इन नेकनीय व्यक्तियो या समूहो का ब्रिटेन की शासन-नीति या लूटने-खसोटनेवा साम्राज्यवादियो पर कोई प्रभाव नही है।" इस विषय पर ब्रिटेन का ससद सदस्य शायद आपसे ज्यादा अच्छा निर्णय कर सकता है और मुझे इस सन्देह नही कि आप गलत है—यह बात और है कि सन् १९२० से अ

तक थोडे-थोडे करके स्वशासन के जितने अधिकार मिले है, उन्हे आप न केवल नगण्य वल्कि 'तिरस्कारपूर्ण और अपमानजनक' भी मानते है। पार्लमेंट के भीतर और बाहर जो लोग भी हिंदुस्तान के समर्थक है उन्होने उन अधिकारो को दिलाने और शासन की नीति पर प्रभाव डालने के लिए बहुत काम किया है। शायद वे और भी अधिक दिलवा पाते, यदि उन्होने अपने हिंदुस्तानी मित्रो की इच्छा का पालन करके अप्राप्य को मागने की चेष्टा न की होती। मुझे याद है, सन् ३५ के कानून के बाद श्री जोशी ने मुझसे पूछा था कि महिलाओ से सम्वन्धित कानून के मूल प्रस्ताव में (खास तौर से मताधिकार की योग्यता और सीटो के सरक्षण के प्रश्न पर) मैने किस तरह उतने सुधार करा दिये, जितने कि मजदूर-दल अपने मजदूर-सघो के लिए भी नही करा पाया था? मैने जवाब दिया कि इसका कारण यह है कि मजदूर-दल के सशोधन बहुत ही उग्र थे, जबकि मेरी आदत यह है कि मै पहले ही अपने मन में पक्का कर लेती हू कि मुझे अधिक-से-अधिक कितना मिल सकता है और फिर उसीके अनुसार या तो ठीक उतना ही मागती हू या सौदेवाजी के लिए थोडी-सी गुजाइश छोडकर २० प्रतिशत ज्यादा माग लेती हू। "सबसे अधिक नही, वल्कि प्राप्त हो सकनेवाला सबसे अधिक", यही मेरा सिद्धान्त रहा है। मै जानती हू कि आप ऐसी अवसरवादिता से घृणा करते है। मै केवल इतना कह सकती हू कि ऐसी बात करने से काम बन जाता है।

जहातक आपका यह कहना है कि "सिद्धान्तत या व्यावहारिक रूप से आप हिटलर के 'गौलीटरो' और हमारे वाइसरायो तथा गवर्नरो के बीच कोई अन्तर नही पाते", वह तो निश्चय ही आपकी मानसिक स्थिति का परिचायक है। जो कुछ भी हो, आप मुझपर 'युद्ध-मनोवृत्तिवाले व्यक्ति के क्रोध और कटुता' का दोषारोपण करते है। इन शासको मे से कुछके व्यक्तित्व के चित्र मेरी आखो के सामने घूम जाते है—लार्ड हेलीफैक्स, लार्ड विलिगडन, लार्ड लिनलिथगो, लार्ड हेली, सर मान्टेगो बटलर, सर हरबर्ट इमरसन (मै नये आदमियो को नही जानती)। क्या सैद्धान्तिक या व्यावहारिक रूप से कोई अन्तर नही है हिटलर के गौलीटरो और इन व्यक्तियो मे, जो न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और सुलहपसन्द बने रहने

तथा परस्पर-विरोधी उद्देश्यो मे समझौता करने के लिए लगातार चेष्टा करते रहे है, भले ही उन्हे इस चेष्टा मे सदा सफलता न मिली हो ?

फिर भी मै स्वीकार करती हू कि जब आप अपने पत्र मे आम बातो से विशेष बातो की ओर जाते है और हिदुस्तानी शासन पर दोषारोपण करते है तब अपने प्रति मुझे उतना विश्वास नही रह जाता। जहातक युद्ध-उद्योग का प्रश्न है—विशेष रूप से हवाई जहाज की आयोजित फैक्टरी का, जिसकी आपने चर्चा की है और हिदुस्तानी जहाजरानी के प्रति हमारी नीति का—इसका उत्तर श्री एमरी ने आशिक रूप से पार्लमेंट मे दे दिया है और मुझे व्यक्तिगत रूप से विश्वास दिलाया है कि आपका दोषारोपण बिल्कुल निराधार है। (इस सम्बन्ध मे सर जार्ज शुस्टर की वह राय भी पढिये जो उन्होने पहली अगस्त की बहस मे व्यक्त की थी—मै "हैनसर्ड" —ससद की कार्रवाई की छपी रिपोर्ट—भेज रही हू।) अपूर्ण या पक्षपातपूर्ण जानकारी के कारण निर्णय करने और अनुमान लगाने मे गलतियो की गुजाइश हो सकती है, किन्तु यदि आप यह सोचे कि यहा का कोई अधिकारी ब्रिटेन के निहित स्वार्थ या ईर्षा से प्रभावित होकर जान-बूझकर हिदुस्तानी युद्ध-उत्पादन को सीमित करना चाहेगा, तो इसका यह मतलब है कि आप निश्चय ही हमारे आदमियो को गलत समझते है। इससे पता चलता है कि आप यहा के लोगो की मानसिक प्रवृत्ति को समझने मे कितने असफल है। उन्होने तो युद्ध मे विजय पाने के अपने मुख्य उद्देश्य पर ही अपनेको केन्द्रित कर रखा है और इसमे सन्देह नही कि व्हाइट हाल मे या दिल्ली मे जो सरकारी अधिकारी है, वे वास्तविकता को जानने और हिन्दुस्तान के युद्ध-उत्पादन की सम्भावनाओ का अनुमान लगाने मे आपसे कही अच्छी स्थिति मे है, क्योकि परिवहन, सामग्री, औजार, कुशल व्यक्तियो की कमी आदि के कारण उत्पन्न सीमाओ को वे जानते है।

लेकिन जब आप दूसरी बातो की चर्चा करते है—उदाहरण के लिए कैदियो और नजरबन्दो के प्रति किये जानेवाले व्यवहार, भेदिया प्रणाली आदि की—तो आप जो कुछ भी कहते है अपने अनुभव के आधार पर कहते है, इसलिए मै मन-ही-मन बड़ी व्यग्रता का अनुभव करती हू।

आज से दस साल पहले जब मैं कुछ दिनों के लिए हिंदुस्तान गई थी तब और उसके बाद भी मैंने हिंदुस्तानियों और हिंदुस्तान के ब्रिटिश मित्रो के मुह से बहुत-कुछ सुना, जिसका आशय यह है कि शान्ति के दिनो में भी हिंदुस्तान में अनावश्यक निर्दयता का बोलबाला है, जिसका स्पष्ट कारण यह है कि शासन का काम बहुत दूर से चलाया जा रहा है, वह अत्यधिक केंद्रित है और जिनके माध्यम से वह चलाया जा रहा है, वे न पूरी तरह से प्रशिक्षित है, न उनके काम की ठीक से देखभाल ही होती है। आतकवाद से उत्पन्न क्रोध और भय ही उन दिनो उस निर्दयता का आम बहाना था। मुझे उम्मीद थी कि सन् १९३५ के बाद प्रान्तीय सरकारो की शक्ति बढ जाने से यह आतक मिट गया होगा। किन्तु युद्ध से नृशसता को प्रोत्साहन मिलता है, जिसका एक कारण यह है कि आतकवाद की ही तरह युद्ध भी क्रोध और भय को प्रेरणा देता है और दूसरा यह कि उच्च अधिकारियो मे से योग्यतम व्यक्ति युद्ध-कार्यों मे लगा दिये जाते है। इन सब बातो के बारे में मैं उन लोगो से विचार-विनिमय करना चाहती हू, जो सत्य पर कुछ प्रभाव डाल सके और साथ-ही-साथ सम्भव उपाय भी बता सके।

अब मै फिर से मुख्य बात पर आती हू। आपके पत्र मे जो मूलभूत भूल मुझे शुरु से आखिर तक दिखाई देती है, वह यह है कि आप यह मान लेते है कि आप पूरे हिंदुस्तान और हिंदुस्तान की जनता की ओर से बोल रहे है। ("अगर हम एक-दूसरे से सहमत नही हो सकते तो फिर ब्रिटिश सरकार हमे अपनी ही युक्तिया क्यो नही करने देती ?") आप अपने देश के उन अनेकानेक वर्गों को भूल जाते है—मानो वे स्लेट पर लिखे अक्षरो की तरह स्पज से मिटाये जा सकते हो—जो हिंदुस्तान के भविष्य के बारे मे आपसे पूरी तरह से असहमत है और अगर हम उनसे यह कहकर अलग हो जाय कि 'लो, हम तुमसे थक गये, तुम आपस मे ही लडकर फैसला कर लो' तो हमारा ऐसा करना वे साथ छोडकर भाग जाना तथा विश्वास-घात मानेगे। मैं समझती हू कि ऐसा वे ठीक ही सोचेगे। क्या आपने एक सम्माननीय व्यक्ति की तरह अपने मन से पूछा है कि अगर आप हमारी जगह होते तो ऐसा करते ?

काग्रेस की मागो के औचित्य और अनौचित्य की बात को छोडते हुए

आप यह सोचिये कि किसी एक राजनैतिक दल की मागो को स्वीकार करने के लिए—चाहे वह सबसे बडा और सबसे प्रगतिशील दल ही क्यो न हो—यदि आपको दूसरे विचारोवाले उन सभी दलो और समुदायो को दिये गए आश्वासनो को वापस लेना पडे, जिन्होने आपको सहायता दी है और आपके साथ सहयोग किया है, तो क्या आप उस एक राजनैतिक दल के आगे घुटने टेक देगे ? जिस युद्ध के भविष्य पर न केवल ग्रेट ब्रिटेन बल्कि यूरोप और स्वय हिदुस्तान की भी भावी सुरक्षा निर्भर है, क्या उस युद्ध के बीचोबीच—जब इनके सहयोग की सबसे अधिक आवश्यकता है—आप ऐसा करेगे या करने का वचन देगे ? और, क्या आप यह सब इस भोले-भाले विश्वास के साथ करेगे कि काग्रेसी हिदुस्तान के साथ किया गया उदारता का एक महान कार्य लोगो के हृदय मे इतना परिवर्तन ला देगा कि उससे युद्ध मे हमारा साथ देनेवाले हिदुस्तानियो के दूसरे वर्गो मे उत्पन्न शत्रुता और कटुता की क्षतिपूर्ति हो जायगी ?

मै आपको यह याद दिलाना चाहती हू कि आयरलैड और ट्रीटी बन्दरगाहो के साथ हमे जो अनुभव हुआ है उससे हमे इस प्रकार के विश्वास-कार्य के लिए प्रोत्साहन नही मिला है। मै तो यह कहना चाहती हू कि ऐसा प्रोत्साहन हमे आपके पत्र के रुख, पुस्तक या आपके दल के दूसरे लोगों के वक्तव्यो से भी नही मिला है, बल्कि इनमे एक प्रकार की शत्रुता है जो कि शायद अपरिवर्तनीय है, क्योकि उसकी जड़े अपरिवर्तनशील अतीत मे गडी हुई है।

हा, हम एक-दूसरे के हृदय की सच्चाई मे विश्वास कर सकते है, जैसा कि आप कहते है। किन्तु आपके हृदय की सच्चाई ने मुझे जो कुछ दिखाया है वह है एक खाई, जो कि पाटी नही जा सकती। हो सकता है कि मै गलती पर होऊ।

सस्नेह आपकी,
एलिनोर एफ. रैथबोन

फिर से—

अलग डाक से मै आपको (१) हिदुस्तान पर की गई सबसे नई बहस का "हैनसर्ड" और (२) हिदुस्तान पर अपनी छोटी पुस्तक भेज रही

हू । मैं आपको आपकी पुस्तक की भी एक प्रति भेजना चाहूगी, जो कि आप कहते है, आपने देखी नही है । लेकिन मैं यह नही जानती कि ऐसा करने के लिए मुझे इजाजत मिलेगी या नही ।

३२४ सर जार्ज शुस्टर की ओर से

मिडिल बार्टन, ऑक्सन,
२३ सितम्बर १९४१

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मैंने मैकमिलन कम्पनी से कहा है कि जैसे ही पार्सल हिंदुस्तान पहुचे वैसे ही वह 'इंडिया एंड डेमोक्रेसी' ('भारत और लोकतन्त्र') पुस्तक की एक प्रति आपके पास भेज दे । यह पुस्तक अभी-अभी प्रकाशित हुई है और मैं इसका संयुक्त लेखक हू । यह पुस्तक रूस पर आक्रमण होने से पहले जून के प्रारम्भ में ही समाप्त हो गई थी और उसके बाद भी आज की निरन्तर परिवर्तनशील स्थिति में अनेक परिवर्तन हुए हैं । किन्तु यह एक लम्बा पर्यवेक्षण है और इसमें जो कुछ भी लिखा गया है उसपर इन दिनो प्रतिदिन होनेवाले परिवर्तनो का कोई प्रभाव नही पड़ा है । पुस्तक दो भागो मे है । पहले भाग को विन्ट ने लिखा है और इसमें ऐतिहासिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि देते हुए हिंदुस्तान की स्थिति का पर्यवेक्षण किया गया है । इसमे बहुत-कुछ ऐसा है जिससे आप असहमत होगे, किन्तु यह ईमानदारी के साथ लिखा गया है और इसमे लेखक का दृष्टिकोण सच्चाई के साथ व्यक्त हुआ है । मैंने विन्ट के दृष्टिकोण पर कोई प्रभाव डालने की चेष्टा नही की है और जैसाकि मैंने भूमिका मे कहा है, यदि यह भाग मैंने स्वय लिखा होता तो मैं बहुत-सी बाते दूसरे ढग से प्रस्तुत करता । किन्तु अपने भाग मे (भाग दो मे) मैंने उसकी चर्चा की है और उसकी सराहना करते हुए मैंने ये सवाल पूछे है—'भविष्य का क्या होगा ?', 'हमे क्या करना चाहिए ?' मुझे उम्मीद है कि आप मेरे द्वारा लिखे गए भाग को पढने योग्य पायेंगे । इसके बारे मे मैं केवल इतना दावा करना चाहूगा कि मैंने सत्य को जैसा देखा है उसे वैसा ही प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है और शायद आप कम-से-कम इतना तो अनुभव करेंगे ही कि मैंने जो कुछ भी कहा है, उसमे एक ऐसा रुख छिपा हुआ है, जिसके प्रति आपकी भावना सम्पूर्णत असहानुभूति-

पूर्ण नही है। जो कुछ भी मैंने लिखा है, उससे यदि सत्य को खोजने मे सहायता मिलती है—चाहे वह सत्य वैसा न भी हो जैसा मैंने उसे देखा है—तो मैं समझूंगा कि मेरा उद्देश्य पूर्ण हुआ।

मुझे इस बात का पूरा आभास है कि आपको यह बात गुस्ताखी मालूम दे रही होगी कि हम विदेशियो मे से कोई भी आपके देश के बारे मे लिखे और इससे भी ज्यादा यह कि आपको यह उपदेश दे कि आपको क्या करना चाहिए। मैंने अक्सर महसूस किया है कि जब कभी हम एक-दूसरे के सम्पर्क मे आये है, मैंने आपको इस मामले मे विशेष रूप से उत्तेजित ही किया है—उदाहरण के लिए पिछले मौके पर जब आप चेथम हाउस मे बोले थे। काश कि ऐसा न होता! मुझे आपके पिता से विशेष स्नेह था और मैं उनका बडा आदर करता था। जहातक आपका सवाल है, मेरी स्मृति मे आपकी उस यात्रा का चित्र सदा अकित रहता है जब आप शिमला मे मुझसे पीटरहोफ मे मिले थे और मुझसे मेरे पढने के कमरे मे बातचीत करने के बाद आप गोल कमरे मे हमारी पारिवारिक पार्टी मे शामिल होने आये थे, जिसमे मेरी पत्नी और मेरे वे दो लडके भी थे, जो ऑक्सफोर्ड से अपनी लम्बी छुट्टी बिताने मेरे पास आये थे। उस थोडे-से समय मे बन्धुत्व और एक-दूसरे को समझने की भावना की अनोखी चमक दिखाई दी थी। काश कि ऐसा फिर हो सकता! सम्भव है कि युद्ध के समाप्त होने से पहले समान खतरे हमे कुछ अधिक पास ले आयें या युद्ध-सबधी आवश्यकताओं की भट्टी मे पुराने हठपूर्ण विरोध जल जाय। जहातक मेरा अपना सवाल है, जिन दो लडको से आप मिले थे उनमें से एक मारा जा चुका है और दूसरा समुद्र-पार एक खतरे की जगह काम कर रहा है। ऐसे तथ्य छोटी-छोटी नगण्य बातो को दूर हटा देते है और हमे मजबूत

यदि हिंदुस्तान में पूर्ण स्वराज्य की स्थिति उत्पन्न करने के लिए जिन संक्रमणकालीन प्रयत्नों की आवश्यकता है उनमें ब्रिटेन और हिंदुस्तान मिलकर काम करें तो वे मानव के दुःख-दर्द को बहुत-कुछ रोक सकते हैं। जहां तक हमारी सच्चाई में विश्वास स्थापित करने का प्रश्न है, मुझे उम्मीद है कि मेरी पुस्तक इस दिशा में कुछ कर सकेगी।

जो हो, कृपाकर मेरी बातों पर गम्भीरतापूर्वक विचार कीजिये और जो कुछ भी मैंने पुस्तक में लिखा है उसपर अपनी राय लिख भेजिये, चाहे वह पूर्णरूप से आलोचनात्मक ही क्यों न हो।

सस्नेह आपका,
जार्ज शुस्टर

फिर से—

इस पत्र को लिखने के बाद मिस एलिनोर रेथबोन ने मुझे वह पत्र दिखाया, जो आपने उन्हें लिखा था। जो कुछ भी आपने लिखा है, उसको पढ़ने के बाद मैं महसूस करता हू कि न तो मेरे इस पत्र से, न जो कुछ मैंने अपनी पुस्तक में कहा है उनसे ही, आपके प्रश्नों का पूरा-पूरा उत्तर मिल पाता है। बहुत-सी बातों में—सब बातों में नहीं—हमारे उद्देश्य एक-दूसरे के प्रतिकूल हैं। आपने मिस रैथबोन को अपने पत्र में जो बातें लिखी हैं, उनमें से बहुतों पर मैं सावधानी के साथ कुछ कहना चाहता हू और मुझे उम्मीद है कि अगर मैं कुछ ही दिनों में आपको फिर से पत्र लिखूं तो आप बुरा नहीं मानेंगे।

३२५. पूर्णिमा बनर्जी की ओर से

सेण्ट्रल जेल, लखनऊ
८ नवम्बर १९४१

प्रिय जवाहरलालजी,

हालांकि मेरे मन में उत्सव मनाने की कोई बात नहीं है, लेकिन मैंने सोचा कि आज आपको पत्र लिखकर 'जवाहर-दिन' मना लूं। मुझे उम्मीद है कि मेरे इस पत्र के प्राप्त होने से जिस किसीके पत्र की आप उम्मीद कर सकते हैं, उसे आपको मिलने में कोई अड़चन नहीं होगी। अगर अड़चन पड़ी तो मुझे दुःख होगा।

मैं आपको हैवलॉक एलिस की आत्म-कथा भेजने की सोचती रही हू।

आप उसे पसन्द करेगे। परन्तु आप हमेशा इतने अप-टू-डेट रहते है और पुस्तको की दृष्टि से इतना आगे वढे हुए कि मुझे कोई दूसरी कल्पना करने मे सकोच होता है।

इलाहावाद मे करीव एक महीने रहने के वाद मै यहा आ गई। सुचेता और उमा भाभी अपनी सजा का आखिरी महीना काट रही है। यदि जे गगानाथ के फैसले के फलस्वरूप अधिकारियो की कर्तृत्व-शक्ति मे कुछ सुधार हुआ तो इन्हे उसका कोई लाभ नही मिलेगा। डा काटजू तक के लिए भी यह 'का वर्पा जव कृषी सुखानी' जैसी वात होगी। मेरे मामले की जड़ तो स्पष्टत. वजर भूमि मे है, लेकिन मुझे इसकी कतई परवा नही है। मुझे न तो ज्यादा फायदा होने को है, न नुकसान, अपनी वेडियो का भी नही। मुझे जिदगी विना उत्तर की चिट्ठी जैसी लगती है। अगर कोई काफी समय तक उसका जवाव नही देता तो वह स्वय अपने को जवाव देने लगती है या विना उसके ही ठीक चलता रहता है।

सुचेता मुझसे विछुड जायगी, लेकिन अकेला रहना मुझे अखरेगा नही। धीरे-धीरे यहा लोग कम हो रहे है और जल्दी ही हम सिर्फ चार जने रह जायगे—दो सजा-याफ्ता और दो हम नजरवन्द।

आज सुवह के अखवार मे एक्जीक्यूटिव कौसिल की खवर है। जव हम देवली मे नौजवानो पर कोडे वरसने (?) के वारे में सोचते है तो हमारे दिल इतने उभडते है कि खाना भी हमारे गले नही उतरता। मेरी ज्यादा हमदर्दी तो उनकी औरतो से है। जहातक जयप्रकाश का सवध है, मेरी सरक्षक प्रवृत्ति वहुत ही उभर आती है और मुझे दु ख होना है। क्या आपने 'स्टेट्समैन' और टहलने के कानून के वारे मे सवकुछ पढ़ा, भले ही यह जेल के वरामदे मे टहलने के कानून के वारे मे है? वगैर मजाक के यह अच्छा है और उसका हास्यास्पद पहलू है, लेकिन 'स्टेट्समैन' द्वारा ऐसा करना ठीक नही जो गभीर राजनीति के साथ इसको मिला देता है।

जल्दी ही आप विल्कुल अकेले रह जायगे। सुन रही हू कि श्री पन्त दिसम्वर मे वाहर आ रहे है। आप तो सवके साथ रहते हुए भी अक्सर अकेले ही लगते है और आप दूसरो को ऐसा आभास कराते है कि आप

जब अकेले होते है तो उनसे हम अकेले कभी नही रहते । इसीलिए मै विश्वास करती हू, आप अकेले नही होगे ।

श्री पन्त और डा रामस्वरूप और आपके मेहरबान जेलर को मेरा स्मरण ।

सादर आपकी,
नोरा

सेन्सर द्वारा पास किया गया
हस्ताक्षर
एम आई डी आई एम, लखनऊ
१-११-४१

३२६ श्यामाप्रसाद मुकर्जी की ओर से

कलकत्ता
२३ नवम्बर १९४१

प्रिय पडितजी

आपके तुरन्त उत्तर के लिए धन्यवाद । उसका मुझपर गहरा असर हुआ है । मेरी आपसे तर्क करने की कोई इच्छा नही है । अगर आप मुझे कहने की अनुमति दे तो मै कहूगा कि मै आपकी भावनाओ को अच्छी तरह समझता हू । भारत मे जिस स्थिति मे हम है, जेलखाना केवल अपनी चहारदीवारी तक ही सीमित नही है, इस विशाल देश का सपूर्ण क्षेत्रफल जेल बना हुआ है। इसे अपने-आपको समझने के लिए अभी बहुत-सी अग्नि-परीक्षाओ मे से होकर गुजरना है ।

तो भी, मै बहुत ज्यादा इच्छुक हू कि आप कृपया अपने निर्णय पर फिर से विचार करेगे । विश्व-इतिहास के आपके सूक्ष्म विश्लेषण और भारतीय सघर्ष की पृष्ठभूमि ने आपको राजनैतिक विचारको की प्रथम पक्ति मे ला खडा किया है । आज हम एक जबरदस्त उथल-पुथल मे से गुजर रहे है । यद्यपि फूट और दमन के बादल हमारे दिलो मे अक्सर निराशा पैदा करते रहते है, फिर भी हम वर्तमान स्थिति को, जो हो चुका सो हो चुका मानकर, स्वीकार नही कर सकते और उसके सामने चुपचाप सिर नही झुका सकते । परिवर्तन निश्चित आयेगा, लेकिन वह आयेगा

मानव-जाति के प्रयत्न से ही, जव वह सत्ता, सपत्ति और प्रतिष्ठा की तीन विनाशकारी शक्तियो से प्रेरित होना वद कर देगी ।

जहातक भारत की स्थिति का सवाल है और खास करके हिन्दुओ के भविष्य का, कुछ वातो मे आप और मेरे जैसे विचार के लोगो के वीच सच्चा मतभेद हो सकता है । परन्तु हम सव विश्वास करते हैं कि भारत ने युग-युग से मानव-आत्मा की स्वतन्त्रता का एक अमर सन्देश दिया है और वही सभ्यता को विनाश से वचा सकता है और उसे ज्यादा उच्च एव उदात्त स्तर की ओर ले जा सकता है । जव आप मुक्त हो और जव आप चाहे—मैं इसके लिए समय की कोई अवधि नही रखता—मैं चाहूगा कि आप हमारे लिए कमला-व्याख्यान-माला के माध्यम से भारत के घटनापूर्ण इतिहास का एक निष्पक्ष अवलोकन प्रस्तुत करे । यह भी वतावे कि उसकी शक्ति और दुर्वलता के कारण क्या हे, तथा यह भी कि उन अमर मूल्यो की स्थापना मे उसने क्या भाग लिया हे, जिनको राज-नैतिक पराधीनता भी नष्ट नही कर सकी हे । साथ ही उन शर्तो को भी वताइये, जो उसे पूरी करनी ही चाहिए अगर उसे स्वाधीनता तथा आत्म-सम्मान का जीवन जीना है । इस नाजुक समय मे आप उन इने-गिने आदमियो मे से हैं, जो दलगत संकीर्ण विचारो से ऊपर उठ सकते हैं, भिन्न-भिन्न दृष्टि-विन्दुओ को समझ सकते हैं और उस वर्तमान सभ्यता के गिरते भवन के ढेरो मे से उस भावी भारत का चित्र खीच सकते हैं जिसमे रहना उपयुक्त है ।

३२७. जयप्रकाश नारायण की ओर से

देवली नजरबंद कैंप
देवली, राजपूताना
७ दिसम्बर १९४१

प्रिय भाई,

आपका हार्दिक अभिवादन !

[1]......जिस समय देश को आपके मार्ग-दर्शन की सबसे ज्यादा जरूरत है, उस समय आपकी रिहाई से मुझे हार्दिक प्रसन्नता है ।

....[2]

आपको नरेन्द्रदेव के स्वास्थ्य के बारे में पता चल गया होगा। उनमें सबसे बड़ा दोष यह है कि वह अपनी सभाल आप नही कर सकते और मुझे भय है कि अगर उनकी ठीक-ठीक देखभाल न की गई तो कही वह हमेशा के लिए रोगी न हो जाय । जिस चीज की उन्हे सबसे ज्यादा जरूरत है, वह दवाइया नही, बल्कि किसी उचित जगह पर लबा आराम है । यू पी या उत्तर भारत मे कोई भी स्थान उनके लिए उपयुक्त नही होगा । महाराष्ट्र के कुछ जिले, जैसे सतारा, या उससे भी आगे दक्षिण मे वेल्लारी, अनन्तपुर उनके लिए ठीक हो सकते है । गुजरात भी उनके लिए अनुकूल हो सकता है । उन्हींपर छोडा गया तो मुझे निश्चय है वह उत्तर प्रदेश में ही कही पडे होगे, या बहुत हुआ तो श्रीप्रकाश बनारस मे उन्हे अपने सेवाश्रम मे ले जा सकते है । जिसे हम सकोच कहते है, वह उन्हे अपने अनगिनत मित्रो मे से किसीसे भी अपने लिए कुछ करने को कहने नही देता । इसलिए मैं आपको लिख रहा हू कि आप इस मामले मे खास रुचि ले और उन्हे किसी उपयुक्त स्थान के लिए लदवा ही दे । आप यह चीज उनकी इच्छा पर हर्गिज न छोडे । इस मामले मे आप उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करे, जैसा बच्चे के साथ किया जाता है । आप बापू से भी इसमे सलाह ले सकते है, क्योंकि वह नरेन्द्रदेव के स्वास्थ्य के बारे मे गहरी दिलचस्पी रख रहे है ।

---

[1] [2] यहा का कुछ भाग सेंसर ने काट दिया है ।

मै अब ठीक हू और धीरे-धीरे ताकत आ रही है। सेठजी भी ठीक है और आपको अभिवादन भेज रहे है। गौतम मलेरिया मे पडा है और अस्पताल मे है। दूसरे सब मित्र मजे मे है।

आपका,
जयप्रकाश

देवली नजरबद कप
सेन्सर किया और मजूर किया।
सुपरिटेंडेंट

३२८. आर. अच्युतन् की ओर से

सेन्ट्रल जेल,
राजमुंद्री
८ दिसम्बर १९४१

प्रिय पडितजी,

आपकी रिहाई की वेला मे हम आपको अपनी बधाइया और प्रेम भेजते है। इस प्रात के हम सब नजरबन्द विद्यार्थी है और हमारे दिलो में आपको अपनी बधाइया भेजने की तीव्र इच्छा है, क्योंकि आप हमेशा तरुणो के आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते है। पडितजी, हमारा प्रेम और आदर से भरा प्रणाम स्वीकार कीजिये। इस जेल से हम आपको सिर्फ यह पत्र ही भेज सकते है।

कामना करते है, जिससे आप इस देश का अभीष्ट लक्ष्य की ओर नेतृत्व करें ।

पडित जवाहरलाल नेहरू, सादर आपका,
इलाहाबाद । आर. अच्युतन्

नोट--

सेन्सर यह ध्यान रखे कि यह कोई राजनैतिक पत्र नही है, लेकिन यह एक ऐसा पत्र है, जिसमें हमारे उस नेता का हार्दिक अभिवादन है, जिसे हम प्यार करते है, जिसका आदर करते है और जिसके प्रशंसक है ।

सेन्सर किया ८।१२ आर अच्युतन्

३२९. सरोजिनी नायडू की ओर से

हैदराबाद (दक्षिण),
९ दिसम्बर १९४१

मेरे प्यारे जवाहर,

जेल से तुम्हारा सुन्दर पत्र और उससे भी सुन्दर छूटने के बाद का तुम्हारा वक्तव्य मेरी अशात आत्मा को बहुत ही प्रेरणाप्रद और आनददायक लगा । मै तुम्हे पहले नही लिख सकी, पर उम्मीद है, तुम्हे मेरा स्वागत का तार मिल गया होगा (क्या वह बडे दिन की छुट्टियो के लिए है ?) । मेरे जीवन मे दु ख की वैसे ही कमी न थी, पर पिछले तीन महीने मैने सबसे अधिक यातना के बिताये है, किंतु निजी दु ख और पीडा आखिर निजी और व्यक्तिगत ही है । यह काल उसके लिए और उसके साथ-साथ मेरे लिए तकलीफ का काल रहा है, जो सचमुच धीरे-धीरे तिल-तिलकर मौत की ओर बढती रही है । फिर भी यह एक प्रकार से आध्यात्मिक विकास और प्रेरणा का काल भी रहा है—हम सबके लिए, सबधियो तथा मित्रो के लिए, और उन अजनबियो के लिए भी, जिन्हे मृत्यु-शैया पर पडी बहादुर लडकी को थोडी देर के लिए भी देखने के लिए हमारे यहा आने का अवसर मिला है—उस लडकी को देखने का, जो कि अक्षरश शव-मात्र रह गई है, और केवल कहने को ही जीवित है । आज मै सोचती हू, आशा करती हू और प्रार्थना करती हू कि उसकी इस तीव्र वेदना की मर्मभेदी

यात्रा का अत आ गया है । वेवे उसका दुवला ठडा हाथ पकडे उसके पास बैठी है । बावा उसके कष्ट को देखते रहने की व्यथा को न सह सकने के कारण बाहर बैठा है । मै जो दिन-रात उसकी सेवा-सुश्रूषा करती रही हू, तुम्हे पत्र लिख रही हू, तुम्हे जिन्हे मै इतना प्यार करती हू, क्योकि तुम्हे लिखने और उसकी अनुभूतिमात्र से ही मुझे सात्वना मिलती है   मानव की आत्मा को शारीरिक कष्टो पर ऐसी सम्पूर्ण विजय प्राप्त करते मैने पहले कभी नही देखा—मृत्यु की प्रक्रिया मे ऐसी शालीनता और शिष्टता तथा साहस और सहनशीलता मैने पहले कभी नही देखी । काश, तुम एवा से मिल पाते ! अब भी अपनी तेज चलती हुई सास पर काबू पाकर जव भी वह एकाध शब्द बोल पाती है, तो यही कहती है, "मै चाहती हू कि जवाहर-लाल मुझे मिल पाते । वह कैसे है ? तुम उन्हे लिखो तो उन्हे मेरा हाल-चाल पूछने के लिए धन्यवाद लिख देना । "

शायद अध्यक्ष शीघ्र ही कार्यकारिणी और काग्रेस महासभा की बैठके बुलायेगे । आशा है, मै उनमे शामिल हो सकूगी । महत्त्वपूर्ण समस्याओ के वारे मे फैसला होना है, पर जैसा तुम जानते हो और मै जानती हू, फैसला केवल एक ही हो सकता है । कोई और फैसला न तो सच्चा ही होगा और न हमारे आदर्शो और देश के प्रति वफादारी का ही ।

सप्रेम तुम्हारी,
सरोजिनी

३३०. फील्ड मार्शल ए. पी. वावेल की ओर से

कमाण्डर-इन-चीफ इन इडिया
नई दिल्ली
२८ दिसम्बर १९४१

प्रिय महोदय,

हाल ही मे जव मै चुगकिग मे था तो मैडम च्याग काई-शेक ने मुझसे कहा था कि हिदुस्तान लौटने पर मै उनका अभिवादन आपको पहुचा दू । वह खूब स्वस्थ है और प्रफुल्लित दिखाई पडती है । मै उनसे पहली वार ही मिला और बहुत ही प्रभावित हुआ ।

आप कृपया इसे एक ऐसे निजी व्यक्ति की चिट्ठी ही समझे जिसने

आप तक यह सन्देश पहुचाने का वचन दिया था। उसे हिंदुस्तान के सेनापति का पत्र न समझे।

आपका,
ए. पी. वावेल

३३१. जेड. ए अहमद की ओर से

नजरबन्दी कैम्प,
देवली, राजपूताना
१० जनवरी १९४२

प्रिय पडितजी,

जबसे आप जेल से छूटे है तबसे मै आपको खत लिखने की सोच रहा हू। लेकिन यह जानते हुए कि आप बहुत-से अहम मामलो में घिरे होगे, मै यह नही चाहता था कि आपको मिलनेवाले अनगिनत बेकार खतो मे, जिसमे से ज्यादातर के जवाब देने की आप पूरी कोशिश करते है, अपना एक खत और बढा दू।

लेकिन आज जब मै बिस्तर पर लेटा हुआ था, बीती हुई बाते मेरे दिमाग मे चक्कर लगाने लगी। मैने यह महसूस किया कि पिछले पाच या छ बरसो मे जो कुछ भी मैने किया है उस सबके पीछे बुनियाद के तौर पर जो मुझे एक चीज दिखाई दी, वह थी आपके साथ मेरा गहरा ताल्लुक। मुझे यह महसूस करके एक खुशी-भरा अचरज हुआ कि आपने मेरे ऊपर कितना गहरा असर डाला है, न सिर्फ सियासी सवालो को सोचने के मेरे तरीके पर, बल्कि रोजमर्रा की जिदगी मे होनेवाली मामूली घटनाओ के बारे मे मेरी प्रतिक्रियाओ पर भी। इस खयाल ने मुझे फौरन आपको खत लिखने के लिए बढावा दिया, लेकिन मै समझ नही पा रहा कि आपको लिखू तो क्या लिखू। और फिर इस कैम्प के कटीले तारो के भीतर से मै आपको लिख भी क्या सकता हू! हमारा यह कैम्प राजपूताना के रेगिस्तान के बीचो-बीच है। यहा से नजदीक-से-नजदीक रेलवे स्टेशन भी कोई ७० मील दूर है। हम लोग इतने अलग है कि जिदा मर्द-औरतो की बाहरी दुनिया और उसकी हलचले और रफ्तार यह सब हम लोगो के लिए एक अधभूले ख्वाब की तरह है। मुझे बेहद खुशी है कि हम लोग अब यहा से अपने-अपने

दूसरे ही तरीके से लिखता, यानी मै कुछ उन पहलुओ पर जोर देता जिनको आपने छुआ भी नही है। आपके विवरण में, कुछ हाल की घटनाए और खास तौर पर दुनिया से ताल्लुक रखनेवाले कुछ पहलू, जिनका असर हिदुस्तान पर पडता है, नजरन्दाज हो गये है। मेरे खयाल से असल में जिन्ना और मुस्लिम लीग के रवैये मे यह ख्वाहिश खास तौर पर है कि बुनियादी तब्दीलिया न होने दी जाय या हिदुस्तान को लोकतन्त्र न बनने दिया जाय, इसलिए नही कि उसमें हिन्दुओ की अक्सरियत है, बल्कि इसलिए कि बुनियादी तत्त्व सामन्ती हको वगैरा का खात्मा कर देगे। आपके खत में उनका इशारा है। सविधान-सभा का सारा खयाल यह है कि उन तत्त्वो और उनके जजबातो को आम जनता के सामने लाया जाय, जो फिरकेवाराना मसले या दूसरे मसलो को दीन के तबके के नजरिये से नही देखेगे, क्योकि इसी नजरिये ने यह रुकावट पैदा की है। खुद मुझे तो मसले का कोई हल दिखाई नही देता, चाहे हम कितनी ही कोशिश करे, जबतक कि तीसरी जमात (अग्रेजो) को नही हटा दिया जाता। जरूरी तौर पर हम किसी हल के नजदीक तब पहुचेगे जब हम हालात से मजबूर होकर समझौता करेगे। दूसरा रास्ता होगा बडे पैमाने पर जद्दोजहद करना। यह तभी हो सकता है, जब यह साफ हो जाय कि दोनो मे से कोई भी तबका अग्रेजो की या और किसी परदेसी ताकत की मदद नही ले सकता।

कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनो के लिए (दूसरो के लिए भी) सही रास्ता यह होता कि सिर्फ एक बात को मजूर कर लेते और बाकी सब फिरको को, जिनमे आप चाहे तो पाकिस्तान भी शामिल किया जा सकता है, छोड दिया जाता। वह एक चीज यह है कि परदेसी ताकत और उनकी दखलदाजी के खिलाफ सारी ताकते एक हो जाय। एक बार यह परदेसी ताकत निकल जाती है तो हम अपने ही पैरो पर खडे हो जाते है और या तो समझौता कर लेते है या लड लेते है। मुमकिन यही होगा कि तब हम लोग समझौता कर लेगे, क्योकि सचमुच की लडाई की बात किसी-को भी अच्छी नही लगेगी।

जिन्ना गाडी को घोडे के आगे रख देते है। वह कहते है कि जबतक उनकी शर्ते न मानी जाय, कोई सियासी तरक्की नही हो सकती। मौजूदा

हालात मे इसका मतलब है तरक्की को रोक देना। ठीक रास्ता यह कहना होगा मै पाकिस्तान और उसके साथ लगी हुई और सब बातो पर अटल हू और उससे कम पर कभी सतोष नही करूगा। लेकिन मै दूसरे लोगो के साथ परदेसी ताकत को निकालने के काम मे मिलने के लिए बिल्कुल तैयार हू। जरूरी हुआ तो बाद मे मै अपने हको के लिए लड लूगा। यह साफ है कि वह मौजूदा हालात को बनाये रखना चाहते है और इस तरह उनकी हालत ऐसी हो जाती है कि उसका कोई बचाव नही हो सकता।

खुशकिस्मती से दुनिया बदल रही है और हमारे कठिन-से-कठिन मसले एक मानी मे घटनाओ से टकराकर अपने-आप हल हो रहे है। तह-जीबी नजरिया सही और मुनासिब तो है, लेकिन उसमे वक्त लगता है और आजकल घटनाए तेजी से हमे छोडती चली जाती है और अपने साथ बडी-बडी तब्दीलिया लाती है। मेरा खयाल है कि इन तब्दीलियो को देख लेने मे हमे बहुत अर्सा नही लगेगा।

मै नही जानता, काग्रेस वर्किंग कमिटी के मेम्बर की हैसियत से आपके लिए यह सुझाव देना कहातक ठीक है कि जिन्ना और लीग के साथ आपके बताये हुए ढग पर मेल किया जाय। इससे बेशक गडबड और गलतफहमी पैदा होगी। क्या यह बेहतर नही होगा कि आप मौलाना आजाद से मश-विरा कर ले? वह कल यहा आ रहे है और तीन-चार दिन ठहरेगे। आप चाहे तो आपका टाइप किया हुआ मसाला उन्हे दे दू।

आपका,
जवाहरलाल

३३३. महात्मा गांधी की ओर से

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.
४ मार्च १९४२

चि जवाहरलाल,

तुम्हारा खत कल मिला। आशा है कि इस खत के अक्षर पढने मे मुश्किल नही होगी।

इदु की शादी के बारे मे मेरी तो पक्की राय है कि बाहर से किसीको न बुलाया जाय। इलाहाबाद मे जो है उनमे से साक्षी के रूप मे भले कुछ

लोगों को बुलाया जाय। कम पत्रिका जितनी चाहे उतनी भेजो। सबसे आशी-र्वाद मगाओ। लेकिन पत्रिका मे साफ लिखना कि खासकर किसीको आने की तकलीफ नही दी गई है। अगर एक को भी बुलावे तो किसीको छोड नही सकेंगे। उर्दू इतनी सादगी तक जाना चाहती है या नही, यह सोचना होगा। तुम भी शायद इतनी सादगी तक जाना पसद न करो तो मेरी राय फेक देना। उर्दु के बारे में तुम्हारा निवेदन मैने देखा। अच्छा लगा। मेरे पर रोज खत आते है। कई तो बीभत्स है। सब फाड डाले। इन सबके उत्तर मे मैने एक टिप्पणी हरिजन के लिए भेजी है, उसकी नकल इसके साथ रखता हू। टिप्पणी लिखी गई सोमवार को, कल से मुसलमानो के खत शुरू हुए है। उनमे हमले का मुद्दा सप्रूवाला किस्सा है। ऐसा तो चलता ही रहेगा।

देशी राज्य के बारे में मै हो सकेगा वह करूगा। पैसे की कठिनाई बराबर पडेगी। जमनालालजी ने सब बोझ उठा लिया था। किस तरह, वह निश्चित नही हुआ था। अब मै सोच रहा हू कैसे पैसे पैदा किये जाय। अख-बार के बारे मे पट्टाभि से मशवरा कर रहा हू। बलवतराय नही आ सकेगे। उससे बहुत फरक नही पडेगा। यहा से मदद मिलती रहेगी, यहा आओगे तब दूसरी बाते करेंगे। मेनन आज बम्बई जाते है—वहा का काम पूरा करने के लिए।

च्याग काई शेक का बयान देखा था, अच्छा था। तुम्हारी इजाजत तो आई, लेकिन मैने सोचा अब उस खत को प्रकाशित करने की आवश्यकता नही रही। बात पुरानी हो गई।

भागीरथी आ गई है, चद्रसिह को रखना कठिन तो है। बहुत तामसी है, जहन कमजोर है। थोडी-सी बात मे लड बैठते है। किसीको पीटे तो मुझे आश्चर्य नही होगा। मेहनती तो है। देखता हू। तुम चिता मत करना। मेरे खत पढने मे कठिनाई आवे तो मै और भी साफ अक्षर लिखने की कोशिश करूगा। लेकिन हमारा धर्म है कि हम एक दूसरे को राष्ट्र-भाषा मे लिखते ही जाय। कुछ अर्से मे इस तरह लिखने मे हम ज्यादा आसानी महसूस करेंगे। गरीबो को बहुत लाभ होगा।

बापू के आशीर्वाद

३३४. अवुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता
८ मार्च १९४२

प्रिय जवाहरलाल,

आपका दूसरा खत मिलने से पहले मै आपके खत का जवाव दे चुका था । पहले मैने सोचा था कि मै दो या तीन दिन के लिए वर्धा जा सकता हू, लेकिन वागल की नाजुक हालत ने मुझे रोक लिया । सत्याग्रह से ताल्लुक रखनेवाले कुछ पेचीदा सवाल भी थे, जिन्हे जाने से पहले हल करना जरूरी था । अव काग्रेस की वर्किंग की कमेटी वैठक १७ तारीख को हो रही है । मैं ११ या १२ तारीख को वर्धा के लिए चलने का इरादा कर रहा हू । अगर आप भी १७ तारीख से दो दिन पहले वर्धा पहुच सके तो फायदेमद होगा । मै तार से अपनी रवानगी की इत्तिला दूगा ।

वादशाह खान ने, वर्धा मे जैसा वादा किया गया था, उसके मुताविक वयान शाया करने के लिए मुझे कई खत लिखे । मामले के सव पहलुओ पर गौर करने के वाद मुझे यह कवूल करना पडता है कि उनकी ख्वाहिश पूरी करने के अलावा और कोई चारा नही था । इस लिहाज से अखवारो को एक वयान दे दिया गया है, जिसे शायद आपने देखा होगा । मै नही जानता कि इस वीच उनके साथ आपकी खतो-कितावत हुई या नही ।

चार या पाच दिन पहले वर्लिन से सुभापवावू का एक वयान रेडियो से व्राडकास्ट हुआ था । दूसरे दिन इस वात का ऐलान किया गया कि यह वयान रिकार्ड कर लिया गया है और अव इसे सुभापवावू की ही आवाज मे सुना जा सकता है । मैंने सुना था । वह सुभापवावू की आवाज मे था । मेरे खयाल से शायद रिकार्ड नही था, वल्कि वह खुद वोल रहे थे । लेकिन तोकियो से उनका जो वयान व्राडकास्ट हुआ वह वाकई रिकार्ड था । विजली से रिकार्ड की चाल की आवाज साफ सुनाई पड रही थी ।

यहा फारवर्ड ब्लॉक मिनिस्टर सतोष और वनर्जी वहुत परेशान है । वे कहते है कि फारवर्ड ब्लॉक से उनका वहुत दूर का भी ताल्लुक नही है ।

पडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहावाद ।

आपका,
अ. क. आजाद

३३५ मैडम च्यांग काई-शेक की ओर से

जनरलिस्मो का सदर मुकाम,
चुंगकिंग, चीन,
१३ मार्च १९४२

प्रिय श्री नेहरू,

कुनमिंग होते हुए हमारे हिंदुस्तान से चीन लौटने के बाद जनरलिस्मो ने सोमवार को पार्टी के सदर मुकाम में जो रिपोर्ट दी वह आपके पास भेज रही हू। उस दिन, मैं समझती हू, ९ मार्च थी। जनरलिस्मो का भाषण समाचार-पत्रो मे छपने के लिए नही भेजा जायगा, बल्कि उसे पर्चे की शकल में छपवाकर प्रान्तीय अध्यक्षों, सरकारी सस्थाओ इत्यादि के पास भेजा जायगा। उसका अग्रेजी अनुवाद, जिसकी प्रति मैं आपके पास भेज रही हू, तार द्वारा वाशिंगटन और लन्दन-स्थित दूतावासो मे इस हिदायत के साथ भेजा जा रहा है कि स्वय हमारे राजदूत उसे रूजवेल्ट और चर्चिल को दे आयें। जनरलिस्मो और मैं दोनो ही यह अनुभव करते है कि इस बात का श्रेय हमारे हिंदुस्तानी मित्रो पर है कि हम सत्य को जैसा देखते है वैसा ही कहते है। फिर भी चूकि हम ब्रिटिश सरकार के मेहमान थे, इसलिए नम्रता का तकाजा है कि हम उस सरकार के इस दावे की खुलकर आलोचना न करे कि हिंदुस्तान को असली शक्ति इसलिए नही दी जा सकती कि वहा के निवासियो मे एकता की कमी है। मैंने आज के अखबारो मे देखा है कि 'लन्दन क्रॉनिकल' ने तो इसे अपने पक्ष का एक पूरा तर्क बना लिया है। इसे पढकर मुझे बडा गुस्सा आया।

अखबारो से मुझे पता चलता है कि क्रिप्स बहुत-से प्रस्ताव लेकर हिंदुस्तान आ रहे है। इस यात्रा के बारे मे जब 'रायटर्स' ने आपकी प्रतिक्रिया पूछी तब आपने जो तटस्थ उत्तर दिया, उसे भी मैंने पढा है। मेरे प्रिय मित्र, कौन कहता है कि आप कूटनीतिज्ञ नही है ?

कुनमिंग पहुचने के अगले दिन अर्थात २२ फरवरी को—जैसा कि मेरे रेकार्ड से मालूम होता है—मैंने आपको एक पत्र लिखा था। चूकि मुझे उसका उत्तर नही मिला था, इसलिए मैंने कलकत्ता मे चीन के कौसल जनरल को तार देकर पूछा कि वह पत्र आप तक पहुचा दिया गया या

नही और पहुचाया गया तो कब ? उनके पास से अभी-अभी उत्तर आया है कि उन्हे वह पत्र ५ मार्च को मिला था और ६ मार्च को उन्होने उसे विशेष दूत द्वारा आपके पास भेज दिया था। हे प्रभो, समझ मे नही आता कि पत्रो के पहुचने मे इतनी देर क्यो लगती है ! पता नही, आपको यह पत्र मिलेगा या नही और मिलेगा तो कब ? इसे मै एग्ररोनौटिकल कमीशन के जनरल माओ के जरिये भेज रही हू और उन्हे मैने हिदायत दी है कि वह स्वय जाकर इसे कौसल जनरल को दे और फौरन आप तक पहुचाने को कहे। अभी कुछ ही क्षण हुए, मुझे मालम हुआ है कि जनरल माओ कलकत्ता जा रहे है।

यह पत्र मै आपको हुयागशान के उस मकान मे बैठी हुई लिख रही हू, जिसमे आप हमसे मिलने के लिए आये थे। आपको याद होगा कि यह मकान चुगकिग से नदी के पार दक्षिणी तट पर बना हुआ है। यहा हम कल रात थोडे एकान्त मे रहने के लिए आये है। जबसे हम स्वदेश लौटे है, काम और लोगो का आना-जाना बहुत बढ गया है। शहर मे तो सब जगह मनुष्यो की हलचल-ही-हलचल का अनुभव होता है, हवा मे, गलियो मे यहातक कि अपने पढने के कमरे के एकान्त मे भी। विचारो की अदृश्य लहरे एक-दूसरे से बार-बार टकराकर चित्त की शान्ति को भग करती है और उनकी इस अस्थिरता से कोई बचाव नही है। मै समझती हू कि सार्वजनिक रूप से अभिव्यक्त होनेवाले इस तथ्य का कोई-न-कोई आत्मिक स्पष्टीकरण अवश्य होगा। जो हो, यहा पहाडियो के बीच अतिशय जनसख्या के दम घोटनेवाले वातावरण से राहत महसूस होती है। मै हिदुस्तान को प्यार करती हू, किन्तु दिल्ली मे सफेद मकानो की चमक ने मुझे करीब-करीब अन्धा बना दिया था। यहा चुगकिग मे हमेशा कुहरा ही छाया रहता है। पहाडो के क्षितिज पर चारो ओर से आये हुए धुधले कुहरे मे सुकोमलता और करुणा का अनुभव होता है और जो लोग चमकदार धूप के अभ्यासी नही है उन्हे पहाडियो के पास सब्जियो के हरे-भरे खेत (याद है न आपको) वड़े प्रिय मालूम देते है। आपको याद होगा कि हिदुस्तान मे जव कभी मै घर से वाहर निकलती थी तभी मेरे सिर मे कितना जवर्दस्त दर्द होने लगता था। फिर भी मुझे इस यात्रा मे वडा आनन्द आया और मै इसे

किसी भी कीमत पर खोना पसन्द नही कर सकती थी ।

मै अपने सेक्रेटरी को टेलीफोन करके व्यर्थ ही इस बात की चेष्टा कर रही हू कि वह कुछ ऐसी चीजे तैयार करा दे जिन्हे मै जनरल माओ के द्वारा नैन के लिए भेज सकू । अगर मुझे सफलता मिल गई तब तो ठीक है, नही तो नैन से कह दीजियेगा कि मै ये चीजें उसके पास अगले दूत के द्वारा भेजूगी । मिस चाऊ शायद आनन्द मनाने गई है (अगर चुगकिंग के खडहरो मे यह सम्भव हो तो!)

मेरे पत्रो के डिब्बे मे सयोगवश क्रिप्स का एक पत्र है, जो उन्होने ५ मार्च को मेरे घर लौटने के फौरन बाद भेजा था । मै उसे आपके पास यह बताने के लिए भेज रही हू कि जब आप जेल मे थे तब हमें आपके लिए कितनी तीव्र अनुभूति होती थी । लेकिन इसके बिना भी आपको हमारी भावना का अनुमान होना ही चाहिए ।

जनरलसिमो हिंदुस्तान की स्थिति के बारे मे रुजवेल्ट को तार देते रहे है । उनके पास से जो ताजा समाचार मिला है वह यह है कि रुजवेल्ट ने शान्ति-सम्मेलन के पास तार भेजा है कि १ हिंदुस्तान का प्रतिनिधि कांग्रेस द्वारा चुना जाना चाहिए और वह सचमुच ही राष्ट्रीय हिंदुस्तान का प्रतिनिधि होना चाहिए, २ उनका यह विचार है कि हिन्दुस्तान की समस्या का हल शायद हिंदुस्तान को हिन्दू और मुस्लिम दो हिस्सो मे बाटने पर मिल जाय । मैंने और जनरलसिमो ने भी मेरे भाई टी वी को तार दिया है कि दूसरी बात बिल्कुल गलत है और उसपर एक क्षण के लिए भी विचार नही किया जाना चाहिए । हिंदुस्तान भी उतना ही अविभाज्य है, जितना चीन । वहा के लोगो मे धार्मिक मतभेद होने का यह मतलब नही है कि अगर उन्हे अपने मतभेदो को बिना किसी तीसरे दल के हस्तक्षेप या सहायता के दूर करने का अवसर दिया जाय तो वे आपस मे सहमत नही हो सकते ।

जनरलसिमो मुझसे कह रहे है कि मै लिखना बन्द कर दू, क्योकि जनरल मेगरूडर रुजवेल्ट का सदेश लेकर परामर्श करने आये है । मुझे एक क्षण के लिए भी समय नही मिलता कि मै आपको दिल खोलकर पत्र लिख सकू । सदा ही मुश्किल काम लगे रहते है और मै कुछ असम्बद्ध,

निष्कर्ष-विहीन बाते घसीटकर ही रह जाती हू। लेकिन मुझसे बहुत झुझलाय नही। मेरे पास सूत्रबद्ध होकर सोचने के लिए वक्त नही रहा है और शायद इससे कोई अन्तर भी नही पडता, क्योकि निश्चय ही मै गाधी-जी की तरह कोई ऐसी कार्य-प्रणाली सोचने की प्रेरणा नही दे सकती जो 'कठोर चिन्तन' मात्र से ग्रहण योग्य बन जाय।

मेरे दोस्त, 'आवारा' को—सलाम।

मे. सु. च्यां.

३३६. सर स्टैफर्ड क्रिप्स की ओर से

३, क्वीन विक्टोरिया रोड,
नई दिल्ली
अप्रैल १९४२

व्यक्तिगत और निजी

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे इजाजत दीजिये कि मै आपसे अन्तिम बार अपील करू। आपपर ही निश्चय का भारी बोझ है—एक ऐसा निश्चय, जिसका हम दोनो के राष्ट्रो के सबधो पर बडा गहरा प्रभाव पड़ेगा, इतना गहरा कि उसकी कल्पना तक अद्भुत है।

मै अपने क्षेत्र मे और आप अपने मे अपने-अपने देश की जनता को मैत्री तथा सहयोग की ओर ले चल सकते है और जरूर ले चलेगे।

जो अवसर आज है, वह कभी नही आयेगा। इसके असफल होने पर दूसरी युक्तिया सामने आयेगी तो अवश्य, किन्तु दोनो देशो की जनता की मित्रता को मजबूत बनाने का इतना अच्छा अवसर फिर कभी न आयेगा।

केवल योग्य नेतृत्व ही—ऐसा जैसा कि आपका है—सफलता प्राप्त कर सकता है। यही वह क्षण है जब एक महान नेता को उन सारे खतरो और कठिनाइयो का, जो कि मै जानता हू, सामना करने मे अद्वितीय साहस दिखलाते हुए वाछित ध्येय तक पहुचना है।

मै आपके गुणो और आपकी क्षमता को जानता हू और मै आपसे अनुरोध करता हू कि अब आप उनको प्रयोग मे लाये।

आपका,
स्टैफर्ड

३३७ फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट के नाम

नई दिल्ली
१२ अप्रैल १९४२

प्रिय राष्ट्रपति महोदय,

मै आपको लिखने की हिम्मत कर रहा हू, क्योंकि मुझे मालूम है कि हिदुस्तान की मौजूदा हालत मे और युद्ध पर उसकी प्रतिक्रियाओ मे आपकी गहरी दिलचस्पी है। ब्रिटिश सरकार और हिदुस्तानी जनता के बीच समझौता कराने मे सर स्टैफर्ड क्रिप्स के मिशन की नाकामयाबी से आपको जरूर दुःख हुआ होगा, जैसा कि हमे भी हुआ है। आप जानते है कि हमने हिदुस्तान की आजादी के लिए लम्बे अर्से से जद्दोजहद की है, लेकिन मौजूदा खतरे मे हमारी सब बातो से ज्यादा इस बात की इच्छा हुई कि हमे हमलावरो के खिलाफ वास्तविक राष्ट्रीय और लोकप्रिय प्रतिकार सगठित करने का अवसर दिया जाना चाहिए। हमे पूरा यकीन था कि ऐसा करने का सही तरीका इन लोगो को आजादी देना और इनसे उनकी रक्षा करने के लिए कहना होता। इससे लाखो दिलो मे एक चिनगारी पैदा हो जाती, जिससे प्रतिकार की ऐसी जबरदस्त आग उठती, जिसका कोई भी हमलावर कामयाबी से मुकाबला नही कर सकता था।

जैसा हम चाहते थे वैसा न होता और लडाई के काम के लिए यह जरूरी न समझा जाता तो कम-से-कम चीज, जिसे हम बहुत जरूरी समझते है, यह थी कि आज एक सच्ची राष्ट्रीय सरकार बना दी जाय और उसे लोकप्रिय बुनियाद पर प्रतिकार सगठित करने के लिए सत्ता और जिम्मेदारी सौप दी जाय। बदकिस्मती से ब्रिटिश सरकार ने इसे भी ठीक या मुनासिब नही समझा। इन बातचीतो मे, जो बदकिस्मती से फिलहाल नाकामयाब रही, क्या-क्या हुआ, उसका ब्यौरा बताकर मै आपको तकलीफ देना नही चाहता। बेशक आपके प्रतिनिधियो ने यहा से आपको सब खबरे दी होगी। मै इतना ही कहना चाहता हू कि हिदुस्तान की एकता के लिए भरसक कोशिश करने और आजादी और लोकतत्र के बडे काम के साथ सबद्ध होने के लिए हम कितने चिन्तित और उत्सुक थे और अब भी है। हमारे लिए यह दुःखद घटना है कि इस मामले मे हम जिस ढग से और जितनी मात्रा मे करना

चाहते है उतना नही कर सकते। अपन देश की रक्षा मे हर चीज की बाजी लगा देने को, अपनी पूरी ताकत और प्राणशक्ति के साथ लडने को और आक्रमणकारी को हटाने और स्वदेश के लिए आजादी हासिल करने के लिए किसी भी कीमत और किसी भी बलिदान को नाचीज समझने की हमारी इच्छा थी।

हमारे मौजूदा जरिये सीमित हो सकते है, क्योकि हिदुस्तान में ब्रिटिश सरकार ने पहले भी जो नीति अख्तियार की उससे हमारे देश का उद्योगीकरण रुक गया। हम बिना हथियार की प्रजा है। लेकिन हमारी युद्ध-शक्ति बहुत बडी है, हमारी जनशक्ति विशाल है और चीन की तरह हमारे बडे-बडे प्रदेशो से हमे मदद मिलती है। पूजी और मजदूरी के सहयोग से हमारा उत्पादन बहुत तेज किया जा सकता है। लेकिन इस सारी युद्ध-शक्ति का उपयोग पूरी तरह तभी किया जा सकता है जब देश की सरकार का जनता के साथ गहरा सबध हो और वह उसकी नुमाइन्दा हो। जिस सरकार का जनता से कोई सबध न हो उसे जनता की तरफ से सहयोग नही मिल सकता, जो बडा जरूरी है, कोई परदेसी सरकार तो वह सहयोग प्राप्त कर ही नही सकती, क्योकि जरूरी तौर से उसे कोई पसन्द नही करता और उसका कोई भरोसा नही करता। खतरे ने हमे घेर रखा है और कही हमला न हो जाय, इस डर की छाया से और उसके बाद होनेवाली भयकरता से, जैसी कि चीन मे जापानी हमले के बाद हुई थी, हमारा नजदीकी भविष्य अधेरे से भर गया है। सर स्टैफर्ड क्रिप्स के मिशन की नाकामयाबी ने हालात की मुश्किलो को और भी बढा दिया है और हमारे लोगो पर उसका उल्टा असर पडा है। लेकिन मुश्किले कुछ भी हो, हम उनका सामना अपनी पूरी हिम्मत और प्रतिकार के सकल्प के साथ करेगे। भले ही हमारी पसन्द का रास्ता हमारे लिए बन्द कर दिया जाय और हम हिदुस्तान के ब्रिटिश अधिकारियो की प्रवृत्तियो के साथ ही अपना सबध न रख सके, फिर भी हम जापानी या और किसी हमले के सामने न झुकने की पूरी कोशिश करेगे। हमने आजादी के लिए और एक पुराने हमले के खिलाफ इतने अर्से तक लडाई लडी है, इसलिए हमे किसी नये हमलावर के सामने सिर झुका देने से मरना ज्यादा पसद होगा।

हम कई बार ऐलान कर चुके है कि हमारी हमदर्दी फासिज्म के खिलाफ और लोकतंत्र तथा आजादी के हक में लडनेवाली ताकतो के साथ है। हमारे अपने देश मे आजादी होती तो हम इस हमदर्दी को सक्रिय क्रियाशीलता के रूप में बदल सकते थे।

जिस महान देश के आप सम्मानित अध्यक्ष है उसे हम अभिवादन और सफलता के लिए शुभकामनाए भेजते है। और राष्ट्रपति महोदय, आपपर तो सारी दुनिया में स्वतन्त्रता के हक में नेतृत्व के लिए लाखो की आखे लगी हुई है, इसलिए हम आपको विश्वास दिलाते है कि आपके प्रति हमारा बहुत आदर और लिहाज है।

आपका,

जवाहरलाल

राष्ट्रपति फ्रैंकलिन रूज़वेल्ट,
वाशिंगटन,
सयुक्त राज्य अमरीका

३३८ महात्मा गाधी की ओर से

सेवाग्राम,
वर्धा, सी. पी.,
१५ अप्रैल १९४२

चि. जवाहरलाल,

प्रोफेसर यहा आये है। उनसे सब सुना। तुम्हारा प्रेस इन्टरव्यू भी सुना। मै देखता हू कि हमारे विचारो मे तो भेद था ही, लेकिन अब अमल में हो रहा है। इस हालत मे वल्लभभाई वगैरा क्या करे ? तुम्हारी नीति को स्वीकार किया जाय तो कमिटी जैसी आज है ऐसे नही रहनी चाहिए।

ज्यो-ज्यो मै सोचता हू, मुझे लगता है कि तुम कुछ गलती कर रहे हो। अमरीकी लश्कर, चीनी लश्कर हिदुस्तान मे आवे और हम गुरिल्ला लडाई मे पडे, इसमे मै कुछ भी भला नही पाता हू।

मेरा धर्म है, मै तुम्हे सावधान करू।

इदु-फिरोज ठीक होगी।

बापू के आशीर्वाद

मैंने कल सुना कि उत्कल में फारवर्ड ब्लाकवाले हथियारबद है और कम्युनिस्ट गुरिल्ला लडाई के लिए। सत्य कितना है, मै नही जानता।

३३९. तुआन-शेग चिएन की .ओर से

नेशनल पेकिग यूनीवर्सिटी,
कुर्नमिग, चीन
१८ अप्रैल १९४२

प्रिय पंडित,

इस पत्र को लिखने की धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हू। आपको शायद उस व्यक्ति की याद होगी जो एक शाम, जब आप अगस्त सन् १९४१ में कुनमिग के उस बेढगे होटल डू लैक मे ठहरे हुए थे, सबसे अधिक बोलता रहा था और मै समझता हू कि सबसे ज्यादा उसीने सीखा भी था। वही आदमी अब आपको पत्र लिख रहा है। सच तो यह है कि अगर मुझे यह मालूम होता कि युद्ध के कारण आपको यहा की यात्रा को कम करना पडेगा और मै आपसे फिर नही मिल सकूगा तो उस शाम मै आपसे और भी अधिक प्रश्न करता। उस समय मै खुद पीपिल्स पोलिटिकल कौसिल के अधिवेशन मे भाग लेने के लिए चुगकिग जानेवाला था; लेकिन जब मै वहा पहुचा तब आप हिदुस्तान के लिए रवाना हो चुके थे।

आपको पत्र लिखने का विचार मेरे मन मे तबसे ही रहा है, लेकिन वह पूरा नही हो सका। इसका मुख्य कारण सेसर का भय था। स्थिति अब पहले से कुछ भिन्न है और मुझे विश्वास है कि हमारे कौसल जनरल आपके पास मेरा यह पत्र बिना किसी दुर्घटना के पहुचवा सकेगे।

अभी हाल मे समझौते की बातचीत के भग हो जाने से मुझे बडा दु ख हुआ है। अन्तिम विच्छेद की खबर मिलने से पहले मैंने प्रोफेसर लास्की को लिखा था—

"मै सर स्टैफर्ड क्रिप्स की जीवनवृत्ति और हिदुस्तानी स्थिति के विकास के समाचारो को बडी दिलचस्पी के साथ पढता रहा हू। एक तरह से दोनो एक-दूसरे से सबधित है। भारतीय समस्या का सतोषजनक हल अवश्य निकलना चाहिए और सर स्टैफर्ड से बढकर इसके लिए कोई दूसरा माध्यम नही हो सकता। अगर ब्रिटेन इस युद्ध को सफलतापूर्वक पार कर लेना

चाहता है तो ब्रिटिश शासन में सर स्टैफर्ड को निश्चय ही एक महत्वपूर्ण हिस्सा मिलना चाहिए। सर स्टैफर्ड के प्रति ब्रिटेन के शासक दल मे जो अरुचि की भावना है, उसे दूर करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सर स्टैफर्ड एक वृहदाकार डरहम की भूमिका अदा करें। यह बात मुझे कुछ-कुछ मालूम थी कि काग्रेस पूर्ण स्वतत्रता पर जोर दे रही है, इसलिए ब्रिटिश प्रस्ताव को जिस रूप मे सर स्टैफर्ड ने पहली बार सार्वजनिक रूप से घोषित किया था, उससे मुझे बडी निराशा हुई थी। मुझे ऐसा लगा था कि उसमे काग्रेस और सर स्टैफर्ड दोनो के साथ अन्याय हुआ था। काग्रेस के साथ इसलिए कि उसके कारण वह स्वतत्र सयुक्त हिदुस्तान प्राप्त करने से वचित रह जाती, सर स्टैफर्ड के साथ इसलिए कि वह उनकी जीवनवृत्ति को, जो ब्रिटेन के साथ इतनी निकटता के साथ सबद्ध है, यदि बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट नही कर देता तो कम-से-कम उनमें बाधाए अवश्य उत्पन्न कर देता। बाद के समाचारो से मुझे कुछ प्रसन्नता हुई है, लेकिन अब भी मेरा मन शकाओ से मुक्त नही है। मुझे ब्रिटेन के अधिकारी-वर्ग के उस रुख से कोई हमदर्दी नही है जो 'रायटर' की टीका-टिप्पणी को पढकर बहुत ही आसानी से समझी जा सकती है। मै अमरीकी प्रेस की टीका-टिप्पणी से भी सहमत नही हू, क्योकि वह ब्रिटिश द्वारा प्रेरित मालूम देती है। मुझे तो ऐसा लगता है कि मेरी अपनी सरकार भी सयुक्त रक्षा पर जोर देने की अपनी उत्कठा मे ब्रिटिश अधिकारियो के हाथ का खिलौना बन गई है। अगर बात ऐसी है तो मुझे उससे भी कोई सहानुभूति नही है। मुझे तो केवल यह आशा है कि सर स्टैफर्ड काग्रेस की माग के प्रति सदा सच्चे हृदय से सहानुभूति रखते आये है और यदि एक बार उन्होने ब्रिटिश मत्रिमडल के प्रस्ताव का समर्थन किया भी था तो केवल इस निश्चित विश्वास के साथ कि काग्रेस और भी अधिक के लिए दृढतापूर्वक हठ करेगी और वह उसकी मागो को अतत पूरी तरह से मनवाने का माध्यम बनने के लिए तैयार रहेगे।"

समझौते के भग होने के बाद आपने और सर स्टैफर्ड ने जो अनेक वक्तव्य दिये है उन्हे मैंने पढा है और मुझे उन प्रस्तावनाओ पर आश्चर्य हुआ है, जो सर स्टैफर्ड के तर्कों की तह मे दिखाई देती है। पहली तो यह कि अग्रेज हिदुस्तान की बहुमत की इच्छा का आदर करने से कही अधिक

अल्पसख्यको की इच्छा-पूर्ति मे सहायता देना अपना नैतिक उत्तरदायित्व समझते है। दूसरी यह कि अग्रेजो ने यह बात मान रखी है कि अल्पसख्यको के हितो का ध्यान रखने मे काग्रेस उतनी सचेष्ट नही है, जितने कि अग्रेज। और तीसरी, जो समझौते के भग होने का तात्कालिक कारण मालूम दी, यह है कि अग्रेजो का यह भी खयाल है कि हिदुस्तान का रक्षा मत्री सेना के मामले मे निश्चय ही इतना अधिक हस्तक्षेप करेगा कि उससे सेना के कुशल कार्य-सचालन मे बाधा पडेगी। मुझे अधिक आश्चर्य इस कारण से है कि सर स्टैफर्ड एक सीधे-सच्चे स्वभाव के आदमी है और उन्हे हिदुस्तान की स्वतत्रता से सहानुभूति है। कही ऐसा तो नही कि जिस नई अन्तर्दृष्टि के बिना ग्रेट ब्रिटेन न युद्ध जीतने की आशा कर सकता है, न शान्ति पाने की ही, उससे ब्रिटिश सरकार अभी इतनी दूर है कि सर स्टैफर्ड के लिए अपनेको अनुदार बनाने की चेष्टा करना अनिवार्य हो गया है ताकि वह अपनी सरकार से इतने आगे न बढ जाय कि सन् १९३९ के जनवरी-फरवरी के अपने अनुभवो की पुनरावृत्ति कर दें? इस प्रश्न का मेरे पास कोई उत्तर नही है। मै तो केवल यह आशा करता हू कि सबसे पहले सर स्टैफर्ड स्वय काग्रेस के विचारो से सहमत होने के लिए अवसर निकालेंगे और फिर अपने साथियो

जबकि मुझे आपके पास तक इस पत्र के पहुचने का निश्चय हो जायगा।

इसलिए मेरे लिए कोई ऐसी बात कहना, जो उपदेश-जैसी मालूम हो, स्वयं में एक बहुत ही असंगत बात होगी। फिर भी आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मै यह आशा करू कि हिंदुस्तानी नागरिक रक्षा का काम ऐसी ही भावना के साथ करेंगे मानो वे स्वय अपने शासक थे। ऐसा करने मे न केवल वे एक भयानक शत्रु को मार भगाने में सहायक होंगे, बल्कि अपनेको अन्तत प्रान्तीय और केन्द्रीय दोनो ही प्रकार के शासन की बागडोर सभालने के लिए तैयार करेंगे। मै जानता हू कि यह दिन बहुत दूर नही है।

सादर,

आपका,
तुआन-शॅग चिएन

पंडित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद (हिंदुस्तान)

३४०. महात्मा गाधी की ओर से

वर्धा
२४ अप्रैल, १९४२

चि जवाहरलाल,

मीराबहन ने मान लिया कि मुझे कुछ-न-कुछ कदम उठाना होगा, और उसे कुरबानी करनी होगी। मै इलाहाबाद न जाऊ तो भी वह जाना चाहती थी। इसलिए मैंने उसे यहा बुला लिया। उसके साथ मे अपने विचार प्रस्ताव के रूप मे भेजता हू। मौलानासाहब का आग्रह था कि मै इलाहाबाद जाऊ। मैंने लाचारी बताई। इन दिनो मे मुसाफिरी करना मेरे लिए कठिन बात है, इतना ही नही, लेकिन मैंने उसी अरसे मे तीन मीटिंगे बुलाई हैं। इसलिए मैंने मौलाना से माफी माग ली और लिखा कि मै अपने विचार प्रस्ताव के रूप मे भेजूगा।

प्रस्ताव के समर्थन मे दलील देने की आवश्यकता मै नही समझता हू। अगर मेरा प्रस्ताव आप लोगो को अच्छा न लगे तो मेरा आग्रह हो नही सकता है। हमारे लिए ऐसा मौका आया है कि हरेक को अपना मार्ग

सोच लेना है ।

फेनी वगैरा मे सल्तनत का वर्ताव ऐसा चल रहा है कि वह बरदाश्त के काबिल नही है । ऐसी सल्तनत बचकर भी क्या करेगी ? और आज तो वह बचने की कोशिश कर रही है । मेरा विश्वास हो गया है कि सल्तनत उठ जाने से हम जापान के साथ अच्छी तरह से हिसाब कर सकते है । यह दूसरी बात है कि सल्तनत उठ जाने पर हम आपस में लड-मरेंगे । भले ऐसा भी हो । हम थोडे सल्तनत की मेहरबानी से आपस-आपस के झगड़ो से बचना चाहते है ?

आचार्य नरेन्द्रदेव ने प्रस्ताव देखा है और पसद किया है ।

बापू के आशीर्वाद

३४१. लुई जॉनसन की ओर से

अम ीका के राष्ट्रपति के निजी
प्रतिनिधि का दफ्तर,
नई दिल्ली
१२ मई १९४२

मगल-कामनाओं-सहित

आपका,
लुई जे.

पंडित जवाहरलाल नेहरू,
नागर (कुल्लू)

फिर से—

मैं 'रिवर ऑव फिग्स' को स्वदेश जाते समय रास्ते में पढूंगा। इसके लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं।

जर्मनी ने आज अपना आक्रमण शुरू कर दिया है। अब हम उस सकट की ओर जा रहे हैं, जो यह निश्चित करेगा कि युद्ध लम्बा होगा या छोटा।

आपका,
लुई

३४२. जी. अधिकारी की ओर से

३ मई १९४२

प्रिय पंडितजी,

ए आई सी सी के अधिवेशन के नतीजो पर कुछ विचार आपके सामने रखने की दृष्टि से मैं यह पत्र आपको लिख रहा हूं। आप मुझे उतनी अच्छी तरह नही जानते, जितनी अच्छी तरह मेरे दोस्त को, जो दिल्ली मे क्रिप्स से बातचीत के समय आपसे मिले थे। पर उससे क्या!

इस ए आई सी सी के अधिवेशन के नतीजो के बारे में हमें बडा क्षोभ है। हमारा खयाल है कि इन नतीजो के कारण आज देश और जनता पहले की अपेक्षा अधिक बुरी हालत मे है। मेरा अनुमान है कि इनसे आप भी बहुत ज्यादा खुश नही है। मैं गलत हो सकता हूं, पर मुख्य अधिकृत प्रस्ताव पर बोलते हुए आपने अपने उपसहारात्मक भाषणो मे जो कहा उससे मुझपर यही असर पडा। इस भाषण की लबी और आत्म-निरीक्षण से भरी—अगर मुझे ऐसा कहने की अनुमति दे तो—भूमिका ने मुझपर यह असर डाला मालूम होता है कि आपने प्रस्ताव पर कुछ सशोधन पेश किये, जिनमे से कुछ स्वीकार कर लिये गए, कुछ ठुकरा दिये गए। युद्ध के दोनो पक्षो को एक ही स्तर पर समझनेवालो को आपकी फटकार अलबत्ता अच्छे

शब्दो मे थी।

असल मे यही खास बात है। प्रस्ताव नि सदेह दोनो दुश्मनो के बीच पूरी तरह से तटस्थता की भावना से किया गया था और वास्तव मे यह दोनो मे तनिक भी भेद नही करता है। सशोधन चाहे कुछ भी थे, इस भावना मे उनसे कोई अतर नही पडता। क्रिप्स-मिशन की असफलता के फौरन बाद आपने अखबारवालो को दी गई अपनी शानदार भेट मे जो कहा, उससे इस प्रस्ताव की भावना काफी अलग है। यही वह चीज है, जिसने हमे बेचैन कर दिया है। यह इस नाजुक घडी मे हर देशभक्त को बेचैन कर देगा।

आप खुद चाहे असतुष्ट हो, लेकिन आप हमसे यही कहेगे—अच्छा, और क्या किया जा सकता था ? आप लोग हमारी जनता की ब्रिटिश-विरोधी भावना को महसूस नही करते। नही साथी, हम निश्चित रूप से इसे महसूस करते है। यह प्रस्ताव और ए आई सी सी की सारी कार्यवाही ब्रिटिश-विरोधी भावना को और उभार देते है। इसका नतीजा क्या होगा ? साम्राज्यवाद-विरोधी भावना और बढेगी, आजादी के लिए भावना और तीव्र होगी, आत्म-विश्वास मे और वृद्धि होगी ? मुझे भय है कि यह कुछ नही होगा। ब्रिटिश-विरोधी भावना अपने साथ तटस्थता का रुख और अहिसात्मक असहयोग की दृष्टि को लेकर, उस समय जबकि दुश्मन हमारे घरो के भीतर घुस आये हो, जापान-पक्षपाती भावना को और पराजय-वृत्ति को जन्म देगी।

इस नाजुक घडी मे ए आई सी सी ने हमारी जनता को कोई मार्ग-दर्शन नही दिया। इसने उनको आशा और विश्वास का कोई सदेश नही दिया। उसने काम करने का कोई रास्ता नही दिखाया। फिलहाल इसने ब्रिटिश-विरोधी भावना का बुखार चढा दिया। जब यह बुखार उतरेगा तब पराजय की वृत्ति और जापान-पक्षपाती भावना और ज्यादा हो जायगी। मौलाना ने उन लोगो का जिक्र किया, जो चुपचाप आक्रमणकारी का स्वागत करते है। यह भावना मध्यम-वर्ग के कांग्रेसजनो मे व्यापक रूप से फैली हुई है। काग्रेस की मौजूदा हालत मे यह भावना बढेगी और वह निश्चित रूप से हमारी जनता के दिल को चूर-चूर कर देगी तथा आक्रमणकारी के खिलाफ उनके हाथो को कमजोर कर देगी, यदि मै बहुत ही दबे शब्दो मे कहू तो।

हमने राष्ट्रीय सरकार प्राप्त नही की। हमारे पास जनता को देने के लिए हथियार भी नही, जिनसे वह सम्माननीय व्यक्तियो की तरह अपनी प्रतिरक्षा को सगठित कर ले और जो वास्तव में प्रभावशाली हो। यह सही है कि इसके लिए अग्रेज जिम्मेदार है। परतु जनता से यह कहना कि वस, यह उनका जत है, अब हम राष्ट्रीय सरकार स्थापित नही कर सकते, हम अब हथियार नही जीत सकते, अब समय नही है, हमारे सामने सिवाय अपना अहिंसक जौहर करने के और कोई चारा नही है. विनाशकारी पराजय-भावना को वताना है। अग्रेजो ने हमें राष्ट्रीय सरकार नही दी। उन्होने हमें शस्त्रास्त्र नही दिये...इसलिए हम अपनी जनता से कहते है कि जो भी हथियार उसके पास है, उन्हें भी डाल दो। ब्रिटिश प्रभावशाली ढग से हमें अपने देश की रक्षा नही करने देगे। इसलिए हम उन्हें मजबूर करने की सारी कोशिशें भी छोड देते है और ज्यादा बेअसर ढग से अपनी रक्षा करने का निश्चय करते है ...यह होगा नतीजा तटस्थता की अवस्था का, आक्रमणकारी के साथ अहिंसात्मक असहयोग का तथा जिस क्षेत्र में ब्रिटेन की फौजें लड रही है, उस क्षेत्र मे कार्रवाई करने से इन्कारी करने आदि का। मुझे लगता है कि अपने चेहरे के प्रति घृणा दिखाने के लिए हम अपनी ही नाक काट रहे है।

कह नही सकता कि मै अपने-आपको स्पष्ट कर सका हू या नही। जो वात मै कहना चाह रहा था वह यह है कि ए आई सी सी का प्रस्ताव आपके अखवारी वयान में अगीकृत स्थिति से कोसो दूर है। ए आई सी सी मे दिये गए भाषणो से हमे यह आभास मिल गया कि काग्रेस के प्रातीय नेता जनता के सामने प्रस्ताव की किस प्रकार व्याख्या करेगे। इस भावना का एक अनोखा उदाहरण एक वक्ता का जापान को ब्रिटिश सरकार का दुश्मन (हमारा नही) वताना था। मुझे भय है कि यह किसी एक सदस्य के मुह से योही नही निकल गया। यह तो तटस्थता की भावना की पराकाष्ठा है। वहुत-से काग्रेसी इसी ढग से प्रस्ताव को समझेंगे और उसकी व्याख्या करेगे। क्या ये गुट हमारे लोगो के दिल को फौलाद और वाजुओ को ताकतवर वना सकते है? नही, यह तो पराजय-वृत्ति का वीज वोने जा रहे है। आप तवतक दुश्मन के खिलाफ पूरी ताकत से नही लड सकते जवतक कि आप

उनसे पूरे दिल से नफरत करना न सीख ले। यह है मई-दिवस का संदेश, जो दो दिन पहले स्टालिन ने अपनी जनता को दिया था।

स्टालिन से हम यह सबक सीख सकते हैं, खासतौर पर इस समय। आज जिस चीज की हमको सबसे अधिक आवश्यकता है वह है देश के इस छोर से उस छोर तक प्रचार-आदोलन—एक ऐसा आदोलन, जिसके द्वारा जापानी हमलावरो और नाजियो के खिलाफ दहकती हुई घृणा का प्रचार किया जाय। कहा जाय कि ये वे लोग है, जिनकी हमारे देश पर आख है और कि ये वे हमलावर है, जो हमारे देशवासियो को गुलाम बनाना चाहते है। आप पूछेगे कि इसका क्या परिणाम होगा ? इसका परिणाम यह होगा कि यह जनता मे राष्ट्र की सुरक्षा की भावना पैदा कर देगा। इससे पी वी बी. (पीपुल्स वालटियर बटालियन) तथा दूसरी हलचलो को एक लक्ष्य और दिशा मिलेगी। पी वी बी. मे आप देशभक्त नौजवानो का आवाहन करते है। उन्हे आप नागरिक प्रतिरक्षा तथा आपात-कालीन सेना के लिए सगठित और अनुशासित कर रहे है। उनके अन्दर जापान-विरोधी भावना भर दीजिये और यह चेतना भी कि जब तक [illegible]

और आप शायद इसपर विचार-विनिमय करना जरूरी समझे कि प्रस्ताव
समर्थित करे नतीजो को कैसे सुधारा जाय। इसके अलावा हम यह
जानना चाहेंगे कि क्या कांग्रेस अपने उन सदस्यों को बाहर निकालनेवाल
है, जो देश-भक्ति से पूर्ण जापान-विरोधी प्रचार करेंगे और जो जनता क
समझाते जायगे कि कौन-कौन से बड़े मसले दाव पर है। कुछ कार्यकर्त
किसान और विद्यार्थी तटस्थता के खिलाफ जोरदार प्रचार करते जाय
और पराजय-वृत्ति के विरुद्ध लड़ते जायगे। क्या काम करनेवाले कांग्रेसिय
को निकाल दिया जायगा? ये प्रश्न है, जो उठते है। मेरा विचार है कि य
अनिवार्य है कि इस प्रस्ताव की तटस्थता के रूप मे व्याख्या करने से रोक
जाय। यह उन लोगो के लिए बेड़ी का काम न करे जो जनता में आत्मिक ब
जगाने का, और जैसा कि चीनी लोग कहते है, हर प्राप्त उपाय से हमलाव
के राष्ट्रीय प्रतिकार के लिए उन्हें एक जगह इकट्ठा करने का काम कर र
है।

कितने ही मतभेद हो, एक बात के लिए हमे एक होना है—जनता
देश-भक्तिपूर्ण, जापान-विरोधी, हमलावर-विरोधी जागृति पैदा करने
लिए तथा किसी भी कीमत पर पुरुषार्थपूर्ण राष्ट्रीय प्रतिकार की भावन
उसमे उत्पन्न करने के लिए। हमारी जनता, जो भी हथियार उसे मिले
उन्हींसे, हमलावर का मुकाबला करेगी। इस प्रतिकार को करते हुए व
ब्रिटिश सेना से सहयोग करेगी। इससे उसकी शान घटेगी नही, बल्कि
सैकड़ो-हजारो गुनी बढेगी। अगर स्थिति ऐसी ही चलती रही, जैसी कि है, तो
यह सिर्फ चद जगहो पर होगा और इसे चद दस्ते ही करेंगे, लेकिन इन
मुट्ठी भर लोगो की कुरबानी ही हमारी उस नि शस्त्र अवस्था की शर्म को
धो डालने मे काफी काम कर दिखायेगी, जिसपर हम लबे अरसे से जोर से
रोते रहे है। आप कम्युनिस्टो को शायद पसद न करे, जब वे भरती की बात
करते है और उस युद्ध-प्रयत्न मे भी सहकार करने की जो हमलावर पर चोट
करता है और जनता की रक्षा करता है। लेकिन यह एक कम्युनिस्ट की
ज्वलत देशभक्ति है, जो उसे ऐसा करने को प्रेरित करती है। ब्रिटिश-विरोधी
नेतृत्व और उसके साथ मिली तटस्थता का अर्थ होता है पराजय-वृत्ति और
उससे भी ज्यादा पराजय-वृत्ति जनता मे। यह वह जमीन नही है जिसमे हम

अपनी मातृभूमि की रक्षा करनेवाले देशभक्त पैदा कर सके। यह ऐसी जमीन है, जिसपर दुश्मन—गुलाम बनानेवाला नया साम्राज्यवादी दुश्मन अपनी घिनौनी फसल उगायेगा।

इसलिए आपसे हमारी अपील है कि आप देखे कि फासिस्ट-पक्षपाती तत्व इस प्रस्ताव का नाजायज फायदा न उठाये, बल्कि इसे आपके अखबारी बयान की भावना से और छापामारो और 'झुलसी जमीन' वाले आपके बयान की रोशनी मे पेश किया और अमल मे लाया जाय।

लबे और इधर-उधर की जरूरी और गैर-जरूरी बातो से भरे इस पत्र के लिए क्षमा करे। यह एक देशभक्त की ऐसे व्यक्ति को अपील है, जिसकी हमारे महान राष्ट्रीय सगठन मे बेजोड जगह है और जो ए आई सी सी के प्रस्ताव से निकलनेवाले सभावित विनाशकारी नतीजो का इलाज करने मे काफी-कुछ कर सकता है।

आपका,

जी. अधिकारी[1]

३४३. अबुल कलाम आजाद की ओर से

कलकत्ता

१३ मई १९४२

प्रिय जवाहरलाल,

दिल्ली से आपने जो तार और खत मुझे भेजा उसके लिए मै आपका शुक्रिया अदा करता हू। मेहरबानी करके गौर करे कि मैने लिखा है—"मै आपका शुक्रिया अदा करता हू।" मैने सिर्फ "शुक्रिया" नही लिखा। आपने दिल्ली मे बताया था कि दोनो के मायनो मे फर्क है। इस तरह इस लफ्ज के दो तरह से जाहिर करने मे जो पेचीदा फर्क है उसको मैने पूरी तरह निभाया है।

मुझे किदवई का खत मिला है। पालीवाल ने भी मुझे तार दिया है कि वे बच्चो को निकालने के मामले में तैयार है। मै बगाल सरकार के साथ तफसील तय कर रहा हू। जैसे ही वह किसी पक्के नतीजे पर पहुचे कि मै यू पी के दोस्तो को इत्तिला दूगा।

---

[1] जी. अधिकारी भारतीय साम्यवादी दल के प्रमुख सदस्य रहे है।

लेकिन आज ही मुझे पता चला कि किदवई कल डिफेंस ऑव इडिया एक्ट के मातहत अचानक गिरफ्तार कर लिये गए है। मेरी समझ में नही आ रहा कि पिछले चन्द दिनों मे उन्होंने ऐसा क्या किया है कि वह यू पी सरकार के लिए नये सिरे से एक खतरनाक आदमी बन गये।

मैने अपने पिछले खत में आपको लिखा था कि मै बम्बई जा रहा हू, लेकिन बगाल के मामलो ने मुझे इस तरह फसा लिया है कि मुझे अपनी रवानगी मुल्तवी करनी पडी। चटगाव के ऊपर जो हवाई हमला हुआ है उससे वहा एक खयाल फैल गया है कि चन्द दिनो के अन्दर कलकत्ता पर भी हमला होगा। इसके अलावा समुद्र के किनारे-किनारे रहनेवाले बगाल के जो लोग है उनके बारे मे एकाएक नये और मुश्किल मसले खडे हो गये है। ऐसी सूरतो में मै यहा से बाहर जाने के लिए तैयार नही हो सका।

मुझे यह देखकर तकलीफ होती है कि इफ्तिखार सही रास्ते से भटक रहा है। मुझे नही मालूम कि आपने उसे रास्ते पर लाने की कोशिश की या नही और अगर की तो उसके क्या नतीजे हुए।

कुल्लू में आप जितने ज्यादा दिन ठहरेंगे, मुझे उतनी ही खुशी होगी। जब मैंने इलाहाबाद में आपको थकान से मुरझाया हुआ पाया तो मुझे बहुत फिक्र हो गई थी। आपको यह मजूर करना चाहिए कि अब आपने पचास बरस पार कर लिये है और आपको अपनी तन्दुरुस्ती के बारे मे कुछ ज्यादा अहतियात रखना चाहिए।

आपका,

अ. क. आजाद

३४४ क्लेयर बूथ लूस की ओर से

ग्रीनविच, नेक्टिकट

४ जून १९४२

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे एक कहानी याद है। वह मेरे एक मित्र ने मुझे सुनाई थी, जो पहले महायुद्ध के एक कूटनीतिज्ञ थे। उन्होने बताया कि वारसाई सधि के कुछ साल बाद वह पेदरेवस्की के साथ खाना खा रहे थे और उनसे कह उठे—"शीशोवाले बडे कमरे मे यूरोप को बाटनेवाले पतलूनधारी महानुभावो ने यूरोप

के विश्वासी स्वभाव के राष्ट्रो पर जो बहुत-से प्रादेशिक अन्याय किये थे उनको ध्यान मे रखते हुए, जनाबमन, यह सचमुच बड़े मार्के की बात है कि पोलैड जैसा राष्ट्र एक इतने बडे स्वतत्र और वैभवशाली देश के रूप मे विकसित हुआ। युद्ध के दिनो मे आप जब वाशिगटन मे थे तब आपने किस तर्क से मिस्टर विल्सन को पोलैण्ड इरेडेन्टा की आवश्यकता का विश्वास दिलाया था ?" जैसा कि मेरे मित्र ने बताया, इसपर उस महान पोलैण्ड-निवासी ने उत्तर दिया—"यह सच है कि मै कई मौको पर व्हाइट हाउस मे गया, किन्तु मैने शायद ही कभी मिस्टर विल्सन से राजनीति की बाते की हो। सच तो यह है कि वहा मै इसलिए जाता था कि वह मेरा पियानो सुनना पसन्द करते थे।"

यह कहानी निश्चय ही सन्देहजनक है। तब फिर मै इसकी चर्चा क्यो कर रही हू ? इसलिए कि तब (जैसा कि अब है) और अब भी (जैसा कि तब था) वाशिगटन और व्हाइट हाउस राष्ट्रो के प्रारब्ध का निर्णय कर रहे है (सदा यह मानकर कि जीत हमारी होगी—और मै भी ऐसा ही सोचती हू।) और तबकी तरह अब भी महान व्यक्तियो की रहस्यपूर्ण टक्कर से वह चिनगारी उत्पन्न होगी, जो प्रकाश करके राष्ट्रो को उनकी स्वतत्रता का मार्ग दिखायेगी या ऐसी ज्वालाए भडका देगी, जो एक शताब्दी तक भडकती रहेगी।

यदि यहा आने का कोई अनुकूल अवसर आपके सामने आये तो आपको शायद इन्कार नही करना चाहिए। मुझे विश्वास है कि हिंदुस्तान, इग्लैड और अमरीका मे ऐसे बहुत-से लोग है जिन्हे यदि एक साथ एक जगह विचार-विनिमय के लिए बुलाया जाय तो वे हिन्दुस्तान के प्रश्न का ऐसा हल निकाल लेंगे, जिससे आपके लिए, ग्रेट ब्रिटेन के लिए और हमारे लिए भी भविष्य मे उत्तम जीवन बिताने मे आसानी होगी। इनमे से दो आदमी तो निश्चय ही पडित नेहरू और राष्ट्रपति रूजवेल्ट है। मै नही जानती कि आप एक-दूसरे को पसन्द करेंगे या नही। पसन्द करने के लिए जानना जरूरी है, लेकिन आप लोग एक ऐसी भाषा में परस्पर बातचीत कर सकेंगे जो १९वी शताब्दी की भाषा नही है। हमारे राष्ट्रपति ने अक्सर समझने में बहुत बड़ी-बडी भूलें की है (यह जानते हुए भी कि मेरी बात कितनी

अनुचित लग रही होगी, मैं उसे कहे जा रही हू।) लेकिन वह सदा ही ठीक रास्ते पर चले है। अगर कभी उन्होंने सड़क पर चलने में भूल की भी है तो वह सदा ठीक सड़क पर ही रहे हैं। और यही आखिरकार सबसे महत्वपूर्ण बात है। मुझे विश्वास है कि आप दोनो एक-दूसरे को मोहित करने में चूकेंगे नही और बुनियादी समस्याओं पर बुद्धिमत्ता के साथ विचार-विनिमय करेंगे, क्योंकि सचमुच बहुत जरूरी है। लेकिन छोड़िये, कोई कुछ भी कहे, जबतक स्वयं आपको ऐसा करना बुद्धिमत्तापूर्ण नही मालूम होगा तबतक आप यहा आयेंगे नही और आपको यह बुद्धिमत्तापूर्ण तबतक नही मालूम होगा, जबतक हमारे राष्ट्रपति को ऐसा न मालूम हो।

इस सप्ताह और आज सवेरे हिंदुस्तान से जो खबरें आई है, वे बेहतर है। मेरा मतलब बड़े-बड़े रक्षक बेड़ो के आगमन से है, लेकिन मैं अनुमान नही लगा पा रही हू कि इस सबका क्या मतलब हो सकता है, न यही समझ पा रही हू कि चटगाव में जापानियों की जो स्थिति है उसका हिंदुस्तान के भीतर और बाहर क्या प्रभाव पड़नेवाला है।

सुखपूर्वक रहिये, इस प्रकार के अवांछित परामर्श और सुझाव देने के लिए क्षमा कीजिये। मैं फिर बेचैन होती जा रही हू और आस्ट्रेलिया जाने की सोच रही हू।

अभिवादन-सहित,

क्लेयर लूस

३४५. एस एच शेन की ओर से

नई दिल्ली
१६ जून १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

मुझे डाक्टर मेनन से आपका १४ जून का पत्र मिला, जिसके साथ आपने जनरलसिमो के नाम लिखा गया महात्मा गाधी का एक पत्र उनके पास पहुचाने के लिए भेजा है।

मैंने इस पत्र को और मैडम च्याग के नाम लिखे गए आपके खत को भी बर्मा मे हमारे आक्रमणकारी दस्ते के जनरल लोत्सो यिन को सौंप दिया है। वह जनरलसिमो से चुगकिंग मे मिलने के लिए कल नई दिल्ली से जाने-

और बता देगे कि मै उनके बारे मे क्या सोचता हू ।

मै बिल्कुल समझ सकता हू कि गाधीजी के हाल के कुछ बयानो से अमरीका मे गलतफहमी हुई है । शायद उनके बाद के बयानो से इस गलतफहमी के साफ होने मे मदद मिली है । एक बात पक्की है गाधीजी अपनी ताकत के मुताबिक सबकुछ करना चाहते है, जिससे हिदुस्तान पर जापान का हमला और कब्जा न हो सके । वह देश के लोगो को प्रतिकार करने के लिए, न कि झुक जाने के लिए, जगाना चाहते है । उन्हे इस बात से तकलीफ हुई है कि हिदुस्तान मे ब्रिटिश पालिसी बिल्कुल उल्टे नतीजे ला रही है और लोगो को इतना ज्यादा विरोधी बना रही है कि उनके मन मे यह भावना पैदा हो रही है कि मौजूदा हालत से तो कोई भी तब्दीली, चाहे वह कितनी ही खराब हो, अच्छी होगी । यह भयानक और हानिकारक वृत्ति है, जिसे वह मिटाना चाहते है ।

मलाया और बर्मा के बाद हिदुस्तान मे यह यकीन फैल गया है कि जहा-तक हिदुस्तान मे ब्रिटिश सरकार का ताल्लुक है, जापानी हमले का, खास तौर पर बगाल मे, प्रतिकार करने की न कोई गभीर इच्छा है, न ताकत । बगाल मे अधिकारियो ने अपने अफसरो के नाम जो गोपनीय सरक्यूलर निकाले है उनमे देश खाली करने के तरीको की पूरी चर्चा है । और यह भी चर्चा है कि बडे अफसरो को अपने मातहतो के हाथ में अधिकार सौपकर किस तरह चले जाना चाहिए । इन मातहतो को सचमुच यह कहा गया कि दुश्मन की आज्ञाओ के अनुसार वे अपना मामूली काम-काज करते रहे, क्योकि यह अन्तर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार मालूम होता था । ऐसी हिदायतो से प्रतिकार को प्रोत्साहन नही मिलता । यह तो असल मे हार की भावना है । लगभग दो महीने हुए मद्रास सरकार ने जिस तरह का व्यवहार किया वह भी गैर-मामूली था । हमले की सभावना की अफवाह पर वे लोग भाग गये । (बाद मे वह अफवाह झूठी निकली) ।

अगर बाद मे किसी वक्त डटकर मुकाबला करने का इरादा है तो भी सिर्फ इसी बात का कि बगाल का पतन हो गया है हिन्दुस्तान भर मे दूर तक असर डालनेवाले नतीजे होगे । यह बहुत मुमकिन है कि सेना के इकट्ठे होने की बात तो दूर रही, बहुत-से देहाती इलाको मे असैनिक शासन

धीरे-धीरे खत्म हो जाय । इसका भी जरूरी तौर से फौजी हालात पर असर पडेगा और वह कमजोर होगी ।

मुझे पता नही कि कहातक अमरीकी विमानो और दूसरी किस्म की मदद ने हालत को बदला है । लेकिन दरअसल हालत जैसी दो महीने पहले थी, उससे बहुत जुदी नही हो सकती । कोई हिदुस्तानी इन लक्षणो को शान्त होकर नही देख सकता । इसका नतीजा यह होगा कि देश के महत्वपूर्ण भागो पर जापान का अधिकार हो जायगा और बहुत-से दूसरे भागो मे अव्यवस्था बढ जायगी । फिर भी हमारा खयाल है कि इसे रोका जा सकता है । खालिस फौजी अर्थ मे हम निकट भविष्य मे बहुत-कुछ नही कर सकते और कार्रवाइया हिदुस्तान मे मित्र राष्ट्रो की सेना पर मुनहसिर रहेगी । लेकिन हिदुस्तानी आजादी को मजूर कर लेने और यहा राष्ट्रीय सरकार कायम हो जाने से वातावरण मे बिजली दौड जायगी और दुनिया मे बडा फर्क हो जायगा । अगर बदकिस्मती से जापानी देश के कुछ हिस्सो पर कब्जा कर ले तो भी बाकी के भाग बैठ नही जायगे, बल्कि चीन की तरह हमला जारी रखेगे । निष्क्रिय होकर भाग्य के भरोसे बैठे रहने के बजाय सक्रिय विरोध और प्रतिकार किया जायगा । इसलिए मित्रराष्ट्रो की सेना की मदद से और चीन को मदद देने के लिए भी हिदुस्तान की रक्षा के लिए हिदुस्तान की आजादी की बडी अहमियत हो जाती है । इसलिए आज के मसले का विचार इसी बात को खयाल मे रखकर करना पडेगा ।

हममे से उन लोगो के लिए, जिन्हे कुछ जिम्मेदारी उठानी पडती है, व्यक्तिगत रूप मे काम करना काफी नही है । हमे दूसरो से भी सही दिशा मे काम कराना पडता है । और आम तौर पर लोकमत को प्रभावित करना पडता है । मै यह कोशिश करता रहा हू । मै किसी भी हालत मे यह नही चाहता कि हिदुस्तान किसी हमले के आगे झुके । मै उसका सक्रिय और लगातार प्रतिकार चाहता हू । लेकिन अगर इसे कुछ भी कारगर बनाना हो तो हिंदुस्तान मे ब्रिटिश सरकार के बजाय स्वतत्र राष्ट्रीय सरकार कायम करनी होगी । इससे फौजी कार्रवाइयो या हिफाजत की व्यवस्था में कोई खलल नहीं पड़ेगा ।

अपने पिछले खत मे मैंने आपको बताया था कि चीनी प्रधान सेनाप[ति]

के नाम की गांधीजी की चिट्ठी २१ जून को 'हरिजन' में निकलेगी। करीब-करीब अन्तिम क्षण हमें संदेशा मिला कि सेनापति चाहते हैं कि उसे छापना रोक दिया जाय। हमने ऐसा ही कर तो दिया, लेकिन उसके लिए १० हजार प्रतियां नष्ट कर देनी पड़ीं।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

श्री लैम्पटन बेरी,
संयुक्तराज्य अमरीका के राष्ट्रपति के निजी प्रतिनिधि
का कार्यालय, नई दिल्ली।

३४७ एल. एच शेन की ओर से

नई दिल्ली
२५ जून १९४२

प्रिय पंडित नेहरू,

श्री रघुनन्दन शरण लखनऊ जानेवाले हैं और इस अवसर से लाभ उठाकर मैं उन्हें यह पत्र आपके २३ जून के पत्र के उत्तर में दे रहा हूं, जो कि मुझे अभी-अभी प्राप्त हुआ है।

जैसा कि मैंने डाक्टर मेनन के द्वारा भेजे गये अपने पिछले पत्र में लिखा था, मैं आपके पुनः दिल्ली आने की राह देख रहा हूं जबकि मुझे आपसे आजकल की बहुत-सी महत्त्वपूर्ण समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने का अवसर मिलेगा। किन्तु मेरी यह इच्छा कदापि नहीं है कि मैं आपको दिल्ली आने के लिए किसी ऐसे समय में निमन्त्रित करूं जबकि दिल्ली से बाहर हो रही आवश्यक सभाओं के कारण आपका वहां से आना उचित नहीं होगा। इस प्रकार का निमन्त्रण विवेकहीन और अदूरदर्शितापूर्ण होगा। श्रीमती नेहरू ने आपके पास मेरा जो सन्देश पहुंचाया है, वह निश्चय ही किसी और कारण से नहीं, बल्कि भ्रमवश पहुंचाया गया है। इससे बचने के लिए मैं भविष्य में केवल अपने हस्ताक्षरों सहित निजी पत्रों द्वारा ही सूचना भेजा करूंगा। मुझे विश्वास है कि इस व्यवस्था से आप सहमत होंगे।

मुझे यह जानकर दुःख हुआ है कि जनरलसिमो को लिखे गये महात्मा

गाधी के पत्र के न छाप सकने के कारण 'हरिजन' के अक के प्रकाशन मे असुविधा तथा देर हुई। जहातक मेरा सवाल है, मै आपको विश्वास दिलाता हू कि मैने उस पत्र की बातो को जनरलसिमो के पास तार द्वारा पहुचाने मे जरा भी देर नही की और जनरलसिमो ने भी उसे न छापने की प्रार्थना भेजने मे उतनी ही तत्परता दिखाई। जो हो, अब जबकि वह पत्र छपने से रोक दिया गया है, मै आपको जनरलसिमो की प्रार्थना को स्वीकार करने के लिए धन्यवाद देता हू। मुझे उम्मीद है कि इस मामले मे आप द्वारा की गई सहायता को वह भी पसन्द करेगे।

वर्धा मे काग्रेस कार्यकारिणी की आगामी बैठक मे मै आपके लिए सौभाग्य की कामना करता हू और मुझे उम्मीद है कि यदि समय मिल सके तो आप इस महत्त्वपूर्ण सभा के महत्त्वपूर्ण निर्णयो के बारे मे मुझे कुछ पक्तिया लिखने की कृपा करेगे।

आपका
एस. एच. शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
लखनऊ

३४८. मैडम च्यांग काई-शेक की ओर से

जनरलसिमो का सदर मुकाम, चीन
चुंगकिंग, जेचुआन
२६ जून १९४:

यह पत्र आपको गोपनीय सूचना के लिए है।
पत्र-सख्या ८

प्रिय श्री नेहरू,

आपका पत्र-सख्या ९, जो कि वास्तव में पत्र-सख्या १० है, मुझे मिल गया है। मुझे अफसोस है कि मै इससे पहले उत्तर न दे सकी। किन्तु आवश्यक समस्याओ ने, जिनपर फौरन ध्यान देने की जरूरत थी, मुझे करीब करीब पागल बना दिया है और वह भी ऐसे समय में जब मै बिल्कुल भी स्वस्थ नही हू। कुछ समय के लिए मै जनरलसिमो के साथ चुगकिंग से बाहर चेगटू चली गई थी और वहा से अभी-अभी लौटी हू। मेरी इन सारी समस्याओ

और बीमारी के बावजूद मुझे सब आपका और हिंदुस्तान का ध्यान रहा है।

जब जनरलिसिमो को गाधीजी का पत्र मिला तब उन्होने फौरन वाशिगटन तार भेजा और इस बात पर जोर दिया कि अमरीका और चीन को मिलकर काम करना चाहिए। जनरलिसिमो अब गाधीजी के पत्र का उत्तर दे रहे है, किन्तु वह चाहते है कि मै आपको यह बात समझा दू कि वाशिगटन के साथ उनके पत्र-व्यवहार का परिणाम जबतक निश्चित रूप से न मालूम हो जाय तबतक कुछ भी नही किया जाना चाहिए। इनका मतलब यह है कि निश्चित सूचना मिले बिना इस समय गाधीजी या कांग्रेस द्वारा किसी भी आन्दोलन का प्रारभ किया जाना नितान्त अनुचित होगा।

इस बारे में अभी तो जनरलिसिमो कुछ नही कह सकते, लेकिन जैसे ही उन्हें कोई निश्चित सूचना मिलेगी, वह आपको फौरन लिखेगे। एक बार प्रारभ कर देने के बाद कोई भी आन्दोलन बिना घातक परिणामो के बन्द नही किया जा सकता। हिंदुस्तान के लिए जनरलसिमो जो कुछ भी कर सकते है, कर रहे है। तार इधर-से-उधर भेजे जा रहे है, चीन से वाशिगटन और वाशिगटन से चीन को और हम शायद वाशिगटन मे श्री चर्चिल की उपस्थिति का फायदा उठा सके।

इस बीच विश्वास रखिये कि जनरलसिमो और मेरे दोनो के हृदय मे हिंदुस्तान के लिए जो कुछ भी किया जा सकता है करने की हार्दिक इच्छा है और यदि कोई सफल निकल सकता है तो हमारी किसी चेष्टा की कमी के कारण उसमे विलम्ब नही होने पायेगा।

सद्भावनाओ-सहित,

सस्नेह आपको,
मेलिग सुग च्याग

फिर से—

मै जानती हू कि गाधीजी ने जो कुछ भी लिखा है उस सीमा तक वचन देने के लिए उन्हे तैयार करने मे आपको कितनी चेष्टा करनी पडी होगी, क्योकि आपको याद होगा कि जब हम उनसे कलकत्ता मे मिले थे तब जापान के सभावित आक्रमण के प्रति उनका सारा दृष्टिकोण अहिसा और असहयोग का था। उनका अब यह कहना कि हिंदुस्तान द्वारा

जापान के विरोध को वह ठीक समझते हैं, निश्चय ही एक बहुत बड़ा आगे का कदम है।

मुझे अभी यह नही मालूम कि मैं अमरीका कब जा सकूंगी। अभी मुझे यहां की बातों पर ध्यान देना है और इसके अलावा पुराने गैस्ट्रिक फोड़े के बार-बार उभर आने के कारण मुझे ऐसा नही लगता कि मैं गर्मियां बर्दाश्त कर सकूंगी और कौन जाने पतझड़ के आते-आते आज का हवाई रास्ता ही बन्द हो जाय, जोकि यदि मिस्र तोब्रुक की ओर बढ़ा तो होकर रहेगा। उस हालत मे मैं समझती हूं कि मुझे रूस के रास्ते जाना पड़ेगा, लेकिन आप तो जानते ही है कि यदि सम्भव हो सका तो मैं हिंदुस्तान के रास्ते जाना चाहती हूं ताकि मैं आपकी एक झलक ले सकूं।

शुभकामनाओं सहित,

आपकी,

मे. सु. च्यां.

श्री जवाहरलाल नेहरू, हिंदुस्तान

३४९ एस. एच. शेन की ओर से

नई दिल्ली

८ जुलाई १९४२

और भारतीय समस्या का हल आसान हो जाय।—च्याग काई-शेक"

बडी ही कृपा हो यदि आप इस तार को मेरे अभिवादनसहित महात्मा गाधी के सामने रख दे, जिनसे मिलने का सौभाग्य मुझे नवम्बर १९४० मे प्राप्त हुआ था।

इस अवसर पर मैं आपकी आजकल हो रही बैठक मे सफलता की कामना करता हू।

आपका,
एस. एच शेन

पडित जवाहरलाल नेहरू,
वर्धा

३५० लैम्पटन बैरी की ओर से

अमरीका के राष्ट्रपति के निजी प्रतिनिधि
का दफ्तर,
नई दिल्ली
४ अगस्त १९४२

प्रिय पडित नेहरू,

मै आपके पास कर्नल जॉनसन का हवाई डाक से आया हुआ एक पत्र फौरन भेज रहा हू, जो अभी-अभी सुरक्षित हाथो से मेरे पास पहुचा है।

मुझे उम्मीद है कि आपको मेरा यह सन्देश मिल गया है कि अमरीकी समाचारपत्रो की जो भी टीका-टिप्पणिया मेरे पास है, वे सब स्थानीय पत्रो मे छप चुकी है। जहातक मै निश्चित रूप से मालूम कर सका हू, ये टिप्पणिया अमरीकी समाचारपत्रो की सर्वसम्मत प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है।

उम्मीद है कि ऐन मौके पर कोई-न-कोई ऐसी बात अवश्य होगी, जिससे आन्दोलन को आरम्भ करने की आवश्यकता से बचा जा सकेगा। मुझे विश्वास है, आप भी यही चाहते है कि आन्दोलन की आवश्यकता न पडे।

आपका,
लैम्पटन बेरी

पंडित जवाहरलाल नेहरू
बम्बई

फिर से—

इस पत्र के वाहक को इसमें लिखी गई बातों की जानकारी नहीं है।

एल. जी.

३५१. क्लेयर बूथ लूस की ओर से

[यह पत्र मूलतः श्री वेन्डल विल्की को सौंपा गया था। उस समय मैं अहमदनगर किले की जेल में था। बहुत समय बाद यह पत्र मेरे पास निम्न-लिखित टिप्पणी के साथ भेजा गया—

"२ नवम्बर १९४२। यह पत्र एक बार सारे संसार की सैर कर चुका है। इसे श्रीमती लूस ने श्री विल्की को तब दिया था जब वह अमरीका से रवाना हुए थे। अब यह आपके पास श्री कू की कृपा से पहुंचाया जा रहा है।]

ग्रीनविच, कोनेक्टिकट
२५ अगस्त १९४२

प्रिय जवाहरलाल नेहरू,

यदि यह पत्र महान सन्देशवाहक श्री वेन्डल विल्की द्वारा, जिन्हें यह सौंपा गया है, अन्ततः आपके हाथों तक पहुंचा दिया जाता है, तो सचमुच ही विश्वास किया जा सकता है कि हम युद्ध को जीतने जा रहे हैं। इस पत्र का वेन्डल विल्की द्वारा हिंदुस्तान में पहुंचा दिया जाना हमारे लिए, संयुक्त राष्ट्र के लिए और आप हिंदुस्तानियों के लिए, एक बड़े महत्त्व की बात होगी। इसका मतलब यह होगा कि हमारे युद्ध-लक्ष्य के बारे में सत्य की खोज अन्ततः आरम्भ हो गई है, क्योंकि श्री विल्की अपने व्यक्तित्व, अपने मस्तिष्क और अपने हृदय द्वारा एक अल्पसंख्यक पार्टी के राजनैतिक लक्ष्यों का नहीं, बल्कि अमरीकी जनता के बहुमत की सत्यतम महत्त्वाकांक्षाओं और आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मुझे कई सूत्रों से मालूम हुआ है कि अमरीका की तथा अमरीका के वास्तविक युद्ध-उद्देश्य की सच्ची जानकारी अपने असली रूप में आज हिंदु-स्तान में कितनी कम पहुंच पाती है। इसी तरह हमें भी यहां हिंदुस्तान

है कि सारे एशिया मे प्रजातन्त्र तथा संयुक्त राष्ट्र के हितो के आप ही सबसे बडे और सबसे सच्चे मित्र है। किन्तु आपमे से कितनो को पता है कि इधर पश्चिम मे उनके (प्रजातन्त्र तथा संयुक्त राष्ट्र के हितो के) सबसे बडे और सबसे सच्चे मित्र श्री विल्की है? निश्चय ही आप दोनो का मिलन फलदायक होगा। केवल सनकी लोग इसमे शका करेगे। मुझे कोई शका नही है।

और अब वह अपने बमवर्षक वायुयान मे अपनी लम्बी यात्रा पर रवाना हो रहे है। अगर यह पत्र आपके पास पहुचा भी तो कई महीनो के बाद पहुच पायेगा। मै हार्दिक प्रार्थना करती हू कि यह पत्र आपको सकुशल और स्वस्थ पाये।

इस पत्र मे जो आशा भरी हुई है वह शब्दो द्वारा व्यक्त की जा सकने-वाली किसी भी आशा मे इतनी अधिक बडी है कि मै उसे शब्दो मे बाधने की चेष्टा करते समय अपनेको अज्ञानी और अयोग्य समझ रही हू। आप तो जानते ही है कि सद्भावनापूर्ण स्त्री-पुरुष सभी जगह है—अमरीका मे, हिंदुस्तान और ग्रेट ब्रिटेन मे भी—और वे सभी इस बात की चेष्टा कर रहे है कि आपस मे मिल-जुलकर युद्ध और शान्ति पर विजय पा सके।

जल्दी मे और गहरे आदरसहित,

आपकी,

क्लेयर बूथ लूस

३५२ आसफ अली की ओर से

[भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की वर्किंग कमेटी के मेंबर अगस्त सन् १९४२ में गिरफ्तार किये गए और अहमदनगर किले की जेल में २८ मार्च सन् १९४५ तक एक साथ रखे गये। उसके बाद उन्हें धीरे-धीरे अलग

करके अपने-अपने सूबों मे भेज दिया गया। २८ मार्च को मुझे और नरेन्द्रदेव को यू. पी. में एक के बाद दूसरे कई जेलो मे भेजा गया। दूसरे लोग अहमदनगर किले से अप्रैल मे बाद की तारीखो मे गये। आसफ अली को पंजाब की एक जेल मे भेजा गया, जहां से उन्होने नीचे लिखी चिट्ठी भेजी। अपने इस खत मे उन्होने मेरे अहमदनगर किले की जेल से चलने का हवाला दिया है।]

सब-जेल,
गुरुदासपुर (पंजाब)
३० अप्रैल १९४५

प्यारे जवाहर,

तुम्हारी रवानगी मेरे और मौलाना के लिए जुदाई का एक बहुत बडा सदमा थी। दूसरे दिन सुवह हम लोगो ने तुम्हारी जुदाई को महसूस किया। जब मेरी रवानगी का वक्त आया तो मौलाना के चेहरे पर उदासी छा गई।

मेरे पास इतनी खबरे है कि दिल मे समा नही रही है, और जो सिफर की हद तक अहम है। सिफर से मेरा मतलव उस रूहानी सिफर से है, जिससे सारे लोग पैदा होते है यानी खुदावद ताला से। खबरे ये है

१ बोतल मे तुमने जो 'लिआना' की वेल लगाई थी उसे मय उसकी हवाई जडो और सूखी पत्तियो के मैने अपनी उदार वसीयत के तौर पर माली-चौकीदार पिराजी के पास छोड दिया। वह आखिरी वक्त तक सचमुच बडी भलमनसाहत के साथ पेश आया। जव मरचेण्ट मेरी रवानगी के वक्त मुझे रुखसत करने आया तो मै उस जिम्मेवरी से भी वरी हो गया जो तुमने मेरे सुपुर्द की थी। शाखो के गमलो (?) मे जो गुलाव के पौधे थे उन्हे मैने मरचेण्ट के सुपुर्द कर दिया और उसे कह दिया कि वह उनका जो चाहे करे। अखीर मे सन्दक ने खुशी से उन्हे यहा से उखाड़कर मरचेण्ट के वगीचे मे लगाने की जिम्मेवरी ले ली। जो वाकी लोग रह गये उन्होने कॉफी-क्लव को फिर से चलाने की हल्की-सी कोशिश की, लेकिन वह चल न सका, हालाकि यह कोशिश महज जुवानी कोशिश थी। हम लोग वहुत थोड़े-से आदमी रह गये थे और सव-कुछ उखडा-उखड़ा-सा था। ऐसी सूरत

मे कोई नई चीज शुरू नही की जा सकती थी। लेकिन फूलो की मुरझाती हुई क्यारियो के पास अपना हस्व-मामूल चक्कर लगाने का रोज का प्रोग्राम मैने बन्द नही किया। बैडमिंटन खेलने का कोर्ट तो खुले हुए जख्म की तरह बन गया। लेकिन बास्केटबाल टीमो ने आखीर तक अपना जोश कायम रखा। चलते-चलते राशन मे मिली हुई १५ दिनो की चीनी का जखीरा मेरे पास जमा हुआ था। उसे फलाहारियो मे बटवाने के लिए मुझे अपनी आखिरी वसीयत और करार मे शामिल करना पडा। वसीयत की तामील के लिए मैने सिर्फ मौलाना को मुकर्रर किया। हा, एक नई और प्यारी-सी बिल्ली आ गई (असली मछुए के खानदानकी) और मै उसके लिए दो तश्तरी दूध अलग रखनेवाला था कि मुझे खयाल हुआ कि यदि राशन जारी रहना बन्द हो गया (साफ है वह जारी नही रह सकता) तब इसके साथ बेरहमी होगी और तब मैने जजबात को दबा दिया। जो लोग यहा से चले गये उनकी कमी के अलावा बाकी सब चीजे जैसी-की-तैसी है। (यूनान के एक पुराने किस्से के मुताबिक) चारोन ने मेरी भी नाव लेकर मुझे अब स्टिक्स नदी के दूसरे किनारे पर पार लगा दिया है।

२ सपने मे मुझे खयाल न था कि यह सफर मेरे लिए घटनाओ से इतना भरा साबित होगा। शुरू मे जिस्मानी थकावट बराबर बढती गई और सेहत गिरती चली गई। रास्ते मे नीद बिल्कुल उड गई और मैने अपने लिए सोच-समझकर जो रोजमर्रा का काम लिया था, वह बिल्कुल बेतरतीब हो गया। इन दोनो बातो का नतीजा दिल्ली पहुचते-पहुचते यह हुआ कि मेरे जिस्म और दिमाग, दोनो की हालत हद-दरजे नाजुक हो गई। इतने मे अचानक मैने यह महसूस किया कि मै फिर कैदखानो के सीखचो के पीछे बन्द कर दिया गया हू। मेरी याददाश्त पर इस सारे सफर का एक निशान बाकी रह गया है।

३ हस्व-मामूल अखबारो मे जो कुछ छपा, सब गलत। एक खबर तो यह थी कि मै 'कुछ रिश्तेदारो' से 'आसू-भरी खामोशी' के साथ मिला। यह खबर तो मै समझता हू कि अखबारो की रगसाजी थी। दूसरी खबर यह छपी कि भूलाभाई के नाम मेरा एक 'गैर-सियासी पैगाम' सरकार ने रोक लिया। यह खबर भी एक अच्छी दिमागी उडान थी। तीसरी और

आखिरी खबर यह छपी कि, 'शक किया जाता है कि मुझे दिल की बीमारी हो गई है।' यह हमदर्दी से भरा हुआ एक अदाज था। निशाना यहा भी जरा गलत ही लगा। लेकिन अखबारो का कोई कर क्या सकता है! वे तो खबरो के लिए भूखे रहते है। सरकारी तौर पर इन खबरो को गलत कहने मे करीब-करीब डेढ हफ्ता या इससे भी कुछ ज्यादा लग गया। लेकिन अखबारो की चक्की अल्लामिया की चक्की की तरह धीरे-धीरे कुछ-न-कुछ पीसती और निकालती ही रहती है।

४ (कानूनी दस्तावेज के तर्ज पर या पुराने अच्छे 'सेक्रेटरीज'[1]—हिज्जे पर ध्यान न दे—की तरह मैने पैराग्राफो पर नम्बर डाल दिये है, इससे चिढे नही)। किस्सा-कोताह जब मै यहा पहुचा तो मेरा वजन १००-१०१ पौड निकला। रास्ते मे ४-५ पौड वजन कम हो गया। यहां जब आया तो दर्द के मारे सर फटा जा रहा था। जो जिस्मानी शिकायते, खामोश पडी हुई थी वे जागकर उभर आई थी। तब 'कुरेद-कुरेदकर उन्हे निकालने' और जमकर रहने की कार्रवाई शुरू हुई। यहा तो बिल्कुल नई हालते थी और साथ-ही-साथ यहा के कानून-कायदे भी दूसरे थे। उनके साथ अपनी निजी जरूरतो की नजर से हर घटे मेल बैठाने का काम शुरू हुआ। यहा के इतजाम को देखते हुए कामचलाऊ सूरत निकालने और यहा अपनी जिन्दगी की किश्ती के लिए लगर खोजने मे मुझे और १५ दिन लग गये।

५ अब मैने 'सेहत बहाल करने की तरफ' अपने दिमाग को लगाया है। हर तरह का दिमागी काम मैने बन्द कर दिया है। खुशकिस्मती से जो काम मैने हाथ मे ले रखा था उसे खत्म कर दिया, क्योकि इस वक्त शायरी भी मुझसे रुखसत हो चुकी है। तुम जानते हो, बाज मरतबा छोटी-छोटी अड़चने दिमाग से शायरी का रुझान खत्म कर देती है। मैने महज मजाक मे एक छोटी-सी चीज लिखनी शुरू की थी और नतीजा बहुत हौसला बढाने-वाला था। जबकि अभी मैने दीबाचा के तौर पर नज्म की सौ के करीब सतरे लिखी थी कि यह तब्दीली आ गई। इनको अपनी पूरी कोशिश करके भी मै आगे नही बढा सका। इसलिए मैने उस मनसूबे को छोड़ दिया। अगर दिमाग की शायराना कैफियत फिर लौट आई तो अधूरे काम

[1] अंग्रेजी में 'Secretarese' लिखा गया है।

को मै फिर से शुरू कर सकता हू । इस बात तो मै फिर से अपनेको मुआफिक करने के दर्द में मुब्तिला हू।

६ यह इलाका पहाडी दामन का इलाका है । यहा से जो बरफीली चोटिया दिखाई देती है उनके नीचे कही रोरिक का आश्रम है । मै केवल अन्दाज लगा रहा हू । यह पठानकोट से चन्द मील के फासले पर है । इस इलाके मे फैली हुई हिमालय की पूरी कतारें यहा से दिखाई देती है । वह बर्फ से ढकी हुई है । बिल्कुल ऐसा महसूस होता है, जैसे तुम्हारे सामने गुलमर्ग और खिलनमर्ग हो । लेकिन यहा का मौसम बदलता हुआ है और कभी-कभी इतनी गर्मी पडती है कि दम घुटता महसूस होता है । मुझे उम्मीद है कि जल्द ही पता मिलेगा । मेरे रहने का इन्तजाम अस्पताल के एक हिस्से मे किया गया है । पहले यहा गोदाम था । मेरे यहा पहुचने पर उसे खाली किया गया । मै यहा अकेला रखा गया हू । और सब चीजो को देखते हुए मै इसे राहत समझता हू । यह एक बहुत छोटा-सा जेल है । अहमदनगर के किले मे जो बेलदीज कोशक था करीब उतना ही बडा यह जेल है । नही, यह कुछ थोडा बडा है । लेकिन यह जेल है । जेल के सब लवाजमात यहा है—सीखचे, रोकथाम, तालाबन्दी वगैरह । इस कमरे में मरीजो के कपडो के लिए एक अलमारी थी । अब वह अलमारी मेरे लिए सिगारमेज, नाश्ताखाना, कबाडखाना, खाने के बरतन रखने, डोली और गोदाम सब तरह का काम दे रही है । बेशक वह मच्छरो का पनाहघर भी है । इस लिहाज से यहा कुछ तब्दीली है । मै शर्त लगा सकता हू कि तुम्हारे यहा इससे ज्यादा मच्छर होगे । मक्खियो और जाने और अनजाने किस्म के खटमलो का जहातक ताल्लुक है, मै बाजी ले जाऊगा । हम लोग (हमसे मुराद जेल से है) खुद अपने लिए आम, जामुन और शहतूत पैदा कर लेते है । फलो की भी बहुतायत है—हालाकि बहुत बढिया किस्म के नही । चार हफ्तो की जुदाई को क्या यह खत पूरा नही करता ?

तुमको और नरेन्द्रदेव को प्यार,

तुम्हारा,
आसफ

फिर से—

किताबो के बारे मे हमारा जो करार है उसे महरबानी करके

भूलियेगा नही । हफ्तेवार और महावारी अखबार दिल्ली से मगाने का इतजाम कर रहा हू । अभी तक यहा हर चीज उखडी-उखडी-सी है—अभी तक ऐसा नही मालूम होता कि यही रहना है । रूजवेल्ट की खबर कितनी दर्दनाक है । सान फ्रासिसको मे सरूप का हाल-चाल मै गौर से पढता रहता हू । लेकिन यहा के अखबारो मे बहुत कम खबरे छपती है । मैने सरूप को लिखा है ।

३५३ तेजबहादुर सप्रू की ओर से

मसूरी
१५ जून १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

मै दावे से कह सकता हू कि एक-दो दिन मे आप इलाहाबाद मे होगे । यह खत तो महज आपको यह बताने के लिए है कि पिछली रात एक दोस्त से, जिसने रेडियो पर वाइसराय की तकरीर सुनी थी, यह जानकर कि आप छोड दिये गए है, मुझे बहुत तसल्ली हुई है । आपकी रिहाई का मै दिल से स्वागत करता हू और विश्वास करता हू कि आप जिस किसी भी फैसले पर पहुचे, वह मुल्क के सबसे ज्यादा फायदे का हो ।

अखबारो मे था कि आपको कुछ हरारत रहा करती है । मुझे उम्मीद है कि आपने उससे छुटकारा पा लिया होगा । यह बहुत जरूरी है कि किसी शोर-शराबे से दूर जगह पर आप थोडा आराम करे, लेकिन मुझे डर है कि अगले कुछ हफ्तो मे आपपर बहुत वोझ रहेगा ।

मै यहा १३ जून को आया हू, सिर्फ आनन्द को देखने, जिसकी सेहत मे अच्छा सुधार हो रहा है और अब वह इस लायक है कि धीरे-धीरे टहल सके । २५ जून तक मै यहा रहूगा । उसके वाद इलाहाबाद चला जाऊगा ।

शुभ कामनाओ-सहित

आपका,
तेजबहादुर सप्रू

पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद

३५८. मेघनाद साहा की ओर से

यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑव साइन्स,
डिपार्टमेंट ऑव फिजिक्स,
कलकत्ता
१२ अगस्त १९४५

प्रिय पण्डितजी,

श्रीनगर से लिखे २८ जुलाई के आपके पत्र को पाकर मुझे प्रसन्नता हुई। मै आशा करता हू कि काश्मीर के स्वास्थ्यप्रद वातावरण मे कुछ हफ्ते रहने से आप अपनी सेहत सुधार सके होगे, हालाकि अखबारो से तो मालूम होता है कि आप बहुत कम विश्राम कर सके है।

मै कभी भी इलाहाबाद आने को तैयार रहूगा, बशर्ते कि समय रहते मुझे पता चल जाय कि आप वहा कब होगे और सफर की सहूलियत मिल जाय, जो इन दिनो मुश्किल है। अगर ४८ घटे पहले मुझे सूचना मिल जाय तो सभवत यह लिखने की जरूरत नही है कि मै आपसे मिलने के लिए और ब्रिटेन, सयुक्त राज्य अमरीका और सोवियत रूस के अपने सारे अनुभव आपको सुनाने को उत्सुक हू।

कलकत्ता विश्वविद्यालय ने कमला-व्याख्यान-माला के लिए आपको और मौलाना आजाद को नियुक्त किया है, बावजूद मुस्लिम-लीगियो के जोरदार विरोध के। उनका कहना था कि मौलाना अग्रेजी मे अपने विचारो को प्रकट नही कर सकते है। हमे खुशी होगी, अगर आपको अगस्त मे इन व्याख्यानो को देने का समय मिल सके। विषय पूरी तरह आपपर छोड दिया गया है। हा, अगर आपने विषय का निश्चय नही कर लिया हो तो मै 'राष्ट्रीय योजना' का विषय सुझाऊगा।

मेरा विश्वास है कि अब समय आ गया है जब काग्रेस को, अगर वह सत्तारूढ हो जाय तो, अपने कार्यक्रम की बाजाब्ता घोषणा कर देनी चाहिए। उसका वर्तमान कार्यक्रम तो पुरानी दुनिया की विचार-धाराओ से बधा हुआ है, जैसे चर्खा, हाथबुनाई और मध्ययुगीन आधार पर सत्ता का विभाजन, आदि-आदि। 'हिंदुस्तान की जनता को शानदार जिदगी' के लिए काम करने के विचार पर आधारित नये नारे हमे देश को देने चाहिए। इसका

आधार हो विज्ञान का पूरा-पूरा उपयोग, शक्ति-स्रोतो, रासायनिक, खनिज और कृषि-उद्योगो का विकास, जल और जमीन का सामूहिक और बहु-उद्देशीय प्रयोग, काम के नये आधारो पर समाज का पुनर्निर्माण। मै आपके लिए दो लेख भेज रहा हू, जिनमे से एक 'नेचर' मे प्रकाशित हुआ था और दूसरा 'हिंदुस्तान स्टैंडर्ड' मे। इनमे मेरे विचार प्रकट किये गए है।

सादर आपका,
मे. ना. साहा

पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
इलाहाबाद।

३५५. एस. एच. शेन की ओर से

चीनी जनतंत्र के कमिश्नर का आफिस,
नई दिल्ली
१५ अगस्त १९४५

प्रिय पडित नेहरू,

आपको शायद याद होगा कि सन् १९४० के पतझड़ मे परीक्षा-विभाग (एग्जामिनेशन यू यान) के अध्यक्ष हिज एक्सेलेसी डा. ताई ची-ताओ हिंदुस्तान की यात्रा करने आये थे। वह एक शिष्टमडल के प्रधान थे, जिसका सदस्य होने का मुझे भी सौभाग्य प्राप्त था। यह शिष्टमडल मुख्य रूप से आपकी एक साल पहले की गई चीन-यात्रा के बदले मे आया था। दुर्भाग्य से हिंदुस्तान पहुचने पर हमारे लिए आपसे मिलना नामुमकिन हो गया था।

अपनी निराशा को व्यक्त करने के लिए डा ताई ने एक कविता लिखी थी। उसे आपके पास भेजने के लिए उन्होने श्रीमती पडित को दे दिया था, जिन्होने इलाहाबाद मे उनका हार्दिक स्वागत किया था।

नई घटनाओ को निगाह मे रखते हुए डा. ताई ने मुझसे कहा है कि मै उनकी शुभ कामनाएं आपके और मौलाना आजाद के पास पहुचा दू। उन्होने इस कविता की एक प्रति भी स्वय अपने सुन्दर अक्षरो मे लिखकर भेजी है। वह अपनी सुन्दर लिखावट के लिए प्रसिद्ध है।

मैंने इसका अंग्रेजी में तर्जुमा करने की कोशिश की है, लेकिन निश्चय ही आप इस बात को स्वीकार करेंगे कि कोई भी कविता—खास तौर से चीनी—जब किसी विदेशी भाषा में अनूदित होती है तब उसकी मौलिक सुन्दरता बिल्कुल नष्ट हो जाती है।

शुभ कामनाओं सहित

आपका सस्नेह,
एम. एच. शेन

पंडित जवाहरलाल नेहरू

पंडित जवाहरलाल नेहरू के प्रति

ढूंढ़ता आया हूं मैं आपको बहुत दूर व्यर्थ ही
स्मरण करता हुआ आपको एकान्त स्वर-लहरी में,
भाग्यशाली है वह जो सहेगा मानव-हित पीड़ा को,
हृदय लिये बुद्ध का और मस्तिष्क एक वीर का।

—ताई ची-ताओ

२५६. गोविन्दवल्लभ पन्त की ओर से

नैनीताल
१५ अगस्त १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

इस पत्र के साथ मैं गगनविहारी का पत्र अपने जवाब के साथ भेजता हू, क्योंकि मैंने स्वय इस प्रस्ताव पर मजूरी नही दी थी, इसलिए मैंने पहले इसे आपके पास नही भेजा। तो भी बाद में मैंने अखबारो मे छपी खबरें देख ली कि इस समय मामले ने आपका ध्यान आकृष्ट कर रखा है। 'सिविल एंड मिलिटरी गैजेट' के सवाददाता ने सचमुच इस आशय का एक निश्चित वक्तव्य दिया है। इसलिए गगनविहारी का सुझाव मैं आपके पास भेज रहा हूं। इस मामले मे मुझे अपने स्वय के विचारो को दुहराने की जरूरत नही है, क्योंकि उनको लिखे मेरे पत्र की जो नकल नत्थी है, उसमे वे पूरी तरह से लिखे गए है। इग्लैंड के मजदूर-दल से मुझे कोई खास लगाव नही है और मैं उस उत्साह और आशावादिता मे हिस्सेदार नही हू, जिसके साथ कुछ साथियो ने मजदूर सरकार के आने का स्वागत किया है। लेकिन शायद यह

आशा करना भी जरूरत से ज्यादा होगा कि वर्तमान परिस्थितियो मे एटली भी सतोषजनक रूप से शाति बनाये रखने मे अपनेको मुश्किल मे पायेगे। मै लास्की तथा मजदूर-दल की कार्य-समिति के खास सदस्यो की ओर से किसी भी दिन आपके लिए निमत्रण आने की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहा हू। क्रिप्स के रुख के बारे मे भी मेरा दिमाग साफ नही है। शिमला-सम्मेलन के असफल हो जाने के बाद उन्होने जो बयान दिया वह अस्पष्ट है और कुछ पहलुओ से बेचैनी पैदा करनेवाला भी। अपनी बातचीत के दौरान और अपने १९४२ के अभागे प्रस्तावो से सबधित कार्रवाइयो के बीच उन्होने जैसा व्यवहार किया उससे उन्होने अपनी साख और इज्जत नही बढाई है। आपके और मि जिन्ना के स्तर मे सतुलन कायम रखने की उनकी जरूरत से ज्यादा परवा करना न सिर्फ सावधानी की हद को पार कर गया, बल्कि बेवकूफी की हदतक पहुच गया। मि जिन्ना के लिए यह नरम सावधानी चर्चिल, एमरी और लिनलिथगो की वजह से कितनी थी और जिन्ना को खुश करने और अपनी ओर करने की उनकी स्वय की चिता की वजह से कितनी थी, यह कोई नही कह सकता है। किसीको भी आज इसकी फिक्र करने की जरूरत नही है। परन्तु असल वात तो यह है कि आज उनका रुख क्या होगा? क्योकि हिदुस्तान से सबध रखनेवाले हर मामले मे उनकी वात का निश्चय ही असर होगा। मै केवल यही उम्मीद करता हू कि वर्तमान परिस्थितियो में, जबकि कामन्स-सभा मे मजदूर-दल के पीछे अत्यधिक बहुमत है, व्यक्तियो तथा सस्थाओ की समानता के इस तरह के ऊल-जलूल विचार की खपत वह अपने सिर पर सवार नही होने देगे। तो भी मै पूरी तरह सदेहो से मुक्त नही हू। वह आदत से सनकी नही है, परन्तु पहेली पैदा करनेवाले जरूर है।

काश्मीर से वापस होने तक आप करीब एक महीना वहा विता चुके होगे। आशा है, स्वास्थ्यकर वातावरण और शक्ति देनेवाली आबोहवा और साथ ही अपेक्षाकृत विश्राम—इन सबने आप पर अच्छा असर डाला होगा। अहमदनगर मे रहने के अपने आखिरी दिनो मे मै इस खयाल को दूर नही कर सका कि अनजान मे आपका स्वास्थ्य दिन-ब-दिन बराबर गिरता जा रहा है और मुझे अपनी बेबसी और अशक्ति पर भीतर-ही-भीतर झुझलाहट होती रहती थी कि मै आपकी कोई सेवा नही कर पा रहा हू।

मै आशा करता हू कि अब इस कमी की आपने पूर्ति कर ली होगी और अपनी सामान्य शक्ति और उत्साह प्राप्त कर लिया होगा।

मै आज अल्मोडा जा रहा हू और वहा लगभग पद्रह दिन रहने का विचार है।

आपका,
गोविन्दवल्लभ पन्त

३५७ सिह शिन हेन्फ की ओर से

चीनी जनतत्रीय कमिश्नर का दफ्तर,
नई दिल्ली,

संदर्भ-संख्या—५६६६ २२ अगस्त १९४५

प्रिय पडित नेहरू,

कुछ दिनो के लिए कमिश्नर के चुगकिंग चले जाने के कारण मै आपको जनरलिसिमो के आदेशानुसार निम्नलिखित तार भेज रहा हू—

"जापान के आत्मसमर्पण पर आपने जो बधाइया भेजी है, उसके लिए मेरा हार्दिक धन्यवाद। विजय के इस दिन चीनी जनता एक बार फिर अपने को सयुक्त राष्ट्र के ऊचे आदर्शो और उन शाति-प्रयत्नो के प्रति, जो अभी करने को बाकी है, अपनी सेवाए समर्पित करती है। मुझे विश्वास है कि मित्रता के जिस बधन ने चीन और भारत को एकता के सूत्र मे बाधा है वह भविष्य मे और भी मजबूत बनेगा और हमारे देशो की जनता नई विश्व-व्यवस्था की स्थापना मे बहुत अधिक योग दे सकेगी—च्याग काई-शेक।"

आशा है, आप इसके अनुसार कार्य करेंगे।

सस्नेह आपका,
सिह शिन हेन्फ

पडित जवाहरलाल नेहरू

३५८. महात्मा गाधी की ओर से

५ अक्तूबर १९४५

चि. जवाहरलाल,

तुमको लिखने का तो कई दिनो से इरादा किया था, लेकिन आज ही उसका अमल कर सकता हू। अग्रेजी मे लिखू या हिदुस्तानी मे, यह भी

मेरे सामने सवाल रहा था। आखर मे मैने हिदुस्तानी मे ही लिखने का पसद किया ।

पहली बात तो हमारे बीच मे जो बडा मतभेद हुआ है, उसकी है। अगर वह भेद सचमुच है तो लोगो को भी जानना चाहिए, क्योकि उनको अधेरे मे रखने से हमारा स्वराज का काम रुकता है। मैने कहा है कि 'हिद स्वराज' मे मैने लिखा है, उस राज्य-पद्धति पर मै बिल्कुल कायम हू । यह सिर्फ कहने की बात नही है, लेकिन जो चीज मैने १९०८ साल मे लिखी है उसी चीज का सत्य मैने अनुभव से आज तक पाया है। आखर मे मै एक ही उसे माननेवाला रह जाऊ, उसका मुझको जरा-सा भी दु ख न होगा, क्योकि मै जैसे सत्य पाता हू, उसका मै साक्षी बन सकता हू। 'हिद स्वराज' मेरे सामने नही है। अच्छा है कि मै उसी चित्रको आज अपनी भाषा मे खीचू। पीछे वह चित्र सन् १९०८ जैसा ही है या नही, उसकी मुझे दरकार न रहेगी, न तुम्हे रहनी चाहिए। आखर मे तो मैने पहले क्या कहा था, उसे सिद्ध करना नही है। आज मै क्या कहता हू, वही जानना आवश्यक है। मै यह मानता हू कि अगर हिदुस्तान को सच्ची आजादी पानी है और हिदुस्तान के मारफत दुनिया को भी, तब आज नही तो कल देहातो मे ही रहना होगा, झोपडियो मे, महलो मे नही। कई अरब आदमी शहरो मे और महलो मे सुख से और शाति से कभी रह नही सकते, न एक दूसरो का खून करके मायने—हिसा से, न झूठ से—यानी असत्य से। सिवाय इस जोडी के (याने सत्य और अहिसा) मनुष्य-जाति का नाश ही है, उसमे मुझे जरा-सा भी शक नही है। उस सत्य और अहिसा का दर्शन हम देहातो की सादगी मे ही कर सकते है। वह सादगी चर्खा मे और चर्खा मे जो चीज भरी है उसीपर निर्भर है। मुझे कोई डर नही है कि दुनिया उल्टी ओर ही जा रही दिखती है। यो तो पतगा जब अपने नाश की ओर जाता है तब सबसे ज्यादा चक्कर खाता है और चक्कर खाते-खाते जल जाता है। हो सकता है कि हिदोस्तान इस पतगे के चक्कर मे से न बच सके। मेरा फर्ज है कि आखर दम तक उसमे से उसे और उसके मारफत जगत को बचाने की कोशिश करू। मेरे कहने का निचोड यह है कि मनुष्य-जीवन के लिए जितनी जरूरत की चीज है, उसपर निजी काबू रहना ही चाहिए—अगर न रहे तो व्यक्ति बच ही नही सकता है। आखर तो जगत

देखता हू तो पुरानी वात इस नये लिवास मे मुझे बहुत मीठी लगती है। अगर ऐसा समझोगे कि मै आज की देहातो की वात करता हू तो मेरी वात नही समझोगे। मेरा देहात आज मेरी कल्पना मे ही है। आखिर मे तो हरएक मनुष्य अपनी कल्पना की दुनिया मे ही रहता है। इस काल्पनिक देहात मे देहाती जड नही होगा—शुद्ध चैतन्य होगा। वह गदगी मे, अधेरे कमरे में जानवर की जिदगी वसर नही करेगा, मरद और औरत दोनो आजादी से रहेंगे और सारे जगत् के साथ मुकावला करने को तैयार रहेंगे। वहा न हैजा होगा, न मरकी होगी, न चेचक होगी। कोई आलस्य मे रह नही सकता है, न कोई ऐश-आराम मे रहेगा। सवको शारीरिक मेहनत करनी होगी। इतनी चीज होते हुए मै ऐसी वहुत-सी चीज का ख्याल कर सकता हू जो वडे पैमाने पर वनेगी। शायद रेलें भी होगी, डाक-घर भी होगे। क्या होगा, क्या नही, उसका मुझे पता नही। न मुझको उसकी फिकर है। असली वात को मै कायम कर सकू तो वाकी आने की और रहने की खूवी रहेगी। और असली वात को छोड दू तो सव छोड देता हू।

उस रोज जव हम आखर के दिन वर्किंग कमेटी मे वैठे थे तो ऐसा कुछ फैसला हुआ था कि इसी चीज को साफ करने के लिए वर्किंग कमेटी २-३ दिन के लिए वैठेगी। वैठेगी तो मुझको अच्छा लगेगा। लेकिन न वैठे तव भी मै चाहता हू कि हम दोनो एक दूसरे को अच्छी तरह समझ ले। उसके दो सवव है। हमारा सवध सिर्फ राजकारण का ही नही है। उससे कई दरजे गहरा है। उस गहराई का मेरे पास कोई नाप नही है। वह सवध टूट भी नही सकता। इसलिए मै चाहूगा कि हम एक दूसरे को राजकारण मे भी भली-भाति समझे। दूसरा कारण यह है कि हम दोनो मे से एक भी अपनेको निकम्मा नही समझते है। हम दोनो हिदुस्तान की आजादी के लिए ही जिदा रहते है और उसी आजादी के लिए हमको मरना भी अच्छा लगेगा। हमे किसीकी तारीफ की दरकार नही है। तारीफ हो या गालिया—एक ही चीज है। खिदमत

मे उसे कोई जगा ही नही है। अगरचे मै १२५ वर्ष तक सेवा करते-करते जिदा रहने की इच्छा करता हू तब भी मै आखर मे बूढा हू और तुम मुकाबले मे जवान हो। इसी कारण मैने कहा है कि मेरे वारस तुम हो। कम-से-कम उस वारस को मै समझ तो लें और मै क्या हू, वह भी वारस समझ ले तो अच्छा ही है और मुझे चैन रहेगा।

और एक बात। मैने तुमको कस्तूरबा ट्रस्ट के बारे मे और हिंदुस्तानी के बारे मे लिखा था। तुमने सोचकर लिखने का कहा था। मै पाता हू कि हिंदुस्तानी सभा मे तो तुम्हारा नाम है ही। नाणावटी ने मुझको याद दिलाया कि तुम्हारे पास और मौलानासाहब के पास वह पहुच गया था और तुमने अपने दस्तखत दे दिये है। वह तो सन् १९४२ मे था। वह जमाना गुजर गया। आज हिंदुस्तानी कहा है, उसे जानते हो। उसी दस्तखत पर कायम हो तो मै उस बारे मे तुमसे काम लेना चाहता हू। दौड-धूप की जरूरत नही रहेगी। लेकिन थोडा काम करने की जरूरत रहेगी।

कस्तूरबा स्मारक का काम पेचीला है। ऊपर जो मैने लिखा है,वह अगर तुमको चुभेगा या चुभता है तो कस्तूरवा स्मारक मे भी आकर तुमको चैन नही रह सकेगा, यह मै समझता हू।

आखर की बात शरत्बाबू के साथ कुछ चिनगारियां फूटी है, वह है। इससे मुझे दर्द हुआ है। उसकी जड मै नही समझ सका। तुमने जो कहा है, इतना ही है और बाकी कुछ नही रहा है तो मुझे कुछ पूछना नही है। लेकिन कुछ समझने जैसा है तो मुझको समझने की दरकार है।

इस खत के बारे मे अगर हमे मिलना ही चाहिए तो हमारे मिलने का वक्त निकालना चाहिए।

तुम काम बहुत कर रहे हो, तबीयत अच्छी रहती होगी। इन्दू ठीक होगी।

आनद भवन वापू के आशीर्वाद

इलाहाबाद।

३५१. महात्मा गांधी के नाम

आनंद भवन,
इलाहाबाद
९ अक्तूबर १९४५

प्रिय बापू,

लखनऊ से लौटने पर आज आपका ५ अक्तूबर का पत्र मिला। मुझे इस बात की खुशी है कि आपने इतने खुलासे से लिखा और मैं कुछ विस्तार में ही इसका जवाब देने की कोशिश करूंगा। लेकिन मैं उम्मीद करता हूं कि अगर उसमें कुछ देर हुई तो आप मुझे क्षमा करेंगे, क्योंकि इस वक्त मैं बहुत जरूरी कामों में फंसा हुआ हूं। मैं अभी यहां सिर्फ डेढ़ दिन के लिए आया हूं। दरअसल यह कहीं अच्छा होगा कि हम अनौपचारिक रूप से बात करलें, लेकिन फिलहाल मैं नहीं जानता कि ऐसा कब हो सकेगा। मैं कोशिश करूंगा।

संक्षेप में, मेरा खयाल है कि हमारे सामने सवाल सत्य बनाम असत्य या अहिंसा बनाम हिंसा का नहीं है। लोग मानते हैं, जैसा कि उन्हें मानना चाहिए कि हमारा मकसद सच्चा सहकार और शांतिपूर्ण पद्धति होनी चाहिए और जो सोसाइटी इनको बढ़ावा देती है, उसीको हासिल करना हमारा लक्ष्य है। सारा सवाल यह है कि ऐसी सोसाइटी कैसे हासिल हो और उसमें क्या-क्या बातें हों ? मेरी समझ में नहीं आता कि देहात जरूरी तौर पर सत्य और अहिंसा के मूर्त रूप क्यों हों। आम तौर पर हम कह सकते हैं कि देहात बौद्धिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत पिछड़े हुए हैं और पिछड़े हुए वायुमंडल में रहकर तरक्की नहीं की जा सकती। तंग दिमाग के लोगों के कहीं अधिक असत्य-भाषी और हिंसक होने की संभावना होती है।

इसके अलावा हमें कुछ मकसद अपने सामने रखने होंगे, जैसे खाने, कपड़े, मकान, शिक्षा, सफाई, वगैरा में पूर्णता। मुल्क के लिए और हरेक के लिए कम-से-कम इतना तो जरूरी होना चाहिए। इन मकसदों को सामने रखकर हमें इस बात को खास तौर पर देखना चाहिए कि इन चीजों को हम जल्दी-से-जल्दी कैसे हासिल कर सकते हैं। फिर मुझे यह भी लगता है कि आवश्यक यातायात के मौजूदा साधनों और आधुनिक सुविधाओं को चालू रखना और उनका विकास होना जरूरी है।

उनको स्वीकार किये बिना और कोई चारा ही नही। अगर ऐसा है तो जरूरी तौर पर बड़े-बड़े उद्योग एक हदतक रखने ही होगे। शुद्ध देहाती सोसाइटी के साथ इनका ताल-मेल कहातक बैठेगा ? निजी तौर पर मेरी उम्मीद है कि बडे या छोटे दोनो तरह के उद्योग, जहातक मुमकिन है, विकेन्द्रित होने चाहिए, और अब बिजली के विकास के कारण ऐसा सभव है। अगर देश मे दो तरह की अर्थ-व्यवस्थाए रहे तो या तो उनके दोनो के बीच कशमकश होगी या एक दूसरी पर छा जायगी।

इस सदर्भ मे बाहरी हमले से राजनैतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता और सरक्षण के सवाल पर भी विचार करना होगा। मेरे खयाल मे यह हिन्दुस्तान के लिए मुमकिन नही है कि जबतक उसकी तकनीकी तरक्की न हो, वह असली तौर पर आजाद होगा। फिलहाल मै महज फौजो के खयाल से नही सोच रहा हू, बल्कि वैज्ञानिक उन्नति की बात मेरे सामने है। आजकल की दुनिया जिस ढग से चल रही ह, हम सास्कृतिक दृष्टि से भी तरक्की नही कर सकते, अगर हर क्षेत्र मे हमारी वैज्ञानिक खोज की मजबूत बुनियाद न हो। आज दुनिया मे ज्यादा-से-ज्यादा हथियाने की प्रवृत्ति अलग-अलग लोगो मे, दलो मे, और मुल्को मे बहुत जोर पर है और इससे झगडे और लडाइया होती है। हमारी पूरी सोसाइटी कम-ज्यादा इसीपर आधारित है। यह आधार खत्म होना ही चाहिए और उसकी जगह सहकार, न कि अलगाव, होना चाहिए। अलगाव आज नामुमकिन है। अगर यह मान लिया जाता है और सभव लगता है तो हमे इसे हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए, ऐसी अर्थ-व्यवस्था को ध्यान मे रखकर नही, जो बाकी दुनिया से कटी हुई है, बल्कि ऐसी अर्थ-व्यवस्था को ध्यान मे रखकर, जो बाकी दुनिया से मेल रखती है। आर्थिक या राजनैतिक दृष्टि से बाकी दुनिया से अलग होकर हिन्दुस्तान एक तरह का ऐसा शून्य क्षेत्र होगा, जो दूसरो की हथियानेवाली प्रवृत्तियो को बढावा देगा और इस तरह उससे झगडे बढेगे।

करोडो लोगो के लिए महलो का तो सवाल ही नही उठता। लेकिन इसकी भी कोई वजह नही कि क्यो न करोडो लोग आरामदेह मकानो मे रहकर सभ्यो जैसी जिदगी बिताये। आज के बहुत-से अति उन्नत शहरो मे बुराइया पनपी है, जो निदनीय है। शायद हमे इस प्रकार की जरूरत से

उसे मजूर करने की तो बात ही अलग है। आपने स्वय भी सिवा इसके कुछ छोटे-मोटे पहलुओ के कभी उसे मजूर करने को नही कहा।। अब आप ही फैसला करे कि कांग्रेस के लिए यह कहा तक ठीक है कि वह उन बुनियादी सवालो पर गौर करे, जिनका जीवन के विभिन्न दर्शनो से सबध आता है। मेरा खयाल है कि कांग्रेस जैसी सस्था को ऐसे मामलो के तर्क-वितर्क मे अपने को नही उलझाना चाहिए, जो लोगो के दिमागो मे भारी भ्रम पैदा करें, जिससे वे वर्तमान मे काम न कर सकें। इसका नतीजा यह भी हो सकता है कि देश मे कांग्रेस और दूसरो के बीच दीवार खडी हो जाय। बेशक, आखिरकार इस और दूसरे सवालो को आजाद हिन्दुस्तान के नुमाइदो को तय करना होगा। मुझे लगता है कि बहुत पुराने जमाने की नजर से इन सवालो पर विचार किया गया है और चर्चा हुई है और उन बडी-बडी तब्दीलियो पर कोई ध्यान नही दिया गया है, जो पिछली पीढी या उससे भी ज्यादा वक्त मे दुनिया भर मे हुई है। ३८ साल हो गये जब 'हिन्द स्वराज्य' लिखा गया था। तबसे दुनिया पूरी तरह बदल गई है, मुमकिन है कि उसकी दिशा गलत हो। जो हो, अगर हम इन सवालो पर गौर करे तो हमे मौजूदा असलियते, शक्तिया और मानवीय उपकरणो को, जो आज हमारे पास है, सामने रखना चाहिए, नही तो हम असलियत से दूर जा पडेगे। आपका यह कहना ठीक है कि दुनिया या उसका बडा हिस्सा अपना खात्मा करने पर तुला दिखाई देता है। हो सकता है कि जिस सम्यता का विकास हुआ है, उसके

दूषित बीज का यह अनिवार्य परिणाम हो। मेरे खयाल से ऐसा ही है। हमारे सामने समस्या यह है कि इस बुराई से छुटकारा कैसे मिले और उसके साथ ही वर्तमान मे अच्छाई को कैसे कायम रक्खा जाय, जैसी कि वह पहले थी। जाहिर है कि वर्तमान मे भी अच्छाई मौजूद है।

ये कुछ बिखरे विचार है, जो जल्दी मे लिख दिये गए है और मुझे डर है कि ये प्रस्तुत प्रश्नो के गभीर महत्त्व के प्रति न्याय नही करते। मुझे उम्मीद है कि आप मुझे बेतरतीबी से विचारो को रखने के लिए माफ करेगे। बाद मे मै इस विषय पर ज्यादा सफाई से लिखने की कोशिश करूगा।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा और कस्तूरबा निधि के सबध मे, जाहिर है कि, दोनो के प्रति मेरी सहानुभूति है और मेरे विचार मे वे अच्छा काम कर रही है। लेकिन वे जिस ढग से काम करती है, उसके बारे मे मै पूरी तरह आश्वस्त नही हू और मेरा खयाल है कि वह तरीका हमेशा मेरी पसद का नही होता। दरअसल मै उनके बारे मे इतना नही जानता हू कि पक्के तौर पर कुछ कह सकू। लेकिन आजकल अपने ऊपर जिम्मेदारियो का बोझ बढाने मे मेरी अरुचि पैदा हो गई है, जबकि मै महसूस करता हू कि वक्त की कमी के कारण शायद मै उन्हे अपने ऊपर नही ले सकता। अगले महीने और उससे भी कुछ ज्यादा समय मेरे और दूसरे लोगो के लिए गरमागरमी के होगे, ऐसी सभावना है। इसलिए मुझे यह मुनासिब नही लगता कि मै नाममात्र के लिए किसी जिम्मेदारी की कमेटी का सदस्य बनू।

शरत् बोस के बारे मे मै पूरी तरह अधेरे मे हू कि वह मुझसे क्यो इतने नाराज हो गये है। हो सकता है कि इसके पीछे विदेशी सबधो को लेकर मेरे आम नजरिये के प्रति उनकी कोई पुरानी शिकायत हो। मै आया सही था या गलत, पर मुझे लगता है कि शरत् ने बच्चो का-सा और गैर-जिम्मेदाराना ढग का काम किया है। शायद आपको याद होगा कि पुराने दिनो मे सुभाष ने स्पेन, चेकोस्लोवेकिया, म्यूनिख और चीन के प्रति काग्रेस के रुख को पसद नही किया था। शायद यह विचारो के पुराने भेद का असर है। मुझे नही पता कि इसके अलावा और क्या हुआ ?

अच्छा, आप नवम्बर के शुरू मे बगाल जा रहे है ? हो सकता है कि उन्ही दिनो मै भी तीन या चार दिन के लिए कलकत्ता जाऊ। अगर ऐसा

३६० अरुणा आसफ अली की ओर से

९ नवम्बर १९४५

प्रिय जवाहरलालजी,

आपने मेरे बारे मे जो मेहरबानी की बाते कही, उनके लिए मैंने आपका शुक्रिया अदा करना जरूरी नही समझा, क्योकि मै जानती थी कि वह मेरी निजी तारीफ नही थी। वह तो उन कम जाने-पहचाने सिपाहियो के तई अपनी इज्जत जाहिर करने का आपका तरीका था, जिन्होने पिछले तीन बरसो मे बगावत का झडा ऊचा रक्खा था।

मै उम्मीद कर रही थी कि आप जब पिछली मरतबा बबई आये थे तो मुझे याद करेगे। आप काम मे कितने घिरे है, यह जानकर मैंने अपने-आपको आपपर लादने की खास कोशिश नही की।

हमारी कल की बातचीत के लिए आपको कुछ बुनियाद देने की मुझे एक तरकीब सूझी है। मेहरबानी करके इन खतो को पढ लीजिये। शायद

मेरी सियासत को समझने मे आपको इनसे मदद मिले।

आपकी,
अरुणा

३६१. महात्मा गाधी की ओर से

पूना
१३ नवबर १९४५

चि जवाहरलाल,

हमारी कल की बात से मुझे तो बडा आनद हुआ। उससे अधिक बात कल तो कर नही सकते थे और मेरा खयाल ऐसा है कि हम एक ही वक्त मिलकर सब काम पूरा नही कर सकेगे। समय-समय पर हमे अवश्य मिलना चाहिए। मै तो ऐसे बना हू कि अगर आज मेरी शक्ति इधर-उधर जाने की रहे तो मै ही तुमको ढूढ लू, एक-दो दिन साथ रह लू, कुछ वार्तालाप कर लू और भाग जाऊ। ऐसी मेरी स्थिति आज नही रही है, लेकिन ऐसे मैने किया है इतना समझो। मै चाहता हू कि हम एक-दूसरे को समझे, ऐसे ही लोग भी हमको समझ ले। अन्त मे ऐसा हो सकता है कि हमारा मार्ग ही अलग है तो अलग सही। हमारा हृदय तो एक ही रहेगा, क्योकि एक है। कल की बात से यह समझा हू कि हम दोनो मे विचार-श्रेणी मे या वस्तु समझने मे बडा अतर नही है। तुमको किस तरह से समझा हू वह बताना चाहता हू, जिससे अगर फरक है तो मुझे बता दोगे।

१. तुम्हारी दृष्टि से हरेक इन्सान की बौद्धिक, आर्थिक, राजकीय और नैतिक शक्ति कैसे बढे, वो ही सच्चा प्रश्न है। मेरा भी वही है।

२ और उसमे भी हरेक इन्सान को ऊचे चढने का एक-सा हक और मौका होना चाहिए।

३ इस दृष्टि से देखते हुए देहात की और शहर की एक ही हालत होनी चाहिए। इसलिए खाना, पीना, रहना, पहनना और रमत-गमत, एक-सी होनी चाहिए। आज तो यह स्थिति पैदा करने के लिए अपने कपड़े, खुराक और मकान अपने-आप पैदा करना और बनाना चाहिए और ऐसे ही अपना पानी या बत्ती भी अपने-आप पैदा करना चाहिए।

४. इन्सान जगल मे रहने के लिए पैदा नही हुआ है, लेकिन समाज में

बापू के आशीर्वाद

३६२. सर फ्रांसिस वाइली की ओर से

गवर्नर्स कैम्प
गवर्नर, सयुक्त प्रात संयुक्तप्रान्त,
२२ फरवरी १९४६

प्रिय पडितजी,

हम आपस मे कभी नही मिले, पर वस्तुत इसमे मेरा ही नुकसान हुआ है। फिर भी ऐसे बहुत-से दोस्त है जो आपके भी है और मेरे भी, और आपकी किताबो की मार्फत मेरा आपसे बरसो से ताल्लुक रहा है। जब पिछले महीने मै इलाहाबाद गया था तो मेरे दिमाग मे मुख्य उद्देश्य आपसे यह पूछना था कि क्या हम लोग मिल सकते है। मामूली-सी बातो—जिनमे पार्लमेटरी शिष्टमण्डल भी शामिल है—के कारण वैसा नही हो सका। जब मेरे यहा अगाथा हैरिसन आई तो उन्होने लखनऊ तक की तीर्थयात्रा अपने-आप सिर्फ ये सुझाव देने के लिए की कि जितनी जल्दी हो सके मै आपसे मिलू। मुझे किसी और को तैयार करने की जरूरत नही थी, हालाकि यहा की

पूर्व-घटनाओ की वजह से आपसे मिलने का विचार मेरे दिमाग मे कुछ हल्का पड गया था। अगाथा के जाने के बाद मैने इसके बारे मे फौरन कुछ कर डालने की सोची और इलाहाबाद मे वैंकटाचार से फोन पर बात की। मैने उन्हे आपसे फौरन ही सम्पर्क स्थापित कर यह पूछने का सुझाव दिया कि क्या आप उनके मकान पर मुझसे मिल सकेगे और जब मै और मेरा लडका इस उद्देश्य से इलाहाबाद आयेगे तो वह हमे अपने पास ही ठहरा सकेगे। कुछ ही घण्टो मे मुझे यह निराशाजनक जवाब मिला कि आप इलाहाबाद से जा चुके है और २३ से पहले नही लौटेगे और उसके फौरन बाद ही फिर चुनाव के दौरे पर रवाना हो जायगे।

मेरे दिमाग मे यह चीज साफ हो गई है कि जहातक मुमकिन हो हमें मिलना चाहिए। मेरी धारणा है कि अगर हम कोई बात कर सकेगे तो बहुत बात बनेगी। मै रहस्यपूर्ण ढग से मिलना मुनासिब नही समझता, क्योकि पहले ही से बहुत-सी रहस्यमयी बाते फैल रही है। मै यह भी नही चाहूगा कि लोग इधर-उधर की बाते करे। फिर भी अगर आप अपने दौरे मे कुछ घण्टो के लिए भी लखनऊ आ सके तो मै किसी भी जगह, जो आपको सुविधाजनक हो, आने को तैयार हू।

मै यह खत आपको एक विशेष दूत के हाथ भेज रहा हू। शायद आप उसीके द्वारा उत्तर भेजने की कृपा करेगे।

आपका,
एफ. वी. वाइली

३६३. महात्मा गांधी की ओर से

[नीचे गांधीजी का वह पत्र दिया जा रहा है, जो उन्होने मुझे उस दिन लिखा था, जिस दिन उन्होंने उपवास तोड़ा था। उनका उपवास कई दिन चला। उपवास उन्होंने दिल्ली मे सांप्रदायिक झगड़ो के लिए अपना दु.ख जाहिर करने के लिए किया था।

दिल्ली मे जो घटनाएं हो रही थीं, उनकी और गांधीजी के उपवास की वजह से मै बड़ा बेचैन था और एक या दो दिन तक मैंने कुछ भी नहीं खाया। यह बाकायदा उपवास नहीं था, बल्कि घटनाओ के प्रति मेरी निजी प्रतिक्रिया थी, जिसे कोई नहीं जानता था। गाधीजी को किसी तरह पता चल

...इसलिए उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं उसे खत्म कर दूं।

यह आखिरी खत था, जो उन्होंने मुझे लिखा था। बारह दिन बाद, ३० जनवरी १९४८ को, एक हत्यारे के हाथों उनकी मौत हो गई।]

चि. जवाहरलाल,

उपवास छोडो.

साथमें पं. जवाहर के स्वीकार की नकल भेजता हूं. जाहिद हुसेनने मुझसे कहा वही कहता हूं.

बहुत वर्ष जीयो और हिंद के जवाहर बने रहो.

बापु के आशीर्वाद

18-1-48

पश्चिमी पंजाब लेजिस्लेटिव असेंबली के स्पीकर का तार :

"आपके अहम फाके के बेलाग और ऊचे मकसद के बारे मे १३ जनवरी को इस असेम्बली मे जो तकरीरे हुई थी, उनके कुछ मौजू हिस्से मै बडी खुशी से आपको भेज रहा हू। इनमे जो जजबात जाहिर किये गए है उनमे मै और यह असेम्बली पूरी तरह से शरीक है।"

मलिक मुहम्मद फिरोज खां नून—"दुनिया के किसी भी मुल्क ने, मजहब चलानेवालो को छोडकर, महात्मा गाधी से ज्यादा बड़ा इंसान पैदा नही किया।"

ऑनरेबल मियां मुहम्मद मुमताज खां दौलताना, माली वजीर—"यह हमारा सबसे बडा फर्ज है कि हम महात्मा गाधी के फाके से मुसलमानो के तई जो जजबात जाहिर होते है उनको समझे और उनकी तारीफ करे। इससे जाहिर होता है कि हिदुस्तान मे कम-से-कम एक आदमी तो ऐसा है, जो हिन्दू-मुस्लिम-एके के लिए अपनी जिदगी तक कुरवान करने को तैयार है। हम खुदाबद ताला से दुआ मागते है कि उनके फाके को जारी रखने की और आगे जरूरत न पड़े। मै इस असेम्बली की तरफ से महात्मा गांधी को यकीन दिलाता हू कि अकलियत की हिफाजत के लिए उनके जज्बातो मे हम पूरी तरह शामिल है।"

ऑनरेबल खान इफ्तिखार हुसैन खां, वजीरे-आजम—"मै अपनी तरफ से और अपने साथियो की तरफ से महात्मा गाधी के एक पाक मकसद को आगे बढाने के ऊचे दर्जे के काम की फिक्र के साथ तहेदिल से कद्र और तारीफ करता हू। उनकी कीमती जिंदगी को बचाने के लिए इस सूबे मे कोई कसर नही उठा रखी जायगी।

स्पीकर,
पश्चिमी पजाब लेजिस्लेटिव असेंवली

३६४. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के नाम

नई दिल्ली
४ सितम्बर १९४८

प्रिय श्री शॉ,

मुझे ठीक-ठीक नही मालूम कि मै यह खत आपको क्यो लिख रहा हू, क्योकि हम दोनो ही बहुत व्यस्त आदमी है और मुझे आपके काम को बढाने

की कोई इच्छा नही है। लेकिन देवदास गाधी ने मेरे पास आपके उस खत की एक नकल भेजी है, जो आपने उन्हे १६ जुलाई को लिखा था और उसने मेरे अन्दर आपको लिखने की ख्वाहिश पैदा की।

आज से चालीस साल पहले जब मै १८ साल का था और कैम्ब्रिज में एक अन्डर ग्रेजुएट था तब मैने आपको एक सभा में भाषण करते सुना था। उसके बाद से मैने आपको फिर नही देखा है, न कभी पत्र ही लिखा है। लेकिन मेरी पीढी के बहुत-से लोग आपके लेखो और आपकी किताबो के साथ-साथ उम्र में आगे बढे है। मै समझता हू कि मेरा एक हिस्सा भी, जैसा कि मै आज हू, उसी पढाई के साचे में ढला है। मै कह नही सकता कि इससे आपको कोई श्रेय मिलेगा या नही।

चूकि एक मानी में आप मेरे नजदीक रहे है या यो कहिये कि मेरे विचारो के पास रहे है, इसलिए मेरी अक्सर आपके और ज्यादा पास आने और मिलने की चाह रही है। लेकिन मौके नही मिले। और तब मैने महसूस किया है कि आपसे मिलने का सबसे अच्छा तरीका आपकी लिखी हुई चीजो को पढना है।

देवदास ने आपसे जाहिरा तौर पर पूछा था कि हमें गाधी के हत्यारे के साथ क्या करना चाहिए। मै समझता हू कि उसे फासी दे दी जायगी और निश्चय ही मै उसे मौत की सजा से बचाने के लिए कोई कोशिश नही करूगा। हालाकि पिछले कई बरसो से मै मौत की सजा के कानून को खत्म करने के हक में अपनी राय जाहिर करता रहा हू। मौजूदा मामले में कोई दूसरा रास्ता नही है। फिर भी मुझे इस बात पर शका होने लगी है कि आम हालत मे किसी आदमी को मौत की सजा देने के बदले १५-२० साल तक जेल मे रखना क्या ज्यादा अच्छा है?

जिदगी इतनी सस्ती हो गई है कि कुछ हत्यारो को मौत की सजा देने या न देने से कोई बहुत बडा फर्क नही पडता। कभी-कभी यह सोचना पडता है कि क्या जिन्दा रहने का दण्ड सबसे कडा दण्ड नही है।

मै आपसे अपने उन देशवासियो की ओर से क्षमा माग लेना चाहता हू जो हिदुस्तान के बारे मे आपके विचार जानने के लिए आपको परेशान

करते रहते हैं। हममे से बहुत-से लोग दूसरो से प्रमाणपत्र मागने की अपनी पुरानी आदत को अभी छोड़ नही सके हैं। शायद इसकी वजह यह है कि हममे अपने-आपमे विश्वास की कमी है। घटनाओ ने हमें बुरी तरह से झकझोर दिया है और भविष्य उतना उजला दिखाई नही देता जितना कि हमने सोचा था।

अगले अक्तूबर में दो या तीन हफ्तो के लिए मेरी इगलैंड आने की सम्भावना है। मै आपसे मिलना बहुत ही पसन्द करूगा, लेकिन अगर इससे आपके रोजमर्रा के काम में कोई अड़चन पडे तो मै ऐसा हर्गिज नही चाहूगा। मै आपको किन्ही सवालो से परेशान करने नही आऊगा। दिमाग मे बहुत-से सवाल उठते है, जिनके पर्याप्त उत्तर दिखाई नही देते या अगर उत्तर है भी तो हालत कुछ ऐसी है कि माकूल आदमियों की कमी की वजह से उन्हे अमल मे नही लाया जा सकता। अगर मुझे आपसे कुछ क्षणो के लिए मिलने का सौभाग्य मिला तो मै उसका इस्तेमाल एक ऐसी याद को सदा बनाये रखने के लिए करूगा, जो कि मुझे अबसे कुछ अधिक खुशहाल बना देगी।

आपका,
जवाहरलाल नेहरू

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ,
आयोट सेंट लारेंस,
वेलविन, हर्ट्स, इगलैंड

३६५. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की ओर से

लंदन
१८ सितम्बर १९४८

प्रिय श्री नेहरू,

मुझे यह जानकर बडा संतोष हुआ है कि आप मेरे राजनैतिक लेखो से परिचित है। मुझे इससे अधिक और कुछ नही कहना है कि आपके यहा आने से मै अपनेको सम्मानित अनुभव करूंगा, हालाकि मै अपनेको इस भ्रम मे नही रखना चाहता कि अपने बहुमूल्य समय की एक दोपहरी मेरे साथ बिताने के लिए आपका इस दूर के गांव के लिए सफर करना उचित होगा,

एक बार मैं एक सप्ताह के लिए बम्बई मे रहा था और एक सप्ताह के लिए श्रीलंका में। हिन्दुस्तान के बारे में मैं प्रत्यक्ष रूप से बस इतना ही जानता हू। श्रीलंका को देखकर मुझे यह विश्वास हो गया था कि वह मानव-जाति का पालना है, क्योंकि वहां प्रत्येक व्यक्ति मौलिक दिखाई देता है, जबकि दूसरे सभी राष्ट्र स्पष्टतः सामान्य ढंग के हैं।

हालांकि मैं हिन्दुस्तान के बारे में सिर्फ उतना ही जानता हूं, जितना अखबारों में छपता है, तो भी मैं उसपर अवैयक्तिक दृष्टि से ही विचार करता हू, क्योंकि मैं अंग्रेज नहीं बल्कि आयरिश हू। मैंने अपनी आखो से उस लम्बे संघर्ष को देखा है, जो अंग्रेजी शासन से मुक्ति के लिए आयरलैण्ड ने किया है। बाद में मैंने उसे दो हिस्सों—आयर और उत्तरी आयरलैंड—में बटते भी देखा है, जो कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का पश्चिमी समानान्तर है। इंगलैंड के लिए मैं वैसा ही विदेशी हू जैसे कि आप केम्ब्रिज मे थे।

मैं सोच नही पा रहा हू कि जिन्ना की मृत्यु से आपका इंगलैंड आना रुक तो नही जायगा। अगर उनका कोई कुशल उत्तराधिकारी नही है तो आपको सारे प्रायद्वीप पर शासन करना होगा।

आपका,

जा. बर्नार्ड शॉ

हिज एक्सेलेंसी प्रधान मंत्री,
नई दिल्ली, भारत

३६६. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ के नाम

जार्ज होटल
पेरिस
२८ अक्तूबर १९४८

प्रिय श्री शॉ,

आपका १८ सितम्बर का नई दिल्ली भेजा हुआ खत मेरे पास आज यहा पेरिस मे पहुचा है। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। मालूम नही, इसे दिल्ली पहुचने मे और फिर वापस यहां आने मे इतना अर्सा क्यो लगा ? मालूम होता

हैं, वह १५ अक्तूबर को दिल्ली पहुंच गया था। मुझे बहुत ही दुःख है कि मुझे वह पहले नही मिला।

मैंने आपको लिखा था कि अपनी इंगलैंड-यात्रा के दौरान मे मुझे आपसे मिलकर बडी खुशी होती। यह सही है कि जिन्होंने मेरे कार्यक्रम की जिम्मेवारी ले ली थी उन्होंने उसे इतना भर दिया कि बहुत-सी बातो के लिए, जो मै सचमुच करना चाहता था, वक्त निकालना मेरे लिए मुश्किल था। फिर भी मै बेशक आपके पास आने के लिए वक्त निकालता, लेकिन चूकि मेरे खत का जवाब आपकी तरफ से मुझे नही मिला, इसलिए मुझे पूरा यकीन नही हुआ कि मेरा आना आपके लिए सुभीते का होगा या नही और इसलिए आपको दुबारा लिखने मे मुझे हिचकिचाहट रही। मै हिन्दुस्तान वापस जा रहा हूं। मेरे लिए यह गहरे अफसोस की बात है कि मै आपको प्रणाम करने का यह अवसर चूक गया। फिर भी मुझे आशा है कि किसी और मौके पर यह लाभ मिलेगा।

सादर आपका,
जवाहरलाल नेहरू

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ,
आयोट सेट लॉरेंस,
वेलविन, हर्ट्स, इंगलैंड
इंग्लैंड

३६७. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ की ओर से

४ व्हाइटहॉल कोर्ट (१३०)
लन्दन, एस. डब्ल्यू. १,
१२ नवम्बर १९४८

प्रिय पडित नेहरू,

मुझे निराशा नही हुई। जब मैंने आपको पत्र लिखा था तब मुझे खूब अच्छी तरह मालूम था कि लन्दन में आने पर आपकी इतनी अधिक माग होगी कि आपके पास एक पूरी दोपहरी का वक्त भी इस गांव मे बिताने के लिए खाली नही मिल पायेगा। फिर भी मै यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि अगर आप आ सकते तो मै आपका हृदय से स्वागत करता।

सम्मेलन में आपका भाग लेना आपके लिए व्यक्तिगत रूप से एक महान सफलता थी। दूसरों की अनर्गल बातों की तुलना में आपका रेडियो-भाषण बहुत ही उल्लेखनीय था और बाद में आपने जो भाषण दिये, उनसे यह सिद्ध हो गया है कि एशिया में अकेले आप ही वह व्यक्ति है, जो स्टालिन के बराबर है। आपका यह आश्वासन देना कि लड़ाई की कोई तात्कालिक सम्भावना नहीं है, ठीक समय पर कही गई एक ठीक बात है। हमारे मंत्रि-मंडल के सभी मूर्ख नहीं है; लेकिन उन्हें यह पता नहीं कि वे क्या कह रहे है।

जा. बर्नार्ड शॉ

राइट आनरेबल जवाहरलाल नेहरू,
नई दिल्ली,
हिंदुस्तान।

३६८. तेजबहादुर सप्रू की ओर से

इलाहाबाद
२ दिसम्बर १९४८

प्रिय जवाहरलालजी,

आप जो कुछ कहते रहते है, वह मै अखबारो मे पढता रहता हू और दिन-ब-दिन आपके लिए मेरी इज्जत बढती जा रही है। आपकी सालगिरह पर मेरी आपको लिखने की मशा थी, मगर मै नही लिख सका, क्योकि उस वक्त मेरी हालत बहुत खराब थी। मै अब लिख रहा हू और गालिब के हमेशा जिन्दा रहनेवाले लफ्जो मे मै आपको अपनी शुभ कामनाए भेजता हू—

"तुम सलामत रहो हजार बरस, हर बरस के दिन हों पचास हजार।"

यू पी. के कुछ काग्रेसी लीडरो का जबान के सवाल पर जो रुख है, उससे मै जरा भी खुश नही हू। खुशी से हिंदी सीखो, पर यह न भूलो कि उर्दू मुसलमानों की जबान नही है। हिन्दुओ ने उसको खासी अच्छी देन दी है और रुहेलखण्ड और इस सूबे के पच्छिमी हिस्से के लोग उस हिंदी को नही समझ पाते, जो पूरबी हिस्से मे बोली जाती है। मै इस सच्चाई को जानता हू कि दूसरे हिस्सो के लोगो मे भी बहुत ज्यादा बेचैनी है और ऊचे दर्जे की हिंदी को समझना उन्हे मुश्किल लगता है। मेरा यकीन है कि कुछ अग्रेजी

लफ्जो का हिंदी मे हुआ तर्जुमा आप नही समझ सकेंगे। जब मैं सारे सवाल को बिना किसी लगाव के देखता हू तो लगता है कि यह हमे मुसीबत की तरफ ले जा रहा है। मैं इतना कमजोर हू कि लबा खत नही लिखवा सकता।

मेरी हालत जरा भी नही सुधरी है। लकवे और ब्लेडर की खराबी के अलावा मुझपर गैस्ट्राइटिस का भी जोर से हमला हुआ है। दिन मे पाच-छः बार कैथेटर लगाना पड़ता है। इस सबका सिर्फ एक ही नतीजा हो सकता है और वह यह कि आखिरी वक्त के लिए मुझे तैयार रहना चाहिए। मुझे अपने ग्रहो का शुक्रगुजार होना चाहिए कि मैं हिदुस्तान की आजादी को देख सका और आपको उसके सरगना के तौर पर।

सप्रेम आपका,

तेजबहादुर सप्रू

माननीय पण्डित जवाहरलाल नेहरू,
प्रधान मन्त्री, हिन्दुस्तान,
नई दिल्ली।

अनुक्रमणिका

१. यह अनुक्रमणिका सिर्फ इस पुस्तक मे प्रकाशित पत्रो के लिखनेवालों तथा पत्र पानेवालो के नामो की बनाई गई है ।

२. मुख्य पक्तियो मे दी गई पृष्ठ-संख्याएं जवाहरलाल नेहरू की ओर से तथा उनके नाम लिखे पत्रो की है ।

३. मुख्य पंक्तियो के नीचे जगह छोड़कर दिये हुए नाम तथा पृष्ठ-संख्याएं उन लोगो के पत्रो की है जिन्होंने मुख्य पंक्ति मे दिये व्यक्ति के साथ पत्र-व्यवहार किया ।

कुछ पुरानी चिट्ठियां

जवाहरलाल नेहरू के संग्रह के महत्वपूर्ण पत्र

अधिकतर उनको मिले, कुछ उनके लिखे

●

१९६०

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल,
नई दिल्ली

पहली बार : १९६०
मूल्य
दस रुपये

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
(दि टाइम्स ऑफ इंडिया प्रेस,)
१० दरियागंज, दिल्ली

प्रकाशकीय

संसार की सभी विकसित भाषाओ मे पत्र-साहित्य को बड़ा महत्त्व दिया जाता है और उसके भडार मे वृद्धि करने के लिए बराबर गभीर प्रयत्न होते रहते है। अनेक भाषाओ मे ऐसे पत्र-सग्रह निकले है और निकल रहे है, जो पाठकों का मनोरजन तो करते ही है, उनको प्रेरणा भी देते है।

सच बात यह है कि पत्रो की अपनी विशेषता होती है। वे दिल खोलकर लिखे जाते है। उनमे लिखनेवाले का हृदय और व्यक्तित्व बड़ी सचाई के साथ बोलते है। बनावट अथवा सजावट की उनमे गुजाइश नही होती। यही कारण है कि पाठको के मन पर उनका सीधा और गहरा असर पड़ता है। पत्र-साहित्य की लोकप्रियता भी इसी वजह से है।

प्रस्तुत पुस्तक पत्र-साहित्य की एक अनमोल देन है। इसमे ३६८ चुने हुए पत्र है, जिनमे भारत के ही नही, अन्य अनेक देशो के बहुत-से व्यक्तित्वो की झांकी मिलती है। ससार की इतनी विभूतियो के पत्र एक जगह कम ही पाये जाते है। उससे भी बड़ी बात यह है कि सारे पत्र-लेखक किसी एक क्षेत्र के नही है,अलग-अलग क्षेत्रो के है। राष्ट्र-निर्माता, राजनेता, लेखक, कलाकार, समाज-सेवक आदि-आदि इस पुस्तक के पृष्ठो मे समाये हुए है।

सग्रह के अधिकाश पत्र उन व्यक्तियो के लिखे हुए है, जो हमारी आजादी की लड़ाई के प्रमुख अग थे अथवा जिनकी उस लड़ाई मे विशेष दिलचस्पी थी। अंतिम छ पत्रों को छोड़कर शेष सब चिट्ठिया भारत के स्वतंत्र होने के पहले की तीन दशाब्दियो के बीच की लिखी हुई है। जैसा कि नेहरूजी ने अपनी भूमिका मे लिखा है, इन पत्रो से वे बहुत-सी यादे ताजी हो जाती है, जो करीब-करीब भूली जा चुकी थी। यादे ही क्यो, उस युग की आत्मा भी सामने आ जाती है, जबकि भारत आजादी के लिए अपनी पूरी ताकत से जूझ रहा था और अपने भविष्य का निर्माण कर रहा था। बड़े-बड़े नेता, बडे-बडे देशभक्त और बडे-बडे दिमागोवाले लोग राष्ट्रीय आदोलनो के उद्देश्यो, तरीको और उन्हे अधिक-से-अधिक प्रभावशाली

बनाने के ढगो पर चर्चा करते थे। सबका ध्येय एक था, पर उस ध्येय की प्राप्ति के मार्गो के सबध मे बहुतो मे मतभेद था। उस मतभेद को व्यक्त करने की पूरी छूट थी। इस सगह के अनेक पत्रो मे पाठक देखेंगे कि उस मतभेद को बडी सचाई के साथ प्रकट किया गया है। त्रिपुरी-काग्रेस के पहले और बाद के महात्मा गाधी, नेहरूजी, सुभाषचद्र बोस तथा शरत् बोस के पत्र इस बात की पुष्टि करते है।

आजादी से सबधित बीसियो बाते है, जिनपर इस पुस्तक के पत्रो से प्रकाश पडता है। सन् १९३५ के गवर्नमेंट ऑव इडिया एक्ट को लेकर लॉर्ड लोथियन और नेहरूजी के बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ था, वह भी इसमे शामिल किया गया है।

इसी प्रकार के और भी बहुत-से प्रसगो की बडी प्रामाणिक जानकारी इन चिट्ठियो से पाठको को मिल जाती है।

इस सग्रह की ज्यादातर चिट्ठिया नेहरूजी को लिखी गई है। कही-कही सदर्भो को स्पष्ट करने के लिए उन्होने कुछ अपने तथा कुछ दूसरे पत्र भी इसमे जोड दिये है।

इसमे कोई शक नही कि इन पत्रो का ऐतिहासिक महत्त्व है, लेकिन उनकी सबसे बडी विशेषता उस आत्मीयता मे है, जो उन पत्रो मे छलछलाती दिखाई देती है। पिता के वात्सल्य, बापू की भावना, साथियो के उद्गार, विदेशी मित्रो के प्रेम तथा नेहरूजी से मतभेद रखनेवाले व्यक्तियो की भी उनके प्रति हार्दिकता, इन सबने इस सग्रह को एक अमर कृति बना दिया है। महात्मा गाधी, पडित मोतीलाल नेहरु, सरोजिनी नायडू, रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रभृति के पत्र बार-बार पढे जायगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

लाला लाजपतराय, मोहम्मदअली जिन्ना, डा अन्सारी, रोम्या रोला, एनी बेसेंट, सी एफ एन्ड्रूज, ब्रेल्सफोर्ड, डा राजेन्द्रप्रसाद, आचार्य कृपालानी, एडवर्ड टामसन, सरदार पटेल, गोविन्दवल्लभ पत, जनरलसिमो तथा मैडम च्यागकाई शेक, मैडम सनयात सेन, जयप्रकाशनारायण, मौलाना अबुल कलाम आजाद, माउत्से तुग, सर स्टैफर्ड क्रिप्स, जार्ज बर्नार्ड शा, सर तेज-बहादुर सप्रू आदि-आदि के पत्रो को भी पाठक इस सग्रह मे पढेगे।

मूल पुस्तक अग्रेजी मे 'ए बच ऑव ओल्ड लैटर्स' के नाम से प्रकाशित हुई

है। उसके दूसरे सस्करण मे नेहरूजी ने एक पत्र गांधीजी का और एक अपना और जोड़ दिया था तथा कुछ टिप्पणिया भी। वे सब इस पुस्तक में शामिल कर दी गई है।

गाधीजी के कई पत्र[1] हिन्दी मे लिखे गये थे, उन्हे मूल रूप मे दिया गया है। शेष भारतीय लेखको के पत्रो के अनुवाद मे इस बात का ध्यान रक्खा गया है कि उनकी भापा लेखक की भाषा से मिलती-जुलती रहे। अनुवाद के कठिन कार्य मे हमे जिन बधुओ का सहयोग मिला है, उनके हम आभारी है।

हमे विश्वास है कि हिन्दी-जगत् मे इस पुस्तक का सर्वत्र आदर होगा और सभी वर्गो के पाठक इसे चाव से पढेगे।

—मंत्री

---

१. पत्र-संख्या ३३३, ३३८, ३४०, ३५८ तथा ३६१

भूमिका

इस किताब मे कई तरह की मिली-जुली चिट्ठिया इकट्ठी की गई है। सारे पत्रो को एक जगह जुटाना और फिर प्रकाशन के लिए छाटना, आसान काम न था। यह किस हद तक ठीक बन पडा है, इसका फैसला करना मेरे लिए मुश्किल है। करीब-करीब सभी चिट्ठिया उस जमाने की है, जो अब बहुत दूर चला गया है और जिसे गजरे एक लम्बा अरसा हो गया है। बहुत थोडी को छोडकर ये सभी चिट्ठिया हिन्दुस्तान की आजादी के पहले की लिखी हुई है और इनमे खास तौर पर हमारी मुल्की समस्याओ और उन्होने हमपर किस तरह असर डाला, इसका जिक्र है। इनको पढने पर पुरानी वहस-तलब बाते उभर आती है और करीब-करीब पूरी तरह से भूली हुई यादे दिमाग मे आ जाती है। इनमे से ज्यादातर चिट्ठिया आजादी की हमारी लडाई और बीच के वक्फे के दरम्यान सन् १९२०, ३० और शुरू ४० के सालो मे लिखी गई थी, जब मै जेल मे नही था।

उस समय मेरे पास इतनी फुरसत या मौका न था कि मै अपनी चिट्ठियो और कागजातो को तरतीब से रख पाता और उनका यूही ढेर लगा दिया गया। बीच-बीच मे पुलिस हम लोगो पर छापा मारती थी और जो कागजात उसके हाथ पड जाते थे, उन्हे अपने कब्जे मे कर लेती थी। जेल मे लम्बा अरसा बिताने के बाद लौटने पर मै अक्सर देखता कि दीमको और दूसरे कीडो ने मेरे बहुत-से कागजो की दावत उडा ली है। इसके बावजूद बहुत-से कागजात बच ही गये। सालो बाद मेरे दोस्तो ने इनको कुछ तरतीब देने मे मदद की और हाल ही मे जब मै हिमालय की कुल्लू घाटी मे कुछ दिन छुट्टी मनाने गया तो मैने उस ढेर मे से एक संग्रह तैयार कर डाला।

शुरू में मेरा मशा यह था कि सिर्फ वे ही चिट्ठियां प्रकाशित हो, जो महात्मा गाधी ने मुझे लिखी थी। आहिस्ता-आहिस्ता दूसरी और चिट्ठिया जुटती गई और कुछ मेरे लिखे पत्र भी देने पड़े, क्योकि बिना उनके बहुत-से

संदर्भो को समझना मुश्किल हो जाता। इस किताब मे चिट्ठियो को तारीख-वार रक्खा गया है, हालाकि बीच-बीच मे, घटनाओ की सफाई के ख़याल से, इस सिलसिले को बदल भी दिया गया है। कुछ फुटनोट और टिप्पणियां मैंने दे दी है, लेकिन मुझे डर है कि जो लोग उस जमाने में हिन्दुस्तान में घटी घटनाओ के सिलसिले को नही जानते, वे इन चिट्ठियो के बहुत-से सदर्भो को नही समझ पायेगे।

इनमे से कुछ चिट्ठियां उन दोस्तो और साथियों की है, जो खुशकिस्मती से आज भी हमारे बीच मौजूद हैं। उन्होने मेहरबानी करके उनके प्रकाशन की इजाजत दे दी है। लेकिन बहुत थोडी-सी चिट्ठियो के लिए छपने से पहले इजाजत लेना मुमकिन न हो सका। मुझे उम्मीद है कि इनके लिखने-वाले उस आजादी के लिए मुझे माफ करेंगे, जो मै ले रहा हू।

मै अपने उन बहुत-से साथियो का आभार मानना चाहूगा, जिन्होने इस किताब के प्रकाशन के दौरान में कई मौको पर मेरी मदद की। इस मदद के बिना मेरे लिए इस काम को उठाना या इसे पूरा करना मुमकिन न होता।

नई दिल्ली.

जवाहरलाल नेहरू

विषय-सूची

कुछ
पुरानी चिट्ठियां

जवाहरलाल नेहरू

१. सरोजिनी नायडू की ओर से

[यह पत्र मेरी बेटी इंदिरा (अब इंदिरा गांधी) के जन्म पर लिखा गया था।]

मद्रास,
१७ दिसम्बर १९१७

प्रिय जवाहर,

तुम्हारी खुशखबरी सुनने के बाद से मुझे पलभर भी समय नही मिला कि बैठकर तुम्हे और कमला को बधाई या अपनी नई भतीजी को आशीर्वाद भेजती। आज भी मै हमेशा की तरह कामकाजभरे दिन मे से आधा सेकिड निकालकर ये दोनो काम करने बैठी हू। मद्रास पागल हो उठा है—एकदम पागल!—और मुझे भी पागल कर देने पर उतारू है!

अगर तुम कलकत्ता आओ तो मै ७ हगरफोर्ड स्ट्रीट पर मिलूगी, इसलिए मिलना न भूलना। मै तुम्हे 'भारत की आत्मा' की एक प्रति भेज रही हू, जो माटेग्यू द्वारा की गई बमबारी का मेरा जवाब है।

सबको स्नेह और भारत की नई आत्मा को प्यार।

सस्नेह तुम्हारी,
सरोजिनी नायडू

२. बी. जी. हार्नीमन की ओर से

दि बांबे क्रॉनिकल,
(सपादकीय विभाग)
१ जुलाई १९१७

प्रिय जवाहरलाल,

आपके २९ तारीख के पत्र के लिए धन्यवाद। गाधीजी यहा से कुछ गलत-सा ही खयाल लेकर गये है। हम अपनी विरोध-सभा अगले शनिवार को कर रहे है। वह न की जाय, ऐसा तो हमने कभी इरादा ही नही किया; परन्तु गाधीजी का सुझाव यह था कि सभा की तारीख ऐसी हो कि उसके

तुरन्त वाद निष्क्रिय प्रतिरोध किया जा सके। हमने—यानी, इस बातचीत के समय जो लोग हाजिर थे, उनमे से वहुतो ने—यह मजूर कर लिया। लेकिन गाधीजी ने हमसे कहा कि हमारे कुछ करने के पहले वह मालवीयजी से मिल लें, और तवतक हम रुके रहे। फिर उन्होने इलाहाबाद से तार दिया कि मालवीयजी अभी शिमला से लौटे नही है। इसलिए हम अपनी योजना के अनुसार काम करने लगे। परन्तु मै निष्क्रिय प्रतिरोध तो पूरे दिल से चाहता हू। यह जरुरी है कि कुछ व्यावहारिक कदम उठाया जाय। हम निष्क्रिय प्रतिरोध का एक घोपणा-पत्र हस्ताक्षर के लिए लोगो के पास भेज रहे है, इसपर सवसे पहले दस्तखत मैने ही किये है। हा, आप तो जानते है कि वुजुर्ग काग्रेसियो के साथ हमारी कुछ मुश्किले भी है, परन्तु हमने उन्हे काफी झकझोर दिया है और हम उन्हे खीचकर इतना आगे ले आये है कि जिसकी हमने कभी उम्मीद भी नही की थी।

मद्रास की यात्रा वडी कामयाव रही। जैसाकि आप जानते है, हमने कुछ ही दिन से 'न्यू इडिया' फिर से चालू कर दिया। वह एक वहुत वडी जीत और दुश्मनो को एक करारी चोट थी। श्रीमती बेसेंट ने तो उसको फिर से जारी कर सकने की आशा ही छोड दी थी। मद्रास की सभा भी काफी अच्छी रही।

जे डी आर के वारे मे, मुझे खेद के साथ कहना पड रहा है कि यहा के मित्र अथवा उनमे से अधिकाश आपके द्वारा उठाये गए कदम के पक्ष मे नही है, हालाकि स्वय मै तो अव भी समझता हू कि वह अच्छा और सही, दोनो था। जिन्ना, जिन्हे शुरु-शुरु मे रगरूटो की भर्ती के आदोलन का समर्थन करने के लिए वडी मुश्किल से राजी किया जा सका था, अव विरोध के रुप मे इस वात पर अड गये है कि उसे छोडा न जाय, और मै अकेला-सा पड गया दिखाई देता हू।

आज सुना है कि मालवीयजी ने जिन्ना को तार द्वारा सुझाया है कि आगामी ८ तारीख को ऑल इडिया काग्रेस कमेटी और मुस्लिम लीग कौन्सिल की एक सयुक्त कान्फ्रेस कर ली जाय। मै समझता हू कि अगर इन पुराने-पुराने नेताओ मे कुछ जोश फूका जा सके तो यह एक अच्छी वात होगी। अगर ऐसा हो जाय तो मै आशा करता हू कि इलाहाबाद से आप

सब आयेगे। मै मालवीयजी से मिलने और उनसे दिल खोलकर बातें करने के लिए इतना उत्सुक था कि अगर वह यहा न आ रहे होते तो इसी काम के लिए मै खुद इलाहाबाद आता। जहातक श्री सुरेद्रनाथ का सम्बन्ध है, अगर वह मेरे हाथ पड़ जाय तो मुझे विश्वास है कि मै उन्हे सभाल सकता हू। ग्यारह साल पहले जिस दिन मै इस देश मे आया, उसी दिन से मै उन्हे जानता हू और यह भी जानता हू कि किस तरह उन्हे सभाला जा सकता है। लेकिन आजकल वह बुरे असर मे है।

अगर कुछ प्रभाव डालना है तो दो बाते जरूरी है :

१ कौसिल के सदस्यो के इस्तीफे (इस विचार के लिए भगवान इलाहाबाद को सलामत रखे !)।

२ यदि सरकार अपनी नीति नही बदलती है और एक निश्चित तारीख के पहले नजरबदो को नही छोड देती है तो निष्क्रिय प्रतिरोध शुरू कर दिया जाय।

जहातक बम्बई का सबध है, इन दोनो कामो के लिए मुझसे जो बन पडेगा, मै करूगा। लेकिन एक अखिल भारतीय कान्फ्रेस का करना जरूरी है।

'क्रॉनिकल' आपके पते पर जारी करने के लिए मैने दफ्तर मे कह दिया है। मै तो समझ रहा था कि मै पहले ही कभी का ऐसा कर चुका हू।

सबके लिए आदर-सहित,

सप्रेम आपका,

बी. जी. हार्नीमन

[श्री हार्नीमन 'बाबे क्रॉनिकल' के लोकप्रिय और प्रभावशाली संपादक थे। पहले महायुद्ध के आखिरी सालो में और उसके बाद भी भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया था।

जे. डी. आर. एक प्रकार के सुरक्षित सैनिक संगठन का सूचक है जो उस समय शिक्षित भारतीय नवयुवको को प्रशिक्षण देने के लिए कायम किया गया था। हममें से कइयो ने इसमें शामिल होने का निश्चय किया और अपने आवेदन-पत्र भेज दिये। यह प्रथम महायुद्ध के समय को बात है। इसके कुछ समय बाद श्रीमती एनी बेसेण्ट को नजरबंद किया गया। इससे हमको

बडा आधात पहुचा और विरोधस्वरूप हमने अपने आवेदन-पत्र वापस ले लिये।]

२ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[मेरे पिताजी ने पंजाब के मार्शल-लॉ से पैदा हुए नतीजो मे गहरी और निजी दिलचस्पी ली। उन्हीके कहने से मार्शल-लॉ के फैसलो के खिलाफ इग्लिस्तान की प्रिवी कौंसिल में कुछ अपीलें दायर हुई। इनमे से एक अपील, जिसने उस समय बहुत ध्यान आकर्षित किया, अमृतसर के बग्गा और रतनचद की थी। यह पत्र और इसके बाद के कई पत्र मेरे पिताजी ने आरा (बिहार) से लिखे थे, जहां वह उस समय जमीदारी के एक बडे मुकदमे की पैरवी कर रहे थे।]

आरा,
२५ फरवरी १९२०

मेरे प्यारे जवाहर,

तुम्हे मेरे पिछले खत से मालूम हुआ होगा, मै बग्गा की अपील पर प्रिवी कौंसिल के फैसले के लिए बिल्कुल तैयार नही था, ऐसी बात नही है। लेकिन उसके खारिज होने की खबर मे मुझे धक्का लगा। अपील करनेवाले दूसरे लोगो ने दगो मे जो भी हिस्सा लिया हो, इसमे शक की जरा भी गुजाइश नही कि बग्गा और रतनचद उतने ही बेकसूर है, जितनी कि इदू। पजाब का हर आदमी—सरकारी या गैर-सरकारी—यह बात जानता है, फिर भी उन्हे फासी लगेगी। हमारे देश मे नित्य होनेवाले अन्यायो मे से यह तो लाखो मे से एक मिसाल है। हम तो बस अपना फर्ज अदा कर सकते है और जो-जो उपाय हमारे लिए मुमकिन है, उन्हे कर सकते है। मैने इस बारे मे जो कुछ किया है, उसकी खबर मै तुम्हे तार से दे चुका हू, लेकिन इतना ही काफी नही है। आगे जो कदम उठाने है, उनके बारे मे मेरे सुझाव ये है

१ जगमोहन नाथ उनसब मुकदमो के, जिनमे अपीले हुई है, अपील करनेवालो की एक पूरी फेहरिस्त तैयार करे। यह सूची टेकचन्द के पास भेज दी जाय, ताकि वह पता लगाये कि उनमे से कौन रिहा कर दिये गए है और कौन अभी जेल मे है। टेकचन्द नेवाडल के पास समुद्री तार से उनसब लोगो

के नाम भेजे जो अब भी जेल मे है और उनसे दरख्वास्त करे कि वह [illegible] तरफ से रहम की अर्जी दे दे।

२ हिन्दुस्तानभर मे खास-खास जगहो पर, पजाब के हर शहर मे, और अमृतसर के हर मुहल्ले मे आम सभाए की जाय, जिनमे इन मामलो मे शाही ऐलान को लागू करने की माग की जाय। इसके अलावा अमृतसर के जलसे यह भी तजवीज करे कि बग्गा और रतनचद बेकसूर है।

यह कहना आसान है, पर करना मुश्किल है। लेकिन इसके लिए कोशिश होनी चाहिए। गाधीजी से सलाह-मशविरा करना चाहिए, लेकिन यह बहुत जल्दी होना चाहिए, क्योकि वक्त थोडा है। कानून के आखिरी उपायो के हो चुकने पर फासी फौरन दे दी जाती है, जैसा कि कटारपुर की फासियो से साबित होता है।

३ अगर १ और २ मे नाकामयाबी हुई तब क्या करना होगा? इस बाबत मेरे कुछ बहुत ही निश्चित विचार है, लेकिन जबतक १ और २ के नतीजो का पता न लगे, मै उन्हे बताना नही चाहता।

मै सोचता हू कि तुम्हारी जिला कान्फ्रेस मे मुझे मौजूद रहना चाहिए, चाहे हरिजी के बुलावे को छोडना ही क्यो न पडे। असल मे उन्हे मेरी जरूरत नही, और मुझे भी असल मे उनका पैसा नही चाहिए—इस तरह बात बहुत-कुछ साफ है। मेरे पास सोचने और फैसला करने के लिए दो दिन का वक्त है।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

४ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[आरा से २७ फरवरी १९२० को मेरे नाम भेजे गये पिताजी के पत्र से]

जहातक गाधीजी के राजनैतिक विचारो के प्रतिपादन करने की बात है, मै उनके प्रति आदर रखते हुए भी उन विचारो को महज इसलिए मानने को तैयार नही हू कि वे उनके विचार है। मै बात को पहले ही सचेत कर चुका हू कि हमे जोरदार खीचतान के लिए तैयार रहना चाहिए। गाधीजी [illegible] मे बाते [illegible] दिखी जा रही है। उनका मालवीय से लगातार ताल्लुक

उनसे आम रजामदी हमारे दल के लिए अच्छी निशानी नही है और न खुद गाधीजी के ही लिए वह बहुत शुभ बात है। अपनी लोकप्रियता पर हद से ज्यादा भरोसा करना ठीक नही । श्रीमती बेसेंट इसकी कीमत चुका रही है और दूसरो के साथ भी ऐसा ही हुआ है। मुझे बहुत दु ख होगा, अगर यही बात गाधीजी के साथ हुई। अपनी मौजूदा हालत मे मुझे किसीके भी राजनैतिक विचारो से झगडा करने का अधिकार नही, फिर गाधीजी और मालवीयजी जैसे प्रतिष्ठित लोगो से तो झगडा करने की बात और भी कम है, लेकिन जिस ढग से देश शक्ल अख्तियार कर रहा है, उसकी तरफ से मै आखे नही मूद सकता। अधिकारियो या नरम दलवालो से समझौता करने की कोशिश का नतीजा बरबादी होगा, भले ही वह किसी के जरिये हो। जो हालत है उसके बारे मे मेरी अपनी राय तो यह है।

५. मोतीलाल नेहरू की ओर से

आरा,
२९ फरवरी १९२०

मेरे प्यारे जवाहर,

हरकिशनलाल आज सवेरे आये है और ८ बजे रात की पैसिजर से इलाहाबाद जा रहे है। तुम्हारा तार अभी मिला है, जिसमे तुमने लिखा है कि इदिरा ठीक है और तुम कल सवेरे बम्बई जा रहे हो। मैने तुम्हे तार दे दिया है कि हरकिशनलाल कल सवेरे पहुच रहे है और कुछ घटे ठहरेगे। वह एक्सप्रेस मे दिल्ली चले जायगे। उन्हीके हाथ यह चिट्ठी भेज रहा हू।

नाश्ते के वक्त पजाब के मामलो और आमतौर से राजनैतिक हालत पर हरकिशनलाल, दास ओर मेरी देर तक बातचीत हुई है। हरकिशनलाल तुम्हे बतायेंगे कि हम किस नतीजे पर पहुचे है। उन्हे 'इडिपेडेंट' का दफ्तर घुमाकर दिखा देना और वहा जो अव्यवस्था फैली हुई है, उसके बारे मे उन्हे खुद राय बना लेने देना। उन्होने लाहौर पहुचते ही हमारे लिए आदमी भेजने का वादा किया है।

मालूम नही, तुम बम्बई कितने दिन ठहरोगे। मै चाहूगा कि जितनी जल्दी हो सके, लौट आओ। बम्बईवाले मुकदमे के मुद्दई को ब्यौरा भेजने के

बारे मे तुमने कुछ किया ? अगर न किया हो तो खुद देखकर यह काम करा देना।

राजनीति मे उनकी अपनी हालत क्या है इसके बारे मे गाधीजी एक महत्त्व का बयान देने जा रहे है। इस बारे मे मैं तुम्हे पहले ही लिख चुका हू। मैंने जो कुछ कहा है, दास उससे सहमत है। और बातो के साथ इस मामले मे भी आज सवेरे हमारी बाते हुई। यह करीब-करीब साफ है कि गाधीजी जो रुख लेने जा रहे है, वह काग्रेस की तजवीजो से पूरी तरह मेल नही खाता। हमारी सिर्फ यह शिकायत है कि उन्होने जहा शास्त्री और मालवीय को अपने विश्वास मे लिया, हम लोगो को बिल्कुल अलग छोड दिया। फिर भी हमे देखना है कि आगे नई क्या बात आती है। इसके बाद हमारे तय करने का समय आवेगा कि हम उसपर चले या नही। जब इस मसले पर मैंने तुम्हे पिछली बार लिखा था, तब मै इसी नतीजे पर पहुचा था। मैंने आज सवेरे दास से यही बात कही। और वह मुझसे सहमत हुए, लेकिन उन्होने खासतौर से कहा कि मै तुम्हे यह बता दू कि शिकायतवाली बात उनकी उठाई हुई नही है, बल्कि उन्होने वह मुझसे ली है। वह समझते है कि उनके पीठ-पीछे गाधीजी से उनकी बुराई की जा रही है, और इसीलिए वह चाहते है कि मै खासतौर पर इसका जिक्र कर दू।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

६. एम. एल. ओक्स के नाम

[६ से १४ तक के पत्र मेरे निर्वासन के बारे में एक आज्ञा से संबंध रखते है, जो मुझपर मसूरी से तामील की गई थी। मुझे मिलनेवाली इस तरह की यह पहली आज्ञा थी।]

सेवाय होटल, मसूरी,
१४ मई १९२०

प्रिय श्री ओक्स,

आज सुबह आपसे जो बातचीत हुई उसपर, और सरकार ने मुझसे जो 'निश्चित वचन' चाहा है कि मै मसूरी-स्थित अफगान प्रतिनिधियो से न मिलू और न उनसे कोई पत्र-व्यवहार करूं, इस बाबत भी गौर से विचार

किया है। मुझे अफसोस है कि इस बारे मे मै अपना खयाल नही बदल सकता।

जैसाकि आप जानते है, मै मसूरी अपनी माता, पत्नी और बहनो के साथ सिर्फ इसलिए आया हू कि मेरी पत्नी की तन्दुरुस्ती ठीक नही है। मेरा इरादा था कि जबतक मेरे पिताजी को यहा आने की फुरसत नही मिलती, तबतक यहा ठहरता। अफगान प्रतिनिधियो से मुझे कुछ सरोकार नही है और यह एक सयोग है कि हम दोनो एक ही होटल मे ठहरे है। सच तो यह है कि उनकी मौजूदगी ने मेरे लिए कुछ असुविधा पैदा की है, क्योकि मै उन कमरो को लेना चाहता था, जहा वे ठहरे हुए है। इस प्रतिनिधि-मडल मे मेरी दिलचस्पी जरूर है, जैसीकि हर समझदार आदमी को होनी चाहिए, लेकिन उनसे खासतौर से मिलने की कोशिश करने का न कोई मेरा इरादा रहा है और न है। हम लोग यहा पिछले सत्रह दिनो से रह रहे है और इस बीच मैने प्रतिनिधि-मडल के एक आदमी को दूर से भी नही देखा है। आप इस बात को खुद जानते है, जैसाकि आपने आज सवेरे मुझे बताया था। लेकिन हालाकि अफगानियो से मिलने का और उनसे पत्र-व्यवहार करने का मेरा कोई भी खयाल नही है, फिर भी सरकार के इशारे से अपने को किसी तरह बाधने का विचार मुझे सख्त नापसद है, भले ही ऐसा करना मेरे लिए असुविधाजनक क्यो न साबित हो। यह दरअसल अन्त करण की बात है। मुझे भरोसा है कि आप मेरी हालत को समझेगे। इसलिए यह कहते हुए मुझे दु ख है कि मै आपकी इस मेहरबानी-भरी सलाह को मानने से लाचार हू और सरकार को कोई वचन नही दे सकता।

अगर सरकार मुझपर कोई आज्ञा लागू करने का फैसला करती है तो इस समय तो मै उसे मानने के लिए तैयार हू। मेरे लिए यह बडी असुविधा की बात होगी कि मै अपने घरवालो को यहा अकेला छोडकर यकायक नीचे चला जाऊ। मेरी स्त्री की सेहत ऐसी है कि बडी सावधानी से देख-रेख की जरूरत है और मेरी मा तो एकदम अपाहिज है और दोनो को बिना देख-रेख के छोडना बहुत ही कठिन है। मेरे अचानक यहा से चले जाने से मेरे पिताजी की और मेरी योजनाए बिलकुल उलट-पुलट हो जायगी और इससे हमे बडी हैरानी और फिक्र होगी, लेकिन सरकार के बडे मामलो मे

आदमी की निजी सुविधाओ पर ध्यान नही दिया जा सकता, ऐसा मेरा खयाल है।

श्री एम एल ओक्स, भवदीय,
पुलिस सुपरिटेडेट, जवाहरलाल नेहरू
हर्मिटेज लॉज, मसूरी।

७. जी. एफ. ऐडम्स के नाम

सेवाय होटल, मसूरी,
१५ मई १९२०

प्रिय श्री ऐडम्स,

मैंने फिरसे उस मामले पर पूरी तरह विचार कर लिया है और मुझे अफसोस है कि मै, सरकार जो चाहती है, वह वचन नही दे सकता। ऐसी हालत मे अगर सरकार मुझे हुक्म दे तो मै मसूरी छोडकर चले जाने के लिए तैयार हू। पहले तो मेरी इच्छा हुई थी कि आपका सुझाव मानकर, सरकार के विना लिखित आज्ञा दिये ही, अपने-आप यहा से चला जाऊ, लेकिन फिर विचार करने पर मै नही समझता कि ऐसा करना मेरे लिए मुनासिब होगा, इसलिए मैं जाब्ते के नोटिस की राह देखूगा।

श्री जी एफ ऐडम्स, आई सी एस., भवदीय,
डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट, जवाहरलाल नेहरू
मसूरी।

८. आदेश

चूकि स्थानीय सरकार की राय में यह विश्वास करने के लिए तर्कसगत कारण है कि इलाहाबाद के जवाहरलाल नेहरू ऐसा काम कर रहे है, या करनेवाले है, जो जनसुरक्षा के खिलाफ है, इसलिए सयुक्तप्रात के लेफ्टिनेंट गवर्नर, भारत रक्षा कानून, १९१५ के नियम ३ द्वारा प्राप्त अधिकार का प्रयोग करते हुए यह आदेश देते हैं कि इलाहाबाद के कथित जवाहरलाल नेहरू सयुक्तप्रान्त के जिला देहरादून की हद के किसी क्षेत्र मे न प्रवेश करेगे, न ठहरेगे, न रहेगे, और कथित जवाहरलाल नेहरू को आगाह किया जाता है कि अगर वह जानबूझकर इस आदेश की अवज्ञा करेगे तो भारत

रक्षा कानून, १९१५ के नियम ५ की उपधारा (१) के मातहत, जिसकी एक नकल इस आदेश के साथ नत्थी है, दडित किये जा सकेगे।

नैनीताल
मई, १९२०

एम. कीन,
मुख्य सचिव,
सयुक्त प्रात सरकार

श्री जे एल नेहरू देहरादून जिला आज छोड देगे।
सुपरिटेडेट दून के आदेशानुसार।

एम. एल. ओक्स,
एस पी देहरादून
१६ ५ २०

९ मोतीलाल नेहरू की ओर से हारकोर्ट बटलर के नाम

बनारस,
१९ मई १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

कल मै अपने बेटे से मिला और उसने मुझे वे हालात बताये, जिनमे उसे स्थानीय सरकार के हुक्म से देहरादून जिले से निकाल दिया गया है। एम एल ओक्स को उसके लिखे खत की नकल साथ है। इसमे उसने अपनी हालत पूरे तौर पर साफ कर दी है और उससे जो वचन मागा गया था, उसे देने से उसने इन्कार कर दिया है। इससे ज्यादा वह मुझे और कोई जानकारी न दे सका।

जो हुक्म उसे मिला, उसकी वजह से उसे घर की औरतो के लिए ठीक-ठीक इतजाम किये बिना ही अचानक मसूरी छोडनी पडी। औरतो मे से दो (मेरी स्त्री और बहू) की सेहत अच्छी नही है। हवाबदली के लिए इनका फौरन पहाड जाना जरूरी हो जाने से शार्लविल् और सेवाय होटलो को माकूल कमरो के लिए तार दिये गए थे। इनमे से पहले मे जैसी जगह चाहिए थी, नही मिल सकी। दूसरे ने हमारी जरूरत को काफी हद तक पूरी करने लायक जगह देने को कहा और वादा किया कि आगे चलकर जब वे कमरे, जो भारत सरकार ने ले रखे है, खाली होगे तो हमारी जरूरतो को ज्यादा अच्छी तरह पूरी कर सकेगे। जो कमरे हमे मिले, वे खासे खर्चे पर

कर सकता है, जिसका उसपर शक किया गया है। आप खुद उससे देर तक बात कर चुके है और जैसा कि मै जानता हू, आदमी की आदत की कितनी ज्यादा और मुख्तलिफ जानकारी आपको है, मै सहज ही यह नही मान सकता कि जिस धातु का वह बना है, उसपर आप जरा भी शक कर सकते है। इसलिए मेरा तो यही ख्याल है कि दो मे एक बात हुई है यह हुक्म या तो किसी गलती या भूल से जारी किया गया है या ऊपर के दबाव से। अगर इनमे से एक भी बात ठीक नही है तो मुझे इस दु खभरे नतीजे पर पहुचना पडेगा कि आपकी सरकार ने अबतक परेशान न करने की जो पालिसी रखी है, उसमे तबदीली हो रही है।

हम एक-दूसरे से ३० साल से वाकिफ है और मैने यही अच्छा समझा कि अपने भावो को साफ-साफ और बिना छिपाये जाहिर कर दू। मै महज इतना ही जानना चाहता हू कि जो हुक्म जारी किया गया है क्या वह स्थानीय सरकार ने पूरी तरह गौर करके जारी किया था, और अगर ऐसा है तो उसकी बुनियाद क्या है ? अगर आप मेहरबानी करके ऐसा करादे कि मुझे यह जानकारी दे दी जाय तो मै आपका अहसानमद होऊगा।

मै दो-एक दिन मे बनारस से चल दूगा और मेरा पता होगा—आरा (बिहार)।

भवदीय,
मोतीलाल नेहरू

माननीय सर हारकोर्ट बटलर,
लेफ्टीनेंट गवर्नर, सयुक्त प्रात,
नैनीताल।

१० सर हारकोर्ट बटलर की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

लेफ्टिनेट गवर्नर का कैंप
सयुक्त प्रान्त, इलाहाबाद,
२६ मई १९२०

प्रिय श्री मोतीलाल नेहरू,

आपका १९ मई का पत्र अभी-अभी यहा इलाहाबाद मे मिला और मै उसका उत्तर तुरन्त ही उसी खुलेपन से दे रहा हू, जिससे कि आपने लिखा है।

मैं नीति मे किसी तबदीली से बिल्कुल जानकार नही हू, और मैं यह समझ ही नही सकता कि जो आश्वासन आपके बेटे से मागा गया, उसमे गिरावट की कोई बात थी। जाहिर है कि इस मामले मे हममे मतभेद है। परन्तु विश्वास कीजिये, मुझे इस बात का बडा खेद है कि आप, आपके पुत्र और विशेषकर आपके परिवार की महिलाओ को एक ऐसी सरकारी कार्रवाही से असुविधा हुई, जिसे आपके पुत्र ने भावना का मुद्दा बनाकर नही माना, लेकिन मुझे लगता है कि उसे दूसरी तरह से भी देखा जा सकता था और उससे उनमे विश्वास ही प्रकट होता। मुझे डर है कि यह पत्र आपको कोई वास्तविक सतोष नही दे सकेगा, लेकिन मैं उम्मीद करता हू कि सार्वजनिक मामलो मे हमारी जो भी राय हो, आप मेरी इस बात पर विश्वास करेंगे कि व्यक्तिगत जीवन मे मुझे भरोसा है कि हमारे तीन साल के दोस्ती के सबधो मे किसी चीज से बाधा नही पडेगी।

भवदीय,
हारकोर्ट बटलर

से मौजूद है। मैंने वी० चक्रवर्ती और हसन इमाम को तार दिया है कि पजाब मेल से आये, जो आरा से २९ तारीख को सवेरे गुजरेगी, और मै उनके साथ हो लूगा। अगर तुम अपनी दुसीटर गाडी पर तडके ही चल पडो तो वक्त से बनारस पहुचकर स्टेशन पर हमे मिल जाओगे। २९ और ३० को सवेरे ही सबसे जरूरी काम हमे निपटाने है।

मैंने खास-खास अखबारो को एक प्रेस-तार के रूप मे अपना यह आदेश सभी सदस्यो को भेज दिया है कि वे जरूर आये। दास मेरे साथ चलने की कोशिश मे है, लेकिन हर हालत मे मीटिग मे मौजूद रहेगे, हालाकि यह उनके लिए बडा बेढगा वक्त होगा। हम अपनी बहस कल खत्म कर रहे है और वह अपनी बहस शुरू करने के पहले कुछ छुट्टी की माग करेगे। हम लोगो ने राजी होने के लिए साठ-गाठ कर रखी है।

अच्छा होगा कि तुम मेरे साथ चक्रवर्ती के यहा ठहरो, क्योकि हम लोगो को ज्यादातर साथ ही रहना होगा। दास, चक्रवर्ती और हसन इमाम सभी हमारे साथ नही ठहर सकेगे। मैंने श्रीमती ज्ञानेद्र को लिख दिया है कि तुम और मै उनके साथ ठहरेगे और मैंने यह उम्मीद भी जाहिर की है कि अगर कोई दोस्त दूसरी जगह ठहरने का इतजाम न कर सके, तो वे हमारे ही कमरे मे ठहर जायगे और वह इसका कोई खयाल नही करेगी। यह महज पेशबदी के लिए है।

अच्छा हो कि तुम अमृतसर-साजिश के मुकदमे की पूरी फाइल अपने साथ लेते आओ, लेकिन मुझे अदेशा है कि १३ अप्रैल को जलियावाला बाग में जो प्रस्ताव पास हुआ था, वह उसमे नही होगा। सभीकी निगाह उसपर पडे बिना रह नहीं सकती थी। प्रिवी कौसिल के लिए जो फाइल तैयार की गई थी और जो लीगल रिमैंबरेसर से लाहौर मे मुझे मिली थी उसे खोज लेना। उनमे सारी फाइलो के कागजात की सूची होनी चाहिए। मै सतानम् को भी तार भेज रहा हू कि कही फाइल उनके पास न हो। अगर हमे प्रस्ताव न मिल सके तो हमे जगतनारायण से कहना होगा कि वह एक सार्वजनिक बयान दे। यह मामला ऐसा तो नही कि जिसे निजी माना जाय। तुम्हारे भेजे विवरण जबसे मैंने पढे है मेरा खून खौल रहा है। अब हमे काग्रेस का विशेष अधिवेशन करना चाहिए और इन शैतानो के खिलाफ तूफान खडा

कर देना चाहिए ।

पूरी रिपोर्ट और कागजात अपने साथ लाना न भूलना।

तुम्हारा स्नेही,

पिता

१२. मोतीलाल नेहरू की ओर से

[आरा से ३ जून १९२० को मुझे भेजे गये पिताजी के पत्र का एक अंश]

तुम्हारे निकाले जाने के हुक्म को तोडने के खयाल की मै बहुत जोरो से मुखालफत करता हू । अगर ऐसा करना बिल्कुल जरूरी ही होता तो बेशक मै यह सोचता ही नही कि नतीजा क्या होगा । लेकिन जैसा कि मैने तुमसे कल कहा, अबतक तुम्हारा कदम इतना ठीक रहा कि इसको आगे बढाने के लिए कुछ करना जरूरी नही है । लाजपतराय मुझसे पूरी तरह से सहमत है । ईमानदारी की बात यह है कि पिछले छ महीनो मे हम सबने काफी तकलीफे उठाई है और अब कोई भडकानेवाला काम करके मै और मुसीबते नही बुलाना चाहूगा। इसके नतीजे—आम और निजी दोनो खयालो से—इतने साफ है कि उनपर बहस करना जरूरी नही है। इसका नतीजा कुटुब को एकदम बिखेर देना होगा और सारे आम, निजी और धधे से ताल्लुक रखनेवाले काम मे उलट-पुलट करनी होगी । एक मे से एक बात निकलेगी और कुछ ऐसा होकर ही रहेगा, जिससे लाचार होकर मै तुम्हारे पीछे जेल पहुंचू या कुछ ऐसी ही और बात हो। मै बात यहीपर छोड देना चाहूगा। अबतक हमारी ही जीत रही है, आगे क्या होता है, उसकी हमे राह देखनी चाहिए ।

१३. मोतीलाल नेहरू की ओर से सर हारकोर्ट बटलर के नाम

कलकत्ता,

८ जून १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

आपके २६ मई के खत की पहुंच देने मे जो देर हुई उसके लिए माफ करें। बनारस और इलाहाबाद की मीटिंगो के लिए जब मैं आरा से चल रहा था तब मुझे वह खत मिला था और आरा लौटने के बाद फौरन ही मुझे

कलकत्ता जाना पडा ।

मेरे और मेरे घरवालो के लिए आपने जो हमदर्दी दिखाई है, और जो यह भरोसा दिलाया है कि सार्वजनिक मामलो मे भले ही हम एकराय न हो, उनसे हमारे आपसी ताल्लुकात पर कोई असर न पडेगा, उसके लिए मै आपका अहसानमद हू । ताहम मुझे अफसोस है कि मै यह नही मान सकता कि किसी भी भले आदमी से इस वचन की माग कि वह किसी वाहरी ताकत के नुमाइदो से कोई गुपचुप साजिश न करेगा, इस वात को जाहिर करती है कि उसकी सरकार का उसपर यकीन है ।

आपको लिखने का मेरा मकसद सिर्फ यह था कि यह पता लगाऊ कि मेरे वेटे के खिलाफ जो कार्रवाही की गई, उसकी क्या कोई वुनियाद थी ? थी तो क्या ? और ऐसा करते हुए मैने यह बताने की कोशिश की थी कि इस तरह की कार्रवाही से, मालूम होता है कि, आपकी सरकार की अवतक की पालिसी मे कोई तवदीली हो रही है । जो जानकारी मुझे चाहिए थी, वह तो आपके खत से मिली नही, और जहातक आपकी पालिसी का सवाल है, मै देखता हू कि आपको किसी तवदीली का पता ही नही है । इसलिए हुक्म मुनासिव है या नही, इस वारे मे कुछ और कहना जरूरी नही है । यह वता देना मै ठीक समझता हू कि इसकी वजह से हम कैसी हालत मे पड गये है ।

औरते मसूरी मे अकेली है, उनके साथ घर का कोई मर्द नही है। उनमे से दो की सेहत वडी नाजुक है और जिस सख्त गर्मी से हम गुजर रहे है, उसमे उनको मैदान मे वापस लाने का सवाल नही उठता । सिविल सर्जन उनकी देखभाल कर रहे है और वरसात शुरू होने तक सव ठीक रहा तो वे लौटकर इलाहावाद आ जायगी । लेकिन अगर दोनो वीमारो मे से किसी की सेहत की वजह से जवाहरलाल की मसूरी मे मौजूदगी जरूरी हुई तो जो हुक्म उसपर तामील हुआ है वह, उसकी फर्ज-अदायगी मे या अपनी मा या स्त्री के पास पहुचने की पूरी कोशिश करने मे रुकावट न होगा । अपनी इज्जत को छोडकर वह ऐसी शर्त, जो उससे चाही गई है, मजूर नही कर सकता, और इस तरह उसके लिए अलावा इसके कोई चारा ही न रहेगा कि स्थानीय सरकार के हुक्म की परवा न करे और इस तरह चले, मानो

वह था ही नही। हुक्मउदूली करके भी वह अपनी मां या स्त्री के इतने नजदीक नही होगा, जितना कि वह उसे भग किये बिना होगा; लेकिन उसे इस बात का सब्र होगा कि उसने अपना फर्ज अदा किया और यही चीज है जिसकी उसे परवा है। अगर ऐसा मौका आया तो वह आपको और देहरादून के सुपरिटेडेट को पाबदीवाले इलाके मे अपने दाखिल होने के इरादे की वक्त रहते इत्तिला देगा, जिससे सरकारी लोगो को, कार्रवाई करने की जो सलाह मिले, वह कर सके।

यह रास्ता है, जिसे जवाहरलाल ने मुझसे सभी पहलुओ पर अच्छी तरह बात करके अपनाना मजूर किया है और मौजूदा हालात मे मुझे इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता मुमकिन भी नही दिखाई देता। जहातक परेशानी या खर्चे का सवाल है वह झुक गया है, लेकिन मै नही चाहूगा और न मै उससे उम्मीद करूगा कि वह उसूल के सवाल पर झुके। सरकार की कार्रवाई की वजह से मसूरी की रिहाइश खत्म होने से औरतो को, भले ही उनकी सेहत का खतरा न हो, सबसे ज्यादा तकलीफ होगी, और जो इतना खर्च हम कर चुके है, उसका भी कोई फायदा न मिलेगा। यह सब हम बरदाश्त कर सकते है, लेकिन हम ऐसा हुक्म नही मान सकते जिसे, आपके लिए इज्जत रखते हुए भी, हम गलत और बेजा समझते है और जिसको न मानने के अलावा हमारे सामने कोई इज्जत का रास्ता नही रह जाता।

इलाहाबाद मे रहते हुए मुझे लिखने का मौका नही मिल सका, लेकिन मुझे यकीन है कि ऊपर जो कुछ मैने कहा है, वह जवाहरलाल के विचारो की उतनी ही नुमाइदगी करता है, जितनी मेरी। लेकिन इसकी तसल्ली करने के लिए मै इस खत को उसके पास भेज रहा हू और उससे कह रहा हू कि अगर वह राजी हो तो इलाहाबाद से उसे रवाना कर दे।

मुझे लगता है कि यहा आरावाले मुकदमे के कुछ गवाहो के साथ, जिनकी गवाहिया कमीशन पर हो रही है, करीब-करीब एक हफ्ता लग जायगा।

भवदीय,

मोतीलाल नेहरू

माननीय सर हारकोर्ट बटलर, के. सी. एस. आई,
लेफ्टीनेट गवर्नर, सयुक्त प्रात।

१४. सर हारकोर्ट बटलर की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

नैनीताल,
१५ जून १९२०

प्रिय श्री मोतीलाल नेहरू,

आपका ८ तारीख का पत्र मिला। औरतो की सेहत के बारे मे आपने जो लिखा है, उसे देखते हुए मैंने दून के सुपरिटेडेट को आदेश जारी कर दिये है कि वह उनकी देखभाल के लिए जवाहरलाल के मसूरी लौटने पर ऐतराज न करे।

भवदीय,
हारकोर्ट बटलर

माननीय पडित मोतीलाल नेहरू,
इलाहाबाद।

१५ मोतीलाल नेहरू की ओर से

जून १९२०

प्रिय सर हारकोर्ट,

आपके १५ जून के पत्र के लिए धन्यवाद, जिसमे आपने खबर दी है कि जवाहरलाल के मसूरी मे आने पर पाबदी लगानेवाले हुक्म को आपने वापस ले लिया। जो घटनाए हुई है उन्हे देखते हुए यह ठीक ही वक्त पर हुआ है। १४ तारीख को मेरी पत्नी की हालत बहुत खराब हुई और १८ को सिविल सर्जन ने डा डाउलर से सलाह करके यह जरूरी समझा कि मै वहा मौजूद रहू। खुशकिस्मती से जब कर्नल बेयर्ड का तार आया तो जवाहरलाल मेरे साथ आरा मे था और हम दोनो १९ के सवेरे चलकर कल यहा पहुचे।

होटल मे रहनेवाले एक पारसी सज्जन की मेहरबानी और इनायत ने, जिन्होंने अपने रहने के हमारे से ज्यादा अच्छे कमरो को हमारी सुविधा के लिए छोड दिया था, और मरीज के लिए दो ट्रेड नर्सो का इतजाम कर दिया था, उनकी देखभाल हमें ठीक होती मिली, हालाकि वह बहुत कमजोर हो गई थी। आज डाक्टर आपस मे सलाह-मशविरा करेंगे, जिसमे मेजर स्ट्रोथी स्मिथ भी शामिल होंगे, जो उसी गाड़ी से आये है, जिससे कि हम आये थे। आरा मे मुझे अपना मुकदमा बडी नाजुक घडी मे छोडकर आना पडा और

मुझे जितनी जल्दी हो सके, लौट जाना है। यहा जवाहरलाल को देखभाल के लिए छोड़कर मै कल लौटने की उम्मीद करता हू।

भवदीय,

मोतीलाल नेहरू

१६. मोतीलाल नेहरू की ओर से

[मेरे नाम आरा से १६ जून १६२० को लिखे गए पिताजी के पत्र का अंश]

मुझे उम्मीद है कि मालवीयजी से आम हालात पर तुम्हारी बात हुई होगी। मै तुम्हारे इस खयाल से बिल्कुल एकराय हू कि तुम्हारा पजाब जाना एकदम गैरजरूरी है। वे कुछ मामले चुन ले और कानूनी राय लेने और अर्जीदावा तैयार करने के लिए उन्हे सारी गवाहियो के साथ पेश कर दे। दास, सरकार और मै इसके बाद आपस मे विचार करके सलाह देगे।

मै समझता हू कि मालवीयजी और मुझे अब कौसिल के चुनावो के बारे मे फैसला कर लेना चाहिए। मेरी समझ मे उन्हे असेबली मे जाना चाहिए और मुझे स्थानीय कौसिल मे। हमे ताल्लुक रखनेवाले चुनाव-हलको को बाकायदा इसकी खबर दे देनी चाहिए। मुझे कौन-सा खास हलका चुनना चाहिए, इसका मुझे जरा भी अदाज नही है। अच्छा हो, तुम मालवीयजी से सारे मामले पर बातचीत कर लो। तुम्हारे लिए भी एक हलका तय हो जाना बहुत जरूरी है, क्योकि तुम अपने ही किले मे सिपहसालार के कमजोर होने की चाहे जो बात करो, मुझे यह यकीन नही कि वह ऐसा कमजोर है। अगर हम काग्रेस के खास इजलास के हो जाने तक चुप बैठे रहे तो देरी हो जायगी। जहातक मैं देख सकता हू यह मुमकिन नही जान पडता कि काग्रेस, काग्रेस की हैसियत से, अपनेको असहयोग से बाधे। काग्रेस इस काम के लिए एक बहुत बडा सगठन है। ज्यादा-से-ज्यादा जो हो सकता है, वह यह है कि वह इस उसूल की मजूरी दे दे, और मेबरो को अपनी-अपनी इच्छा के मुताबिक काम करने को छोड दे। लेकिन अगर हम यह तय करे कि कौसिल मे हम अपना योग न देगे तो हम जब भी चाहे, उसके बाहर आ सकते है।

१७. मोतीलाल नेहरू की ओर से

[इलाहाबाद से पिताजी द्वारा मुझे लिखे गये ५ जुलाई १९२० के पत्र का अश]

मै कुछ खत वगैरा साथ मे भेज रहा हू, जो मेरे यहा दो दिन ठहरने के बीच मिले है। मैने इन सबको पढ लिया है। फतेहपुर के खत पर गहराई से गौर करने की जरूरत है। कल रात पुरुषोत्तम और कपिलदेव से मेरी देर तक बातचीत हुई, जिसके दौरान मे पुरुषोत्तम ने इस बारे मे उन्हे लिखे गये तुम्हारे खत का एक हिस्सा पढकर सुनाया। जहातक तुम्हारे गाधीजी के कहे मुताबिक चलने की बात है, मुझे कुछ कहना नही है। यह एक तरह की भावुकता है, जो मेरी आदत के खिलाफ है। लेकिन जहातक सवाल की अच्छाई-बुराई की बात है, मुझे पूरा भरोसा नही कि गाधीजी भी ठेठ अखीर तक अपने प्रोग्राम पर डटे रहेगे। बात उन्हीपर छोड दी जाय तो वह जरूर ऐसा करेगे। लेकिन यह एक ऐसा मामला है, जिसमे उन्हे दूसरो पर मुनहसिर करना पडता है, और ये दूसरे लोग देर-सबेर अलग हो जाते है। इसके बारे मे तो कोई शक है ही नही। यह सवाल बडा मुश्किल है और मै यह मान लेता हू कि अभी मै किसी पक्के नतीजे पर नही पहुचा हू। असहयोग के उसूल के साथ मेरी पूरी हमदर्दी है, लेकिन असल मे इसकी शक्ल क्या रहेगी, इसका मुझे कोई पता नही। फिलहाल जो हालत है उससे मै लाजपतराय से, खासकर पजाब के बारे मे, एकराय हू, लेकिन मै गाधीजी की इस बात से एकराय नही हू कि सारे हिदुस्तान मे कौसिलो का आमतौर से बायकाट हो। मै तो यह सोचता हू कि अगर हमारी जनता हमे चुनकर कौसिलो मे भेजे और तब हम उसमे बैठने से इन्कार करे या उसकी कार्रवाई मे रुकावट डाले तो इससे असहयोग के उसूल को छोडे बिना हमारे मकसद को बहुत ताकत मिलेगी। इस वक्त तो जो मै कहना चाहता हू, वह यह है कि हममे से किसीको आखिरी फैसला नही करना चाहिए, जबतक आगे के वाकयात सामने न आ जाय।

१८. मोतीलाल नेहरू की ओर से

चेस्टनट लॉज, अल्मोड़ा,
३ जून १९२१

मेरे प्यारे जवाहर,

नगीने से लिखा हुआ तुम्हारा खत आज सवेरे मिला। आशा है, तुम्हारा दौरा सफल रहा होगा।

मेरी सेहत धीरे-धीरे सुधर रही है। यहा के मौसम का कोई ठिकाना नही। कोई-कोई दिन और रात बहुत गर्म होते है और कोई-कोई खासे ठडे। यहा रहते मेरा यह पाचवा दिन है और मुझे कोई शिकायत नही। कम-से-कम पाच दिन और रहू, तब कही ठीक-ठीक सुधार दिखाई देगा। यो दमा बहुत सभला हुआ है, लेकिन मै अब भी टहलने नही जा सकता। घर से सड़क तक की थोडी-सी चढाई मुझे भारी पडती है।

अली-भाइयो ने जो कदम बढाया है, उसे मै बिल्कुल पसद नही करता। गाधीजी को इस मामले मे मैने जो खत लिखा है, उसकी नकल साथ भेज रहा हू। राज ने मेरे लिए वह टाइप कर दी है। मै अपने जी की बात आधी भी नही बता पाया हू और मेरी चिट्ठी बेतरतीब है, फिर भी इससे पता चल जायगा कि मेरे मन मे क्या विचार चल रहे है।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

१९. मोतीलाल नेहरू की ओर महात्मा गांधी के नाम

चेस्टनट लॉज, अल्मोड़ा,
३ जून १९२१

प्रिय महात्माजी,

मैने, अखबारो को दिये अली-भाइयो के बयान के बारे मे ,परसो आपको लिखा था। ऐसा मैने ३१ मई के 'इडिपेडेट' मे छपे एक सक्षिप्त विवरण की बुनियाद पर किया था। अभी-अभी मैने पूरा बयान और उससे ताल्लुक रखनेवाले भारत सरकार के ऐलान को देखा और चैम्सफोर्ड क्लब मे दी गई वाइसराय की तकरीर को भी पढा है। बडे अफसोस के साथ कहूगा कि इन सबको पढकर मुझे कोई तसल्ली नही हुई है।

अली-भाइयो का बयान अपने-आपमे, और अगर उसे आगे-पीछे की घटनाओ के हवाले से न पढा जाय तो, एक काफी मर्दानगी की चीज है। अगर तैश मे आकर उन्होने कुछ ऐसी बाते कह दी है, जिनसे उन्हे अब यह लगता है कि शायद वे हिसा को भडकाये, तो अफसोस जाहिर करके उन्होने इज्जत के उसी रास्ते को अपनाया है, जो उन-जैसे जनता के खिदमतगार को अपनाना चाहिए था। आगे के लिए जो वचन उन्होने दिया है उसे भी मै वाजिब मान लेने के लिए तैयार होता, वशर्ते कि वह वचन अपने उन साथियो को दिया गया होता, जो उनके-जैसे न होकर हिसा मे किसी भी हालत मे भी यकीन नही करते। लेकिन इस तरह के आम लफ्ज जैसे, "सार्वजनिक भरोसा और वादा उनसब लोगो के तई, जिनके लिए जरूरी हो" आज की हालतो मे किसीको भी इस शुबहे मे नही रख सकते कि यह "भरोसा और वादा" किस खास जमात ने मागा है और किसके कहने पर यह दिया गया है। वाइसराय की तकरीर ने अब उसे बिल्कुल साफ कर दिया है और हमारे सामने यह वात पक्के तौर पर आती है कि असहयोग-आदोलन के नेता ने भारत सरकार से सुलह करली है और अली-भाइयो से खुलेआम माफी और वचन दिलवाकर उनपर मुकदमा चलाना रुकवा दिया है।

मामले को इस नज़र से देखते हुए, और मै नही जानता कि और किस नजर से उसे देखा जा सकता है, पूरी तहरीक के बारे मे विचार करने लायक वडे सजीदा सवाल उठते है। दरअसल मुझे लगता है कि असहयोग का सारा उसूल ही छोड दिया गया है।

मै उन लोगो मे नही हू जो सरकार के नाम से ही बिदकते है। न मै उन लोगो मे से हू, जो यह समझते है कि आखिर मे सरकार से समझौता करना ही अकेला ऐसा ज़रिया है जिससे हम अपने ऊपर होनेवाले जुल्मो को खत्म कर सकते है और स्वराज्य को कायम कर सकते है। मेरा भरोसा तो उस वात मे है, जो आप बराबर सिखाते रहे है, यानी स्वराज्य हासिल करना एकदम हमारे ही हाथ मे है। साथ ही मै इस वात की सभावना को अलग नही करता, और जहातक मै जानता हू, आप भी नही करते कि ठीक हालतो मे सरकार से समझौता हो सकता है। लेकिन ऐसे समझौते का ताल्लुक सिर्फ उसूलो से ही रखता है, न कि आदमियो की सहूलियत और हिफाज़त से। साथ

काम करनेवालो मे आप आदमी-आदमी के बीच फर्क नही कर सकते और छोटे-से-छोटा आदमी भी नेताओ के हाथो उसी हिफाजत को पाने का हकदार है, जिसको कि बडे-से-बडा आदमी। हमारे सैकडो नही तो बीसियो लोग अली-भाइयो से कही कम कडी बात कहने पर खुशी-खुशी जेल गये है, इनमे से कम-से-कम कुछ इसी तरह से माफी मांगकर या वचन देकर आसानी से बचाये जा सकते थे। लेकिन ऐसा करने की सलाह देने की किसीको नही सूझी, बल्कि नेताओ ने और सभी असहयोगी अखबारो ने उनके कदम की तारीफ की। एक मिसाल, जो खासकर औरो की बनिस्बत कही ज़ोर से इस वक्त मेरे मन मे उठ रही है, वह हमीद अहमद की है, जिसे हाल ही मे जिन्दगीभर के लिए कालेपानी और जायदाद की जब्ती की सज़ा मिली है। मै उस आदमी को निजी तौर पर जानता हूं। वह बडा ही सीधा-सादा है और अक्ल मे औसत से भी कुछ कम है और कुछ अच्छा बोलनेवाला भी नही है। लेकिन उसने दूसरो की तकरीरे सुन और पढ रखी थी और अपने ही ढग से उनकी नकल करने की कोशिश करता था। ऐसा करने मे शायद वह निशाने से बहक गया। लेकिन मुझे यकीन है कि दरअसल हिसा का प्रचार करने का कभी उसका इरादा नही था। क्या कोई वजह है कि इस आदमी का बचाव न किया जाय ? मुझे पता लगा है कि मुहम्मदअली ने ३० मई की अपनी बम्बई की तकरीर मे उसकी बडी तारीफ की है। मै नही कह सकता कि हमीद अहमद को एक ऐसे आदमी की इस तारीफ से क्या दिलासा मिलेगा, जिसने वैसे ही हालात मे माफी मागकर और वचन देकर अपने को बचा लिया है। फिर न जाने कितने और लोग है, जो जेलो मे सड रहे है, जिन्होने कोई कसूर नही किया और कितने ही औरो को इसीके लिए छाट लिया गया है। क्या हमारे लिए इतना ही काफी होगा कि हम सुरक्षित स्थिति मे रहते हुए इन लोगो को अपनी शुभकामनाए भेजते रहे ?

वाइसराय ने अपनी तकरीर मे यह बात साफ करदी है कि आपने उनसे जो कई मुलाकाते की, उनका एक ही पक्का नतीजा रहा है और वह है अली-भाइयो का माफी मागना और वचन देना। आपने अपनी बाद की तकरीर मे यह बिल्कुल साफ कर दिया है कि हमारा आदोलन बेरोक चलता रहना चाहिए। ऐसा जान पड़ता है कि इस तरह का कोई मसला तय नहीं

हुआ, जिसमे उसूल की बात हो, सिवा इसके कि हिंसा को कोई बढावा न मिले और यह ऐसी बात थी कि जिसके लिए दोनो मे से किसी ओर कोई समझौते की जरूरत नही थी। मै यह नही कहता कि इस हालत मे सरकार से बातचीत करने की कोई ज़रूरत नही थी, हालाकि इसकी हिमायत मे भी बहुत-कुछ कहा जा सकता है। जब यह मालूम होगया था कि खेल तो आखिर तक खेला जायगा, तो आप और लार्ड रीडिग जैसे इज्ज़तदार प्रतिपक्षी के लिए यह बिलकुल मुनासिब होता कि खेल के कायदे तय करते, जिससे किसी तरफ से बेईमानी न हो। ये कायदे बेशक खेल मे सभी हिस्सा लेनेवालो पर लागू होते, न कि कुछ इने-गिने अजीज लोगो पर। सबसे बडी ज़रूरत इस बात की थी कि कौन-कौन-से हथियार काम मे लाये जाय, इसपर समझौता होजाय। कुछ स्थानीय सरकारे कहने को तो यह कह देती है कि वे प्रचार का जवाब प्रचार से दे रही है, पर दरअसल वे बुरे-से-बुरे ढग से दमन कर रही है। इसी तरह के बहुत-से और मुद्दे मेरी राय में बातचीत के मुनासिब मुद्दे बन सकते थे, चाहे खास मुद्दे पर कोई समझौता न हुआ होता।

मै उम्मीद करता हू कि आप मुझे गलत न समझेगे। अली-भाइयो की कुरबानी के लिए तारीफ मे मै किसीसे पीछे न रहूगा, और इसे मै अपनी बडी खुशकिस्मती मानता हू कि मुझे उनकी खास दोस्ती हासिल हुई है। जो बात मेरे मन पर कुछ वक्त से वज़न डाल रही है, वह यह है कि हम लोग, जो अपने बहुत-से कार्यकर्ताओ के जेल जाने और दूसरी तकलीफो के भुगतने के लिए सीधे तौर पर ज़िम्मेदार है, खुद उन तकलीफो से बिलकुल बचे हुए है। मिसाल के लिए सरकार मुझे तकलीफ और दिमागी परेशानी पहुचाने के लिए इससे ज्यादा सज़ा का कोई तरीका नही निकाल सकती थी कि मेरे लिखे पर्चे बाटने पर वह बेकसूर लडको को जेल मे डाले। मै समझता हू कि अब वह वक्त आगया है कि जब नेताओ को तकलीफ उठाने के मौको का स्वागत करना चाहिए और बचाव के फुसलावो से बिल्कुल इन्कार कर देना चाहिए। मामले को इस निगाह से देखते हुए मैने अली-भाइयो के काम पर ऐतराज़ किया है। निजी रूप मे मै उनसे प्यार करता हू।

अब मै बिल्कुल थक गया हू। आपसे जल्द मिल पाता तो अच्छा होता। बातें करने के लिए इतना-कुछ है। यहा रहते मुझे चार दिन होगये है और

सेहत मे कुछ सुधार हुआ है, लेकिन दमा बिल्कुल गया नही है और कमज़ोरी तो इतनी कभी नही जान पड़ी थी। बम्बई १४ तारीख की बैठक के लिए पहुच पाऊंगा, इसमे बहुत शुबहा है।

आपका,

मोतीलाल नेहरू

२०. महात्मा गांधी की ओर से

[हिन्दुस्तान के असहयोग-आंदोलन में पहला सामूहिक जेल-यात्रा-काल दिसम्बर १९२१ में शुरू हुआ। दसियों हजार लोग कानून को खास तरीके से भंग करने के कारण कैदखाने भेज दिये गए। जब हमने सुना कि महात्मा गांधी ने इस आंदोलन को वापस लेने का अचानक हुक्म दे दिया है, तब हममें से ज्यादातर जेलखाने में थे। उनमें मेरे पिताजी भी शामिल थे। कारण यह बताया गया कि उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में चौरीचौरा के किसानो की एक उत्तेजित भीड़ ने एक पुलिस चौकी पर हमला करके उसे जला दिया और जो थोड़े-से पुलिसवाले वहां थे, उन्हे मार डाला। जेल में हम सबको बड़ा दुःख हुआ कि किसी गांव में लोगो के एक समूह के दुराचरण के कारण एक महान् आंदोलन इस तरह अचानक वापस ले लिया गया। महात्मा गांधी उस समय आज़ाद थे, यानी जेलखाने में नही थे। हमने जेलखाने से किसी तरह, जो कदम उन्होने उठाया था उसपर, अपनी गहरी तकलीफ उनतक पहुंचा दी। यह पत्र गांधीजी ने उसी अवसर पर लिखा था। यह मेरी बहन सरूप (अब विजयालक्ष्मी पंडित) को मुलाकात में हमारे सामने जेल में पढ़कर सुनाने को दिया गया था।]

बारडोली,

१९ फरवरी १९२२

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे मालूम हुआ है कि तुम सबको कार्य-समिति के प्रस्तावो पर भयंकर पीड़ा हुई है। मुझे तुमसे हमदर्दी है और पिताजी की बात सोचकर मेरा दिल टूटता है। उन्हे जो पीडा हुई होगी, उसकी मैं अपने मन मे कल्पना कर सकता हूं। परन्तु मुझे यह भी महसूस होता है कि यह पत्र अनावश्यक है, क्योंकि मैं जानता हूं कि पहले आघात के बाद स्थिति सही

तौर पर समझ मे आगई होगी। बेचारे देवदास की बचपन-भरी नासमझियों का हमारे दिमाग पर बहुत बोझा नही होना चाहिए। बिल्कुल सभव है कि उस गरीब लडके के पैर उखड गये हो और उसका मानसिक सतुलन जाता रहा, परन्तु इससे इन्कार नही किया जा सकता कि असहयोग-आदोलन से सहानुभूति रखनेवाली गुस्से से पागल भीड ने पुलिस के सिपाहियो की वहशियाना ढग से हत्या की। इससे भी इन्कार नही किया जा सकता कि वह भीड राजनैतिक चेतना रखनेवाली भीड थी। ऐसी साफ चेतावनी पर ध्यान न देना बडा अपराध होता।

मै बता दू कि यह चरम सीमा थी। वाइसराय के नाम मेरी चिट्ठी शकाओ से खाली नही थी, जैसाकि उसकी भाषा से जाहिर है। मद्रास की करतूतो से भी मै बहुत अशान्त हुआ था, लेकिन मैने चेतावनी की आवाज़ को दबा दिया। मुझे कलकत्ता, इलाहाबाद और पजाब से हिन्दुओ और मुसलमानो के पत्र मिले थे। यह सब गोरखपुर की घटना से पहले की बात है। उनका कहना था कि सारा दोष सरकारी पक्ष का ही नही है, हमारे लोग आक्रमण-कारी, हेकड और धमकानेवाले बनते जा रहे है, हाथ से निकले जा रहे है और उनका रवैया अहिसक नही है। जहा फीरोजपुर जिरके की घटना सर-कार के लिए अपयशकारी है वहा हम भी एकदम निर्दोष नही है। हकीम-जी ने बरेली के बाबत शिकायत की। मेरे पास झज्जर के बारे मे कडी शिका-यते है। शाहजहापुर मे भी टाउन हाल पर जबरदस्ती कब्जा करने की कोशिश की गई। कन्नौज से भी खुद काग्रेस के मत्री ने तार दिया कि स्वय-सेवक उद्दड होगये है और हाईस्कूल पर धरना लगाकर सोलह वर्ष से छोटे लडको को स्कूल जाने से रोक रहे है। गोरखपुर मे छत्तीस हजार स्वयसेवक भरती किये गए, जिनमे से सौ भी काग्रेस की प्रतिज्ञा का पालन नही करते। जमनालालजी मुझे बताते है कि कलकत्ता मे घोर असगठन है। स्वयसेवक विदेशी कपडे पहनते है और अहिसा की प्रतिज्ञा से कतई बधे हुए नही है। ये सब खबरें और दक्षिण से इससे भी ज्यादा खबरे मेरे पास थी, तब चौरीचौरा के समाचारो ने बारूद मे जबरदस्त चिनगारी का काम दिया और आग लग गई। मै तुम्हे विश्वास दिलाता हू कि अगर यह चीज़ मुल्तवी न कर दी जाती तो हम एक अहिसक आन्दोलन के बजाय असल मे हिसक सग्राम को चलाते।

यह बेशक सच है कि देश के एक कोने से दूसरे कोने तक अहिसा गुलाब के इत्र की खुशबू की तरह फैल रही है। परन्तु हिसा की दुर्गंध भी अभी तक जबरदस्त है और इसकी उपेक्षा करना, उसे तुच्छ समझना, बुद्धिमानी नही है। हमारे इस तरह पीछे हटने से काम आगे बढेगा। आन्दोलन अनजाने मे सही रास्ते से हट गया था। अब हमने अपनी पतवार फिर सभाल ली है और सीधे आगे जा सकते है। घटनाओ को सही रूप मे देखने के लिए तुम्हारी स्थिति जितनी प्रतिकूल है मेरी उतनी ही अनुकूल है।

दक्षिण अफ्रीका का मेरा अपना अनुभव बताऊ ? जेलो मे हमारे पास तरह-तरह की खबरे पहुचाई जाती थी। अपने पहले अनुभव के दो-तीन दिनो मे तो मै इधर-उधर के समाचार सुनकर खुश होता रहा, लेकिन मैने फौरन समझ लिया कि इस रिश्वतखोरी मे मेरा दिलचस्पी लेना बिल्कुल व्यर्थ है। मै कुछ कर नही सकता था। मेरे किसी सन्देश के भेजने से कोई लाभ नही था और मै व्यर्थ अपनी आत्मा को कष्ट पहुचाता था। मैने अनुभव किया कि जेल मे बैठकर आन्दोलन का पथ-प्रदर्शन करना मेरेलिए असभव है। इसलिए मै तो तबतक प्रतीक्षा ही करता रहा जबतक बाहरवालो मे मुलाकात होकर खुलकर बाते नही हुई। फिर भी मेरी बात सच मानो कि मैने दिमागी दिलचस्पी ही ली; क्योकि मैने महसूस किया कि किसी बात का निर्णय करना मेरे अधिकार के बाहर है और मुझे मालूम होगया कि मै बिल्कुल सही रास्ते पर हू। मुझे याद है कि किस तरह हर बार मेरे जेल से छूटने के समय तक जो विचार बनते थे, वे रिहाई के बाद और रूबरू जानकारी मिलने पर तुरन्त बदल जाते थे। जो हो, जेल के वायुमडल के कारण हमारे मन मे सारी बाते नही रहती। इसलिए मै चाहूगा कि तुम बाहर की दुनिया को अपने ख़याल से ही निकाल दो और यही समझ लो कि वह है ही नही। मै जानता हू कि यह काम बहुत ही कठिन है, परन्तु यदि कोई गभीर अध्ययन शुरू कर दो और

मातृभूमि के नाम पर हमने रोज इतना अच्छा सूत क्यो काता। तुम्हारे पास 'साग सिलेशियन्ल' है। मै तुम्हे एडविन आर्नल्ड जैसा बेमिसाल अनुवाद तो नही दे सकता, मगर मूल सस्कृत का उल्था यो है, "शक्ति बेकार नही जाती, नष्ट तो होती ही नही। थोडे-से धर्म से भी मनुष्य कई बार गिरने से बच जाता है।" इस धर्म का आशय कर्मयोग से है और हमारे युग का कर्म-योग चर्खा है। प्यारेलाल के मार्फत तुमने मुझे खून सुखानेवाली खुराक पिलाई है, उसके बाद तुम्हारा उत्साहवर्धक पत्र आना चाहिए।

तुम्हारा,
मो. क. गांधी

प्रिय सरूप,

अगर तुम्हारा खयाल हो कि उपरोक्त पत्र से लखनऊ के बदियो को कुछ ढाढस मिल सकता है तो अगली मुलाकात मे जवाहरलाल को पढकर सुना देना। वैसे भी मुझे जरूर बताना कि वहा के क्या हाल-चाल है। आशा है, तुम लोगो मे से कोई दिल्ली आ रहा है। तुम्हारे नाम पिताजी के पत्रो मे से एक रणजीत ने मेरे पढने के लिए भेजा था।

तुम्हारा,
बापू

बारडोली
२०. २ १९२२

प्यारेलाल बताते है कि तुम्हारे नाम भेजे हुए पत्र देर से मिल सकते है। इसलिए यह पत्र दुर्गा के मार्फत भेजा जा रहा है।

[हममें से अधिकाश गांधीजी को 'बापू' कहकर पुकारते थे, जिसका अर्थ पिता होता है। दरअसल, भारत के बहुसख्यक लोग उन्हें 'बापू' ही कहते थे।]

२१ सरोजनी नायडू की ओर से

ताजमहल होटल,
बम्बई,
३ जून १९२३

प्रिय जवाहर,

शाबाश! हम हिम्मत से तूफान का सामना करेंगे और इस सलाह पर

चलेगे कि हमारा काम सग्राम और हमारी शाति विजय है। मेरे विचार से बकरीद के सवाल पर पूरे[1] सम्मेलन का सुझाव बिल्कुल ठीक है और उसके लिए जगह कई कारणो से नागपुर की बजाय इलाहाबाद ही ज्यादा मुनासिब है। मशा यह है कि खिलाफत और काग्रेस की कार्यकारिणी समितियो की सयुक्त बैठक हो सके।

नागपुर-सत्याग्रह का सगठन तो ठीक है, कमी सिर्फ यही है कि स्थानीय लोग उसमे हिस्सा नही ले रहे है। इस खयाल से जबलपुर-सत्याग्रह सचमुच ज्यादा खरा है, और छानबीन करने पर मुझे पता लगा कि जबलपुर को उन्ही लोगो ने धोखा दिया, जिन्होने उसे उकसाया था और उसके लिए पद्रह हजार रुपये का अनुदान देकर जाब्ते से समर्थन किया था। जो हो, मैंने उनसे कहा है कि टाउन-हाल के मामले मे सारे सत्याग्रह को २० तारीख तक रोक दे। उनकी इस धारणा को ध्यान मे रखते हुए कि वे पुरानी कार्यकारिणी के समर्थन से काम कर रहे है सत्याग्रह फौरन बन्द करने का आदेश देना अन्याय होता।

बुजुर्गवार राजगोपालाचार्य का आचरण धक्का पहुचानेवाला है और उसके साथ ही अचक सचाई से दूर है।

स्वराज पार्टी यहा खत्म-सी है और मैंने सुना है कि पटेल स्वराज पार्टी के उम्मीदवारो के खिलाफ कुछ औरो को खडा कर रहे है। सी. आर. दास दक्षिण मे अपने भाषणो से स्थिति को खासा नाजुक बनाये दे रहे है।

जो हो, जबतक सुमेरु का रत्न न मिल जाय, हम लोगो को समुद्र-मथन करते ही रहना चाहिए। पर पहले बकरीद से तो निबट ले। इशाअल्लाह वह जरूर पूरा होगा।

सप्रेम,

बहन सरोजिनी

---

[1] श्रीमती सरोजिनी नायडू के पत्रों की लिखावट को पढ़ना बड़ा कठिन है। जहां हम समझने में असफल रहे, वहां उनकी पुत्रियों—कुमारी पद्मजा नायडू और कुमारी लीलामणि नायडू की सहायता लेनी पड़ी। यहां 'पूरे' (Full) शब्द से बहुत अधिक अर्थ नहीं निकलता, पर हमने से [illegible] भी इससे अधिक उपयुक्त शब्द नहीं सूझ सका।

[स्वराज पार्टी को देशबन्धु चित्तरंजन दास और प मोतीलाल नेहरू ने कौंसिल-प्रवेश के उद्देश्य से काग्रेस के अन्तर्गत स्थापित किया था। इसके फलस्वरूप कौंसिल-प्रवेश के पक्षपातियो और विरोधियो में झगडा उठ खड़ा हुआ। कौंसिल-प्रवेश के पक्षपाती परिवर्तनवादी और उसके विरोधी अपरिवर्तनवादी कहलाये। श्री राजगोपालाचार्य अपरिवर्तनवादियो के नेता थे। इस नये घटनाक्रम के समय मै जेल में था।]

२२ महादेव देसाई की ओर से

[महादेव देसाई गाधीजी के सेक्रेटरी और प्रिय शिष्य थे।]

देहन (सूरत होकर),
५ जुलाई १९२३

प्रिय जवाहरलाल,

मै तो तुमसे मिलने की आशा लगाये हुए था और सोचता था कि तुम्हारे लम्बे और स्नेहपूर्ण पत्र का उत्तर दिल खोलकर वाते करके दूगा। मगर ऐसा न होना था। २ तारीख को हृदय की धडकन बन्द हो जाने से अचानक मेरे पिताजी चल वसे। मै उस समय आश्रम मे था। भाग्य मे इतना भी सतोप नही वदा था कि उनकी अन्तिम घडियो मे मै उनके पास होता। तुम्हे तो एक विलक्षण सच्चे पिता का पुत्र होने का सौभाग्य प्राप्त है, इसलिए मेरे दु ख की कल्पना कर सकते हो। पिताजी के कारण पिछले छ -सात वर्षो मे मेरे जो जी मे आई, करता रहा। उन्होने मुझे घर की झझटो से विल्कुल मुक्त रखा और जो मुझे अच्छा लगा, वही प्रेमपूर्वक करने दिया। मै तो तुच्छ और निकम्मा हू, मगर वह मुझे देख-देखकर जीते थे, जैसे पडितजी तुम्हे देखकर जीते है, इसलिए मुझे भयकर पीडा है कि मैने उनके लिए कोई भी ऐसी वात नही की, जिसे कल्पना की खीचतान करके भी सेवा कहा जा सके। वह मेरेलिए घोर परिश्रम करते रहे और मै उसके फल तो भोगता रहा, मगर उसका वदला कभी नही दे सका। प्रभु मुझे कैसे क्षमा करेगा ? जब मुझे ये विचार सता रहे थे, तव मुझे पडितजी का ध्यान आया और मैने उन्हे कुछ पक्तिया लिख दी। अगर तुम समझो कि बीमारी मे उन्हे इनसे कष्ट नही होगा तो जहा भी वह हो, उनके पास भेज देना।

मेरा जी ठिकाने नही है कि राजनीति की बात सोच सकू। मगर मेरा खयाल है कि अगर तुम ऐसा प्रस्ताव पास करा सको, जिससे प्रान्तो को काम करने की स्वतत्रता मिल जाय तो सारा झगडा खत्म हो जाय। पता नही, नागपुर के मामले मे तुम क्या करोगे, लेकिन मुझे भरोसा है कि तुम मजबूत रवैया अपनाओगे।

बहुत-बहुत प्यार।

सप्रेम,

महादेव

२३. महादेव देसाई के नाम

अगस्त १९२३

प्रिय महादेव,

यह कुछ अजीब बात है कि जिन पत्रो को लिखने की हमारी सबसे ज्यादा इच्छा रहती है, वे अक्सर देर मे लिखे जाते है। जाब्ते के नोट और कामकाजी चिट्ठिया तो चली जाती है, पर जिन चिट्ठियो को लिखने का हम सबने ज्यादा विचार करते है, वे बिना लिखी रह जाती है। ६ या ७ अगस्त से, जबकि तुम्हारा मार्मिक पत्र मुझे नागपुर मे मिला, मैं हर रोज तुम्हारे और उस पत्र के बारे मे सोचता रहा हूं। खबर मुझे नागपुर स्टेशन पर गाडी से उतरते ही मिली। रामदास ने मुझे बताई। मेरा दिल तुम्हारे दुःख से दुखी हुआ, क्योकि मैं अच्छी तरह समझता था कि तुम कैसी तकलीफ मे होगे। हममे से कुछ, जिन्होने भूले की है या काफी कसूर किये है, दुनियादारी के मामले मे मजबूत होगये है, लेकिन वे ही बाते तुम्हारे जैसे सीधे आदमी को ज्यादा मुश्किल मालूम होगी और मैं तुम्हारी कसक और आत्म-

संघर्ष सहने की सीमा को पार कर गया था, मुझे जो सलाह दी थी, वह मैं कभी नही भूलूगा। उनके तसल्ली देनेवाले शब्दो ने मेरी दिक्कते कम की और मुझे कुछ शाति मिली। तुम्हे मार्च १९१९ के वे दिन याद है, जब तुम और मैं पहली बार दिल्ली मे प्रिंसिपल रुद्र के घर पर मिले थे ? बापू, तुम, मैं और वह छोटा डाक्टर साथ-साथ इलाहाबाद गये और फिर एक या दो दिन बाद तुम लखनऊ या शायद बनारस चले गये थे। जो हो, 'बी.' के सुझाव पर मैं तुम्हारे साथ प्रतापगढ तक गया और रास्ते मे वह और मैं बात करते रहे। यह मेरी उनके साथ पहली गभीर और काफी लबी चर्चा थी—चार बरस पहले। `साल कितने लबे लगते है!

तुम्हारे पिता से मिलने का मुझे सौभाग्य नही हुआ, लेकिन सिविल वार्ड के हमारे बगीचे मे तुमने उनके बारे मे मुझे बताया था। मैं भली-भाति इसकी कल्पना कर सकता हू कि उन्हे अपने बेटे पर गर्व रहा होगा और इस बात पर पूरा-पूरा सतोष रहा होगा कि उनकी तकलीफो और मेहनत का कितना कीमती नतीजा निकला। तुम अपनेको बेकार दुखी कर रहे हो। अपने पिता से सेवा का जो पाठ तुमने सीखा, उसे तुम बाहर दुनिया मे पहुचा रहे हो और निश्चय ही अपनी निजी मिसाल से तुमने बहुतो पर असर डाला है। तुम्हारे पिता इसे बुरा नही मान सकते थे, और न यही पसद करते कि तुम देश की व्यापक सेवा छोडकर गृहस्थी के तग दायरे मे रहो।

मैं थका हू और मेरा दिल बेचैन है। नागपुर मेरेलिए एक बहुत ही दुखभरा तजुरबा रहा है। मैं यहा कुछ समय के लिए भीड-भाड से दूर रहकर घूमने के इरादे से आया था। लेकिन पिताजी के फिर से बीमार पडने की वजह से ऐसा न कर सका। अपनी आदत के खिलाफ मैंने खुद बुखार बुला लिया, लेकिन अब उससे मैंने छुटकारा पा लिया है।

जवाहरलाल

२४ मोतीलाल नेहरू की ओर से

[१९२३ में नाभा राज्य के अधिकारियो ने मुझे अचानक कैद कर लिया था और बाद में मुझपर बहुत-से इलजाम लगाये, जिनमे एक साजिश का भी था। मेरे पिताजी ने जब इसे सुना तो वह बडे परेशान हुए, खासकर इसलिए कि बहुत-सी देशी रियासतें कायदे-कानूनो से बधकर नही चलती

थीं। वह मुझसे जेल मे मिले और मुझे रिहा कराने के लिए चितित थे। इससे मुझे तकलीफ हुई, क्योकि मै नहीं चाहता था कि वह सरकार से कोई रियायत चाहें।]

२८ सितम्बर १९२३

मेरे प्यारे जवाहर,

मुझे यह जानकर तकलीफ हुई कि मेरी कल की मुलाकात ने तुम्हे कोई राहत पहुचाने की बनिस्बत तुम्हारी जेल की सुखी जिदगी के ढर्रे को बिगाड दिया। बहुत बेचैनी से सोचने के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि फिर तुमसे मुलाकात करने मे न तुम्हारा फायदा है, न मेरा। तुम्हारी गिरफ्तारी के बाद से जो कुछ मैने किया है, उसके लिए मै साफ दिल से ईश्वर और इन्सान के सामने खडा हो सकता हू, लेकिन चूकि तुम्हारा विचार कुछ और ही है, इसलिए अलग-अलग छोरो के मिलाने की कोशिश बेकार है।

मैने कुछ बाते नोट की है और उन्हे कपिल के साथ भेज रहा हू। उनमें कोई नई बात नही, लेकिन मेने इसे अपना फर्ज समझा कि जो भी थोडा-बहुत कर सकता हू, कर दू, यह जानते हुए भी कि मेरे दिमाग की इस वक्त जो हालत हो रही है, उसमे बहुत काम की चीज नही बन पडेगी। अब कपिल जो भी खबर लायेगे उससे तसल्ली करूगा। फिलहाल मेरी समझ मे नही आता कि मै करू तो क्या करू और यहां कुछ दिन इतजार ही करूगा। मेरी बिल्कुल फिक्र न करना। जिस तरह तुम जेल मे खुश हो, उसी तरह मै जेल से बाहर खुश हू।

सप्रेम तुम्हारा,
पिता

फिर से—

ऐसा कभी न समझना कि मैने यह खत गुस्से मे या रज मे लिखा है। करीव-करीब सारी रात सोच-विचार के बाद मैने हालात को ठडे दिमाग से और अमली ढग से देखने की कोशिश की है। मै चाहता हू कि तुम यह खयाल न करो कि तुमने मुझे चोट पहुचाई है, क्योकि मैने ईमानदारी से यकीन किया है कि हम दोनो वाकयात की वजह से ऐसी हालत मे पड गये है, जिनपर हम दोनो मे से किसीका काबू नही है।

२५. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

भुवाली, यू. पी.
७ नवम्बर १९२३

प्रिय जवाहर,

तुम्हारे १ नवम्बर के खत के लिए बहुत-बहुत शुक्रिया । जालन्धर, अमृतसर और खासतौर पर लाहौर मे, जहा के 'नेताओ' मे हद दरजे की दिमागी कोताई है, हमे तुम्हारी गैरमौजूदगी बहुत ज्यादा अखरी । जरा गौर तो करो कि 'असहयोगी लोग', जो इस बात पर जोर देते थे कि वकील अपनी वकालत छोड दे, अब इस बात पर झगड रहे है कि पजाब का सहयोग मत्री (जो इत्तफाक से मुसलमान है) हिन्दू और मुसलमानो मे किस हिसाब से नौकरियो का बटवारा करता है । सन्तानम् और कुछ थोडे-से दूसरे लोगो को छोडकर मुझे लाहौर के इन नेताओ मे गाधीवाद की जरा भी झलक नही मिली, और इसी पजाब की जिल्लत ने सारे हिन्दुस्तान की आखे खोल दी है । वाकई पजाब मेरे लिए एक कभी न सुलझनेवाली पहेली है । ऐसे लोग ही है, जो मौको पर इतनी बहादुरी दिखाते है, जिनकी तादाद ब्रिटिश हिन्दुस्तानी फौज मे सबसे ज्यादा है और जिनका पारा जरा-सी देर मे चढ जाता है, अग्रेजो की अपने ऊपर की गई बेहिसाब बेइज्जतियो को इतनी जल्दी भूल जाय, और परदेशी जालिमो के पैरो-तले रहना बर्दाश्त करे, बजाय इसके कि छोटी-छोटी बेकार बातो के लिए आपस मे झगडना बद करे । यह बात मेरी समझ से बिल्कुल बाहर है । हम लोगो ने वेकटप्पैया को राजी कर लिया है कि सिखो के मसले को सुलझाने के लिए वह अमृतसर काग्रेस वर्किंग कमेटी का इजलास करे । इसमे कोई शक नही कि पजाब और यू पी के फिरकेवारान झगडो पर भी हम लोग चर्चा करेगे । तुम्हारी मौजूदगी जरूरी है और अगर तुम फिर बीमार पडे तो मै तुम्हे माफ नही करूगा । अपनी सेहत ठीक रखो और अमृतसर मे ठीक फैसले करने मे हमारी मदद करो । मै वहा १२ तारीख को लखनऊ मेल से पहुच जाऊगा ।

इलाहाबाद मे रीडिग के स्वागत के सिलसिले मे अगर तुमने लिखकर असलियत से मुझे वाकिफ न कराया होता तो शायद 'लीडर' मे छपे

जोशीले ब्यौरे को पढ़कर मुझे शक हो जाता कि कही इलाहाबाद के लोग तुम्हारे और पिता के तई और उन ऊंचे मकसदो के तई जो तुमने उनके सामने रखे है, वफादार नही रहे। लेकिन हम 'लीडर' को भी तो खूब जानते है! उसके बम्बई के खबर भेजनेवाले ने यह ऐलान करने की हिमाकत की थी कि मेरे बम्बई पहुचने पर मुश्किल से पचास आदमी स्टेशन पर मुझे लेने आये थे, जबकि वाकया यह है कि फोटोग्राफर और सिनेमावाले स्टेशन पर मौजूद थे और इतवार के 'बाम्बे क्रॉनिकल' ने जो तस्वीर छापी है, उसमे तुम शायद दो से तीन हजार तक लोग तो गिन ही सकते हो। मै इतना जानता हू कि मेरे और अम्मा के वास्ते जो गाडी खडी थी उसतक पहुचने के लिए मुझे भीड चीरकर रास्ता बनाना पडा। खैर, हम लोग 'लीडर' और उनके 'मनूबो' से वाकिफ है।

इन्दू, श्रीमती जवाहरलाल (कमलाजी), 'स्वरूप आपा' (श्रीमती स्वरूपरानी) और पिता को मेरा प्यार।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

२६ मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[मौलाना मोहम्मदअली मशहूर अली-भाइयो में से एक थे। अली-भाई हिन्दुस्तान मे खिलाफत-आंदोलन के नेता थे। सन् १९२० के राष्ट्रीय आंदोलन और असहयोग मे अली-भाइयो ने खास हिस्सा लिया। अली-भाइयो में मौलाना शौकत अली जेठे थे। आगे के पन्नो में उनका भी एक खत है। मौलाना शौकतअली ऊंचे कदवाले मोटे और भारी-भरकम आदमी थे। उनका जिक्र 'बड़े भाई' के नाम से किया जाता था।]

फेयरी विला,
भुवाली, यू. पी.
१९२३

साथ ही होता । दिल्ली से लौटने पर मेरी तबीयत खराब रही । कई रोज तक बुखार रहा । नतीजा यह कि पहली अक्तूबर को अल्मोडा जाने का जो मेरा प्रोग्राम रखा गया था, वह मुझे छोडना पडा । अभी बीमारी से उठा ही था कि अल्मोडे का एक मजबूत जत्था मुझे सिविल नाफरमानी के इस मजबूत किले मे ले आया और मुझे पुराने दोस्त सर विलियम मैरिस (या मैलिस=दुश्मनी) के पीछे-पीछे एक नेमिसिस[1] की तरह वहा जाना पडा ।

मेरे यहा से दिल्ली जाने के बाद मेरी लडकी का बुखार काफी उतर गया । उन दिनो यहा मौसम खुश्क और खुला था । औसतन तीसरे पहर को बुखार १००° और शाम को १०१° रहता था, लेकिन मेरे लौटने से एक-दो दिन पहले फिर यहा बारिश शुरू होगई । नतीजा यह हुआ कि आगे के दस दिनो तक बुखार धीरे-धीरे बढकर फिर १०३° पर पहुच गया। लेकिन ५ तारीख से अमीना फिर बेहतर है। अब तीसरे पहर उसका बुखार १००° रहता है और शाम को १०१४° हो जाता है । दरअसल मुझे उम्मीद है कि अक्तूबर मे उसकी सेहत बहुत सुधर जायगी । मै चाहूगा कि अक्तूबर के पूरे महीने मे उसके पास रहू, ताकि इस मौसम मे उसकी ठीक-ठीक देखभाल हो सके और इस तरह पूरा-पूरा फायदा उठाया जा सके । लेकिन शौकत किसी दिन भी अब जेल से रिहा हो सकते है और उसकी वजह से मुझे लगातार घूमना होगा । मै अब बम्बई जा रहा हू । अगर शौकत की रिहाई आखिरी दिन यानी ३१ अक्तूबर से पहले न हो सकी, तो मै ७ नवम्बर से पहले लौटने की उम्मीद नही कर सकता । कुदरतन अमीना नही चाहती कि मै उसे छोडकर जाऊ । बडी मुश्किल से उसने मुझे १७ और १८ तारीख के लिए जालधर जाने की इजाजत दी है । इस काम के लिए १५ तारीख को यहा से रवाना होने का मेरा इरादा था, लेकिन चूकि मौलाना अब्दुल बारी ने, जिन्होने बडी मेहरबानी से मुझे लखनऊ जाने से माफी दी थी और जो खुद यहा आना चाहते थे और दो बार जिनकी रवानगी मजबूरन रुक गई, अब भुवाली से १४ तारीख को लखनऊ जाना तय किया है । वहा से मै १६ को जालन्धर चला जाऊगा । १६ को पजाब मेल मे तुम भी मेरे साथ चलना । हमे बहुत-सी बाते करनी है और फैसले करने है ।

[1] गुनाहो की सजा देनेवाली एक यूनानी देवी

अपनी न टलनेवाली गैरमौजूदगी का मुझे बडा अफसोस है। मेहरबानी करके इसकी इत्तिला अपनी कान्फ्रेस को दे देना। सच मानो, अगर मै वहा आ सकता, तो आनाकानी न करता। उम्मीद है कि तुम्हारी कान्फ्रेस यू. पी. के माथे से इस कालिख को जल्दी-से-जल्दी मिटा देगी कि वह बिखरा हुआ सूबा है।[1] सूबाई काग्रेस की बैठक को काशी की पाक मिट्टी से मजबूत सगठन—नेशनल काग्रेस के सगठन—का पैगाम भेजना चाहिए, ऐसे सगठन का पैगाम, जिसका मकसद हो यूरोप के पैरोतले अनगिनत तकलीफ और बेइज्जती बर्दाश्त करती, गिरी और दबी इन्सानियत को मजबूत करना, और इस कान्फ्रेस से हम सब लोग सचमुच 'शुद्ध' होकर जाय—सब तरह की तगदिली, दकियानूसी और बेबरदाश्तगी से पाक होकर, ताकि हम अपने वतन को गुलामी की जजीरो से आजाद कर सके—उस गुलामी से जो सिर्फ बदन की ही गुलामी नही है, बल्कि जमीर की भी है। खुदाबदताला तुम्हारी कोशिशो को कामयाब करे और अपनी रहमत से हम सबको फतह के लिए नया हौसला, मजबूती और इरादा बख्शे। अगर काशी मे अब भी पुराने जमाने की रूहानियत का कुछ भी हिस्सा बाकी है तो हमे अपने सिपहसालार गाधीजी के काम को मजहबी लगन और फकीराना तरीके से फिर से शुरू कर देना चाहिए। सिर्फ इसी रास्ते पर चलने से हिंदुस्तान को, पूरब को, सच यह कि सारी इन्सानियत को, निजात मिल सकती है।

तुम सबको प्यार।

तुम्हारा,

मोहम्मदअली

२७. लाला लाजपतराय की ओर से

दी तिलक स्कूल ऑव पालिटिक्स,
लाहौर,
१९ नवम्बर १९२३

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारी चिट्ठी मिली। श्री तारकनाथ दास का खत मैने पढ लिया। वह

[1] मौलाना ने यहां यू. पी.—यूनाइटेड प्रॉविन्सेज—के नाम पर व्यंग किया है। यूनाइटेड का मतलब संयुक्त—एक—होता है, जबकि वह सूबा अपनी फूट के लिए बदनाम था।

लोटा रहा हू। उनके कुछ सुझाव अच्छे है और काग्रेस के नेताओ को उनपर जरूर विचार करना चाहिए। मै उम्मीद करता हू कि कोकानाडा मे या इससे पहले भी उनपर विचार करने का मौका मिलेगा। 'अकाली रक्षा समिति' के सबध मे तुम्हारे पिताजी ने अकाली नेताओ के साथ जो व्यवस्था की थी, उसके बारे मे मुझे अभीतक कोई सूचना नही मिली और जबतक मुझे उनमे कोई खबर न मिले, तबतक मै कोई कदम नही उठाना चाहता। मै अपने मे काफी ताकत महसूस नही कर रहा हू, और मुमकिन है कि कुछ दिनो के लिए मै यकायक गायब हो जाऊ। मैने तुम्हारा प्रोग्राम नोट कर लिया है और उसमे मुझे कोई ऐतराज नही है। आशा है, तुम अपनी सेहत का ध्यान रखोगे। एक ऐसे आदमी की सलाह, जो खुद अपनी तन्दुरुस्ती का ध्यान नही रखता, तुमको अजीब-सी लगेगी।

सप्रेम तुम्हारा,
लाजपतराय

[तारकनाथ दास हमारे काग्रेस-कार्य के बारे मे अक्सर तरह-तरह के सुझाव देते रहते थे।

अकाली सिख उस समय गुरुद्वारो के बारे में आन्दोलन कर रहे थे और उनके अनेक नेता गिरफ्तार कर लिये गए थे। काग्रेस उनकी पैरवी करने में मदद दे रही थी।]

२८ मौलाना शौकतअली की ओर से

सुलतान मैनशन,
डोगरी, बम्बई
२९ नवम्बर १९२३

मेरे प्यारे जवाहर,

लो अपने हाथ से मै ये चद सतरे लिख रहा हू। तुम्हारा बडा भइया चोरो और कसाइयो के हाथो मे पड गया था, जिन्होने उसके 'गोश्त की बोटियो' के लिए खास पसदगी दिखाई। मेरा जख्म अभी तक ताजा है और मुझे चैन नही लेने देता। जहातक आराम और चैन का सवाल है फिलहाल तो हमारे लिए वह मुमकिन नही, इसलिए कि अव्वल तो अजीज मुलाकातियो से मिलने से इन्कार नही किया जा सकता, फिर मेरे लिए

धधे के सिलसिले मे वहुत-सा काम करने को पडा था और इन सबसे ज्यादा मेरी दिमागी मसरूफियत है। ताहम अब मै वेहतर महसूस कर रहा हू और ४ तारीख को तुम्हारे पास इलाहावाद पहुचने की उम्मीद रखता हू, इसलिए नही कि वहा मानपत्रो के जरिये इज्जत मिलेगी, जिसकी कि मै कद्र करता हू और इसलिए भी नही कि वहा के कारकून लोग मिलेगे और उनसे साफ वाते होगी, वल्कि इसलिए कि एक मर्तवा फिर तुमसे इतमीनान से बाते करने को मिलेगी। मुझे पूरा यकीन है कि मुल्क को एक साफ, आगे ले जानेवाली ओर वहादुराना पालिसी की जरूरत है और अल्लाह ने चाहा तो हम स्वराज्य लेकर रहेगे ओर फिर अपने 'प्यारे नेता' को रहनुमाई के लिए अपने बीच पायगे। या हजारो की तादाद मे हम उनके पास जेल मे पहुचेगे और वही जेल के भीतर अपनी कान्फ्रेसे करेगे। मेरे अदर सस्ती शहादत की कोई तमन्ना नही है और जेल मे रहने के बजाय मैं आजाद रहना पसन्द करता हू। लेकिन मैं महज काम करने के लिए आजाद रहना चाहता हू, न कि आवारागर्दी या ठाली वैठने के लिए। बाकी वाते मिलने पर होगी। मा, कमलावहन, स्वरूपवहन, छोटी इन्दू और नेहरू-खान्दान के तमाम लोगो को, जिनमे उमावहन भी शामिल है, मेरा सलाम।

प्यार के साथ,

तुम्हारा,

शौकतअली

२९ मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[मौलाना मोहम्मदअली उस समय अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे और मैं कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरियो मे से एक था।]

नेशनल मुस्लिम यूनीवर्सिटी,

निजी

अलीगढ़

१५ जनवरी १९२४

प्रिय जवाहर,

अभी-अभी तुम्हारा खत मिला। मै फिर एक मर्तवा तुम्हारी वेजा नरमी के खिलाफ 'सख्ती के साथ अपनी नाराजगी' जाहिर करना चाहूगा। प्यारे जवाहर, सिर्फ इसीलिए मुझे तुम्हारा सेक्रेटरी रहना पसन्द है कि चूकि वर्किंग कमेटी के चद मेवर सेक्रेटरी की हैसियत से तुमपर एतवार नही

करते और वर्किंग कमेटी मे तुम्हारी मौजूदगी को पसद नही करते। क्या तुम समझते हो कि वे मुझे प्रेसिडेट की हैसियत से पसद करते है या एतबार करते है ? दिल्ली मे मैंने तकलीफ के साथ उस चीज को महसूस किया, जिसे मेरे बहुत-से दोस्त चाहते थे कि मै वह करू। मेरी रहनुमाई को वे जिन लफ्जो मे मजूर करते है, वे बडे ही चापलूसी से भरे थे, लेकिन उनका असली मशा सिर्फ यह है कि वे मेरी रहनुमाई करना चाहते है। जब मै रहनुमाई के तौर पर उनके सामने कुछ पेश करता हू तो वे उससे कतराते है। सदर की हैसियत से मै अपनी जिम्मेदारी से बरी नही हो सकता। जब मैंने तग दलबन्दी से बचने के लिए तुम्हारी, किचलू और देशपाडे और वर्किंग कमेटी के कुछ दूसरे मेबरो की पनाह ली तब मेरी हालत वैसी ही थी, जैसे कोई बेकस जीव बेरहमी से बचने के लिए पनाह खोजने को मजबूर हो। दरअसल हमारी वर्किग कमिटी एकरायवाले लोगो की नही है और यकीनन वह किसी चीज को चुपचाप मजूर नही करेगी। लेकिन फिर भी मै समझता हू कि वह काम करेगी और खास तौर पर तुम्हारे जैसे लोगो के जरिये, जिनके दलबन्दी से ऊपर होने पर मै मुनहसिर कर सकता हू। एक फारसी कहावत है—मन चे मी सरायम, व तम्बूरे मन चे मी सरायद ।—यानी "मै कौन-सा राग गा रहा हू और मेरे तानपूरे से कौन-सा राग निकल रहा है।" हमारी मडली भी ठीक इसी तरह का राग छेड देती है।

लेकिन और चारा ही क्या है ? बिना तुम्हारे बताये हुए मै जानता हू कि तुम्हे पिछली गलतियो के लिए आसू बहाने की आदत नही है। इसलिए खुश रहना चाहिए और हमे अपना काम शुरू करना चाहिए। "क्या हम पस्तहिम्मत होगये है ?" नही।

मुझे अफमोस है कि ए आई सी सी का दफ्तर अभी तक नही पहुचा है। उन्हे तार दो कि वे तैयार होकर चल पडे। मेरा खयाल है कि मेरी छुट्टी भी खत्म होगई है। मुझे सारे सूबो के साथ और अपनी कमेटी के हर मेबर के साथ खतो-किताबत शुरु करनी चाहिए। अभी तक मेरे पास कोई अच्छा शार्टहैंड टाइपिस्ट नही है, जो बतौर मेरे निजी मददगार के काम कर सके। ऐसी हालत मे तुम्हे दफ्तर से किसी ऐसे क्लर्क को मेरे पास भेजना होगा जिसे तुम बेहतरीन समझते हो। अगर वह काम का साबित

न हुआ तो हमे पता चल जायगा कि हम उसकी तनखा पर फिजूल पैसा ज़ाया कर रहे है और इस बहाने मुझे उसे अलग करने का मौका मिल जायगा। मेरे लिए एक होशियार स्टेनोग्राफर की तलाश मे रहो।

जहातक अर्जियो का सवाल है, अपने पास आई अर्जियो मे से तुमने जो छाटी उनपर मै निगाह डाल लू। हमारी सतह जरूरी तौर पर ऊची होनी चाहिए। निकम्मे लोगो की एक फौज के बजाय थोडे-से काबिल आदमी बेहतर है। मै शेरवानी को तैयार करने की कोशिश कर रहा हू कि वह सहायक सेक्रेटरियो मे से एक जगह सभाल ले। लेकिन बेशक वह तुम्हारी ज़रूरत को पूरा नही कर सकेगा, यानी काग्रेस के रोजमर्रा के काम को चलाने की पूरी जिम्मेदारी नही निबाह सकेगा। शेरवानी बहुत उम्दा आदमी है, जिसके सुपुर्द हम काग्रेस की मेवरी का डिपार्टमेट कर सकते है। मेवर वढाने के लिए सूबो के साथ खतो-किताबत करने की फिक्र को अपने ऊपर लेने के साथ-साथ वह जब-तब सूबाई सेंटरो मे जाकर देख सकता है कि आया वे इस काम को पूरा कर रहे है या नही।

मै जानता हू कि तुम ऐसे आदमी चाहते हो जो बहुत घूमे-फिरे नही, बल्कि एक जगह रहे, लेकिन कुछ ऐसे डिपार्टमेट है, जहा असिस्टेट सेक्रेटरी की हैसियत मरकजी कमेटी के एक इस्पेक्टर जनरल या कमिश्नर की-सी बनानी होगी, जिसका काम होगा सुस्त सूबो को वढावा देना।

तुमने अपनी सूबा काग्रेस कमेटी के दिवालियेपन के बारे मे जो-कुछ लिखा है हर सूबे की तकरीबन वही हालत है। मेवरी के चदे से हमे कुछ-न-कुछ आमदनी होनी चाहिए, चाहे वह कितनी ही थोडी क्यो न हो। हमे जोर देना चाहिए कि जल्दी-से-जल्दी मेवरो की भरती की जाय। 'तिलक-स्वराज्य फड' की उगाही भी फिर से चालू होनी ही चाहिए और यह काम मै यू. पी. से शुरू करना चाहता हूं। मै यू. पी खिलाफत कमेटियो को भी लिख रहा हूं, जिसका मेरे कुछ मेहरवान दोस्तो ने मुझे सदर चुना है। मै उन्हे लिख रहा हू कि काग्रेस कमेटियो से तय करके वे मुझे उस रकम के साथ वुलावे दे जो खिलाफत और काग्रेस कमेटिया मुझे नजराने के तौर पर देना चाहती है। क्या तुम यू. पी के एक छोटे दौरे मे मेरे साथ शरीक हो सकते हो ? या दफ्तर के काम को ठीक से चलाने के लिए तुम्हारा इलाहाबाद

मे रहना जरूरी है ? एक अच्छे हिन्दू साथी का दौरे पर मेरे साथ रहना निहायत जरूरी है। अगर तुम नही चल सकते तब कोई और नाम सुझाओ।

जहातक वर्किंग कमेटी की बैठक का सवाल है, जनवरी के अखीर मे कोई भी सुभीते की तारीख तय कर लो, क्योकि उससे पहले बैठक बुलाना मुमकिन नही होगा, सिवा इसके कि महात्माजी की बीमारी की वजह से हमे पहले पूना जाना पडे। क्यो न पूना मे ही बैठक कर ली जाय।

मुझे तुम्हारा तार मिला, जिसमे तुमने लाजपतराय का तार शामिल किया है। पता नही वह हमे क्या समझते है जबकि वह यह कहते है कि हम महात्माजी की रिहाई के लिए सारे मुल्क की तरफ से माग करवाने का इतजाम करे। मै समझता हू कि हमारे दोस्त मे सिविल नाफरमानी की जो भावना रही होगी उसे भी उन्होने कामयाबी के साथ निकाल फेका है। जो सरकार महात्माजी को बीमारी की वजह से छोडती है, वह शायद उन्हे इससे कही ज्यादा खतरनाक बीमारी के बाद जेल मे नही रखेगी। लेकिन गाधीजी की रिहाई की माग हमे मालवीय और गौड जैसे लोगो पर छोडनी होगी और लालाजी को, जो जाहिरा उसी गिरोह के मालूम होते है, खुल्लमखुल्ला उस गिरोह मे शामिल हो जाना चाहिए। क्या यह मजाक नही मालूम पडता कि जो लोग सबसे ज्यादा गाधीजी की भावनाओ के खिलाफ थे वे ही सबसे ज्यादा बुलन्द आवाज मे सरकार से उनकी रिहाई की माग कर रहे है ? हमारी भी गाधीजी की रिहाई की माग है, और वह लाज़मी तौर पर हमे मुल्क से करनी चाहिए।

इन्दू और तुम्हारी बहन को प्यार और तुम्हारी मा और बीवी को मेरी बदगी।

तुम्हारा,

मोहम्मदअली

[तिलक स्वराज्य फड गाधीजी की प्रेरणा पर, काग्रेस द्वारा चलाये जानेवाले असहयोग-आन्दोलन के लिए धन की व्यवस्था करने के लिए, चालू किया गया था। यह अखिल भारतीय फंड था और उसमें १ करोड रुपया एकत्र करने का लक्ष्य रखा गया था। यह लक्ष्य पूरा कर लिया गया था। इस धन का ज्यादा हिस्सा तो प्रान्तीय काग्रेस कमेटियों द्वारा या उनकी मारफत और कुछ केन्द्रीय संगठन द्वारा खर्च किया गया था।]

३०. मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

[इस पत्र में उस विवाद का जिक्र है जो कुंभ-मेले के अवसर पर इलाहाबाद में उठ खड़ा हुआ था। सरकार ने उस जगह, जहां यह घटना हुई, रोक लगा दी थी। मेले में आये हुए हिन्दुओं की भारी भीड़ में इससे बड़ी बेचैनी फैल गई थी और दरअसल उनमें से कुछने सरकारी आदेश को भंग कर डाला। मुझे संयोगवश इसमें कूदना पड़ा। मैंने इस घटना का 'मेरी कहानी' में जिक्र किया है।]

जामिया मिल्लिया इसलामिया,
अलीगढ़
२१ जनवरी १९२४

प्रिय जवाहर,

यह समझकर कि अगर कोई सीधा तार भेजकर मुझे इत्तला न दे मैं मालवीयजी के साथ तुम्हारी गिरफ्तारी के बारे में रोज सवेरे 'लीडर' के सफों को छान डालता था, लेकिन आज के 'लीडर' को देखकर मेरी दुविधा मिट गई, क्योंकि इससे मुझे मालूम होगया कि आखिरकार पंडितजी गवर्नर को सही रास्ते पर ले आये। वह न सिर्फ प्रयाग आया, बल्कि, गंगा-जमुना और तीसरी नजर न आनेवाली पाक नदी जो संगम पर उन दोनों के नीचे बहकर त्रिवेणी बनाती है, उनको अपने इंतजाम में लेने की तुम्हारी म्युनिसिपैलिटी की तजवीज पर तुमसे अच्छी तरह बातें करने के लिए तुम्हें गवर्नमेंट हाउस में ले गया। हालत का मेरा अंदाजा ठीक है न? या इस मुसीबत में पंडितजी के 'अजीबोगरीब साथ' का सिर्फ नया तजुर्बा हासिल करने के लिए तुम अब भी जेल जाने पर आमादा हो? अगर कल के 'लीडर' में मुझे तुम्हारी गिरफ्तारी की खबर न मिली तो मैं तफसील के साथ तुम्हारे तीनों खतों का जवाब देना चाहूंगा। फिलहाल तो मैं तुम्हें सिर्फ यह इत्तला देना चाहता हूं कि मैं २४ तारीख की रात को दिल्ली जा

अपना काम छोडकर उनसे मिलने जाय। बाद मे अन्सारी और हकीमजी से भी कहा गया कि वे भी मेरे साथ आ सकते है, लेकिन किसी तरह का दिखावा नही होना चाहिए। किसी किस्म का कोई शोरगुल न हो, इसलिए बिना किसीको कुछ बताये हम लोगो ने जाने का इरादा किया, लेकिन डाक्टर की हैसियत से अन्सारी ने हमे फौरन जाने से रोका है। उन्हे डर है कि अगर बापू से मिलकर हम लोग अपने जज़बात न दबा सके तो उसका बापू पर अच्छा असर नही पडेगा और वह बेहद थक जायगे। इसलिए हम लोगो ने बाद मे जाने का फैसला किया है। अब हम २७ तारीख को पूना पहुच रहे है। उस वक्त तक बापू मे भी ताकत आ जायगी और क्योकि २९ और ३० तारीख को मुझे बम्बई मे हाजिर रहना है, इसलिए मै काम छोडकर भागने की बुराई से भी बच जाऊगा। अब मै यह जानने के लिए लिख रहा हू कि क्या तुम भी इस 'तीन-मूरती' के साथ कल्याण स्टेशन पर या कही रास्ते मे शामिल होकर २७ तारीख को बापू से भेंट करना चाहोगे ? तार से खबर दो कि क्या तुम हमारे साथ शामिल हो सकते हो और कहा ? लेकिन और किसीसे इसका जिक्र मत करना। मेरी मुराद दोस्तो से नही है और उनको भी और किसीसे नही कहना चाहिए।

बाकी कल।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

फिर से —

आजकल शास्त्री का भूत मुझपर सवार है। सब नरमदलियो पर लानत, हालाकि वे 'मजदूर दल' को उसकी जीत के लिए बधाई दे रहे है। शास्त्री की गलती से मेरा दो दिन का काम ज़ाया हुआ और अब जब मैंने अपने उन्हे भेजे तार का चार दिन तक इतजार करने के बाद उनके जवाब मे अपना बयान छपने को भेज दिया तो उन्होने खत लिखकर माफी मागी। मुझे अपने बयान को छपाने से रोकना पडा।

३१ मौलाना मोहम्मदअली की ओर से

माथेरान,
१५ जून १९२४

निजी

प्रिय जवाहर,

माफ करना, इधर तुम्हे कोई खत नही लिखा। तुम जानते ही हो कि

अपनी बेटी के इंतकाल के वाद मुझे कुछ छुट्टी की कितनी जरूरत थी । तुम शायद महसूस कर सको कि मै कितनी लाचारी से छुट्टी नही ले सका । अप्रैल के शुरू मे शौकत फिर से वीमार पड गये । उसके वाद जुहू मे वातचीत का सिलसिला चला, और आखिर मे मुझे उत्तरी हिन्दुस्तान का दौरा करना पडा, जिसमे २० मई को मै माथेरान से रवाना हुआ और तीसरी जून को यहा लौटा । मै छुट्टी कई वार मे थोड़ी-थोडी करके ले पाया । हालाकि मै नही चाहता था कि इस तरह कट-कटकर मुझे छुट्टी मिले । तुम्हारे ६५०।३०, ७५०।२५, ७५२।७२ और ७८६ नवर के खत यहा तव पहुचे जव मै दिल्ली, लाहौर, अलीगढ, रामपुर (सिर्फ रेलवे स्टेशन ही ब्रिटिश सरहद मे है), नैनीताल और लखनऊ गया हुआ था । तुम्हारा ८२४।५३ नम्वर का खत तव मिला जव मै सफर की थकान मिटा रहा था । अल्लाह का शुक्रिया ! इन खतो के मजमूनो मे कोई ऐसी वात न थी, जिसपर मै तुम्हे कोई मशविरा दे सकता, इसलिए काग्रेस के काम मे दरअसल कोई हर्ज न हुआ होगा। (सदरो के आलस की वजह से काम मे कोई हर्ज नही होता, क्योकि वे समझदारी के साथ मेहनती और काम करनेवाला सेक्रेटरी चुन लेते है) । तुम्हारे पिछले खत न० ८६२।४० मे कोण्डा वेंकटा-पय्याजी के महाराष्ट्र के चुनाव के वारे मे हुए फैसले का जिक्र है, हालाकि उनमे ऐसा कोई सुझाव नही है कि मुझे उस सिलसिले मे कुछ करना है । इस फैसले मे किसी अच्छाई की उम्मीद नही है, और तकदीर के लेखे की तरह अब आ पहुचा है श्री माण्डलिक का पोस्टकार्ड, जिसने आखिर मेरे अन्दर काम करने की हलचल पैदा कर दी है । ए. आई सी सी. की मीटिगो मे नजीर देना काफी बुरी वात है, लेकिन पहले से ही वैसा करना

अमन मेरी तकदीर मे कहा बदा है ? इसलिए मैने तय किया है कि कानून के मुताविक ही अमल हो। अगर कोई सूबा वक्त रहते सही तरीके से अपने नुमाइन्दे न चुन सके और इस वजह से उसकी नुमाइन्दी न हो सके तो उसे दुनियाभर से शिकायत नही होनी चाहिए। अगर हम पुराने नुमाइदो को ही वुलाते रहे तो नये नुमाइदो को चुनने की न कोई प्रेरणा रह जायगी और न प्रोत्साहन। सूबे को जो कुछ भी शिकायत है वह जरूरी तौर पर सूबे की एक्जीक्यूटिव के खिलाफ है। मेरे पास अपनी ही इतनी काफी परेशानिया है कि मुझे दूसरो की परेशानियो के लिए दुखी होने का वक्त नही। फिर भी मुझे अदेशा है कि श्री माडलिक मुझे वख्शेगे।

लेकिन जो परेशानी टाली नही जा सकती उसके लिए महात्माजी जिम्मेवार है। तुम उस वारे मे बिल्कुल खामोश हो। शौकत को छोडकर और कोई था नही, जो मेरी परेशानी वटा सकता। अब बताओ, तुम उसपर क्या सोचते हो ? वापू के साथ जुहू मे मेरी जो वाते हुई मै नही जानता कि उनका हिन्दू-मुस्लिम-तनाव पर कोई असर पडा या नही। शायद मुसलमानो की तरफ की उन्हे कतई कोई वात न मालूम होती, अगर मै उन्हे न बताता, क्योकि मै नही समझता कि उनसे ज्यादा मुसलमानो ने खतो-किताबत की होगी। चूकि निजी जानकारी की विना पर मै कोई बात नही कर सकता था, इसलिए मेरी वातचीत का मतलव सिर्फ यह सुझाव देना था कि इस मसले मे मुसलमानो का भी एक पहलू है। ताहम मै पक्की तौर पर कह सकता हू कि जहातक उनके 'पूजनीय भाई' पडित मदनमोहन मालवीय के तर्जेअमल का ताल्लुक है, मै उनपर कोई असर नही डाल सका। वह उन्हे हम सवके मुकावले अच्छे दिखाई दिये और फिर भी शौकत और मुझपर यही असर रहा कि माननीय पडितजी के वारे मे वापू दूसरी ही राय रखते है। अगर वापू उन वातो पर यकीन करते है, जो वे पडितजी के वारे मे कहते है—और इसमे कोई शक नही कि वह यकीन करते है—तव कम-से-कम आनेवाले वक्त के वारे मे तो मुझे नाउम्मीद ही होना पडेगा। इस मामले मे मैने तुम्हारे पिताजी से वहुत साफ-साफ वाते की। वह वहुत-कुछ मुझसे एकराय है कि मालवीयजी गाधीवाद को हराने के लिए कमर कसे हुए है, और चूकि वह हिन्दू और मुसलमान, दोनो के नेता नही वन सकते, इसलिए

सिर्फ हिन्दुओ के ही नेता बनना चाहते है। हिन्दू-मुस्लिम-एके का ऊचा उसूल उनके सामने नही है। मेरे प्यारे जवाहर, अल्लाह जानता है कि मुसलमानो मे भी उनके अपने मालवीय है और उनके और मेरे बीच किसी तरह की कोई मुहब्बत नही है। लेकिन खुदा का शुक्र है कि उनका अपनी जमात पर वह असर नही, जो पडितजी का अपनी कौम के बहुत-से लोगो पर है, क्योकि न उनमे इतनी काबलियत है, न खुद-कुरबानी के लिए उनकी शोहरत है और न उन्होने अपनी कौम की कोई खिदमत ही की है। अगर पडितजी वही सबकुछ है, जो बापू उनके बारे मे कहते है तो मै नही जानता कि मै तुम्हे और तुम्हारे प्यारे वालिद को किस दर्जे मे रखू। दरअसल मुझे तो तुम दोनो और मालवीयजी मे जमीन आसमान का फर्क नजर आता है। लेकिन हिन्दू-मुस्लिम तनाव मेरे लिए इस वक्त फिक्र का मामला नही है। मै महसूस करता हू कि जितनी मैने पहले उम्मीद की थी, यह तनाव उतनी जल्दी दूर होने का नही है। लेकिन जिसकी मुझे सबसे ज्यादा फिक्र है वह है बापू का स्वराज्य पार्टीवालो पर 'बिजली की तरह टूट पडना'। मै जानता था, ऐसा होनेवाला है, फिर भी उम्मीद करता था कि शायद न हो। तुम्हारे वालिद यह मजूर तो करते है कि हमारे जैसे लोगो ने स्वराज्य पार्टीवालो के लिए आसानिया पैदा की है, लेकिन बहुत सकुचाते हुए और हिचकिचाते हुए वह हमारी मेहनत की तारीफ करते है। उनकी जैसी हालत के आदमी के लिए यह वाजिब है कि वह भारी मेहनत की कीमत महज मेहनत की नजर से नही, बल्कि उसके नतीजो से आके, लेकिन यह तो तय है कि हम लोग इस 'बिजली' को गिरने से बचाने मे बिल्कुल नाकामयाब रहे। इसकी खास वजह यह है कि यह बिजली आसमान से गिरी। जुहू मे बापू से जो बहुत-सी मुलाकाते हम लोगो ने की, उनमे सबसे आखिरी मुलाकात मे बापू ने मुझसे और शौकत से कहा कि वह क्या करनेवाले है। मैने आकर तुम्हे बताया, हालांकि उस वक्त मै उम्मीद न होते हुए भी उम्मीद कर रहा था कि यह तो अभी बापू को सूझा है और हो सकता है कि वह अब भी अपना दिमाग

यह है कि इस तरह की सारी मिसाले गलत है, क्योकि ए आई सी सी की हालत फेडरल जमात की तरह है। यह ठीक है कि काग्रेस मे और ए आई सी सी मे नो-चेजरो की तादाद बहुत है। लेकिन सारी सूबा काग्रेस कमेटियो मे उनकी अक्सरियत नही है और यह बात भी कुछ अजीब-सी है कि सूबो मे जिनकी अक्सरियत हो उनसे उनके लिए इस्तीफा देने को कहा जाय, जिनकी अक्सरियत नही है। क्या मेरा यह खयाल ठीक नही है कि इस मामले मे तुम भी बापू के साथ एकराय नही हो ? अगर तुम बता सको तो मुझे जरूर अपनी बात बताओ। बापू के सुझाव की अच्छाई या बुराई के अलावा उसका 'कानूनी' पहलू भी है। क्या ऐसा कानून है, जिससे स्वराजिस्टो को इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया जा सके ? क्या ए आई सी सी का ऐसा कोई रेज़ोल्यूशन है कि जिसकी रू से कोई मेबर चरखा नही कातता हो या रुई नही धुनकता हो तो उसका ऐसा करना इस्तीफा देने के बराबर समझा जा सकता है ? मुझे लगता है कि बापू के सुझाव की अच्छाई-बुराई के बारे मे मेरी कोई भी राय हो, लेकिन सदर के नाते मेरा पहला फर्ज़ उस सुझाव के कानूनी पहलू पर गौर करना है। तुम्हारी क्या राय है ? तुम्हारे विचार से कानूनी हालत क्या है ?

मै इस मामले मे बापू से एकराय हू कि मौजूदा 'दिखावा' खत्म होना चाहिए। तामीरी प्रोग्राम के बारे मे हमने लोगो के महज ज़बानी जमा-खर्च को बहुत काफी वक्त तक बर्दाश्त किया है और मै समझता हू ऐसे बहुत-से काग्रेसी है, जिनके दिल मे इसके लिए दरअसल ज़रा भी इज्ज़त नही है, लेकिन वे अपनी राय सिर्फ अकेले मे या दोस्तो मे ही ज़ाहिर करते है। मै समझता हू कि जबतक लोग खुद करीब-करीब मज़हबी जज़्बात से इसको हाथ मे नही लेते तबतक हम मुल्क को इसमे लगाने के लिए कैसे राज़ी कर सकते है ? (तुम्हे मेरे मज़हबीपन के लिए जो झुझलाहट है, इसी वजह से मैने 'करीब-करीब' लफ्ज का इस्तेमाल किया है।) इसपर मेरा खयाल है कि बापू की दलील मे कही-न-कही कोई नुक्स है। कम-से-कम मुझे ऐसा लगता है कि कुछ नो-चेजरो के चेहरो पर, जो स्वराजिस्टो के खून के प्यासे थे, एक नापाक खुशी दिखाई देती है। स्वराजिस्टो के तई बापू की मलामत को कम कराके हमने जो-कुछ अच्छाई की थी, वह उनके हाल के इस बयान

से, जिसमे उन्होने स्वराजिस्टो को निकाल बाहर करने का फैसला किया है, खत्म होगई। सरकार को एक तरह की मदद देने की तरफ जो स्वराजिस्टो का झुकाव है उसे इस बयान से कितनी मदद मिली, यह मै नही कह सकता। मै जितनी उम्मीद कर सकता था उससे कही ज्यादा तुम्हारे वालिद ने अपने-को काबू मे रखा है। लेकिन शायद उनका इस तरह काबू मे रहना जनता के लिए और खास-तौर से सरकार के लिए है। मुझे तुम्हारी इस पेशीनगोई के सच साबित होने का अदेशा है और वह हमसे और दूर हो जायगे, और वह भी गहरे मुखालिफ जजबात के साथ। जैसाकि मैने हाल मे (अनमने होकर) अपनी मुलाकात मे कहा है, मुझे नो-चेजरो के द्वारा किये जाने-वाले तामीरी प्रोग्राम की कामयाबी की कही ज्यादा फिक्र है, बजाय इसके कि स्वराज्य पार्टीवाले क्या करने मे कामयाब नही होते। मै जानता हूं कि इस किस्म के काम के लिए जिस माहौल की जरूरत है उसे सबसे ज्यादा स्वराजिस्ट बिगाडते है, क्योकि पढे-लिखे तबके अक्सर यही देखा करते है कि कौसिलो मे स्वराज्य पार्टी के लोग क्या करते है और उसका असर इग्लैड मे और वहा की और यहा की सरकार पर क्या होता है? पढे-लिखे तबके के यही लोग आखिर जनता की रहनुमाई कर सकते है, लेकिन यह भी कोई अच्छी बात है कि हममे से जो लोग यह जानते है कि स्वराज्य पार्टीवालों के काम की तरफ टकटकी लगाये देखना बुरी बात है, वे भी इस तरह के मामलो मे फिक्र करके अपना वक्त बरबाद करे। कम-से-कम हमे तो काम करना चाहिए और उन्हे बुरा-भला नही कहना चाहिए।

इन्ही बातो की इस वक्त मुझे फिक्र है। मुसलमान होने की वजह से और वह भी एक साफ दिलवाला होने से, मेरी हालत बहुत नाजुक है। कांग्रेस का सदर होने की वजह से मै बड़े-बडे मसलो पर चुप रहकर वोट नही दे सकता, और—जैसाकि मै पसद करता—वोट देता ही नही, हालाकि छोटे-छोटे मसलो पर सदर अक्सर वोट नही देते। मुसलमान होने की वजह से मै यह भी नही कर सकता, जैसा तुमने इलाहाबाद मे किया है, कि इस्तीफा देकर छुट्टी पाऊ, क्योकि अगर मै ऐसा करता हू तो मुझे डर है कि इसका 'हिन्दू-मुस्लिम एकता' पर जबर्दस्त असर पडे बिना नही रहेगा। हालात ऐसे है कि जिन लोगो ने मेरे इस्तीफे की माग की है, उन-

जैसे लोग मेरी बेइज्जती कर रहे है और दूसरे बहुत-से लोग मेरी लानत-मलामत कर रहे है, मै एक इन्सान के तौर पर इतना भी नही कर सकता कि अपनी इज्जत के बचाव पर ज़ोर दे सकू। अबतक मैंने अपने जज़्बात अपने तक ही महदूद रक्खे थे। इन जज़्बात को दूसरो पर ज़ाहिर करने की मरज़ी न होने की वजह से ही इस खत के लिखने मे इतनी देर हुई और अब जब मैंने इन्हे बिना सोचे-विचारे बेतरतीबी से ज़ाहिर कर दिया है तो मेरी 'करीब-करीब ख्वाहिश' यह है—जैसा जिन्ना कहेगे—इस खत को फाडकर रद्दी की टोकरी मे डाल दो। लेकिन अपनी इस ख्वाहिश को मै रोक रहा हू। इसीलिए यह खत भेजा जा रहा है।

यह तो बताओ कि तुम अहमदाबाद किस रास्ते से जाओगे ? २४ की रात या २५ को सवेरे तुम मेरे साथ दिल्ली के रास्ते से क्यो नही चलते ?

इन्दू को प्यार और श्रीमती जवाहरलाल और अपनी बहन को सलाम।

तुम्हारा,
मोहम्मदअली

फिर से—

जैसे मुझे काग्रेस की ही क्या कम फिक्र थी और खिलाफत की भी (जिसके बारे मे मौलाना अबुल कलाम आजाद ने, बिना यह कहे हुए कि उनकी मन्शा मुझसे है, अखबारो में मुझपर हमला किया है), बेचारी बूढी अम्मा फिर बीमार होगई है।

३२ महात्मा गाधी की ओर से

[मैंने गाधीजी को अपने पत्र में लिखा था कि मुझे अपने पिताजी पर आर्थिक भार बनकर रहना दुखदायी मालूम होता है और इसलिए मै अपने ही पैरो पर खडा होना चाहता हूं। कठिनाई यह थी कि मै काग्रेस का पूरा समय देनेवाला कार्यकर्त्ता था। मेरे पिताजी ने जब यह सुना तो उन्हे बडी परेशानी हुई। इस पत्र में जिन 'हसरत' का जिक्र है वह 'हसरत मोहानी' थे। वह उर्दू के कवि थे और उन्होने क्रान्तिकारी तथा राष्ट्रीय राजनीति में बडा बहादुराना भाग लिया था।]

१५ सितम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

दिल को छूनेवाला तुम्हारा निजी पत्र मिला। मै जानता हू कि इन सब चीजो का तुम बहादुरी से सामना करोगे। अभी तो पिताजी चिढे हुए है और मै बिल्कुल नही चाहता कि तुम या मै उनकी झुझलाहट बढाने का जरा भी मौका दे। सभव हो तो उनसे जी खोलकर बाते कर लो और ऐसा कोई काम न करो, जिससे वह नाराज हो। उन्हे दुखी देखकर मुझे दु ख होता है। उनकी झुझलाहट उनके दु ख की अचूक निशानी है। हसरत आज यहा आये थे। उनसे पता चला कि हर काग्रेसी के कातने-सबधी मेरे प्रस्ताव से भी उन्हे अशाति होती है। मुझे ऐसा महसूस होता है कि काग्रेस से हट जाऊ और चुपचाप तीनो काम करने लगू। उनमे जितने भी सच्चे स्त्री-पुरुष हमे मिल सकते है उन सबके खपने की गुजायश है। लेकिन इससे भी लोगो को अशाति होती है। पूना के स्वराज्यवादियो से मेरी लम्बी बातचीत हुई। वे कातने को भी राजी नही और मेरे काग्रेस छोड देने से भी सहमत नही। उनकी समझ मे यह नही आता कि ज्योही मै अपना स्वरूप छोड दूगा, मेरा कोई उपयोग नही रह जायगा। यह भद्दी स्थिति है, मगर मै निराश नही हू। मेरा ईश्वर पर विश्वास है। मै तो इतना ही जानता हू कि इस घड़ी मेरा क्या धर्म है, इससे आगे का मुझे मालूम ही नही। फिर मै क्यो चिन्ता करू?

क्या तुम्हारे लिए कुछ रुपये का बन्दोबस्त करू? तुम कुछ कमाई का काम हाथ मे क्यो न ले लो? आखिर तो तुम्हे अपने ही पसीने की कमाई पर गुजर करनी होगी, भले ही तुम पिताजी के घर मे रहो। कुछ समाचार-पत्रो के सम्वाददाता बनोगे? या अध्यापकी करोगे?

सप्रेम तुम्हारा,
मो. क. गांधी

३३. महात्मा गाधी की ओर से

[मेरे खयाल से यह पत्र गाधीजी के तीन सप्ताह के उपवास की घोषणा करने पर लिखा गया था]

१९ सितम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हे स्तब्ध नही होना चाहिए, बल्कि खुशी मनाओ कि ईश्वर मुझे अपना कर्तव्य-पालन करने का बल और आदेश दे रहा है। मै और कुछ कर ही नही सकता था। असहयोग के प्रवर्तक की हैसियत से मेरे कधो पर भारी जिम्मेदारी हैं। लखनऊ और कानपुर मे क्या छाप पडी, यह मुझे जरूर लिख भेजो। मुझे यह प्याला पूरा पी लेने दो। मुझे पूर्ण आन्तरिक शाति है।

सस्नेह तुम्हारा,
मो क गांधी

३४. महात्मा गाधी की ओर से

१६ नवम्बर १९२४

प्रिय जवाहरलाल,

यह पवित इस मगल-कामना के साथ लिख रहा हू कि मातृभूमि की सेवा और आत्म-दर्शन के हेतु यह शुभ दिन बार-बार आता रहे।

सभव हो तो पिताजी को लेकर जरूर आना।

सस्नेह तुम्हारा,
मो क गांधी

३५. महात्मा गाधी की ओर से

[मेरी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। वह कोई हफ्तेभर मे चल बसा। यह तार उसी अवसर पर दिया गया था।]

तार
साबरमती
२८ नवम्बर १९२४

नेहरू, इलाहाबाद

वालक की मृत्यु से दु ख हुआ। ईश्वरेच्छा बलीयसी।

गाधी

३६. महात्मा गाधी की ओर से

२५ अप्रैल १९२५

प्रिय जवाहरलाल,

मैं तीयल में हू। यह जगह कुछ-कुछ जुहू जैसी है। यहा मै वगाल की

अग्नि-परीक्षा के लिए तैयार होने को चार दिन से आराम ले रहा हू । मै यहा अपना पत्र-व्यवहार निपटाने की कोशिश कर रहा हू । उसमे तुम्हारा वह खत भी है, जिसमे 'ईश्वर और काग्रेस' शीर्षक लेख का जिक्र है। तुम्हारी कठिनाइयो मे मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है । चूकि सच्चा धर्म जीवन मे और ससार मे सबसे बडी चीज है, इसलिए इसीका सबसे अधिक दुरुपयोग किया गया है, और जिन लोगो ने इन शोषको और शोषण को तो देखा और वास्तविकता को नही देख पाये, उन्हे स्वाभाविक रूप मे इस वस्तु से ही अरुचि होगई। पर धर्म तो आखिर प्रत्येक व्यक्ति की वस्तु है और वह भी हृदय की वस्तु है, फिर चाहे उसे किसी भी नाम से पुकारो । जो चीज मनुष्य को घोर ज्वालाओ के बीच अधिक-से-अधिक सान्त्वना देती है वही ईश्वर है। कुछ भी हो, तुम सही रास्ते पर हो । बुद्धि ही एकमात्र कसौटी हो तो भी मुझे परवा नही, हालाकि उससे अक्सर मनुष्य गुमराह हो जाता है और ऐसी गलतिया कर बैठता है जो लगभग अधविश्वास के निकट पहुच जाती है । गोरक्षा मेरे लिए केवल गाय को बचाने से कही बडी चीज है । गाय तो प्राणिमात्र का सिर्फ प्रतीक है । गोरक्षा का अर्थ है दुर्बलो, असहायो गूगो और बहरो की रक्षा । फिर तो मनुष्य सारी सृष्टि का प्रभु और स्वामी न रहकर सेवक बन जाता है । मेरी दृष्टि मे गाय दया का जीता-जागता उपदेश है । फिर भी हम तो गोरक्षा के साथ निरी खिलवाड करते है, परन्तु हमे शीघ्र ही वस्तु-स्थिति के साथ जूझना पडेगा ।

३७ सरोजिनी नायड की ओर से

दि गोल्डन थ्रेशोल्ड,
हैदराबाद (दक्षिण)
११ मई १९२५

प्यारे जवाहर,

मै यह पत्र 'दि गोल्डन थ्रेशोल्ड' से अपनी नक्काशीदार काली लकडी की कोच पर बैठी लिख रही हू। घर के चतुष्पाद स्वामी रास तफारी, पावो नूरमी, निकोलो पिसानो और डिकडिक महजोग बडी शान से मेरे चारो ओर लेटे है, बाग मे लाल अगारे-सी दहकती गुलमोहर और सुर्ख गुलाबो के बीच प्यारी-प्यारी चिडिया गीत गा रही है। आज शाम सैर के लिए हम लोग उस्मान सागर जानेवाले है, इसलिए मीना किताबे, जूते और सुगम वर्ग पहेलियो के लिए कोश अपने सामान के साथ बाधने मे लगी है। पद्मजा नई फिएट गाडी को लेकर मगन है, जो अभी-अभी बम्बई से आई है। गोविद देर से मिलनेवाले बैगन के भुरते और फालसे के शरबत का लच खाते-खाते मन-ही-मन प्रार्थना कर रहा है कि हे महाप्रभु, पहाडियो और सागर के बीच मेरी छुट्टी को नष्ट न होने देना।

सक्षेप मे, म घर पर हू और १९२१ के बाद, पहली छुट्टी मना रही हू—सचमुच की छुट्टी, जिसमे बाहरी चिन्ताओ, जिम्मेदारियो और कर्तव्यो के प्रत्येक नाग को इस स्वर्ग मे घुसने की मनाही है। बेहयाई के साथ, पर हिम्मत करके, मै कुछ हफ्तो के लिए अपने मोरचे से भाग आई हू, क्योकि मेरी आत्मा को आवश्यकता थी और वह पुकार रही थी सौदर्य के लिए फूलते वृक्षो के लिए, नीड बनाती हुई चिडियो के लिए, गीत लिखनेवाले कवियो के लिए, शिशुओ और श्वानो के लिए तथा पुराने मित्रो के लिए और रचनात्मक कार्यक्रम से तनिक विश्राम लेने के लिए और तथाकथित राजनीति के प्राणघातक कार्यक्रम से बचाव के लिए। मै उचित समय पर कर्तव्यो और दायित्वो को सम्हालने के लिए लौट आऊगी, किन्तु इस बीच, मेरी इच्छा है कि तुम भी इस आह्लाद मे—हैदराबाद मे मीरआलम पर नौका विहार, इधर-उधर मटर-गश्ती और भारत के वास्तविक समस्तवर्गीय समाज से भेट करने के आह्लाद मे—साझीदार बनो। कहने की आवश्यकता

नही कि 'दि गोल्डन थ्रेशोल्ड' मे मेरे माता-पिता की पीढी—लगभग प्रागैतिहासिक पीढी—से लगाकर फर्श पर बैठने और अपनी केक बिल्ली के साथ खाने तथा अपने कपडो पर शरबत फैलानेवाली नन्ही-से-नन्ही पीढी तक, इस समाज की चार पीढिया जमा हुआ करती है। तुम भी क्यो नही हडताल करते और यहा छिपने आ जाते ? मै शुऐब से भी हड़ताल करने को कहूगी, पर तुम्हारे दूसरे साथी लकीर के बाहर है। भगवान बचाये !

मैं कलकत्ता मे कार्यकारिणी मे सम्मिलित नही हो रही हू। मै हफ्तो से बीमार हू और मुझे शरीर से भी अधिक मन के लिए वातावरण और काम मे परिवर्तन की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त देशबन्धु[1] द्वारा पैदा हुई 'वर्तमान परिस्थिति' के अतिरिक्त बैठक के किसी भी अन्य कार्यक्रम मे मेरी सूझ की विशेष आवश्यकता नही जान पड़ती।

आशा है, पापाजी और प्यारी मामा सानंद है, कमला फिर से बिल्कुल तन्दुरुस्त है और इदू अभी तक अटलांटा जैसी है—क्षिप्र-चरणा, नयनो मे उषा का आलोक लिये।

पद्मजा सबको, विशेषकर 'सुलोचना बेटी' को प्यार भेजती है। लीलामणि फिर ऑक्सफोर्ड के वातावरण मे डूब गई है और बहुत प्रसन्न है।

फिर मिलेगे। तुम सबके लिए मै अपना पुन. प्राप्त जीवनोल्लास भेजती हू।

तुम्हारी प्यारी बहन,

सरोजिनी

३८. महात्मा गांधी की ओर से

[गांधीजी ने अपने दायें हाथ को आराम देने की खातिर बायें हाथ मे लिखने का अभ्यास कर लिया था। जाहिर है कि यह पत्र उन्होने अपने बायें हाथ से लिखा था। 'यं. इ.' से मतलब गांधीजी द्वारा सम्पादित अंग्रेजी साप्ताहिक 'यंग इंडिया' से है।]

३० सितम्बर १९२५

प्रिय जवाहर,

हम विचित्र समय में रह रहे है। सीतलासहाय अपना बचाव कर सकते

[1] देशबन्धु चित्तरंजनदास

है । आगे की घटनाओ से मुझे परिचित रखना । वह क्या है ? वकील है ? उनका कभी क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो से कोई सबध रहा है ?

कांग्रेस की बात यह है कि उसे जितना सादा बना दिया जाय उतना अच्छा है, ताकि जो कार्यकर्ता अब रह गये है, वे उसे सभाल सके । मै जानता हू, तुम्हारा बोझा अब बढेगा । परन्तु तुम्हे अपने स्वास्थ्य को किसी भी तरह खतरे मे नही डालना चाहिए । मुझे तुम्हारी तन्दुरुस्ती की चिन्ता है । तुम्हे बार-बार बुखार आना मुझे बिल्कुल पसन्द नही है । काश तुम खुद और कमला थोडी छुट्टी ले लो !

पिताजी का मेरे पास खत आया है । बेशक जहातक उनकी मान्यता है, उतनी दूर जाना मै हरगिज नही चाहता था । मै पिताजी को आर्थिक सहायता देने के लिए किसीसे कहने की बात सोचता तक नही । मगर किसी मित्र या मित्रो से, जो तुम्हारी सार्वजनिक सेवाओ के बदले मे तुम्हारी मदद करना अपना सौभाग्य समझे, कहने मे मुझे कोई सकोच नही होगा । मै तो आग्रह करूगा कि अगर तुम्हारी जो स्थिति है और रहेगी उसके कारण तुम्हारी आवश्यकताए असाधारण न हो तो तुम्हे सार्वजनिक कोष से लेना चाहिए । मेरा अपना तो दृढ मत है कि कोई व्यवसाय करके या तुम्हारी सेवा सुरक्षित रखने के लिए किसी मित्र को तुम्हारे लिए रुपया जुटा देने देकर तुम सामान्य कोप की वृद्धि करोगे । तुरन्त कोई जल्दी नही है, मगर इधर-उधर परेशान न होकर किसी अतिम निश्चय पर पहुच जाओ । तुम कोई व्यवसाय करने का फैसला करो तो भी मुझे परवा नही होगी । मुझे तो तुम्हारी मानसिक शान्ति चाहिए । मै जानता हू कि किसी व्यवसाय के प्रबधक की हैसियत से भी तुम देश की सेवा ही करोगे । मुझे विश्वास है, जबतक तुम्हारे किसी भी निश्चय से तुम्हे पूर्ण शान्ति मिलती होगी तबतक पिताजी को कोई परवा नही होगी ।

सस्नेह तुम्हारा,

बापू

मै समझता हू मुझे दाया हाथ तो य. इ. के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए ।

३९. एम. ए. अन्सारी की ओर से

फतेहपुरी, दिल्ली
११ अक्तूबर १९२५

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारे खत के लिए मै तुम्हारा वहुत शुक्रगुजार हूं। लम्वे आराम और तवदीली के वाद अव मै फिर अपनेको वहुत वेहतर पा रहा हू। लेकिन तुम्हे यह सुनकर तकलीफ होगी कि एक लम्बे अरसे तक मै दिल के दौरे से वीमार रहा और अव मुझे भारी चेतावनी दे दी गई है कि मै हर तरह के तनाव से वचू और अमन की और वधी हुई जिदगी विताऊ। इसलिए मजवूर होकर मैं अपने कामो पर वन्दिश लगा रहा हू। मै सिर्फ तालीम के कामो तक ही अपने को महदूद रखूगा। तुम जानते हो कि मेरे यूरोप जाने से पहले महात्माजी और हकीमजी ने मुझे नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी के सेक्रेटरी का काम मजूर करने पर जोर दिया था। इस काम मे वड़ी भारी जिम्मेदारिया सिर पर आती है, जिन्हे मै तभी पूरा कर सकूगा जव मै अपना पूरे-का-पूरा वचा वक्त इसमे लगाऊ। इसलिए मैंने यह तय कर लिया है कि आगे सिवा नेशनल मुस्लिम यूनिवर्सिटी के काम के और हर तरह के पव्लिक कामो से मैं अपनेको अलग रक्खूगा।

वहरहाल पटना के फैसले के मुताविक कुदरतन काग्रेस का सव काम स्वराजिस्टो के सुपुर्द किया जायगा। इसलिए मुझे इसमे कोई अडचन न होगी कि चरखा-सघ का मामूली मेवर रहते हुए मैं अपनी ताकत मुल्क की तालीम के काम मे लगाऊ।

जहातक वीच-वचाव का सवाल है, मै तुम्हारे वताये तरीके से काम करूगा। मैं मि. भार्गव को और अजमेर-मेरवाडा सूवा काग्रेस कमेटी के सेक्रेटरी को लिख रहा हू कि वे अपने मामले के पूरे वयान मुझे भेज दे। उन वयानो को पढ़कर और उनकी नकले दूसरी पार्टी को भेजकर, जैसाकि तुमने सुझाव दिया है मैं उनसे कुछ सवाल करूगा और वाद मे अपना फैसला देने से पहले उनसे कहूंगा कि वे मुझसे मिले।

तुम्हारा,
एम. ए. अन्सारी

[राष्ट्रीय मुस्लिम यूनिवर्सिटी असहयोग-आन्दोलन के अन्तर्गत अलीगढ़ में स्थापित की गई थी। इसमें अलीगढ यूनिवर्सिटी से असहयोग करनेवाले लडके शामिल हुए थे। मुस्लिम यूनिवर्सिटी का सही नाम जामिया मिलिया इस्लामिया था। यह अलग-अलग रूपो में चलती रही और अब दिल्ली के निकट कायम है।]

४०. महात्मा गाधी की ओर से

तार

अहमदाबाद १ दिसम्बर १९२५

जवाहरलाल नेहरू, आनद भवन, इलाहाबाद

उपवास टूटा। हालत बिल्कुल ठीक है। आशा है, कमला बराबर प्रगति कर रही होगी। सरूप यहा है।

गाधी

४१. महात्मा गाधी की ओर से

[मै अपनी पत्नी को उनके इलाज के लिए १९२६ के शुरू में यूरोप ले गया था।]

२१ जनवरी १९२६

प्रिय जवाहर,

मुझे खुशी है कि तुम कमला को अपने साथ ले जा रहे हो। हा, दोनो नही आ सको तो जाने से पहले कम-से-कम तुम्हे तो यहा आना चाहिए। देशबन्धु-स्मारक के बारे मे जमनालालजी के नाम तुम्हारा पत्र काफी होगा। चर्खा-सघ के मत्री तो तुम रहोगे ही, परन्तु यदि कोई सहायक चाहिए तो शकर-लाल के पास होना चाहिए। नकशा तैयार न करने के लिए मै तुम्हे दोष नही दे सकता। तुमने अपना समय व्यर्थ नही गवाया है। तुम्हारे पास यूरोप मे काम आने लायक कपडे होने चाहिए।

सस्नेह तुम्हारा,

बापू

४२. महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती
५ मार्च १९२६

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पहली तारीख का पत्र मिला। हालाकि तुम तो डा मेहता के

नाम पत्र छोड ही गये हो, फिर भी दुगुनी निश्चिन्तता कर लेने के लिए मैंने भी उन्हे लिखा है । आशा है, जहाज पर कमला का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहा होगा । तुम सबको समुद्र-यात्रा से लाभ हुआ ? अधिक लिखने के लिए समय नही है ।

सस्नेह तुम्हारा,
मो. क. गांधी

४३. महात्मा गांधी की ओर से

आश्रम, साबरमती,
२३ अप्रैल १९२६

प्रिय जवाहरलाल,

मै हर सप्ताह तुम्हे लिखने का विचार करता रहा और हर बार असफल रहा । लेकिन यह सप्ताह मै योही नही गुजर जाने दूगा । तुम्हारे बारे में ताजा समाचार मुझे पिताजी से मिले जब वह प्रतिसहयोगवादियो के साथ यहा आये थे । तुमने, जो समझौता हुआ वह देख लिया होगा ।

हिन्दू और मुसलमान दिन-ब-दिन एक-दूसरे से दूर होते जा रहे है, परन्तु इस चीज से मुझे अशाति नही होती । किसी भी कारण से सही, मुझे महसूस होता है कि यह अलगाव इसीलिए बढ रहा है कि आगे चलकर वे सब और भी नजदीक आये ।

मै आशा करता हू कि कमला को लाभ हो रहा है ।

सस्नेह तुम्हारा,
बापू

[प्रति-सहयोगवादियो का एक गुट था, जिसमें प्रमुख कांग्रेसी और दूसरे लोग थे । मुख्य तौर पर यह महाराष्ट्र में था। एम. आर. जयकर और एन. सी केलकर नेताओ में से थे ।]

४४. रोम्यां रोलां की ओर से

विलने (वो) विला ओल्गा
११ मई १९२६

प्रिय महाशय जवाहरलाल नेहरू,

मुझे आपका और अपने संत-मित्र गाधी का पत्र पाकर प्रसन्नता हुई है। आपके नाम से हम परिचित है। कुछ ही दिन पहले हमने आपका नाम 'हिन्दुस्तान टाइम्स' मे प्रकाशित एक भाषण मे पढा था ।

मुझे और मेरी बहन को आपसे मिलकर बडी खुशी होगी। क्या आपके और श्रीमती नेहरू के लिए यह सभव होगा कि आप अगले सप्ताह दोपहर-बाद यहा पधारे, हमारे साथ विला ओल्गा मे चाय पीये और कुछ घटे साथ बिताये ? मै अनुरोध करता हू कि आप मुझे बताये कि बुधवार १९ मई तथा शनिवार २२ मई के बीच कौन-सा दिन आपके लिए सबसे सुभीते का होगा ? जो दिन आपने चुना हो, यदि उस दिन मौसम अच्छा न रहे तो आप सवेरे ही हमे केवल तार कर दे कि आपका आना किसी दूसरे दिन होगा।

मै आशा करता हू कि श्रीमती नेहरू शीघ्र ही स्विट्जरलैड की जल-वायु मे अपनेको स्वस्थ अनुभव करने लगेगी। क्या आपकी नन्ही बेटी जो जेनेवा के अतर्राष्ट्रीय स्कूल मे पढती है वही है ? उसकी अध्यापिका कुमारी हारटख हमारी बहुत अच्छी मित्र है। वह बहुत भली तथा कर्तव्य-परायण महिला है। आप निश्चित मानिये कि आपकी पुत्री उनसे अधिक अच्छे, ज्ञानवान और स्नेहशील हाथो मे नही हो सकती।

प्रिय श्री नेहरू, मेरा मैत्रीपूर्ण प्यार स्वीकार कीजिये।

रोम्या रोला

फिर से--

विला ओल्गा होटल वाइरन के करीब (थोडा ऊपर) है। यदि आप नाव द्वारा आवे तो यह विलनेव के घाट से दस मिनट का रास्ता है। यदि रेल द्वारा आवे तो आप तेरिते के स्टेशन पर उतरे ओर वहा से वैवे विलनेव की बिजली की ट्राम पकडे (विलनेव की ओर जानेवाली), जो स्टेशन के सामने से गुजरती है और आप ट्राम को होटल वाइरन के पडाव पर रुकवाये।

४५ सरोजिनी नायडू की ओर से

बम्बई,

१५ अक्तूबर १९२६

प्यारे जवाहर,

आज सवेरे मुझे पापाजी का तार मिला कि भूल से कल की डाक से वह तुममे से किसीको समय से नही लिख सके और मै तुम्हे लिखकर यह सूचित कर दू कि उनको आराम है और उनका स्वास्थ्य तेजी से सुधर रहा है।

शेष सब ठीक है। पापाजी शिमला जाने के पहले मसूरी मे लबे आराम करने के बाद आश्चर्यजनक रूप से स्वस्थ थे। उसके बाद शारीरिक से भी अधिक मानसिक कारणो से—उलझी हुई राजनैतिक स्थिति, आतरिक झगड़े, जिन लोगो पर उन्होने भरोसा किया था और जिनके साथ काम किया था उन्हीके नितात अयोग्य और फूट पैदा करनेवाले चक्र-कुचक्र और फिर दौरे की थकान आदि के कारण—वह पस्त होने लगे। पर मुझे लगता है, पिछले तेज बुखार के बाद अब सचमुच उनकी तबीयत सुधरने लगी है। चुनावो को लेकर वह बेकार ही परेशान है। मेरे विचार से कुल मिलाकर उनके दल के लिए परिस्थिति इतनी निराशाजनक नही है, जैसाकि अदेशा था। अगले कुछ सप्ताह निकल जाय और बिल्कुल बनावटी तौर पर पैदा किये गए और जानबूझकर जिदा रखे गए साम्प्रदायिक, आन्तरिक, व्यक्तिगत तथा तरह-तरह के तनाव कुछ ढीले पडे तो मुझे खुशी होगी।

तुम्हारे बारे मे मुझे तरह-तरह की अच्छी अफवाहे—तुम्हारे फिर से प्राप्त जीवनोल्लास के सबध मे प्रफुल्लित करनेवाली—सुनाई पडी है। मुझे बडी प्रसन्नता है कि भारतीय जीवन की नीरस भयकरताओ से तुम्हें लबी छुट्टी मिल सकी। तुम्हारे लिए यूरोप तुम्हारी नवीन अभिव्यक्ति और आत्मा की व्याधियो से वास्तविक स्वास्थ्य लाभ का साधन सिद्ध हुआ होगा। आशा है, कमला का स्वास्थ्य सुधर रहा होगा। मुझे आश्चर्य है कि उसे स्विस जलवायु और स्विस लोग पसद आये होगे? स्विट्जरलैंड मुझे बहुत प्रिय नही है, यद्यपि मै पतझड के पुष्पों से आवृत हरे-भरे पठारो की पूजा करती हू। इन्दू अब तो स्विस लहजे मे धडाधड फ्रेंच बोलने लगी होगी? बिट्टी, मुझे आशा है, अपनी छुट्टिया आनद से बिता रही होगी! मैंने सुना कि सरूप और रजीत का समय बहुत अच्छा कटा। काश मैं भी समुन्दर पार होती! मेरा समय तो बडी परेशानी मे व्यतीत हुआ है—दौरा करते हुए, और झगडे निबटाते हुए। इस समय मैं कुछ-कुछ बीमार हू। पद्मजा आनद से है, पर लीलामणि का एक बडा आपरेशन हुआ था और अब वह स्वास्थ्य लाभ कर रही है। हेदाजी हाजी बड़े उकताकर लौटे है। मौलाना सऊद के विरुद्ध बहुत-कुछ कह-सुन रहे है। शुएब भी बहुत प्रसन्न नही है। वह बम्बई मे कुछ धधा करने की बात गभीरता से सोच रहे है। अन्सारी तो इन सारे

महीनो मे राजा-महाराजाओ की धाय का काम करते रहे है। उन्हे देखते ही लगता है कि बेहद ऊबे हुए है। वह लगभग बदी-से है, और उस बदी जीवन मे उनके मात्र सगी-साथी है थर्मामीटर, गरारे की दवाइया और पट्टिया।

उमर की मृत्यु ने बम्बई को मेरे लिए भीषण दु स्वप्न जैसा बना दिया है—बेचारा उमर, शाहाना तबीयतवाला उमर ! पता नही, उसकी दुखी आत्मा को शाति मिली या नही। तुम्हे वह कितना प्यार करता था !

मुझे पता नही कि तुम मेरी इस घसीट को पढ सकोगे ? मेरी कलाई दर्द से जकडी है। इकबाल के शब्दो मे सचमुच मै "सर-आ-पा दर्द हू।"

नमस्कार, प्यारे जवाहर। मुझे इस बात से कितनी खुशी है कि तुम हिन्दुस्तान से बाहर हो और तुम्हारी आत्मा को अपने यौवन और गौरव और चिरतन सौदर्य के स्वप्न को फिर से सजीव करने का अवसर मिल सका है। मा और बेटी को मेरा प्यार।

तुम्हारी प्यारी बहन,
सरोजिनी

['हेदाजी हाजी' से मतलब शायद प्रमुख मुसलमानो के उस डेपुटेशन से है जो उस समय हेजाज गया था। मेरा खयाल है कि मौलाना शौकतअली और मि शुएब कुरेशी उसमें शामिल थे।

'उमर' से मतलब उमर सोमानी से है। वह बम्बई के एक बड़े उद्योगपति थे। उन्होने बम्बई में पहले होम रूल आन्दोलन में और बाद में कांग्रेस में महत्वपूर्ण भाग लिया था। उन्होने बहुत सारी दौलत कमाई और उसे सट्टे में खो दिया।]

४६ मोतीलाल नेहरू की ओर से

आनंद भवन, इलाहाबाद
२ दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

कह नही सकता, मैने कितनी डाकें छोडी, लेकिन तीन से ज्यादा जरूर होनी चाहिए। मै चुनाव का दौरा पूरा करके कल ही इलाहाबाद वापस आया

हू। इस खत के पाने से कही पहले तुम्हे नतीजो का पता लग चुका होगा। मद्रास और बगाल मे हमारा बहुमत तो नही हो सका है, फिर भी हमारी ताकत रहेगी। बिहार मे वोटो की गिनती पूरी नही हुई है, लेकिन इस सूबे के मद्रास और बगाल से पीछे रहने की उम्मीद नही है। बबई और सी. पी. मे नतीजे अच्छे नही रहे, लेकिन यू पी. मे तो नतीजा भयकर रहा। पजाब से कोई खास उम्मीद न थी और मुमकिन है, असेबली की सभी जगहो मे हमारी हार होगी—लाजपतराय के भूठो की बदौलत। असम के छोटे-से सूबे ने खूब किया है और बर्मा ने असेबली मे अपना दो का कोटा पूरा कर दिया है। मुमकिन है, असेबली मे हमारी ताकत पिछले तीन सालो के मुकाबले कुछ ज्यादा रहे। लेकिन यू. पी. कौसिल मे तो करारी हार ही होनेवाली है। पिछली मरतबा ही कुछ खास अच्छी हालत नही थी ओर इस मरतबा तो और भी बुरी हालत रहेगी। अपने ही सूबे मे कोई भी ठिकाने के काम करनेवाले मेरी मदद के लिए नही थे, और मुझे अपना बहुत-सा वक्त दूसरे सूबो को देना पडा, लेकिन अगर मै अपना पूरा वक्त यू. पी को ही देता, तो भी ज्यादा अच्छे नतीजे की मुझे उम्मीद नही थी। जिस तरह का प्रचार मालवीय-लाला-दल ने मेरे खिलाफ कर रक्खा था, उसका जवाब देना मेरे बस के बाहर था। खुले तौर पर तो मुझे हिन्दू-विरोधी और मसलमानो का हिमायती कहकर गिराया जा रहा था, और चुपके-चुपके करीब-करीब हर वोटर से कहा जाता था कि मै गाय का गोश्त खानेवाला हू और मुसलमानो से मिलकर खुल्ले आम गो-कशी को हमेशा के लिए कानूनी कराने की कोशिश मे हू। शामजी ने इस प्रचार मे यह कहकर खासी मदद दी कि मेने ही असेम्बली मे उनके 'गोरक्षा बिल' पर बहस नही होने दी थी। वह फैजाबाद डिवीजन से असेम्बली के लिए खडे हुए थे और दो दूसरे उम्मीदवारो मे एक स्वराज्य पार्टी का था और दूसरे अमेठी के दद्दनसाहब थे। स्वराजी उम्मीदवार एक मशहूर और असरवाले वकील थे, लेकिन जीत दद्दनसाहब के पैसो की हुई। शामजी को मालवीय पैसा दे रहे थे, लेकिन उनके दल के उम्मीदवार दद्दन की जीत हुई। शामजी की तो जमानत जब्त हुई, लेकिन स्वराजी और दद्दन के बीच बराबर की दौड़ चली। सोचने की बात है कि दद्दन जैसा निकम्मा आदमी एक काबिल और सबके चाहे जानेवाले आदमी को हरा दे!

जैसा तुमने सुना होगा, पिछले दिनो बेचारी बऊआजी चल बसी। इसके बाद शामजी ने यह घिनौना नारा अपनाया—"माई मेरी मर गई, गाई मेरी माई है।"

फिरकेवारान नफरत और वोटरो को गहरी रिश्वत देने का बोलवाला था। मेरी दिलचस्पी पूरी तरह से हट गई है और अब मै सजीदगी के साथ पब्लिक कामो की जिन्दगी से छुट्टी लेने की सोच रहा हू। यही फिक्र है कि वक्त कैसे काटूगा। मै गोहाटी-काग्रेस का इतजार कर रहा हू और इस बीच चुप हू। मालवीय-लाला-दल बिडला के पैसो की ताकत पाकर काग्रेस पर कब्जा कर लेने की जी-तोड कोशिश मे है, मुमकिन है वे कामयाब हो जायगे, क्योकि हमारी तरफ से कोई जवाबी कोशिश मुमकिन नही। काग्रेस के बाद शायद मै एक पब्लिक ऐलान करू और उसके साथ असेम्बली की अपनी मेबरी से इस्तीफा दे दूगा, हालाकि मै अब भी देश के सबसे बडे दल का नेता माना जाता हू। असेम्बली या कौसिलो मे अपनी जो मौजूदा तादाद है, और जिस तरह के लोग हममे है, उनके रहते हम लोग कुछ नही कर सकते। मुझे डर है कि जल्दी ही हमारे दल के लोग फटकर और जगह जा मिलेगे, लेकिन उसे छोड भी दिया जाय तो भी कुछ हासिल कर सकना नामुमकिन है। जहातक मुल्क मे काम का सवाल है, मुझे ऐसा कुछ नही दिखाई पडता, जिससे मै कामयाबी की उम्मीद रखकर कर सकू। हिदू-मुस्लिम-एके के लिए मेरी नेशनल यूनियन जरूर है, लेकिन मौजूदा फिरकेवाराना तनाव की हालत मे मेरी आवाज नक्कारखाने मे तूती की आवाज होगी। गाधीजी से मै सलाह लूगा, लेकिन, जैसा तुम जानते हो, उनके शौको मे मै एक हद से ज्यादा दिलचस्पी नही ले सकता। हमारे एक दूसरे से दूर होनेकी वजह से तुम मुझे मुश्किल से ही सलाह दे सकते हो, लेकिन तुम्हारे खयाल जानकर मुझे खुशी होगी। मै जानता हू, तुमसे राय मागना ठीक नही है, क्योकि तुम हिन्दुस्तान की मौजूदा सियासत से करीब नौ माह से भी ज्यादा अलग रहे हो, लेकिन तुम्हारे सुझाव कि मै किस काम मे अपने वक्त को लगाऊ काम के होगे।

चनावो ने मुझे बिल्कुल थका दिया है, लेकिन फिर भी मेरे लिए चैन नही। कानपुर मे सूबे की कान्फ्रेस होने को है। उसके बाद ५ से ९ दिसम्बर

तक अभी सूबा कमेटी की हुडदगे की बैठक है, और आखिर मे कांग्रेस है। सभी जलसो मे परेशानी की ही उम्मीद है, लेकिन इन्हे मुझे पार लगाना है, और नही तो महज़ इसलिए कि यह अदाज लगे कि कितनी सड़ाद आ चुकी है। मै गोहाटी कलकत्ता से सुन्दरबन होते हुए नदी के रास्ते जाने की सोच रहा हू। इतने मुश्किल के दिनो के बाद नदी पर करीब एक हफ्ता बिताने में मुझे कुछ राहत मिलेगी। तन्दुरुस्ती कुछ गिर गई है और एक्जीमा बुरी तरह उभर आया है और कही-कही रिसता है, जिसकी वजह खून की कमी और शायद गदा पानी और धूल है। यो अच्छा हूं।

पिछली डाक से घर में किसीके पास तुम्हारा खत नही आया। नैन कहती है, शायद तुम जर्मनी गये हो। तुम्हारे पिछले खतो से मालूम हुआ था कि तुम मन्टना चले गये हो और इससे कमला की तबीयत मे कुछ सुधार हुआ है। असली चीज तो टैम्परेचर है, और यह कि वह कम-से-कम एक महीने तक ठीक रहे। और बातो मे सुधार को मै बहुत अहमियत नही देता। मुझे उम्मीद है कि मन्टना मे कुछ हफ्ते और रहने से मन-चाहा नतीजा निकलेगा।

तुम्हारा स्नेही,
पिता

४७. मोतीलाल नेहरू की ओर से

पी. एस. खरोटी, सुन्दरबन
१५ दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

यह खत सुन्दरबन के बीचोबीच से लिख रहा हू। मेरे साथ चलनेवाले सभी लोग रह गये और उपाध्याय और हरी को छोड़कर मै करीब-करीब अकेला हू। स्वामी सत्यदेव अपने दो चेलो के साथ दूसरे दर्जे मे है। वह कलकत्ता मे ही मेरे साथ चिपके थे, लेकिन समझदार इतने है कि जबतक बातचीत के लिए खास तौर पर बुलाया न जाय, अपनेको दूर ही रखते है। दूसरे मुसाफिरो के न होने की वजह से पहले दर्जे के डेक का इस्तेमाल उन्हे कर लेने दिया जाता है।

जिस किसीने भी इसे सुन्दरबन का नाम दिया हो, बिल्कुल ठीक ही

दिया है । हिन्दुस्तान मे नदी का सफर इससे सुहावना नही हो सकता और बडी खुशी है कि मैने ऐसा सोचा। घने जगल को छोटे-बडे सभी नाप के टुकडो मे काटनेवाले पानी के रास्ते मे से हम धीरे-धीरे (घटे मे कोई ८ मील या इससे कम) अगनबोट मे गुजर रहे है। मीलो तक कोई आबादी नही, लेकिन शेर से लेकर हिरन तक सभी जगली जानवर भरे पडे है। एक ही मलाल है कि मै साथ मे राइफल नही लाया । सेरग (जो ७० रुपये महीने पर बोट की कमान पर है) कहता है कि मेरे पास बदूक होती तो तयशुदा रास्ते से थोडा इधर-उधर ले जाकर भी जी भरकर शिकार करा सकता था । रास्ते से बिना बहके हुए भी इक्का-दुक्का शिकार हो सकता है । नदी का रास्ता इतना पतला है कि बस अगनबोट के गुजरने की ही गुजाइश है और फिर कही अचानक इतना खुल जाता है कि मीलो तक हर तरफ पानी की शानदार चादर बिछी हुई दिखाई पडती है। पानी के इस लबे-चौडे फैलाव का पूरा या कुछ हिस्सा पार करके बोट फिर अचानक अनगिनत पतली धाराओ मे से एक मे दाखिल होती है और आगे चलकर फिर एक धरती से घिरे समुद्र मे आ पहुचती है। किनारो पर तरह-तरह के छोटे-बडे जगली पेडो की कतारे है और इनके बीच मे बडे-बडे और छोटे-छोटे दोनो तरह के ताड के पेड काफी छितरे हुए है। सारा नजारा बडा मनमोहक है और उसे मै घटो देखता रहता हू, और जो दूरबीन तुमने भेजी है उसकी मदद से, बोट की पुलिया पर से, जगल को काटनेवाली छोटी धाराओ के घुमाव-फिराव के पीछे, जहातक पहुच पाती है, नजर दौडाता रहता हू ।

वक्त की पाबदी इन नदी के बोटो की खासियत नही और हम लोग २२ से २४ तक किसी दिन गोहाटी पहुच सकते है। उम्मीद यही कर रहा हू कि और भी देर न लग जाय क्योकि २४ को सब्जेक्ट कमेटी की बैठक शुरु होगी। लेकिन आज रात खुलना पहुच जाने पर इस सफर का सबसे दिलचस्प हिस्सा खत्म हो जायगा, क्योकि उसके बाद हम सुन्दरबन पार कर चुके होगे और जिसे तहजीब कहा जाता है वहा पहुच चुके होगे। दो या तीन दिन बाद हम गोवा लैडो पहुचेगे और इस बीच ऐसे नगरो को पार करेंगे, जिनकी गाइड मे बडी तारीफ की गई है। गोवा लैडो से कुछ मील ऊपर गगामाता को हम विदाई देगे और पिता ब्रह्मपुत्र के इलाको मे से घुसेगे,

और इसकी, जैसाकि गोहाटी से आगे थोडे-से सफर का हमारा पहला तजुर्बा है, अपनी अलग ही खूबसूरती हम देखेगे।

अभी ही मै लौटती हुई ताकत को महसूस करने लगा हूं, और अगर कोई खास बात न हुई तो मै उम्मीद कर रहा हू कि सफर के पूरा होते-होते बिल्कुल ठीक हो जाऊगा।

यह खत खुलना से भेजा जायगा। आज कलकत्ता से डाक जायगी। बगाल की जो नई रेले है उनमे से किसी लाइन का एक छोर खुलना मे है और अदेशा है कि कही यह खत एक हफ्ते तक रुका न रहे। फिर भी अच्छा यही है कि इसे डाक मे डाल दिया जाय, क्योकि कोई नही कह सकता कि अगली डाक निकलने के दिन तक क्या होगा।

तुम्हारा २३ नवम्बर का खत इलाहाबाद मे मेरे वहा से रवाना होने के कुछ समय बाद पहुचा था। रजीत ने उसे मेरे पास भेज दिया और कलकत्ता रवाना होने से ठीक पहले वह मुझे मिला। जब तुमने खत लिखा तब तुम मन्टना पहुच गये थे। लेकिन तुमने यह नही लिखा कि जर्मनी वगैरा से वापसी पर तुमने कमला को कैसा पाया। उम्मीद है, अगली डाक से खुश-खबरी मिलेगी।

प्यारी नन्ही इदू को मेरी ओर से वर्षगाठ के मौके का तोहफा न मिल सका, क्योकि मै चुनावो मे घिरा रहा और दूसरो मे इतनी सूझ नही थी। मुझे बडा अफसोस है।

जब मैंने लिखा कि नैन की तदुरुस्ती उतनी ठीक नही लग रही थी जितनी कि यूरोप की लबी सफर के बाद उसे लगनी चाहिए थी, तब मुझे यह नही मालूम था कि उसके घर के नम्बर मे बढती होनेवाली है। वह बिल्कुल ठीक है।

अपने २३ नवम्बर के खत मे तुमने लिखा है कि तुम्हारे पास इतने पैसे है कि १५ अक्तूबर तक काम चला सकोगे। अभी मैंने जमनालाल का पत्र, जो मेरे पास है, देखा। इसमे लिखा है कि ११ नवम्बर को तुम्हारे पास ३०० पौड भेजे गये है। यह तुम्हे मिल गये होगे और इसके बारे मे मै फिक्र नही कर रहा हू।

अपने आगे के प्रोग्राम के बारे मे अभी तक मै कुछ तय नही कर पाया हू।

लेकिन अपना पिछला खत भेजने के बाद उसपर सोचने का मौका ही नही मिला। गोहाटी के बाद मैं किसी मजबूत फैसले पर पहुचने की उम्मीद करता हू। इस बीच जो भी विचार इस नदी के सफर के बीच, जिसका एक हफ्ता बाकी है, उठेंगे, मैं तुम्हे लिखूगा।

सबको प्यार। तुम्हारा स्नेही,

पिता

४८ मोतीलाल नेहरू की ओर से

असम मेल,

३० दिसम्बर १९२६

मेरे प्यारे जवाहर,

गोहाटी से लौटते हुए ये चद सतरे तुम्हे उस ट्रेन मे लिख रहा हू, जिसमे सबके-सब सदर, पिछले सदर और बहुत-से मेंबर चल रहे है। गाडी बहुत हिल रही है और ठसाठस भरी हुई है। हिन्दुस्तान की यह सबसे आराम की गाडी समझी जाती है, क्योकि यह गलियारेवाली गाडी है, लेकिन गलियारे मे जगह-जगह अखबारी खबर भेजनेवाले जमे हुए है, और हम लोग अपनी-अपनी जगहो मे भी महफूज नही है। लबे खत के लिए तुम्हे दूसरी डाक का इतजार करना होगा। इस बीच इतना बता देना काफी है कि गोहाटी-काग्रेस उम्मीद से ज्यादा कामयाब रही। हम सभी लोग प्रतिक्रियावादिता के खिलाफ मजबूत रहे, और जो हम लोगो ने चाहा, वह बडी कसरत राय से मजूर हुआ।

श्रद्धानन्द की हत्या ने फिरकेवाराना कडवाहट को बढा दिया है और कई जगहो से बदले की खुली धमकिया आ रही है। एक ही दिशा, जहा से असली खतरा है, बगाल के क्रातिकारी है। बदकिस्मती से उनमे बहुत काफी हद तक फिरकापरस्ती का दाग़ लग गया है।

तुम्हारे पिछले दो ख़तो से यह जानकर ख़ुशी हुई कि कमला की तबीयत बराबर सुधर रही है।

दलित राष्ट्रो की लीग मे शामिल होने के लिए काग्रेस की तरफ से तुम अकेले नुमाइदे चुने गये हो। और कोई भी ऐसा नही था, जो इतने कम वक्त मे खबर पाकर वहा शामिल हो सकता। तुम्हारा खर्चा काग्रेस देगी।

रगास्वामी ने तुम्हे समुद्री तार भेज रक्खा है और जाब्ते का खत भी तुम्हारे और लीग के मत्री के नाम इसी डाक से भेज रहे है।

बाकी दूसरे खत मे। तुम्हारा स्नेही,

पिता

[स्वामी श्रद्धानन्द आर्य समाज के बहुत बड़े नेता थे और उन्होंने असहयोग आन्दोलन और संबंधित आन्दोलनों में प्रमुख भाग लिया था। उनका बड़ा सम्मान था। एक मुस्लिम धर्मान्ध ने उनकी दिल्ली में हत्या कर डाली। लोगों में इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई।

फरवरी १९२७ में दलित राष्ट्र संघ की एक कांग्रेस ब्रुसेल्स, बेल्जियम में हुई थी। उस समय मै अपनी पत्नी की बीमारी के कारण यूरोप में था। कांग्रेस के प्रतिनिधि के नाते मै इस कांग्रेस में शामिल हुआ। इसके बारे में मैंने अपनी 'मेरी कहानी' मे लिखा है।]

४९. महात्मा गाधी की ओर से

नंदी पर्वत (मैसूर राज्य)

२५ मई १९२७

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र तब मिला जब मैं रोग-शय्या पर था और बहुत पत्र-व्यवहार नही कर सकता था। अभी मैं अच्छा हो रहा हू और हल्का-हल्का काम ही कर पाता हू। मगर मेरी प्रगति बराबर जारी है।

जब तुम्हे वहा लम्बा समय होगया, मगर मैं जानता हू कि तुमने उसे बेकार नही खोया है। फिर भी मुझे आशा है कि जब तुम लौटोगे तबतक कमला पूरी तरह स्वस्थ हो जायगी। अगर उसके स्वास्थ्य के लिए ज्यादा

गरमी कायम नही रख सकेगे। कारण, जिसे वे अपने स्वार्थ की हानि समझेगे उसमे वे अपनेको अनुकल नही बना सकेगें। इधर यह खतरा है कि हमारे लोग अपनी भीतरी शक्ति का विकास करके मुक्ति प्राप्त करने के बजाय उसके लिए फिर बाहरी शक्तियो की ओर देखने और बाहरी मदद ढूढने लगेगे। मगर यह तो कोरी दिमागी राय है। मै यूरोप की घटनाओ का ध्यान-पूर्वक अवलोकन बिल्कुल नही कर रहा हू। तुम मौके पर हो और तुम्हे वहा के वायुमडल मे वास्तविक सुधार दिखाई दे सकता है, जो मुझे विल्कुल दिखाई नही देता।

तुम्हारे आगामी काग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने की कुछ चर्चा है। मेरा इस बारे मे पिताजी से पत्र-व्यवहार हो रहा है। हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न पर महा-समिति के सर्वसम्मत प्रस्ताव के बावजूद यहा भविष्य बिल्कुल उज्ज्वल नही है। पता नही कि सिर फोडने का सिलसिला किसी भी तरह रोका जायगा या नही। आम लोगो पर हमारा काबू नही रहा और मुझे ऐसा दिखाई देता है कि अगर तुम अध्यक्ष बन गये तो आम लोगो की दृष्टि से तुम कम-से-कम सालभर के लिए तो खो जाओगे। फिर भी इसका यह अर्थ नही कि काग्रेस के काम की उपेक्षा करनी है। किसी-न-किसीको तो उसे करना ही है। मगर बहुत लोग है जो इस काम को करने के लिए रज़ा-मद और उत्सुक है, उनकी नीयत मिलीजुली या स्वार्थपूर्ण भी हो सकती है, परन्तु वे काग्रेस की गाडी किसी-न-किसी तरह चलाते रहेगे। सस्था सदा उनकी मर्ज़ी पर उनके हाथ मे रहेगी, जिनमे सामूहिक कार्य करने के गुण होगे और जिनका आम लोगो पर काबू हो जायगा। तब प्रश्न यह है कि तुम्हारी सेवाओ का सर्वोत्तम उपयोग कैसे किया जा सकता है ? तुम्हारा अपना जो विचार हो, वह तुम्हे करना चाहिए। मुझे मालूम है कि तुम मे अनासक्त विचार करने की क्षमता है और तुम दादाभाई या मैक्स्विनी की तरह बिल्कुल नि स्वार्थ होकर कहोगे कि 'यह ताज मेरे सिर पर रख दो।' और मुझे कोई सन्देह नही कि वह रख दिया जायगा। स्वय मुझे मार्ग इतना स्पष्ट दिखाई नही देता कि मै वह ताज जबर्दस्ती तुम्हारे सिर पर रख दू और उसे पहनने को तुम्हे समझाऊ। पिताजी ने अगर पहले ही न लिख दिया हो तो इसी डाक से तुम्हे लिखेगे। इस पत्र की एक नकल उनके पास

भिजवा रहा हू ।

अच्छा हो, तुम भी अपनी इच्छा समुद्री तार द्वारा भेज दो । जुलाई के अत तक मेरे बगलौर मे रहने की सभावना है । इसलिए तुम अपना तार सीधा बगलौर भेज सकते हो या बिल्कुल पक्की बात करनी हो तो आश्रम के पते पर भेज दो । मैं जहा भी होऊगा वही वह तार दोहरा दिया जायगा ।

तुम सबको प्यार ।

तुम्हारा,
मो. क. गांधी

५०. महात्मा गांधी की ओर से

[मैं दिसम्बर १९२७ में यूरोप से लौटा और सीधा राष्ट्रीय महासभा के मद्रास अधिवेशन मे चला गया । मेरे कहने पर कुछ प्रस्ताव पास किये गए थे । यह पत्र गांधीजी ने इसलिए लिखा था कि इस अधिवेशन मे मेरी कुछ प्रवृत्तियां उन्हे पसन्द नही आईं ।]

सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती,

असंशोधित ४ जनवरी १९२८

प्रिय जवाहरलाल,

मेरा खयाल है, तुम्हे मुझसे इतना अधिक प्रेम है कि मैं जो कुछ लिखने जा रहा हू उसका तुम बुरा नही मानोगे । जो हो, मुझे तो तुमसे इतना ज्यादा प्रेम है कि जब मुझे लिखने की जरूरत महसूस हो तब मैं अपनी कलम को रोक नही सकता ।

तुम बहुत ही तेज जा रहे हो । तुम्हे सोचने और परिस्थिति के अनुकूल बनने को समय लेना चाहिए था । तुमने जो प्रस्ताव तैयार किये और पास कराये उनमे से अधिकाश के लिए एक साल की देर की जा सकती थी । 'गणतत्री सेना' (Republican army) मे तुम्हारा कूद पडना जल्दबाजी का कदम था । परन्तु मुझे तुम्हारे इन कामो की इतनी परवा नही, जितनी तुम्हारे शरारतियो और हुल्लड़बाजो को प्रोत्साहन देने की है । पता नही, तुम अब भी विशुद्ध अहिसा मे विश्वास रखते हो या नही । परन्तु तुमने अपने विचार वदल दिये हो तो भी तुम यह नही सोच सकते कि अनधि-

कृत और अनियन्त्रित हिसा से देश का उद्धार होनेवाला है। अगर अपने यूरोपीय अनुभवो के प्रकाश मे देश के ध्यानपूर्वक अवलोकन से तुम्हे विश्वास होगया हो कि प्रचलित तौर-तरीके गलत है तो बेशक अपने ही विचारो पर अमल करो, मगर मेहरबानी करके कोई अनुशासन-बद्ध दल बना लो। कानपुर का अनुभव तुम्हे मालूम है। प्रत्येक सग्राम मे ऐसे मनुष्यो की टोलिया चाहिए जो अनुशासन माने। तुम अपने अस्त्रो के बारे मे लापरवाह होकर इस तत्व की उपेक्षा कर रहे हो।

अब तुम राष्ट्रीय महासभा के कार्यवाहक मत्री हो। ऐसी सूरत मे मै तुम्हे सलाह दे सकता हू कि तुम्हारा कर्तव्य है कि केन्द्रीय प्रस्ताव अर्थात एकता पर और साइमन-कमीशन के बहिष्कार के महत्वपूर्ण परन्तु गौण प्रस्ताव पर अपनी सारी शक्ति लगा दो। एकता के प्रस्ताव को सगठन करने और समझाने-बुझाने के तुम्हारे तमाम बडे गुणो के उपयोग की जरूरत है। मेरे पास अपनी बातो का विस्तार करने के लिए समय नही है, परन्तु बुद्धिमान् के लिए इशारा काफी होना चाहिए।

आशा है, कमला का स्वास्थ्य यूरोप की तरह ही अच्छा होगा।

सप्रेम तुम्हारा,

बापू

५१ महात्मा गाधी की ओर से

आश्रम, साबरमती,
१७ जनवरी १९२८

प्रिय जवाहरलाल,

मुझे बोलकर लिखवाकर समय बचाना और अपने दुखते हुए कधे को आराम देना होगा। रविवार को मैने तुम्हे फेनर ब्रॉकवे के बारे मे लिखा था। आशा है, तुम्हे वह पत्र ठीक समय पर मिल गया होगा।

तुम्हे मालूम है कि जिन लेखो की तुमने आलोचना की है उन्हे, सिवा कथित 'अखिल भारतीय प्रदर्शिनी' वाले लेख के, मैने इसीलिए लिखा था कि तुम उल्लिखित कार्य-विवरण मे मुख्य हिस्सेदार थे। मुझे एक प्रकार की सुरक्षा महसूस होती थी कि तुम्हारे-मेरे बीच के सम्बन्धो को देखते हुए मेरे लेखो को उसी भावना से समझा जायगा, जिससे वे लिखे जाते थे। फिर

भी मै देखता हू कि यह तो सब तरफ भूल-ही-भूल हुई। मुझे इसकी परवा नही। कारण, यह स्पष्ट है कि ये लेख ही तुम्हे उस आत्म-दमन से मुक्त कर सकते थे, जिसके नीचे तुम इतने वर्षो से दबे जा रहे थे। यद्यपि मुझे तुम्हारे-मेरे बीच का दृष्टि-भेद कुछ-कुछ दिखाई देने लगा था, फिर भी मुझे तनिक भी कल्पना नही थी कि ये मतभेद इतने भयकर हो जायगे। जहां तुम देश की खातिर और इस विश्वास मे कि मेरे साथ और मेरे नीचे अपनी इच्छा के विरुद्ध भी काम करके तुम राष्ट्र की सेवा करोगे और आच आये बिना निकल आओगे, तुम अपने-आपको बहादुरी के साथ दबा रहे थे, वहा तुम इस अस्वाभाविक आत्मदमन के भार के नीचे दबकर कुढते रहे। और जबतक तुम उस स्थिति मे रहे, तुम उन्ही चीजो की उपेक्षा करते रहे, जो अब तुम्हे मेरी गभीर त्रुटिया दिखाई देती है। मै 'यग इडिया' के पृष्ठो से तुम्हे दिखा सकता हू कि इतने ही ज़ोरदार लेख मैने महासमिति की कार्रवाइयो के बाबत तब लिखे थे जब मै काग्रेस का सक्रिय पथ-प्रदर्शन कर रहा था। जब कभी महासमिति की बैठको मे गैर-जिम्मेदारी और जल्द-बाजी की बाते या कार्रवाई होती थी तब भी मै इसी तरह बोला हू। मगर जबतक तुम मूर्च्छित अवस्था मे थे तबतक ये चीजे आज की तरह नही खटकी और इसलिए तुम्हारे पत्र की असगतिया बताना मुझे बेकार मालूम होता है। इस समय मुझे तो भावी कार्रवाई की ही चिन्ता है।

अगर मुझसे कोई स्वतत्रता चाहिए तो मै उस नम्रतापूर्ण अचूक वफादारी से तुम्हे पूरी स्वतत्रता देता हू, जो तुमसे मुझे इन तमाम वर्षो मे मिली है और जिसकी मै तुम्हारी हालत का ज्ञान प्राप्त हो जाने के कारण अब और भी कद्र करता हू। मुझे बिल्कुल साफ दिखाई देता है कि तुम्हे मेरे और मेरे विचारो के विरुद्ध खुली लडाई करनी चाहिए। कारण, यदि मै गलती पर हू तो मै स्पष्ट ही देश की वह हानि कर रहा हू, जिसकी क्षति-पूर्ति नही हो सकती और उसे जान लेने के बाद तुम्हारा धर्म है कि मेरे खिलाफ बगावत मे उठ खड़े हो; अथवा यदि तुम्हे अपने निर्णयो के ठीक होने मे कोई शका है तो मै खुशी से तुम्हारे साथ निजी रूप मे उनकी चर्चा करने को तैयार हू। तुम्हारे और मेरे बीच मतभेद इतने विशाल और मौलिक है कि हमारे लिए कोई मिलन की जगह दिखाई नही देती। मै तुमसे अपना यह

दुःख नही छिपा सकता कि मै तुम्हारे जैसा बहादुर, वफादार, योग्य और ईमानदार साथी खोऊ, परन्तु कार्य की सिद्धि के लिए साथीपन को कुर्बान करना पडता है। इनसब विचारो से कार्य को श्रेष्ठ मानना चाहिए। लेकिन साथीपन के इस बिछोह से—अगर बिछोह होना ही है—हमारी व्यक्तिगत घनिष्ठता मे कोई अन्तर नही पडेगा। हम लम्बे अर्से से एक ही परिवार के सदस्य बन चुके है और राजनैतिक मतभेदो के होते हुए भी हम वैसे ही बने रहेगे। मुझे कई लोगो के साथ ऐसे सम्बन्ध रखने का सौभाग्य प्राप्त है। उदाहरण के लिए शास्त्री को ही ले लो। उनके मेरे राजनैतिक दृष्टिकोण में जमीन आसमान का फर्क है, मगर उनके मेरे बीच जो स्नेह-सम्बन्ध राजनैतिक मतभेदो का भान होने से पहले ही पैदा हो चुका था, वह बना हुआ है और कई अग्नि-परीक्षाए पार करके भी जीवित रह गया है।

तुम्हारी पताका फहरे, इसका एक शानदार तरीका सुझाऊ। मुझे प्रकाशन के लिए एक पत्र लिखो, जिसमे तुम्हारे मतभेद प्रकट किये गए हो। मै उसे 'यग इडिया' मे छाप दूगा और उसका सक्षिप्त उत्तर लिख दूगा। तुम्हारा पहला पत्र मैने पढने और जवाब देने के बाद फाड दिया था। दूसरा रख लिया है और अगर तुम और कोई खत लिखने की तकलीफ नही उठाना चाहते तो जो चिट्ठी मेरे सामने है उसीको छापने के लिए तैयार हू। मुझे पता नही, इसमे कोई बुरा लगनेवाला अश है। लेकिन कोई हुआ तो, विश्वास रखो, मै ऐसे हर अश को निकाल दूगा। मै उस पत्र को एक स्पष्ट और प्रामाणिक दस्तावेज मानता हू।

सप्रेम तुम्हारा,

बापू

५२ मोतीलाल नेहरू की ओर से महात्मा गाधी के नाम

११ जुलाई १९२८

प्रिय महात्माजी,

आखिरकार अब मै यह कह सकता हू कि कमेटी की रिपोर्ट के बारे में एक किस्म मे एकराय हो पाई है। न तो यह पक्की है, और न खरी ही, लेकिन कुछ होगया है, जिसकी हिमायत हम सर्व-दल-सम्मेलन और आमतौर पर मुल्क मे कर सकते है। आखिरी दौर मे जो कार्रवाइया हो रही है, उनकी

नकल भेज रहा हू, जिससे आपको मालूम हो सकेगा कि किस तरह हम लोगो ने बहस के मुद्दो को निबटाया है। सभी मेम्बर अपने-अपने घर चले गये है और जवाहर और मुझे रिपोर्ट तैयार करने का काम सौप गये है और अब हम उसपर जुटे है।

आपने अखबारो मे देखा होगा कि कनाडियन डेलीगेशन की मेबरी से मैने अपना इस्तीफा भेज दिया है, क्योकि मैने महसूस किया कि सर्वदल-सम्मेलन के जरिये हमारी रिपोर्ट के मजूर किये जाने की जो भी गुजाइश है वह मेरे देश से बाहर रहने से कम हो जायगी।

अब ताजपोशी का सवाल आता है। मेरे मन मे यह बात साफ है कि आज के नायक वल्लभभाई है और उनकी खिदमतो को मजूरी देने के लिए कम-से-कम जो हम कर सकते है वह यह है कि ताज उन्हीको दे। वह राजी न हो तो, मेरी समझ मे, हालात को देखते हुए, दूसरा सबसे अच्छा चुनाव जवाहर का होगा। यह सही है कि उसने हमारे बहुत-से नाजुक मिजाज लोगो को अपनी साफगोई से डरा दिया है। लेकिन अब वक्त आगया है, जबकि ज्यादा फुरती रखनेवाले और मजबूत कार्यकर्ताओ को मुल्क के सियासी कामो को अपने तरीके से चलाने का मौका मिलना चाहिए। मै मानता हूं कि इस दर्जे मे और उस दर्जे मे, जिसमे कि आप और मै हू, फर्क की बाते है लेकिन कोई वजह नही कि अपने खयालो को हम उनपर लादते रहे; हमारी पीढी तो अब तेजी से खत्म हो रही है। जल्दी या देर से लड़ाई को जवाहर जैसे लोग ही चालू रख सकेगे। जितनी जल्दी शुरू करे उतना ही अच्छा है।

जहातक मेरी बात है, मै महसूस करता हू कि अपने मे जो भरोसा मुझे रहा है, उसे मै बहुत-कुछ खो चुका हू और मेरी ताकत करीब-करीब खत्म हो-गई है। अहमियत ताज की उतनी नही होती, जितनी कि ताज के पीछे की ताकत की होती है, और वह ताकत जिसपर मै भरोसा कर सकता हू, मुझे नही दिखाई देती। बेशक आपकी बात दूसरी है। आपके जोर देने पर मैने अपने खयाल आपके सामने रख दिये है। फैसला करना आपके हाथ मे है।

आपका,

मोतीलाल नेहरू

[इस पत्र में जिस कमेटी का जिक्र है, उसे सर्वदल सम्मेलन ने भारत के लिए सविधान का ढाचा तैयार करने को नियुक्त किया था, विशेषकर साप्रदायिक समस्याओ आदि के सबध मे। उसकी रिपोर्ट को 'नेहरू-रिपोर्ट' कहा गया, कारण, पं. मोतीलाल नेहरू उस कमेटी के अध्यक्ष थे।]

५३. जे एम. सेन गुप्ता की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

[श्री जतीन्द्र मोहन सेन गुप्ता बगाल मे कांग्रेस के एक प्रमुख नेता थे और काग्रेस का आगामी अधिवेशन कलकत्ता मे ही होनेवाला था।]

१०/४, एलगिन रोड, कलकत्ता,
१७ जुलाई १९२८

प्रिय पडितजी,

कल महात्माजी का मुझे तार मिला है, जिसमे लिखा है कि काग्रेस के अगले अविवेशन के सभापति-पद को आप स्वीकार करना नही चाहते। इस खबर से मेरे दिल को बडी चोट पहुची। मैंने तुरत अपने तमाम मित्रो को इकट्ठा किया और उनसे सलाह-मशविरा किया। हम सबने एकराय होकर महात्माजी को तार द्वारा आग्रहभरा जवाब भेजा है कि वह आप पर जोर डाले और आपकी स्वीकृति प्राप्त करे।

हमारे लिए यह समय सकोच और झिझक का नही है। हम आपको ही सभापति वनायेगे। देश मे और वाहर जो राजनैतिक सकट है उसमे आपको आकर हमारा नेतृत्व करना ही होगा। अधिकाश प्रान्तो ने हमारे पास सूचना भेजी है कि वे आपको ही चाहते है। चार या पाच ने तो केवल एक ही नाम भेजा है, यानी आपका, यद्यपि इस पहली छटनी मे और नाम भी वे जोड सकते थे।

वगाल तो एकराय से आपको ही चाहता है, क्योकि हमारा काम आपके विना नही चल सकता। मै एक पिता की भावनाओ को अच्छी तरह समझ सकता हू, जवकि उसका लडका भी सामने मैदान मे हो, लेकिन हममे से अधिकाश तो आपके लडको जैसे ही है। इसलिए इतने आग्रह के लिए आप हमे क्षमा करे। आपकी अनिच्छा का कारण जो भी कुछ हो, हमें निराश न कीजिये। इससे अधिक जोर से अपनी वात और किस तरह आपके सामने पेश कर सकता हू।

आज ही मैंने महात्माजी को एक लंबा पत्र लिखा है। उसकी नकल आपको भेज रहा हूं। कृपाकर लिखें कि सब ठीक है।

आपका,
जे. एम. सेन गुप्ता

५४. सुभाषचंद्र बोस की ओर से मोतीलाल नेहरू के नाम

१ वुडबर्न पार्क, कलकत्ता
१८ जुलाई १९२८

प्रिय पंडितजी,

मैंने कल सुबह कांग्रेस की अध्यक्षता के बारे में आपको एक तार भेजा था। कल रात मुझे उसका उत्तर मिला। मैं नहीं कह सकता कि अगर किसी कारण से आप कांग्रेस के अध्यक्ष-पद को नामंजूर करते हैं तो सारे बंगाल को कितनी अधिक निराशा होगी। स्वराज्य पार्टी के काम और उसकी नीति के साथ आपका जो गहरा संबंध रहा है, और बातों के अलावा इसकी वजह से भी आपका नाम इस प्रांत में सब लोग स्वीकार करते हैं। मैं दूसरे प्रांतों का जिक्र नहीं करूंगा, किन्तु मुझे लगभग पूरा भरोसा है कि जब आखिरी नामजदगी होगी, तो सारा देश सर्वसम्मति से आपका समर्थन करेगा।

आज देश की जैसी हालत है, और सन् १९२९ का साल हमारे देश के इतिहास में इतना अधिक महत्वपूर्ण होनेवाला है, कि हमारी निगाह आपके अलावा और किसी व्यक्ति पर नहीं ठहरती, जो अवसर के योग्य साबित होसके। हमने कुछ दूसरे नामों के सुझाव भी सुने हैं, और हालात दूसरे होते तो उनपर विचार किया जा सकता था, किन्तु जब विभिन्न पार्टियों को नजदीक लाने और एक सर्वसम्मत संविधान बनाने की गंभीर कोशिशें हो रही हैं, तो दूसरे नामों के सुझावों को मंजूर नहीं किया जा सकता। यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण न होगा कि अगर किसी वजह से आप अध्यक्ष-पद स्वीकार नहीं करते हैं तो उसका इस प्रांत पर इतना बुरा असर पड़ेगा कि कांग्रेस-अधिवेशन की सफलता ही खतरे में पड़ जायगी। इस समय, जबकि हम गंभीर संकट में से गुजर रहे हैं, क्या हम यह आशा नहीं कर सकते कि आप देश की पुकार का मुनासिब उत्तर देंगे?

आपका,
सुभाषचन्द्र बोस

फिर से—

जिला बोर्डों के मतदाताओ की तादाद के बारे मे आपका तार मिला। मैं उनकी सख्या मालूम करने की कोशिश कर रहा हू, किन्तु मैं सफल हो सकूगा, इस बारे मे मुझे सदेह ही है। विभिन्न जिलो मे मतदाता-सूचिया प्राप्त करने के बाद आकडो को इकट्ठा करने मे काफी समय लग जायगा।

सुभाष

५५ मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. जे. सेन गुप्ता और सुभाष-चद्र बोस के नाम

आनंद भवन, इलाहाबाद
१९ जुलाई १९२८

अभी आपका खत मिला और मैंने तार के जरिये वादा किया है कि फौरन जवाब दूगा। मुझे डर है, आप लोगो ने मामले को एकदम गलत समझा है। जैसा मैंने अपने तार मे लिखा है, बाप और बेटे की भावना का कोई सवाल ही नही है, और न बेटे को बाप के लिए हट जाने के लिए राजी करने की जरूरत ही है। बाप और बेटे, दोनो के सामने जो सवाल वज़न रखता है वह यह है कि देश की सेवा किस तरह सबसे अच्छी तरह हो सकती है। जवाहर की ज़रा भी यह इच्छा नही थी कि महात्माजी जिसे ताज कहते है, उसे पहने। उसे काग्रेस के सदर की कुर्सी पर बिठाने का मेरा विचार पुराना है और इसका कोई भी ताल्लुक इस बात से नही कि वह मेरा लडका है। मैंने यह विचार पिछले साल डा अन्सारी के चुनाव से पहले महात्माजी को बता दिया था। डा अन्सारी खुद जवाहर के मद्रास-काग्रेस के सदर होने के हक मे थे, लेकिन जवाहर ने जोर से इस इज्जत को मजूर करने से इन्कार कर दिया।

फिर, आनेवाली कलकत्ता-काग्रेस की सदारत के बारे मे मुझे महात्माजी का एक खत पिछले महीने मे मेरी कमेटी की बैठको के दरमियान खाली वक्त मे मिला, जिसमे मुझे यह खबर दी गई थी कि सेन गुप्ता का एक खत उन्हे मिला है, जिसमे सदारत के लिए मेरा नाम सुझाया गया है। महात्माजी ने लिखा था कि अगर वह कमेटी, जिसका मै सदर हू, कोई ठोस चीज़ पेश

कर सके तो अच्छा यह होगा कि मै ही ताज पहनू। मैने उन्हे जवाब दिया कि कमेटी का एकराय होकर किसी फैसले पर पहुचना मुमकिन नही। और जबतक फैसला न हो पावे तबतक मुझे लगता है कि मुल्क मे मेरेलिए कोई काम ही नही है। मामला यही रुका रहा, और ८ जुलाई को जाकर कमेटी एक तरह के आम समझौते पर पहुची। तब मैने महात्माजी को फिर लिखा। उसकी कोई नक़ल मेरे पास होती तो मै उसे आपके पास भेज देता। लेकिन अब याददाश्त से उसकी बात दुहराने की कोशिश करूगा। जो कुछ मैने लिखा था वह यह था कि वल्लभभाई पटेल आज के नायक है और सबसे पहले उन्हीको चुनना चाहिए। वह राजी न हो तो दूसरा सबसे अच्छा चुनाव जवाहरलाल होगा। जो वजह मैने बताई थी, वह यह थी कि मेरे ढग के लोगो का वक्त अब नही रहा है और अब वक्त आगया है कि देश के कामो की रहनुमाई ज्यादा नौजवान लोगो के हाथो मे दी जाय। हम लोग हमेशा नही बने रहेगे और देर-अबेर नौजवानो को ही काम सम्हालना होगा। बेहतर होगा कि वे यह काम हमारे जीते-जी शुरू कर दे, बजाय इसके कि वे हमारे जाने तक रुके रहे। जहातक मेरी बात है, मैने कहा था कि मै तो अब बीत चुका हू और मै अपनेको जिम्मेदारी के लायक नही समझता। जवाहर के नाम की सिफारिश करने की मेरी वजह यह थी कि नौजवानो मे वह एक ऐसा आदमी है, जोकि ज्यादातर लोगो का विश्वास पा सकता है। तबसे यह बात सच भी साबित हो रही है और वह इस बात से साफ है कि उसका और मेरा नाम इस बारे मे करीब-करीब साथ लिया जा रहा है। महात्माजी ने मुझे तार दिया कि वह मुझसे एकराय है और जवाहर के नाम की 'यग इडिया' मे सिफारिश कर रहे है। मुझे पूरा यकीन था कि जवाहर फौरन अलग हो जायगा और इसीलिए मैने उसे मसूरी मे यह कड़ा आदेश भेजने की सावधानी बरती कि बिना मुझसे पूछे वह कुछ भी छपाने का पागलपन न करे। यही पूरी कहानी है। मैने आपके खतो की नकले अपने इस जवाब की नकल के साथ महात्माजी के पास भेज दी है और मामला उनके ऊपर छोड़ दिया है।

मेरे और जवाहर के मुकाबले का सवाल बिल्कुल नही है। सारा सवाल यह है कि हालात की माग क्या है। जबकि मै जानता हूं कि जो कुछ

आप कहते है उसमे बहुत वजन है, मेरी अपनी राय यह है कि आज का मौका देश मे एक आगे बढनेवाले मजबूत दल की माग करता है, जो कि पूरे तौर पर हर जोखिम को उठाकर आगे बढने के लिए तैयार हो और इसी दल के हाथ आदोलन की बागडोर हो। मुकम्मल आजादी से चुपचाप उतरकर औपनिवेशिक दर्जे को मजूर करना काग्रेस की हँसी कराना होगा। मै दुनिया को जो दिखाना चाहता हू, और जिसे मै हकीकत मानता हू, वह यह है कि देश अब आगे किसी तरह की बेतुकी बाते बर्दाश्त करने के लिए तैयार नही है, और अगर सब दलो की कम-से-कम माग फौरन नही मानी जाती, तो जो लोग यह माग कर रहे है वे सभी मजबूत दल के साथ हो जायगे। मुझे यकीन है कि देश के रुख को देखते हुए अगली काग्रेस मे तथाकथित सर्वसम्मत विधान को पास कराना आसान न होगा और अगर यह पास हुआ, जोकि मुमकिन है, तो यह ज्यादातर इस वजह से होगा कि कौन उसकी ताईद कर रहे है, न कि नौजवान-दल की समझी-बूझी राय की वजह से।

जो हो, बाप-बेटे दोनो ही मुल्क की खिदमत के लिए तैयार है, और उनके लिए इस बात से कोई फर्क नही पडता कि सदर की कुर्सी पर कौन बैठता है। सारा सवाल यह है कि मुल्क के लिए सबसे अच्छी बात क्या है।

मुझे यकीन है कि इस सारी खतो-किताबत के सामने होने से महात्मा-जी ठीक फैसला कर सकेगे और मै उनके फैसले को मानने के लिए पूरी तरह राजी हू।

मोतीलाल नेहरू

५६. मोतीलाल नेहरू की ओर से महात्मा गांधी के नाम

आनद भवन, इलाहाबाद

१९ जुलाई १९२८

प्रिय महात्माजी,

साथ की खतो-किताबत अपने-आपमे साफ है। जवाहर कमला और इदू का इतजाम करने मसूरी गया है, लेकिन सेन गुप्ता के नाम मेरे खत की नकल से आपको यह सब पता लगेगा कि उसे कुछ न बोलने का कडा हुक्म है। सेन गुप्ता का आपसे किया गया इसरार कि आप जवाहर से कहे

कि वह अलग होजाय, मुझे पसद है। मेरा खयाल है कि ऐसा करने से रोकने के लिए उसे काफी समझाना होगा।

मै कमिटी की रिपोर्ट तैयार करने मे जुटा हुआ हू। मेरेलिए जवाहर लम्बे-चौडे नोट छोड गया है और जब मै रिपोर्ट लिखता हू तो कदम-कदम पर ऐसे मुद्दे उठते है, जो न उसके दिमाग मे आये थे, न मेरे। यह कमिटी के फैसलो की लापरवाही से लिखी जुबान की वजह से है। वे फैसले लबी बैठको के अखीर मे लिखे गये थे, जबकि हर आदमी इतना थका हुआ था कि जुबान की परवा नही कर सकता था। मुझे बार-बार मेबरो से पूछना पडता है (जो सभी अपने-अपने घर जा चुके है), जिससे उनका मतलब ठीक मालूम कर सकू, या ज्यादा सही यह कहना होगा कि जिससे उनसे अपना मतलब मनवा सकू, जैसाकि वे अबतक बिना किसी हिचकिचाहट के करते आये है। मै अपनी आखिरी पूछताछ के जवाबो की इतजारी मे हू और जैसे ही वे मिल जायगे, रिपोर्ट का मसविदा मेम्बरो के पास भज दिया जायगा।

बारडोली मे या उसके आस-पास जो घटनाएं हो रही है, उन्हे मै फिक्र के साथ देख रहा हूं। लेकिन फिलहाल समझ नही पा रहा हू कि मै उनके लिए किस तरह अपकोने फायदेमन्द बना सकता हू।

साथ की खतो-किताबत पर और उन दूसरी खबरो पर, जो आपको मिली हो, गौर करके 'ताज' के बारे मे अपना फैसला तार से भेजने की मेहरबानी कीजिये।

आपका,

मोतीलाल नेहरू

५७. मोतीलाल नेहरू की ओर से एनी बेसेंट के नाम

इलाहाबाद,

३० सितम्बर १९२८

प्रिय डा. बेसेन्ट,

असेम्बली का थोड़े दिनो का और पुरजोश इजलास खत्म होगया है और सर्वदल-सम्मेलन ने हम लोगो को जो काम सौपा है, उसपर पूरी-पूरी तवज्जो देने के लिए मै इलाहाबाद आगया हू।

शिमला मे मिले आपके तार बहुत हौसला बढानेवाले थे। आपने इससे पहले ही शानदार काम कर लिया है और मुझे कोई भी शुबहा नही कि उसे आप आगे भी उतनी ही कामयाबी से करती रहेगी, जितनी कि आपने अबतक हासिल की है। सूबाई सर्वदल-सम्मेलन का खयाल बहुत अच्छा है और दूसरे सूबे भी इसकी नकल करे, इसके लिए मै कदम उठा रहा हू। चूकि सर तेजबहादुर सप्रू कान्फ्रेस मे शामिल होगे, मैने मद्रास आने का फैसला आगे के लिए रख छोडा है। मैने अभी अपना प्रोग्राम तय नही किया है, क्योकि मुझे बहुत-कुछ शुरुआत के काम निबटाने है, जिनमे एक बडा काम सूबो मे काम चालू करने के लिए काफी पैसा इकट्ठा करना है।

जैसा आपको याद होगा, हम लोगो ने अपने उसी वक्त के खर्चो के लिए, जिसका अदाजा २५ ०००) था, लखनऊ मे जरूरती चदे की एक फहरिस्त शुरू की थी। इस रकम का बहुत कम हिस्सा चदे मे मिला है और शिमला मे कमिटी की पिछली बैठक मे फिर से अदाजा लगाने पर यह पता लगा कि अगले तीन महीनो मे सभी सूबो मे जोरदार प्रोपेगण्डा करने के लिए एक लाख से कम रुपयो की जरूरत न पडेगी। इस रकम का एक बडा हिस्सा बम्बई और कलकत्ता से मिलने की उम्मीद की जाती है और जल्दी ही मुझे इन दोनो जगहो पर जाना है। इसके बाद, उम्मीद है, मै मद्रास जाऊगा, जहा इन दोनो मे से किसी भी जगह से आसानी से पहुचा जा सकता है।

पजाब और बगाल के सूबो मे और जगहो से ज्यादा कोशिश की जरूरत है, क्योकि यही हिन्दू-मुस्लिम सवाल सबसे तेज़ है। मुझे यह कहते हुए खुशी होती है कि मद्रास के नमूने पर पजाब मे बनी सूबा कमेटी ने बडी खूबी से हालत को सम्हाल रखा है और शफी के खयालो के कुछ जिद्दी लोगो को छोडकर ज्यादातर मुसलमानो ने पहले से ही अपनेको लखनऊ की तजवीजो के हक मे होने का ऐलान कर दिया है। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने, जोकि शिमला की बैठक मे मौजूद थे, बगाल मे और भी अच्छे नतीजो के बारे मे भरोसा दिलाया है और मुझे इसमे शुबहा नही कि काफी पैसा मिला तो उन्हे कामयाबी हासिल होगी।

दूसरे सूबो के मुसलमान, जहा कि उनकी तादाद बुरी तरह थोडी है, पजाब और बगाल के अकसरियत रखनेवाले मुसलमानो के खयाली हको के लिए अबतक लडते रहे है। इसका सबसे जोरदार जवाब यही होगा कि पजाब और बगाल के मुसलमानो ने लखनऊ की तजवीजो को मजूर कर लिया है और उन्हे दूसरे सूबो की हिमायत की जरूरत नही। मुझे उम्मीद है कि यह जवाब उन्हे अगले पखवारे के भीतर मिल जायगा। इसके बाद बाकी हिन्दुस्तान मे हिन्दू-मुस्लिम-सवाल को हल करने के लिए जो करना है, वह, मै उम्मीद करता हू, कम तादादवालो को जहा-तहा कुछ टुकडे फेककर हो सकेगा। मद्रास के मुसलमानो ने बहुत अच्छा सुझाव दिया है और मै समझता हू कि हमारी कमिटी को पजाब और बगाल को छोडकर और सूबो के बारे मे उसपर चलना चाहिए। सुझाव यह है कि कम तादाद वालो की नुमाइदगी के बारे मे कडे कायदे बनाने के बजाय, जैसाकि हमने अपनी रिपोर्ट मे किया है, हर सूबे को यह छूट होनी चाहिए कि कम तादादवालो और ज्यादा तादादवालो के बीच ऐसा समझौता करले जो उन खास सूबो की हालात के मुताबिक सबसे ज्यादा ठीक हो। मद्रास के मुसलमानो ने मान लिया है कि ज्यादा तादादवाले हिदुओ से जो वह पा सकेगे उसे मजूर कर लेगे। मै मानता हू कि और सूबे हिन्दू-मुस्लिम सवाल को इतनी आसानी से नही निबटा पायगे। फिर भी मेरी समझ मे मद्रास के सुझाव के मुताबिक चलने मे सर्वसम्मत हल की ज्यादा उम्मीद है, बजाय इसके कि सभी सूबो पर एक-सा कानून लागू किया जाय। हमारे काम के हिन्दू-मुस्लिम सवाल पर, जिसके बारे मे मेरे दोस्त सर तेजबहादुर सप्रू ने मुझसे अपनी भारी परेशानी जाहिर की है, मुझे इतना ही कहना है।

दूसरी जमात, जिससे हमारा ताल्लुक आयेगा, वह है मुकम्मल आजादी चाहनेवालो की जमात, जिसकी तादाद जवाहर की मेहरबानी से तेजी से बढती जा रही है। मुझे इस जमात से कोई डर नही, जबतक कि उसका नेता एक ऐसा ईमानदार मुल्क-परस्त है, जो हमेशा तस्वीर के दूसरे पहलू को देखने के लिए तैयार रहता है, जैसाकि इस वाकये से साफ है कि मुकम्मल आजादी के लिए अपने जबर्दस्त प्रोपैगेडा के बावजूद

जवाहर सर्वदलीय फैसलो को पूरी तरह कामयाब बनाने के लिए कोई कसर नही उठा रख रहा है। बनावटी आज़ादीवालो से, जिनके नेता आपके शहर के महान श्रीनिवास आयगर है, डरने की वजह और भी कम है। सच्ची आजादी चाहनेवालो से हमारा समझौता हो जाय तो नक्कालो से निवट लेना आसान होगा और वह इस तरह कि उन्हे अपने-आपसे कुढने के लिए अलग छोड दिया जाय। जो सच्ची आज़ादी चाहनेवाले है, उनसे तसल्लीवख्श समझौता कर सकने की मै जल्दी उम्मीद कर रहा हू और आपको यह खुशखवरी दो-एक दिन मे दे सकने की उम्मीद करता हू।

फिर जो लोग वच रहते है वे प्रतिक्रियावादी है। उनके लिए हम कोई गुजाइश नही छोडेगे। सरकार के लिए इनसे पेश आना वहुत कठिन होगा और साइमन्स को भी इनकी वे-सिर-पैर की मागो को मजूर करना और अमल मे लाना नामुमकिन जान पडेगा। फिर भी खतरा यह है कि नौकरशाही इस जमात के जरिये हमारे मामले को बिगाडने की कोशिश करेगी, इसलिए नही कि वे ठीक रास्ते पर है और हम गलत रास्ते पर, वल्कि ऐसी जमात होनेभर से यह सावित करने की कोशिश की जायगी कि मुल्क मे हमारा साथ देनेवाले लोग काफी तादाद मे नही है। इसका जवाव महज इस तरह दिया जा सकता है कि हर जिले मे हम वहुत-सी सभाए करे और यह दिखाये कि ये प्रतिक्रियावादी मुल्क मे मुट्ठी-भर है और उन्हे लोगो के किसी भी वडे तवके की नुमाइदगी करने का हक नही है। इसी काम के लिए हमे आदमियो, पैसो और हथियारो की जरूरत है। आपने अपनी हथियारो की फैक्टरी पहले से ही इस शक्ल मे शुरू कर दी है कि आपके सूवे की ज़वानो मे पैम्फलेट और दस्ती इश्तहार निकलते रहे। पजाव मे लाला लाजपतराय दूसरी और वगाल मे मौलाना अवुल कलाम आजाद तीसरी फैक्टरी खोल रहे है। इसमे शक नही कि जैसे-जैसे पैसा इकट्ठा होता जायगा, और भी फैक्टरिया खुलती जायगी।

यहातक मैने आम हालत का, जैसाकि मैने उसे देखा है और जिस तरह से मै उसे निवटाने का ख़याल कर रहा हू, आपको एक अदाज कराने की कोशिश की है। मद्रास के वारे मे मुझे कुछ सुझाव देने है। मुझे ऐसा लगता है कि सूवे में पाच लोगो की पाच जमातो का इतज़ाम करना है। एक काफी

बडा तबका उन लोगो का है, जिनपर अड्यारो का सीधा असर है। दूसरा उतना ही बडा तबका काग्रेस के असर मे है। तीसरा बडा तबका गैर-ब्राह्मणो का है। चौथा दलित जातियो का और पाचवा मुसलमानो का। उन सभीतक पहुच सकने के लिए यह जरूरी होगा कि हर तबके मे से एक या दो मुखिया लोगो को कमिटी मे ले लिया जाय और उन्हे अपने-अपने तबके के लोगो मे काम करने की जिम्मेदारी सौंपी जाय। मै समझता हू कि गैर-ब्राह्मण और दलित-वर्ग के लोग आसानी से मिल जायगे, जो आपके या काग्रेस के पीछे चलनेवालो के साथ काम करने के लिए तैयार हो, लेकिन यह अक्लमदी होगी कि कुछ असरवाले मुसलमानो को अपने मजहब के लोगो के बीच काम करने के लिए रखा जाय। काग्रेसी और मुसलमान काम करनेवालो के लिए कोई अलग-अलग सगठन होना चाहिए। शिमला मे श्री ए. रगास्वामी आयगर और सैयद मुरतजा साहब बहादुर से लबी बातचीत के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि आपकी आम कमिटी मे रहने के अलावा उन्हे अलग से रुपये मिलने चाहिए, जो काग्रेसी और मुसलमान कार्यकर्ताओ पर खर्च किये जा सके। फिलहाल श्री रगास्वामी आयगर को १००० और सैयद मुरतजा साहब को ५०० रुपये देना काफी होगा। दोनो ही बडे इज्जतदार आदमी है और इस बात का भरोसा किया जा सकता है कि रुपये वे ठीक तरह से खर्च करेगे। इस सिलसिले मे मुझे श्री याकूब हसन का खयाल आया था, लेकिन मालूम हुआ कि वह बड़े सुस्त आदमी है। फिर भी सैयद मुरतजा साहब ने यह बात मान ली है कि उन्हे पर इस बात पर राजी करेगे कि मुस्लिम सब-कमेटी के सदर या मेबर के तौर पर उनके नाम का ऐलान कर दिया जाय। मेरा खयाल है कि इतना काफी होगा।

मेहरबानी करके लिखियेगा कि यह चुनाव आपको पसद है या नही और क्या आपको ऊपर लिखी रकमे दे सकने का सुभीता होगा? लखनऊ मे आपने ५,००० की रकम, जिसे दो किस्तो मे देने का वादा किया था, मुझे डर है कि, आपने जो काम हाथ मे ले रक्खा है, उसको देखते काफी नही होगी। इसलिए और मदद करने की जरूरत होगी, जो या तो [illegible] से मागा जा सकता है, या कुछ चुने हुए लोगो से, जैसा कि आप

मुनासिब समझे। मद्रास को अपना काम आप चला लेना चाहिए, लेकिन फिर भी अगर आप समझती है कि बाहर से रुपया लाने की जरूरत है, तो मै बम्बई से लाने की कोशिश करूगा। इस बीच मेहरबानी करके १००० रुपये श्री रामास्वामी आयगर को और ५०० रुपये सैयद मुरतज़ा साहब को दे दे। शुरू मे तो यह खयाल था कि चदे मरकजी फड मे दिये जाय और यह फड सूबो को उनकी ज़रूरतो के मुताबिक वक्त-वक्त पर पैसा देता रहे। यही आम कायदा है, जिसपर मै चल रहा हू, लेकिन मदरास के मामले मे इसकी पाबदी गैर-जरूरी होगी, क्योकि इससे काफी देरी हो जाने का अदेशा है। इतना काफी होगा कि आपका दफ्तर जवाहरलाल को वक्त-वक्त पर इस बात की खबर देता रहे कि कुल कितना रुपया मिला है और कितना खर्च हुआ है, जिससे वह पूरा हिसाब तैयार कर सके।

आपको याद होगा कि लखनऊ की काफ्रेस ने कई सवाल हमारी कमिटी के सामने रखे है और हमसे यह भी कहा गया है कि हम एक ऐसे बिल का मसविदा तैयार करावे, जिसमे हमारी सभी सिफारिशे आगई हो और जो सर्वदल-सम्मेलन के सामने रक्खा जा सके। कमिटी की पिछली बैठक मे, जो शिमला मे हुई थी, सर तेजबहादुर सप्रू, पडित हृदयनाथ कुजरू, सी विजय राघवाचार्य (इस नाम के लिये जाने पर सप्रू के चेहरे पर छाई परेशानी का मै अदाज कर सकता हू, लेकिन यह जरूरी था), सर अली इमाम और मुझे लेकर एक सब-कमेटी बनी थी, जिसे यह काम सौपा गया था कि लखनऊ-काफ्रेस के जरिये भेजे गए सवालो पर कमिटी की रिपोर्ट का मसविदा तैयार करे और बुनियादी रिपोर्ट लखनऊ की तजवीज़ो और उस रिपोर्ट की सिफारिशो को शामिल करते हुए, जिसे हमे काफ्रेस मे पेश करना है, एक बिल का मसविदा भी तैयार करे। इससे आगे की बैठक के लिए, जो दिल्ली या इलाहाबाद मे नवबर के पहले हफ्ते मे होगी, आसानी होगी। खयाल यह है कि पार्लामेटरी मसविदा तैयार करनेवाले के लिए शुरू-शुरू का काम निबटा दिया जाय, जिससे उसे कम-से-कम परेशानी हो और हमे कम-से-कम फीस देनी पडे। क्या मेहरबानी करके आप मुझे यह लिखेंगी कि आपके कामनवेल्थ ऑव् इडिया बिल का मसविदा किसने तैयार किया था और उसने क्या फीस ली थी?

ऑल इडिया कन्वेशन की तारीख फिलहाल कलकत्ता मे १७ दिसम्बर को रक्खी गई है। यह बडी अहम बैठक होगी और मै उम्मीद करता हू कि आप इसमे शरीक होगी।

शिमला की बैठक की कार्रवाई की एक नकल आपके पास दो-एक दिन मे भेजी जायगी।

हम लोगो ने जो काम उठा रक्खा है, उसके बारे मे आप अपने सुझाव देगी तो मै एहसानमन्द होऊगा।

मेहरवानी करके यह खत सर तेजबहादुर सप्रू को दिखा दीजियेगा। मेरा खयाल है जब यह खत पहुचेगा वह मद्रास मे होगे। मै उन्हे एक छोटा-सा खत भेज रहा हू और लिख रहा हू कि ब्यौरे की बाते इस खत से मालूम करे।

डा. ऐनी बेसेंट, आपका,
अड्यार, मद्रास। **मोतीलाल नेहरू**

५८. मोतीलाल नेहरू की ओर से मोहम्मदअली जिन्ना के नाम

२२ नवंबर १९२८

प्रिय जिन्ना,

आनेवाले कन्वेशनो की तारीखो के सवाल पर सोचने और अपनी कमिटी और काग्रेस की इस्तकवालिया कमेटी के मेवरो से सलाह-मशविरा करने मे मुझे इतना वक्त लग गया है। दोनो ही इस तज़वीज़ के कडे मुखालिफ है कि कन्वेशन काग्रेस के वाद की जाय और इसके वारे मे जो सजीदा वजहे उन्होने दी है, उनसे मै एकराय हू। इसलिए मुझे एक तरकीव सूझी है, जिनसे काग्रेस और मुस्लिम लीग दोनो के एतराज मिट जायगे। कन्वेशन लीग से चार दिन पहले शुरू होगी और २७-२८ तक, जवकि लीग का इजलास होगा, जारी रहेगी। अगर जरूरी हुआ तो २८ को सवेरे भी हो सकेगी। इस तरह लीग अपने नुमाइदो को पूरे हक देकर कन्वेशन के आखिरी इजलास मे भेज सकेगी और इस्तकवालिया कमेटी की यह मांग भी कि कन्वेशन २९, ३०, ३१ को काग्रेस की वैठको से पहले हो जाय, पूरी हो सकेगी। बहुत-सी ऐसी बाते है, जिनमे बहस की कोई गुजाइश नही और वे २२, २३, २४ को कन्वेशन में तय की जा सकेगी, लेकिन मुस्लिम लीग को यह हक

होगा कि आखिरी इजलास मे कोई भी सवाल फिर से उठा सके। इस बीच, सालाना जलसे मे कौसिल को कन्वेशन के लिए नुमाइदे भेजने का जो हक दिया था, उसपर, मुझे उम्मीद है कि अमल होगा और शुरू से ही नुमाइदे उसमे शरीक होगे। यह जरूरी नही कि कन्वेशन के पहले इजलास में (२२ से २४ तक) अगर वे किसी चीज़ से अपनेको न बाधना चाहे तो बेशक न बाधे। मै उम्मीद करता हू कि इस इतजाम से आपको और इससे ताल्लुक रखनेवाले सभी लोगो को तसल्ली होगी।

इसीके मुताबिक मै अखबारो को जरूरी खबरे भेज रहा हू।

आपका,
मोतीलाल नेहरू

५९. महात्मा गाधी की ओर से

[मेरा खयाल है कि यह पत्र लखनऊ की उस घटना के बाद लिखा गया था, जिसमे हम बहुत लोगो ने साइमन-कमीशन के वहां पहुचने पर शात रूप में विरोधी प्रदर्शन किया था। हमपर पुलिस के डडो और लाठियो की सख़्त मार पडी थी।]

वर्धा
३ दिसबर १९२८

प्रिय जवाहर,

तुम्हे मेरा प्यार। सब काम बहादुरी से किया गया। तुम्हे इससे भी अधिक वीरता के काम करने है। भगवान तुम्हे दीर्घायु करे और भारत को गुलामी के जुए से छुडाने मे तुम्हे अपना विशेप अस्त्र बनाये।

तुम्हारा,
बापू

६०. नरेन्द्रदेव की ओर से

[इस पत्र में जिस लीग का ज़िक्र है वह 'इडिपेंडेंस फॉर इडिया लीग' है। वह राष्ट्रीय काग्रेस पर यह जोर डालने के लिए स्थापित की गई थी कि वह अपना उद्देश्य 'स्वतन्त्रता' बना ले। नरेन्द्रदेव काग्रेस के एक प्रमुख नेता थे। आगे चलकर भारत में जब समाजवादी दल की स्थापना हुई तो

उसके संस्थापकों मे एक वह थे ।]

बनारस,
९ फरवरी १९२९

प्रिय जवाहरलालजी,

आपकी भेजी पाडुलिपि मिली । मै उसे पढ रहा हू और उसके विषय मे शीघ्र ही अपनी राय आपको भेजूगा । आपके प्रश्नो के उत्तर भी देने का प्रयत्न करूगा ।

लीग के विषय मे मै मुक्त भाव से आपके आगे स्वीकार करता हूं कि मेरी वर्तमान भावना यह है कि उसके सामने उज्ज्वल भविष्य दिखाई नही देता । हमारे बीच ऐसे ईमानदार लोगो के सगठन की कमी है, जो निष्ठावान् हो और जिनकी आर्थिक कार्यक्रम मे जीवित श्रद्धा हो । हम सब सामान्यतया विश्वास कर सकते है कि नये आधार पर हमारे समाज की पुनर्रचना होनी आवश्यक है । लेकिन जवतक हमे उन सामाजिक और आर्थिक सिद्धान्तो की स्पष्ट कल्पना नही होगी, जिनके आधार पर समाज की नव-रचना हो सकेगी और जबतक हमे यह निश्चित पता नही होगा कि देश की वर्तमान परिस्थिति मे हमे कितनी सफलता मिल सकती है, हम किसी परिणाम की प्राप्ति की आशा नही कर सकते । हममे से बहुत-से लोगो के विचार अस्पष्ट और अनिश्चित है और वे यही नही जानते कि आगे किस प्रकार बढे । इसका परिणाम यह हो रहा है कि हम अपने निश्चयो मे दृढ नही हो पाते और इस कारण हमारे कार्य मे सचाई का अभाव है । मेरा विचार है कि अपने चारो ओर हमे जो कार्य-विमुखता दिखाई देती है, वह बौद्धिक निष्ठा के अभाव के कारण है । इसलिए मेरे विचार से मुख्य काम हमारे सामने यह है कि हम अपने आदमियो को बौद्धिक खुराक देकर उनके विचारो को मजबूत बनाये । इसके लिए यदि आवश्यक कोप मिल सके तो लीग को एक साप्ताहिक पत्र प्रारभ करना चाहिए । इसके अतिरिक्त उसकी अपनी एक पुस्तको की दुकान भी हो, जहा ऐसा साहित्य मिल सके । लीग को जगह-जगह स्वाध्याय-मडल भी खोलने चाहिए और भारतीय भापाओ मे सस्ता साहित्य निकालना चाहिए । मेरे विचार से यही काम सवसे अधिक महत्वपूर्ण है, जिसपर इस वर्प हमारा ध्यान

केन्द्रित होना चाहिए, क्योकि मेरी विनम्र सम्मति मे इसके बिना मजबूत वुनियाद नही रखी जा सकती। इस समय लीग मे मुश्किल से मुट्ठीभर ऐसे लोग होगे, जिनके इस विपय मे कोई निश्चित और सुलझे हुए विचार हो और जो सतोषजनक योग्यता रखते हो। मेरा आपसे अनुरोध है कि इस वात पर आप लीग का ध्यान केन्द्रित करे।

अभी तक हम कोई भी काम ऐसा नही कर सके है, जिससे हमारा अस्तित्व सिद्ध हो। लीग की प्रमुख विशेपता यह है कि उसके उद्देश्यो मे नये आधार पर समाज का निर्माण करना है। लीग केवल राजनैतिक स्वतत्रता से सन्तुप्ट नही है। स्वभावत लोग यह जानना चाहते है कि नया आधार क्या होगा और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए लीग किन साधनो का उपयोग करेगी? कलकत्ता मे चारो ओर से मुझपर अनेक प्रश्नो की बौछार हुई। लोगो की सामान्य धारणा यह जान पडती है कि लीग ने जो आशाए दिलाई थी, उन्हे वह पूरा नही कर रही है। कुछ लोगो का खयाल है कि लीग की स्थापना का एकमात्र उद्देश्य काग्रेस मे स्वतत्रता के प्रश्न पर तगडा मोर्चा लेना था और चूकि वह हेतु सिद्ध हो चुका है, इसलिए वे कहते है कि अव एक दिन भी लीग के जीवित रहने का प्रयोजन नही है। दूसरे वे लोग है, जो स्वतत्रता के ध्येय को तो स्वीकार करते है, परन्तु उन्हे आदर्शो और उद्देश्यो से विशेष सरोकार नही है और वे तात्कालिक कार्य के लिए कोई सजीव कार्यक्रम चाहते है। काग्रेस के रचनात्मक कार्यक्रम उन्हे नीरस और वधे-वधाये लगते है और चूकि हम देश के सामने और कोई अच्छा कार्य-क्रम नही रख पाये है, इसलिए स्वाभाविक रूप से लीग मे शामिल होने का उत्साह उन्हे अनुभव नही होता। हमारे अपने प्रतिनिधि भी उदासीन है। वार-वार स्मरण-पत्र भेजने पर भी उनमे से वहुतो की ओर से उत्तर नही आया। कुछ मित्र तो पत्र की पहुच तक नही भेजते।

आप तो जानते है कि जव मैने मत्री का पद स्वीकार किया, उस समय यह विल्कुल स्पप्ट कर दिया था कि विद्यापीठ के मेरे वर्तमान दायित्वो से मुझे इतना समय नही मिलेगा कि मै देश के भ्रमण के लिए जा सकू। मै तो यहा से केवल पत्र-व्यवहार ही कर सकूगा। परन्तु यदि पत्रो का कोई उत्तर ही नही देता है तो मै क्या करू?

ऐसी अवस्था मे यदि हम स्थिति को नही सुधारते तो हम काम के आगे बढने की आशा नही कर सकते ।

यदि सभव हो तो लीग को कोई आर्थिक कार्यक्रम लेना चाहिए । मैं नही सोचता कि प्रान्तीय लीगो को अपने-अपने कार्यक्रम पृथक् रूप से बनाने चाहिए। इसका विघातक परिणाम होगा। यदि ऐसी स्वतन्त्रता दी गई तो—जैसाकि आप कहते हैं—सभव है, उनके कार्यक्रम आपस मे टकरावेगे । इससे बडी गडबडी पैदा हो जायगी । लीग का केवल एक ही कार्यक्रम हो और उसे एक स्वर से ही बोलना चाहिए ।

मेरा विचार है कि आपका यह सुझाव स्वीकार होना चाहिए कि प्रत्येक प्रात अपनी सिफारिशे केन्द्रीय समिति के पास भेजे । उस हालत मे आपने कार्यक्रम का जो मसविदा तैयार किया है, उसको हमारी समिति चर्चा का आधार बना सकती हैं ।

यदि केन्द्रीय कौसिल को कोई आर्थिक कार्यक्रम बनाने के लिए राजी किया जा सके और वह देश को कोई योजना दे सके तो बडा अच्छा हो । जो हो, मैंने ऊपर जिस कार्य की रूप-रेखा बताई है, उसे प्रान्तीय लीगे अपने हाथ मे ले सकती हैं। इसके लिए केन्द्र की इजाजत की भी जरूरत नही होनी चाहिए।

प्रान्तीय कमेटी की अगली बैठक लखनऊ मे इसी महीने की २४ तारीख को हो रही है। आपके पास औपचारिक सूचना शीघ्र ही पहुचेगी।

सप्रेम आपका,
नरेन्द्र देव

६१. महात्मा गांधी की ओर से

रेल से,
२९ जुलाई १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

इन्दु के नाम तुम्हारे पत्र बहुत अच्छे है और प्रकाशित होने चाहिए। काश तुम उन्हे हिन्दी मे लिख सकते । जैसे भी है, उन्हे साथ-साथ हिन्दी मे भी छपवाना चाहिए ।

तुम्हारा विषय-निरूपण बिल्कुल पुराने ढग का है । मानव का आदि

अब एक विवादपूर्ण विषय है। धर्म का आदि और भी विवादास्पद मामला है। परन्तु इन मतभेदो से तुम्हारे पत्रो का मूल्य घट नही जाता। उनका महत्व तुम्हारे निर्णयो की सचाई मे नही, परन्तु निरूपण के ढग मे और इस तथ्य मे है कि तुमने इन्दू के हृदय तक पहुचने और उसकी ज्ञान की आखे खोलने की कोशिश अपनी बाह्य प्रवृत्तियो के बीच मे की है।

जो घडी मै ले आया हू उसके बारे मे कमला से झगडना नही चाहता था। इस भेट की तह मे जो प्रेम है, उसका मै सामना नही कर सका। मगर घडी फिर भी इन्दू के लिए धरोहर के रूप मे रक्खी जायगी। इतने सारे छोटे-छोटे शैतानो से घिरा रहकर मै सजावट की इस चीज को सुरक्षित नही रख सकता। इसलिए मुझे यह जानकर खुशी होगी कि इन्दू को उसकी प्यारी घडी वापस मिल जाने पर कमला राजी हो जायगी।

काग्रेस के 'ताज' पर मेरा लेख पहले ही लिखा जा चुका है। वह य इ के अगले अक मे निकलेगा।

सप्रेम तुम्हारा,

बापू

६२ सरोजिनी नायडू की ओर से

[यह पत्र मेरे काग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने पर लिखा गया था।]

लखनऊ

२९ सितबर १९२९

मेरे प्यारे जवाहर,

मै कल्पना नही कर सकती कि समूचे भारत मे कल तुम्हारे पिता से अधिक गर्व का अनुभव करनेवाला और कोई हृदय होगा अथवा तुम्हारी अपेक्षा अधिक भार अनुभव करनेवाला कोई दूसरा हृदय। मेरी स्थिति विचित्र थी, मै समान मात्रा मे उनके गर्व और तुम्हारी वेदना दोनो का अनुभव करती रही। मै रात को बहुत देर तक जागकर अपने उन शब्दो की सार्थकता के बारे मे सोचती रही, जो मै अक्सर तुम्हारे बारे मे कहा करती थी कि तुम्हारे भाग्य मे एक शानदार शहादत बदी है। चुनाव के बाद जब तुम्हारा भव्य अभिनदन किया जा रहा था तो तुम्हारे चेहरे को देखते-देखते मुझे लगा, मानो मै एक साथ ही राजतिलक और सूली का दृश्य देख

रही हूं। वास्तव मे कुछ परिस्थितियो और कुछ अवस्थाओ मे ये दोनो एक-दूसरे से अभिन्न है और लगभग पर्यायवाची है। ये दोनो आज तुम्हारे लिए विशेष रूप से एक ही है, क्योकि अपनी आत्मिक क्रिया और प्रतिक्रिया मे तुम बहुत ही सवेदनशील और परिष्कृत हो और आक्राता एव भारी-भरकम स्वर के पीछे अपनी गरीबी को छिपाने के लिए राह खोजती दुर्बलता के जो अनिवार्य परिणाम है—दुर्बलता, असत्य, प्रपच, विश्वासघात—उनकी कुरूपता का मुकाबला करने मे तुम उन पुरुषो और स्त्रियो की अपेक्षा सैकडो गुनी तीव्रता से क्लेश अनुभव करोगे, जो कि उतने कोमल-ततुओ, स्पष्ट दृष्टि एव ग्राह्य-शक्ति से सपन्न नही है। फिर भी तुम्हारी निर्मल सचाई और स्वाधीनता के लिए तुम्हारे प्रेम मे मेरा अटल विश्वास है और यद्यपि तुमने मुझसे कहा था कि ऐसे भारयुक्त पद की परेशानी मे अपने विचारो और आदर्शो को कार्यान्वित करने योग्य न तो तुम्हे अपने भीतर शक्ति जान पडती है और न पर्याप्त समर्थन ही, फिर भी मुझे लगता है, यह स्थिति तुम्हारे लिए चुनौती भी है और एक सम्मान भी। और यह ऐसी चुनौती है, जो तुम्हारे समस्त उच्च और श्रेष्ठ गुणो को कार्य-शक्ति, साहस, दूर-दृष्टि और विवेक का रूप दे देगी। मुझे अपने इस विश्वास के लिए कोई भय नही।

तुम्हारे इस बड़े भारी और प्राय: डरावने कर्तव्य मे मुझसे तुम्हारी जो भी सहायता या जो भी सेवा हो सके, उसके लिए, तुम जानते हो, तुम्हारे कहने भर की देर है। . कोई ठोस मदद मैं चाहे न कर सकू, पर कम-से-कम पूरी-पूरी सहानुभूति और स्नेह तो मैं तुम्हे दे ही सकती हू। . . . और यद्यपि, जैसा खलील जिब्रान का कहना है, "एक आदमी के स्वप्नो के पख दूसरे के काम नही आते", तो भी मेरा विश्वास है कि अपनी आत्मा की अजेय निष्ठा दूसरे के भीतर ऐसी ज्योति जाग्रत कर देती है, जिससे ससार जगमगा उठता है।. . .

तुम्हारी प्यारी बहन,
सरोजिनी नायडू

६८ महात्मा गांधी के नाम

[यह पत्र दिल्ली मे होनेवाले एक सम्मेलन के बाद, जिसे 'नेताओं का

सम्मेलन' का नाम दिया गया, लिखा गया था। इस सम्मेलन ने उपस्थित लोगो के हस्ताक्षर से एक वक्तव्य भी प्रकाशित किया था। इसपर आखिरकार मैंने भी दस्तखत किये थे, अगर्चे बड़ी हिचकिचाहट के साथ। सुभाष बोस ने इसपर हस्ताक्षर नहीं किये। लेकिन हस्ताक्षर कर देने के बाद मुझे दुःख हुआ और मैंने यह पत्र लिखा। उस समय मै काग्रेस का प्रधान मत्री था और उसके आगामी अधिवेशन का सभापति चुना जा सकता था।]

ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी,
५२, हीवट रोड, इलाहाबाद
४ नवबर १९२९

प्रिय वापू,

मैंने दो रोज अच्छी तरह से विचार किया है। मेरा खयाल है, अव मै स्थिति पर दो दिन पहले की बनिस्बत कुछ ज्यादा ठडे दिमाग से विचार कर सकता हू, लेकिन मेरा दिमागी बुखार अभी दूर नही हुआ है। अनुशासन की विना पर आपने मुझसे जो अपील की है, उसे मै दर-गुजर नही कर सकता था। मै खुद अनुशासन का कायल हू। फिर भी मेरा खयाल है कि अनुशासन की ज्यादती भी हो सकती है। परसो शाम को मेरे अदर कुछ ऐसी वाते उठी, जिनको मै एकसूत्र मे नही वाध सकता। प्रधान मत्री होने के नाते काग्रेस के तई मेरी वफादारी होनी चाहिए और उसके अनुशासन मे मुझे रहना चाहिए। मेरी और हैसियते और वफादारिया भी है। मै इडियन ट्रेड यूनियन काग्रेस का सदर हू और 'इडिपेडेस फॉर इडिया लीग' का सेक्रेटरी हू और युवक-आदोलन से मेरा गहरा ताल्लुक है। इन दूसरी जमातो के तई, जिनसे मेरा ताल्लुक है, अपनी वफादारी के लिए मै क्या करू ? मै इस वात को पहले से ज्यादा अव महसूस करता हू कि कई घोडो पर एक साथ सवारी करना काफी मुश्किल है। जव जिम्मेदारियो और वफादारियो की आपस मे टकराहट हो तो इसके अलावा कोई क्या कर सकता है कि अपनी महज प्रवृत्ति और वुद्धि पर भरोसा करे ?

इसलिए सभी वाहरी लगावो और वफादारियो से अलग रहकर मैंने हालत पर गौर किया है और मेरा यह यकीन ज्यादा मज़वूत होता गया है कि परसो मैंने जो किया, वह गलत किया। मै वयान की अच्छाइयो या

है, जिसकी नकल साथ मे भेज रहा हू ।

सभापति का सवाल इससे कही ज्यादा मुश्किल है। मै नही समझता कि इस ऐन मौके पर मै क्या कर सकता हू। मुझे इस बात का यकीन हो गया है कि मेरा चुनाव गलत था। इस अवसर पर और इस साल के लिए सिर्फ आपको ही चुना जाना चाहिए था। अगर काग्रेस की पालिसी वही है, जिसे मालवीयजी की पालिसी कह सके तो मै सभापति नही रह सकता। अब भी अगर आप राजी हो तो बिना ए आई सी सी की बैठक बुलाये एक रास्ता निकल सकता है। ए आई सी सी के मेबरो के नाम एक गश्ती चिट्ठी भेजी जा सकती है कि आप सदर बनने के लिए रजामद है। मै उनसे माफी माग लूगा। यह सिर्फ जाव्ते की कार्रवाई होगी, क्योकि सभी या करीब-करीब सभी मेबर आपके फैसले को खुशी से मान लेगे।

एक दूसरा रास्ता यह है कि मै यह ऐलान कर दू कि मौजूदा हालतो मे और इस खयाल से कि इस वक्त दूसरा सदर चुनने मे दिक्कत होगी, अभी सदारत न छोड़ू, लेकिन काग्रेस के फौरन बाद छोड दू। मै चेयरमैन के तौर पर काम करूगा और मेरी कोई भी परवा किये बिना काग्रेस जसा चाहे फैसला कर सकती है।

अगर मै अपने जिस्म की और दिमागी तदुरुस्ती बनाये रखना चाहता हू तो इन दो मे से एक रास्ता मेरी समझ मे जरूरी है।

जैसाकि मैने दिल्ली से आपको लिखा था, मै कोई पब्लिक बयान नही निकाल रहा हू। दूसरे लोग क्या कहते है या क्या नही, इसकी मुझे ज्यादा फिक्र नही है। लेकिन खुद मुझे शाति होनी चाहिए।

सप्रेम आपका,

जवाहरलाल

फिर से—

इस खत की एक नकल मै पिताजी के पास भेज रहा हू। इस खत को लिखकर मै कुछ हल्कापन महसूस कर रहा हू। मुझे डर है कि इससे आपको कुछ परेशानी होगी। ऐसा मै करना नही चाहता। आधा मन कर रहा है कि इसे आपके पास न भेजू, वल्कि आपके यहा आने का इतजार करू। दस दिन और वीतने पर जरूरी तौर पर मेरी उत्तेजना कम हो जायगी और मेरी

निगाह ज्यादा साफ हो जायगी। लेकिन यह अच्छा है कि आप जान ले कि मेरा दिमाग किस तरह काम कर रहा है।

६४. महात्मा गांधी की ओर से

अलीगढ़,
४ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

तुम्हारा पत्र अभी मिला। मै तुम्हे कैसे सान्त्वना दू ? दूसरो से तुम्हारी हालत सुनकर मैने अपने मन मे कहा, "क्या मैने तुमपर बेजा दबाव डालने का अपराध किया है ?" मैने सदा यह माना है कि तुमपर बेजा दबाव पड़ नही सकता। मैने सदा तुम्हारे प्रतिरोध का सम्मान किया है। वह हमेशा सम्मानपूर्ण रहा है। इसी विश्वास पर मैने अपना दावा आगे बढाया। इस घटना से सबक लेना चाहिए। मेरा सुझाव जब भी तुम्हारे दिल या दिमाग को न जचे तभी अड जाओ। ऐसे अडने से मेरा प्रेम तुम्हारे प्रति घटेगा नही।

मगर तुम उदास क्यो होते हो ? आशा है, तुम्हे लोकमत का डर नही है। तुमने कोई बेजा बात नही की है, तो उदासी क्यो ? स्वाधीनता का आदर्श अधिक स्वतत्रता से टकराता नही। इस समय कार्यकारी अधिकारी की और अगले साल के लिए अध्यक्ष की हैसियत से, तुम अपने अधिकाश साथियो की सामूहिक कार्रवाई से अपने-आपको अलग नही रख सकते थे। मेरी राय मे तुम्हारा हस्ताक्षर करना तर्क-सगत, बुद्धिमत्ता-पूर्ण और अन्यथा भी ठीक था। इसलिए मै आशा करता हू कि तुम्हारी उदासी दूर हो जायगी और तुम्हारी अचूक प्रसन्नता वापस आ जायगी।

बयान तुम जरूर दे सकते हो, मगर इस बारे मे जल्दी करने की ज़रा भी ज़रूरत नही है।

अभी-अभी जो दो समुद्री तार मिले है उनकी नकले साथ मे है। इन्हे पिताजी को भी दिखा देना।

अगर मुझसे चर्चा करने की जी मे हो तो जहा चाहो मुझे पकड़ लेने मे सकोच न करना।

आशा है, जब मै इलाहाबाद पहुचूगा तब कमला को स्वस्थ और प्रसन्न पाऊंगा ।

हो सके तो तार देना कि उदासी मिट गई है ।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

६५ एम ए अन्सारी की ओर से

लखनऊ,
७ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

दिल्ली से रवाना होने के पहले जब तुम मेरे यहा आये थे उस वक्त मै तुमसे कुछ बाते करना चाहता था । तुम्हे याद होगा कि मैंने खोजते हुए तुम्हे सेन गुप्ता के कमरे मे पाया और मैंने तुम्हे एक बयान के बारे मे बताया था, जिसका मसविदा पास के कमरे मे तैयार किया जा रहा था । लेकिन चूंकि मैंने तुम्हे बातचीत मे मशगूल पाया, इसलिए तुम्हे छेडना मुनासिब नही समझा ।

शुएब, खालिक, महमूद, तसद्दुक और दूसरे सब दोस्त, जो कान्फ्रेस मे मौजूद थे और जो अपनी आखो के सामने धीरे-धीरे आनेवाले मसलो को देख रहे थे, सबके दिलो मे तुम्हारे ऊचे दर्जे के और हिम्मत-भरे बर्ताव के लिए हद दरजे की कद्र थी । उसी वक्त हमें यह भी मालूम हुआ (हमने बहुत से लोगो को आपस मे मशविरा करते देखा) कि लोग अपना निजी मतलब सीधा करने के लिए, तुम्हारे उठाये गए कदम का तभी-के-तभी फायदा उठा लेनेवाले है, लेकिन मैं जानता हू कि इन छोटी-छोटी बातो का तुमपर या तुम्हारे कामो मे से किसीपर कोई असर नही पडेगा । ताहम मैं सुभाष के अलावा और कई लोगो के इस्तीफो का इतज़ार कर रहा हू । बहरहाल सवाल का यह महज़ ज़ाती पहलू है ।

मैंने पडितजी और महात्माजी के नाम तुम्हारे खत देखे । मै तुमसे यह ज़रूर कहना चाहूगा कि उन्हे पढकर मेरे मन मे बडी बेचैनी है । मेरा खयाल है कि वर्किंग कमेटी और सैक्रेटरीशिप से तुम्हारा इस्तीफा कुछ वक्त से पहले और जल्दबाज़ी मे दिया गया है । मै यह भी सोचता हू कि कांग्रेस

की सदारत के बारे मे तुम्हारे सुझावो के पीछे भी वे ही जज़बात है। कांग्रेस मे जो खयाल फैला हुआ है उससे तुम एकराय नही हो। इसी वजह से तुम सोचते हो कि कांग्रेस की सदारत से तुम्हे इस्तीफा देना पडेगा। लेकिन मेरा अपना यकीन है कि यह बात बहुत मुमकिन है कि तुम्हे इस्तीफा न देना पड़े और कांग्रेस तुम्हारे खयालो को अपनाले।

अपने दिल्ली के बयान और कामन्स-सभा की बहस के बाद हम पक्के तौर पर यह जान सकने की हालत मे होगे कि आया हमा ी बात मजूर हुई या नामजूर। मजूर होने से उसके नामजूर होने के मौके ज्यादा है। उस सूरत मे हमारी हालत ज्यादा मज़बूत होगी और लाहौर मे जो भी कदम उठाया जायगा उसके पीछे पूरी कांग्रेस की ठोस ताकत होगी। इसलिए मै समझता हू कि सबसे अच्छी पालिसी यही है कि 'इतज़ार करो और देखो', जसी कि पडितजी की भी सलाह है। वर्किंग कमिटी की बैठक के पहले तुम्हे किसी तरह का कदम नही उठाना चाहिए।

पडितजी के साथ इलाहाबाद जाने का बहुत बडा लालच है, लेकिन अपने मरीजो की इच्छाओ के डर से मै चुपचाप चोर की तरह दिल्ली से रवाना हुआ था। मुझे वापस जाना चाहिए और इलाहाबाद मे वर्किंग कमेटी की व क मे शरीक होने के लिए फिर दिल्ली से चलने के पहले मुझे कम-से-कम वहा एक हफ्ते काम करना चाहिए।

माजी को आदाब और कमला, सरूप, बेटी और इन्दू को प्यार।

तुम्हारा,

एम. ए. अंसारी

६६. महात्मा गांधी की ओर से

वृन्दावन

८ नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हे मेरा तार मिल गया होगा। तुम्हे अभी इस्तीफा नही देना चाहिए। अपनी बात पर बहस करने का मेरे पास समय नही है। मै इतना ही जानता हू कि इससे राष्ट्रीय कार्य पर असर पडेगा। कोई जल्दी नही और किसी उसूल को खतरा नही। ताज की बात यह है कि उसे और

कोई नही पहन सकता। वह कभी फूलो का ताज नही होनेवाला है। अब तो काटे-ही-काटे है। मै उसे पहनने को अपने-आपको राजी कर सकता तो मै लखनऊ मे ही पहन लेता। मुझे मजबूर होकर पहनना पडेगा, इसके लिए इस प्रकार की स्थिति मेरे ध्यान में नही थी। उन स्थितियो मे से एक तुम्हारी गिरफ्तारी होने और दमन बढ जाने की थी। लेकिन ये सब बाते जब हम मिले तब शान्त और अनासक्त चर्चा के लिए रख छोडे।

तबतक ईश्वर तुम्हे शान्ति दे।

बापू

६७ सरोजिनी नायडू की ओर से

ताजमहल होटल, बंबई

२० नवम्बर १९२९

प्रिय जवाहरलाल,

इसे कहते है मुसीबत मे दोस्ती निभाना। मै, और पद्मजा यात्रा की तैयारी मे है और हम दोनो के ही जरूरत से ज्यादा लोकप्रिय होने के कारण हर क्षण तरह-तरह के स्त्री-पुरुष हमारे ऊपर हल्ला बोलते रहते है। पद्मजा अपनी पहली यात्रा और घरेलू दासता से पहली बार छुटकारे की कल्पना से बेहद उत्तेजित है। आशा करती हू कि इस यात्रा से उसकी तदुरुस्ती और उमगो को नया मोड मिलेगा। मुझे तो एकदम अचानक ही, लगभग दो बार पलक झपकते-झपकते यह तय करना पडा कि मै अफ्रीका जाऊ या नही। पर वे लोग मुसीबत मे है और उनकी मदद की पुकार निहायत जरूरी थी—और पद्मजा की अफ्रीका जाने की लालसा भी एक अर्ध-चेतन प्रभाव था, जिसने मेरा निश्चय पक्का किया।

विदा, प्रिय जवाहरलाल! मै २१ दिसम्बर को तुम्हारी काग्रेस के समय तक लौट आऊगी। मेहरबानी करके इसका खयाल रखना कि अध्यक्ष पापा ६ दिसम्बर तक बेटी अध्यक्ष के नाम एक तार काग्रेस के उद्घाटन में पढने के लिए एक सदेश के साथ नैरोबी भेजना न भूले।

फिर मिलेगे। पद्मजा का और मेरा आनद भवन मे सभीके लिए प्यार।

तुम्हारी बहन,

सरोजिनी

६८. ऐनी बेसेन्ट की ओर से

दी थियोसाफीकल सोसायटी
अडयार, मद्रास
२९ नवम्बर १९२९

प्रिय पडितजी,

आपने बडा अच्छा किया कि मेरे भाषण के समय जो पर्चे बाटे गये, उसपर खेद प्रकट किया। विश्वास रक्खे, पर्चे बाटने से मुझे कोई दु ख नही हुआ। नौजवानो को सार्वजनिक कामो मे सक्रिय दिलचस्पी लेते हुए देखकर मुझे हमेशा बडी खुशी होती है, भले ही वे मुझसे सहमत हो या न हो। फिर अब मै इतनी वृद्ध राजनीतिज्ञ होगई हू कि लोग क्या कहते है, इसकी तरफ मै ध्यान भी नही देती।

स्नेहपूर्वक आपकी,
ऐनी बेसेंट

६९. वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय की ओर से

[वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय सरोजिनी नायडू के भाई थे। वह प्रथम महायुद्ध से भी पहले ऑक्सफोर्ड चले गये थे। तबसे वह कभी भी स्वदेश नही लौटे। यूरोप में उनका कई वामपक्षी आंदोलनो से संबंध रहा।]

साम्राज्यवाद-विरोधी और राष्ट्रीय स्वतत्रता-पोषक सघ
इंटरनेशनल सेक्रेटेरिएट,
२४ फ्रेडरिक स्ट्रास, बर्लिन, एस. डब्ल्यू. ४८
४ दिसम्बर १९२९

प्रिय जवाहर,

७ नवम्बर (रूसी-क्राति का जयन्ती-दिवस) का लिखा आपका खानगी पत्र मिला। पढकर बडा दुख हुआ। अपने प्रश्नो के बारे मे हमेशा क्रातिकारी दृष्टिकोण से (मुझे आशा है कि लगातार) सोचने की मेरी आद है और इसी दृष्टिकोण से अपनी मित्रता के दौरान मे अपने विचार ही स्पष्टता के साथ कहने का मैने हमेशा अपना दायित्व माना है। से पहले मै आपको एक समुद्री तार भेज चुका हू। उसमे इस सम अचरज प्रकट करके मैने अपनी यही राय कुछ मीठे शब्दो मे आपप

की है। मैंने यह इसलिए किया कि 'टाइम्स' की रिपोर्ट पर मैं विश्वास नही कर सका। परन्तु मुझे बहुत खेद के साथ कहना पडता है कि आपका पत्र और हिंदुतस्तान के समाचारपत्र इस रिपोर्ट को सत्य साबित करते है कि आपने दिल्ली मे लुटिया डुबो दी। देशद्रोहियो के सामने, जो कि अपने-अपने वर्ग के हितो के लिए काम कर रहे है, झुकने के लिए आप कोई भी कारण उपस्थित करे, मेरी समझ मे नही आता कि आपने तत्काल त्यागपत्र क्यो नही दिया। इससे देश मे आपकी स्थिति बडी मजबूत हो जाती। तमाम युवक, किसान और मजदूर भी आपके साथ हो जाते और इससे काग्रेस के समझौता-पसद लोगो को आप वडी आसानी से हरा सकते थे। 'पीपुल' मे ब्रिटिश राजनीति की सफलता के बारे मे जो दृष्टिकोण व्यक्त किया गया है, उससे मैं पूरी तरह सहमत हू। जनता के महत्वपूर्ण हितो की अपेक्षा काग्रेस की एकता को अधिक महत्व देने की कल्पना करना बुनियादी राजनैतिक भूल है। इस समय आप देश के युवको के असदिग्ध नेता है और मजदूर-वर्ग भी आप ही पर विश्वास करता है। ऐसी स्थिति मे पहुचने पर आप इस क्षणिक अकथनीय दुर्बलता और मानसिक उलझन मे पडे दिखाई देते है और आपने अपने अनुयायियो को अधर मे छोड दिया है।

यह एक विचित्र पहेली है कि ट्रेड यूनियन काग्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से आपने जो किया, वह बिल्कुल सतोपजनक था। साथ ही दिल्ली के घोषणा-पत्र पर आप कैसे दस्तखत कर सके, यह समझना और भी मुश्किल हो जाता है। यह तथ्य कि हिंदुस्तान के ज्यादातर मजदूर साम्राज्यवाद को उखाड फेकने और पूर्ण स्वाधीनता के पक्ष मे है, इस बात का प्रमाण है कि दिल्ली मे आपने जो कदम उठाया वह गलत था। एक तरफ तो आप काग्रेस की कार्यकारिणी के बहुमत के साथ औपनिवेशिक स्वराज्य की माग का समर्थन करते है और दूसरी तरफ बहुसख्यक मजदूरो की पूर्ण स्वाधीनतावाली माग का अनुमोदन करते है। यह एक बेमेल बात है। इसे दूर करने के लिए कोई कदम उठाना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय दुनिया मे आपकी स्थिति वडी विषम हो जायगी, जबतक कि आप, बडे नेताओ ने प्राय जो किया, वह न करे, यानी सार्वजनिक रूप से अपनी भूल मान ले और सही रास्ते पर चले। यदि आप आज ऐसा करते है, अर्थात् अपने हस्ताक्षर वापस ले लेते है और काग्रेस

के अध्यक्ष की अपनी स्थिति को उस झूठी एकता के ध्वस्त करने के लिए एक अवसर बना लेते है, जोकि बडी खतरनाक साबित हो रही है, कांग्रेस के सारे तत्र को नरमदल और औपनिवेशिक स्वराज्यवाद के विरुद्ध दृढ़ता के साथ सघर्ष करने के लिए अपने नियत्रण मे कर लेते है, तो अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को आप बहुत-कुछ फिर से प्राप्त कर लेते है। कृपया मेरी इन आलोचनाओ से यह न समझे कि मै आपका मित्र नही रहा, बल्कि यह माने कि मेरी ये आलोचनाए भारतीय किसानो और मजदूरो के प्रति मेरी गहरी निष्ठा से उत्पन्न हुई है। केवल इसी प्रकाश मे हम अपने कामो की सही जाच कर सकते है, और इस कसौटी के अनुसार मुझे यह कहने के लिए लाचार होना पड़ता है कि दिल्ली के घोषणा-पत्र पर आपके हस्ताक्षर स्वाधीनता-सग्राम मे भारतीय जनता के प्रति विश्वासघात के समान है।

हालाकि यह पत्र मै लीग के कागज पर लिख रहा हू, परन्तु यह पूर्णतया निजी है।

मुझे आशा है कि आप अब अखिल भारतीय साम्राज्यवाद-विरोधी सघ को उन आधारो पर स्थापित करने की आवश्यकता को महसूस करते है, जो आधार मैंने दो वर्ष पूर्व आपको सुझाये थे। राष्ट्रीय महासभा भारतीय जनता का प्रतिनिधित्व नही करती। लेकिन उन सगठनो मे से वह एक है, जो कि कम-बढ साम्राज्यवाद-विरोधी पार्ट अदा करते है। एक ऐसे सगठन का होना आवश्यक है जो कि इनसब सगठनो को एक सूत मे पिरो सके, उनके प्रयत्नो को जोड़ सके और एक साम्राज्यवाद-विरोधी न्यूनतम कार्यक्रम के अनुसार इनकी नीतियो का निर्धारण कर सके तथा अतिम सघर्ष के लिए सारे देश को सगठित कर सके। भारत मे ऐसे किसी साम्राज्यवाद-विरोधी सघ की आवश्यकता की ओर ध्यान दिलाते हुए हमने हिन्दुस्तान के अपने सारे सगठनो को निमत्रण-पत्र पहले से ही भेज दिये है। हम आशा करते हैं कि हमारे द्वारा भेजे गए पत्र की एक प्रति आपको मिली होगी। लेकिन इस पत्र के साथ मै एक और प्रति भेज रहा हू। मुझे नही मालूम कि दिसम्बर के अत मे एक साम्राज्यवाद-विरोधी सम्मेलन लाहौर मे बुलाने के विषय में, जैसी कि हमारी योजना थी, कोई कदम उठाया गया है या नही ? इस विषय मे एक-दो सप्ताह मे आपको और अधिक सूचनाए भेजी जायगी।

मै हृदय से आशा करता हू कि इस वर्ष के अत मे भारत से जो समाचार मिलेगा, वह उतना ही उत्साहवर्धक होगा, जितना कि ट्रेड यूनियन काग्रेस के विषय मे 'टाइम्स' मे प्रकाशित हुआ था।

कमला और कृष्णा के लिए मेरी शुभकामनाए।

आपका,

वी. चट्टोपाध्याय

७० मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. ए अन्सारी के नाम

१७ फरवरी १९३०

प्रिय अन्सारी,

मै अहमदाबाद से आज सवेरे चला हू और यह खत रेल मे बोलकर लिखवा रहा हू। चूकि मै दिल्ली जा रहा हू, जहा देर-सबेर आपसे मुलाकात होने की उम्मीद है, इसलिए जो कुछ मुझे कहना है उसे आमतौर पर जबानी बातचीत के लिए उठा रखना चाहिए था। पता नही क्यो, हमारे काग्रेसियो के छोटे-से दल मे चीजे इस तरह नही हो रही है, जैसीकि आमतौर पर होनी चाहिए और मैने यह जरूरी समझा कि मुझे जो चद बाते कहनी है, उन्हे कागज पर लिखवा दू, जिससे उस बारे मे कोई गलती न हो।

शुरू मे ही आपको यकीन दिलाना चाहूगा कि मकसद के तई आपकी वफादारी मे और मेरे तई आपकी निजी इज्जत और मोहब्बत मे मुझे पूरा भरोसा है। यह पहला मौका नही है जबकि अवाम के सवालो पर मेरी आपसे मुख्तलिफ राय रही हो और बदकिस्मती से इस मौके पर, मै महसूस करता हू, जैसाकि पहले करता रहा हू कि यह मुखालफत दोनो तरफ से फर्ज के गहरे जज्बात मे से उठकर आ रही है।

गाधीजी के नाम भेजे गए आपके खत को मैने बहुत गौर से पढा है, और फिर से पढा है। हालाकि हिंदू-मुसलिम एके को जो अहमियत आप दे रहे है, उसे मै पूरी तरह मजूर करता हू, तो भी अफसोस के साथ कहना पडता है कि मै आपके साथ इन दो बातो मे से किसीमे भी एकराय नही हो सकता कि किन वजहो से हमे अबतक हिंदू-मुस्लिम एके को हासिल करने मे कामयाबी नही मिली है और आगे किस तरफ कोशिश होनी चाहिए। आप और मै दोनो ही इस एके को ठोस बुनियाद देने की कोशिश करते आ

रहे हैं, लेकिन मानना पडेगा कि इसमे हम लोग बुरी तरह नाकामयाब रहे है। पिछले तजुर्बे और बहुत-कुछ गौर करने के बाद मै इस नतीजे पर पहुचा हू कि जिस तरह हम लोग काम करते रहे हैं, वह बुनियादी तौर पर गलत था। यह सचाई साथ-साथ काम करते हुए हमारे दिमाग मे वक्त-वक्त पर आती रही है और हमने कदम पलटने की कोशिश की है, जैसाकि हम लोगो ने लाहौर मे मोहल्लो के चौधरियो की सभा करके किया था। लेकिन हमने पाया कि हम एक बुरे चक्कर मे पड गये हैं, जिससे उस हालत मे बच पाना नामुमकिन है। इन सारे सालो मे हम गलत इजलासो मे अपनी फरियाद पहुचाते रहे है। हम कयामत तक ऐसा करते रहे तो भी हमे कोई मदद नही मिलने की। अगर किसी आदमी का, चाहे वह कितना ही बडा आदमी क्यो न हो, एक जगह पर फीके स्वागत और उसी आदमी के दूसरी जगह पर पुरज़ोर स्वागत पर किसी अहम राष्ट्रीय मसले के हल का दारोमदार हो, तो अच्छा हो, हम उसे दूर से ही सलाम कर दे।

सर तेजबहादुर सप्रू अब वही भूल कर रहे है और असल मे हमने इस बात को जहा छोडा था उन्होने वहीसे उसे उठाया है। मुझे ज़रा भी शुबहा नही कि जल्द ही उनकी गलतफहमी दूर हो जायगी। लेकिन उनके रास्ते मे मै अडचन नही बनना चाहता और हमने यह तय किया है कि बिना किसी नुक्ताचीनी के उन्हे बढने दे, जबतक कि वह थककर मैदान न छोडदे और मुझे यकीन है कि इसके लिए कुछ दिनो नही तो कुछ हफ्तो से ज्यादा इतजार नही करना पडेगा।

इस खत मे सिर्फ अपने इरादे बता देने से ज्यादा कुछ कहना मेरे लिए मुश्किल है। अब मेरा पक्का यकीन है कि हिन्दू-मुस्लिम एकता नसीहत देकर नही हो सकती। हमे उसे ऐसे ढग से लाना है कि हिन्दू और मुसलमान इस बात को जाने भी नही कि वे एकता के लिए कोशिश कर रहे है। यह सिर्फ इक्तसादी बुनियाद पर हो सकता है और हकतलफ़ी करनेवाले के खिलाफ आज़ादी की लडाई लडते हुए। अगर एक फिरका जीने के हक के लिए, जो दोनो के लिए एक-सा हो, लड रहा हो, तो यह सोचना नामुमकिन है कि जल्दी या देर मे दूसरा फिरका भी कामयाबी या नाकामयाबी के नतीजो को महसूस नही करेगा। और यह सोचना उतना ही नामुमकिन है कि उन

नतीजो को महसूस करने पर वह जी-जान से उस जद्दोजहद मे नही कूद पडेगा। उस बडे दिमागवाले ने, बहुत ज्यादा खिल्ली उडाये जाने और गलतबयानी के बीच भी, नमक के कानूनो को तोडने मे एक ऐसी बुनियाद को ढूढ निकाला है। यह चीज़ उनके अपने ही पसद के अलफाजो मे 'यकीन न करने लायक सीधी' है। ताज्जुब तो सिर्फ यह है कि इससे पहले किसी दूसरे को यह बात कभी सूझी तक नही। इस मौके पर यह कहना मुमकिन नही कि ऐसी सीधी बात भी लोगो के खयाल को उकसावेगी या नही, लेकिन अगर ऐसा होता है तो हिन्दुओ और मुसलमानो दोनो के लिए यह ज़रूर ही एक बडी कामयाबी होगी। अगर उससे ऐसा नही होता तो हमारे लिए कोई उम्मीद नही और हिन्दू-मुस्लिम-एके की और कानूनी और फिरकेवाराना हको की बात करना ही फिजूल है।

आप कहते है कि मुल्क सिविल नाफरमानी के लिए तैयार नही है। अगर ऐसा है तो कब और कैसे उसे आप इसके लिए तैयार करेगे ? क्या आपको यकीन है कि दोनो फिरको के नेता कहलानेवालो के मौजूदा गुस्से को देखते हुए किसी फारमूले तक पहुचना मुमकिन है ? अगर मुमकिन भी हो, जिसका मुझे पक्के तौर पर शुबहा है, तो महज यह कागजी फारमूला सरकार के खिलाफ जद्दोजहद मे हमे कहातक आगे ले जायगा ? इसके लिए तो एक हिन्दुस्तानी नरमदलवाले के होसले की जरूरत है, जो एक तयशुदा 'नही' को साफ 'हा' करके पढ सकता है, यह यकीन करके कि जैसे ही यह फारमूला तय हुआ कि सरकार घुटने टेक देगी। मेरी अब पक्की राय बन गई है कि आपसी रियायतो की बुनियाद पर बने कितने भी फार-मूले, जबकि रियायते करनेवालो को रियायते करने का कोई हक भी न हो, हमे हिदू-मुस्लिम-एके के उससे ज्यादा पास नही ले जा सकते, जितने कि मौजूदा हालत मे है।

आपने पिछले कुछ सालो के वाकयात पर नजर दौडाई है। मि जिन्ना के साथ मैने कुछ बेरुखी का सलूक किया, इस बारे मे मुझे कुछ नही कहना है। मि जिन्ना ने उस मौके पर जो कुछ कहा उससे मेरा हौसला ठडा पड गया और मै उन्हे खुश करने के लिए बनावटी गर्मी अपने मे पैदा नही कर सकता था।

आपने अपनी निजी हालत की सफाई भी दी है और उन वजहो की भी, जिनसे आपने काम करने का यह ढग अपनाया। आपके नजरिये को देखते हुए कोई भी समझदार आदमी आपके काम के लिए आपको गलत नही ठहरा सकता।

आखीर मे आपने १९२० के हालात का आज के हालात से खुलासेवार मुकाबला किया है। किसी मुल्क की तवारीख मे दस सालो के फासले से होनेवाली दो घटनाए हू-ब-हू एक-सी नही हो सकती है। आपने जो कुछ मुझे बताये है, उनसे मुझे हैरत होती है, जैसे यह कि लोगो का मज़दूर दल की सरकार की नेकनीयती मे और वाइसराय की ईमानदारी मे यकीन और यह कि कलकत्ता की तजवीज के लिए जितना हो सकता उतना सरकार का हाथ बढाना। लेकिन इस बारे मे सिर्फ इतना कहना ही जरूरी है कि मै आपके खुलासे से एकराय नही हू। इसके बरखिलाफ मै समझता हू कि हमारे सामने सवाल यह है कि 'या तो अभी या कभी नही।'

मै उम्मीद करता हू कि आप यह तो मानेगे कि आनेवाली जद्दोजहद मे गाधीजी के साथ अपनी किस्मत जोड देने का मेरे और अपनो के लिए क्या मतलब है। अगर मेरा यह गहरा यकीन न होता कि ज्यादा-से-ज्यादा कोशिश और कुरबानी का वक्त आगया है तो मै इस उम्र मे, अपनी जिस्मानी कमजोरियो और कुनबे के तई जिम्मेदारियो के साथ वह जोखिम न उठाता, जो उठा रहा हू। मै मुल्क की आवाज सुनता हू और उसपर चल रहा हू।

आपका,

मोतीलाल नेहरू

७१. महात्मा गांधी की ओर से

[राष्ट्रीय कांग्रेस का लाहौर-अधिवेशन दिसंबर १९२९ के अंतिम दिनों और १९३० के शुरू में हुआ था। उसमें स्वाधीनता का निश्चय किया गया था। २६ जनवरी १९३० को भारतभर में दूर-दूर तक 'स्वाधीनता दिवस' मनाया गया था। इसके थोड़े अर्से के बाद, जो नमक-सत्याग्रह के नाम से मशहूर हुआ, गांधीजी ने उसका निश्चय किया। वह साबरमती-आश्रम से साथियों की एक टोली लेकर समुद्र-तट पर डांडी की ओर चल

पड़े। अगले तीन पत्र उन्होने समुद्र की ओर इसी कूच के दिनो में लिखे थे। वह और उनके साथी अप्रैल के शुरू में डाडी में गिरफ्तार किये गए थे।]

११ मार्च १९३०

प्रिय जवाहरलाल,

अब रात के १० बजने को है। यहा जोर की अफवाह फैली हुई है कि मै रात मे ही पकड लिया जाऊगा। मैने तुम्हे खास तौर पर तार इसलिए नही दिया कि सम्वाददाता लोग अपनी खबरे मजूरी के लिए पेश करते है और सभी पूरी गति से काम कर रहे है। तार देने लायक कोई खास बात थी भी नही।

घटनाए असाधारण रूप मे ठीक हो रही है। स्वयसेवको के नाम धडाधड आ रहे है। टोली कूच करती ही रहेगी, भले ही मै पकड लिया जाऊ। मै गिरफ्तार न हुआ तो मेरी तरफ से तारो की आशा रख सकते हो, नही तो मै हिदायत छोडे जा रहा हू।

मेरे पास कोई खास बात कहने को मालूम नही होती। मै काफी लिख गया हू। आज शाम को रेती[1] पर प्रार्थना के लिए जमा हुई विशाल भीड को मैने अतिम सदेश दे दिया था।

भगवान तुम्हारी रक्षा करे और भार वहन करने की तुम्हे शक्ति दे।

तुम सबको प्यार,

बापू

७२ महात्मा गाधी की ओर से

१३ मार्च १९३०

प्रिय जवाहरलाल,

आशा है, तुम्हे मेरा पत्र मिल गया होगा, जो आखिरी हो सकता था। मेरी होनेवाली गिरफ्तारी की जो खबर मुझे दी गई थी, वह बिल्कुल विश्वस्त बताई गई थी। परन्तु हम दूसरी मज़िल पर सुरक्षित पहुच गये है। तीसरी आज रात को शुरु करेगे। मै तुम्हे कार्यक्रम भेज रहा हू। सभी साथियो का आग्रह है कि मुझे कार्य-ममिति के लिए अहमदाबाद नही जाना

[1] साबरमती नदी की

चाहिए। इस सुझाव मे काफी बल है। इसलिए कार्य-समिति उस जगह आ जाय, जहा उस दिन हम हो या तुम अकेले आ सकते हो। यह भावना कि हम लडाई को पूर्ण किये बिना स्वेच्छा से वापस नही लौटेंगे, अच्छी तरह पोषित की जा रही है। मेरे वापस जाने से इसमे कुछ बट्टा लग जायगा। जमनालालजी ने मुझे बताया कि उन्होने इस बारे मे तुम्हे लिखा था। आशा है, कमला का स्वास्थ्य अच्छा है। मैंने कल कह दिया था कि तुम्हे पूरे तार भेजे जाय।

सप्रेम तुम्हारा,
बापू

७३. मोतीलाल नेहरू की ओर से एम. ए. अन्सारी के नाम

शाहीबाग, अहमदाबाद
२० मार्च १९३०

प्रिय अन्सारी,

यहा रेलगाडी से उतरते ही मुझे आपका खत दिया गया। जवाहर के नाम महात्माजी का एक खत मिला, जिसे उन्होने खास आदमी के हाथ भेजा था और जिससे पता लगा कि अगर वह फौरन मोटर से न चल पडा, जो उसके लिए खडी हुई थी, तो उसके लिए कल की ए. आई. सी. सी. की बैठक के पहले महात्माजी से मिलना नामुमकिन होगा। आगरा से अहमदाबाद तक तीसरे दर्जे की ठसाठसभरी गाड़ी मे सफर करते हुए बेचारा रात मे एक झपकी भी नही ले पाया था। लेकिन जैसा महात्माजी ने चाहा था, वह फौरन चल पडा। २ बजे रात तक मोटर पर चलकर एक बाढ से चढी नदी को पार करना था, जिसका कि किसी दूसरे वक्त पर पार करना मुमकिन न होता। अगर सब ठीक चले तो उसे महात्माजी के पास उनके प्रार्थना के वक्त तक, जो आप जानते है, ४ बजे होती है, पहुंच जाना था। आज शाम ६ बजे तक उसे यहा वापस आ जाना है।

मेरेलिए जाहिरा तौर पर यह कवायद नामुमकिन थी, इसलिए मुझे यही रुक जाना पड़ा। अव मेरा प्रोग्राम यह है कि कल ए. आई. सी सी. की बैठक, जरूरत हुई तो रात देर तक खत्म करके दूसरे दिन सवेरे की गाड़ी से भडोच जाऊ। वहा एक मोटर महात्माजी के दिन के पड़ाव तक ले जाने